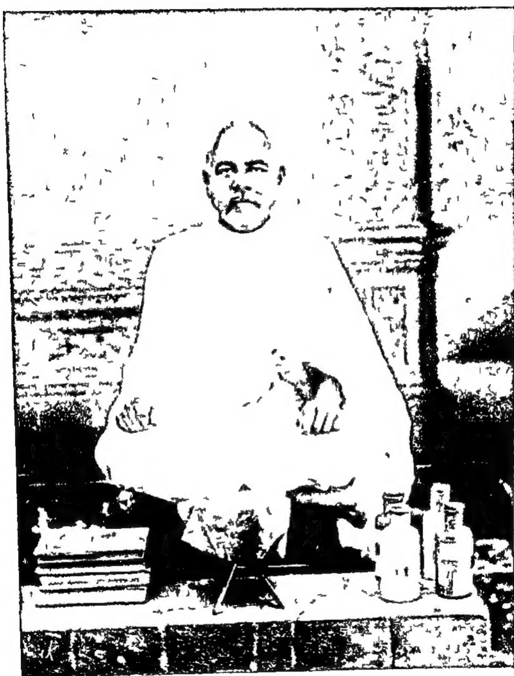


उपाध्याय रामलालजी

॥ श्री ॥

श्रीधर्मशीलायनमः

वैद्यदीपक.

अनेक ग्रथोंसे तथा अपणे अनुभवी

संग्रहकर्ता

प्राणाचार्ययुक्तिवारिधि.

उपाध्याय श्रीरामलालगणिः

वीर स० २४।३३ विक्रम स० १९।६४

श्रीमुंबई

निर्णयसागर प्रेसमें छपाया

मूल्य प्रथम भाग र ७।

॥ आयुर्वेद प्रादुर्भाव ॥

श्रीप्रभू परममंगल परमपुरुष श्रीऋषभ देवभगवांन पहलीसम्यक्त पायके १३ भव किया जिसमें नवमें भवमे प्रभु जीवानदनामके सर्वविद्यासपन्न वैद्य भये फेर तीर्थंकर नाम पुण्य पैदाकर सर्वार्थ सिद्ध विमान १२ में भवमें गये उहां निर्मल तीन ज्ञानयुक्त मरुदेवीराणीनाभराजाके पुत्रपणे युग ईश्वर १३ में भवमें भये सर्व ससारधर्म चलाया आगे लोकोंकों रोगाग्रसित जाण ऋषभसहिता या ब्रह्मसंहिता नाम आयुर्वेद तीनकाल भूत १ भविष्यद् २ वर्त्तमान ३ विधियुक्त मनुष्योंके हितार्थ रचनाकी अष्टांगोपाग समेत पूर्वकृत अभ्यास औरमति १ श्रुति २ अवधि ३ इस तीनज्ञानके निर्मल बलसें धनजय कोषमें ऋषभदेवका नाम ब्रह्मालिखा है, समवसरणमें चार मुखसे देशना देणेसे फेर जगलमेंसे अनेक औषधी और पृथ्वीगत धातु उपधातु वगेरे रस रसायणरूप रोग दूर करणेकों अनेक युक्तियां निकाली फेर अपणे शतानोंकों यह विद्या सीखाकर परपरा बढाई जिसमे आत्रेयनें ये विद्या पूर्ण सीखी दिनपर दिन रसायणविद्याकी उन्नतीकी ध्वजा फरकणेलगी नई २ सुद्धिकी खोज निकासने लगे तद पीछे स्वामी इस प्रजाके सुखजीवनके लिये तयांसी पूर्व लाखवर्ष राज्यपाला पीछे अयोध्यामें राजा भरतचक्रवर्त्ती भये राजा भरतकू इद्र भी लोकीकशास्त्रवालोंने लिखा है, राजा भरतने ही वेद बनाकर ब्राह्मणोकों पढाया था राजाभरतने ही ब्राह्मण वशकी स्थापना करी तद पीछे वैद्यकविद्या वो ब्राह्मणोंनें सीखी ओर रोंगीयोंका रोग मिटाने लगे एसें असख्य वर्षतक चलते रहा बाद इहां भरतवर्षमें मांस खाणा मदिरा पीने आदिकी कर्त्तव्यताचली ब्राह्मणलोक भी केइयक इसही प्रवृत्तिमें लगकर तरे २ के आसवोंके और तरे २ के मासके गुण ओगुण प्रकास करनेकी खोजमें रहकर नये २ ग्रथ अपणे २ नामोंसें रचकर उसमें आसुरी चिकित्साभी लिखी तबसें चिकित्साके तीन अग होगये दैवी १ मानुषी २ ओर आसुरी ३ दैवी चिकित्सामें धातु उपधातु रत उपरत्नोंका सोधन मारण और परीक्षाकर रोगोपर अनुपानोंसे चावल रत्ती अधरत्ती देकर बडे भयकर रोगोंकों खोदेणा दैवता जैसी कुदरत रखनेवाली दवासो दैवी कहलाती है, सो रसायण रसमात्रा १ (२ रसायण यथा प्रोक्त जराव्याधिविनाशक) रसायण उसीका नाम है, जो बुढापा ओर रोंगोको मिटावे अछी रीतीकी बनी धातुवगेरे रसायण धीरे २ पथ्यमें रहनेसें देरसे फायदा देती है, कच्ची फुकी भई धातु एकवेर भुख तुरत खोल देती और रमनक दिखाती है, लेकिन् पीछेसें उसका फल बुरा है, केइक मूर्खो एसा कहते हैं जडीपत्तीसें फूकी जाय धातु सो अछी धातुसे या उपधातुसें फूके सो अछी नहीं यह बात वे समझीकी है, परमात्मा ऋषभ देवादिकोंसें कोइ वस्तु छिपी नहीं थी उन सर्वज्ञ ऋषिनें एसी विधि दरियाफ्तकरके लिखी है, सो कोइ भी समय बालकसें लेकर बुद्धेतक कभी नुकसान नहीं करे जिस २ प्रका-

रसें धातु उपधातुओंकों जडीपत्तीसें या धातु उपधातुसें फूंकणी बताई है, सो ही प्रकार अमृतरूप है, विनासास्त्र मूर्खके कहणेसें या अणपठ जोगी फकडोकी फूकी दवाका विश्वास कभी नही करना इस वैद्यक विद्यामें गुरुउपदेश और प्रमाणीकशास्त्र और अनुभवीक्रिया कुशलताही प्रमांण है, १ दूसरी जडीपत्तीसें वणे जो दवा सोमानुपी इलाज कहलाता है चीरणा दाग गुलदेणा वगेरे २ तीसरा जलचर थलचर खचर इन प्राणीयोंके अगोपांगकी वणी दवा मद्य प्रमुख यह सब आसुरी चिकित्सा है, ३ यह तीनो ससारमें प्रचलित है, रोगीकू रोग मुजब पथ्य जरूर करणा पथ्य करनेसे, विना दवा भी रोग जाता है, बिना पथ्य कितनाही इलाजकरनेसें भी रोग नहींजाता, हांवा जे वखत कुपथ्य करते भी रोग चलाजाता है, सो हजारोमें एकका, उसमें जो कारण है, सो हम आगे लिखेगें, जहां चेतनशक्ति बलवान होती है, और वेदनी कर्मके परमाणु कम जोर होजाते हैं, तहां यह स्वरूप वणता है, बाकी तो अग्नींमें हाथ देणेसें जलेहीगा इस तरे कुपथ्य समझणा (प्रश्न) डाकदरी दवामे परहेज नहीं सो क्याकारण उत्तर पथ्य जरूर है, नहीं कोण कहता है, उन लोकोका भावार्थ एसा है, सो तुम समझते नहीं जो हमेसा खाणेकी जिसकी खुराक है, वह नुकसान कम करती है, और करती भी है, इसमें बुद्धिका कांम है, जिसकों जो चीज खाणेसें रोग भया है, अगर वह रोगी वही चीज खाते जायगा और दवाभी खायगा देखलेणा फायदेके बदले नुकशांन उठायगा चेतनशक्ति प्रबल होणेपर बिनादवा भी रोग जायगा युरुपीयनदवा अत्यत शीतदेशीयोंके वास्ते और करडेमेदेवालोके वास्ते बहोत फायदेवद है, अपणा देश उष्ण, और नरम वीर्यके मनुष्य है, इसवास्ते दवाका वरतावा देस मुजब ही श्रेष्ठ है, दुसरे आसुरी दवा जिसमे जानवरोका अग और मदिरा टिंचर मिली भई दवा धर्मीयोको विचारणा चाहीये, फेर तो वहबात है, मरता क्या नहीं करता, रुचे सो पचे, सरकारी असपतालोंमे ना वारिसको धर्मादा गरीबोके लिये बहोत ही उपगारणी है, डाकदरलोक इल्मचीरणे फाडणेंमें पास होते हैं दवा वणानेवाले लदनमें दुसरे व्यापारी है, जगन्नाथ वैद्य आगवाला लिखता है, दरसाल बारेकोडरुपये हिंदसे दवाकी बिकरीके विलायत जाते हैं, हिदवाले उद्योगवान होते तो परदेश जाता हुवाधन इहांही नही रहता मूर्ख विद्याहीनोंने वैद्यक विद्याका इतना दरजा घटादिया सो अग्रेजी पढेभये लोक देशी वैद्योकों एक जातके पशु समझते हैं, सो सचाही है, प्रजाभी एसी अणपढ है, सो मूर्ख और पडितोकों एकसीहीसमझती है, मूर्खोंसें इलाज कराते २ असाध्य रोगी होजाते हैं, मूर्खलोकोंने यह भी रुजगार समझ लिया है, सो पचास रोगोके इलाज लिखकर वैद्य वण बेठते है, इसवास्ते खुसामदीसें वेरवेर उसरोगीके घर जाणा और पेसे टकेकी उंठपटागदवा देणा एसोंसें दुनिया बडी राजी रोगी मरे चाहे जिये कारण पढाहुआ वैद्य

मोतब्बर दवाकीलागत और फी लेता वे वखत आताभी नहीं मूर्खोंसे चाहे बिगाडभी होतारहै लेकिन् पैसा नहीं खरच पडे सो अछा मूर्ख वैद्योसें कोइ सहज चेतनशक्तीवाला आरामभी भाग्ययोगसे होजाता है, जेसें अधा अदमी पथर फेंके किसीके न किसीके लगहीजाय लेकिन् निसाणे चोट मारणेवाला कभी नही कहलावेगा एसें समझणा जब एसे मूर्खोंसे अत्यत बेमारी बढजाती है, तव डाकदर या पडित वैद्योंके तरफ दोडते हैं, स्यात् कष्टसाध्य होय तो सोमे पचास सुधर भी जाते हैं, असाध्यका इलाज ही क्या है, अगर एसी बेमारीमें वैद्य दवाके दांम मागे तो केइयक मोतब्बर होकरके भी सुणके सरद होजाते है, बाहिरजाके लोकोंसें कहते है, हमने तो इनोंमें कुछ नही देखा और बडे लोभी है, इत्यादि मनमानी बाते बणाते हैं, लेकिन् एसे लोकोको इतनेपर ही विचारलेणा चहिये एक देशीडाकदर आता है, तो दोरुपे फी लेता है, और दवा सरकारी सफाखाणेकी देता है, जोकी सरकारके पैसे कीहै, और एककी च्याररुपे फी है, एककी असरफी भी है, इसका कारण क्या है, असल कारण इसका यही है, जेसा २ इल्म जादातर होगा उसकी फी भी उसी मुजब होगी बलके देशीवैद्योंकों घरकी तो दवादेणा और न किसीका नोकर है, सर्व खरच इसीपर चलाये चाहता है, इतनाभी विचार नही करते यह सब मूर्खताइकी अधाधूधी मचरही है, इसवास्ते सर्व प्रजाहितकारक जीवन प्राणरक्षक परभव और इस भवका सुधारक यह वैद्यदीपक ग्रथ मेंनें भाषामें बणाकर अज्ञान अधकार दूर करणेको मनमदिरमें यह ग्रथ दीपकवत उजाला करेगा इसमें जरा सदेह नही जो इस ग्रथसे वैद्यकीकी आजीविका करेगा तो भी सफल होगा और भाग्यवांन ग्रहस्थोकों अपने आत्माकी रक्षा कुटुबकी रक्षा करणेकों यह ग्रथ उद्योतकारक है, मुर्ख वैद्योकों पहचाणनेकू यह ग्रथ कसोटी है, बिना पढे एसा होता है, दुहा। सोना पीतलसारखा पीलेकी परतीत। गुण औगुण जाणे नहीं सबकु कहे अतीत ॥१॥ सो अधकार जरूरही मिटजायगा जब पूर्ण वैद्य नहीं मिले तब आप इसग्रथकू पूर्ण वैद्य समझकर इसकी दवा लो जो इसके लिखे अनुसार तुमारा रोग असाध्यमालम देतो कुटुबका बदोबस्तकर मोहजाल छोडकर परभव साधो इह परभवकी सिद्धि इस ग्रथमे है, इसग्रथमें देशी अजमायस दवा हकीमी डाकदरी होमियापैथिक सब च्यारों इलाजोंका सग्रह है, यद्यपिमें प्राकृत सस्कृत शास्त्रीसिवाय अग्रेजी नहीं पढाहु तो भी अग्रेजी पढे फारसी तेलिग महाराष्ट्रादि देसवासीयोंकी सोहबत तथा अग्रेजी दवायोका शास्त्रीमे बगला गुजरातीमें उलथा इत्यादि ग्रथोसे बरतावा देखके डाकतरी और होमियापैथिक दवायें लिखी है, में दक्षण हेद्राबादमें रहकर मुसलमीन हकीमोमें तजूरबेकी ये नुकसे बहोतही हासिल किये हैं, बाकी वैद्यक शास्त्र जो जो मेने परिश्रममें पढाहूं सो सक्षेपमें जीवनचरित्र आगे लिखा सो देखो रोगीके आराम होणेमे चिकित्साके चार

ाये हैं, रोगीकी परिक्षाकरणेवाला वैद्य सो साध्य १ कष्टसाध्य २ और असाध्यकुं पह-
ान करे साधारण रोगमें वडा इलाज नहीं करे कष्टकारी बडे रोगमें छोटा इलाज नहीं
रे देसकाल अवस्था रोगका और रोगीका बल पहचान करणेवाला वैद्य प्रथम पाया १
गकुं मिटाणेवाली सास्त्रकेलिखे मुजब नई या पुराणी शुद्ध दवा मिलणी दुसरा पाया २
ोगीका टहल बंदगी करणेवाला पथ्य तइयार करणेकी चतुराईवाला वैद्यके वचन मुजब
र्त्ता होणा तीसरा पाया ३ रोगी वैद्यके कहे मुजब खारी कडवी दवा अमृतसमान
रके पीवै जो रोगी दवा लेणेकुं इनकार करे सो रोग मिटणा मुसकल है, कहे मुजब
ी पथ्यकरे तो निश्चै आराम होय ये चोथा पाया ४ (वैद्य एसा होणा चाहिये)
(श्लोक)—तत्वाधिगतशास्त्रार्थो दृष्टकर्मास्त्वयकृतिः। लघुहस्तः शूचिः शूरः सज्जोपस्कृतभेपजः॥
त्युत्पन्नमतिर्धीमान्व्यवसायी प्रियंवदः। सत्यधर्मपरो यश्च वैद्य ईदृक् प्रशस्यते ॥ २ ॥
(अर्थ)—गुरूसें अछीतरे शास्त्रकु पढाहुवा होय दूसरे बडे वैद्योकों इलाज करते जिसनें देखा
होय और आप रोगकु पहचानकर चिकत्सा करणेमें चतुर होय और सिद्धहस्त अर्थात्
जिस रोगीका इलाजकरे सो जलदी अच्छा होय सरीर मन और वस्त्रोसे पवित्र होय शूरवीर
होय अच्छी २ औषधी चंद्रोदय प्रतापलंकेश्वर लक्ष्मीविलास चिंतामणि मृत्युंजय रामबाण
सूचीभरण ब्रह्मास्त्रादिक जिसके पास तइयार होय तत्काल जिसकी बुद्धि फिरती होय रोगोके
अनुपानादिकमें बुद्धिमान होय ससारव्यवहारका जाणनेवाला होय प्यारा वचन बोलेणवाला
होय सत्य और दयाधर्मका धारणेवाला होय एसा वैद्य लायक तारीफके होता है ॥ २ ॥
(श्लोक)—व्याधे. तत्वपरिज्ञानं वेदनायाश्च निग्रहः। एतद्वैद्यस्य वैद्यत्व न वैद्यप्रभुरायुषः ॥३॥
(अर्थ)—रोगोके पहचाणनेका पांच कारण जो निदानादिक उस तत्वका जांणकार होय
रोग मिटाणेकी औषधी पथ्य बताणेवाला होय वैद्यकी वैद्यकता इतनेमे ही है, लेकिन्
आयुष्य देणे समर्थ नहीं ॥ ३ ॥ (अब निषेध वैद्यके लक्षण) (श्लोक)—कुचैलः
कर्कशः स्तब्धः कुग्रामी स्वयमागत. । पच वैद्या न पूज्यन्ते धन्वतरिसमा अपि ॥ ४ ॥
(अर्थ)—देही और वस्त्रकरके मलीन करडा कठोर वचन बोलणेवाला अभिमानी खोटे
गांमका वासिदा और संसार व्यवहारका नहीं जाणनेवाला विगर बुलाये चला आवे ये
पांच वैद्य धन्वतर जेसा भी होय तो भी पूजणेलायक नहीं॥४॥ (अथ रोगीके लक्षण)
(श्लोक)—आयुष्मान् सत्ववान्साध्यो द्रव्यवानात्मवानपि। उच्यते व्याधितः पादो वैद्यवा-
क्यकृदास्तिकः ॥ ५ ॥ (अर्थ)—आयुवाला होय बलयुक्त साध्य द्रव्यवान् होय ज्ञानी
वैद्यका आज्ञाकारी और आस्तिक अर्थात् वैद्यपर श्रद्धा रखणेवाला होणा ॥ ५ ॥
(उत्तम औषधीका लक्षण) (श्लोक)—प्रशस्तदेशसंभूत प्रशस्तेहनि चोद्धृत। अल्पमात्र
बहुगुणं गंधवर्णरसान्वितम् ॥ ६ ॥ (अर्थ)—उत्तम जगेमे पैदा भई होय और शुभ-
दिनमें निकाली होय थोडी भी देणेसे गुण बहोतकरे दुर्गंधरहित देखणेमें अच्छी रसयुक्त

एसी औषध उत्तम है ॥ ६ ॥ (खराब औषधीके लक्षण) (श्लोक)–वल्मीककुत्सितानूपश्मशानोखरमार्गजाः । जंतुवन्हिहिमव्यासा नोषध्यः कार्यसाधकाः ॥ ७ ॥ (अर्थ)–इतनीं- जगेकी औषधी रोग मिटाणीवाली नही होती सांपके ववीकी खोटी जमीनकी जलके पासकी श्मसाणकी ऊखरकी जहां चूना निकलता होय उस जमीनकी और रस्तेकी कीडोंकी खाई भई अग्निसें जलीभई जाडेकी जलीभई एसी दवा रोगोंकों नहीं मिटासकती ॥ ७ ॥ (श्लोक)–स्निग्धोऽजुगुप्सुर्वलवान्युक्तो व्याधितरक्षणे । वैद्यवाक्यकृदश्रांतः पादः परिचर स्मृत. ॥ ८ ॥ (अर्थ)– दूतके लक्षण) नवी अवस्थाका ताकतवर रोगीकी रक्षाकरणेमें तत्पर वैद्यके हुकमका करणेवाला आलसरहित एसा टहल बदगी करणेवाला परिचारक दूत होणा ये च्यार पाये विना रोगीकी लंबी ऊमरविना नहीं मिलते ससारमें सर्व इल्म सीखणा फायदेबद है, जिसमें भी दोयसें तो जरूर वाकब होणा चहिये प्रथम तो तन दुरस्तीका इल्म सोशास्त्रोंमें लिखाभी है, (श्लोक) धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीर साधनयतः । अतो सम्यक्तनु रक्षेन्नरकर्मविपाकवित् ॥ ९ ॥ (अर्थ)–धर्म १ धन २ काम ३ और मोक्ष ४ ये च्यारोंका साधन शरीरसें होता है, इसवास्ते कर्मोंके फल जाणनेवाले पुरुषोंनें रोगोंसें शरीरकू हमेसां बचाणा यह श्लोक सारगधर सहिताका है, बाद सरकारी कायदेसें जरूर वाकब होणा नहीं तो तन मन धन तीनोंकों तकलीफ पोहचती है, यद्यपि सर्वज्ञका धर्म पूरा जांणके शक्ति मुजब और समय मुजब चलणेवाला इस शरीरका सुख और सरकारके कायदोंकी पाया बधीवाला ही होता है, तोभी विशेषज्ञान करणेकों वैद्यदीपक ग्रंथकू घरमें जरूरही रखना शरीरका साधन है, और कायदेकुं समझणेवास्ते ताजी रायत हिंन्द समझणा जरूर है, इसग्रथमें एसी दवायोंका सग्रह है, सो सबसें बणसके इसीवास्ते ही डाकटरी और होमिया पैथिक इलाज भी लिखा है, यह दवाया बहोत जगे मोल विकती है, जो नियम रखते हैं, उनोकेवास्ते शुद्ध देशी इलाज लिखा है, मेरे इसग्रथके जाहिरकरणेका यही मतलब है, के शरीर तो नासमान है, जो कुछ अजमायसी काम और इलाज है, उसकू जगतमें जाहिरकर देणा इल्म लेकर वांटणा यही कल्याण है, छिपा २ के रखणेपर आर्योंकी यह दशा होगई ये बात नापसद है, धन्य है, सरकार अंग्रेजका राज्य जिसमें इल्म सिखाणेकू जगे २ इस्कूल रोगियोंके लिये दवा खाणा सडकें दरखत पाणीके नल रोसनी चिठी मणियाडरमाल वगेरे घर बेठे पोहचाणेकों पोष्ट जो पुस्तक सोरुपेसें नहीं लिखाइ जाती सो आज ३ च्यार रुपेमें सुद्ध और जिल्दबधी समेत मिलणे लगी एसे छापाखाने कहांतक तारीफ लिखें हमारे घडे २ एसेथे वो बात क्या काम हमारे आंख चलता प्रत्यक्ष उपगार सरकार अंग्रेजका हम देखते हैं. इनका राज्य शासन अखड रहे यह हम अत.करणसे चाहते हैं, जिसके राज्यमें सिंघ और बकरी एक घाटपर पाणी

होरही है, अर्थात् बदमास लुच्चोंकों दंड और सज्जनोंका प्रतिपाल होरहा है, राज्यधर्म एसाही श्रेयकारी है, किं बहुना.

पुस्तकमिलणेका ठिकाणा बीकानेर राजपूताना बडा उपासरापास उपाध्याय श्रीरामलालजीकी विद्याशालामें ये पुस्तक मिलेगा निछरावल रु ७।) पोष्ट खरच परदेशी ग्राहकोंकु जुदा पडेगा दसपुस्तक एक सग लेणेवालेकू रु. १०) सइकडे कमीसन मिलेगा.

हमारे इहां इतनी पुस्तकें छपीभयी तइयार हैं.

करुणावत्तीसी दादा गुरुदेव गायनपूजा.	।)
शोलेचाणक्य स्वरोदय शकुनावली भाषा.	।।।)
सिद्धमूर्त्तिविवेकविलास मूर्त्तिमंडणका अद्भुत ग्रथ	।।)
खरतरगछतप गछ ३७ पूजा गायनविधि स्तवनों समेत.	२)
श्रावग व्यवहार चतुराईका चमत्कार अनेक दृष्टांत.	१।)
रत्नसमुच्चय जैनीयोंका सर्व धर्मकर्त्तव्य रत्नसागरसें दोयसे वस्तु ज्यादा.	५।)
वैद्यदीपक भाग पहिला.	रु ७)
भाग दुसरा छपेगा.	रु ३।।)

रोग नहीं होणेके सामान्यकारण फागुण चेतके महीनेंमें गुड नहीं खाणा आसोज कातीमें बहोत नहीं खाणा पोसके महीनेमे भूखा नहीं रहणा तो अदमीके रोग नहीं होता वेशाख जेठके महीने टाल दस महीनेदिनका सोणा नहीं दस्त पेसावकु रोकणा नहीं रातकूं जागणा नहीं वसंतऋतू टालके, वहोत जल पीणा नहीं टेमसें ज्यादा या कम गरिष्ट पदार्थ खाणा नहीं असाढ सावण भादवे तीन महीनेमें मैथुन करणा नहीं बरसात बरसतेमें कुपथ्य नहीं, सरदऋतूमे जल ज्यादा पीणा भोजन करके ऊपरसें जल पीणा नहीं विना मिठे डालाभया गरम किया भया दूध भोजनपर पीणा हाजमा नहीं होय तो सींधानिमक भुनाजीरा डाल छाछ पीणा दूध पीणा नहीं भोजनकर २।। घंटे पहले मैथुन नहीं करणा स्नान नहीं करणा २।। घंटे पहली तेल नही मसलाणा पग चंपी नहीं करणा भोजनकर रस्ते चलणा नहीं दोडणा कुस्ती वगेरे २।। घटेतक करणा नही भोजन कियेवाद २ घडीबाद थोडा २ जल पीणा २ बखत हद ४ बखत रातके भोजन करणेसे प्राय हेजा और जलदर रोग होता है, पांनबीडेमे १३ गुण है, तोभी खूनकी तासीर तथा पित्तरोगीकू खाणा नहीं पांनबीडेके पहिलेके दो पीक थूक देणा तीसरा गिटणा पांनकी डडी तोडदेणा पांच घटे बीतेविगर भोजन करणा नहीं गरमीकी मोसममें ज्यादा मैथुन करणा नहीं भोजन करणेके पहले जल पीणा नहीं भूखा प्यासा रस्ते चलाभया दस्त पेसावकी सकायुक्त मैथुन करणा नहीं पाव उघराणे फिरणा नहीं सिरपर वोझा उठाणा नहीं उकडू आसन बहोत बैठणा नहीं रातकूं सातघटेसे ज्यादा नींद

लेणा नहीं च्यार घडीके तडके पीछे मैथुन करणा नही तुरतका जमाया दही खाणा नहीं ऋतुधर्म वध भई वृद्धास्त्रीसें रजश्वलासे रोगीस्त्रीसे चंडालादि अधमजातिसें मैथुन करणा नहीं मैथुनबाद जलपीणा नहीं दूध पीणा पांन बीडी खाणा हवाखाणा शरीर दबाणा गरम सुहावते जलसें स्नान करणा ॥ सूर्यकी धूप ज्यादा लेणी नही ठडकालमें पीठकी तरफ धूप लेणी अग्नि ठडकालमे सामनें दूर धरणी जहरी चीजोंका धूआ लेणा नहीं गाजा सुलफा मदत चडूल पीणा नहीं अशुद्ध और अग्निमे कची रही धातू उपधातु यानाज वगेरे खाणा नहीं कसके पगडी बांधणी नहीं गरमागरम भोजन करणा नहीं ज्यों वहोत ठंडाभी खाणा नहीं विनाकारण क्रोध और अहकार करणा नहीं उचित समय चूकणा नहीं, विश्वास प्रतीती होय तोही करणा असलसेखता नहीं कमसलसें नफा नहीं। नीमें हकीम खतरे ज्यान नीमें मुल्ला खतरे इमान १ अर्थात् हकीम और उपदेशक ये दोनों पूरे पडितहीकी दवा और उपदेश कवूल करणा गलीमें २ दवा फूकी धातु वेचे उनोसें लेणी नहीं लेणी तो जो वो दवा अछी तरे फूक जाणता होय उसकी आज्ञासे लेणी विना जाणी कोइभी चीज मूमें डालणी नहीं राजका महसूल चोरणा नही विना-कारण जीवदया टाल झूट वोलणा नहीं चोरी छोटी या वडी करणी नहीं औरतोंकीमे फिलमें रातदिन वैठणा नहीं काम व्यवहार विचारके करणा वडे २ भाग्यवान पडि-तोंकी और सकटमें सहाय करे एसोंसें दोस्ती करणी अणजाणे जलमें घुसणा नहीं ठडे जलसे स्नान कर गरम भोजन करणा नही गरम जलसे स्नान कर ठडा भोजन करणा नहीं रोगी आदमीके सग भोजन करणा नहीं उसके विछाणे सोणा नहीं धूपमें फिर कर गरम शरीरसें जल पीणा नहीं स्नान करणा नहीं जहरी जानवर तथा दुष्ट पाडोसी होय तो निशक सोणा नहीं लड्डु वगेरे खानपान रग बदले दुरगध आवे मुदत वीते वाद खाणा नहीं पत्तोंका साग जादा मिरच मसाला खटाइ हींग तेल गुल खाणा नहीं रोगके मुजब पथ्य करणा यथाशक्ति दान ग्यान हमेसां सीखणा या सुणना इल्मकी और सत्य वोलणेवालेकी कदर देव गुरुका दरसण कर स्तवना करणी इनवातोंसे दीर्घायु और रोग नहीं आता इति ॥

(प्रश्न) आप यह अपूर्व वैद्यक ग्रथकेसें अभ्यास किया क्योके मारवाडमें इन दिनोंमे रस विद्याका प्रचार वैद्योमें नहीं देखनेमे आता है और जो कुछ रसकपूर हिंगूल पारा वगेरेकी असुद्ध दवाका धूआ पीणा वफारा मूआणा इत्यादिक सुजाक गरमी गंठिया भगदर कीडी नगरा आदि रोगोंमें देते हैं उसमें कितने एक रोगी एक वेर आराम हो जाते हैं फेर अनेक नासूर कोढ रगतपित्त गठीया तालवा गलणा स्वरभंग शरीरपर चकत्ते देह भयानक रूप सोजा आदि अनेक रोगोंकों भोगते मरणात कष्ट पाते हैं फेर चतुर वैद्यसेंभी एकाएक नहीं सुधरते इसवास्ते हमारे मारवाडी अज्ञानी केइयक विनासीं

ग पूंछके एसा कहते हैं की धातु सर्वथा नहीं लेणी इहांतक रसोंका विश्वास जाता रहा और आपने वडे२ भयंकर रोग मिटाये सो इसधातुहीकी दवायोंसें वारा वर्षसें हम देख रहे है आपके रसोसें विगाड आजतक किसीका नहीं देखा यहभी आपके अनुभवका विज्ञान अधिक देखा सो रोगी जो असाध्य होय तो उसका नहीं सुधरणा जो आप फुरमाते हो वो सइकडो जगे हमने पतवाणा है फेर किसी वैद्योंसे हमने सुधारता नहीं देखा नही सुणा है इस वैद्यविद्याकी आपके इलाजोंकी प्रससा हमने वहोत२ ब्राह्मणोंसें जेनीयोसें अनेक दिसावरोंके अच्छै२ पडितोसें सुणी है हम तो आपके कृपाभिलाषी विद्यार्थी शिष्य हैं तारीफ लिखे जितनी लिख सकते है लेकिन् हाथ कगणकों आरसी क्या हजारों वैद्य गणतारोमें आप चद्र है धर्मके न्याय पक्षमें आप सूर्य है जो किसी समझदारने आपके मुखारविंदकी अनेक नयोंकरके युक्त वाणी और समय२के दृष्टांत सुणा है वो तो धन्यवाद दिये विगर कभी रहा नहीं और रहेगा नहीं और आपकेपास इस वैद्य विद्याकी जिसने संथा ली है वो जगतमें अवस्य मांनने और पूजा प्रतिष्ठाके दरजे पहुंचा है, ओर आपका हृदय इस विद्या दानमें एसा निर्मल कल्पवृक्षकी उपम हे सो अतःकरणसे आप सिखा देते हैं कपट विलकुल नहीं रखते ईश्वरसे हमारी यही प्रार्थना है आपका यह अमूल्य चितामणी रत्नरूप जीवितारोग्य चिरस्थाई रहे जिसमें विद्या भास्करके प्रकाशसें दुष्ट कुमतिरूप अधकार आर्योंके हृदयसें निकलता जाय किंवहुना कलम पुष्करणा मुहता प० विष्णुदत्तशर्मा विद्यार्थी शिष्य हाल मु० लातुरका गौड प० कमलनयनशर्मा विद्यार्थी शिष्य हाल मुकाम कुरुक्षेत्र का उ० श्रीउदय-चदजीगणिः वीकानेर विद्यार्थी प० श्रीजीवणमलमुनिः विद्यार्थी मु० वीकानेर श्रीज-गन्नाथदाधीचमिश्र शर्मा विद्यार्थी शिष्य मु० वीकानेर से। श्रीनथमल विद्यार्थी मु० कलकत्ता प० भेरुलाल आसोफा विद्यार्थी शिष्य दाधीचशर्मा इत्यादि अनेक वि-द्यार्थीयोंके प्रशसापत्र शुभ ॥

(उत्तर)—अहो प्रिय पाठकगणो मेरी जन्मभूमि वंगाल देशमें मुख्य राजधानीमें मुरसि-दावाद वालूचर जीयागज है उहां कोटविक द्विज सारस्वत गोकुलचंद्र मेरे पिताका नाम है माताका नांम वसती था जव में सात वर्षका भया तव पिताने वगला सीखणे विठलाया लेकिन् माष्टरके भयसें फेर सीखणे नही गया ये वात इकवीसे सालकी है विक्रमशताब्द् उगणीसके खेल कुतुहलमें मस्त रहता मेरा पिता नोकरीवास्ते रंग पुर गया पीछेसे २२ का काल पडा मेरी मां कइंया साथ असपतोंके इहां कार्य करणे रही में रायवहादुर श्रीलक्ष्मीपतिसिंघजीकी कोठीमें रहता राजा वावू छत्रसिंघजीके पास टीपीका खेलमें मस्त रहता उस वखत मुलतानका कोठारी मोतीलाल जो वडी कोठीके दांनशालामे गगाकिनारे रहता था उसने मुझे रेल दिखाणेके वाहने अजीमगंज ले गया मेनें अपूर्व वस्तु देखी यह वात साल तेईसके पोपकी है मुझे कहा रेल चढेगा मेंने वडे

हर्पसें कहा चढ्रगा उस दिनोंमें मेरा पिता पांवसें किसी जखमी फोडेसे लाचार होय वालूचर आया था हलचल नहीं सकता था मेरे भाइ या बहन नहीं थी एकाएक था उस वणिक धूर्त्तने मुझसे घोला तेरे पिछाडी कोन है मेंनें मावाप बताया तब उसनें सोचा होगा स्यात् सरकारी एनसें पकडा न जाउ तब मुझे पीछा धरमगोदारेमें विठलाके वालूचर भेज दिया जबसें में मेरी मासे रेल चढा ये नित हठ किया करता दिन १५ या २० वाद एक दिन सडकपर लाखकी टिप्पी खेलतेकू पूर्वोक्त धूर्त्तनें मुझे फेर बतलाया मेने कहा रेल चढाओ उसने कहा तेरी मासे पूछवा दे में उसका हाथ धर घरकी तरफ ले चला वो धूर्त्त मेरे पिताके भयसे घरके पास सडकपर खडा रहकर मेरेकू घोला तेरी माकू इहा बुला ला में जबरदस्ती रोकर माकू बुला लाया मेरा बाप पीडासे विकल था धूर्त्तने कहा में नलहट्टी जाताहु तुमारा लडका केइ दिनोसें रेल चढणेवास्ते कहता है अगर तुमारी इजाजत हो तो में परसु पीछा आउगा सो लेते आउगा मेरी माने रहनेका पत्ता उसका पूछा और आज दिनतक किसी साहूकारने उहां एसी कपटता करी नहीं थी भवतव्यता प्रवल दुसरे दिन प्रभातमू आधारे रेलपर मुझें लेगया उहां एक वुड्ढेभी टिकटले आवेठे वो परम पूज्य श्रीसाधूजी महाराज धनरूपजी नांमके यती थे ऊमर उनोकी ६० की थी बस दिल्ली पहुचे वो धूर्त्त उनोसें खरचा लेकर मुलतान चल धरा हमारे आधार उस परम पुरपका रह गया २३ के फल्गुनमे बीकानेर पहुचे वडे शांतशील पुरुपोत्तमनें पढाणा सरू किया आखिर हेमकोश तक पढ गया पीछे व्याकरणचद्रिका डीड वाणेके वासिंदे ओदीच्य ब्राह्मन श्रीरामचद्रजी पट् शास्त्रीसे डेढ वर्पके करीव पढा कुछ गुरूजी गुसाइसेंभी पढा जब वारे मासी धर्म कर्त्तव्य जीव विचारादि पद् प्रकरण सूत्र पूज्यने पढाये अनुक्रमसें अठाईसकी साल माघवदि तेरसको पडित पदकी दिक्षा देकर द्विजन्मा बणाया हमारे पूज्यके वडे दो शिष्य थे प० श्रीहर्पचदजीमुनिः प० करमचदजीमुनिः वडे शिष्य गुरूसें अलग रहते थे पूज्यने मकसूदाबाद जाते अपणा सर्वस्व द्रव्य वोसिराय छोटे शिष्यके सुप्रत कर दिया था ये पढणेमें लिखणेमें पूठे फाटीये बणाणे कतरणीके काम कोरणी करणेमें पुस्तककी पटडी गत्ता बणाणेमें अद्वितीय विश्वकर्मा थे गूथणा रगणा सीणा और तंत्रविद्यामें वडेही प्रवीण थे उनोनें केइयक चमत्कारीक तत्रभी मुझें सिखलाये थे बाद किसी कारण योगसे उनोंका मेरेपर द्वेप पड गया सत्य है क्रोधादिकपाय गुणस्थानक चढते उपशम श्रेणिसें इग्यारमें गुणठाणसें मुनियोकों नीचे गिराता है अज्ञानके वस सब अकृत्यवण आता है, आजकलके मनुप्योंकी तो चकारीही क्या में सगतसे भग पीणा और मेहका फाटका करणे लगा सगतका असर बुरा है (दुहा) सतसगसें सुधरे नही, सो मोटा निरभाग, कुसगसें बिगडे नहीं, ताका मोटा भाग १ उनका द्वेपभी मेरे हितके वास्ते भया निर्वाहका

जतियोंके नामका डंका वजाया वाद वेगम वजार हेदरावाद इकतालीसमें मकान भाडे लेकर जा रहा वैद्यक परिश्रम करणा सरू किया रातको दो वजेसें ७ वजे तक पढता पांच ग्रथ मूकर लिये माधवनिदान योगचिंतामणी सारंगधर वैद्यजीवन और कामिल २ श्लोक निघट रत्नाकरके खैर इसही अभ्यासमे हमारे श्रीपूज्यजी महाराज चंद्रसूरजी उहां पधारे उनोंकी सरवरावास्ते सेठ संघमुख्य मगनमलजी श्रावकसें मुलाखात भई महाराजकी सरवरा वहोतही करी लेकिन् मेरे पढी विद्याका रमणक और राज्य सभाकी वाकवी और इलमका तजुरवा इसी पुरुषकी संगतसें वढते चला में इहांतक सरलथाकी धूर्त्तोंके हाथ हजारों रुपे विश्वाससें दे देकर ठगाये गया व्याजके लालचसें वहोतोनें गिरीवीमें खोटा माल विश्वाससें धर२के ठग लिया मीयां कमावे मुठे२ अल्ला ले गया उठे२ वो हाल लातूर पेठ तीन वखत साहूकारोनें इलाजकेवास्ते वुलाया उहां सातोंइ धातू क्रमसें फूकी विद्यार्थी विष्णुदत्त जव हमारे पासही रहता था अभ्यास करणे हैदरावादमें करीव १० ब्राह्मन आते थे विद्या वहोत पुखत और तरकी परथी रोगोका इलाजभी होणे लगा जस वढणे लगा वडे२ वैद्य च्यारोंसे मोहवत वंधी सभइया तैलग ब्राह्मण वैद्य धुरधर ७० वर्षका सिधू मुनरवाड तैलग ये डाकटरी और रसक्रियामें वडाही प्रवीण था इसकी सगत और इस रसोंकी नइ२ तरकी वकी हमेस पहर२ भर गोष्टी भया करती रामलालजी पारीक ब्राह्मण थे आत्मारामजी दादू पंथी वूंदीवाला साक्षात दुसरा धन्वंतरी था उसका विद्यार्थी गणेशलालजी जो कोटेमे रहते हैं उनोकी खरल इनोंने छ वर्ष घोटी थी इनोंसें मेरी वडी प्रीती थी इन तीनोके सग मेरा इलाजोंका रोगीयोपर केइ वखत काम पडा था चोथा लोका वापू तैलग ब्राह्मन अनुपांनके वदलणेमें और रसोके वरतणेमें वडा नामी था उसका इलाजभी शिवलाल मोतीलाल पीतीकी वेटीका जापेमें हिस्टिरीया तथा और दोचार जगे इलाज देखणेमें आया सभइयेने केइयक धातु तांवेश्वरकी अभ्रककी सहज तरकीव फूकणेकी वताइ कच्ची धातू रह जाय उसकी परीक्षा वताई काष्टादिक तथा जहरादिकोंके सोधणेकी तरकीव वताई सेठ श्रीमगनमलजी के इहां दो वखत जीमणा दोनों वखत उनोसें वातचीत हरेक वात धर्म सबंधी वैद्यकके सातों अंगकी भया करती उनोंके सहारेसे नफे नुकसांनकाभी कुछ खयाल भया दोनों भवोका राजमृगांक पारदभस्म हेमगर्भ पोटलीरसभी इनोंकों मेनें वणाकर दी हेमगर्भ पोटली रस इंकन्ना कच्चे गांधीनें वणाणी सिखलाई जिससे वुद्धिद्वारा सव पोटलीरस मुझे वणाणा आगया चद्रोदयभी मेनें अपणे हाथसे दो वखत वणा लिया पारेके शुद्द करणेके आठोंइ संस्कार मेंनें केइ वखत कर डाला इस सस्कार विधिकों सभइया महाराष्ट्र द्रविड वडे२ विद्वान वैद्योनें मुझे अतीव२ धन्यवाद दिया साल पेतालीसमें हमारे गुरु करमचंदजी हैदरावाद पधारे उनोंकी सेवा पांचसे रुपेसें करी तव उनोनें प्रसन्न होकर

रावण पताका सूर्य पताका आदि ३५ यंत्र और जैनाम्नायके रोग मिटाणेके सो मंत्रविधि समेत पतवाणे भये पताये सो सच सत्य फलद थे वो फेर सिद्धगिरी गिरनार यात्रा कर बीकानेर पधारे हमारे शिष्य श्रीमाली ब्राह्मनकू दीक्षा जा करदी बाद ढूढक मत परास्त नाटक गुजराती छापेका एक जेठा कच्छी श्रावकने भेट की वसीधरलालाने अज्ञान तिमर भास्कर और आर्य देशविवस्था भेट की इन तीनोंके पढणेसे वेदशास्त्र व्यवस्था और दयानंदजीका छद्म इत्यादिमें वहोत वाकच हुवा साल छयालीसमें गोविददाश सरावगीका इलाज करणे मुबइ गया पीछा जब आया तब आर्यासमाजी याज्ञेश्वरानदकी सभा भई केइयक ब्राह्मन विद्वान चर्चामें साक्षी थे नियम था ना जवाब होय सो धर्म छोडे तीन दिन वडी चर्चामें खडन मडन विपय वहोत चला आखिर सब ज्ञुचार्योंकी विजय पाकर श्रीनेमचदजी जैपुरवालोंके समक्ष १० जती और छ्या लीसकी आखा तीजकू शिष्य हमारा जती बणाया सभानें तथा शिष्यने युक्ति वारिधिः पद लिखा मुबइमे श्रीधर शिवलालसें विक्रियार्थ २५ रुपे सइकडे कमीसनसें व्याकरण काव्य कोश वेदात न्याय छद अलकार नाटक ज्योतिप वैधक भारत वाल्मीक संप्रदायोके अनेक शास्त्र कमीशन द्वारा वेचणे लगा और वाचते रहता दो वर्पमें अन्य मतातरीयोंके पौराणादिक अनेक पूर्वोक्त शास्त्रोंके रहस्यका जाणकार होगया लक्ष्मणभट्टको मेनें वडे कष्टसें बचाया था वो श्रीरामपडित निजाम सरकारका पांचमे रुपे मासिक पगार पाणेवालेको वेद पढाया करता उसके भाइका जीर्णज्वर उपद्रव संयुक्त मेंनें इलाज किया आमदरफतसें जर्मनके छपे वेद साठ हजार मुझें बतलाया ब्राह्मन सिवाय वेद कभी ब्राह्मन सुणना पढणा तो दूर रहा लेकिन आखोंसें पुस्तक कभी नहीं दिखाते लेकिन् ससारमें धन्य२ महिमा है, इस वैधविद्याके उपगारकी सो वो भट्टजी और पडित श्रीरामजी अतरगसें सब मूल और अर्थ मुझे बतादिया जब जैनोकी वातकभी मूपर लाते तो आखिर उनको जबाबमें मौन ही करणा पडता इस तरे चारोंही वेदोंका सारांस समझणेमे आया और केइयक हस्त लाघवता रसायण क्रिया अनेक चालाकोसें अपणे जाती कायदेसें हासलकी (सर्व धूर्त श्वेतावरा) इति वचनात् सवत सेतालीस तक बीकानेर आणेका दिलमें विचार बिलकुल नहीं था फकत शिखरगिरीकी यात्रा और कुटब यात्रा आदि कल्याणकभूमि परमेश्वरोंकी उमेद किया करता हीरालाल अग्रवालाकी सोबत दिगवरसें समयसार नाटक और तत्वार्थ सूत्र दसु पढे तबसें दिगवर वार्तालापसें सनातन धर्मवालोमें तर्क पैदा होणे लगी कारण दिगांबर मत जिन शेनाचार्य पुर्वधारी एकका शास्त्र लिखा भया है सनातन श्वेतांबरोका शास्त्र पांचसे आचार्योंकी सम्मतीका लिखा भया है मुख्य देवर्द्धि गणी आचार्य और चारे हजार साधू जमा भये थे उहासे चीणापट्टन होकर मलेवारमें कोंची अलफाई वदरमें सेतालीसका चतुर्मास किया बाद हैदरावाद आया चित्तमें विरक्त-

ताका चिन्ह पैदा भया एक दिन उपवास पारणे एका सणा एसा दो महीने किया गरम जल पीणा सचित्तका त्याग उभय टंक प्रतिक्रमण आगे हमेसा दुविहार व्रत रात्रीका था तबसें नित्त चोविहार और नवकारसी वारे हजारका नगद हाथसें रसोइ करणेका त्याग इत्यादि वहोतसे आरंभ घटाया व्रत साफ किया उहांसें माघमें कलकत्ते गया उहां लालागिरधारी लालजीसें वहोत शास्त्रार्थका लाभ भया २५ दिन रहकर शिखरगिरिराजकी यात्रा करी मकसूदावाद वालूचर गया कुटवके२ च्यार अदमी मिले मातापिताका देहांत हुये वहोत अरसा भया सुणा वालूचरमें सघके आग्रहसै अडतालीसका चतुर्मास किया उत्तराध्ययनजी विपाकजी वीश स्थानक चरित्र आचारांग शप्त व्यसन चरित्र श्रेणिक चरित्र हरिश्चंद्र चोपई मानतूग चोपई शुकराज चोपइ आदि केइयक अपुर्व ग्रथ वांचे समवायांगजी सूत्रभी विचारा वाद श्रावक श्रावकएयोंसंग चपापुरी पावापुरी राजग्रही गुण शिलादि पूर्वकी वहोतसी यात्रा करी फेर मकसूदावाद जाकर गुरुजी करमचंदजी हेदरावाद फेर गये और सर्व सामान भांगके भाडे वेचकर दवायां और लिखत पुस्तक लेकर वीकानेर चलधरे जववास्ते पुस्तकोंके मेंभी वीकानेर अडतालीसके फागुणमे आया सुद १४ को वडे उपासरेमे रहा महीनेवाद श्रीपूज्यजी नागोरसें मडोवर पधारणे भेरुंजीकी यात्रावास्ते मेभी गया उहां पूजा आधी रातकू पूज्य और जती लोक करणे लगे मे थभेके आसरे अडग्गा खडा रहा और आधी घंटेसे स्वतः मेसमेरि जमका मकनातीस मालम दिया ये वातमें प्रकाश कर नहीं सकता उस दिनसें ये चमत्कार दैवत्वपणेका मेने पाया रोगोपर दृष्टिपास हस्तपासादि क्रिया व्यवहार पास अलक्षताकी सिद्धि रोगोंकी केइ कामोकी भई जो एक कसर [illegible] वर्षकी ऊमर पहले उगणीसमें होगइ थी अगर वीस पूरे हो जाते तो वहोतसी सिद्धियां में पूर्व पुरुष जतीयोंके सिद्धताकी कर सकता ये विद्या अष्टांग योगके अव[illegible]हीकी है ऊपर लिखा सो नांम एक अंग्रेजका धरा हुवा है फेर तो जागती कला जागत[illegible] जोत वगेरे केइ पुस्तके देखी इस कायदेकी लेकिन् वो पूरी नहीं थी वाद आत्मामें अनु[illegible] इस विद्याका प्रकास किया वीकानेर सुक्षेत्र समझके रहा मेरा विचार फेर वैदगी करणेका नहीं था लेकिन् जैनकोमहठयोगकी क्रियाके पक्षी दंभीयोंका वडा आदर ज्ञानी ध्यानी और समयानुसार मध्य वृत्तीवाले इनोके कोण गिणतीमें खैर भिक्षावास्ते जाता जो हाल वणता सो लिखते लज्जितपणा है आखिर जब इहासें जाणेका इरादा ठहराया तो उ श्रीतनसुखजीनेजवरन मुझसें कहां तू वीस वर्षसें फिरता आया है गुरु तेरा वृद्ध है तव उनोनें रोटी वगेरेका एक सेवगकू रखकर वदोवस्त [illegible] वोले जो वोझलदकर गांम २ फिरणा होय सिरके केस [illegible] रंगो तो वीकानेरमें भक्ती और मांनता होगी नहीं तो [illegible] धर्म पालकर

अपणे जतियोका इल्म प्रगट करो वो हित शिक्षाकूं मेंने तीन दिन विचारी उसमे ये श्लोक याद आया यतः माया श्वेतांबरे प्रोक्ता, पैशुन्यं च दिगांबरे, बुद्धिर्वसति बौद्धेषु, मूर्खत्वं शिवशासने १ तब उनोंसे कहा पौरपघ्नी भीख मुझे मांगणी नही उपगार करणा और कलाकौशल और विद्यासेंही निर्वाह करणा गुरु परपरा श्रीसाधूजी महाराज छोकरे पढाते पूजणीमाला पुस्तकादि धर्म व्यवसाय करते थे मुझे पुनर्यें विद्या लब्धि फेरणी सरू करणी पडी जबसें ये ग्रंथभी वैद्यदीपकका संग्रह सरू करणा किया पत वाण २ लिखता गया डाकतरीकी वडी किताब गुजराती अक्षरोमें २० हजार करीब ग्रंथ एक फारसीकी बणाई मगनमलजी पासथी उसकू में वरसों तक पढी थी अब इहांपर बहोत ग्रंथ मुझको मिले और पढा उ० श्रीहिमतमलजीसें प्रश्नोत्तर सार्धशतक हीर प्रश्न सैन प्रश्न विशेष शतक धर्मानंद प्रश्न सदेह दोलावली ओसवसावली इत्यादि १५ ग्रथ मेने लिखे और लिखाकर पढा सवेगी साधु श्रीहसविजैजीसें इणपारे अपूर्व ग्रथ लेकर लिखाये पढे स्यादवाद मंजरी स्याद्वादरत्नावतारिका द्विज मुख चपेटीका दिगवर चौरासी वोलके प्रश्नोत्तर सम्यक्त सप्तति अर्हन्नीति आदिक मुनी पूनमचदजीसें अगचूलिया सूत्र वगचूलिया सूत्र मुनी सवेगी भक्तिविजैजीसें गायत्रीकी पद्मतोकी व्याख्या इत्यादि हजार रुपेके अपूर्व ग्रथ लिखवाया छापेके जैनतत्त्वादर्श समकित शल्योद्धार ढूढक मत समीक्षा चतुर्थ स्तुतीनिर्णय गप्पदीपका समीर पालनपुर प्रश्नोत्तर संबोध सत्तरी योगशास्त्र भरतेश्वर बाहूबली वृत्ति धूर्ताख्यान क्रिश्चियनमत समीक्षा सीत्तर पुस्तक जैनके छापेके पढे और मोल लिये चार अपूर्व ग्रथ सेठ चांदमलजी ढढाके पाससे लेकर पढे सगीत शास्त्र १ मेसमेरिजम विद्या २ गौतमजीका न्यायसूत्र ३ सत्यामृत नास्तिकोंका ४ आगम प्रकाश सत्यार्थ प्रकाश इत्यादि केइयक ग्रथ स्वर्ग नरक नहीं मानणेवाले और ईश्वरकू जगत्कर्त्ता मानकर कलक लगाणेवाले नास्तिकोका पढा आस्तिक नास्तिक सवाद मनुस्मृती गणित लीलावती शिक्षा दर्पण मतलब सग्रह रुकमणीका व्यावला अमरकोश टीका छद वृत्त रत्नाकर पिंगल धन्वंतरी कोश देशी नाममाला मेघदूत काव्य मेघमाला भड्डली प्रश्नग्रथ पचपक्षी स्वरोदय जैन तथा शिवचरणदासकृत ताजीरायतहिंद इत्यादिक दोयसें पुस्तक फेर वैद्यक भावप्रकाश वैद्यरहस्य अमृतसागर कालज्ञान योगशतक वैद्यरत्न वृहन्निघटुरत्नाकर भाग ८ अजीर्णमजरी चरक सुश्रुत वागभट्ट अष्टांगहृदय योगतरगणी आदि साठ ग्रंथ पट्पचाशिका पाराशरी मानसागरी जोतिषके इत्यादि अनेक शास्त्र पढे सो मेरे उपाश्रयमें हाजर है, स० १९५२ में कमतूरचदजी जतीके चेले नेमचदजीनें जो उपासरा प० हुकमचदजी जतीकों वेचा था सो तेइससे रुपेमें मेंने खरीद कर पुस्तकोंका भडार स्थापन करा तेरा पथी शिवराजजी हुकमचदजी पनालालजीकी श्रद्धाशुद्ध कराय चेलाकर जैनी भेप दिया नदीसूत्रकी टीका षट्दर्शन न्याय व्याकरणकी पुनरावृत्ती प० जयदया-

लजीसें वांची दशवीकालिकसूत्र रायप्रश्नी ज्ञाता अंतगड दशा प्रमुख सूत्र नेमचरित्र राम चरित्र प्रद्युम्न चरित्र गुणमाला प्रकरण आत्मप्रबोध प्रकरण दानादिकुलक शांतिनाथ चरित्र वर्द्धमान देशना वैराग्यशतक गुणस्थान क्रमारोह गौतम प्रच्छाफेर अनेक धर्मिक अवलोकन किया और शरीर कुशलतामें अशुद्ध पारेके प्रताप कठमाल जानू नासूर भगंदर संधिवातादिक अनेक रोगोंका इलाज मेरे शरीरका मेनेंही करके अच्छा किया दुसरे वडे२ भारी रोगोंका इलाज बीकानेरमें दो हजार अदमी मेनें अछे किये होंगे असाध्य बैमार मेरे पास वहोत आते हैं, कष्टसाध्यतकमें सुधारसकताहूं दवायां मेरे पास अनेक रस धातू फूकी भई शुद्ध तइयार है, तुम लोकोंकों इल्म सिखाया फेर सीखाणेकी उमेद रखताहुं वहोत वात मेनें विद्यालाभादिक नफे नुकसांनोकी ग्रंथ वढ जाणेके सबब नहीं लिखी है, सं० १९५८ के माघमें श्रीपूज्यजीने मुझें उपाध्याय पद दिया इहांसे फेर वारे वर्षमें च्यार पांच वषत मेंने देशाटन किया उहांभी वहोतसें इल्म और सत्सगत भई (श्लोक) ससार विषवृक्षस्य, द्वेफलअमृतोपमे, काव्यामृत रसस्वाद, संगमं सज्जनैःसह १ ये वात में जाणकर अपूर्व ग्रंथ वांचणेकूं हमेस उमेदवार रहता हुं संसारमें भले बुरे सब तरेके अदमी है ठोकर खाकर सुधर जाणा बुद्धिवानोंका काम है विद्या सब पूराणी पडणेसें भूल पाती है वैद्यक विद्या ज्यों पुराणी होती जाती है, त्यों त्यों वढती जाती है सोध अंग्रेज लोक ज्यों ज्यों पदार्थोंकी वढाते जाते हैं, मेंनेभी इस मुजब अपने क्षयोपशम माफक और द्रव्य माफककेई वाते वढाई है इसारा तो उनोंकोभी शास्त्रका है, मुझेंभी वोही है, इनोंका संप धन मदत राज्य सासनके सबब दिप२ कर रही है, इन च्यारोंकी न्यूनता होणेसे दीपक मन मंदरमें प्रकाशित है, प्राचीन शास्त्रकार त्रिकालदर्शी थे नही पढणा ये हमारी भूल है, इस वखत स्वतत्रतामें जो फल बुद्धिमांनोकों दोनोंभवोंका हासिल होता है, सो परतत्रतामें कभी नहीं होता इय वातमें ने वहोत दूरकी लिखी है, जैसी बुद्धि होगी वो उतनीही समझ लेगा इस वखत मेरे शिष्यकामिल विद्याके निजके पाले भये तीन है, प० क्षेमचंद पेमचद अमरचंद इग्यारे किये केइ मर गये केइ चले गये चेला और पुत्रवोही है, जो गुरु मातापिताका भक्त होय और गुरुका अवर्णवादी होय और धनके लालचसे चेला होय स्वार्थके वश लाचारी करे फेर जेसा का तेसा एसे कुशिष्यकों शिष्य नहीं समझा जावै विनारसकी तरे विद्यार्थी शिष्य आजतक मेरे २५ है, वो सब आज्ञाकारी है, इसतरे वैद्य विद्या हासिलकी और वैद्यदीपक प्रकाशका पूर्णताभी आया छपाणे दिया गया ॥ स० १९६२ में मेरी अवस्था अदजन ४८ वर्षकी है, ५२ की सालमें दादासाहिबकी वडी पूजा मेनें वणाई है, थूलभद्रजीका नाटिक मेनें वणाया कल्पद्रुमकलिकाकी तथा बारेमासी पर्वोंकी श्रीपालचरित्रकी हिन्दुस्थानी भाषाकी संकलना मेंने करी है, आठ ग्रंथ छपे हैं, पचीस

ग्रथ हिन्दुस्थानी भापाके संकलित लिखे भये तइयार है, भापा हिन्दुस्थानी सर्व देशमानीय है (दुहा) इधर उधरके लाख रुपइये, अठी उठीके हजार, इकडम तिकडम आठ आना, सूसापइसा चार १ इसवास्ते ये भापा सर्वोपरी है, शास्त्रोंके वांचणे और सुणणेसें जो जो शकाओं और कुतर्के थी सो सब स्वत मिटती चली गई इससे ठीक २ सिद्ध भया जितना अर्द्धदग्धपणा है, सोही कुतर्क संका पैदा करणेकी जड है, सब शास्त्रोमे बहुश्रुतीपणा श्रेयस्कर है, (दुहा) भरियासो झिलके नहीं, झलके सो आधा, मिनखांतणी पारखा बोल्या और लाधा १ इस वैद्यविद्याके प्रताप बडे बडे श्रीमंतोसे मुलाखात चतुराई इस भव सुधारणेकी शक्ति विशेप कर पर भव सुधारणेकी शक्ति चमत्कारीक मंत्र तंत्र यंत्र सब वातें मुझकों हासिल भई और होयगी वैद्यविद्या कभी निर्फल नहीं जाती इसही वास्ते अंग्रेज सिरकार जेसा हुक्म डांकटरोका रखते हैं वेसी इनोंकी चढती कलाका सब वातोंका वखत है, ये वात एसीही हमारे पांडवादि राजोंकै वखतथी जैन वैद्य वागभट्ट वृद्ध राजाधर्म राजाका वैद्य था उस वखत अनेकानेक वैद्य एसी कुदरत और हुकमत धराते थे यवन वाद साहोंके लुकमान आदि हकीमभी आर्यावर्त्तके गये भये नामी भये थे इस वखत देशी वैद्य विद्या पारगामी हजारोमे एक मिलेगा वाकी तो फकत चिकित्सक मात्र इस नाकदरदानीके सवव आय रहे हैं, यह वैद्यविद्या ससारमें अपूर्व वस्तु है, वैद्य लोकोंने लकडी हाथमें रखणी सरू करी है. सो प्रथा प्राय मूसा पैकबरसे चली है, मूसेकों एक लकडी एसी मिली थी सो प्राय तरे२ के जहर ऊतारणे और केइ रोगोकों मिटाणेवाली एसी जडी हाथमें रखता था अब तो स्यात् स्वानादिकोंके डरसें रखते होगें वाकी तो लकडी रखणेमें केइयक तो जाहर गुण है, (दुहा) जलथा गण साप छिछकारण, वैरी भाजण दत लकडीमे गुण हे घणा, राखो वैद्य रुसत १ वैद्यक ज्योतप विद्या आदि सर्व विद्याका पीहर तो ब्राह्मणोकें घर है, और सासरा जतियोके घर है, लोक एसा कहते हैं क्योंके पुस्तकके पन्नेकतरणा लीके फांटीये पूठा पटडी विटांगणोसें वाधणा सो धणा हरताल हिंगूलेसें अलकृत करणा वडी हिफाजतसे रखणा दोदो हजार २५ से वर्षोकी करीब लिखी पुस्तके भंडोरोमें रखणी ये सब चतुर विदग्धा सरस्वतीका सासरवासा सिद्ध होता है, इससें विपरीत अवस्था शिथिल वंधनादिक ब्राह्मणोके पास सरस्वतीका देखणेमें आता है पुस्तकोंका इससें पीहरकी अवस्था सिद्ध होती है मेने माया श्वेतावरे प्रोक्ता ये श्लोक लिखा है उसका अर्थसें न्यारेन्यारे मतोवाले क्रोधित होंगे लेकिन् उसका असली अर्थ उन लोकोंके मतकी पुष्टिका हेतु था आजकी वखत उससे लोक विपरीत चलणे लगे हैं, इसवास्ते हीन दशाकू प्राप्त होकर काम सब अस्तव्यस्त होते चला सो लिखता हू ॥ मायाका अर्थ प्रगट है सो श्वेतावरोमें थी सो अन्य दर्शनी तथा ग्रहस्थोंकेवास्ते थी कारण अन्य दर्शनी लोक ईश्वर और माया दोनों मिलके जगत्काकर्त्ता

पणा मांनते है इसवास्ते अपणी ईश्वरता याने (ऐश्वर्यता प्रगट करणेकों) मायाकूं अग्रेश्वरीपणा दिया था विना जैन दीक्षा लिये सूत्रोंका तत्त्व नहीं पढाणा आदि अन्य दर्शनीयोकूं अपणी चमत्कारीपणेकी विद्या नहीं सिखलाणे आदि बहोत वातोंमें माया रखते थे इसवास्तेही सर्वदर्शनियोंकी परीक्षा करणेपर विद्या मंत्र तंत्र गायन वादित्रादि एकसो आठ विधान समकालमें वादसाह पिरोजसाहके सांमने जतियोनें करके दिखाई अमावसकी पूनम मकाननाडोलाइका मंदिर आदि एक जगेसें सइकडो कोस एक रात्रीमें उडाके लेजा धरणे आदि संवत् विक्रमके सोलेसे तक कर बताई इत्यादि वाते सब दर्शनी जतीयोंका प्रसिद्धपणें जानते हैं, राजा बादसा और प्रजा सब गुरू करके बतलाते थे और गौरव बढाकर मांन रखते थे इसवास्तेही गढ चितोडके किलेमें और जेसलमेरके किलेमें इत्यादि अनेक राजमहलोंके पास जैन मंदिर अभी सईकडो किलोंमें मौजूद है, जैन मंदिरमें नहीं जाणा इत्यादि वातोंके गपोडोंपर राजोका दिल नहीं खिचाथा अगर एसा होता तो जैन मंदिर महलोकें नजीक कब बणणे पाते रावलपिंडीके किलेतक जैनोका मंदिर मौजूद है उहांतकही आर्योंकी शीमाथी ये सब पूर्ण माया धारी जैन उपदेशक महिमा धारी जतियोके मायापणेका है, अकबरनें सभामें खुद फरमाया था प्रत्यक्ष जगम खुदा जिनचंद सूर है, जिसकों में आंखोंसे देख रहा हुं जगत्कर्त्ता खुदा तो अनुमांनसे लोक और में मानता हू बस ये प्रतिष्ठा जतियोने अपणी ईश्वरता दिखलाणेके लिये मायाकूं अग्रेश्वरी बणाई थी अब ये माया उस वातोंसें तो हटी जती २ योंके आपसमें फेली पुस्तक लिखणे वांचणेकू नहीं देणा और लेजावे सो फेर पीछीभी नहीं देणा विद्या चमत्कार आपसमें सीखणा नही जो उनोके पास सीखे सो उनोंकीही पीछी निंदा और जमावट उखेडणा गुण किसीमे होय तो वो मूपरभी नहीं लाणा और औगुण जराभी नहीं होय तो हरतरेसे लोकोंमें प्रगट करणा मर्मोकों उघाडणा कोई चेला सुधरता होय आप धनके लालचकु शीख देकर विगाड देणा पुस्तकें अन्य दर्शनियोकू वेचणी आपसमे देणी नहीं कुलकी रीत पढणा लिखणा पढाणेका वो आजिवाका छोड सरकार दरवार गवा जमानत खेती आदि प्रगटपणे करणी एक [illegible]का

लोक इनोंका धर्म कबूल करते थे दक्षणमें राजा और प्रजा और मदिर सब दिगांबर जैनोका हो गया था भट्टारक जिनशेनाचार्यने श्रावगी गोत्र ८४ लोहाचार्यने गर्गाचार्यनें अग्रवाल गौत्र राजा और सुनारोंका बणाया बिना अदमी पालखी दिल्लीमें बादसाहोके सामनें एक भट्टारकनें चलाइ ये पिशुनताभी इनके वृद्धिका हेतु था बस अब इनसे उलटा परिणाम चला भट्टारक लोक अपणे द्रव्यके लालच जातीमेसें बेकसूर श्रावगीकू निकाल देणा भमर (भोजनके वखत) अडजाणा ये इतना रुपया देगा तो पारणा करूगा इत्यादि पिशुनताके कारण उन वणियोमें पिशुनता फैली सो उनोका वीस पथ प्राचीन खडन कर तेरा पंथ गुमान पथ निकाला भट्टारकोंकी आजिविका तोडी मदिरमें आपही पच और आपही पांडे बणे इस कारण चतुर्विधसघ भगवतनें इकीस हजार वर्ष तक चलेगा एसा लेख जिन शेनाचार्यने अपणे बनाये उत्तर पुराणमें लिखा था सो बिलकुल प्राय अस्त होकर दो सघ श्रावक श्रावक ण्योंइ रह गई वात तो एसी करणेकी थी सो भट्टारक और जाति कायदा सुधर जाता लेकिन् आपशमे पिशुनताने फैलाव किया भट्टारकभी थोडे रहे नग्न मुनि तो है इनहीं भट्टारकोंको नइ रोसणीवाले गुरु मानते नही बीसपथी मांनते है इतिश्री ॥ बुद्धिबोद्धोंमेंथी जब चीन ब्रह्मा जपान आदि पांच बादसाहोंके गुरु पूंगी थे मुडदा खाने आदि उपदेश और लांवा गुरू आदि एकसो वीस वर्षसें फेर चोलाबदलके फेर पीछे वोही ६ महीनेका बालक होजाणा पूगी लोकोंके धर्मस्थानपर अकस्मात् विना अदमीके लाये चाह दूध भोजन टेबलपर वखतपर स्वत हाजर होजाणा जिनोंकी परिक्षा बडे २ युरोपियन डाकटरोनें करी लेकिन् पता नहीं लगा आखिरको यही कहणा पडा बडे तांत्रिक है, ये सर्व महिमा उनोंके योगविद्या और बुद्धिका था, लकडेके घोडे अदमी, कागजोका कपडा, छापा शिलाका, काचकी चीजों लकडीका काम पुलपाणीपर एसी मजबूत और जलदी बाणणी इत्यादि अनेक बुद्धिकी कारीगरीपणा इल्म और धन इत्यादि जो उनोंके ग्रहस्थो पास था बुद्धिसें आजकल औरही मामला चला जपानने मुडदे खानेसें खूनका ठडापणा होता है बहादुरी नहीं रहती इत्यादि गौतम बुद्ध और पूगियोंका उपदेश छोड मारके ताजा खाणा इत्यादि केइवाते अपणी प्रत्यक्षपणे सिद्धकर अभीतो बडे सूरवीर इल्मदार बादस्याहीके दरजे पोहचे हैं एसी बुद्धि विचार बौद्धका उपदेश एक बुद्धमूर्ति टाल अन्य देव नहीं पूजणा उससें उलटा विचार चीणोका है हजारो देव पूजणे लगे बुद्धि घटेगी तब दूसरे जेर करेंगें और कर दिया इतिश्री मूर्खत्व शिवशासने जब मूर्खपणा शिवमतमें था तब शैव लोकोंकी वृद्धि थी दयानदजी शिवविष्णु आचार्योंकों मूर्ख लिखते है जैसें जैनके जती अपणा सूत्र अन्य दर्शनीकू नहीं पढाते योगविगर तैसें सन्यासी ब्राह्मण दुसरोकों वेद कभी नहीं पढाते लेकिन् इतनातो जैनोंकी निशलपता है, सो सूत्रोंका अर्थ जती लोक

अनुक्रमणिका ।

किरण ३ री अंग्रेजी दवा

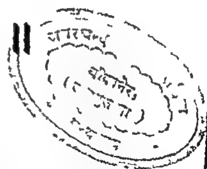
प्रकाश ६ ठा बुखारके सहचारी रोग.

१४ किरणोंकी तपसील किरण १.

अथ वैद्यदीपक ग्रन्थ ॥

श्रीसरस्वत्यैनमः--अथ वैद्यदीपक ग्रन्थस्य प्रस्तावना ॥ युगादौव्यहारादृध्वा सर्वोयेनप्रकाशितः स श्री वृषभयोगींद्रो दद्यात्बोऽव्यय संपदं १ वंदेहं लोकनाथाय आयुधर्मप्रकाशके धन्वंतरीं युगादीशं श्री नाभि नृप सूनवे२ अविद्यांध मनुष्याणां विद्यादानशलाकया चक्षुरुद्घाटितंयेन तस्मै श्री गुरुवे नमः ३ वैद्यदीपक ग्रन्थोयं द्योतकृत्हृदिमंदिरं रोग शत्रु प्रणाशाय रामवाणावलीमिव ४ ॥

प्रकाश पहिला ॥



सृष्टिक्रम ॥

जब अपने आस पास की निर्जीवी चीजों का ज्ञान धराते हैं तो अपने आप क्या हैं, अपना शरीर काहे का बना हुवा है तैसे ही उस में कैसी २ शक्ति कैसा २ काम करती है, इतना ज्ञान जो

अपने में नहीं तो बड़ी शर्मिन्दगी की बात है. जगत में जो अज्ञान हैं सो ही दुःख की जड़ हैं उस में भी शरीर संबन्धी अज्ञान तो बड़े ही क्लेश का कारण है, सूक्ष्म नजर से देखे तो जगत में जितनी जानने योग्य वस्तु है उसका सम्पूर्ण ज्ञान भी शरीर में से मिल सकता है शरीर की रचना नाम कर्म की एक सौ तीन प्रकृति से जीव और कर्म दोनों शामिल होके शरीर के संबन्ध में रचना रचता है सर्व चौरासी लाख जीवायोनि में मनुष्य जैसी कोई योनि नही है क्योंकि अनेक संसारिक अद्भुत कार्यों का करने वाला है सो तो विद्या बुद्धि बल से रेल, तार, अग्निबोट, बिजली, विमान आदि अनेक पूरा वे प्रत्यक्ष पने मनुष्य कृत हैं तैसे ही जप, तप, इन्द्रियदमन, अष्टांग योग का पारंगामी होकर अनत ज्ञान रूप केवल लक्ष्मी प्राप्त करके जन्म मरण से रहित होकर पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर यह पुरुष हो जाता है बस सर्वोपरि मनुष्य जन्म है द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा यह संसार नित्य है १ तीनों काल में पर्यायार्थिकनय की अपेक्षा संसार अनित्य है २ द्रव्य ६ हैं धर्मास्तिकाय १, अधर्मास्तिकाय २, आकाशास्तिकाय ३, जीवास्तिकाय ४, पुद्गलास्तिकाय ५, और काल ६ जीव और पुद्गल को चलने का सहाय देवे सो धर्मास्तिकाय १ जीव और पुद्गल को थिर रहने का सहाय देवे सो अधर्मास्तिकाय २ जीव और पुद्गल को रहने को अवकाश देवे सो आकाशास्तिकाय ३ चेतन शक्ति ज्ञान-१ दर्शन २ कर्म काटने की शक्ति सो चारित्र ३ और तप ४ यह स्वरूप वाला चर्म चक्षु से अरूपी कर्म के संबन्ध से जीव कहलाता है और कर्म जड़ से रहित होने से ईश्वर होने वाला अनंत शक्ति वाला

जीवास्तिकाय है ४ पूर्ण और गलन अर्थात् कभी भर जाय कभी बिखर जाय फिर रूप १ स्पर्श २ गंध ३ और रस ४ परमाणुओं करके शोभित सो पुद्गलास्तिकाय है ५ वर्त्तने का स्वभाव है नई को पुरानी करे पुरानी को नई करे समय १ काष्ठा २ लव ३ मुहुर्त्त ४ दिन ५ रात पक्ष मास वर्ष इत्यादिक पहचान करके काल द्रव्य है ६ यह सब द्रव्य जहां है सो लोग है वही संसार है जिस में चार गति हैं नरक गति १ तिर्यंच गति २ मनुष्य गति ३ देव गति ४ इस में नीचे पृथ्वी के सात नरक हैं बहुत पाप करने वाला जीव नरक जाता है इसी तरह कर्मों के शुभ अशुभ योग से जीव पूर्वोक्त चारों गति में भटकता है जैसे डोर में बंधी चकरी लेकिन डोर अलग वस्तु है और चकरी अलग वस्तु है जीव अशुभ उद्यम से बांधता है जीव शुभ उद्यम से खोल सकता है ऐसे जीव और कर्म जुदे २ द्रव्य हैं और अशुभ योग से बंधा हुवा भी है इस वास्ते जीव और कर्म का संबन्ध आदि भी है और अनादी भी है क्योंकि किसी भी मत वादी ने जीव बनने की आदि नहीं लिखी आत्रेय महर्षि अग्नि-वेशचरक वृद्धवागभट्ट और शुश्रुतादिकों ने अपनी रची संहिता में जीव द्रव्यकों अजर अमर अविनाशी अक्षय ही लिखा है जब संसार में जीव की आदि नहीं तो कर्म के संबन्ध विना अकेला जीव तो संसार में रह ही नही सकता अकेला भया फिर तो मुक्ति होकर अचल पद में ही लोकाग्र पर जाके ठहरेगा निर्मल भये बाद कर्म नही लगेगा जब कर्म रहित होगा तो जन्म मरण से भी बचेगा इस वास्ते जीव बनने की आदि नही तो कर्म भी आदि

रहित है ये दोनो इस अपेक्षा आदि करके रहित है और सहचारी है जिस वस्तु की आदि नहीं उसका अंत भी नहीं है इतना विशेष है भवो भव मे जीव अशुभ क्रिया अठारे पाप स्थानको से मन १ वचन २ काया ३ इन मे करना १ कराना २ और पाप करते २ को अच्छा समझना ३ इस से जीव समय २ कर्म बांधता है और शुभ क्रिया दान शील तप और भावना इन शुभ कारणो से अथवा अकामनिर्जरा अज्ञान पने कष्ट सहने से जीव समय २ कर्म तोड़ता भी है इस तरह कर्मों का आदि भी है और अंत भी है जैसे सोना जीवो के उद्यम से धूड़ मे से जुदा भी होता है और फिर परमाणु विखरता २ मिट्टी में ही मिल जाता है लेकिन धुर में कोई नहीं बता सकता कि मिट्टी और सोना कब शामिल भये थे ऐसे जीव और कर्म का सबन्ध नित्यानित्य जानना जो वस्तु अकत्रिम है उसका नाश भी नहीं है जैसे आकाश, और कर्त्रिम वस्तु घट है तो उसका नाश भी है, तैसै कर्म जीव करता, है वह नाश भी हो जाता है, जीव अकर्त्रिम है तो वह नाश भी नहीं होता कर्म आठ हैं ज्ञानावरणी १ दर्शनावरणी २ वेदनी ३ मोहनी कर्म ४ नाम कर्म ५ गोत्र कर्म ६ आयु कर्म ७ अंतराय कर्म ८ जीव में सर्व पदार्थ जानने की शक्ति है उसको नहीं जानने देवे सो ज्ञानावरणी कर्म आंख के ऊपर पाटे समान १ जैसे २ उस कर्म का क्षयोपशम होता है वैसे २ ज्ञान शक्ति बढ़े है १ दर्शनावरणी कर्म २ सो देखने की शक्ति जीव में सर्व वस्तु की है लेकिन इस कर्म के वश देख नहीं सकता जैसे कोई आदमी राजा का

दर्शन कर सकता है लेकिन पहरेदार दर्शन नहीं करने देता २ वेदनी कर्म से सुख और दु ख जीव भोगता है वह कर्म शहत लगी-तलवार के चाटने समान है चाटते मीठा पीछे जीभ कट जाती है ३ मोहनी कर्म मदिरा के नशे समान है जैसे नशे मे सुध नही रहे ऐसे मोह के वश सब सुध बुध भूल जाता है ४ नाम कर्म चितारे जैसा है जैसे चितारा अच्छी बुरी शकल बनाता है इस वजह देव मनुष्य का सुन्दर रूप नरक तिर्यचका कुरूप इस कर्म के वश बनता है ५ गोत्र कर्म कुभार जैसा है जैसे कुभार एक चीज ऐसी बनाता है सो पूजने योग्य दूसरी अपूज्य इस तरह इस कर्म से ऊच नीच गोत्र होता है ६ आयु कर्म कैदी के खोडे जैसा अर्थात् बेड़ी समान है जिस २ योनि का आयु कर्म बांधा है वह भोगने से छुट-कवारा होता है ७ अंतराय कर्म राजा के भडारी समान है राजा हुक्म देता है इस को फलानी चीज देदो लेकिन भंडारी दे नही इस तरह जीव दान दिये चाहता लाभ लिये चाहता भोग उप भोग भोगे चाहता वीर्य शक्ति फिराये चाहता लेकिन अतराय इन बातों को रोके सो अंतराय कर्म है ज्ञानावरणी की ५ प्रकृति है मति ज्ञानाव-रणी १ श्रुति ज्ञानावरणी २ अवधि ज्ञानावरणी ३ मन पर्यव ज्ञाना-वरणी ४ केवल ज्ञानावरणी ५ ऐसे पांच ज्ञान हें जिसको जो ढके सो ज्ञानावरणी कर्म है जैसा २ आवरण ज्ञान के बहुमान करने से अलग होता जाता है तैसे २ प्रकाश होता जाता है जैसे पूर्ण मासी के चन्द्र का उजाला है तैसे जीव शक्ति में लोका लोक जानने का उजाला है लेकिन बदलों की तरह कर्म का आवरण

जानना ज्यों २ वायु से बद्दल अलग होते हैं त्यों २ प्रकाश दिखाई देता है, ऐसे शुभ क्रिया और शुभ भाव उस आवरणों को दूर करता है दर्शनावरणी की नव प्रकृति है निद्रा १ निद्रानिद्रा २ प्रचला ३ प्रचलाप्रचला ४ स्त्यानर्धि ५ चक्षु दर्शनावरणी ६ अचक्षु दर्शनाव-वरणी ७ अवधि दर्शनावरणी ८ केवल दर्शनावरणी ९ वेदनी की २ प्रकृति, सुख वेदनी १ दुःख वेदनी २ मोहनी कर्म की २८ प्रकृति क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ इन ऐकेक को चार गुणा करना सो इस तरह अनंतानुबंधी क्रोध १ प्रत्याख्यानी क्रोध २ अप्रत्याख्यानी क्रोध ३ सञ्ज्वलना क्रोध ४ इस तरह मान के ४ भेद माया कपटाई के ४ भेद लोभ के ४ भेद यह तो शोलेकषाय है अनंतानुबधी क्रोध वज्र पर लकीर जैसा है सो जावज्जीव क्रोध जीव से जाता ही नहीं यह क्रोध १ और मान और माया और लोभ वाला निश्चय नरक गति जाता है प्रत्याख्यानी क्रोध तलाव का पानी सूखे बाद जमीन फटे जैसा सो पीछा बरसात होने से सब लकीरें मिट जाती है इसी तरह कोई संवत्सरीपर्वादि कारण बनने से क्रोध दिल से मिटा देता है इस की अवधि वर्ष दिन की है यह मोहनी कर्म वाला तिर्यंच गति मे जाता है २ अप्रत्याख्यानी क्रोध वेलू पर हवा से लकीरें पड़ने जैसा है इस क्रोध की अवधि पन्द्रह दिनों की है जब दूसरी हवा जोर से चली तब वह वेलू की लकीरें मिट जाती हैं इस तरह यह कषाय वाला पन्द्रह दिनों के पीछे निशल्प हो जाता है यह जीव मर के मनुष्य गति मे जाता है ३ सञ्ज्वलना क्रोध १ मान २ माया ३ और लोभ ४ वाले की थिति बहुत थोड़ी है संज्वलना क्रोध पानी

के लकीर जैसा है ऐसा मोहनी कर्म वाला देव गति में जाता है इसी तरह मान के १ माया के २ लोभ के ३ वज्र के थभा जैसा आदि दृष्टांत उत्तराध्यन प्रमुख सूत्रों से जानना नवनोपायक है हास्य १ रति २ अरति ३ भय ४ शोक ५ दुगछा ६ स्त्री वेद १ पुरुष की इच्छा करे सो, पुरुष वेद ८ स्त्री की इच्छा करे सो, नपुसक वेद ९ दोनों की इच्छा करे सो, सम्यक्त मोहनी १० मिश्र मोहनी ११ मिथ्यात्व मोहनी १२ सम्यक्त जो शुद्ध देव शुद्ध गुरु शुद्ध धर्म इस में जीव को मूर्छित कर देवे सो सम्यक्त मोहनी, मिथ्यात्व और सम्यक्त इन दोनों में जीव को मूर्छा देवे अर्थात् नही पहचानने देवे सो मिश्र मोहनी इसी तरह कुदेव कुगुरु कुधर्म में मूर्छा देवे सो मिथ्यात्व मोहनी यह २८ प्रकृति मोहनी कर्म की है यह कर्म सब कर्मों का राजा है इन्हों का अर्थ विस्तार कर्मग्रन्थ पचसग्रह गोमठसार सूत्रादिकों से जानना सूचना मात्र यहां लिखा है अब सब अगोपाग की रचना करने वाला नाम कर्म की एक सो तीन प्रकृति सो संक्षेप करके नाम मात्र यहां लिखता हूं इस कर्म का सहचारी होकर जीव तरह २ का शरीर रचता है बहुत ईश्वर कर्त्ता मानने वाले गर्भादि रचना में ईश्वर की कारीगरी बतलाते हैं सो तत्व के अजान हैं कर्मों की प्रकृति के अजान हैं जीव और कर्मों की कारीगरी है ईश्वर ऐसे गलीच स्थान में क्यों प्रवेश कर रचना की कारीगरी पना करता है (प्रश्न) ईश्वर और माया इन दोनों ने मिलके रचना रची है (उत्तर) तुम्हारे समझ में आई सो बात एक नय से सच्ची भी है, जीव है सो निज रूप शक्ति करके ईश्वर ही है, माया कपट छल यह नाम सब कर्म

ही है पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर माया कर्म से रहित है वह माया से अलग है इस वास्ते हम जो जीव और कर्म की कुदरत लिखते हैं वह न्याय सपन्न है ईश्वर की शक्ति से सृष्टि की रचना मानना यह सब बात बन्ध्या पुत्रवत खकुसुमवत है एक अशुद्ध नैगमनय की अपेक्षा करके ईश्वर कर्त्ता मानने वालो के वाक्य सच्चे हैं, जैसे एक सुथार पायली बनाने वास्ते जगल में लकड़ी लेने को चला किसी ने पूछा कहां जाते हो सुथार बोला पायली लाने को इसी तरह जीव ईश्वर सत्ता करके है लेकिन अभी कर्म सहचारी होने से भया नही, हो गया तो फिर सृष्टि में रचना करेगा नही इस वास्ते ईश्वर तत्व निर्णय हमारा बनाया भाषा ग्रन्थ देखो ससार की बहुत सी रचना घट पटादिक मनुष्य कृत है पांच समवायो के मिलने से सो हम आगे लिखेंगे और कई एक स्वसत्ता रूप ६ द्रव्य है सो पहली लिखा ही है, अथ नाम कर्म की प्रकृति १०३ लिखते हैं नरक गति नाम कर्म १ तिर्यच गति नाम कर्म २ मनुष्य गति नाम कर्म ३ देव गति नाम कर्म ४ एकेन्द्री जाति ५ वेन्द्री जाति ६ तेंद्री जाति ७ चोरेंद्री जाति ८ पंचेंद्री जाति ९ उदारिक शरीर १० वैक्रिय शरीर ११ आहारक शरीर १२ तेजस शरीर १३ कार्मण शरीर १४ औदारिक अगोपांग १५ वैक्रिय अंगोपांग १६ आहारक अंगोपांग १७ औदारिक औदारिक वंधन १८ औदारिक तेजस बंधन १९ औदारिक कार्मण बंधन २० औदारिक तेजस कार्मण वधन २१ वैक्रिय बंधन २२ वैक्रिय तेजस बंधन २३ वैक्रिय कार्मण बंधन २४ वैक्रय तेजस कार्मण बंधन २५ आहारक आहारक वधन २६

आहारक तेजस बंधन २७ आहारक कार्मण बंधन २८ आहारक तेजस कार्मण बंधन २९ तेजस, तेजस बंधन ३० तेजस कार्मण बंधन ३१ कार्मण कार्मण बंधन ३२ औदारिक संघातन ३३ वैक्रियसंघातन ३४ आहारकसघातन ३५ तैजससंघातन ३६ कार्मणसघातन ३७ वज्रऋषभनाराचसघयण ३८ ऋषभनाराचसंघयण ३९ नाराचसंघयण ४० अर्द्धनाराचसंघयण ४१ कीलिकासंघयण ४२ छेवट्ठासघयण ४३ समचोरससंस्थान ४४ न्यग्रोधसंस्थान ४५ सादिसंस्थान ४६ वामनसंस्थान ४७ कुब्जसंस्थान ४८ हुंडकसंस्थान ४९ कृष्णवर्ण ५० नीलवर्ण ५१ लोहितवर्ण ५२ हारिद्रवर्ण ५३ श्वेतवर्ण ५४ सुरभिगंध ५५ दुरभिगंध ५६ तिक्तरस ५७ कटुकरस ५८ कषायरस ५९ आम्लरस ६० मधुररस ६१ कर्कसस्पर्श ६२ मृदुस्पर्श ६३ गुरुस्पर्श ६४ लघुस्पर्श ६५ शीतस्पर्श ६६ उष्णस्पर्श ६७ स्निग्धस्पर्श ६८ रूक्षस्पर्श ६९ नरकानुपूर्वी ७० तिर्यगानुपूर्वी ७१ मनुष्यानुपूर्वी ७२ देवानुपूर्वी ७३ शुभविहायोगति ७४ अशुभविहायोगति ७५ पराघात ७६ उच्छ्वासनामकर्म ७७ आतपनामकर्म ७८ उद्योतनामकर्म ७९ अगुरुलघुनामकर्म ८० तीर्थंकरनामकर्म ८१ निर्माणनामकर्म ८२ उपघातनामकर्म ८३ त्रसनामकर्म ८४ बादरनामकर्म ८५ पर्याप्तनामकर्म ८६ प्रत्येकनामकर्म ८७ स्थिरनामकर्म ८८ शुभनामकर्म ८९ सौभाग्यनामकर्म ९० सुस्वरनामकर्म ९१ आदेयनामकर्म ९२ यशःकीर्तिनाम कर्म ९३ स्थावरनामकर्म ९४ सूक्ष्मनामकर्म ९५ अपर्याप्तनामकर्म ९६ साधारणनामकर्म ९७ अस्थिरनामकर्म ९८ अशुभनामकर्म ९९

दुर्भगनामकर्म १०० दुःस्वरनामकर्म १०१ अनादेयनामकर्म १०२ अपयशःअकीर्तिनामकर्म १०३ इस तरह इस नामकर्म ने शरीर संबन्धी रचना रची है औदारिक शरीर एकेन्द्रीय पृथ्वी १ पानी २ अग्नि ३ हवा ४ और वनस्पति ५ इन पांचों से लेकर बेंद्रीय २ तेंद्रीय ३ चोरेंद्रीय ४ और तिर्यंच पंचेन्द्रीय और मनुष्यों का जानना देवता और नारकियों का शरीर वैक्रिय जानना चौदेपूर्वधारी साधु आहारक शरीर रचता है खाये पीये को हजम करे सो तेजस शरीर ४ कार्मण शरीर से काया रची जाती ५ यह दोय शरीर सूक्ष्म है जीव चारों गति वालों के संग में रहता है संघयण हाड़ों की मजबूती का नाम है, संस्थान शरीर के शकल का नाम है बाकी शब्द पर अर्थ जानना विस्तार इन्हो का गुरु गम जैन पंडितों से सीखना, आयु कर्म की चार प्रकृति है, देवायु १ नरकायु २ तिर्यंचायु ३ मनुष्यायु ४ अंतरायकर्म की ५ प्रकृति है दानांतराय १ लाभांतराय २ भोगांतराय ३ उपभोगांतराय ४ वीर्यांतराय ५ इस तरह इन आठो कर्मों की एक सो अट्ठावन मूल प्रकृति है, सांख्यमत कर्त्ता कपिल देवजी ने प्रकृति और पुरुष से सृष्टि मानी है सो प्रकृति याने स्वभाव कर्मों का पुरुष सो जीव इन दोनों से संसार नित्य है, ऐसा माना है सो पूर्वोक्त कहने से मिलता है कपिल देवजी ने २५ तत्व माने हैं सर्वज्ञ के उपदेश मे नव तत्व हैं जो चीज विस्तार वाली होती है उसका नाम तत्व है जैसे जीव तत्व १ अजीव तत्व २ पुण्य तत्व ३ पाप तत्व ४ आश्रव तत्व ५ संवर तत्व ६ निर्जरा तत्व ७ बन्धतत्व ८ मोक्ष तत्व ९ जीव

अजीव का वर्णन पहली छवे द्रव्य में कर ही दिया है नवप्रकार से जीव शुभ कर्म सहचारी होकर पुण्य बांधता है ४२ प्रकार से सुख भोगता है पाप ८२ प्रकार से जीव भोगता है मिथ्यात्व और अव्रत से अठारे पाप स्थानक से जीव पाप बांधता है पाप आने का द्वार सो आश्रव ५ उस द्वार को रोकना सो संवर ६ सत्ता में बंधे भये कर्मों को जलावे सो निर्जरा १२ भेद का तप, वध जीव कर्मों का ४ तरह से, मोक्ष जीव कर्मों से रहित होना सो, नव भेद से, इसका विस्तार नव तत्व प्रकरण से समझना, कपिल देवजी रज १ सत २ तम ३ ऐसे तीन पुरुष का मन परिणाम कहते हैं, सर्वज्ञ देव छव कहते हैं कृष्ण लेस्या १ नील लेस्या २ कापोत लेस्या ३ तेजो लेस्या ४ पद्म लेस्या ५ शुक्ल लेस्या ६ कपिल देवजी पांच ज्ञान इन्द्रिय पांच कर्म इन्द्रिय हाथ पांव गुदा आदि को कर्मेंद्रिया कहते हैं सर्वज्ञ देव दश प्राणों को धारने वाला पुरुष अथवा पंचेद्रिय तिर्यंच कहते हैं इन प्राणों से रहित होना उस को मरण कहते हैं, स्पर्शन इन्द्रिय इसके आठ विषय हैं १ रसना इन्द्रिय इसके पांच विषय हैं २ घ्राण इन्द्रिय इस के दो विषय हैं ३ चक्षु इन्द्रिय इस के पांच विषय हैं ४ श्रोत्र इन्द्रिय इस के तीन विषय हैं ५ एव ५ श्वासो श्वास ६ आयु ७ मनोबल ८ वचनवल ९ कायवल १० इत्यादि सृष्टि का क्रम संक्षेप कर बतलाया (प्रश्न) तुम ने जो कर्मों का स्वरूप लिखा सो हमने किसी भी वैधकशास्त्र में देखा नहीं (उत्तर) तुम ने देखा है लेकिन उन बातों को समझते नहीं, जगह २ प्रकृति और पुरुष लिखा है उस प्रकृति का विस्तार सर्वज्ञकथित शास्त्रों में है

औरों में नहीं, इस वास्ते प्रकृतिबंध है सो ही ८ कर्मों की मूल प्रकृति का स्वरूप है (प्रश्न) कर्म तो जड़ है वह जीव को सुख दुःख कैसे भुगा सकता (उत्तर) जड़ पदार्थ मदिरा और जहरादिक है सो खाने पीने से चेतन की कहो क्या गति होती है. प्रत्यक्षपने परवश होकर सुध बुध भूल दुःख पाता है, और प्रत्यक्ष देखते हो संसार में सर्व वस्तुओं का बनना जीव के उद्यम से जड़ पदार्थ लोह पत्थर लकड़ी के औजारों से अनेक पदार्थों की सिद्धि होती है (प्रश्न) जीव तो सर्व सुख चाहता है फिर दुःख का काम कैसे करता है (उत्तर) जैसे मक्खी शहद घी में सुख की अभिलाषा कर प्रवेश करती है फिर तो जो हाल है सो तुम हम देखते हैं (प्रश्न) मक्खी में तो ज्ञान नहीं है मनुष्य में तो ज्ञान है फिर दुःख का काम कैसे करता है (उत्तर) मक्खी के क्षयोपशम माफक मक्खी में भी ज्ञान है मनुष्यों के क्षयोपशम माफक मनुष्य में भी ज्ञान है उन्हों में भी आपस में तरतमता है तो आप को विचार करना चाहिये चोरी जुआ, रंडीबाजी रोगों पर कुपथ्य करने आदि से दुःख क्यों पाता है, कहोगे कि अज्ञान से, तो विचार लो अज्ञान कर्म उस ने पहले बांधा है तभी तो उस को आगे कष्टकारी वस्तुओं की बुद्धि पैदा होती है, सो कहा भी है " दोहा—को सुख को दुःख देत है कर्म देत झकझोर, उलझत सुलझत आप ही धजा पवन के जोर ।" "बुद्धि कर्मानुसारिणी" फिर कृष्ण ने अर्जुन से कहा है " यतः अवश्यमेव भोक्तव्यं, कृत कर्म शुभाशुभं, कृतकर्मक्षयो नास्ति, कल्पकोटिशतैरपि. " अर्थ इस का प्रकट है

(प्रश्न) हम तो यो जानते हैं कि परमेश्वर ही जीवों को सुख दुःख देता है, हुक्म बगैर कुछ नही होता (उत्तर) तुम को अज्ञान का उदय है इस वास्ते ऐसा कहते हो, भला तुम को हम पूछते हैं, एक ने एक आदमी को मारा, एक ने चोरी करी, ये तुम्हारी समझ मूजिब तो ईश्वर के हुक्म से ही ठहरेगा तो फिर इसकी सजा राजा वा ईश्वर देगा या नहीं, तो कहोगे, देगा, भला पहले तो उस को हुक्म दिया फिर सजा क्यों, तो कहोगे ईश्वर ने हुक्म ऐसे कामों का नहीं दिया उसने शैतान के बहकाने से किया, बस सोच लो वह कर्म जो है उसी को तुम शैतान कहते हो, बोली का फर्क है राजा तो सर्वशक्तिमान् है नहीं और न उसको त्रिकालदर्शी ज्ञान है इस वास्ते पुलिस आदि महकमे बनाकर गवाह (साक्षी) पर अन्याय को रोक चहता है जिस पर भी अन्यायी तो तरह २ से अन्याय करने से बंद नही होते, ईश्वर सर्वशक्तिमान् है और परम कृपावंत है, तो फिर प्रथम पाप करते प्राणियों को रोक ही क्यों नही देता फिर सजा देने में तसदी लेता है, तुम बुद्धि खर्चो म तो ईश्वर पाप वा पुण्य कराता न सजा देता सर्व कर्मों की रचना है, (प्रश्न) हम को इस पर ईश्वर की रचना मालूम देती है, दिन रात ऋतु वगैरः मर्यादा किस ने बांधी है इत्यादि अनेक बातें हैं (उत्तर) यह संसार में पांच समवायों का संबन्ध है सो हम तुम को समझाते हैं, इस संसार में छव दर्शन हैं कालवादी १, स्वभाववादी २, भवितव्यतावादी ३, कर्मवादी ४, पुरुषकृत उद्यमवादी ५ और छठादर्शन सर्वज्ञस्याद्वादी ६ (प्रश्न) हम समझे नहीं, यह

क्या बात है (उत्तर) कालवादी कहता है, काल ही से सब कुछ होता है, जैसे काल से ही सृष्टि की उत्पत्ति होती है, काल से ही नाश होता है, ऋतुकाल पर औरत गर्भ धारती है, काल से पुत्र जनती है, काल से बोलना, काल से चलना, काल से दूध का दही होना है, काल से दरख्त के फल लगना है, काल से तरह २ के पदार्थ होते है, काल से चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्त्त, नवनारायण, नव प्रतिवासुदेव, नव बलदेव, नव नारद, ग्यारह रुद्र होते हैं, काल से उत्सर्पणी अवसर्प्पणी के छः आरे होते हैं सतयुग, द्वापर, त्रेता, कलियुग दिन, रात, पक्ष, मास, ऋतुधर्म होता है काल से बालक विलास, काल से यौवन में काले केश होते हैं, काल से बुढ़ापे में इन्द्रियों का शिथिल होना इत्यादिक बातें सब कालवादी काल से ही बतलाता है, काल को ही ईश्वर मानता है १, तब स्वभाववादी कहने लगा अरे ! काल से क्या होता है, सब वस्तु स्वभाव से ही पैदा होती है और स्वभाव से ही विनाश होती है, देखो छतेयोग यौवनवती स्त्री बांझनी के सन्तान नही होता औरत के मुंह पर तथा हथेली पगथली में बाल नहीं उगते, नीम के दरख्त के आम नहीं लगते, वसंत में बागों की हरियाली होती है, मोर पंखों में चित्राम कौन करता है, सांझ की वक्त बद्दलों में रंग कौन करता है, जीवायोनि में तरह २ की अंगोपांग की रचना, हिरनों के सुंदर नेत्र, बोर बवूल आदि के तीखे कांटे, रूप और रंग गुण जुदे २ वस्तुओं में, जुदे २ साप में जहर, उसके मस्तक की मणि जहर उतार देवे, पहाड़ थिर, हवा का चलना, अग्नि की झाल ऊंची

जाना मछली और तूबा जल मे तिरे, कौआ ऊट पत्थर डूब जावे, पांखों वाले जानवर उडे, सूंठ से वाय मिटे, हरडे आदि से दस्त लगे, कोरडू सीजे नही, देश की तासीर से जमीन में लकड़ी का पत्थर हो जाय, सूर्य गरम चन्द्रमा ठंडा भव्य जीव मोक्ष जाय, छओं द्रव्य अपना २ स्वभाव नही छोडें, ऐसे स्वभाववादिओं का कहना है २, तब भवितव्यतावादी कहने लगा, अरे! काल और स्वभाव से क्या होता है, भवितव्यता वगैर कोई काम सिद्ध नही होता, दरियाव में तिरे चाहे जगल में भटके क्रोडों भी यत्न करे अनहुई होय नहीं भवितव्यता होती हे सो ही होता है, आम के वसंत में मांजर लगती है, कोई हवा से अथवा मनुष्य जानवर खखेर भी देवे तो भी आम लगने हैं सो लगे ही जिधर की तरफ भवितव्यता होती है, प्राणी का मन उधर ही दौडता है सौ वर्ष उद्यम करे वह वस्तु नहीं मिले भवितव्यता के वश वगैर विचारे आय मिलती है, आठवां चक्रवर्त्ति सभूम दरियाव में डूबा, ब्रह्मदत्त बारमें चक्रवर्त्ति की आंख गोवाल ने फोडी, कृष्ण नारायण की द्वारिका जली, पांवों मे बाण लगा, कोयल पर शिकारी ने बाण तका ऊपर से सिकरा तक रहा है, कोयल कूक रही है, हाय प्राण कैसे बचेंगे अकस्मात् बाण छूटा सो सिकरे के लगा, शिकारी को सांपने डका मारा, कोयल के प्राण बचे यहां भी नियति बलवती रही शस्त्र से मारे आदमी भी, जी जाते हैं और हजारों यत्न करने वाले मकानों में बैठे भी मर जाते हैं, इत्यादि बातों से नियतिवादी भवितव्यता सिद्ध करता है, ३, तब कर्मवादी बोला—काल स्वभाव भवितव्यता से क्या होता

मिथ्यात्व है धन्य है सर्वज्ञस्याद्वादी अरिहंत भगवंत जिसने यथार्थ न्याय सर्वांगनय से ठहराया जैसे पांच अंधों ने एक हाथी के एक २ अंग पकड़ा सूंड पकड़ने वाला लोह की दांतरड़ी घास काटने की उसकी शकल वाला यह जानवर है. दूसरे अंधे ने कान पकड़ा सो बोला यह जानवर छाज जैसा है. तीसरे अंधे ने पांव पकड़ा सो बोला जाडे मूसल जैसा यह जानवर है. पूंछ पकड़ने वाला अंधा बोला यह जानवर बुहारी जैसा है पांचवां अंधा पीठ पर हाथ फेर के बोला यह जानवर मांचे जैसा है इत्यादि अपने २ हठ से पकड़े हुवे बाद से आपस मे लड़ने लगे. यह अंधे कुल ग्राम के बाशिंदे थे, पहली इन्हो ने हाथी देखा नही था, इतने में हाथी का जानने वाला सूझता हुवा पुरुष आया उसने कहा क्यों लड़ते हो यह पांचों ही अंग का धारणे वाला एक यह हाथी नाम का जानवर है जो २ अंग तुमने पकड़ा है सो एक पक्ष सच्चा ही है बाद उन पांचों को पांचों ही अंग समझाय एक हाथी सिद्ध किया. इस दृष्टान्त मुजब संसार मे पांच दर्शन हैं छट्ठा दर्शन जैन सर्वज्ञस्याद्वादी का है, इसका न्याय सर्वांगसंपन्न अखड़ित है (प्रश्न) मनुष्य सर्वज्ञ होता ही नही, तुमने मताभिमान से अरिहंत को सर्वज्ञ लिखा है तुम्हारे तीर्थंकर थे तो मनुष्य ही हां विशेष बुद्धिमान कहो, सर्वज्ञ मत कहो (उत्तर) अगर तुम प्रेक्षावान हो और न्यायवंत हो तब तो समझ ही लोगे मैं न्याय वाक्यो से उनकी सर्वज्ञाता तुम्हें सिद्ध कर देता हूं, सच्चा सदैव सच्चा ही है कोई रागी द्वेषी न माने तो क्या उन्हकी सचाई जाती है, सो कभी नहीं, प्रथम तो उन

पुरुष की मूर्त्ति ही सर्वज्ञ पना सिद्ध करती है कि ऐसी योग मुद्रा धारण करने वाला पुरुष अल्पज्ञ नहीं था तदउपरांत उन्हों के जीवन चरित्र से सर्वज्ञ पना सिद्ध है, संसार में भटकने की जड राग द्वेषादिक अठारह दूषण सो उन्हों का लेष भी केवल ज्ञान प्राप्त भये बाद उन्हों मे नहीं था क्रोडानकोड इन्द्रादिक देवता जिस की सेवा करते थे चौतीस अतिशय, पैंतीस वाणी के गुण, आकाश में छत्र चमर देव दुंदभि आदि गुण और किसी देवों में नहीं था इस वास्ते तीर्थंकर केवली सर्वज्ञ थे (प्रश्न) हम क्योंकर प्रतीत करें कि तीर्थंकर केवली सर्वज्ञ थे, न मालूम पीछे से तुम लोगों ने ऐसे अपूर्व गुण उन्हों के लिख लिये होंगे (उत्तर) क्यों जी हमने लिख लिया होगा तो हम पूछते हैं और २ मतवादियों का हाथ किसने पकडा था कि तुम अपने इष्ट देवों का ऐसे गुण मत लिखो लिखा वही है कि जैसा २ गुण उन्हों में था और जैसा २ काम उन्हों ने किया था बस उन्हीं कामों के करने से उन्हों को ईश्वर माना है (प्रश्न) तुम को क्या खबर भई कि अर्हत सर्वज्ञ थे (उत्तर) हम सम्प्रदाय परम्परा से सुनते आये हैं कि मन में जो कुछ जिसने विचारा उसको तीनों कालों की बात अर्हत परमेश्वर कहते थे इस उपरांत और यह आगम जो सिद्धांत है सो उन्हों का सर्वज्ञ वीतरागी पना सिद्ध करता है, उन्हों के कहे शास्त्र में किसी भी जगह स्वार्थ सिद्ध पना अथवा अपने शिष्य प्रशिष्यों की आजीवका सिद्धि नहीं लिखी है, केवल सर्व मोहादिक त्यागने से मुक्ति होती है ऐसा त्याग वैराग्य और दया की बारीकी का विचार विना जैन आगम

टाल और किसी मत के ग्रन्थो में नहीं है; न्याय इसका ऐसा मजबूत है सो किसी भी प्रतिवादी से खंडित नही हो सकता जैसे व्याकरण पढ़ा, व्याकरण पढ़ने वाले की परिच्चा कर सकता है, तैसे ही प्रेच्चावान न्याय वेत्ता उस सर्वज्ञ के आगम को सुन के पढ़के अर्हत परमेश्वर सर्वज्ञ थे ऐसा जान सकता है जिस परमेश्वर के वचन पूर्वा पर विरोध कर के रहित है बुद्धिमान डाक्टर बुहलर ऐसा लिखता है जैन के तीर्थंकर श्री महाबीर तो दूर रहा लेकिन जैन धर्म का एक आचार्य श्री हेमचंद्र के साढ़े तीन करोड़ श्लोकों की रचना शब्दानुशासन देख के मेरी कलम सर्वज्ञ लिख सकती है ऐसा बहुत से अंगरेजों ने निश्चय किया है नाम कहां तक लिखे और विद्या से हीन हैं तथा पच्चपाती हैं; उन्हो को तो क्या खबर होय (प्रश्न) दूसरे धर्मों में क्या पण्डित हुये नही, या हैं नही उन्हों ने तो अर्हत को सर्वज्ञ नहीं लिखा (उत्तर) जो वे अर्हत को सर्वज्ञ माने तो दूसरा धर्म ही उनके क्यों रहे मिथ्यात्व मोहनी के उदय से उन्हों को यथार्थ सूझा नहीं जैसे सन्निपात रोगी को पांडु रोगी को सफेद वस्तु भी अन्य रूप से दिखाई देती है और फिर मत पच्च से इतना विरोध जाहिर किया कि जैन मन्दिर में नहीं जाना, हाथी से मरना कबूल, ऐसे द्वेषी अर्हतागम कब सुने और बांचे जिन २ पुरुषों ने देखा वा सुना उन्हो ने तो समझ ही लिया गौतमादिक चौवालीस सौ ब्राह्मण, शय्यंभवभट्ट हरिभद्र मलयगिरि गुसांई आदिक अनेकों ने, वगैर जाने बूझे किसी को झूठा नहीं कहना और निन्दा तो किसी मत की भी नही करना. निन्दा महा पाप

का हेतु है जैसे हरि भद्राचार्य ने लिखा है- " यतः पक्षपात नमेवीरे, न द्वेष कपिलादिषु, युक्ति मद्वचनयस्य, तस्यकार्यः परिग्रहः " १ हमने तो सर्वांग संपन्न सर्वज्ञ का शास्त्र देखा और उस मे जो २ कथन हैं सो मात्र सिद्धांत है, ससार में सर्वोत्तर ज्ञान उस ने ही प्रकट करा उस में ही यह आयुर्वेद है, यद्यपि वीत रागी हुये बाद फिर संसार कथा नहीं विचारते पूछे जिसका प्रत्युत्तर सर्वज्ञ निश्चय देवे बाकी तो पट शास्त्र आठ निमित्त उन्हों के उपदेशित मोक्ष मार्ग साधक धर्मोपदेश मे मिला हुवा है; " किंबहुना " इस बात को समझकर यह समझना चाहिये जीव और शरीर का आरोग्य संबन्ध है वहां तक सब काम चलता है सो अपने देखते हैं, जीव शरीर में से निकल के जाता है और क्या २ कार्य करता है, सो नही दीखता इस वास्ते सारी मदारडीला सं छे यह लिखावट सच्ची है; चेतन और प्रकृति से बुद्धि और मन का सहचारी पना है, पांच ज्ञान इन्द्री, है जैसे चमडी से स्पर्श का, १ नेत्र से रूप का २ इत्यादि पांचों का ज्ञान प्रकट है, कर्मेंद्रिय से बोलना, पकडना, चलना, पेशाव करना, और मल त्याग करना सो, वाणी १, हाथ २, पाव ३, लिंगेंद्री ४, गुदा ५, यह जानना जल १, अग्नि २; हवा ३; पृथ्वी ४, और आकाश ५, इन पांचों में जो २ गुण रहा है ऐसे गुण इस शरीर में मालूम देता है, बाहिर जो इन्द्रियों की शकल दिखाई देती है, सो ज्ञान इन्द्री नही है इन्हों के अन्दर जो इंद्रिय शक्ति है सो अपना २ काम करती है ज्ञान इंद्रिय वगैरह बाहिर की दीखने वाली शकल मांस खून और हाडों से बनी हुई है लेकिन असल में

जो अन्दर ज्ञान इन्द्रियों और कर्म इन्द्रियां कुदरत का काम देने वाली ज्ञान तंतु और गति तंतु है सो ज्ञान इन्द्रियों और कर्मेंद्रियों का काम देती है ऐसे शरीर में जीवात्मा ने निवास किया है, इस जीव के बाबत अनेक मतांतरियों ने संकल्प विकल्प किया है जीव है सो क्या चीज है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण तो कुछ नहीं कोई तो कहता है शरीर में से चलती रसायणिक क्रिया मे से उत्पन्न भया चेतन है, इस प्रश्न के करने वाले चार्वाक् बृहस्पति नाम के आदि में भये हैं यह प्रश्न बहुत कठिन है इसका शंका समाधान नन्दी सूत्र की टीका में बहुत है, पदार्थ वादियों के मत में भी यही बात है शरीर और चेतन जुदा २ नही है शरीर में खून है सो जीवन है और इस खून का फिरना दूसरा जो चेतन वाला पदार्थ उसके ऊपर आधार रक्खे है, वह पदार्थ प्राणवायु है. अंगरेजी में उसको आक्सिजन कहते हैं, यह प्राणवायु खून को साफ करती है इस से प्राण धारण रहता है, इस वास्ते वैद्यक में इस वायु का नाम सार्थक धरा है. यह प्राणवायु शरीर की क्रिया वास्ते जितनी चाहिये इतनी नहीं मिले, तब शरीर का चेतन कम पड़ जाता है, और बिलकुल नहीं मिले तब शरीर की सब क्रिया बंद हो जाती है, उसको मौत कहते है, जिस में जीवित तत्व कम होता है, उस में चेतन वाला खून कम होता है. शुद्ध और प्रमाण वाले खून से मनुष्य में चेतन और बल जियादा होता है जो आदमी नाताकत और दुबले होते हैं, उसका भी यही कारण है. लम्बी उमर और कम उमर भी इसी खून से तासीर रखती है, कितनेक आदमियों का

जीव एकाएक कोई भी बीमारी बनते ही निकल जाता है और कितनेक रोगों में जिंदगी का अंश कम २ से कम होता जाता है और चेतन कम होता २ आखिर बंद हो जाता है आत्मवादी कहता है जीव शरीर जुदे २ हैं, आत्मा परमात्मा रूप है, लेकिन प्रकृति से बंधा भया वीर्य और स्त्री के आर्त्तव का आहार पर्याप्ति करता शरीर पर्याप्ति बांधता है इस वास्ते जीव कहलाता है पीछे इन्द्रिय पर्याप्ति ३ फिर सासोश्वास पर्याप्ति बांधता है ४, मन पर्याप्ति ५, और भाषा पर्याप्ति ६, ऐसे छः पर्याप्ति मनुष्य बांधता है ६ कई एक पदार्थवादी ऐसा कहते हैं, जीव कहां से आय के प्रवेश नही करता है वीर्य में और स्त्री के आर्त्तव में रहे भये जीव हैं सो ही प्रवेश करते हैं उस पर ऐसा दृष्टांत देते हैं, जैसे सूरज की किरण में अग्नि है और सूर्य कांतमणी में भी अग्नि है ये दोनों अलग २ होय जहां तक बादर (थूल) अग्नि पैदा नही होती इस दृष्टांत मूजब रज और वीर्य में रहे जीव ही पैदा होता है इति वह जीवात्मा सर्व विषयों को जानता है क्योंकि ज्ञानानंद पूर्ण पवित्र है इस वास्ते जीभ से पांच रस अथवा छः रस जानता है आंख से पाच रग नाक से सुर भी गंध १ दूर भी गंध २ कान से जीव शब्द १ अजीव शब्द २ और इन दोनों से मिल के निकले सो मिश्र शब्द ३ जानता है स्पर्श ८ ठंडा १, गर्म २, हलका ३, भारी ४, सुहाला ५, खरधरा ६, लुखा ७ और चुपड़ा ८ इत्यादि इन्द्रियों द्वारा इन स्वरूपों का भोक्ता बन रहा है अब पुरुषों स्वभाव ३ तरह होता है और ६ तरह का भी होता है लेकिन यहां तीन का स्वरूप दिखाते हैं सत्वगुणी प्रकृति धर्म दयावंत-

आस्तिक पना नव तत्वों पर, उदारता सम्भावना क्रोध रहित पना सत्यवचन बुद्धिवान् धीरज क्षमा ज्ञान सरलपणा निंदा विकथा अशुभ कर्म करता थके इच्छा रहित करे बड़ा विनयवान १, रजोगुणी प्रकृति, क्रोधी दूसरे को मारने की इच्छा सुख की अधिक २ इच्छा करे, कपटी कामी बुरे वचन बोलने वाला अधैर्य अहंकार और भटकने की इच्छा २ तमोगुणी प्रकृति, नास्तिक पना, स्वर्ग नरक मोक्ष पाप पुण्य माने नहीं बहुत खेद बड़ा आलस्य दुष्ट बुद्धि अति निंदित काम अति निंदित सुख में प्रीति बहुत नींद अज्ञान अति क्रोध महा मूर्ख पना पहली १५८ प्रकृति में यह सब आ गया है तो भी जियादा समझने को यहां फिर लिख दिया है इस में फिर कोई में दोय गुण की प्रकृति कोई में तीनों हो मिले भये इत्यादि अनेक भेदों के मिले भये भी मनुष्यो की प्रकृति देखने में आती है आत्मा है सो शरीर रूपी घर का राजा है प्रकृति से बंधा हुवा इस से सर्व व्यवहार करता है शरीर विना पहचाने नहीं जाता जीव विना शरीर कुछ कार्य नहीं कर सकता इस राजा के सब कामों में इधर उधर फिरने वाला मनरूपी प्रधान है सारा सार बात को समझाने वाला अंतःकरण रूपी न्यायाधीश है और बुद्धि चित्त वगैरा उसके सलाहगीर है, जहां तक ये सब कारवारी अपने २ योग्य रीति का काम बजाते हैं वहां तक शरीर का भोक्ता जीव राजा बहुत वर्षों तक सुख और आनंद से राजधानी भोगता है जब पूर्वोक्त कार वारी अपना २ धर्म भूल कर अयोग्य रीति पर चलने लगते हैं तब शरीर रूप घर में गड़बड़ अर्थात रोग पैदा होता है उस बलवे को दबाने को जीवात्मा

और उपाय नहीं करता है तब शरीर की दशा बिगडती है, जैसे टूटा हुआ किला निरुपयोगी होने से उस मे रहने वाला राजा छोड़ दूसरे मजबूत किले का आसरा लेता है इस तरह यह जीव बिगडे शरीर को छोड बड़ा दुःखी होकर निकल कर दूसरे शरीर की रचना रचता है, शरीर मे सुख होने से जीव सुख मानता है और शरीर के दुःख से दुःख लोग कहते हैं जीव है सो शरीर रूपी कैद खाने में पड़ा है, सच है, जिस शरीर मे वह दुःख पाता है, तो वह कैद खाने से भी जियादा दुःख की जड है और जो सुख पाता है तो यही शरीर सुख शांति का भुवन हो जाता है और इसी शरीर सनी प्रकृति (कर्म की) उपाधि छोड़ मुक्ति प्राप्ति कर लेता है, शरीर से भव-भ्रमण भी पैदा कर लेता है स्वर्ग और नरक भी शरीर से ही जीव बांधता है, उमर की कुछ मुद्दत नहीं है तो भी इस वक्त सौ वर्ष की उमर गिनने में आती है इस मध्य क्षेत्र आर्यावर्त्त आश्री, सुख से शरीर का निरभाव चले तो, नहीं तो थोडे ही मुद्दत में पूराकर निकलता है, जैसे भोजन कर दौड़े भोग करे तेल मसलावे पगचपी करवावे, स्नान करे, अथवा भोजन कर दिन को सो जावे, इन बातों से उपक्रम लग के उमर पूरी थोड़ी मुद्दत में ही कर गुजरता है, इत्यादि आयुक्षय करने का अनेक बतलाया है आगे दिन रात्रि चर्या में लिखेंगे उस मूजब चलना, इस संसार में चिंता शोग दुःख और रोग बगैर का विरला आदमी होगा यह सब खराबी की जड़ अज्ञानता है और यह अज्ञानता जीव ने ही कर्मों के सबन्ध से पहली बांधी है, इस वास्ते शुभ उपम से शरीर का

सुखदाई योग मे आतमा को बहुत मुद्दत तक कायम रखना यह अपना फर्ज है, फिर शुभ कर्त्तव्य करता हुवा परमेश्वर पद को प्राप्त करना (प्रश्न) तुमने पेश्तर लिखा है सुख दु.ख कर्मों से होता है, फिर आरोग्य शरीर को रखना, परम पद का उद्यम करना लिखते हो (उत्तर) हे मित्र ! हमने तो सब लिखा है तुम अच्छी तरह विचारो कर्म किस का नाम है, किया जाय सो कर्म वह तो उद्यम जीव से ही होता है, पांच समवायों में हमने सिद्ध कर दिया हैकोई भी काम पांचो समवाय मिले वगैर नही होता, इस उपरान्त फिर तुम्हें समझाते है सर्वज्ञ भगवान् कहते हैं कहां तो कर्म बलवान होता है तो जीव को दबा लेता है, कभी जीव बलवान होता है, तब कर्म को हटा देता है शरीमें सब दोष बराबर हैं, तब तक तो रोग नहीं होता, गर्म और ठड बराबर हैं, २ तो व्याधि नही होती, ठंड बधेगी तब तो कफ, और बादी की बीमारी होती है, गर्मी बधने से पित्त की, पहली कहे भये तीन गुण में से एक सतोगुण भी आनंद देता नहीं, इसी तरह रज और तम भी आनंद देता नहीं, संसार में जो फक्त शांति पने कर बैठे रहते हैं, वह भी सुखी नही हैं और जो कोई बुद्धि बिगर तामसी स्वभाव रखकर आलसु होय ऊंघते रहते हैं जैसे फक्त मीठा अन्न ही को खाया करे और वह पोषण कारक वस्तु है, तो भी फक्त सतोगुणी होने से आनंद नही आता उस के साथ रजोगुण वाला दाल, साग और तमोगुण वाला मिर्ची मसालों का स्वाद होता है तभी जिह्वा इंद्रिय मजा पाती है, रजो गुणी शक्कर में मीठा जियादा लड्डू वगैरः में जियादा डाला जावे तो मिठास जियादा होने

के सबब खाया नहीं जाता और तमोगुणी आटा जो जियादा डालने में आवे और शक्कर कम डालने में आवे तो वायु जियादा होकर पचे नहीं तब दस्त की बीमारी पैदा होती है इस तरह जगत् में जहां देखो तहां समानता अथवा योग्य प्रमाण में ही स्वाद देखने में आता है और जहां २ प्रकृति का हीन योग अथवा अति योग देखने में आता है, वहां एकता समानता और सुख का नाश देखने में आता है, जैसे अपने हिंद के मनुष्यों में सतोगुण का अति योग दाखिल भया जिस से सब पृथ्वी की प्रजा को सब के पिछाड़ी रहना पड़ा, जिसमें भी अग्रेश्वरी वणिक जाति, जब तक तीनों गुण जगह की जगह बरतते थे तब तक यह दशा हिंद की नही थी, संसार से जिन्हो ने विरक्तता धारली है, उन्हो में तो पूरा सतोगुण ही चाहिये सो भी विरले हैं रजोगुण के अति योग से मुसलमानों की बादशाही टूट गई, तैसे ही यूरोप की प्रवृत्ति पूजा, प्रजा को घटती का वक्त चला आता है और तमोगुणी पने से पहाड़ों के बाशिंदे भील वगैरः हमेशा दुष्ट बुद्धि करके वह जंगली हालत में जिंदगी गुजारते हैं, जिन लोगों में सतोगुण का अति योग है वहां अप्रवृत्ति अर्थात् कम उधमी पना अथवा ससार से विरक्तता के कारण दरिद्रि पना देखने में आता है, ऐसा होना चाहिये जैसे राम सतोगुणी न्याय-संपन्न दयावत थे परंतु रावण अन्याई पर कैसा रजोगुण और तमो-गुण बतलाया और जहां रजोगुण का अति योग है, वहां भी थोडा उधमी पना अथवा संसार में बहुत अनुराग (प्रेम) होने से भी दरिद्री पना देखने में आता है फिर वहा राग, द्वेष, कुसंप, क्लेश,

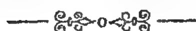
सुखदाई योग में आत्मा को बहुत मुद्दत तक कायम रखना यह अपना फर्ज है, फिर शुभ कर्त्तव्य करता हुआ परमेश्वर पद को प्राप्त करना (प्रश्न) तुमने पेश्तर लिखा है सुख दुःख कर्मों से होता है, फिर आरोग्य शरीर को रखना, परम पद का उद्यम करना लिखते हो. (उत्तर) हे मित्र ! हमने तो सब लिखा है तुम अच्छी तरह विचारो कर्म किस का नाम है, किया जाय सो कर्म वह तो उद्यम जीव से ही होता है, पांच समवायों मे हमने सिद्ध कर दिया है कोई भी काम पांचो समवाय मिले बगैर नही होता, इस उपरान्त फिर तुम्हें समझाते है सर्वज्ञ भगवान् कहते हैं कहां तो कर्म बलवान होता है तो जीव को दबा लेता है, कभी जीव बलवान होता है, तब कर्म को हटा देता है शरीर में सब दोष बराबर हैं, तब तक तो रोग नहीं होता, गर्म और ठंड बराबर हैं, २ तो व्याधि नहीं होती, ठंड बधेगी तब तो कफ, और बादी की बीमारी होती है, गर्मी बधने में पित्त की, पहली कहे भये तीन गुण में से एक सतोगुण भी आनंद देता नहीं, इसी तरह रज और तम भी आनंद देता नहीं, संसार में जो फक्त शांति पने कर बैठे रहते हैं, वह भी सुखी नहीं हैं और जो कोई बुद्धि विगर तामसी स्वभाव रखकर आलसु होय ऊंघते रहते हैं जैसे फक्त मीठा अन्न ही को खाया करे और वह पोषण कारके वस्तु है, तो भी फक्त सतोगुणी होने से आनंद नहीं आता उस के साथ रजोगुण वाला दाल, साग और तमोगुण वाला मिर्ची मसालों का स्वाद होता हैं तभी जिह्वा इंद्रिय मजा पाती है, रजो गुणी शक्कर में मीठा जियादा लड्डू वगैरः में जियादा डाला जावे तो मिठास जियादा होने

के सबब खाया नही जाता और तमोगुणी आटा जो जियादा डालने में आवे और शक्कर कम डालने में आवे तो वायु जियादा होकर पचे नहीं तब दस्त की बीमारी पैदा होती है इस तरह जगत में जहां देखो तहां समानता अथवा योग्य प्रमाण में ही स्वाद देखने में आता है और जहां २ प्रकृति का हीन योग अथवा अति योग देखने में आता है, वहां एकता समानता और सुख का नाश देखने में आता है, जैसे अपने हिंद के मनुष्यों में सतोगुण का अति योग दाखिल भया जिस से सब पृथ्वी की प्रजा को सब के पिछाडी रहना पड़ा, जिसमे भी अग्रेश्वरी वणिक जाति, जब तक तीनों गुण जगह की जगह वरतते थे तब तक यह दशा हिंद की नही थी, संसार से जिन्हों ने विरक्तता धारली है. उन्हों मे तो पूरा सतोगुण ही चाहिये सो भी विरले है रजोगुण के अति योग से मुसलमानों की बादशाही टूट गई, तैसे ही यूरोप की प्रवृत्ति पुजा, प्रजा की घटती का वक्त चला आता है और तमोगुणी पने से पहाड़ों के बाशिंदे भील वगैरः हमेशा दुष्ट बुद्धि करके वह जंगली हालत मे जिंदगी गुजारते हैं, जिन लोगों में सतोगुण का अति योग है वहां अप्रवृत्ति अर्थात् कम उद्यमी पना अथवा ससार से विरक्तता के कारण दरद्रि पना देखने में आता है, ऐसा होना चाहिये जैसे राम सतोगुणी न्याय-संपन्न दयाव्रत थे परंतु रावण अन्याई पर कैसा रजोगुणी और तमो-गुणी बतलाया और जहां रजोगुण का अति योग है, वहां भी थोडा उद्यमी पना अथवा ससार में बहुत अनुराग (प्रेम) होने से भी दरिद्री पना देखने मे आता है फिर वहां राग, द्वेष, कुसप, क्लेश,

झूठ, कपट और कजिये की बढौतरी देखने में आती है और जहां तमोगुण जियादा है, वहां बुद्धि का भ्रष्ट पना, अधम पना अति क्रोध, बहुत आलस्य और बहुत अज्ञान पना देखने में आता है और जहां पर इन तीनों की समानता है और जितने २ अंशों करके यह तीनो गुण रहे भये है, इतने मात्र ही सुख संपत्ति शांति अच्छा उद्यम देखने में आता है हिंदुस्थान की प्रजा में अंदर २ कुसंप देश में कुसंप जाति मे कुसंप न्यात मे कुसंप कुटुम्ब में कुसंप आखिर घर में कुसंप और शरीर में भी कुसंप यह तीनों ही प्रकृति की असमानता सब तरह के बिगाड़ का हेतु है वास्ते प्रकृति का एक पना और समानता यत्न से रखना यही अपना कर्त्तव्य है यही सुख की जड़ है, यही निरोगी पना है, यही वैद्यगी का सार है शरीर और मन में प्रकृति का फेर फार नही होने देना यही वैद्य विद्या का पहला कर्त्तव्य है और अज्ञान पने से अथवा पूर्व कृत पाप कर्म के उदय से प्रकृति बिगड़े बाद उसको समानता लाने का यत्न करना यह वैद्य विद्या का दूसरा कर्त्तव्य है, रोग मिटाने के अथवा पहली से रोग होवे ही नही ऐसे उपाय आगे बताये हैं जिसको बेर २ ध्यान में रखने की जरूरी है, जिसमे भी रोग मिटाने के उपायो से रोग आवे ही नहीं ऐसी विधि से चलने की विधि को ध्यान में लाने की बहुत जरूरी है इस ग्रंथ मे अच्छी तरह से यह बात लिखी है ॥

इति श्रीमद्जैन धर्माचार्य संग्रहीते उपाध्याय राम ऋद्धिसारगणि: विरचिते वैद्यदीपक ग्रन्थे सृष्टि-वर्णनो नाम प्रथमः प्रकाशः ॥ १ ॥

प्रकाश दूसरा ॥



किरन पहली, शरीर ॥

शरीर की रचना का विस्तार और सूक्ष्म ज्ञान मात्र ग्रन्थ वांचने से नही मिल सकता है, सब वैद्य लोग शरीर का सूक्ष्म ज्ञान समझ नहीं सके ऐसा भी नहीं हो सकता तो भी अशक्य है तो भी सामान्य ज्ञान तो हर मनुष्यों को समझना चाहिये, दूसरी विद्या का अपने चाहे जितना सूक्ष्म ज्ञान सीख भी लिया, लेकिन जहां तक शारीरक विद्या संबन्धी थोड़ा भी ज्ञान नहीं सीखा तहां तक मनुष्यों की पर्षदा में तथा ज्ञानियों की सभा मे अपने पिछाड़ी ही है, ऐसा मानना चाहिये, इस वास्ते यह विद्या की वाकिफकारी होने को क्यों जुदे २ ग्रन्थ वांचने की तसदी लेते हो जो वर्णन शरीर सम्बधी इस ग्रन्थ में किया है, उसमें से सामान्य ज्ञान तो वांचने वालों को ज़रूर ही होगा ऐसी आशा है ॥

गर्भ की उत्पत्ति ॥

जो बाहर की शकल देखने में आती है, उसके वर्णन करने की जरूरी नहीं दिखती शरीर जीवात्मा का एक घर है और घर

के अंदर जितनी तैयारी होती है, तैसी ही इस शरीर में सब तरह का साधन मौजूद है, मनुष्य का शरीर यह कुदरती अद्भुत कर्मों की रचना का एक उम्दा नमूना है, जैसे आदमी जड़ पदार्थों से घड़ियाल में चलने की शक्ति धर देता है, तैसे शरीर रूपी घड़ियाल में चेतन का उद्यम प्रकृति रूप जड़ पदार्थ से बना हुआ है ज्ञान और गमन करने वाला जीव है, जैसे घड़ियाल का चक्र घस जाने से अथवा अकस्मात् कोई कारण बनने से चलते चक्र अटक जाते हैं उस ही तरह यह शरीर रूपी घड़ियाल भी बन्द पड़ जाती है कर्म रूप का सहचारी चतुर कारीगर चेतन का बनाया घड़ियाल जो शरीर सो मनुष्य वह भी स्त्री पुरुष के संयोग से बनाता भी है और नहीं भी बना सकता तो एक हिसाब मनुष्य से शरीर की रचना की कारीगरी किसी किस्म रच के जीवात्मा नहीं डाले जाता यह कुदरती मामला है, तो भी इस घड़ियाल का संचा और काम और उसके चक्र को पण्डितों ने उखेल २ कर उसका सूक्ष्म ज्ञान मनुष्यों ने समझ लिया है विचार तो यहां तक है कुदरती कारीगरी के संचे में कोई हरज पहुंचा होय तो मनुष्य की अकल और चातुरी शक्ति बने जहां तक सुधार तो सकती है यह भी काम मनुष्य बुद्धिवानों का काम नहीं है, जिस से वह शरीर रूपी घड़ियाल बहुत दिनों तक चल सकती है, ऐसी तजवीज कर सकता है इतने वर्षों तक इस शरीर घड़ियाल का जितना ज्ञान मैंने प्राप्त किया सो सबों के समझने वास्ते लिखता हूं ॥

गर्भ की उत्पत्ति और वृद्धि ॥

गर्भ में यह शरीर किस क्रम से बधता है और वृद्धि पाता है सो पहले जानने की जरूरत है, इस में वह तो बड़ा बारीक विचार है कि गर्भ किस तरह पैदा होता है सो तो पूरा समझना बड़ी कठिन बात है अपने लोगों में यहां तक अजान पना गतानुगत गडर प्रवाह से चला आता है और बगैर इस शरीर विद्या के अजान होने से इन २ बातों को सच्ची भी मानते चले आये जैसे कि हनुमान जी कान में पैदा भये, नासकेत जी नाक में, कीचक बांस की भूंगली में, मानधाता राजा पुरुष के गर्भ पेट में, रह गया इत्यादिक अनेक गपोडों को मानना और कहना उसको फलाने का शाप था और कही किसी का वरदान था यह सब बातें गधे के सींग मुजिब है. (प्रश्न) क्यों जी यह ऐसी २ बातें तो प्रमाणिक शास्त्रों में लिखी है, वह झूठ कैसे हो सके (उत्तर) क्या कागज पर जो कलम से लिखा गया सो सब सच्चा ही हैं, ऐसा अगर माना जायगा तब तो जिसके मन मे आवें वह वैसा ही लिख के आप सत्यवादी और आप अपने चोरी झूठ बोलना जीव घात पने आदि कुकर्मो को भी अपने सत्कर्त्तव्य में लिख के ठहरा लेगा और यहां तक भी लिख लेगा कि मैं ही परम पूज्य अंतरयामी ईश्वर हूं (प्रश्न) नहीं २ ऐसे लखों को बुद्धिमान् बुद्धि से तपास करके फिर सच्चे को सच्चा और झूठे को झूठा मानेंगे (उत्तर) तो बस तुम्हारे ही वचन और समझ से ही इन्साफ हो गया, कि समझ से न्याय संपन्न

वचनों को मानना कान में, नाक में, बांस में, और पुरुष के पेट में गर्भाशय संबन्धी स्थान और पुरुष के वीर्य और स्त्री का रज (आर्त्तव) गर्भ को बधाने की वायु आदि पदार्थ वगैर औरत और मर्द के संयोग से और स्त्री के गर्भ रहने की पोलार और शरीर में किस जगह है, इतना जब तुम समझोगे तो फिर समझ ही लोगे कि यह बात कभी नहीं हो सकती, जोकि कान, नाक में गर्भ रहे. (प्रश्न) क्यों जी ऐसे शास्त्रों के बनाने वाले क्या शारीरक ज्ञान समझते नहीं थे, सो ऐसी २ बातें लिख दी (उत्तर) हम ऐसा क्योंकर कह सकते की वह नहीं जानते थे या जानते थे लेकिन इतना तो हम जरूर कह सकते हैं कि शरीर विद्या के अजान बांचने वाले और उन शास्त्रों के सुनने वालों की परिक्षा तो उन्हों ने जरूर कर ही डाली है, उन्हों ने विचारा होगा कि देखिये श्रोतार और वक्ता कैसेक अकलबन्द हैं, सो सुण के या बांच के " हरेनमः तहत्त " ऐसा कहते हैं, या कुछ तर्क भी करते हैं, जो तर्क करेंगे तब तो बुद्धिमान् हैं, ऐसा समझा देंगे और नहीं किया तो समझा जायगा कि भैंस के सामने गीत नाद करने जैसी कथा होगी ऐसी कुतूहलों की बातों से राजी होकर हमारी सेवा तो तन, मन, धन से जरूर ही बजावेंगे " अलंविस्तरेण " और पदार्थ विद्या वाले ऐसा भी कहते हैं, मत्र या तंत्र से या देवता सिद्ध पुरुषो के बरदान से कुछ सन्तान नहीं होता, यह वचन निश्चयनय के आश्रय का है, जिस जिस जगह पांचो समवायों में से कोई भी समवाय की कमी रहेगी वहां तो होगा नहीं लेकिन मंत्र, तंत्र और सिद्ध पुरुषों का आगे

इस के सन्तान होगा ऐसे ज्ञानद्वारा निकला जो वचन वह झूठ होता नहीं, जैसे ज्योतिष् के गणितद्वारा ग्रहण, तारो का उदयास्त, पृथ्वीकम्प आदि अनेक बातो को पहली कहते हैं और वह ही बात उसी दिन होती है, जैसे सामुद्रक से या कोक वात्सायन के लेख से बात मिलती है दोहा—"छिद्रदंता कोई इक मूरख, कोई इक निरधन टाट का। रूपवन्ती कोई इक सीता, कोई इक काना साधका" (प्रश्न) क्यो जी! यह लक्षणो वाले ऐसा होते है तो फिर कोई इक शब्द क्यों दिया (उत्तर) इन लक्षणो का विरोधी और कोई लक्षण जियादा बलवान् उन्हो के शरीर मे पड़ा होवे तो इन बातों को रोक देता है, इस वास्ते कोई इक ऐसा शब्द धरा है, इस अपेक्षा मन्त्र, तन्त्र, देव सिद्ध पुरुषों के वचन और पूर्वोक्त पांचों समवाय स्त्री पुरुषादिकों का शुद्ध सयोग गर्भोत्पत्ति का कारण है ॥

निश्चय सिद्धांत है पुरुष और स्त्री के सम्बन्ध से ही गर्भ पैदा होता है पंचेद्री तिर्यंच और मनुष्यों का तो और एकेंद्री से लेकर चोरेंद्री जीवो की उत्पत्ति तो बिना माता पिता के गर्भ वगैर सर्मूछिम अनेक कारणों करके उत्पत्ति है सो प्रकट ही है एकेद्री किसे कहना आखिर पचेंद्री तक किसे कहना यह सक्षेप समझ जीवविचार प्रकरण से सीखो पंचेंद्री समूर्छिम मनुष्य तिर्यंचों के विष्ठा और मूत्रादि चौदह जगह पचेंद्री मनुष्य और तिर्यंच भी कम शरीर अंगुल के असख्यातमे भागवाले पैदा होते है, तुरन्त ही मर जाते है चर्मचक्षुवालों को दिखाई नहीं देता, सर्वज्ञों ने ज्ञानद्वारा देखा थोड़े बहुत बुद्धिमानों के उद्यम से खुर्दबीन कांचद्वारा भी

दीखने लगा यह भी सर्वज्ञ भगवान् की सर्वज्ञता सिद्धपना प्रत्यक्ष आज के जमाने में प्रतीति करने लायक जाहिरा भई, उन्हों ने तो पहले ही से कहा था कि वीर्य और खून वगैरां में जीव है परन्तु मिथ्यात्वी कहते थे यह जैनों का गपोडा है, लेकिन खुर्दबीन बनाने वाले बुद्धिमानो ने तो सर्वज्ञ का वचन सत्य २ कर बतलाया (प्रश्न) क्योंजी तुम्हारे सर्वज्ञों ने तार, बिजली, रेल, खुर्दबीनें, फोनोग्राफ वगैरा क्यों नहीं बनाये, फिर सर्वज्ञता कैसी (उत्तर) तुम को यह तो खबर है ही नहीं कि सर्वज्ञ कैसे होता है घनघाती कर्मों के क्षय करने से तो केवलज्ञान होता है संसार का कोई भी काम उन्हों के करना बाकी नहीं रहा सो ससार का काम करें और करावें फक्त उन्हों के तो आप संसार से तिरना और सत् उपदेश देके जीवो को तारना इतना ही वह शरीर रहा जहां तक था तुम वहां तक क्यों जाते हो यह सर्व विद्या श्री ऋषभदेव सर्वज्ञ नहीं भये थे और तीन ज्ञान युक्त थे गृहस्थपने मे ही थे जभी उन्हो ने बहत्तर कलाये चलाय दी थी जो कुछ कलाविज्ञान तुम को आज के जमाने मे देख के आश्चर्य होता है वह सब बहत्तर कला के अन्दर ही की है (प्रश्न) अगर अन्दर की है तो यहां इन बातों का प्रचार क्यो नहीं रहा ? (उत्तर) कई बाते कोई वक्त प्रकट हो जाती हैं कोई वक्त लोप हो जाती हैं. (प्रश्न) हम तो यही जानते है यह विद्या पहले यहां नहीं थी इस वक्त अन्य देशांतरी बुद्धिमानों ने प्रकट की है, प्रत्यक्ष देखे हम तो वही सच्ची मानते हैं हक नाहक आर्यावर्त्त वालों की कलाकुशलता आगे ऐसी २ चीजो की थी सो-

हम कैसे मानें (उत्तर) हम तुम्हे पूछते हैं क्या तुम प्रत्यक्ष टाल और कुछ प्रमाण नहीं करते हो अगर नहीं मानते हो तो बतलाओ तुम्हारा परदादा था या नहीं, दूर से धूआं देखते हो, अग्नि नही दीखती तो वहां पर अग्नि है, ऐसा मानते हो या नहीं, दरियाव का यह पार तो देखा है, पहला पार तो किसी ने देखा नहीं इस वास्ते पहला पार है या नहीं, इत्यादि अनेक बातो को नहीं देखा है, सो मानते हो या नहीं (प्रश्न) यह बाते तो हम मानते हैं, अनुमान प्रमाण से, वह हमारा अनुमान प्रत्यक्ष से सम्बन्ध रखता है, जैसे हमने रसोई मे अग्नि का धुआं देखा है, तब हम को अनुमान भया है कि जहां धुआ दिखाई देवे वहां जरूर अग्नि होती है, ऐसे ही बहुतो के परदादे हमने प्रत्यक्ष देखे हैं, इस से अनुमान होता है कि हमारा परदादा भी जरूर होगा ब्रह्मपुत्र, सिंधु, गंगा वगैरः नदियों का पहला पार पांच चार दिन नाव मे बैठ के जाने से देखा है इस वास्ते अनुमान करते हैं कि दरियाव का भी पहला पार होगा लेकिन तुम किस अनुमान से कहते हो कि हमारे आर्यवर्त्त मे इत्यादि अनेक कलाकुशलता मौजूद थी (उत्तर) हमारा अनुमान भी प्रत्यक्ष से सम्बन्ध रखता है कि हमारे इस आर्यावर्त्त मे बडी २ चमत्कारिक विद्या थीं, सुनो! प्रथम तो हमारे देश में ऐसी कहनावत है कि "पानी की रेल कैसे जोर से चल रही है, फलाने आदमी की बात क्या तार बधी है अर्थात् क्या तार बंध बात करते हैं" इस से अनुमान होता है कि इस संसार में जो २ उपमा देने योग्य चीज होती हैं उस ही की उपमा दी जाती है, आकाश के फूलों की उपमा या

मनुष्य के सीग की उपमा नहीं दी जाती अर्थात् जो वस्तु होती नहीं उसकी उपमा किसी जगह भी नहीं सुनी दूसरा हमारा यह अनुमान प्रत्यक्ष से सबन्ध रखता है, हमारे इस देश के कारीगरों की बनाई भई अनेक चीजों को पहले अपने देश मे ले जाते हैं, फिर उसी नमूने को देखकर बनाके यहां भेजते हैं, हमने देखा है जैसे ढाकाई मलमल का नमूना देख इकतारी मलमल बनाई, काश्मीरी दुशाले के नमूने पर ऊनी कपड़े बीकानेर से चमडे की कुप्पियां रंगीज के विलायत जाती हैं, इत्यादि कहां तक लिखें नजर पसार के देखो इस देश में बायता चंदेरी के दुपट्टे आदि कैसे २ कपड़ों की कारीगरी थी. आज बनना बन्द हो गया तो भी ८० वर्ष के आदमियों ने पहरा है और देखा है तो इस वक्त नहीं बनने के सबब उसकी क्या नास्ती मानी जागगी, परदेशियों की चीज की रमणीक और दाम कम, इस वास्ते लोग लेते है तब यहां वालों की वस्तु बिकती नहीं तब करना बन्द भया लेकिन इन देशी परदेशियों की चीज एक भाव पडती है इस के दाम जियादा, ज्यों चले भी जियादा, परदेशी कारीगरी कलों की चीजें टूटे फूटे फटे बाद कोई काम नहीं देती, बुद्धि से विचारो बहुत कारीगरी के मकानात और अनेक वस्तुयें तो दंगे फिसादो में जाहिलों ने मिट्टी मे मिला दी रहे खये भी आबू के जैन मन्दिरों की कोरणी, ताजबीबी का रोजा क्या देखने से बड़े २ विद्वान अंगरेज भी चकराते हैं और इस का नमूना नहीं बन सकता, बहुत नमूने रूप चीजों को अगरेज सर्कार लण्डन ले गये तीसरा हमारे पास आगम प्रमाण कलाकुशलता का मौजूद है

वसुदेव हिंड चरित्र में कल का हाथी एक पहर में सौ योजन चलने- वाला बनाकर भेजा गया था उस के पेट में आदमी बैठाये गये थे यह ग्रन्थ अढाई हजार वर्ष का बना मौजूद है राजा अशोक चद्र का चरित्र, कल से चौदह रत्न रथत चलने के बनाये गये थे, रामचद्र और कृष्ण के वक्त विमान चलते थे सो रामायण और प्रद्युम्नचरित्र से साबित है हमारे ग्रन्थों में तो विद्याधरों की बहुत ही कला- कुशलता का बयान है कहा तक लिखें उस कलाविज्ञान के करोड में हिस्से की विद्या फैलनी नही है (प्रश्न) ग्रन्थो में तो कविताई का दखल बहुत है थोडीसी बात का विस्तार और बड़ाई बहुत की है उन सबों को सच्चा कैसे मानें (उत्तर) कविताई का दखल नगरी राजा रानी हाथी घोडे आदि पदार्थों में जरूर है सो तो साहित्य की मर्यादा है, अलंकार, नव रसादि रस वगैर साहित्य और ग्रन्थों की शोभा नही दीखती लेकिन वह उपमा सत्य ही माननी चाहिये, जैसे उवाईसूत्र में चम्पा नगरी का वर्णन, तैसे मुम्बई, कलकत्ता, जैपुर आदि शहर प्रत्यक्ष हैं, राजा अशोक चद्र का वर्णन तैसे आज है ॥

इस तरह कोई बात उस वक्त जियादा थी तो कोई बात इन्हों में जियादा है, इस तरह तारतम्यता पुण्य के फेरफार से मनुष्यों में होती ही है, जैसे दोहा—" पाग भाग सुकृत प्रकृत वाणी चाल विवेक, अक्षर लिखे न एकसा देखो मुल्क अनेक" यह तो सब एक सरीखे होते ही नही और इन वर्णन ग्रन्थों को सुन के अपनी २ उन्नति का कर्त्तव्य भी चारों वर्ण के बुद्धिमान् सीख के करने भी लग जाते हैं अपनी २ हैसियत मुजब, जैसे हमारे बीकानेर के

राजाधिराज महाराज श्रीमान् गंगासिंह जी बहादुर ने अपने पूर्वज वीर पुरुषों का चरित्र सुन के छोटी ही उमर में वीर पुरुषों के अग्रेश्वरी बनकर चीन पर चढ़ाई करी और मान पाया, इस वास्ते ग्रन्थों का वर्णन भी हितकारी है व्यर्थ नहीं समझना और जो जो यथार्थ इतिहास हैं सो तो जैसा भया वैसा ही लिखा है, उदाहरण कृष्ण ने गोवर्द्धन पर्वत उठाया यह तो सच्ची बात है, इन्द्र का मानहरण ईश्वरता का कर्त्तव्य, यह कवितांई का दखल कहो या यकीन लाना तुम्हारी श्रद्धा पर है इसी तरह जो २ इतिहास में यथार्थ है सो और उसका वर्णन जुदा २ स्वतः बुद्धिमान् समझ लेते हैं जिस में अलंकार नहीं वह ग्रन्थ शून्य है, जैसे शृंगाररहित सधवा स्त्री (प्रश्न) हम तो ग्रन्थों की सब बातों पर यकीन नहीं लाते, मानने योग्य होय तो मान भी लेते हैं (उत्तर) हमारा भी यही सिद्धांत है, यथार्थ ही को हम मानते हैं, लेकिन जिन बातो पर न्याय से प्रमाण ठहरा है, अथवा उस ग्रन्थ का रचयिता क्रोध लोभ से रहित था, ऐसों के वचन हम प्रमाण करते हैं, वह चाहे आगम प्रमाण ही है, प्रत्यक्ष अनुमान से संबन्ध भी नहीं रखता होय, जैसे—स्वर्ग और नरक मोक्ष इत्यादिक जो २ बात हो, यही बात न्यायमत का प्रवर्त्तक गोतम भी अपने न्यायसूत्र में लिखता है कि वीतराग का वचन है सो ही यथार्थ है, बाकी अल्पज्ञों के वचन एक २—नय से सच्चे भी हैं, सर्वांग नय से झूठे भी हैं, लेकिन हम तुम्हें पूछते हैं कि प्रमाणीक यथार्थ इतिहासो में कलाकुशलता आर्यावर्त्त में थी आज के जमाने से करोड़ों दरजे, सो तुम मंजूर करते हो या नहीं. (प्रश्न) तुम्हारी लिखी युक्तियों से हम लाजवाब हैं, तो भी इतनी कसमसी हमारे

जरूर है कि क्या जानें ऐसी संप और वृद्धि का फैलाव अंगेरजों के जैसा उद्यम हिंद मे कैसे था, इस वास्ते कला कोशल होने का विचार पडता हे (उत्तर) हमारे आर्यावर्त्त के लोग इन तीनों बातो मे पहले पूरे थे, सब तो विद्या पर होता है सो तो हम क्या लिखें यहां के लोगों के बनाये भये ग्रन्थो के उल्थे अगरेजी या और २ भाषा में करले गये और अभी भी कर रहे हैं, थोडासा पूरावा देता हूं जरा बानगी देखने से बुद्धिमान् सब विचार कर लेते हैं वैद्यकविद्या का अगरेज़ी में पहले उल्था भया जिसका कारण पहले ऐसे भया ज्योतिष्विद्या का प्रथम चलना इस आर्यावर्त्त से भया, ईरानी लोग इस विद्या को यहां से ले गये, यूनानियों से यूरोप में फैली, बेली और प्रोफेसर यूरोपी विद्वान् इस बात को कबूल करके लिखते हैं कि यह विद्या पांच हजार वर्ष पहले भारत में प्रचलित थी वह समय आर्यों की बहुत उन्नति का था, इस विद्या का पूरा अग हिंद से ही हमारे यहां यूनानियो के मारफत प्राप्त भया रेखागणित, अक गणित, बीज गणित त्रिकोणादि गणितों मे आर्य पूरे थे, ऐसे ही व्याकरण, गानविद्या, वास्तुविद्या में यहां के कारीगर नामी थे. बादशाह सिकदर इस विद्या के सीखने को अपने कारीगरो को यहां छोड़ गया था, इस तरह इस विद्या ने भी यहां से यूनानियों द्वारा यूरोप मे प्रवेश किया, इस तरह युद्धविद्या में भी यह देश वाले बड़े जबर थे, मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त और यन्त्र मुक्त आदि अस्त्र, शस्त्र, गदा, वीरघातनी, शक्ति, शतघ्नी, सहस्त्रघ्नी आदि बना जानते थे और चलाते थे, व्यूहादिक रचते थे, हजारो इतिहास मौजूद हैं, अन्य देशांतरी लोग

पहली कलम मंजूर करेंगे क्योंकि मीठा २ गडपप्प कड़वा २ थू थू, वेद के विरोधी मुसल्मान, अंगरेज, बौद्ध चीन वाले आदि पिछला लेख मंजूर करेंगे, अब दूसरा प्रमाण अंगरेजी पढ़े नाम जैनो के वास्ते लिखता हू, जिन्हो ने फक्त जैन जाति मे जन्म लिया है, जैन के तत्वों के अजान उन के वास्ते, एक साहिब मेक्समूलर लिखता है जैन और बौद्ध एक हैं, दूसरे जनेलकनिंग होम साहिब लिखते हैं जैन धर्म सब धर्मो से आदि है और बौद्ध धर्म प्राचीन नहीं है, एक साहिब लिखते हैं, जैन धर्म में से बौद्ध धर्म पचीस सौ वर्ष के लगभग गया के मुल्क में निकला है, इन तीनों में से पिछला लेख नामी विद्वान् विद्यमान डाक्टर यूरोपी बुहलर साहिब का है, इन तीनों लेखो में से कौनसा सच्चा मानते हो (प्रश्न) हम तो वही मानते हैं जो पूरी साबूती और पूरे पुरावे का है (उत्तर) यह कहना न्यायसंपन्न हैं, लो फिर चाहे अंगरेज होय चाहे दूसरा, पक्षपातरहित वचन मानना वही लेख सच्चा है यही हमारा सिद्धांत है अलंविस्तरेण ॥

अब गर्भ की व्यवस्था लिखते हैं ॥

वीर्य और खून के सयोग से उस मे से सजीव पिंड बधता है, मर्द की गोली मे जो धातु होता है उस में बारीक २ ततु जैसा पदार्थ होता है, सूक्ष्मदर्शक कांच से देखने से वह तंतु बारीक २ सिर और पूछड़ी वाले हलते चलते जीव दिखाई देते हैं सम्बन्ध

भया पीछे कमल के मुह मे गिर कर गर्भस्थान मे जाता है औरत के गर्भस्थान के बाजू पर गांठे होती हैं उस में बारीक अंडों के जैसा कण पैदा होता है, वह कण पकने के समय पर ऊपर तिरके आता है और गर्भस्थान की नली का एक छेड़ा उस के लग जाता है, पीछे यह अंडा जैसा कण उस लगी हुई नली में फूटता है और उस में से गर्भ रहने लायक पदार्थ गर्भस्थान में दाखिल होता है और आया भया वीर्य के साथ मिलता है, इन दोनो के संयोग से गर्भ रहता है, इस तरह गर्भ रहा भया गर्भस्थान की नली में से होकर गर्भाशय में जाता है तब गर्भाशय का पड जाडा पडता है और गर्भवाले पदार्थ के आस पास वींटीज कर एक थैली जैसा हो जाता है, इधर गर्भ बधता है, कारण माता के खून की नशो की शाखा उस में जाके ९ या १० महीने तक पोषण करता है, एक महीने का गर्भ पाव से आधा इच जितना लम्बा होता है और उस में अंगोपांग की प्रकटता नही दीखती लेकिन मुह की जगह छोटीसी फाड होती है और दो आंखो की जगह काला दाग दिखाई देता है अब दो महीने का गर्भ सवा से डेढ इच लम्बा होता है और आसरे डेढ रुपया भर वजन होता है और मुह, नाक, कान, आंख वगैरह चहरे का अवयव खुला दीखे ऐसा होता है और हाथ पांव के कितने एक भाग अलग पड़े भये दीखते हैं और आंख के ऊपर की कमान होती मालूम पडती है. तीसरे महीने में हाड बनने शुरु होते है और दो से अढाई इच लम्बा होता है, २॥ से ४। तोला वजन में होता है और मांस के लोचाओं की निशानिया मालूम देती हैं, चेहरा और सिर बराबर हो जाता है,

पहली कलम मंजूर करेंगे क्योंकि मीठा २ गडपप्प कडवा २ थूथू, वेद के विरोधी मुसल्मान, अंगरेज, बौद्ध चीन वाले आदि पिछला लेख मंजूर करेंगे, अब दूसरा प्रमाण अंगरेजी पढ़े नाम जैनों के वास्ते लिखता हूं, जिन्हों ने फक्त जैन जाति में जन्म लिया है, जैन के तत्वों के अजान उन के वास्ते, एक साहिब मेक्समूलर लिखता है जैन और बौद्ध एक हैं, दूसरे जनलकनिंग होम साहिब लिखते हैं जैन धर्म सब धर्मों से आदि है और बोद्ध धर्म प्राचीन नहीं है, एक साहिब लिखते हैं, जैन धर्म में से बौद्ध धर्म पचीस सौ बर्ष के लगभग गया के मुल्क मे निकला है, इन तीनों में से पिछला लेख नामी विद्वान् विद्यमान डाक्टर यूरोपी बुहलर साहिब का है, इन तीनों लेखों में से कौनसा सच्चा मानते हो (प्रश्न) हम तो वही मानते हैं जो पूरी साबूती और पूरे पुरावे का है (उत्तर) यह कहना न्यायसंपन्न हैं, लो फिर चाहे अगरेज होय चाहे दूसरा, पक्षपातरहित वचन मानना वही लेख सच्चा है यही हमारा सिद्धांत है अलंविस्तरेण ॥

अब गर्भ की व्यवस्था लिखते हैं ॥

वीर्य और खून के संयोग से उस मे से सजीव पिंड बधता है, मर्द की गोली मे जो धातु होता है उस में बारीक २ तंतु जैसा पदार्थ होता है, सूक्ष्मदर्शक कांच से देखने से वह तंतु बारीक २ सिर और पूंछड़ी वाले हलते चलते जीव दिखाई देते हैं सम्बन्ध

भया पीछे कमल के मुह में गिर कर गर्भस्थान में जाता है औरत के गर्भस्थान के बाजू पर गाठे होती हैं उस मे बारीक अडों के जैसा कण पैदा होता है, वह कण पकने के समय पर ऊपर तिरके आता है और गर्भस्थान की नली का एक छेडा उस के लग जाता है, पीछे यह अडा जैसा कण उस लगी हुई नली में फूटता है और उस में से गर्भ रहने लायक पदार्थ गर्भस्थान में दाखिल होता है और आया भया वीर्य के साथ मिलता है, इन दोनो के सयोग से गर्भ रहता है, इस तरह गर्भ रहा भया गर्भस्थान की नली में से होकर गर्भाशय में जाता है तब गर्भाशय का पड जाड़ा पड़ता है और गर्भवाले पदार्थ के आस पास वीटीज कर एक थैली जैसा हो जाता है, इधर गर्भ बधता है, कारण माता के खून की नशो की शाखा उस में जाके ९ या १० महीने तक पोषण करता है, एक महीने का गर्भ पाव से आधा इच जितना लम्बा होता है और उस में अगोपांग की प्रकटता नहीं दीखती लेकिन मुह की जगह छोटीसी फाड़ होती है और दो आंखों की जगह काला दाग दिखाई देता है अब दो महीने का गर्भ सवा से डेढ इच लम्बा होता है और आसरे डेढ रुपया भर वजन होता है और मुह, नाक, कान, आख वगैरह चहरे का अवयव खुला दीखे ऐसा होता है और हाथ पांव के कितने एक भाग अलग पड़े भये दीखते हैं और आंख के ऊपर की कमान होती मालूम पडती है, तीसरे महीने में हाड बनने शुरू होते है और दो से अढाई इच लवा होता है, २॥ से ४। तोला वजन में होता है और मास के लोचाओं की निशानियां मालूम देती हैं, चेहरा और सिर बराबर हो जाता है,

आंख के पोपचे ढके भये, भांपने की कोर छोटी, मुंह बंद, हाथ पांव प्रकट और हाथ की अंगुलियां छोटी मालूम देती हैं. चौथे महीने का गर्भ ५ से ६ इंच तक लम्बा और ७ से ७॥ रुपये भर वजन में होता है, चमड़ी गुलाबी रंग की, मुंह खुला, आंख पर पतला पर्दा, नख होना शुरू होता है और जाति स्त्री पुरुष की मालूम होती है, शरीर के सब अंग उपांग बन जाते हैं, हृदय बनता है इस वास्ते चेतना धातु प्रकट होती है, उस से गर्भरूपी जीव रूप, रस, गन्ध वगैरह की इच्छा करता है, पांचवें महीने का गर्भ ६ से ७ इंच लम्बा और १२ से १८ रुपये भर वजन में होता है, इस महीने में हाड और मांस बधता है, सिर का कद बड़ा होता है नख प्रकट दीखते हैं सिर के बाल दीखना शुरू होता है और मन चेतनावाला होता है, छठे महीने का गर्भ ९ से १० इंच लम्बा और एक रतल वजन में होता है, आंख मिची हुई होती हैं और चेहरा लाल जामुन के रंग जैसा, बाल रुपहरी रंग का होता है, इस महीने में बुद्धि पैदा होती है सातवें महीने का गर्भ १३ से १५ इंच लम्बा ३ से ४ रतल तक वजन में होता है, चमडी गुलाबी रंग की जाड़ी, नख बड़ा लेकिन आखिर तक नहीं पहुंचा भया, आंख के पर्दे दूर भये भये आठवें महीने का गर्भ १४ से १६ इंच लम्बा ४ से ५ रतल वजन में होता है, आगे से चमड़ी जाड़ी और नख पूरे होते हैं, नवें महीने का गर्भ १७ से २१ इंच लम्बा और ५ से ९ रतल वजन सरासरी ७ रतल वजन में होता है इस तरह नवें महीने तक गर्भ का बधना होता है पीछे बालक बाहर आता है उस वक्त तक उस का शरीर पूरा नहीं

होता है उसकी हड्डी पूरी नहीं और कच्ची होती है जैसे २ बधता जाता है तैसे २ हड्डी और दूसरे पदार्थ धातु वगैरह सम्पूर्ण होता जाता है इस तरह-सम्पूर्ण परिपक्व भया मनुष्य का शरीर सरासरी १४० रतल का होता है शरीर के बांधे में हाड पिजर मांस और स्नायु अर्थात् संधि बंधन का मुख्य भाग वजता है, इस वास्ते उन जुदे २ भागो का वर्णन करते हैं ॥

हाड पिंजर, (स्केलेटन *Skeleton*).

शरीर की मजबूती हाड पिंजर ऊपर है, शरीर के दूसरे सर्व भाग हाड पिजरों के लगे भये रहे हैं और इस शरीर का रचण भी हाडों से है, माथे की खोपडी, छाती का पिंजर और पेट की ,वखोल यह तीनों पोलार की जगह है और यह सब हाड पिंजर के बीच में आये भये हैं इन तीनो पोलारों में जिदगी के बहुत जरूरी का अवयव धरने में आया भया है और हाडों से उनका रचण होता है, हाड पिजरों से हाथ पांव बने भये हैं जिस के ऊपर हाल चाल वगैरः तरह वार गति बन रही है. हाड पिंजरों का जुदा २ हाड, मांस के बंधनो से ऐसा मजबूत बधा भया है और मांस से ढका भया है सो एक दम टूट नहीं सकता, एक सौ चालीस रतल सरासरी वजन इस शरीर का गिना गया, जिस में से हाड पिजर का सरासरी वजन २५ रतल आसरे है हाड पिजर के हाडों की जुदे २ पंडितों ने जुदी २ गिनती करी है, उस में कुछ २ तफावत

मालम पड़ता है और प्राचीन ग्रन्थकारो की गिनती से इस वक्त वालों की गिनती में वहुत फर्क दीखता है, दोनों की गिननी नीचे के कोठे में देखो ॥

अर्वाचीन गिनती	प्राचीन गिनती.	
माथे की खोपड़ी में ८	सब सिर में, ...	६५
चेहरे मे १४	६ खोपड़ी मे	२ आंख मे
डोक मे .. १	२ कपाल में	४ कान में
करोड़ में ... २६	१ तालवे में	४ कण्ठ में
छाती के सीने में १	२ हिडकी मे	९ डोक में
पांसली ... २४	३ नाक मे	३२ दांत
दो हाथ तथा खभेमे ६४	सब धड़ मे	११५
दोनों पांव तथा पग-	२ हांस में	३० पीठ मे
तल में ६२	८ छाती में	२ पगतल में
दांत ३२	७२ पांसली मे	१ त्रिक
कान के छोटे हाड ६	१ उपस्थ	१ गुदा
	शाखाओ मे	१२०
	६० दोनो हाथो मे	६० दोनों पांवों में
कुल ..२३८	कुल ..	३००

ऊपर के कोठों मे हाडों की गिनती मे वड़ा तफावत है सो तफावत विशेष करके छाती तथा पसवाड़ों के हाडों मे है अभी की गिनती में छाती मे एक हाड और २४ पसलियां उस के लगी भई हैं, प्राचीन पंडितों ने छाती के और पसवाडों के मिलाकर अस्सी हाड गिनाये है इतने पचपन हाडों की वढोतरी दीखती है अभी के डाक्टर लोग छाते के एक २ तरफ बारह २ पसलियां गिनते हैं और प्राचीन पण्डितों ने एक २ तरफ छत्तीस २ पसलियां गिनी हैं, इस पर ऐसा अनुमान होता है एक २ पसली को तीन २ जुदे २ हाडो की बनी भई वह मानते थे, इस के अलावा हाडों की गिनती में जो मतभेद देखने मे आता हैं उसका कारण ऐसा है कई एक पण्डित तो नरम कवले हाडो को हाडों की गिनती में नहीं गिनते हैं और कितनेएक गिनते हैं गर्भावस्था मे हाडों की शुरूआत कूर्च जैसी होती है और बालक जन्मे पीछे उस में से धीमें २ बधना शुरू होता है शरीर में हाड जुदी २ शकल के हैं कितनेक तो लम्बे, कितनेक छोटे, कितनेक चपटे, कितनेक चौड़े, कितनेक गोल और कितनेक वेडौल होते है. लम्बे हाड पहले बीच में से जुदा होते हैं और पीछे से उनका छेडा संध मिलके एक हो जाते हैं इस कारण सभी ऊपर लिखे हाडों की गिनती में फर्क आता है शरीर के बहुत से हाड बाहर से करा होता है लेकिन अन्दर से नरम होता है जैसे कितनेक हाड सख्त और वरडे है, तैसे कई एक कमान की तरह लुलते है, हाडों पर तरह २ के चीरे और खड्डेहैं, होते नाके और खरदरी जगह होती है जिस से नशों और रगों हाडो के आस

कूर्चा तथा सांधे (कार्टीलेज *Cartilage*).

हाडों का पहला स्वरूप कूर्चा है, यह कूर्चा एक तरह का नरम आधा हाड है, वह कर्रा, स्थितिस्थापक, वरड़ और जाडे रवड़ जैसा सफेद पदार्थ है, वह हाडो जैसा सख्त और वरड नहीं है परंतु उस में हाडों जैसा गुण धर्म रहा भया है, गर्भ मे पहले कूर्चा, पीछे उस में से हाड तैयार होते हैं और कितने एक कूर्चे जवानी में हाड हो जाते हैं और कितने एक कूर्चे बुढ़ापे में हाड हो जाते हैं और कितने एक कूर्चे अंत तक कूर्चे ही बने रहते हैं, कान, नाक, भांपने, पांसली और सांधाओ में रहे कूर्चे हमेशा कूर्चे ही रहते हैं ॥

सांधें, (ज्वाइन्टस *Joints*).

दो हाड जहां संधते हैं, उसको सांध कहते हैं, शरीर में ऐसे सांधे बहुत हैं, कितने एक सांधे तो जरा भी हलते चलते नहीं, दाखिला—जैसे सिर की खोपड़ी मे और चेहरे के सांधे बहुत से इस किस्म के हैं सो एक दूसरे हाड के संग ऐसा मजबूत संधा भया है, सो ऐसा बाहर से दिखाई देता है, जाने एक ही है, ऐसा मालूम देता है, दूसरी तरह के सांधे थोड़े २ हलचल करते हैं, ऐसी संधियों में हाडों का छेड़ा अड़ोअड़ होता नही, लेकिन दो हाडो के बीच में गादी जैसा पदार्थ होता है, जैसे कमर तथा गर्दन के सांधे, ऐसी जात के सांधों से संधा भया अवयव चारो तरफ फिर सकता है,

इन सांधो में एक तरफ के हाड के गोल दडी जैसा सिर होता है और सामने के हाड में छेड़े पर दडी बैठ जाय ऐसा गोल खड्डा होता है और गोल होने के सबब वह चोतरफ फिर सकता है, हाथ के खवे और पग के थापों में इस तरह के सांधे हैं, फिर कितने एक सांधे खीली नालीवाले होते हैं, नरामादगी की तरह कोहनी, पोंहचे, गोडे और गिरिये यह आठो में नरामादगी है, उस से सदूक के ऊपरले ढकने मुजब दो तरफ ही फिर सकते हैं, हाडों का दोनों नाके जहां आगे शामिल होते हैं, उस पर कूर्चे का एक थर होता है. ये कूर्चे स्थितिस्थापक अर्थात् फिरे ऐसे होने से सांधों पर जोर को धक्का लगने पर भी उन कूर्चों के सबब उन हाडों का बचाव होता है, सांधों के चारों तरफ पड़त लपटा होता है उस में चिकना-रस पैदा होता है और वह रस सांधाओं का पोषण करता है, सांचों में जैसे तैल की जरूरत पड़ती है तैसे सांधों को नरम रखने को इस रस की जरूरत है, दो सांधों को जुड़ा रखने को एक अथवा जियादे बन्धन होते हैं, सो संधिबन्धन कहलाते हैं, यह बन्धन मांस की बनी सफेद तांतुओं का होता है, कितने एक बन्धन पाटे जैसे होते हैं और पग के हाथ के थापे के बन्धन थैली जैसे होते हैं, मतलब के जैसे सांधे होते हैं तैसे हीज उस के वेसते भये बन्धन होते हैं, इन बन्धनों के सिवाय आस पास आये भये मांस के लोचे जिन्हों को स्नायु नाम से कहते हैं वह भी सांधों को मजबूत करते हैं ॥

के रास्ते बाहर आता है, मूत्र की नली के नीचे वृषण की कोथली आई भई है, जिस के आधार सब शरीर टटा भया है, करोड़ में हाडो की एक पोली नली उतरी भई है, ये नली अखीर ऊपर के तरफ मगज से सम्बन्ध रखती है और नीचे कमर तक जा पहुंची है धड़ के अन्दर छाती और पेट इन दोनों पोलो के सिवाय दो तरफ दो हाथ और नीचे दो पांव आये भये हैं, मगज में रहे अधिकारी के हुक्म से पदार्थो को पकड़ते हैं, छोड़ते हैं, इस शरीर को एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं ॥

माथा, सिर की तूमड़ी, (स्कल Skill).

इसकी हकीकत पीछे लिखी जिस मूजब है, मुख्य तीन पोल इस शरीर में हैं, खोपडी की, छाती की, और पेट की शरीर के सब चैतन्य वाले भाग इन तीनों में आये भये हैं, शरीर में सब अवयवों की जुदी २ क्रिया वही जीवन है; इन सब जीवन स्थानों में यह मगज सर्वोपरि स्थान है इस वास्ते उसका रक्षण भी बहुत मजबूत किले में भया है, वह किला सिर की खोपडी है, इस सिर की खोपड़ी में चार मुख्य इन्द्री आंख, नाक, कान, मुंह आये भये हैं ॥

मगज, भेजा, मन, (ब्रेन Brain).

मगज खोपडी की पोल में बराबर बैठा भया है, खोपड़ी की जमीन मगज की सपाटी के लगती है, इतने उस के खड्डे खोचरे हैं, उस

में मगज बराबर बैठा भया है, खोपडी में मगज के वास्ते तीन ढकने याने पुड़त हैं, सब से ऊपर का पुड़ जाडा और मजबूत है और खोपडी के चारों तरफ आया भया है, उसका एक फांटा मगज के दो भागों के बीच में उतरता है, मगज में से जो खून फिर के पीछा जाता है, इस वास्ते बाहर के पुड में नली जैसा रास्ता होता है, दूसरा पुड़ भेजे के बीच में हैं, सो पुड दोलड़ा है और उस की पोल में प्रवाही पानी जैसा निर्मल है उस में थोड़ा खार का भाग होता है, तीसरा पुड़ मगज के लगों लग आया भया है, उसको अन्तर पुड कहते हैं मगज के पोषण वास्ते उस में खून की नलियों का जाल पसरा भया है, मगज के चार भाग हैं जिस में से दो मुख्य हैं, अगला भाग सो तो वड़ा भेजा पिछला भाग सो छोटा भेजा, बड़ा भेजा सिर के अगले तरफ और ऊपर के तरफ धरा भया है, भुमारों के जरा ऊपर से दोनों कानो के छेद के आगे होकर सिर के आस पास एक लकीर खैंचने से भेजे की हद का अड़गंडा मन में आ सकता है, इस पर से गोल टोपसी जैसा और खर खोदरा दीखता है, उसके बीच में एक फाड़ होने से बीच में उसके दो भाग, अर्ध गोलाकार से भया २ है, इस वडे मगज के गहरास में तीन छोटी २ पोलार की जगह है और उसके तले से कितने एक तंतु निकलकर नाक, आख, कान, जीभ वगैरः में फैली है, छोटा भेजा सिर के पिछले हाडों के खड्डे में धरा भया है, वह वडे भेजे की तरह टोपसी जैसा नहीं, लेकिन किताव के पन्नों की तरह उस में पुड़त होता है, उनके भी अर्ध गोल भाग है, उसका कद नारंगी

जैसा है, छोटे भेजे को काटे तो अंदर झाड जैसा दिखाई देता है, मगज के सङ्ग दूसरे छोटे २ भाग हैं, उन मे से एक भाग सब के नीचे आया भया है, वह पीठ की करोड़ रज्जु के संग सम्बन्ध रखता है; इस भाग की मदद से श्वांस लेने का काम चलता है, इस भाग को तथा ऊपरले बड़े तथा छोटे भाग को जोड़ने वाला एक चौथा मगज का भाग है, सो आड़ा पड़ा भया है, वह सब से छोटा भाग है सामने ललाट का जो बड़ा मगज है, उसको किसी ने काट भी डाला होय तो भी जहां तक पिछला छोटा मगज कायम रहता है, वहां तक श्वांस लेने की क्रिया तो शुरू ही रहती है, सब मगज का एक दर सरासरी वज़न आसरे तीन रतल गिना जाता है औरत का मगज मर्द के मगज से कुछ एक छोटा होता है, मगज जिस का बड़ा अकल उस में जियादा होयगी, छोटे वाले में कम उमर की सङ्ग मगज भी बढ़ता है तीस वर्ष से लेकर ४० वर्ष तक मगज सम्पूर्ण हालत में आता है, इस उमर पीछे मगज का वजन घटना शुरू होता है, किसी २ बहुत बुद्धिमान् विचक्षण का मगज़ चार रतल तक वजन में होता है और मूर्ख से मूर्ख आदमी का भेजा डेढ़ रतल वजन में होता है, हाथी और मगरमच्छ सिवाय दूसरे सब प्राणियों से मनुष्य का मगज जियादा भारी होता है, हाथी का मगज ८ रतल से १० रतल तक और मगरमच्छ का ५० रतल का होता है ॥ इति मगज वर्णन ॥

नेत्र, आंख, दृष्टि (आई Eyes).

आंख दो हैं, भंमारा भांपणा वगैर बाहर के दीखते भाग हैं, इस इन्द्री से देखने का काम होता है, नाक के दोनों तरफ के खड्डों में धरा भया है, डोले के ऊपर तीन पुडत हैं, सब से बाहर का पुडत सफेद रंग का है, वह अपार दर्शक है, उस में से प्रकाश अन्दर नहीं जा सकता इस पुडत की सख्ताई के सबब डोले की गोलाकृति कायम रह सकती है, लेकिन उसका अगला पिछला भाग कांच जैसा निर्मल है, इस वास्ते उस मे से उजाला जा सकता है, आंख के सफेद पुड़त के नीचे दूसरा काला पुडत है, सो बारीक नसों से तन्तुओं का बना भया है, इस के रंग से ऊपर का डोला काला अथवा मांजरा दीखता है, आंख के अन्दर गोल चक्कर जो दीखता है, सो कीकी का पर्दा है, उस के बीच में एक नाका है, जिसको कीकी अथवा पुतली कहते है, कीकी के नाके पर फक्त पहले पुड़ का नाजुक अगला भाग है, कीकी पर्दे के सकोचने प्रमाण कीकी एक से बीस तक और एक से तीन इंच तक छोटी और बडी हो सकती है और उस पर से कितने एक रोगों की परिचा हो सकती है, आंख का तीसरा पुड अन्दर है और आख की दृष्टि तन्तुओं डोले में पसर कर वह पुड़ बना है, वह तन्तु वाला पुड़ कहलाता है, आख के बाहर के पुड़त साथ मास के छ छोटे लोंचे लगे भये हैं, जिस करके डोला अपने चारों तरफ फेर सकते हैं, आंख के अन्दर तीन कोथली जैसी जगह है जिस में आंख का

पानी तथा रत्न जैसी जरूरी चीजें रह सकती हैं, अगली कोथली आंख के निर्मल सफेद पुड़ के और रत्न की कोथली के बीच मे हैं वह कोथली सब से छोटी है उस में आंख का पानी रहता है, इसका वजन पांच गेहू भर है आंख की बिचली कोथली सख्त पुड़की बनी भई है, उस मे आंख का रत्न लटका भया है, यह रत्न आगे से पीछे से गोल हीरा जैसा पार दर्शक है, आंख की तीसरी कोथली सब से बड़ी है, जो सब के नीचे पुड़त में है जिस मे बिल्लौर जैसा निर्मल पदार्थ इन भागों की मदद से अपने बाहर का पदार्थ देख सकते है, जो चीज अपने देखते है उस के ऊपर से निकलते उज-वालों के किरण डोले के सफेद स्वच्छ पड़दे के अन्दर से आंख के अन्दर दाखिल होता है उस मे से पूर्वोक्त कोथली में से होकर कीकी में से ये किरणों जैसा प्रशार होता है किरणों अन्दर इकट्ठी होकर रत्न में दाखिल होकर एक मिलते हैं, बाद रत्न में से निकल, सब से पिछली कोथली के बिल्लौर मे घुस के वहां से तन्तु वाले पुड़त पर इकट्ठे होते हैं वहां मूल पदार्थ की आकृति का प्रति-बिम्ब उस पर पडता है, उसकी खबर मगज को पहुचते ही उस चीज की शकल रूप रंग वगैरः का जीव को ज्ञान होता है, अंधेरे में पड़ी चीज मे से किरणों निकलते नही इस से उसकी परछांह तन्तु पुड़ पर पडता नहीं इस वास्ते अंधेरी मे पड़ी चीजों को अपने देख नहीं सकते सो दर्शनावरण कर्म है आख के कोनों में डोले से अलग एक २ मांस की गांठ देखने मे आती है, उसको अश्रुपेसी कहते हैं, उस में आंसू पेदा होता है, ये आंसू आंख को बहुत फायदे

मद है, उस आंसू से डोले भीगे और ताजे रहते हैं और आंख में कोई फूस फांटा जाता है, उसको आंसू धोकर बाहर निकाल डालता है आंखों के कोने मे नाक के जड़ के पास एक बारीक छेद है, उस में से आंसू आधे इंच जितनी लम्बी नली के रास्ते नाक मे उतरता है, भांपने-बार २ मिचते रहते हैं, उस से आंख की रक्षा याने हिफाजत होती है, इतना ही नही लेकिन डोले के ऊपर के आंसू कोने के तरफ ढकेली जकर उस पूर्वोक्त नली के रास्ते नाके में हवा का आना जाना होता है, उस हवा से वह आंसू के सूक्ष्म परमाणु होकर उड़ जाते हैं, इस वास्ते नाक मे आंसू मालूम नहीं पडते हैं, जब कोई भी बीमारी के सबब आंख के आंसू नाक में बहता बन्द होता है, तब वह आंसू आंख का गाल पर बहने लग जाता है, उसको नाक स्वर का दर्द कहते हैं ॥

कान, श्रवणेंद्रि, (इयर *Ear*.)

सुनने की इन्द्री को कान कहते है, कान का जो बाहर का भाग दीखता है, सो नरम हाडो का याने कूर्चा का बना भया है हरएक कान में एक २ छेद हैं, ये छेद के आगे से एक छोटी नली शुरू है, सो आसरे डेढ इंच लम्बी है, इस नल पर चमड़ी का पुडत है, कान की अगली नली का नरम भाग नरम हाड याने कूर्चे का बना भया हे और पिछला भाग हाड का बना भया हे, कान के अंदर की चमड़ी बहुत पतली होती है, कान मे जो मैल होता है सो

बाहर से नही आता इस चमड़ी में से पैदा होता है, कान के बिच-ले भाग मे खड़ा है उस के तथा बाहर के कर्ण नली के बीच में एक बारीक पर्दा आया भया है, उसके भाग में से एक महीन नली निकलकर अन्दर के भाग में उतरी है, इस से और कान के बिचले भाग में से मुह के सम्बन्ध रहा भया है, कान का आखीर अन्दर का भाग सब से जरूरी का है क्योंकि उस मे सुनने के तन्तुओं आये भये हैं, इस भाग का वर्णन सहज मे समझ में नहीं आ सके ऐसा है, लेकिन मगज में से आये भये श्रवण तन्तुओं इस भाग में दाखिल भया है, उस तांतुओ के प्रवेश वास्ते उस मे महीन २ छेद हैं, कान बाहर हवा मे जो कुछ आवाज होता है, उस हवा का शब्द पुद्गल कान के अन्दर पर्दे पर पडता है, तब वह शब्द मृदग के पुड़त की तरह उस आवाज को अन्दर श्रवण तन्तु मगज को पहुचाता है, वहां सुनने का ज्ञान उस जीव को प्राप्त होता है ॥

नाक घ्राणेंद्री, (नोज़ *Nose*)

नाक का अगला भाग पाच नरम हाडो का अर्थात् कूर्चाओ की बना भया है, बाहर दो छेद दीखता है उसको नसकोरा कहने में आता है, नाक के दो भाग है, एक तो बाहर दीखे सो दूसरा अंदर का बाहर के नाक की जड़ कपाल के साथ है, जैसे बाहर दो छेद है, तैसे अन्दर भी दो छेद है वे मुह के पिछले भाग से तथा गले के साथ सम्बन्ध रखता है, दो नसकोरों के बीच में एक पर्दा है,

नसकोरों के मुंह आगे बाल उगते हैं वह बाल नाक के अंदर जाते भये धूल वगैरः का अटकाव करता है, मगज के जो तंतु नाक मे उतरे है वह खसबोई वगैरः परखने की शक्ति रखते हैं ये सुगंध दुर्गंध के पुद्गल पहली नाक के गीलास वाले पदार्थ में जब प्रवेश करते हैं, तभी खुसबो की भावना पैदा होती है जब नाक सूखा होता है तब बासना का ज्ञान नहीं होता है, खूसबो की बराबर समझ पड़ने को उस सुगंध दुर्गंध पदार्थ को जब हवा से ऊपर चढ़ाते हैं तब हवा से जियादा असर मालूम पडता है, मगज के तंतुओं में से पहला जोड़ा सूंघने की क्रिया करता है, वह मगज में से नीचे उतरे बाद उसकी बारीक शाखायें नाक के ऊपरले भाग में पसरे हैं और येही सुगंध दुर्गंध को परखे है नाक के नीचे का भाग मुह तथा फेफसों के सग सम्बन्ध रखता है जिस से यह श्वांस लेने का तथा जुदी २ आवाज निकालने के काम मे उपयोगी होता है सब प्राणियों की खुशबू परखने की शक्ति बराबर नही है कारण कर्मों के आवरण के क्षयोपशम मूजब है इस आवरणों के मुताबिक ही मगज के सग सम्बन्ध रखने वाले घ्राण तंतुओं जैसे जिसके होते हैं तैसी ही उस में शक्ति होती है कोई आदमी तो बहुत तरह के खुसबू परख सकता है कोई नही परख सकता है एक आदमी को एक चीज की खूसबू अच्छी लगती है वो ही खूसबू दूसरे को अच्छी नहीं लगती॥

जीभ स्वादेन्द्रि. (टंग *Tongue*).

स्वाद की जानने वाली इन्द्रीय जीभ है जीभ आस पास के भाग

तालुवा पडजीभ वगैरों में भी कुछ २ स्वाद जानने की शक्ति मालूम देती है जीभ के अग्रभाग पर दाना २ होना है उस दानो तक मगज के स्वाद इन्द्रियो के तंतू पसरे भये होते है जिस से जीभ की अनेक बस्तु का स्पर्श होते ही स्वाद की परीक्षा हो सकती है जो पदार्थ जैसे ज्यादा पतला होता है वो जल्दी जीभ के तंतूओं में घुसकर जल्दी स्वाद का असर करता है और कठिन पदार्थों के परमाणु जीभ से पैदा हो तेरस में प्रवेश जब करता है तब रस का स्वाद मालूम पड़ता है जीभ के अंदर के तंतूओं को जो स्वाद का ज्ञान होता है वो ज्ञान मगज को तंतू पहुंचाते हैं तब अपने को उस २ रस का ज्ञान होता है जीभ मांस के लोचों से बनी है चारों तरफ से स्नायु जीभ के लगे भये हैं इस वास्ते जीभ इधर उधर फिरती है खुराक चाबने में जीभ बहुत मदद करती है खुराक को बेर २ दांत के नीचे लाती है और जीभ की अणी खुराक को नरम करती है और बोलने के काम मे जीभ का मुख्य उपयोग है ॥

चमड़ी त्वचा स्पर्शेंद्रि (स्किन Skin).

मगज के ज्ञान इन्द्रियों में पांचमी त्वचा है उस करके स्पर्श का ज्ञान होता है चमड़ी शरीर के अन्दर के भागो को ढककर उस का रक्षण करती है प्राचीन पंडितो के शास्त्रप्रमाण से सात पुडत है और डाक्टरो ने इस के दो पुड़त माने हैं जिसमें ऊपर का पड़त बहुत महीन पतला है जिसमें जलने से उस पर फफोला हो

जाता है सो ऊपर के पड़त का हे इस के नीचे दूसरा पडत है वह बहुत सख्त और जाडा हे उस पर छोटी २ बहुत अणियां होती है उस में ज्ञान तंतुओं के जाल पसरे भये होते है चमड़ी के नीचे छोटी गांठ होती है उस में से पसीना पैदा होता है और चमडी के महीन छेदों में से बहार निकलता हे चमडी के ये छेदों की गिनती जैनादिक प्राचीन ग्रन्थकारो ने साढ़ा तीन क्रोड की संख्या मानी है डाक्टरों के अनुमान से एक इंच चोरस जगह में २८०० छेदों की गिनती करने मे आई है सब शरीर पर इस हिसाब से ७० लाख पसीने का छेद है प्राचीन पंडितों की गिन्ती शरीर के बढाई पर है क्योंकि कोई कालांतर में प्राचीन पंडित ऊमर और शरीर की बढ़ाई मानते चले आये वेदो में युग के हिसाब पर घटत बढत है जैनो के अरोकी गिन्ती मुजब है इस की चर्चा यहां नही लिखते ग्रन्थ बढ जावे पसीना पानी जैसा पदार्थ है वो हमेशा निकलता रहता है लेकिन हवासे सूख जाता है सो हमेशा अपने नजर नहीं आता सब दिन रात में सरासरी तीन रतल पसीना पैदा होता है पसीने के संग खून मे से कितनी एक खराब वस्तु शरीर मे से निकल जाती है पसीने सिवाय चमड़ी मे से एक चिकना तैल जैसा पदार्थ निकलता है जिस से चमडी हमेशा नरम और सुआली रहती है और चमडी मे शोपण करने की भी शक्ति है जिस से लेप तैल वगैरः को अन्दर खेंचती है ॥

छाती, फेफसा, छाती की पोल, (चेस्ट Chest).

छाती की पोल मे रक्ताशय बड़ी खून बहनी नस और दो फेफ़से आये भये है, अन्न नल भी छाती में होकर पेट में उतरता है और श्वास नली का भी थोड़ा हिस्सा छाती के पोल में आया भया है, छाती के दोनो तरफ दो फेफसे हैं और बीच में रक्ताशय (हार्ट) है, छाती के दोनो तरफ बारह २ पासलियां हैं, छाती के पीछे पीठ की तरफ बीच में करोड़ है और छाती के अगली तरफ उरोस्थि अर्थात छाती का हाड है, जिस के सङ्ग पांसलियां लगी भई है, ये सीने का हाड आसरे पांच इंच लम्बा है, ये सीने का हाड अव्वल से तो बहुत टुकड़ा २ होता है, लेकिन पीछे से अवस्था पर आपस में जुड़ जाते हैं, ये सीने का हाड गले के तरफ चोड़ा होता है और नीचे की तरफ़ सांकड़ा होता है कोडी के पास अनीदार होता है, पीठ की तरफ बारह ही पांसलियां करोड़ के मनियों के सग जुड़ी भई है और अगली तरफ सात पांसलियां सीने की हड्डी के संग जुड़ी भई है, नीचे की तीन पांसलियो का अग्रभाग खुला है पांसलियां स्थिती स्थापक है नर्म और झुक सकती है, इस वास्ते श्वासो श्वास की क्रिया मे मदद देने वाली है ॥

फेफसा फुप्फुस (लंग्स Lungs).

फेफसे दो हैं वह छाती के दोनो तरफ आये भये हैं, फेफसे की शकल मृदंग जैसी है, ऊपर से संकड़ा नीचे से चोडा होता

है और गुण इसका बदली जैसा होता है, दरेक फेफसे का वजन डेढ रतल का होता है, बायें फेफसे से दाहिना फेफसा जरा जियादा वजन में होता है, लेकिन दाहिने फेससे से बायां लम्बा जियादा होता है, फेससे स्थिति स्थापक और बादल जैसे होने करके दबता है और फूलता है फेफसे के अन्दर छोटे २ बहुत छेद होते हैं अथवा पोले दाने होते है वह हवा से भरे भये होते हैं, उस के छेदों की गिनती डाक्टरों ने करी है, जिसका अनुमान ३० करोड़ छेदों का है, जो फेफसा फक्त कोथली जैसा होता तो उस में हवा को बहुत थोड़ी जगह मिलती लेकिन करोड़ों छेद होने के सबब हवा को बहुत जगह मिलती है, हरएक फेफसे में हवा से भरे छेद एकंदर १४०० चोरस फुट जितनी जगह रोके इतनी हवा है, पीठ के तीसरे मनियें के सामने से श्वास नली के दो शाखायें हैं, सो दाहिनी शाखा दाहिने फेफसे में जाती है, बाइ बायें फेफसे में पहुचते २ वह श्वास नली के शाखाओं का उत्तरोत्तर भाग विभाग होकर आखिर बारीक शाखा पर बारीक पर पोटे होकर ठहरता है श्वास नालियों के असंख्य अग्रभाग जहां आगे फेफसे को मिलते हैं वहां हवा और खून आपस में सम्बन्ध होते ही खून शुद्ध होता है ॥

रक्ताशय, हृदय, अंतःकरण दिल (हार्ट *Heart*).

रक्ताशय ये छाती की पोलार मे दोनों फेफसे के बीच में कुछ बाई तरफ तिरछी पड़ी भई एक मांस की थैली है बाई तरफ

की ऊपर की तीसरी पांसली से नीचे छटी पांसली तक उसकी लम्बाई पांच इंच की है, ये थेली अथवा रक्ताशय यह खून का हौज़ है, इस मे से खून सब शरीर को पहुंचता है, छाती के बायें तरफ की पांचमी और छटी पांसली पर हाथ धर के रखने से जो फड़कता मालूम देता है वह रक्ताशय का है, रक्ताशय का कद आसरे आदमी की मुट्ठी जितना है और वजन आसरे पोन रतल का है औरतों के दिल का वजन आधे रतल का है, वह अन्दर से पोला है और बीच में एक पर्दा है, जिस करके उस के दो हिस्से हैं, एक तो दाहिना भाग दुसरा बायां भाग एक २ हर भाग का पीछे २ बिभाग हैं दाहिनी तरफ काला खून है बांये तरफ लाल खून दोनों भागों के बीच में छेद होता है उस छेद के पर्दा होता है; जो नीचे के भाग की तरफ खुलता है औ बन्द होता है जब खुला रहता है तब एक खणका खून दूसरे खण में जा सकता है लेकिन जब बन्द हो जाता है तब उस के पर्दे ऐसे सजड़ हो जाते हैं सो आगे गया दूसरे खण का खून पीछा उस खण मे नही आ सकता हरएक भाग में आसरे पांच तोला खून माता है रक्ताशय के चारो खंडों का बड़ी रक्त वाहिनी नस के साथ सम्बन्ध है दाहिने ऊपर के खण्ड के सग शरीर की ऊपर की और नीचे की दो बड़ी सिरा जुड़ी भई है दाहिने नीच ले भाग मे से बड़ी धमनी निकलकर उस के दो भाग होकर एक भाग हरएक फेफसे मे गया है बायें तरफ के ऊपर के भाग में से तीन चार सिरा वहती है और बायें नीचे के भाग में से एक बड़ी धमनी नाड़ी निकली है उनकी

शाखाये होकर सब शरीर मे फैली है हरएक धमनी के मुंह पर अर्द्धचन्द्राकार पर्दा होता है वह पर्दे धमनी बडी नाड़ी के तरफ खुलते हैं और नीचे के भाग के तरफ बन्द होते है रक्ताशय का काम सब शरीर में खून पहुचाने का है उस के मांस के लोचे तंग और ढीले होते हैं जिसकर के उस भाग में से खून निकलकर बाहर नसों मे धकेली जता है जैसे पिचकारे को दबाने से उस के मुंह में से पानी जोर से निकलता है उसी तरह रक्ताशय का काम सङ्कोचने का और फूलने का जिसकर के धमनी वगैरः रगों में खून जोर से दौडता है शरीर के सब भागों मे पहुंचता है रक्ताशय के बायें भाग मे इतना जोर है सो सङ्कोचाते वक्त उस के मुंह के सामन अगर तीन रतल का वजन होय तो भी उसको ठेल डाले रक्ताशय तग और ढीला होती वक्त उस में से धडका होता है एक मिनट मे सरासरी ७२ वक्त रक्तशय सङ्कोचीजता और फूलता है एक मिनट में पल २॥ होते है फिर रक्ताशय के आस पास एक मजबूत जाड़ा सफेद पर्दा बाहिरकर लगा भया है पर्दा बन्द करी भई कोथली जैसा है रक्ताशय के लगा भया नही है दूर है उस पर्दे में पानी जैसा रस पैदा होता है जिस करके रक्ताशय का जाव्ता है और घरसा रक्ताशय को किसी तरह नहीं लग सकता ॥

छाती तथा पेट के बीच का पर्दा उरोदर पटल
(डायफ्रम *Daiframe*).

छाती तथा पेट के बीच में एक पर्दा है सो, मास के लोचे का बना भया ह वह गोल गुम्मठ के जैसा हे यह पर्दा पीछे मे

तो पीठ की करोड़ के हाड़ के पसवाड़े साथ और आगे से पांसली के भीतर की कोर संग चौतरफ लगा भया है इस पर्दे के ऊपर की तरफ संग बाईं दाहिनी तरफ तो फेफसा और बीच में रक्ताशय जुड़ा भया है और नीचे के पसवाड़े संग दाहिणी तरफ तो कलेजा बायें तरफ तिल्ली और बीच में होजरी जुड़ी भई है इस पर्दे में तीन छेद हैं जिस में से एक में से धोरी नस और दूसरे छेद में से अन्न नल्ल छाती में से पेट में उतरे है तीसरे छेद में से बड़ी काली नस पेट में से छाती में जाती है इन तीनों छेदों के अलावा उस पर्दे में कितनेक महीन छेद है उन्हों में से ज्ञान तंतुओं को रस्ता मिलता है ॥

पेट की पोल, उदर, पेट (अंडोमेन *Aundomen*).

शरीर में से सब से बड़ी पोल पेट की है पेट की पोल के पिछले भाग में पीठ की करोड़ आई भई है और ऊपर के भाग के बाजू पर पांसलियां है, आगे का और पसवाडे का ढकना स्नायु तथा चमड़ी का बना भया है ऊपर की तरफ छाती के और पेट के बीच में गुम्मट के आकार का पर्दा है और नीचे के तरफ पेड़ु अथवा वस्ति स्थान है पेट को दबा के देखने से दुबले आदमी का पेट ढकना आखर करोड के मनियें तक हाथ में लग जाता है यही पेट का ढकना गर्भवती औरत का और मेद वाले तथा जलंदर वगैरः उदर रोगियों का बहुत बढ़ जाता है पेट की दिवाल के मध्य

रेखा में सूडी का खड्डा है, उस के नीचे पेडू है और पेट के आखरी ऊपर के तरफ पासलियों के बीच के भाग को फेफडा या कोडी कहते हैं बाजू वालों को पसवाडे कहते है, पेट में होजरी कलेजा तिल्ली आंतरियां मूत्राशय के गुर्दे वगैर. बहुत जरूरी के अवयव आये भये हैं, उन सबो की हद्द और जगह जानने के वास्ते पेट के चौतरफ दो तो आडी और दो खडी लकीर दोलडी कल्पने से उस पेट का नव हिस्सा होता है उस मे नीचे लिखे यन्त्र मूजिब कोठे आये भये हैं ॥

१ दाहिनी पासली पास के भाग में	२ फेफडे वाले मध्य भाग में	३ बाई पसली के पास भागमें
कलेजा का दाहिना भाग पित्ता छोटे आंतों का पहला भाग बड आंत का दाहिना लपेटा दाहिने गुर्दे का ऊपरला भाग ॥	होजरी का बिचला भाग और दाहिना अग्रभाग कलेजा का बाया भाग	होजरी का बाया अग्रभाग तिल्ली बडे आतरों का लपेटा बाया गुर्दे का ऊपरला भाग
४ दाहिना कमर तरफ भाग में	५ सूडी वाले मध्य भाग में	६ बायें कमर तरफ भाग में
ऊपर चढता बडा आतरा दाहिने गुर्दे का नीचे का भाग छोटे आतरों का थोडा भाग.	बडे आतरे का आडा भाग छोटे आतरों का थोडा गुचला	बडे आतरे का नीचे उतरता भाग बाय गुर्दे का नीचेका भाग छोटे आंतों का थोडा गूचला
७दाहिनी जांघ तरफकेभागमें	८ पेडू वाले नीचे के भाग में	९ बाय जांघ तरफ भाग में
छोटे आतरे का छेडा और बडे आत का शुरुआत का भाग पेशाब ले जाने वाली दाहिनी नली	छोटी आत का गुचला पेशाब का भरा फुक्का गर्भ में बढा भया गर्भस्थान	बडे आतरे का नीचे का और सफरे का ऊपरका भाग पेशाब ले जाने वाली बाई नली

इस लिखे कोठे से सामान्य तौर पर इतना तो जरूर समझ में आ जायगा, पेट के दाहिने तरफ पांसली के नीचे कलेजा

(यकृत) कलेजे के नीचे थोड़ा तो छोटे तैसे ही बड़े आंतरे का भाग और मूत्राशय और राव के नीचे जांघ के पास मूत्र ले जाने वाली दाहिनी नली इतने अवयव आये भये हैं, पेट के बीच में ऊपर होजरी और कलेजे का थोड़ा भाग उस के नीचे सूडी वाले भाग में बड़ा आड़ा पड़ा भया आंतरे का भाग और छोटे आंतरे और सब से नीचे पेडू में छोटे आंतरे और स्त्री का गर्भस्थान इतने भाग आये भये हैं, पेट के बाई तरफ पांसलियो के नीचे होजरी का बायां छेड़ा तिल्ली और बडा आंतरा उस के भी नीचे बडा आंतरा तथा मूत्राशय और सब से नीचे जांघ के पास मूत ले जाने वाली दाहिनी नली इतना भाग आया भया है ॥

अन्न नल ॥

पेट की पोल के होजरी वगैर भागो का वर्णन करने से पहले होजरी मे अन्न कहां से होकर किस तरह आता है सो जानना चाहिये, खाया भया खुराक इस नल मे होकर नीचे जाता है यह अन्न नल मांस मय स्नायुओं का बना भया है उस के सकोचने से खाया भया खुराक धक्के खाकर होजरी मे जाता है, यह नल मुंह की खिड़की अथवा गले के नीचे के भाग से शुरू होता है, वह नल श्वास नली के पीछे और जरा बाई तरफ करोड़ के आसरे नीचे उतरता है, पहले लिखा जो छाती और पेट के बीच मे गुम्मट के आकार में होकर होजरी मे पहुचता है, इस नल का सम्बन्ध आखर गुदा द्वार तक पहुचा है जैसा खुराक खाने में आता है सो अन्न

नल के रास्ते होजरी मे, उस होजरी के सग जुड़े भये छोटे आंतरे फिर उन्हो मे उन छोटे आंतरो से जुडे भये बडे आंतरे में होकर सफरो मे आता है, गले से लेकर होंजरी के ऊपर के नाके तक पंहुचता यह अन्न नल की लम्बाई १२ इंच की है अन्न नल श्वास नली के पिछाडी है जिस से जिस वक्त खुराक निगलने में आता है तब उस खुराक का कोई भी दाना श्वास नली मे नहीं उतर सके इस वास्ते श्वास नली का मुह बन्द करने को एक छोटा ढकना जीभ के सग लगता है, वह खुराक गले से उतरते वक्त श्वास नली का मुह ढक देता है तब उस के ऊपर होकर के खुराक अन्न नल में प्रवेश करता है ॥

होजरी, अन्नाशय, आमाशय ॥

गले से गुदा तक खुराक का एक ही रास्ता अथवा नल है, जिस मे होजरी खुराक का सब से पहला भाग है होजरी पेट के फेफडे वाले मध्य भाग में तैसे ही बाई पसलियों के तरफ आया भया है, होजरी के ऊपर उरोदल पटल और कलेजे का बायां पासा है होजरी के बाये तरफ तिल्ली है दाहिनी तरफ कलेजा है नीचे आंतरा है पिछाड़ी करोड है, होजरी के ऊपर के छेडे पर अन्न नल का संयोग होता है और नीचे के छेडे से आंतरा शुरू होता है होजरी की शकल पानी की मश्क अथवा छोटी पखाल जैसा है, जब उस में खुराक जाता है तब वह चोड़ी होती है तब उसकी

बाई और दाहिनी तरफ की लम्बाई १०। से १२। इंच की और चौड़ाई एक १ इंच की होती है, जब वह खाली होती है तब संकोचाय कर छोटी हो जाती है उसका वजन आसरे १'१ तोले का है और उस मे ४ से ५ रतल पानी समा सकता है होजरी मांस के शाखा तथा डोरिओं की बनी भई है उस के अन्दर का पुड़ खर खोदरा और मधु मक्खी के छत्ते जैसा खड्डे वाला होता है उस पुड़ मे से एकतरह का तेजाब जैसा पतला पदार्थ झरता है वह जठर कहने में आता है इस जठर रस से खाया भया खुराक पचता है इस तरह होजरी मे पचा भया रस कितना एक होजरी के महीन नसो करके खून में जाता है लेकिन सब खुराक होजरी मे पच सकता नहीं चिकनास वाला और आटे का सत वाला पदार्थ को होजरी का जठर रस नहीं पचा सकता है उस से कितनाक खुराक होजरी में दूसरे रंग का होकर पीछे आंतरे में जाता है वहां उस की पाचन क्रिया होती है ॥

आंतरा, (बोवेल्स *Bowels*).

होजरी के नीचे छेड़े से जो नली संधती है उस को आंतरा कहते हैं यह आंतरा होजरी मे गुदा तक ३० फीट लम्बा है लेकिन उस के आंटे पड़ कर पेट के पोल मे पड़ा है इस से उस की लंबाई मालूम नही पडती है आंतरों का दो भाग है छोटे आंतरे और बडे आंतरे छोटे आंतरे बड़े आंतरा से कद मे पतला है वह

होजरी के नीचे के अथवा दाहिने छेड़े से शुरू होना है और सूत की आटी मजिब है आंटे खाकर पेट मे सुड़ी तथा पेडू के बीचले भाग में पडा है उस का छेड़ा दाहिने जांघ तरफ के भाग मे उतरता है वहां वह बडे आतरो से संधता है अथवा उसका जाडासपना बढता है इस वास्ते उसको बडा आंतरा कहने मे आता है छोटे आंतरे २० फीट लम्बा और एक से १॥ इञ्च जाडा है उसका शुरू होता भाग घोडे की नाल जेसा टेढ़ा है और उस में पित्त लाने वाली नली का मुंह होता है उसकर के पित्त आंतरो में आता है छोटे आंतरे अन्दर से नली जैसे पोले हैं यह नली चार जुदी २ जात के पुडतके हैं उस मे से एक पुड़ता मांस का है उसकी शाखा खड़ी तथा गोल आंटे खाये भई है सब छोटे आतरे मांस की शाखा सब एक ही वक्त तग और ढीले होते नही परतु थोडे २ भाग के शाखा वारा फिरती सकोचाते हैं इस करके आंतरों का एक भाग संकोचाता है तब दूसरा भाग ढीला होता है इस तरह जैसे सांप चलता २ बल खाता है तैसे सब आंतों मे एक तरह की गति पैदा होती है उस से खुराक का बाकी रहा भाग आगे २ धकेलीजता-है आंतरे-का आखिर पुड़त खरखोदरा होता है उस पर मखमल की तरह रू मालुम देते हे इस पुडत की हर एक खरखोदराई १ से २ इञ्च तक लम्बी और ॥। इञ्च गहरी होती है उस में खुराक चूसने की शुक्ष्म रगों आई भई-हैं ये रगें खुराक के पोषण कारक तत्व को चूस लेती हैं ये सब रगों का सयोग होकर एक नल होता है वह नल पेट में से छाती में जाकर दाहिने तरफ की बडी सिरा को मिलता

है पाचन भया रस इस नल के रास्ते खून को मिलता है बडा आंतरा दाहिने जांघ के तरफ भाग से शुरू होता है बड़े आंतरे का तीन हिस्सा करने में आवे तो दाहिने जांघ के पास से शुरू होता है सो दाहिनी पांसली तक वह ऊपर चढ़ता है पीछे वहां से कालजे के नीचे से वह बाई तरफ घिरता है और फिर वहां से फेफडे वाले भाग में होकर बांई पसली तक वह पेट मे आड़ा पड़ता है तीसरा भाग तिल्ली के नीचे शुरू होकर पेट की बांई तरफ जांघ तक सीधा उतरता है इस तरह बड़ा आंतरा एक, सौ, तीन तरह से पेट में रहा है बड़े आंतरे की लम्बाई पांच फीट है ऊपर चढ़ता पहला भाग २॥ इंच जाड़ा है लेकिन आगे जाते बड़े आंतरे पतले होते जाते हैं वह आंतरे का तीसरा भाग नीचे उतरते की जाड़ाई १॥ इंच से ज़ियादा नहीं है सफरे का नल बड़े आंतरे का जो छेड़ा बायें जांघ तरफ उतरता है वहां से टेढ़ा नल शुरू होता है वह सफ़रे के मुंह तक जाता है उसको सफरा अंग्रेजी में (रेक्टम) कहते हैं वह बायें तरफ से शरीर के मध्य भाग तरफ घिरता है और बीच में से सीधा उतरता है सफरे के अगली बाजू पर मूत्राशय याने पेशाब का फुका और गर्भस्थान आया भया है और पीछे से दोनो बैशक याने चूतड़ो के साथ लगा भया है हाड के संग सफरा ६ से ८ इंच लम्बा है सफरे के मुंह में मांस की शाखा गोल आंटा खाया भया है वह ढीला होने से सफरे का मुंह खुलता है और संकोचने से बन्द होता है ॥

कलेजा यकृत्. (लिवर *Liver*).

कलेजा एक बडा अवयव है उसका वजन आसरे ४ रतल होता है वह दाहिनी तरफ पांसलियों के नीचे पसवाडे आया भया है लेकिन वह बडा है इस वास्ते फेफडे वाले मध्य भाग में तैसे ही जरा बाई पांसली के भाग तक पहुंचा भया है दाहिने तरफ से बाई बाजू तक कलेजे की लम्बाई आसरे एक फुट की है और चौडाई आठ इंच की है कलेजे के ऊपर उरोदर पटल आया भया है और नीचे अन्नाशय आंतरा तैसे मूत्राशय आया भया है कलेजे का बडा भाग दाहिने तरफ से पांसलियों से ढका भया है इस वास्ते दबाने से मालूम नहीं पड़ता है जब उस में कोई विकार होने से बाहर आता है तब वह दबाने से मालूम पड़ता है कलेजे के ऊपर बजाने से भद्दी आवाज आती है कलेजा बारीक हजारों दानो का बना भया है इस हरएक दाने मे खून के महीन रगों का जाल पसरा भया है कलेजे का मुख्य काम खून शुद्ध करने का है और पित्त नाम का रस पैदा करने का है होजरी और आंतरों की सिराओं मिलके एक बडी सिरा होती है वह मध्य सिरा (पोर्टल वाइन) कहने मे आती है यह मध्य सिरा कलेजे मे दाखिल होकर उस की शाखाये बनकर उसका खून शुद्ध होता है कलेजे मे जो पित्त रस पैदा होता हे इस पित्त को ले जाने वाली एक नली कलेजे मे से बाहर निकलती है वह पित्ताशय कहलाता हे यह पित्त आंतरों से मिलके उस के अन्दर के खुराक को पचाता है खुराक में जो चर्बी

रास्ते वह मूत्र वस्ति के आगे भाग में जहां इकठा होता है उस भाग को मूत्राशय कहते हैं मूत्राशय का आकार अण्डे से मिलता है यह मूत्राशय एक मांस की थेली है उस के अंदर तीन नाका है उस में से दो नाकों के रस्ते मूत्रपिण्ड में से मूत्र मूत्राशय में आता है और तीसरे नाके के रस्ते वाहर निकलता है गुड्दे में से पेशाव बूंद २ मूत्राशय मे इकट्ठा होता है और जिस वक्त मूत्राशय भर जाता है तब उस को वाहर निकालने को मूत्राशय की मांस की साखाओं संकोचा कर मूत्र को गति देती है ॥

॥ उत्पत्ति-अवयव ॥

जिस अवयवो से सन्तान पैदा होते है उस को जननेंद्रिय भी कहते हैं पुरुष अथवा स्त्री इन दोनो के उत्पत्ति अवयवों की रचना जुदी है वृषण वीर्याशय और लिंग यह तो पुरुष के उत्पत्ति अवयव हैं गर्भाशय उस के अन्दर का भाग और योनि यह औरतो के उत्पत्ति अवयव है अब यह दीपक मर्यादा की जमीन में रहा भया सब सक्षेप से जरूरी के अवयवों को प्रकाश कर दिखाता है वृषण (टेस्टीकल्स) आंडो की मांस मय यह थेली है इस के अंदर दो गोली थेली की रगों तथा नसों से लटक रही है गोली दोनों अंडे की-शिकल गोल है दहनी गोली से बांई गोली जरा नीची और बड़ी है हरेक गोली की सरासरी १ इंच से १॥ डोढ इंच तो लंबाई, १। इच चौड़ाई, १ इंच जाडाई; तन्दुरस्त शरीर मे हरेक गोली का वजन २ से २॥ तोला तक होता है आंडों की थेली के

बीच रेसा होता है जिस से थेली के दो हिस्से हैं गोली भी अलग २ है, गर्भ मे रहे बच्चे की गोली मूत्रपिण्ड के पास होती है बच्चा जब करीब आठ महीन का होता है तब वह गोली पेट की दिवाल में से रस्ता कर आंडों की थेली में उतरती है, जन्म के समय किसी किसी बच्चे के वह गोली पेडू मे होती है कोई वक्त एक ही गोली उतरती है दूसरी नहीं उतरती गोली के ऊपर एक जाडा मजबूत पुड होता है और उस के नीचे मकडी के जाले जैसा महीन पुडत होता है, यह गोलियां आसरे आठ से वारीक नलियों की बनी भई है यह हरेक नली $\frac{1}{200}$ इंच अर्थात एक इच का दोसेमा भाग जितनी पतली होवी है और लम्बाई में वह नालियां कम से कम १ २ इच की ज्यादा से ज्यादा ३ ३ इंच की होती है यह आठसे इन नलियों का बेडा सांध कर लम्बी की जावे तो पूणा माइल तक लम्बी डोरी हो जावे एसे बहुत तांतुओं की गोलियां बनी है गोलियों मे ऐसे दो २ तीन तीन नलियों का गुच्छा होता है नली के बाहर धोरी नसों की महीन जाल पसरी भई होती है उस के खून में से धातु पैदा होता है जिस रगों से डोरियों से थेली मे गोलियां लटक रही हैं उस रगों में वीर्यनल धमनी और शिरा होती है शिराओं के अन्दर जब खून भर जाता है तब वह कोई वक्त मूज जाता है यह वीर्य नल धमनी तथा शिरा पेडू के छेदों मे से पेट मे दाखल होते हैं और शिरा तो वडी शिरा के संग मिलती है धमनी वडी धमनी में से निकली भई शाखा है, और वीर्यनल मूत्राशय ऊपर होकर वीर्याशय को मिलता है अर्थात कोथली में से निकली भई नलियां आगे जाते जुडकर

एक होती है और उस गोली की नस आगे से ऊपर चढ कर पेड़ की पोल मे मूत्राशय के फुके के पीछे जाता है और पेशाव के फुके तथा सफर के बीच में दो छोटी कोथलियां हैं उस नली के संग जुडता है इस कोथलियों में धातु इकट्ठा होता है उस को वीर्याशय कहते हैं वीर्याशय की हरेक कोथली में से एक २ नली निकलती है वो नली आंडों की गोली मे से निकलने वाली वीर्य नली के संग मिलकर पेशाव करने के रस्ते मे खुलती है और उस ही रस्ते बाहिर आता है मूत्राशय के नीचे हरेक नली वीर्य की चोडी गुचलादार होती है वीर्य पहली आंडो में पैदा होता है फिर पेडू मे रहा भया वीर्याशय उस में ऊपर चढकर आता है फिर मूत्र नली द्वारा उस का पतन होता है लिंग मूत्र नली शिश्न मेढ कहने में आता है इस के अंदर का दो नल ऊपर होता है और तीसरा नल उस के बीच मे नीचे के भाग में होता है वह हरेक भाग मजबूत और सफेद तंतुमय नली के जैसा है उन्हों के बीच मे बहुत पड़दा होता है हरेक नल मे छोटे २ खाने होते है उन मे खून भरीजता हैं और खाली होता है जब खून भरीजता है तब लिंग जोर मे आता है और जब खून खाली हो जाता है तब शिथल हो जाता है गर्भाशय कमल (वुम्ब) यह स्त्री जात के होता है और वह पेडू की पोल में सफरा तथा मूत्राशय के बीच में आया भया है गर्भाशय की शिकल जामफल अमरुद जैसा ऊपर से चौडा और नीचे से सांकड़ा है वह ३ इंच लम्बा और २ इंच चोडा हैं कुमारी का गर्भस्थान वजन में आसरे २ से ४ तोले का

होता है बच्चे वाली का ४ से ५ तोले तक का होता है गर्भस्थान मांस के जाडे स्नायुओं का बना हुआ है अदर से पोला है उस के नीचे के सांकडे भाग मे एक गोल खम्भा है और छेडे पर एक चीरा है वह कमल का मुंह है यह कमल मुख्य सम्बन्ध मार्ग के सग सम्बन्ध रखता है ऋतुधर्म और बच्चा किस तरह पैदा होता है सो आगे लिखेंगे स्त्रीप्रकरण मे गर्भस्थान बढना शुरू होता है उस का वजन बढ कर १ से ३ रतल तक का हो जाता है गर्भ रहां पीछे वह पेडू के ऊपरले भाग में चढता है सो सूंडी तक पहुचता है गर्भस्थान के ऊपरले दो खूणे ३ से ४ इच लम्बी एकेक पतली नली लगी भई होती है जिस का एक मुंह गर्भस्थान की कोथली मे खुलता है और दुसरा छेडा खुला रहता है गर्भस्थान की बाहर दोनों तरफ बन्धन से लगी भई अडे के शिकल की दो छोटी गांठ हैं जिस को अंग्रेजी में ओवरी कहते हैं यह हरेक गांठ १॥ इच लबी ॥। इंच चोडी जाड ३। इच से जरा कम है उस हरेक गांठ का वजन ।से ॥। तोले का होता है इस गांठ मे मठर के दाणे जितने २।१० से ५० दाणे होते हैं उस में अडे की सुफेदी के मिलता पतला प्रवाह होता है इस में का दाणा जब बडा होता है और जिस वक्त मजबूत होता है तब गांठ के आखर ऊपर उपस आता है और उस के ऊपर गर्भस्थान के आगे जो कही दोनों तरफ की नली का छेडा लग जाता है उस नली में वह दाणा फूटकर अपने अदर का बढने वाला पदार्थ उस नली में गिरा देता है पीछे वह रस नली का गर्भस्थान के कोथली में उतरा भया मुह के रस्ते गर्भस्थान मे जाता है॥

॥ स्तन-बोबे ॥ (ब्रस्ट Breast)

गर्भाशय सिवाय स्तन भी स्त्री जाति का खास अवयव है वह स्तन उत्पत्ती अवयव के संग कितना एक सम्बन्ध रखता है स्त्री के जब गर्भ रहता है तब उस स्तनों के शिकल मे फेरफार होता है पैदा होने वाला बालक के वास्ते स्वभाव कुदरत से उस में दूध का पहले से ही संग्रह होता है स्तन मांस के लोचों की बनी भई एसे दीखती है लेकिन मांस के १५॥ २० झूमखों की बनी भई है उस में दूध पैदा होता है ॥

किरण ३ (सात धातू 7 Materials)

जिस पदार्थों से शरीर धारण रहता है उनो को धातु कहते हैं प्राचीन वैद्यक शास्त्र प्रमाणे शरीर को पोषण करने वाली सात धातु है १ रस शरीर में तृप्तितरावट करता है २ रक्त शरीर मे जीवन शक्ति देता है ३ मांस लेपन कर अवयवो को जोडता है ४ मेद चिकणास लाता है ५ अस्थिहाड शरीर को धारण करे है मजबूती दे है ६ मज्जा मीजी हाडों की नलियों को भरे है ७ वीर्य शरीर का सत है जिस से प्रजा पैदा होती है जैसे पृथ्वी का वीर्य पारा है वृक्षों का गूंद है तैसे ॥ जिस क्रम से गर्भ का बधेज पोषण होता है इसी क्रम से शरीर के अंदर की सातो ही धातुओं का उत्तरोत्तर बधेज होता है एसा मालुम देता है इस वास्ते पूर्व सम्प्रदाय मुजब उन सातों ही धातुओं की व्यवस्था कुछ समझने की जरूरी है रस १ खुराक के पहिले पाककों रस कहने मे आता है अच्छी त-

रहे जब जठराग्नि से पका भया खुराक का पहिले रस सारतत्व होता है वह जल जैसा प्रवाही सुफेद ठंडा मीठा चिकना और चलने वाला होता है ऐसा रस सब शरीर मे है तो भी इस की मुख्य जगह हृदय है यह रस धोरी नसो के रस्ते होकर सब धातुओ मे जा कर पोषण करता है जिस की मंद अग्नि है उस के खुराक का रस विदग्ध अर्थात जला जाता है विदग्ध होने से रस तीखा और खट्टा होता है ऐसा रस बहुत रोगो को पैदा करता है, उस कच्चे रस को आम कहते हैं वह जहर का काम करता है साधारण बोली में उस को रस विकार कहते हैं रक्त २ होजरी आमाशय मे से जब वह रस कलेजे में जाता है तब पित्त के संयोग से रंगपा कर तथा पक कर उस का खून बनता है खून भी सब शरीर मे रहा भया है जीव का सर्वोत्तम आधार है यह रक्त चिकना भारी मीठा तथा गमन करने वाला है खून बिगडने से पित्त जैसा खट्टा होकर रोग पैदा करता है इस विकार को लोही खून विकार कहते हैं कलेजा और तिल्ली यह रक्त का मुख्य ठिकाना है मांस ३ खून में रही अग्नि कर के पका भया वायु कर के घट्ट भया खून इसी का नाम मांस है खून के स्थान मे गया भया रस वह तो खून मास मे गया भया खून सो मांस ऐसे मांस से मेदा मेदे में से अस्थि हाड मे से मीजी मीजी में से वीर्य पैदा होता है गरमी युक्त वायु पोली शिराओ का विभाग अर्थात शाखाओ बनाती है तैसे वायु मांस में प्रवेश कर मांस की पेसियां बनाती हैं शरीर में ऐसे मांस की पेसी ५०० है शिराओ स्नायुओ हाड संधि यह सब मांस की

मांस धातू का पोषण करता है स्थूल भाग व्यान वायु से प्रेरित हो कर शरीर के मूल मेद धातू में जाता है उस में से पचते वखत पसीना निकलता है शरीर की गरमी से तप कर शिराओं के रुंध्रों के रस्ते बाहर निकलता है जीभ दांत काख वगेरे मे मैल निकसता है वो भी मेद चरबी का मैल है कितनेक आचार्य ऐसा कहते है इसी तरह मेद भी दो तरह का होता है जिस मे सूक्ष्म भाग तो पेट मे रहकर मेद धातू का पोषण करता हैं स्थूल भाग व्यानवायु से प्रेरित धमनी के रस्ते हाड में जाता है वहां अग्नि से पकते व्यान वायु से शिराओ मे होकर उस का मैल नख बनता है शरीर के रूं भी हाडो का मैल है एसा भी मानते हैं इसी तरह हाड के दो भाग सूक्ष्म १ स्थूल २ सूक्ष्म भाग तो मूल हाड मे रहकर उनो का पोषण करता है स्थूल भाग व्यान वायु द्वारा प्रेरित मज्जा मे वहां पकते वखत मैल जो निकलता है सो पूर्व की तरह नेत्रो मे मैल तथा चिपडी आंख होती है इसी तरह मज्जा का दो भाग जिस मे सूक्ष्म तो मूल मज्जा में रहकर मज्जा का पोषण करता है स्थूल का वीर्य बनता है उस वखत मैल नही निकलता सांठे का आखरी रस मिश्री को निखारणे के दृष्टांत एसा केइ आचार्य मानते है केइ आचार्य युवानी मे मू पर खीलों का होना सो धातु के पकते समय मे मैल मानते हैं धातु कम पैदा जब होने लगता है या ज्यादा निकल जाता है तब वह मैल थोडा होने पर दिखाई नहीं देता मिश्री को निखारते ज्यों थोडा मैल आता है तैसे मज्जा से वीर्य पकते भी थोडा मैल आता है सो गाल वगेरों पर खील अथवा चिक-

णास आता है एकेक धातू पकते सवा च्यार २ दिन लगता है ऐसा भी पूर्वाचार्य जैनो का कथन है केइयक छ धातू पकते एकेक जगह ५ दिन डेढ घडी मानते है वीर्य का मैल नही मानते आखिर सातोंइ धातुओ वनते तीस दिन के लगभग होता है यह दोनों का एक ही सिद्धांत है यह पाचन क्रिया मे शरीर मे कमवेसी गरमी के लिये जितनी कसर रहती है तब धातुओ की पुष्टी में और मैल के जथे मे वध घट होती है कितनेक आदमीयों के कफ जादा होता है कितने एक के पित्त जादा होता है कितने एक के कान मे मैल ज्यादा होता है कितनो के पसीना ज्यादा होता है कितनों के रू तथा नख जादा बढता है कितनो के आंख में गीड तथा आखो चिपडी होती है कितनों के खीलें तथा गालो पर चिकणास जादा होता है ऊपर लिखी सातोंइ धातूओं की अदर की पाचन क्रिया मे कमवेसी पणे से ही एसा लक्षण होता होगा इस लक्षणो द्वारा अनुमान करने मे आता है ॥

॥ तीन दोप-वात-पित्त-कफ ॥

ऊ वींड वाईल फलेग्म

ऊपर लिखा सात धातू का उत्पत्ति क्रम वह मुख्य तीन चीजों से शरीर में क्रिया चलती है आहार के रस को तैसेइ उस मे से क्रम से बणते धातुओं को अपने २ ठिकाणे लेजाने का काम वायु करती हैं यह वायु सब शरीर में फैली भई है आहार के रस की चाल से यह भी मालम होता है के शरीर मे पाचन क्रिया फकत होजरी में और आंतों में ही होती है ऐसा नहीं है किन्तु अ-

ग्नि सब शरीर में है इतना तो है पक्वाशय के आसरे ही शरीर की सब गरमी और पाचन शक्ति का आधार है इस से मालम भया के पित्त नाम का एक अग्नि शरीर में अपना हक धराता है तीसरा मुख्य पदार्थ कफ है सो रस का मैल है या रस का दूसरा बर्णे सो पदार्थ है यह भी सब शरीर मे व्यापक और शरीर को पोषणे वाला है इस वास्ते वैद्यक शास्त्र मे इन तीनो की प्रधानता इन तीनों की वध घट से रोगीपणा समानता से निरोगीपणा इत्यादि प्रकृती जानने को आधार रक्खा है येवाय पित्त कफ या मैल मल जब बिगड के रोग करता है इस वासते तीनो को दोष भी कहते है जगत मे धारण करने को चद्रमा १ सूर्य २ और वायु ३ कि जैसी क्रिया है ऐसी ही क्रिया शरीर को धारण करने को इन तीनो की है चद्र जैसे दूसरे को ठडता देता है तब ताकत वढती है तैसे कफ का धर्म है, सूर्य गरमी द्वारा सब को हरण करता है तैसे पित्त का धर्म है, वायु फेंक देती हे विक्षेप करती है सो वायु का धर्म है यह तीनों बिगड़े तो शरीर का नास कर देती है अवस्था मे १ दिन मे २ रात मे ३ और भोजन मे ४ इन चारो मे आदि में मध्य में और अत मे इन तीनों का वखत है, सो इस मुजब बालकपणे मे कफ की अधिकता १ दिन के प्रथम भाग में कफ की अधिकता २ भोजन के अत मे कफ की अधिकता ३ जवानी, में पित्त का जोर १ दिन के मध्यान्ह मे पित्त का जोर २ भोजन के मध्य मे पित्त का जोर ३ वृद्ध अवस्था मे वायु का जोर १ दिन के अंत भाग में वायु का जोर २ भोजन की सरुआत में वायु का

जोर ३ रात के प्रथम भाग मे कफ का जोर १ भोजन के पीछे पचने के अन्त मे कफ का जोर १ रात्री के मध्य भाग मे पित्त का जोर १ भोजन पचने मध्य मे पित्त का जोर २ रात के अत मे वायु का जोर १ भोजन पचने के आदि मे वायु का जोर २ ॥

॥ पांच वायु ॥ (उ विंड)

वायु का लक्षण दोष धातू मल वगेरो को एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है शरीर की क्रिया को चपलता देती है वायु शरीर मे जहां तक शुद्ध होय तहां तक शरीर मे फुरती चैन सब चेष्टाओं की प्रवृत्ति कर के धातुओ को अच्छी तरह गति देकर इंद्रियो को चपलता शरीर के सब क्रिया मे मदद देती है वायुकार जो गुण है सूक्ष्म शीतल रूखा हलका चलने वाला यह उस के मुख्य गुण है वायु पाच तरह का है १ उदान कंठ मे रहता है २ प्राण हृदय में रहता है ३ समान आंतरो मे रहता है ४ अपान मलाशय मे रहता है ५ व्यान सब शरीर मे रहता है उदान वायु उंची गति करती हैं उस से बोलना गाना वगेरः होता है जब वह उदान वायु बिगडती है तब स्वर भंग तथा हांरा के ऊपर के भाग में रोग पैदा करता है प्राण वायु का कार्य मुंमेगति करता है और आहार को रस्ता देता है प्राणों को धारण करता है प्राण वायु जब बिगडती है तब हिचकी रोग श्वास रोगादिक होता है उदान प्राण वायू का शुद्ध सयोग है सो ही आयु है समान वायु का कार्य आमाशय (होजरी) तथा पक्वाशय (आंतरा) में फिरे हैं जठ राग्नि के सग मिल के आहार को पचावे है पाचन क्रिया में पैदा हो

ते रस को जुदा करता है मल मूत्र को जुदा २ निकाल के गिरावे है समानवायु जब बिगडती है तब मंदाग्नि अति सारदस्त और गोला वगेरः अनेक रोगों को पैदा करे है अपानवायु का कार्य बडे आंतर मे तथा सफरे मे रहकर मल मूत्र वीर्य गर्भ स्त्री के रितूधर्म (खून) वगेरः को नीचे के द्वार तरफ खेंचकर लेजाने का काम करता है अपानवायु जब बिगडनी हैं तब वस्ति गुदा स्थान वीर्य का रोग प्रमेह वगेरः बडे २ भयकर रोगों को यह वायु पैदा करती है व्यान वायु का कार्य सब शरीर मे फिरता है रस को धमनी तथा शिराओ मैं चढावे है पसीना तथा खून को बहाता है गति पास मे लाना दूर फेंकना आंखमूंचणी खोलणी इत्यादि काम व्यान वायू का है व्यान वायु जब बिगडती है तब सब शरीर में रोगों का जन्म पैदा करती है कोई वखत यह सब वायु एकदम बिगडती है तब बडे कष्ट से प्राणी मर जाता है ॥

॥ पित्त ॥ (बाइल)

पित्त का स्वरूप गरम प्रवाही पीला हरा सारक तीखा कडवा हलका चिकणा पित्त पकती वखत खट्टा है आमवाला पित्त हरा है आम विगर का पीला है स्वभाव पित्त कास तो गुणी है वह पित्त पांच प्रकार का है पाचक पित्त १ पक्काशय आंतरों में है १ रंजक पित्त कलेजे में और तिल्ली मे है २ साधक पित्त हृदय में है ३ आलोचक पित्त आंखो में रहता है ४ भ्राजक पित्त चमडी में रहता है पाचक पित्त खुराक को पचाता है अग्नि को बढाता है मल

मूत्र का विरेचन करता है मल मूत्र रस वगैरो को जुदा २ करता है रस को रग देना हृदय का कफ तथा अंधकार का नाश करता है रूप का धारण क्रांति बधानी शरीर के ऊपर का लेप मालस वगैरे को पचाना इत्यादिक काम करता हैं दीपक जैसे एक जगह रहा भया लेकिन सब घर मे प्रकाश करता है तैसे यह पाचक पित्त सब शरीर की अग्नि को ताकतवांन करता है रजक पित्त रस का खून बनाता है रस को खून का रग देता है साधक पित्त बुद्धि धृति (हिम्मत) स्मृति वगेरः पैदा करे है साधक पित्त अंतःकरण में है इस वास्ते धारणाशक्ति तथा याद शक्ति यह सब अन्त.करण द्वारा जीव के प्रकाशित होता है आलोचकपित्त रूप आकार ग्रहण करता है नेत्र इस पित्त द्वारा देखता है भ्राजक पित्त शरीर पर लेप तेल वगेर मालस को पचा कर शोषण करता है चमडी पर दमक चमक लाता है ॥

॥ कफ-श्लेष्म ॥ (फलेग्म)

कफ का स्वरूप सुपेद भारी स्निग्ध ठडा मीठा और बिगडने से खारा कफ विशेष कर तमोगुण वाला है कफ पाच प्रकार का हे क्लेदनकफ आमाशय होजरी में है १ अवलंबन कफ अत'करण में है २ रसन कफ कठ मे है ३ स्नेहन कफ शिर मे है ४ श्लेष्मण कफ सांधों मे है ५ क्लेदन कफ अन्न को भिजाता है अच्छी तरह धारण करना रस को ग्रहण करना सब इंद्रियो को तृप्त करना सांधों को अच्छी तरह जुडा रखना इत्यादि पानी की क्रिया

हुकम हेता है शरीर की सब क्रिया मगज महाराज के आधीन हैं तंतू उस के हलकार हैं ज्ञानतंतुओं शरीर के जुदी २ जगह की खबर पहुंचाने को पहरायत है गतितंतू मगज महाराज के द्वार पर खडे भये पहरायत है सो मालक का हुकम जुदी २ जगह पहुंचाते हैं इस करके हाथ पकडने का पांव चलने का आंख खोलने मूचने का मुंह चाबने का काम करता है जब इस में कोई भी जघह की क्रिया बन्ध पडे अथवा बराबर नही चले तो समझ लेना उस २ भागों के तंतुओ मे कसर हो गई शरीर जड होता है वातरक्त गलत कोढ शुनवहरी कमर के नीचे का भाग रह जाय लकवा हो जाने वगेरे रोग ज्ञानतंतु गतितंतुओ का व्यापार अटकने से होता है उन्माद (पागलपणा) अपस्मार (मिरगी) वाइ (हिस्टीरिया) हिचका वगेरः रोग भी मगज के बिगाड से अथवा मन के बिगाड से पैदा होते हैं ॥

॥ रुधिर-खून-लोही ॥ (ब्लड Blood)

खन का काम शरीर मे मुख्य जीवतव्यता का आधार है सब शरीर का पोषण खून से होता है खुराक को पोषण करने वाला सार रूप हिस्सा कितना एक रसायण क्रिया में अलग होकर खून के संग मिलता है तब इस हिस्से को खून अपनी गति में जुदे २ भागों को चहिये जितने प्रमाण का बांट देता है उस भागों के अंदर निकम्मे पदार्थों को अथवा मैल कचरे को अपने प्रवाह मे खेंच कर शरीर के बाहिर निकालने की जगह में फेंक देता है अथवा

शुद्ध करने की जगह मे अपने संग खेचके ले जाता हे दूसरा खून का जरूरी का काम बदन में गरमी देने का है जब खून नही फिरता है तो छाती के भाग पर जैसी गरमी मालम दे है ऐसी हथेली पगथली पर लगती नहीं है जब किसी भी बेमारी मे खून का फिरना बराबर नहीं रहता तब पहले हाथ पांव ठंडे होते हैं जब खून जलदी २ फिरता है तब सब बदन मे बराबर गरमी रखता है देसी केइयक आचार्य ऐसा भी मानते हैं शरीर मे जब कफ बिगडेगा और पित्त हाथ पेरो मे जाकर ठहरेगा तब शरीर ठंडा हाथ पैर गरम और शरीर मे पित्त बिगडैगा और कफ हाथ पैरा में जाकर ठहरेगा तब बदन तो गरम और हाथ पैर ठंड हो जाते हैं शरीर मे जो खून फिरता है सो दो तरह का हे हृदय के बांये खण में धमनी या धोरी नसों मे लाल किरमची रग का खून होता है और कलेजे के दहणा खंड मे और काली नसो में मैला और जामुन के रग जैसा स्याह खून होता है इस काले रंग के खून को लोक जानते हैं जैसा नुकसान करने वाला नही है फेफसे मे जाकर शुद्ध भये बाद यही खून शरीर को पोषण करता है लोही जरा खट्टा चिकणा औ पाणी से कुछ भारी है स्वाद में जरा खारा है खून में गरमी सो डिग्री है खून के दो भाग हैं एक तो रक्तरजकण दूसरा रक्तजल रक्तरजकण खून मे असंख्याता है जिस मे खून लाल दिखता है खून का जल जैसा प्रवाही भाग दूसरा उस में रग नहीं है यह रक्तजल दो पदार्थों का बना भया है जिस को अंग्रेजी मे फिब्रिन और सीरम कहते हैं खून के एक हजार भाग

मे ..... पाणी का १३० भाग खून के दाणे का ६७ भाग ..... का २ भाग फिब्रिन का बाकी रहे इग्यारह भाग जिस मे ..... सोडा लोह वगैरः पदार्थ है इस तरह रसायण ..... से जुदा २ करने वाले विद्वानों को मालम पडा है खून का ..... बडी धमनी नसां फेफसा केशवाहनी यह खून की छोटी बडी ..... है करने शरीर मे खून चक्कर की तरह फिरता है उस का ..... रक्ताशय है रक्ताशय यह खून का होद है वांये बाजु ..... में से शुद्ध खून का एक नल (धोरी नस) निकलती है ..... की एक बडी शाखा पेट तथा ..... मे जाती है और ..... हाथ तथा शिर में जाती है आगे जाते दर- ... के माफक इस बडी-शाखाओं में से बारीक नसे उस में से आखिर केशवाहनी वाल जैसी सूक्ष्म नलियां जाल के माफक आखर चमडी तक फैलाव किया है इस जाल मे से लाल खून फिर रहे पीछे बाद उस में से पीछे ऐसी हीज महीन फस्तें निकलती हैं और जैसे छोटे २ वाहले मिल के आगे जाते एक बडी नदी हो जाती है अथवा दरख्त का दृष्टांत समझना छोटी २ डालियों के समुदाय मिल कर नीचे जाते बडा थड हो जाता है इस वजह छोटी २ अनेक फस्त एक ही मिल के एक बडी फस्त शरीर के नीचे के भाग में से और दूसरी बडी नस दो हाथ तथा शिर के तरफ से शाखाओं में से ऊपर के भाग में से ऐसे दो बडी फस्त काला खून लेकर रक्ताशय के दहणे खंड में उतरे हैं वहां डालता है वहा से काले खून का दो फांटा .....

तरफ के भाग में फेफसे में जाता है फेफसे मे गई भई रगों भी केशवाहिनी नसों की तरह जाल के माफक फैल जाती है और फेफसे मे हवा के खाडो की महीन नसों की जाल के सम्बन्ध मे आता यह काला खून वहां शुद्ध होकर केशवाहनीयों के रस्ते साफ लाल खून वहां से पीछा फिरता है और यह जाल आगे जाते एकट्ठी मिल कर उसको एक धमनी होती है वह शुद्ध खून को पीछा रक्ताशय के वांये खड में दाखिल करती है जैसे पहले लिखा है उस मुजब शुद्ध खून सब से बडी धमनी के रस्ते निकला था इस तरह ही शुद्ध खून रक्ताशय के बाये खड में से बडी धमनी के रस्ते निकल कर शरीर में सब जगह फैलता है और वहां से काला खून बडी शिराओं के रस्ते रक्ताशय के दहने खड में दाखल होकर वहां से पीछा दो फस्तों के रस्ते फेफसे मे जाता है फेफसे मे यह काला खून शुद्ध होकर पीछा रक्ताशय के दहणे खड मे दाखल होकर वहा से फिर शरीर के पोषण वास्ते धमनी के रस्ते फैलता है खून का एसा फिराव होते १॥ मिनट लगता है होजरी आंतरा और तिल्ली के शिराओं का खून परबारा रक्ताशय में नहीं जाकर कलेजे में जाता है वहां फेफसे की तरह उस की महीन साखे फैल कर उस खून की शुद्धि होती है और पीछे रक्ताशय की तरफ बहता है औरतों के गर्भाशय में इस खून की चाल फेर दूसरी है लिखा है गर्भावस्था में फेफसा काम नही करते है गर्भ को ताजा खून मिलता है गर्भ की नाभि में नाल होता है उस रस्ते कितनाएक खून लाल रग का गर्भ के पेट में जाता है और

बाकी का खून इस से अलग और थोडा कलेजे में होकर रक्ता-शय तथा फेफसे में फिर कर फेर गर्भ नाल की धमनी के रस्ते शुद्ध होने को जाता है ऐसा कितनेक पंडित कहते हैं खून शरीर में किस कारण से जलदी २ फिरता है सो लिखते हैं रक्ताशय मांस की कोथली का बना भया है उस के अदर के स्नायुओ तंग और ढीला होते रहता है जब कोथली खून से भर जाती है तब तो वह स्नायु तग होकर खून को बाहिर निकालती है पीछे वोही स्नायु ढीले होकर कोथली को चौडी कर खून दूसरे को आने को जाय देती है स्नायुओं का ऐसा धर्म है रक्ताशय मे जुदे २ खंड हैं उस के बीच मे पडदे वाले दरवाजे है वह दम २ मे खुलते हैं और भिडते हैं रक्ताशय के एक खड में खून भरता है तब तो सं-कोच पाता है उसी वखत सामने का खंड चौडा होता है जिसे वो खून उस खंड मे धकेलीजता है वहां से धमनियो मे धकेलीजता है रक्ताशय के खंड वारा फिरते तंग और ढीला भया करता है उस से खून को धक्का लगता रहता है फिर धमनियों मे खून की जोडा जोड हवा होती है वह हवा भी खून को गति दिया करती है इस के अलावा खून को धकेलने वाले दूसरे भी छोटे२ कारण भी बहुत है धमनिया स्थिति स्थापक है इस वास्ते भी खून को ग-ति मिलती है शरीर के स्नायुओ की हमेस गति होने मे नजीक के रक्त शिराओं पर दबावट होणे से भी खून आगे धकेलीजता ह सा-सोश्वास से भी खून की गति को भी कुछ मदद मिलती है इ-त्यादि अनेक कारण खून को फिरता रखता है यह क्रियायें ही

रीर का चेतन्य है नाडी के भी खून से सम्बन्ध है वांये र शिय खंड मे से खून बडी धमनी में जाता है जिस से धमनी चौडी ती है उस का धक्का धमनी के आखरी नाके तक पहुंचता है इस नाड़ी का ठपका कहते हैं हरेक वखत रक्ताशय के सकोचाणे नाडी का ठपका पैदा होता हैं यह ठपके जुवान आदमी के ना- का एक मिनट में धासरे ७५ वखत होता है ॥

॥ सासोश्वास ॥ (रेस्पीरेशन *Respiration*)

सासोश्वास की इस शरीर मे बडी जबर क्रिया है खून जैसे शरीर जीवन है लेकिन इस खून को सजीवन करने वाला सासोश्वा- की क्रिया है खून शरीर में फिरता है फेफसे में शुद्ध होता है ण को देने वाला हवा को अंदर दाखल करने वाला और बाहर फेफसे में प्राणो को हरणे वाली एसी एक जहरी हवा को बाहर कालने वाली श्वासोश्वास की क्रिया है अपने उश्वास लेते हैं बाहर की हवा अदर जाती है और श्वास लेते हैं याने छोडते तब अन्दर की हवा बाहर निकलती है यह सब आदमी जानते जरूर जानने की बात इस मे जो है सो हम लिखते हैं शरीर अदर पहले लिखी जो ज्ञानतंतु गतितंतुओं की अपार जुडीया र धमनियां तैसे रगों बाल से भी बहुत महीन उनोका जाल सब ग्रह फेला भया है ऐसे ही दोय बडी जाल दोनों फेफसे में वायु नी की फैली भई है नाक के नस को रों से फेफसे तक के र- को वायु मार्ग अथवा श्वास नली कहते है हवा नाक के रस्ते

गले के पिछले भाग में से स्वर नली में होकर श्वास नली में से फेफसे में जाती है श्वर नली और श्वास नली यह दोनों एक ही रस्ता है लेकिन उस की जुदी २ क्रिया समझणे को उस के दो भाग ठहराये गये हैं ऊपर का भाग जो जीभ की जड गले के नल गोटे याने घांटे तक आया भया है उस को स्वर नल कहते हैं और नीचे के भाग को श्वास नली कहते है श्वास नली का ऊपर का भाग चोडा और बडा हैं गले के ऊपर के भाग में बाहर से जो ऊंचा टेकरे जैसा दिखाई देता है यह स्वर नली का भाग है उस को घांटा लोक कहते हैं कंठ भी कहते हैं इस स्वर नली का काम आवाज पैदा करने का है इस के बीच रस्ते के दो तरफ दो तार है वो दोनों तार तंबूरे के तारका काम करते हैं अर्थात जुदा २ स्वर पैदा करते है इस तार के बीच का रस्ता लंबा सांकडा और त्रिकोणाार है उस मे से हवा आती जाती है वह कंठ द्वार है यह तार स्नायुओं के सम्बन्ध से हिलता है तब वह रस्ता सांकडा चो-डा अथवा बंध होता है इस रस्ते से हवा विगर और कोई भी प-दार्थ जा नहीं सकता जो अकस्मात कोई भी पदार्थ इधर के तरफ जाने का बनता है तब उसी वखत यह रस्ता बंध हो जाता है जल पीते खाते हसणे से गले मे गया पदार्थ अपना रस्ता छोड स्वर न-ली की तरफ जाता है तब स्वर नली कंठ को अटका देती है उस को इस स्वर नली के नीचे के रस्ते को श्वास नली कहते हैं श्वा-सोश्वास की क्रिया श्वास नली नीचे छाती में उतरे पीछे उस के दो भाग होते हैं एक तो बांये फेफसे मे जाता है एक दहणे फेफ-

से में पहुंचने के पहिले श्वास नली के विभागो पर विभाग होकर आखर महीन नलियां होकर फैलावा करती है और आखरी के नाके पर जल के छोटे पपोटे जैसे पपोटे होकर ठहरता है सब फेफसे के अन्दर और ऊपर ऐसे पपोटे रहे भये हैं इन पपोटों पर खून के बाल जैसी पतली रगों का जाल पसरा भया होता है और उस में रक्ताशय में से आये भये बिगडा खून वहता है और स्वच्छ साफ होता है अपने अच्छी हवा का जो श्वास लेते हैं वह आखर उन पपोटों तक पहुचता है और जैसे हवा ज्यादा अच्छी होगी तैसाही उस के संग आने वाला खून ज्यादा साफ होता है खून के अंदर हवा (कारबोनिक असिड ग्यास) पपोटे के अंदर की हवा में मिलता है और उस हवा के अन्दर की प्राणवायु (आक्सिजन) खून में घुसती है वह प्राणवायु को संग लेकर फेफसे में शुद्ध भया खून रक्ताशय मे पीछा फिरता है श्वासोश्वास की क्रिया मे शरीर के खून में फेरफार होता है जरूरी का सो इस मूजब १ फेफसे में खून के संग बाहर की हवा का मिलना होते ही अशुद्ध खून काला बदल कर शुद्ध लाल खून बन जाता है जो कि शरीर को पोषण करता है २ श्वासोश्वास से खून की गरमी एक दो डिगरी बढती है ३ श्वासोश्वास से फिब्रिन नाम का तत्व वढता है ४ श्वासोश्वास से खून में प्राणवायु की वृद्धि होती हे और उस के अन्दर का कारबोनिक असिड तैसे ही नाइट्रोजन का कमीपणा होता है इस के अलावा हसणा रोणा कै दस्त पैशाब स्त्री का प्रसव छींक डकार हिचकी खासी इत्यादि सब कामों में श्वासोश्वास

मददगार है बाहिर की हवा अंदर अंदर की बाहर यह क्रिया हमेश चलती है यह क्रिया जिन्दगानी को बहुत मददगार है, वह इस तरह से है शरीर में एक जहरी पदार्थ बढते रहता है वह प्रमाण मुजब ही चाहिये बढे सो बाहर निकलना चाहिये उस को कारबोनिक असिड कहते हैं हवा में जुदे २ तत्व रहे भये हैं और हवा के संग जुदे २ पदार्थों का मिलाप होते ही उस में रसायणी फेरफार होते रहता है यह बात रसायण-शास्त्र से सिध हो चुकी है बाहर की हवा भी अंदर जाकर रसायणीक फेरफार करती है ऐसा पंडितों ने अनुभव से सिद्ध कर लिया है ऐसे रसायणीक योग से एक तरह का असिड पैदा होता है लेकिन जो अदाजे से जो वह असिड जादा रह जाय शरीर में तो खून फिरना बंध हो जाता है और मर जाता है प्राणवायु और कारबोनिक असिड यह दोनों काले और लाल खून में होते हैं प्राणवायू (आकसीजन से) असिड ज्यादा होता है प्राणवायु तथा कारबोन इन दो पदार्थों के योग से कारबोनिक असिड बनता है एसी समझ में सुनने से आई है प्राणवायु का कितनाएक भाग खून के संग रहकर बदन में फिरता है इस वजह खून के संग फिरते उस के संयोग से धीमे२ कारबोनिक आसीड बन कर खून के संग फेफसे में आता है और श्वास नली के हवा के संग मिल के बाहर निकल गिरता है श्वासो श्वास चलना या बंध करना मगज के आधीन नहीं है जो मगज श्वासो श्वास पर अपणी सत्ता चलाये चाहे तो थोडी देर तो चला सकता है लेकिन श्वासो श्वास को जादा देर तक बंध करने से या

जोर से चलाणे से जिन्दगी को जोखम पहुंचता है तो यह श्वासो श्वास किस की प्रेरणा से चलता है शरीर का सब जीवन व्यापार तो कर्म बद्ध चेतन अद्भुत शक्ति वाला जो अंदर व्यापक है उस का है लेकिन जुदी क्रिया शरीर की अदभुत रचना के संचों से ही चल रही है जीव और कार्मण शरीर का काय योग का शामिल संयोग ही सिध होता है इस मुजब तत्वदृष्टि के विचार से शरीर के अवलोकन याने देखने से श्वासो श्वास की क्रिया का कितनाएक अनुमान हो सकता है जो वस्तु स्थिति स्थापक होती है उस के सग में आने वाली वस्तुओं को रस्ता देती है लेकिन उसका एसा ही गुण है सो पीछा सकुडा कर उस वस्तुओं को निकालने का प्रयत्न करता है कलेजा फेफसा पांसलिया छाती पेडू के बीच का पडदा वगेर कितनेक अवयवों में हमेस सकोचणा और फूलने का गुण है हवा का स्वभाव जहां आकाश याने रस्ता पोल मिले वहां ही घुसणे का है बाहर की हवा नाक तथा मुह के रस्ते श्वासनली में दाखल होने का प्रयत्न करती है श्वासनली उस को फेफसे तक लेजाती है फेफसे पोले होणे से उस हवा को रस्ता देता है और फेफसा फूल जाता है तब आस पास की पसलियां और छाती के नीचे का भाग उरोदर पटल का पडदा नीचे झुक कर रस्ता देता है एसी गति में तो आघात के सग याने यह तो हवा के घुसने का स्वरूप अब इस के सग प्रत्याघात लगता है याने पीछी इस हवा को निकालने का प्रयत्न होता है सो इस तरह स्थिति स्थापक पणे का एसा गति स्वभाव है उस में ये ही पासलिया उ-

रोदर पटल और फेफसा पीछा संकोचा कर हवा को धक्का मारता है जिस से तुरत ही वह हवा नाक और मुंह के रस्ते पीछी वाहर निकल पडती है एसी क्रिया हमेशा चलती है श्वासो श्वास में हवा फेफसा और पांसलियां छाती के नींचे का पडदा यह सब क्रिया करने वाले पदार्थ मददगार है श्वासोश्वास में हवा का प्रमाण इस मुजब हर वक्त श्वास लेते कितनी हवा तो बाहर से अंदर जाती है और निश्वास से कितनी हवा वाहिर निकलती है ये जाने पीछे अपने आस पास की हवा का भी बिचार बांध सकते हैं इस विचार में तारतम्पता तो वहुत है कहां तक लिखें लेकिन मध्यम उमर का तनदुरस्त आदमी दर श्वास में सरासरी ३० से घन इंच हवा ३५ तक लेता है और पीछा निकालता है इस हिसाब से दिन रात २४ घंटे में एक आदमी को छ लाख छयासी हजार अथवा सात लाख घन इंच हवा आसरे चाहिये महनत का काम करने वाले आदमी को इस से ज्यादा अर्थात दूणी हवा चाहिये अब इस आसरे पर हिसाब लगाने से हर किसी घर में या कोठे में कितनी हवा है और वह कितने आदमीयों के पूरे जितनी है उस का ख्याल हो सकता है फेर एक आदमी के अंदर से निकले जो श्वास के संग हवा वह आस पास की कित[illegible] बिगाडती है इस पर से यह भी आदमी जान सकत[illegible] से विवेकी आदमी अपने रहने के स्थल[illegible] आवागमन होय एसा उपाय [illegible] एक मिनट में आसरे २० श्व[illegible]

खूराक हवा में तीसरे प्रकाश में लिखा है ॥

॥ पाचन क्रिया ॥ (डाईजेश्चन *Digestion*)

पाचन क्रिया शरीर का मुख्य जीवन है क्योंकि खून का पोःपण पाचन क्रिया से बणते रस से होता है इस की व्यवस्था जाणने को जरूरी है खुराक का रस्ता मुह मे से सरू होता हैं और गुदा के द्वार तक उस का नाका आया है उस खुराक के रस्ते की लंबाई ३५ फीट है इस बात से आदमी को आश्चर्य पैदा होगा के आदमी की लबाई सिर से लेकर पांवों की अगली तक जादे से जादा ६ से ७ फीट की है तो फिर गले से लेकर गुदा तक खुराक मार्ग की लंबाई पांच गुणी छ गुणी जादा कहां से आगई उस का खुलासा इस तरह है मुह के दरवाजे से होजरी तक तो नल सीधा उतरा भया है होजरी के नीचे वो नल आंतरों के रूप से गुचला याने आंटे खाता गुदा द्वार तक पहुचा है इस वास्ते खुराक मार्ग इतना लंबा है खुराक पहले अन्न नल में होकर होजरी मे होजरी में से छोटे आंतरों में फेर बडे आंतरों में फेर सफरे में होकर खा या खुराक गुदा पास आता है यह सब एक ही नल संग्रह है लेकिन जुदा २ ठिकाना क्रिया अलग २ इस वास्ते जुदे २ नाम हैं खुराक का निकम्मा हिस्सा जो मल गुदा द्वार पर आने के पहले जो २ क्रिया खुराक की होती है सो पाचन क्रिया में लिखते हैं पाचन क्रिया का ठिकाना मुह होजरी कलेजा पाक्रियाम्क आंतरे यह पाचन क्रिया के वास्ते जुदे २ रस पैदा करने वा-

ले अवयव हैं थूक जठररस पित्त तथा आंतरों में तरह का २ रस पाचक क्रिया करने वाले रस है मुह में थूक की क्रिया मुंह में चावणे का काम होता है और थूक इस काम को मदद करता है पाचन के काम मे थूक की बहुत जरूरी है थूक को पैदा करने वाली मुख्य छ पिंड मुंह में है दोय तो कान के नजीक दोय जीभ नीचे दोय जबाडो के नीचे मुह मे थूक किस २ जगह पैदा होता है उस का अनुभव कर अनुमान बांधना और ऊपर लिखे छ पिंड अथवा थूक नलियो का भी निर्णय करना थूक खुराक के संग मिल के जुदा २ काम बजाता है ॥ १ थूक से मुंह और जीभ हमेसा भीजा रहता है जिस से बोलने चालने का जीभ को सहज से काम होता है २ ॥ खाणे का पदार्थ दांत से चाबे जाता है उस को थूक एक रस बनाता है उस से स्वाद की भी खबर पडती है ३ थूक खुराक मे मिल के उस को नरम करता है जिस से चावणे का निगलने का काम सहज से होता है ४ थूक खुराक में मिल के उस मे रसायणी क्रिया करता है और विशेष कर के स्टार्च वाले खुराक को पचाणे के काम में मदद करता है होजरी में होती पाचन क्रिया अन्न नल के रस्ते जाकर होजरी में पहुंचता है उस खुराक के संग जठररस मिलता है होजरी के अंदर का पुड मधुमक्खी के छाते जैसा होता हैं उस मे महीन २ असंख्याते छेद होते हैं यह छेद उस के अदर की नलियो का मुंह है उनो में से एक तरह का रस होजरी मे झरता है जिस को जठररस अथवा पाचन रस कहते हैं यह जठररस हमेशा दस बीस रतल तक पैदा

होता है यह रस खुराक को गाल कर एक रस कर देता है इस रस मे ज्यादा भाग पानी का है हजार भाग में पांच भाग दूसरे पदार्थों का है जिस में पेपसीन निमक वगेरे खारो का समावेश होता है होजरी में गये पीछे भी सब खुराक की एक सदृश पाचन क्रिया नही होती कितनेक नरम पदार्थ जलदी पचता है बराबर खूब चाब कर के उतारे भये पदार्थो से थोडा चाबा भया अथवा बिगर चाबे उतारा भया पदार्थ देर से पचता है कितनेक पतले पदार्थ होजरी मे जाता है के तुरत ही खून की नलियां उस का शोषण करना शुरु होता है और होजरी में से ही खून के संग मिल के शरीर मे दाखल होता है होजरी का मुख्य काम खुराक को विलोय कर एक रस करने का है वह खुराक एक रस होकर जैसे जैसे पचता जाता है तैसे २ थोडा भाग होजरी के नीचे भाग से संधा भया छोटा आंतरा मे जाता है खासर होजरी ढीली गिरने से नही पचा भाग भी आंतरों मे चला जाता है छोटे आंतरो मे कितनाएक रस पैदा होता है फिर कलेजे मे से पाक्रियाक्र नाम का एक पिंड होजरी के पिछाडी लगती है उस में से जो रस आंतरों मे वहता है वह रस आंतरो के खुराक पर काम करता है कलेजे में से पित्त पैदा होकर पित्ताशय में आता है वहा से पित्त छोटे आतरो में जाता है कलेजे का पित्त शिरा अर्थात काले खून की रगो में से पैदा होता है आतरे तथा होजरी मे एकठा भया खून की एक वडी शिरा अलग अन्तःकरण रक्ताशय के तरफ नही जाकर कलेजे मे जाती है वहां इस

खन में से पित्त जुदा भया पीछे बाकी का खून रक्ताशय में जाता है पित्ताशय के अंदर का पित्त आंतरे में पाचन क्रिया चलती है तभी उस में बहता है पाचन क्रिया जब बध होती है तब पित्ताशय में से जाता भया पित्त आंतरों में उसका छेद बध होता है पित्त खुराक को पचाने वाला मुख्य पदार्थ है पित्त कितनेक दरजे जुलाब की गरज सारता है उस से आंतरा का रस सहज से आगे धकेलीजता है अनुभव से भी यह बात सिद्ध होती है कि जब पित्त आंतरोमे ज्यादा जाता है तब दस्त खुलासा आता है अथवा बहुत वखत अतीसार होजाता है प्रमाण से कम जब पित्त आंतरों में जाता है तब दस्त की कबजी होती है और पाडु पीलिया कमले का रोग होता है पीलीयेकी बिमारीका मुख्य कारण एसा है के खूनमें से जितना पित्त होना चाहिये इतना पैदा नहीं होय तब वह खून में ही रहता है उस कर के खून में पित्त का भाग बढने से शरीर पीला पड जाता है छोटे आंतरों में पाचन ॥ होजरी में जो पाचन क्रिया बाकी रह गई होय सो पूरा यहां होता है चरबीका भाग आंतरो में गलता है पाचन होता रस का शोषण होकर खून मे चढना शुरू होता है पाचन और शोषण होते बाकी के पदार्थ नीचे उतरते जाता है जैसे २ नीचे उतरता है तैसे २ सार भूतरस खून में सूकता जाता है और निरुपयोगी मलके मिलता भाग आगे धकेलीजता जाता है और बडे आंतरों में प्रवेश करता है बडे आंतरे में खुराक जाता है तब वह खुराक मलके लगभग पतला होता है बडे आंतरे में कुछ जादा जाने जैसी पाचन क्रिया होती नहीं तो भी उस में जो कुछ सारभूत तत्व

होता है उस का सोषण होते आगे जाते वह मल घटना शुरू होता है बडे आंतरे भी रस का शोषण करता है इस वास्ते जो बीमार मूह से खुराक नहीं ले सकता उस को पतला प्रवाही खुराक पिचकारी से गुदा के रस्ते बडे आंतरे मे चढा सकते हैं इस तरह चढाया भया दूध वगेर पतलो पदार्थों को बडा आंतरा शोषण करलेता है उस से बीमार को पुष्टता मिलती है बडे आंतरे का मल नीचे उतर सफरे में होकर आखर गुदा द्वार से नीचे गिरता है इस तरह खुराक का साररस बनता है और निकम्मा मल निकल जाता है पाचन क्रिया में ऊपर लिखे पित्त वगेर. जो रस सो खुराक को पचाकर सारभूत रस को खून में चढाणे की मदद करता है वह बहुत से रस भी खून के अंदर से ही आता है मतलब इस का ऐसा है खून के तत्वों से ही पाचन क्रिया होती है और पाचन क्रिया पीछे भी खून के तत्वो को बढाती है ॥

॥ शरीर की सर्व क्रिया ॥

ज्ञान क्रिया न्यारे २ तरह २ का ज्ञान होने वास्ते मगज में ज्ञानतंतु लगे भये हैं यह बात भेजे के प्रकरण मे अच्छी तरह लिख दिया है चमडी से फकत स्पर्श का ज्ञान होता है इतना ही नहीं वह चमडी से और भी कई फायदे है चमडीमे क्रोडों महीन छेद है उस रस्ते से पसीना निकलता है इस पसीने मे अदर से कितनेक निकम्मे पदार्थ बाहिर आते है सो चार कारबोनिक असिड वगेरे फिर चमडी में शोषण करने का स्वभाव है दवा पाणी हवा

वगैरः बाहर का पदार्थ छिद्रों के रस्ते शरीर में प्रवेश करता है खून की शुद्धि तथा गति को उत्तेजन देता है शोषण क्रिया शरीर के कितनेक भागों में शोषण क्रिया हमेशा चलती है रस को चूस के अंदर चढाना उस को शोषण क्रिया कहते हैं फेफसा होजरी आंतरे और सब शरीर की चमडी मे शोषण क्रिया चलती है इस अवयवो के अतरपुड के अंदर बहुत बारीक छेद है यह हरेक छेद एक २ महीन नलियों का मुख समझणा यह छेद उन २ अवयवों का रस को चूस कर नलियो के रस्ते चढाता है उस पर कितनीक क्रिया भये बाद वह रस खून में मिलता है यह नालियां उनों का मूंह से रस का चूसणा करती है और उस नलियों के अंतर पुड भी छेद वाला होता है जिस से उस नलियो मे सर्व जगह शोषण क्रिया चलती है काली नसां याने शिराओ जिस रस को चूसती हैं वह रस कलेजे मे तैसे ही फेफसे मे आकर वहां वह रस शुद्ध होता है और होजरी तथा आंतरो की नलिया जिस रस को चूसती है वह उन नलियों के रस्ते पहले रस को शोधने वाली कितनीक थैलियां होती है उस मे शुद्ध होकर रक्ताशय मे जाता है फेफसे की नलिया कारबोनिक असिड को बाहर निकाल देकर प्राण वायु को अदर लेती है यह भी काम शोषण क्रिया से होता है चैतन्यक्रिया शरीर मे गति अथवा चलन वलन का काम चलता है सो सब काम स्नायुओं से है और फिर स्नायुओं से भी महीन रूं जैसे तंतु शरीर के कितनेक भाग मे आये भये है वह शरीर में कापणी की तरह थरथर धूजा करते हैं इस तरह स्नायुओं का सं-

कोचाणा इन सूक्ष्म ततुओ का धूजना इस कारण कितनेक पदार्थो को गति दिया करती है रसोत्पादक क्रिया शरीर मे तरह२ की रस क्रिया चलती है इस रस क्रिया से कितनेक रस पैदा होते है थूक पित्त वीर्य वगैर रस तो शरीर के पोशण क्रिया में काम देता हे कितनेक रस निकम्मे है जेसे कि पेशाब पसीना बगल वगैर मे रहे दूवरस इत्यादि पित्त वगेर का मिलरस शरीर के जुदे२ सर्वो में तैय्यार होता है कलेजे मे पित्त वीर्याशय मे वीर्य स्तन में दूध तैय्यार होता है और पीछे वह जुदी क्रिया से जुदा२ होकर बाहिर निकलता है अगर जो बाहिर नही निकलेगा तो जरूर बिमारी हो कर नुकसानी करेगा उपयोगी रस भी चाहिये जिस मे ज्यादा या कम पैदा होगा तो शरीर में हरकत पैदा करेगा कलेजे मे पित्त रस कम पैदा होता है तो पाचन शक्ति मंद हो जाती है और जो ज्यादा पेदा होय तो तब दस्त की बिमारी और भी पित्त सबन्धी अनेक रोग पैदा करता हे इस तरह थूक कम पेदा होय तो पाचन क्रिया बराबर नही होती है और ज्यादा बढ कर बाहिर निकले तो भी पाचन क्रिया मे नुकसान होता है जो चिकणा रस सांधो को मजबूत पोषण करता है वह अगर कम पैदा होगा तो सांधों को धक्का लगता है घसता है और जादा पैदा भयातो चरबी बधनेसे चलने की शक्ति कम पड जाती है स्वाभाविक वेग १३ इस शरीरमें ऊपर लिखी क्रिया के अलग भी कितनेक वेग स्वभाव से पेदा होते है और जिन्दगानी को वह क्रियायों की बहुत जरूरी है येतेरे वेग अपनी भूल प्रमाद से अज्ञान अथवा आलस से अटकता है तो शरीर को

नुकसान पहुंचता है अब उन वेगों की तफसील इस मुजब है ॥ १ मूत्र ॥ पाचन क्रिया में रस शरीर में चढता है बाकी रहा निकम्मा पदार्थ में से जाडा मलसोदस्त होकर निकल जाता है और उस में का प्रवाही पदार्थ सो मूत्रापेंड में होकर पेशाब के रस्ते बाहिर आता है मूत्रपिंड महीन नलियों का बना भया है उन नलियो के आस पास बाल जैसी महीन नलियों का जाल पसरा भया है उस में से उन नलियों का शोषण करने वाले पर माणु पेशाब को खेंचता है पीछे मूत्र नल के रस्ते मूत्राशय में जाता हैं इस तरह बूंद २ मूत्राशय में एकठा होता हैं जब वह आशय भर जाता है तब वह स्नायु दबते हैं और पेशाब की शंका होती है और गति होती है इस में कितनेक गतितंतु मन के इच्छा के आधीन, मगज से लगे भये है वह अगर पेशाब को रोकना चाहे तो कितनेक देर रोक सकते हैं किसी काम की जरूरी से जो आदमी रोक सकता है वह इस बात का प्रत्यक्ष पूरावा है लेकिन इस स्वभावी वेग की हाजत को रोकना इस से नेत्रो में नुकसान गुडदे पोते में दरद वगेर होता है कारण पेशाब के संग दूसरे क्षारादिक जो पदार्थ जाता है उस मे एकाध पदार्थ जहरी है वह पेशाब के रस्ते निकलना ही अच्छा है पेशाब को रोकणे से वह पदार्थ जब बाहिर नही निकलता खून मे रहता है तब नुकसान करता है तनदुरस्त आदमी को हमेश २४ घंटे में सो १०० से १२५ सवासे रुपये भर पेशाब होता है मौसम ऋतु के फेरसे पसीना ज्यादा होता है तो पेशाब कम होता है कोई ऋतु में पेशाब ज्यादा तो प-

सीना कम होता है इस प्रमाण को ख्याल मे लाये उपरांत जो ज्यादा बढे या ज्यादा घटे तो कोई भी बिमारी रोग समझना बहु मूत्र प्रमेहादि जननेंद्रियों की रगो में दरद मूत्रकृच्छ शिर में दरद पेशाब का रुकणा और इस के सग मल की भी रुकावट होती है २ । मल ॥ खुराक का सार भूतरस खेच्यों के बाद निकम्मा कचरा बडे आंतरे में धकेलीजता २ सफरे में आता है सफरे के स्नायु ढीले होते हैं तो भी मल को गति नही दे सकता तैसे वायु से मल का अवरोध होता है तो भी मल की प्रवृत्ति नही होती लेकिन कितनेक आदमी हाजत भये पीछे जान कर दस्त को रोकता है उस मे सफरे में तथा आंतरे में वायु का कोप होता है पीछे उस में दरद होता है होजरी में भी दरद शिर मे शूल नीचे वायु अटके तो आफरा भी हो जाता है ॥३ वीर्य ॥ वीर्य यह खुराक की पाचन क्रिया आखरी सारभूत तत्व है जैसे दूध पर क्रिया होणे से आखर घी निकलता है तैसे वीर्य बन कर आडो में से वीर्य नल के रस्ते वृषण रज्जू मे होकर पेडू में जाता है मूत्रपिंड में से जैसे मूत्र पेडू में मूत्राशय में एकठा होता है तैसे वृषण आंडो में का वीर्य मूत्राशय के नीचे चोतरफ एकेक वीर्याशय है उस में वह वीर्य एकठा होता है वीर्य तरुण अवस्था मे होना शुरू होता है और पूरी जवानी में पूरा होता है वृषण के अन्दर के वहणे वाले वीर्य मे कितनेक परमाणू होते हैं इस में चैतन्य वाले ततू होते हैं जिस से स्त्री पुरुप के सयोग से गर्भ रहता है यह खुलासा गर्भोत्पत्ती वारे में लिख दिया है मलमूत्र की तरह वीर्य की वारम्वार प्रवृत्ती नही

होती लेकिन जिस वक्त वीर्याशय वीर्य से पूरा भर जाता है तब उस को रस्ता देना चाहिये स्त्री पुरुष के आपस में वीर्य के खेंचने वाले औरत मर्द ही है यह जीव कर्म की कुदरत आकर्षण शक्ति ऐसा भी सिद्ध करती है वीर्य की प्रवृत्ती भी आपस मे ही औरत मर्द से ही होणी दूसरी तरह नही करनी वीर्य के प्रगट भये वेग के रोकने से जननेंद्रिय मे शूल चलती है वीर्य की पथरी बध जाती है धातु झरने लग जाता है स्वप्न मे वेर २ वीर्य जाता है और शरीर नाताकत हो जाता है प्रदर प्रमेह वगेरः रोग होते हैं पेशाब अटकता है अंग में पीडा छाती में दरद होता है ॥ अधोवायु । ४ ॥ गुदा के रस्ते जो हवा निकलती है उस को अधोवायु कहते है सफरा यह अधोवायु की जगह है जैसे स्नायु मल को गति देता है तैसे वायु भी मल को गति देता है जो यह वायु का कोप होता है तो दस्त की कबजी हो जाती है और पेशाब खुलास नहीं आता आफरा होता है मगज घूमता है पेट गुड २ करता हैं इस वासते जबरदस्ती अधोवायु कभी रोकणा नहीं इंद्री मे चमचमाट बूद २ पेशाब का आना इस के रोकने से होता है ॥ ५ ॥ उलटी (कै) कै होती होय तो दवा से बन्ध करना लेकिन उस को गला या मुह बध कर आती कै को रोकना नहीं इस के रोकने से अरुचि पित्त विकार सोजा पांडु ज्वर कोढ चक्कर वातरक्त गलतकुष्ट पित्तीके ददोडे आदि अनेक रोग पैदा होते है ॥ ६ ॥ छीक ॥ छींक के रोकने से शिर दुखने लगजाता है अर्दित वायु याने आधा चहरा जबाडी रह जाती है आंधासीसी

शरदी से या पेट मे क्रमि पडने से छींक आती होय तो इलाज करना लेकिन आती छींक को रोकनी नही ॥ ७ ॥ डकार ॥ आती डकार को रोकने से हिचकी खासी अरुचि कांपणी और छाती में गोटे उठकर दरद होता है ॥ ८ ॥ बगासी ॥ बगासी आती को रोकने से शिर भिल जाता है दरद होता है अंग टूटता है चमडी शून्य जैसी हो जाती हे सांधे संकोचीजते हैं तैसे आखे मुह नाक और कान मे दरद पैदा होता है ॥ ९ ॥ भूख ॥ शरीर में रात दिन की महनत से जो तत्व कम पड जाता है उसकी भरती करने को दूसरे पोषण तत्व की जरूरी पडती है इस पोषण तत्व की कमीपणे को जताने वाली वृत्ति को भूख कहने में आती है यह भूख भी स्वभाविक वेग है पोषण की जरूरी पडती है तभी भूख लगती है उस वक्त जो भूख को मारते है याने रोकते हैं उस से शरीर सूकता है ताकत घटती है तेजक्रांति घटती है शरीर के सांधे २ टूटते है शिर घूमता है आंखो का तेज घटता है इस वासते भूख की टेम पर भोजन करना देरी नही करना ॥१०॥ प्यास यह प्यास भी स्वभावी वेग है कठ होठ का सूकना यह प्यास की निशानी है प्यास के रोकने से मुह में शोष पडता है कानों से सुनने की शक्ति कम होती है थकेला चढता है श्वास चढता है छाती मे दरद होता है ॥ ११ ॥ आसु ॥ हर्ष अथवा शोक से अथवा कोई पदार्थ आंख में घुसने से आंसु आंख में आते है यह आख का स्वभाव है इस वेग को रोकने से आख के रोग छाती का दरद अरुचि शिर मे चक्कर वगेर. रोग पैदा होता है ॥ १२ ॥ श्वास ॥ श्वास के बाबत पिछाडी विस्तार से लिख आये है श्वास

के रोकने से गोले का रोग हृदय का रोग (हार्ट डिसीझ) वगेर दरद पैदा हो जाते है ॥१३॥ नीद ॥ शरीर का संचा सब दिन चलने से थक जाता है हाथ पांव ढीले पडते हैं और मन निर्बल पडता है इनों की विश्रांति याने विसांई के लिये दर्शनावर्णी कर्म-कारीगर की प्रवृत्ती से नीद आती है इस नीद से बहुतसी क्रियाओ बंध होकर शरीर जडवत् मालम देता है पांचो इंद्रियों को बेशुध्दि आ जाना देखने का आवरण आंख को सो चक्षु दर्शनावरणी बाकी च्यार इंद्रियों की अपने २ विषयों का आवर्ण सो अचक्षु दर्शनावरणी कर्म का उदय भाव है सो नींद स्वभावी वेग है नींद मे यह तीन क्रिया चलती रहती है श्वासोश्वास खून का फिरना और पाचन क्रिया मृत्यु में इन तीनो की क्रिया नहीं रहती बाकी दशा सब नींद में मृत्यु कैसी है नींद की वखत टालने से आलस अजीर्ण शिर का दरद चक्कर वगेरः बिमारी पैदा होती है इन तेरह वेगों को जबरन पैदा करना नहीं जैसे कई आदमी कपडे की बत्ती डाल के छींक लेते हैं विना प्यास जबरन जल पीते हैं इत्यादि तेरोंई का जबरन पैदा करना नहीं भये वेग को रोकना नहीं इस के अलावा जिस २ रोग मे जो २ कामों की मनाई है अथवा उस रोग मे पथ्य है वह करना पथ्यापथ्य मुजब विद्वान वैद्य डाक्टर जिन की दवा करनी उस दवा मुजब पथ्य करना अथवा अपनी बुध्दि पूर्वक इस दीपक के उजाले मे चलना ॥

इति श्री जैन धर्माचार्य संग्रहीते उपाध्याय राम-ऋध्दि सारगणि: विरचिते वैद्यदीपक ग्रंथे द्वितीयो प्रकाश ॥



प्रकाश ३

॥ शरीरका यत्न ॥

शरीररचना उसके अवयव और क्रिया जाणे पीछे उस क्रियाकूं यथायोग्य नियममें रखणेवास्ते शरीरका सरक्षण और पुष्टिकारक पदार्थ तथा उनोका गुण और धर्म समझणा वैद्य विद्यामें ये तीसरा प्रकाश बडा हितकारी है क्योंके पदार्थोंका गुण तथा धर्म जाणे विगर उसका वरतावा करणेसें उससे बहोतसी बैमारियां पैदा होती है इतनाहीं नहीं इनोंसें अथवा दुसरे कारणोंसे जो दरद पैदा होता है उस दरदोंकों मिटाणेकू इनही पदार्थोंका उपयोग करणेमें आता है बलके बाजे बखत दवासेंभी जादे गुण येही पदार्थ दिखा देते है इसवास्ते हमेसा वरतावमें आते भये पदार्थ जैसेकी हवा पाणी और खुराक तैसें कसरत नींद वगेरे दुसरेभी जानने योग्य बाबतोंकों जरूर जाणना चाहिये शरीरके साधनका मुख्य दो प्रकार है तन दुरस्तही रहे रोग आणे पावे नहीं एसा जो ज्ञान जिसमेंभी उद्यमकी प्रवलता वैसें वरतावसें चलना दुसरे प्रकारमे कर्मयोगसे जो रोग हो जावे इसमें कर्मकी प्रबलता बाद उपायोंका करणा इसमे जीवका उद्यम अच्छा होणा न होणा कर्मोंकी प्रबलता इतिस्याद्वादः ॥ इस प्रकाशमें रोग हो नहीं सके एसा जो पुरुष कृत उद्यम उसका निर्णय लिखेंगे इस प्रकाशमें च्यार किरण है १ पहलीमें हवा पाणीका निर्णय २ दुसरीमें खुराक निर्णय ३ तीसरीमें ऋतुचर्या ४ चोथीमें दिनचर्या रात्रिचर्या नित्यपालणेके नियम इत्यादि विवरण लिखा जायगा शरीर निरोग रहणा ये पूर्व जन्ममे जीवदया जिसने पाली है भूखे प्यासे दीनहीणकू सब तरेसें जिसनें सुख दिया है वो प्राणी निरोग शरीरवत लबी ऊमरके साधनकी बुद्धि सर्व सामग्री उसकू मिलती है सात सुखमें मुख्य सुख निरोगी काया है कुटुबमें माता पिता भाई बेटा बेटी बहिन आदि कोईभी बेमार पडे तबभी अदमीके दिलमें बहोत चिंता इधर उधर वैद्य डाकतरोंके पास जाणा कमाईमे हरज फेर दवा दारूमे धनका नाश जो मूरख वैद्य विद्याहीण यमराजका दूत मिले तो शरीरकाभी नाश घरके काम सभालणेवाली माता स्त्री वगेरे बेमार पडणेपर बाल बच्चोंकी सार सभाल रसोइ वगेरे कामोंमें जो जो हरजा पहुचता है सो प्राणियोंके प्रत्यक्ष है जो कमाणेवाला होय वोही बेमार होजाय तो उस घरकी क्या दशा होती है और जो नित्त कमावै नित्त घरखरच चलावे उसके बेमार पडणेपर क्या दशा होती है शिरपर करजाभी जिनोंको नहीं मिले उनोंकी बेमारी पर क्या दशा होती है कलियुगमें वैद्य विद्याभी एक दुकानदारीका रूजगार बण गया है क्या वैद्य क्या डाकटर गरीब मोहताजोसेंभी विगर पैसे बात नहीं करते जो हाथसे हाथ मिलावे उसकी दाद फरियाद सुणते हैं भाग्यवान तो अपणे ख्यालमें मस्त जो धर्मा

दा सफा खाना सरकारने बणवाया है वो असलमें वास्ते मोहताजोंके है जीमे रहमलाकर गरीबोंका इलाज भाग्यवान के मुजब करणा ये वैद्य डाकटरोंका फरज है हवा पाणी वनस्पती ये तीनों कुदरती दवा पृथ्वीपर स्वभाव जन्य हाजर है परम कृपालु परमेश्वर ऋषभदेवने इनोंका शुभयोग और इनोंसे होता अशुभयोगका ज्ञान तथा न्याय अपणे मुखद्वारा आत्रेय पुत्र आदि प्रजाकू उपदेश देकर आरोग्यता सीखाई इन तीनोंका सुखदाई योग जाणना दुसरेकूं बताणा इसमें क्या खरच लगता है जिस दवा बनाते खरच लगता है वो तो अपणे शक्ति अनुसार देणा नुकसा लिखणेमें हरज करणा नहीं भाग्यवानोंकों चहिये सो पूर्ण वैद्योकों द्रव्यकी मदत देकर गरिबोंकों दवा दिलाणा सरकार अग्रेजभी दोदानोंकोंही परसन किया है विद्या दान और औषधी दान सच है रोग सयुक्त अगर राजाभी है तो दुखी है निरोगी करसाण अपणी झूंपडीकोंही राज्यभुवन मानता है इस कलियुगमे अणपढभी वैद्यवणे फिरकर अपणी आजिवका चलाते है क्योंके लोक सब रोगग्रस्त भयेबाद दोडादोडी करते है लेकिन् किस तरे वर्त्तणेसें बेमारी आवेही नहीं ये वात थोडेही लोक जाणतेहै ये अज्ञान दुखकी जड है इस अज्ञानके वस अपणी और पराइ सबके शरीरकी खरावी प्राणी करते हैं तनदुरस्तीके साधन जितनेअदमीके स्वाधीन है उसके पालणेका यत्न जरूरसें करणा आते रोगको बध कर देणा लेकिन् तनदुरस्तीके सर्व उपाय अदमीके हाथ नही है कितनेक तो दैवाधीन है, यानेकर्मस्वभाव वस है कितनेक राज्याधीन है कितनेक नियम लोक समुदायाधीन है कितनेक नियम प्रत्येक अदमीओंके स्वाधीन है रुतुओंका एकदम फेरफार होणा हैजा मरी विस्फोटक (प्लेग) यह तो दैवाधीन समुदाई कर्मके आधीन है शहर सफाई खातेके अमलदारोकी बे दरकारी होकर रोगगीदकीसें होता है इत्यादिकेइ वातें राज्याधीन है लोकरूढी बचपणेमे विवाह जीमणवार वगेरे कुचालोंसे जो जो रोग पैदा होते हैं ये वात जाति समाजके आधीन है और प्रत्येक अदमी खानपानादिकके अज्ञानसे अपणे शरीरमें रोग पैदा कर लेवे ये वात प्रत्येक अदमीके स्वाधीन है आदमी प्रत्येककों तनदुरस्तीके नियमोंका ज्ञान होय तब तो समाज और जाति सुधरे और समाजके मुख्य २ सहर सफाइ म्युनिसपलमें रहणेसें वोभी सुधारा होसके इस तरे कितनेक दरजेजो अदमीके वस नहीं वो वहोतोसें *वण सके एसा है लेकिन् निकाचित कर्मबद्धआखरप्रबल है* ॥ इस जाणकार मनुष्यके तनदुरस्तीके उपाय वरतणेसें अपणेकू कुटबकू और विवेकी पडोसियोकोभी तनदुरस्तीका फल लिमता है शरीर संरक्षणका ग्यान और उसका नियम पालना इत्यादि वाते वडी कोलेजमें सीखणेसेंही मिलता एसा एकांत पक्ष नहीं है घर अथवा कुटुंब येभी सामान्य ज्ञान सिखाणेंकू अनुभविक पाठशाला है अगर पाठशाला कोलेजमें चतुराईका नियम सीखेबादभी घरकी पाठशालाका चलता अभ्यासकू सीखणा और उस मुजब चल-

णेकी जरूरी है कडुवेके मावाप घर पाठशालाके मास्टर है, अपणे कुलपरंपरासें चलता आया जो दयाधर्मका खानपान विचारसे वधा हुआ आचारसें जिनोंके मावाप वरतते है वालक प्रायें वैसाही सीखता है जिसमें मावापोकी अछी चाल चलण पुन्यवान सपूतही सीखता है सात विसनोंमेंका व्यसन दुराचार तो दुसरेकी देखादेख विगर कहे वहोत वुद्धिहीन सीख लेते है कारण इस मिथ्या मोहनीके संग जीवकूं अनादि कालका परिचय है और आगेभी उसको कष्ट आपदा भोगणे है फेर दुर्गतीमें तथा ससारमें रुलणा है तो वो आनुपूर्वी उस प्राणीकूं उस वुद्धिद्वारा उसी तरफ खेंचती हे माता पिता गुरु वगेरे सीखाते तोभी नहीं सीखता है अछी आचरणकू वुरीमें झट चित्त देता है तो भी माता पिताकी चतुराईका असर केइकतो पूराही सीख लेते हैं केइयक आधा इत्यादि कर्माधीन तारतम्यता है और जिसके वडेरे कडुवेके लोक स्नान दांतण नहीं करते कपडे मेले पह न ते पाणी विगर छाणे पीते नसां पीते है इत्यादि वहोत आदते वो वालकभी सीख लेते हैं वाजे पुन्यवान वीस कुटुवे वालोंसेभी वढकर अछी क्रिया नियम सीख लेते हैं और द्रव्यवान विनयवान दातार निकल आते है उसपर ऐसा दृष्टांत देते है पिता अधा, मूरख, काणा, निर्धन, होय तो क्या पुत्रकोंभी एसा होणा, क्या द्रव्य नहिं कमाणा, वस इसमेंभी स्याद्वाद है तोभी उधम तो अछाही करणा, ओर सिखाणा, शरीर सवकों प्यारा है वहोत लोकतो अज्ञान याने पथ्या पथ्य नहीं जाणते वेमार होते हैं जाणके वैमार थोडे होते हैं, वेदनी कर्म अशाता जव उदयमें आणा होता है तव जाणता वूझताभी कुपथ्य आचरता है, यह तो जीव और कर्मका झगडा है, ज्ञानसें चलणेमें जीव वलवान, अज्ञानसें चलणेमें कर्म वलवान, हम तो ज्ञानसेंही सिद्धि मानतेहैं, इस वास्ते हमारा कहणा सर्वज्ञकी आज्ञानुसार यही है पहले तो सदाचरणाअसदाचरणा सुखदाइयोगसो पथ्य, दुखदाई योग सो कुपथ्य, इसकू अछी तरे समझलो, यह तो ज्ञान, फेर उस मुजव चलोये क्रिया, ज्ञान क्रियासें मोक्ष है, यह वात ससार पक्ष और मुक्ति पक्ष दोनों तरफ समझणा, जिस पुरुषने अपणी आत्माका भला चाहा है, उसने सव सुगका भला चाहा, जिसने अपणे शरीर सरक्षणका नियम पाला वो दुसरेकु नियम पलाया जैसा है, कारण मात पिताके रस्तेप्राये पुत्र चलते है

किरण पहली १

हवा तथा पाणी

हवा तथा पाणी और खुराक ये जीवनके मुख्य तीन पदार्थ है, खुराकविना तो अदमी कैयेक दिन निकाल सकते हैं, पाणीविगर कितनेकघटे निकाल सकते हैं, लेकिन् हवाविगर थोडी देरभी जीणा मुसकिल है, इस हिसावसें खुव मालम भयाके हवा

ये सबसे ज्यादे उपयोगी चीज है, दुसरे दरजे जल है, तीसरे दरजे खुराक है, तोभी एक चीज इनोमेसें हाजर नहीं होय तो दुसरे पदार्थ एक दुसरेका काम नहीं दे सकता है, फकत हवासेया फक्त पाणीसे याफक्त खुराकसें, अथवा इनोंमेंसें दो चीजोंसेंभी जिंदगानी नहीं रहसकतीहे, येतीनोसें जिंदगानी चलती है, और वखतपर मौतकी नीसा णीभी इन तीनोंसें वण जाती है जो पदार्थ शरीरकूं उपयोगी है वोही पदार्थ विगडे भये होय तो, अथवा चहिये जिस उन मानसें कम या वैसी होय तो, अथवा हरेकके मिजाजतासीरकू नहीं माफगत होय तो शरीरकूं नुकशान पंहुचा देती है इन सब वातोंका ज्ञान शरीर सरक्षणमें आ जाता है.

हवा (अएर)

जगतमे सर्व जीव आसपासकी हवा लेते हैं वो हवा जब बाहर निकलके पीछी नहीं फिरती बस वो अंतक्रिया है जीवतव्यका रक्षण मुख्य हवा है, हवा अपणे नजरसें नहीं देख सकते हैं जब वो स्थिर हो जाती है तो उसका स्पर्शभी मालम नहीं देता हवा चलती है तब वो पवन कहलाती है जो जो काम करती है सो नेंत्रोसें जगत देखता है उसका ज्ञानस्पर्शसे जाहिरहै समस्त जगत् पवन महासागरसें ढका भयाहै हवारूपी महासागर कमसें कम सो मील उडा याने गहिरा है ये कथन डाकतर अर्वाचीन विद्वानोंका है प्राचीन आचार्य तो चवदे राज लोकके आस पास घनोदधी घनवात मानते है अर्थात् हवा और पाणीकेही आधार ये चवदे राजलोक है लेकिन् एसा तो है जैसें २ ऊपर चढणेमें आवे तैसें २ हवा जादे पतली मालम देती है.

साफ हवाके तत्व

लोक मनमे यूं धारते होंगें की हवा स्यात् एकही पदार्थकी बणी भई है लेकिन् विद्वानोका निश्चयकीया भया है हवामे मुख्य चार वस्तू हैं वो बहोत चतुराई और आश्चर्यके साथ एकठी मिली है प्राण वायु (आ क्सि जन) नाइट्रो जन (शुद्ध हवा) कार-बानिक एसिड ग्यास) ये चावलोकेकोयलेंके सग प्राण वायु जब मिलती है तब ए बणती है। और पाणीके सुक्ष्म परमाणु (वराल) ऐसी च्यार वस्तु हवाके संग मिली भई है अपणे आस पास तीन तरेकी वस्तुओं है कितनीक तो पत्थर लकड जैसी कठन कितनीक पाणी और दूध जैसी पतली प्रवाही बाकी कितनी एक तो हवा जैसी वायु रूपसें दिखती है जो जलके सुक्ष्म परमाणुओसें (अर्थात् वरालोंसें) हवा बणी भई है वो तो जुदी होकर उसका माप हो सकता है उसमेंसें एक प्राण वायु (जो आक्सिजन) कहलाती है प्राणका आधारभी मुख्यपणे उसी वायुसें हैं प्राण वायु विगर चराकभी जलती नहीं फेर ऐसाभी हें जो सब हवा प्राण वायुही होती तो जगतमें जींव किसीं तरे जीते नहीं फिर सकते तुरतही मर जाते कारण जीवोको जितनी चहीये उससें जादे सक्त होजाती इस

वास्ते प्राणवायूके संग दुसरी हवा कुदरती मिली भई है वो हवा प्राणके आधारभूत नहीं है और उस हवामे जलती चराक रखणेसें बुझ जाती है, श्वास लेणेमें और चीजोके जलाती वखत उनमान माफक ये दो हवा मिली भई काम देती है अदमीके हाथमें एक अंगूठा और च्यार अगुलियां है उसकू याद करणेसें तुमकों याद आवेगा की हवामें एक भाग प्राणवायूका है च्यार भाग खाली हवा याने (नाईट्रोजनका है) और हवा इन दोनोंसें मिली भई है, दुसरे दो हवाके भाग इनोंमें मिले भये है वो वहोत थोडे हैं तोभी वो भाग वहोत दोतुं उपयोगी हैं कोयला क्या चीज है सो तो अपणे जाणतेहैं जगल जलके जमीनमें दट जाता है उसके काले पत्थर जैसें जमीनमेसें निकलते है उसकूं कोयला कहते हैं जो रेलके इजनमें जलाये जाते हैं चावलोंमेसें एक तरेके कोयले हो शकते है ये चावलोंके कोयले (कारवान) कहलाते है अंग्रेजीमें प्राणवायु और कोयलोंके मिलणेसें एक तरेकी हवा वणती है उसकू कारवोनिक एसिड ग्यास अंग्रेजीमें कहते हैं ये हवामें तीसरी वस्तु है ये हवा वहोत भारी वजनदार है सो कोइ २ वखत गहरा उडा खालीकू एके तले एकठी होके रहती है भुयरेमें तथा वहुत दिनोके वंध मकानमेंभी रहती है एसी हवामें रखी भई सिलगती वत्ती वुझ जाती है जो अदमी उस हवामें दम लेता है वो एकदम मर जाता है लेकिन् ये हवाभी वनस्पतीकू पोषण करती है इस हवा विगर वनस्पती ऊग सकती नहीं दिनकों उसंका भाग दरखतकी जड वनस्पती चूस लेती है इस हवाके अढाइ हजार भागमें एक भाग इस जहरी हवाका है इतनी थोडी होणेसें वों हवा अपणेकू कुछ हरकत नहीं पोहचाती है लेकिन् जो हवामें उस हवाका भाग जराभी जादा होय तो लोक बैमार हो जाते है हवामें चोथा भाग पाणीके परमाणुओंका है याने-वराल है जो लोक थालीमें थोडा पाणी धर देवे तो वो धीमे २ उड जाता है अर्वाचीन विद्वान डाकटरोंका कहणा है, के सूर्यकी गरमी हमेसा पाणीकू वरालरूपसें खेचती है सर्वज्ञके कहे सूत्रोंमें लिखा है के जल वायूके योगसें सुक्ष्म होकर परमाणू रूपसे आकाशमें मिल जाता है वोही पीछा हमेसा ओस हो हो कर आठोइ पहर झरता है, लेकिन एसा है, की दो घडी दिनवाकी रहणेसें जादा मालम देता है, दो घडी दिन चढे जहांतक, वादसूर्यकी किरणोकी उष्मा द्वारा सूक जाता है वोही वराळ सुक्ष्म परमाणुओंके वादर पुद्गल वधकर यानें वादल होकर या धूअर होकर वरसता है जो हवामें पाणीके परमाणु नहीं होतेतो सूर्यके तापकी गरमीसें शरीर जल जाता, और झाड वनस्पती जल जाती लोक मर जाते. इस कारण जहा जलकी नदी दरियाव वनस्पती वहोत है उहां वरसादभी प्राये वहोत होती है रेतीके मुलकमें कम इस उपरांत प्राणियोके पुन्य या पापकी कमा-वेशीसें कर्मादिक पाच समवायोके सयोगसे कभी तो रेतीली जमीनमेंभी वहोत वरसाद होती है और हमेसा जल और वनस्पती जादा उहा वरसात विलकुल नहीं वरसती

यहांभी स्याद्वाद है ॥ उनमान मुजब योग्य प्रमाणमें ये चारोंही मिली हवा है सो तो स्वछ है याने साफ है इस हवासे तनदुरस्ती रहती है.

॥ हवाकूं बिगाडणेके कारण ॥

दुनियामें बहोत तरेके जहर हैं जिससें बहोत अदमी मरते हैं एक तरफ विचारके देखें तो खराब हवा बराबर कोइ भी जहर नहीं है अंग्रेजोंके इतिहास हिन्दमें आणेका पढा उसमें लिखा है कलकत्तेके केदखानेमें एक छोटी कोटडीमें १४६ गोरोंकों डाला गया उसके फकत दो छोटी बारियोंथी दरवजा बंध कर दिया था दुसरे दिन फजरमें दरवज्ञा खोला तब फकत २३ अदमी जीते मिले बाकी सब मर गयेथे उनोंकों किसने मारा खराब हवानें, कारण हवाका जहां थोडा आणा जाणा एसी छोटी कोटडीमें बहोत अदम्योंकों बंध कर देणेसें उनोंके श्वाससें कोटडीकी हवा बिगड कर उन अदम्योंकी जान गई, इन लोकोंकी तरे एक रातमें इन बिचारोंकी जेसें जान गई एसें तो विरली जगे मरते होंगे लेकिन इतना तो है ताजी हवा नहीं मिलणेसें बहोत अदमी सब जिंदगानी तक, नाताकत और बेमारतो रहतेही हैं, हवा बिगडणेके कारण नीचे मुजब १ श्वासके रस्ते निकलती अशुद्ध हवा ।। अपने हमेसा श्वास लेते हैं लेकिन बाहरकी जो हवा श्वासके रस्ते अदर लेते हैं उससे बाहर निकालते हैं सो हवा फकत जुदी है, शरीरकी सफाई और स्नान हे वोही शौच है इसीसें ही वैकुंठ मिलती है ऐसे माननेवाले और मुं धोणा हाथ पाव दम २ में धोणा लेकिन शरीरके अदरकी मलीनताका । क्या हाल है उस बाबतका विचार थोडोंकोही भया होगा श्वासोश्वाससें जो हवा अपने अदर लेते हैं वो अपने शरीरके अंदरके भागकू धोकर कुछ २ मलीनताकूं तो बाहिर ले जाती है इसी वास्ते योग विद्याके स्वरोदय ज्ञानके वेत्ता इस श्वासा द्वारा केइयक नेती धोती बस्ती करते है जिनोंको पूरा ज्ञान नही भया है वो तो इस कर्त्तव्यसे श्वासद्वारा रोग मिटाते है और पूरे स्वरोदय ज्ञानवाले नवली रसकपालभाती आदि श्वासाके कर्त्तव्यसे निरारभी होकर रोग मिटाते है मेसमेरेजम (देवाकर्षण) सें पराये रोग मिटाणे आदि सब योगविद्याकी कर्त्तव्यता श्वासासे अनेक चमत्कारोका सबंध है ॥ श्वासके संग निकलती हवा अपने सग तीन चीजोंकों बाहिर ले जाती है १ कारबानिकऐसिडग्यास, २ हवामें मिलापाणी ३ गंदाकचरा, पहली चीज स्वच्छ हवामे बहोत थोडी होती है लेकिन जो हवा श्वासके सग बाहर निकलती है उसमें जहरी हवाका भाग सो गुणा विशेष प्रमाणमें होता है अपनेकू वो दिखती नहीं है जैसे अगारमेंसें धूआ निकलता है तैसे वो बाहिर निकलती है एक संकडी कोटडीमें चूला जलाया जावै जैसें वो धूंएसें भर जाती है- इस तरे जो अदमी सांकडी कोटडीमें सूता है तो उसके मूमेंसें जहरी हवा निकलकर अपने आसपासकी साफ हवाकू भी बिगाड देती है अगर उस कोटडीमें साफ ताजी हवाकू आणे

कूं खुलास जगे नहीं होय तो अपने मूमेंसे नीकली भई जहरी हवा फेर अपनेही
नके रस्ते अदर जानेसें मोतकी नीसानी आपहुचती है लेकिन दरवजोंमेंसे, छप्परमेंसें
रियोंमेंसें, कितनीक हवा बाहर निकल जाती है, और कितनी एक बाहरकी खुली हवा
र आती है इस वास्ते ही वास्तुक शास्त्रकार सोनेके मकानोंमें हवाके खुलासा वास्ते
ी जाली झरोखे वणाते हैं श्वासके सग दुसरी चीज बाहिर पाणी (भिजाणेकी)वस्तु
कलती है इस मूकी हवामें पाणी है या नहीं अगर उसकी चोकस तपास करणी होय
सिलट पाटीपर या राजस चकूपर श्वास डालो उसी वखत भीजके दव्वा पडेगा इससे
झा जाता है के श्वासके सग पाणी निकलता है, तीसरा पदार्थ गदा कचरा निकलता
श्वासका पाणी साफ नहीं होता है वो बरतणके धोवण जैसा मैला और गधा होता
उसमें सडा पदार्थ मिला भया होता है वो जो शरीरपर रहणे देनेमें आवे तो बैमारी
थै होती है श्वासके अदरका मलीन पदार्थ जहरी हवा जितनी खराबी करती है हर-
: बुकाणी जो वस्त्रसे बांधके रखते है वो रसायणिक योगसें बहोत नुकसानकारक है
र दाग मूके बाल उड जाणा और जहरी हवा साफ निकलने नहीं पाती है इसीवास्ते
ीयोंके आचाराग सूत्रमें लिखा है खासी करते डकार लेते छींक लेते वगासी लेते
नत साधू हाथ देकर वस्त्र देकर ये वेगोंकों छोडे कारण इस वेगोके भये पीछे श्वासके
चणेका जोर रहता है उसमे जहरी जानवर या चहिये जिससे जादा हवा अदर नहीं
सके बाकी हरवखत श्वास लेते हाथ या वस्त्र देणा नहीं लिखा है देखो प्रत्यक्ष उ-
हरण दुसरे अदमी मुं लगाकर पाणी पीणेमें बहोत अदमी गदकी समझते हैं उससे
सरेका जूठा पाणी नहीं पीते हैं ये बात बहोत अछी है लेकिन वो जूठा जल नहीं
णा इसका असली मतलब क्या है सो वो लोक नहीं जाणते फेर संकडी कोटडीमें
होत अदम्योके एकठे होणेसे एक दुसरेके फेफसेमेंसें निकलती भई खराब हवा और
दा पदार्थ वो लोक वेर २ श्वासके सग अदर खेंचते हैं वो जूठा अन्न और पाणीसें
गुणी खराबी ज्यादे करता है इसतरे गाय भेंस उट बकरे कुत्ते वगेरे जानवर भी
दम्योंकी तरे श्वासके सग जहरी हवा निकालते हैं वो भी हवाकू बिगाडते हैं २ चम-
ीके छेदोंमेसें पसीना जो बाफ (वराल) निकलती है वो भी हवाकू खराब करती है एक
दमीके बदनमेंसें २४ घटेमें सरासरी ३० ओंस पसीना (वराल) बाहर निकलता है, ३
ोजोंके जलानेकी क्रियासें हवा बिगडती है लोक इस बातकू सुणके आश्चर्य पायगे
हा कुछ जलानेका काम होय उहाकी हवा केसें बिगडती है प्राण वायु विगर तो अंगार
लगेगी नहीं जो चराककू एक सकडे बरतणमें तुम सिलगाके रख दो झफबुझ जायगा
योंके उस बरतणका सब प्राण वायु नष्ट हो जाता है इस दृष्टांत मुजब सकडे घरमे
ादे चराकरोसनी जादा करनेमें आवे तो प्राण वायु तुरत उहांकी पूरी होकर कारबो-

]

वराल निकलती है हवा उसमें थोडी दाखल होती है और ये जमीनके अदरकी हवा ऊपरकी हवाके साथ मिलती है जिसमें भी जब जमीन भीगी भई होती है तबतो सडी वस्तु वहोत नुकशान करती है भाजीपाला सडा भया वहोतकरके बुखारके उपद्रवका कारण है मारवाडमें ये वात प्रत्यक्ष हमनें अनुभव करी है जब वहोत वरसात होकर ककडी मतीरे टीडसी वगेरेके वेलों आदि सडती है तब जाट वगेरे ग्रामीणोको शीतज्वर ये चीजें सहरमें आके जब पडी २ सडती है तब हवामें जहर फैलकर सहरवालोंकों शीतज्वर आदि रोग हवाके विगाडसें होता है ५ घरके गलीचीमेंसें खराब हवा होजाती है घरके खालकुडी मोरी वाडे अकूरडे और जाजरू ये गलीचीकी जगे है इसवास्ते हमे ससाफ रखवाणा जैनोके सूत्रोंमे इस २ जगोमें जीवोंकी उत्पत्ति और इन २ सें वचणा वोही दया है लेकिन् वडे सहरोंमे गृहस्थियोकों साफरखाणेका उद्यमही वण आवे तो अछा है साधूओंको एसी वस्तीमें रहणाही क्यों ऊपरकी वाबते हवा बिगडणेके कारण साधू तथा गृहस्थियोंकों तदनमना है ६ कारखाने जैसें कोयलेकी खाण लोहेके कारखाणे ऊन तथा रेसम वणणेकी कलें मील तैसेइ दुसरीभी धातू तथा रग वणाणेके कारखाने तैसेइ तरे २ की कारीगरी वणाणेके कारखाने है सो असलीमें हवाकू विगाडनेके कारखानेहीं है इस कारखानोंमेसें कोयले रूरग तैसें पत्थरकी कोरणी करणेवालोके पत्थरकी खक और और २ धातुओंके महीन २ रजकण उडउडके काम करणेवालोंके शरीरमे घुसकर श्वास नलीके फेफसेके छातीके रोगोंकू पैदा करते है ७ चिलम चुट्टा चिलमका और चुरटोंका पीणा ये जैसें पीणेवालोंकी छातीकूं विगाडती है तैसे वाहरकी हवाकूभी विगाडती है ये व्यसन दक्षण गुजरात मारवाडमें वहोत चल रहा है बीडियों और चिलमोंके पीणेसे हवा निश्चें विगडती है ऐसें हवा विगडणेके वहोत कारण है इन सब वातोसे वचणा अदमीके स्वाधीनताईकी वात है कर्मोंकी विचित्रतासे जो बुद्धि मनुष्योंने पाई है उसका अछा उपयोग नहीं करते पशुओंकी तरे फकत ऐसा घमड रखते है जो कर्मोंमें लिखा है सो होगा ऐसे एकातपक्षी लेकिन् ऐसा नहीं विचारते वो तुमारे कर्मोंने आगे विगाड होणेवास्तेही तुमारी समझमे सदुद्यमकी बुद्धिको फेर दी है स्याद्वादमत श्रीजिनवरको नहि कहियें एकांत ॥ उस कुकर्मोंका फल ऐसें वेकूवोकों मिले उसमें नवाई क्या ऐसे वे परवारहणेसें कष्टफल भोगते २ अमूल्य मनुष्य जन्म कास श्वास क्षय वगेरे रोगोंसें गमाके कष्ट भोगते २ आधी ऊमरमें जाते है गाजा सुलफे पीणेवालेकू हमनें प्रत्यक्ष दुर्दशासें मरते देखे हैं इस ससारमें आके विद्या नहीं पढी धन नहीं कमाया देश जाति कुटुबका सुधारा नहीं किया और न परभवका साधनरूप ज्ञानयुक्त व्रत नियमभी नहीं पाला जब अदम्योनें मनुष्यजन्म पशुओंकी तरे पाकर पृथ्वीकू वोझे मारी

स्वभाव कुदरतसें हवा साफ.

देखो पांचो समवायोंके योगसें प्रथम तो हवा बिगडतीकुं बध करणेमें मनुष्योंक उद्यम है तैसें कालादिक चारो समवाय मिलके हवाकूं साफ करणेकाभी साव पूरावना है वो जो अगर नहीं होता तो सृष्टीमे उत्पन्न होणा स्थिती रहणाभी नहीं होत ये साधन जैसे इनही समवायोंसें बिगडके प्राणियोका प्रलय करता है तैसेंही येह पांचों समवाय मिलणेसें बिगडी हवाकूं साफभी करती है इन समवाय संबधकूं चा ईश्वर मानलो हवामें चलन स्वभाव धर्म है उससें बिगडी हवाकू पवनके झपट्टेसें खेंचके ले जाती है दुष्ट परमाणु छिन्नभिन्न हो जाते हैं और ताजी हवा मिलणेसें जो नुकशान पहुंचणा था । इतना नुकशान नही पोंहचता है ऊपर लिखी जो हवा एक दुसरेके संग मिल जाती है जैसें थोडा दूध पाणीमे एकमेक हो जाताहै चूलेका धूआं थोडी देर पीछे दिखता नहीं ऐसे श्वास वगेरेसे सब बिगडी हवा साफ जादा हवामे मिलकर पतली हो जाती है इसवास्ते इजा कम करती है हवा कोइ वखत जादा कोइ वखत कम चलती है क्योंके हवामें वैक्रिय शरीर रचणेका स्वभाव है दृष्टांत जैसें कृष्ण एक थे लेकिन् सब राणियोंके महलमें नारदजीने कृष्णकू देखा वैक्रियसे कोइ इस बातकू नही माने उनोने वैक्रिय शरीरका दृष्टांत इसमुजब जांणनां जैसें लिंगेंद्री पडी दशामें दो अगुल होती है जिसकी तेजी दशामें कितनी बढोतरी होती है इस मुजब वैक्रिय शरीर वायू करती है अथवा किरडा जैसे रंग बदलता है वैसा वैक्रिय शरीर शक्ति जाणनी खुसकर्ता ताजी हवा चलती है जिस्सें हवा साफ रहती है श्वास प्राणवायूकों अंदर लेती है और कारबोनिक एसिड गेसकू बाहर निकालती है झाड वनस्पती इससें उलटीही चाल करती है वनस्पती दिनकू कारबोनकू अंदर चूसती है और प्राणवायूको बाहर निकालती है इससेंभी वायुके आवरणकी हवा अर्थात् दिनकू दरखतोंकी हवा साफ होती है और रातकूं वनस्पती प्राणवायूको अदर खेंचती है और कारबोनिक एसिड गेसकू बाहर निकालती है लेकिन् इसमेभी इतना फरक है रातकू जितनी प्राणवायूकू वनस्पती खेंचती है जिससें दिनकू प्राणवायूकों जादा निकालती है इसवास्तेही दरखतोंके नीचे रातकू सोणेकी मनाइ विवेक विलासग्रथमे जिनदत्तसूरिजीने लिखा है इसतरे हवा एक दूसरेके सग मिलणेसे पवनसें और दरखतोंसें हवा साफ होती है बरसादभी हवाकू साफ करणेमें मददगार है इसवास्ते इन सब क्रियाकू बंध नहीं करणा साफ हवा बहोत अमोल वस्तु है उसके मिलनेका यत्न हमेसा करणा वस्तीमे दटी भई हवा है इस वास्ते हमेस खुली हवा खाणेकूं जाणा चाहिये इसमें शरीरकू बहोत फायदा मिलता है फिरणेसें शरीरके अवयवोकू कसरत मिलती है ताजी हवा कसरतसेंभी जादे फायदे बद है दिनमें तो फिरण घिरणेसें ताजी हवा मिल जाती है लेकिन् रातकू घरमें सोणेसें साफ

हवाका मिलणा इमारत बणाणेवाले चतुर कारीगर और वास्तुकशास्त्र पढें इजनेरोंके हाथ है आगेके कुढोके बनाये मकान होय तो उसकू सुधराणा चहिये ये सब काम धनवंत और जाणकार दिलदलेलोकाहै तोभी अपणी हैसियत मुजब तो जरूरही बणे जहांतक प्रयत्न करणा बाकी तो वो बात है मन चले लेकिन् टट्टू नहीं चलै उद्यम करते सीधा और उलटा फल होय तो कर्मोंकी रचना प्रबल समझणी. मलीन कचरा और सडती चीजोमेंसे उडती गलीच हवासें प्राणी एकदम नहीं मरता है लेकिन् इस बजे बहोत दिनोंतक रहनेमें आवे तो मरण निश्चै होय क्योके जैन सूत्रोंमें उपक्रम लगके प्राणीकी आयु टूटती है जिसके मुख्य सो भेद है निश्चै मृत्यु एक है ऐसा लिखा है उसमेके ऐसें २ कारण है लेकिन् वो अपने प्रत्यक्ष नहीं जाण सकते है बहोत अदमी तो रोगसें ही मरते हैं वो रोग काहेसें होता है अगर पूरा निदान किया जावे तो बहोतसें रोगोंका कारण खराब हवा ही निकलेगी खराब सक्थ जहर पेटमें जानेसें एकदम प्राणी मर जाता है लेकिन् ऐसा नहीं समझना के थोडा २ जहर अफीम वगेरे नुकशान नहीं करता मगर वो भी कोई वखत सखत् जहरका काम कर गुजरता है इस तरे हमेसों की थोडी २ खराब हवाका जहर शरीरमें पडे नुकशानका कारण बण जाता है फेर बेमार अदमीके आसपासकी हवा जलदी बिगडती है इस वास्ते बेमार अदमीके पास जादा जत्था बध साफ हवा आणे देनी जैसे शरीरके बाहर ताजी हवा चहिये तैसे शरीरके अंदर भी ताजी हवा लेनेकी जरूरी है जैसे बादलीका अथवा कपडेका टुकडा कवले याने नरम हाथसें पकडा भया होय तो बहोत पाणी चुसता है और उसकू दाबके पकडा होय तो वो टुकडा कम पाणी चुसता है ये हाल अदरके फेफसेका है जो फेफसा थोडा दबा भया होय तो उसमें जादा हवा प्रवेश करती है उससें खून अछी तरे साफ होता है इसवास्ते लिखते वाचते इत्यादि हजारो काम करते फेफसे बहोत दबे ऐसा टेढा वाका होकर नहीं बैठणा क्योंके अदर हवा जा नहीं सकती इत्यादि ॥

॥ अदमी प्रति हवाकी जरूरी ॥

हरेक अदमी २४ घटेमें सरासरी ४०० धन फीट हवा श्वासोश्वासमें लेता है शरीरके अंदर इसका हिसाब ॥ सात फीट लबा सात फीट चोडा सात फीट उचा एसी एक कोटडीमें जितनी हवा अटे इतनी हवा एक अदमी हमेसा फेफसेमें लेता है श्वासोश्वासके लेती भई हवामें कारबोनिक एसिडगेसका नुकशान करनेवाला पदार्थ हजार भाग साफ हवामें ४ सें १० भाग जितनी है लेकिन् जो हवा शरीरमेंसे बाहिर निकलती है उसके हजार भागमें कारबोनिक एसिडगेसका ४० भाग है अर्थात् अढाई हजार भागमें सो गुणा है इससें सिद्ध भयाके अपणे चोतरफकी हवा अपने ही श्वाससे बिगडती है एक तरफ तो जहरी हवाकूं बनस्पती चुस लेती है दुसरी तरफसें वातावरणकी ताजी हवा

उस हवाकूं खेंचके ले जाती है लेकिन् मकानमें हवाके आणे जानेका रस्ता नहीं हो तो कुदरती समवाय सुलटे सो उलटे हो जाते है एक अदमीकू ७ सें १० फीट चोर जगे अथवा खणकी जरूरी है जो इतनी जगेमें एकसें जादा अदमी बैठे या सोवे उस जगेकी हवा जरूर ही बिगडे हवाके निकास पेसारपर जगेकी विस्तारका आधार हवा जो जादा खुलास आती होय तो जादे अदमी भी थोडी जगेमें रह सकते हैं ऐसा नही होय तो बडी जगेमें भी थोडे अदम्योकों सुखदाई हवा नहीं मिल सकती जो म कान बहोत घरोंके बीचमें आया भया होय तो उसमें उजाला या हवाके वास्ते छपरे भी हवाका निकास पैसार रखवाणेकी जरूरी है अदम्योके मूमेंसें खराब गंध आती है सो अदरसें निकलती खराब गधकी वो है इससें हवाका बिगाड और बहोत अदम्योके एकठे होनेसे जो अदमीका जी घभराता है तब खुली हवामें जानेसें जीवकूं आराम मिलता है ये बातसें अदमी अनुभव कर सकता है के घरकी हवा बिगडी भई है या अछी है बाहरसें आये अदमीकू खराब गध आवे या जी घमरावे तो समझ लेना इस मकानमें हवा अछी नही हे शुद्ध वातावरणकी हवाके हजार भागमें १० भाग कारबोनिक एसि- डगेसका है अगर इस प्रमाणसें बढकर १० भाग हो जाय तो भी बेमारी नही होती इस हिसाबसे एक अथवा इससें जादा बढ जाय तो ऐसें हवावाले मकानमें रहनेसें बहोत नु- कशान होता है ये परिक्षा हवाकी दुरगधीके फेरफारसें मालुम हो सकती है ॥

॥ उदक, अप्प, जल । वाटर ॥

जिंदगीकूं मदतगार दूसरी जरूरीकी वस्तु जल है पाणी प्रवाहीरूपसें ही काम देती है इतनाहीं नहीं खानपानकी दुसरी चीजोंमें भी पाणीका अंश रहा भया है छोटे बाल- कोका इकेले दूधसें पोषण होता है उसमें भी जादे हिस्सा जलका है इस वास्ते उसकूं जादे पाणीकी गरज नहीं होती अपणे शरीरमे रस रक्त मांस वगेरे धातुओंमें भी जलका मुख्य भाग है मनुष्यका शरीर सरासरी वजन ७५ सेर गिणें तो उसमें ५६ सेर आसरे पाणी यानें पतला प्रवाही पदार्थ आया भया है जिस अनाज वनस्पतीसे अपणा शरीर पोपीजता है वो सब पाणीसें ही तइयार होती है मलीनता ये बहोत रोगोंका कारण है सो भी पाणीसें ही धुपके साफ होती है अगर जो जरादेर प्यास लगे बाद जल नहीं मिले तो प्राण तडफडणे लग जाते हैं अर्थात् प्राण भी निकल जाता है पाणी बिगर प्राण केसें जाता है उसकूं जाणनेकी समझ इस तरे है शरीरके सब अवयवोंका पोषण प्रवाही रससे होता है जैसें दरखतकी जडमें डाला भया जल वो रसरूप पेढसें बडी डालोंमें बडे डालोंसें छोटी डालियोंमें इस क्रमसें सब अंगोपांगमें पोंहचके तेजी और हरा पणा रखता है तैसें शरीरमें भी पीया भया जल खुराककू रस रूप बणाकर शरी- रके सब जगे पोंहचाता है जो जल कम मिले तो रस और खून जाडा होणा सरू होता है

आखर जाडा होते २ गति बंध होकर मृत्यु होती है खूनके फिरणेकी कितनीक नलियां बाल जैसी महीन होतीहै तो उसमें जादा व जाडा खून महीन नलियोंमें चक्कर नहीं खा सकता पाणी इतना गुणकारी है वो भी जादा पीणेमें आवे या मलीन बिगडा भया होय तो निश्चे प्राणोका हरणेवाला होता है खराब जलसें बडे २ नुकशान होता है इय बात दुनिया सब पूकारती है परदेशमे कोइ बेमार गिरजावे तो कहते है पाणी लग गया लेकिन् घर बैठे बेमार मलीच पाणीसें हो जाते हैं उसकी और मलीन जल कैसा होता क्या परीक्षा है क्या क्या बेमारी पैदा करता है उसके सुधारणेकी क्या तजवीज है इय बातोंकू नहीं जाणकर रोगोंके मिटाणेका इलाज बैदोंसें कराते २ लाचार हो बैठ जाते हैं लेकिन् उसका मूल कारण समझे बिगर इलाज होता नही इस तरेका अज्ञान फैल रहा है देखो इस दीपकका उजाला सो अंधकार मिटे ॥

॥ पाणीका नमुना ॥

जल खारा मीठा लूणीया हलका भारी मैला और साफ दुरगध या गंधरहित वगैरेका होना जमीनकी तासीरपर है अथवा आस पासकी चीजोंपर आधार है इसपरसे ये भी सिद्ध होता है आकाशके बदलोंमेसें जो जल बरसता है वो सर्वोत्तम उसमे भी आसोजकातीका वो पीणे लायक होता है और जमीनपर गिरे पीछे उस जलमें अनेक पदार्थोंका मेल होनेसें बिगडता है पृथ्वीपरका और आकाशका पाणी तो एकही है लेकिन् दुसरे पदार्थोंके सयोगसें गुणमें तफावत होता है हरसाल हर वखत बहोत जल अनेक स्थलोमे बरसते रहता है और जमीनपर पडा भया जल असख्य नदी नालोंद्वारा दरियावमे जाता है ऐसा है तो भी दरियाव भरके कभी उबलता याने छिलकता नही है उसका कारण ऐसा है के वो दरियावका पाणी सुक्ष्म परमाणु होकर पीछा याने बरालरूपसें आकाशमें जाता है सुक्ष्म हो गया जिस लब्जको बिगाड लोकोनें सूक गया ऐसा बणा लिया है वो बराल बदलके धूअर बरसात और बरफ ओले हो जाते हैं तलाव कूए बावडीका और गिराये जाय जो पाणी इत्यादि सबके परमाणु उडते है सो आकाशमें चढता हैं सखत गरमीकी मोसममें पाणीका सूक्ष्म परमाणू बहोत उचा चढता है इस कारण ही उष्णकालमें नदी नाले जलाशय सूक जाते हैं बरसात किस २ तरे २ होता है इसका बयान श्रीभगवती सूत्रमें है इस जलकी उत्पत्ती स्थिती और नासका जो प्रकार है ऐसा सर्व जड चेतन पदार्थोंका घटत वढत जाणलेणा द्रव्य नित्य है गुण भी नित्य है पर्याय अनित्य है बरसातका कितना एक पाणी नदी और तलावोंमें जाता है कितना एक जल जमीनमें घुसकर जमीनकू गीला करती है थलके उस जलसें कूए वगैरेमें सेजा जाकर उनोंमें भी जलकी चढोतरी होती है जहा ठड बहोत है उहा बरसातका पाणी जमके बरफ हो जाता है गरमीमें गलकर बडी नदियोंके प्रवाहमें बहता है इस तरे बरसात

होणा बराल उचा चढणा ये क्रम ससारमें अनादि अनंत है जीव विचार प्रकरणमें हवा-के अनेक भेद पाणीके अनेक भेद लिखा है उसमें पाणीके मुख्य दो भेद हैं १ अंतरिक्ष जल १ भूमी जल २ आकाशमेंसें जल जो बरसता है उसकूं अधर झेल लेना वो तो अंतरिक्ष जल है जमीनमे पडे पीछे नदी कूआ तलावसे जो मिले सो भूमी जल है आ-काशमें भी कितनेक मलीन पदार्थ फिरता है उसके सयोगसें आकाशके पाणीमे कुछ २ विकार होता है तो भी जमीनपर पडे जलसें अछा होता है आसोज कातीका जल पह-लेके बरसादसे जादा अच्छा होता है इसवास्ते उपाशकदशा सूत्रमें आनंद श्रावक वगेरोंनें आसोजकातीका अंतरीक्ष जल जन्मभर पीणारख्का है ऐसा लिखा है फेर मोसम विगरका बरसाभया पाणी जेसें पोसमाहका वरसाभया अंतरीक्ष जलभी नुकशान करताहै तेसें मोस-मकाभी वरसा नुकशानकारी है जेसें अश्लेषा नक्षत्रका वरसाभया जल वहोत हानी कर्ता है नालक वचन है वैदांघर वधावणा अश्लेषावूठां ॥ आकाशमेंसें जो गडे याने ओले गिरते है उसका जल तो अमृत जैसा मीठा और अच्छा है लेकिन् वो बधाभया खाणा बंधीवर फकाखाणा जैनसूत्रोंमें अभक्ष लिखा है अभक्ष सूत्रकारोंने जो जो वस्तुकूं लिखीहै वो सब रोगकर्ता समज लेणा इनोंका गलाभया जल केइयक रोगोमें अच्छा है वरसा-तकी धाराका जल जाडेकपडेकी झोली बांधके पात्रमे लिया जाय या साफ आगोरके टाकेका जल ये सब जल उपयोगी है भूमीजलका दो प्रकार है जांगल १ और आनूप २ जो मुल्क थोडे जलवाला थोडे वृक्षवाला पित्त तथा खूनके बिगाडके उपद्रव वाला होय वो जांगल देश कहलाता है उसकाजलसो जांगल जल तेसें जो मुल्क वहोत जलवाला वहोत वृक्षोंवाला और वायु तथा कफके उपद्रववाला होय उसका जो जल सो आनूप जल कहलाता है जगलका जल स्वादमें खारा मलभला पाचन करनेमें हलका पथ्य और वहोत विकारोंकू मिटाता है अनूपका जल मीठा और भारी होणेसे सरदी तथा कफका विकार पेदा करता है इसके सिवाय साधारण देशका जल जिसमें नहीं जादा जल हमेसां पडा रहता होय और न वहोत दरखतोंका झूड होय याने दोनुं सरासरी होय वो देश हेद्राबाद नागपुर अमरावती खानदेश आदि समझना इनोका जल और जुदे २ जलाश-योंके भेद गुण दोष नीचे मुजब ॥ नदीका जल पडे जलसे वहोत अछा वहोतसी वडी नदियोंका जल जमीनके तलेमुजब अछे और बुरे स्वाद मट्टीके तासीर मुजब होता है बरसातकी मोसममे नदीके जलमे धूल कचरा और गदकी वहकर एकठी होती है उस वखत वो जल पीणेलायक नहीं होता दो च्यार दिन पडे रखनेसें साफ नींतरकर पीणेके लायक होताहै झाडीमे वहते नदी नाले देखनेमें तो साफ दिखते है और वो जल पीणेमें भी मीठा लगता है लेकिन् अनेक दरखतोंकी जडसें लगकर वहणेसे वो जल महा खराब होता है उस जलसें बुखारकी पेदास होती है और ऐसी हवामे रहनेसें भी वहोत

नुकशान होता है जैसे शिखरगिरी पार्श्वनाथ पहाड आबू गिरनार आदि पहाडोंके नदी नालोंका जल पीनेवाले बुखार ताप तिल्ली वगेरे रोगोसें दुखी रहते है यही हाल बगालेके पास अडंग देश रायपुर वगेरे झाडीका जल समझना ऐसे जलकू तीन उकालेसें शेरका तीन पाव रखकर गरम कर पीछे ठडा कर जाडे वस्त्रसे छाण कर पीना केइ यक नदी छोटी २ होती है जिसका जल धीमें २ चलता है फेर उस पर मनुष्योंकी और जानवरोंकी गदकी मैल चला आता है (जैसें) दक्षण हैद्राबादकी मूसा नदी एसोंका जल पीणे लायक नहीं नल होनेके पहले कलकत्तेकी गगा नदीका जल भी बहोत नुकशान करता था अद-म्योका स्नान मैल आदि गधकीसे, दुसरे बगालेमें जलदागकी प्रथासें मुडदेकू गगामे ही डाल देते थे उस गधसे भी पाणी बहोत बिगड जाता था नलके पाणीमें कबजीयत देखनेमे आती है मुबई कलकत्ता वगेरे शहरोमें, बहोतसे शहर तथा गामडोमें पाणीकी तगबीके लिये कूवा वगेरे जलाशय नहीं होनेके सबब एसी गधे जलवाली नदियोसें नि-र्वाह करणा पडता है इस कारण सब वस्तीवालोंके तन दुरस्तीमें बिगाड होता है खुल्ली साफ हवामें महनत मजुरी कर शरीरकू अछी तरे कसरत देनेवाले गांमडोके वासिंदोकू बुखार सताता है उसका असल मतलब गदा खराब पाणी ही समझना जिस जगे जल-का एक ही स्थल तलाब वगेरे होता है तब लोक उसीमें स्नान करते हैं मैले कपडे धोते है जानवर नाहते है और वो ही जल पीते हैं इससें बहोत नुकशान होता है इसवास्ते हमारे जैनी श्रावक विमल मत्री वस्तुपाल तेजपालादिकोंनें प्रजाहितार्थ हजारों कूआ बावडी पुष्करणीयां करवाई ऐसा लिखा है जेसलमेरु पास लोद्रवकुड रामदेहरे पास उ-दयकुड अजमेरु पास पुष्करकुड ऐसे तीन अखूट जल पुष्करणी राजा उदाई सींधु देश-वालेके पाणीकी तगी फोजमें होणेसे पद्मावती देवीने तीन जलाशय बणाये इत्यादि, राजा अशोक चद्रादिकोंनें दरखत और सडक जलके नहरे अपने चपा वगेरे जलके तग स्थलमें बणवाणा सरू कियाथा तवारीकोंसे साबित है, चाहिये सरकार राजा माहाराजा शेठ साहुकार अथवा सामान्य प्रजा भी मिलके जलकी तगी मिटानेका जलके सुधारणेका प्रयत्न करे अगर जो पाणी पीनेकी एक ही नदी होय तो ऊपरके तरफका जल पीणेकू लेणा वस्तीके निकासकी तरफ अर्थात् नीचेकी तरफ स्नान कपडा धोणा जानवरोंकू पाणी पिलाणा गंजरदम जल साफ रहता है उस वखत जल भरवा लेना लोकोंके सुखके वास्ते सरकारकू चहिये जल स्थानपर पहरा बिठलाणा और न्हाणा धोणा ढोरोकू धोणा मरे आदमीकी जलाई भई राख उस जलोंमें डालतेकू बध करवाणा जोरसे जो नदी बहोत पाणीकी बहती है उसका मैल कचरा तले बैठ जाता है या किनारे जा लगता है लेकिन जो नदी छोटी धीरे चलणेवाली तथा तलाब कूआ वगेरोसें बहती जोरकी नदीका पाणी अच्छा होता है इस पाणीके सुधारणेकू जैनियोंके सूत्र सिद्धातमें

जलमे घुसके स्नान करणा दांतण करणा वस्त्र धोणा मुरदेकी रास तथा हाड (फूल) डालकर जलकू खराब कर प्राणियोंकू रोगी करणा धर्म कायदेमें सखत मनाई है अस्थि यामुरदेकी राखसें हवाभी खराब न होणे पावै इसस्वास्ते उनोंकों बीचमें देकर स्तूप करादेणा (थडाछतरी) की जैनियोंकी परंपरा है जबसे भरत चक्रीनें कैलास पहाडपर सोभायोंपर स्तूप कराया तबसें, कूवेका जल पाणीका खारा मीठापणा जमीनके स्वाद तासीरपरहे गहरे कूवेका पाणी छीलर कूवेसे (नजीक पाणी वालेंसे) अच्छा होता है जेसे बीकानेरमे साठ पुरुषके कूवेका निहायत ऊमदा जल है और साफ है कूवेके आसपासकी जमीन पोली होती है और उसमे कपडेके धोया मैलका पाणी स्नानका बरसादका गंधा पाणी भरता है तो वो जल बिगडता है लेकिन साठ पुरुषके कूवेतक पोहचणा नहीं सभवता जिन कूओंपर दरखतोंके झंड़झम रहें होय उसमें पत्ते गिरते रहते हैं सूरजकी गरमी पोंहच नहीं सकती ऐसे कूवेका जल अकसर विगड जाताहै इसतरे जो कूये नहीं वाये जाते याने हमेसा पाणी नहीं निकाले जाता ऐसेका जल खराब होता है और जो कूआ मजबूत बधाभया होय न्हाणे धोणेके पाणीका निकास दूर जाता होय आसपास दरखत या गलीचपणा नही होय जिसकी गार वेरवेर निकाली जावै ऐसे कूवेका तथा बहोत गेहरे कूवेका खा रासकर रहित जमीनके कूवेका पाणी साफ और गुणकारी होता है लेकिन् आसपासकी जमीनसे आयाभया गदा कचरा उस जलमें न आता होय टांका (कूड) का पाणी, टांकेका पाणी बरसातके जलसे मिलता होता है लेकिन् छत आकासीका पाणी नलसे जो टांकेमें लिये जाता है उस छतपर धूल कचरा जांनवरोंकी बीट कूत्तेबीलीकी विष्टा वगेरे गलीच पदार्थोंसें पाणीमे मैल होकर बिगाड होता है इस बातोका ख्याल रखना दुरस्तीका जल टांकेका अछा है लेकिन ये जल हमेशा बध रहणेसें बिगडता है इस्वास्ते हमेसां पीणे लायक नहीं है टांकेका जल स्वादमे मीठा और थडा होता है पचणेमें भारी है बहोतसे जलका फायदा कुफायदा नही समझणेवाले लोक बहोत बरसोंतक टांकेकू धोकर साफ नही करते पाणीकूं तगीसे खरचते है पीछले चोमासेके रहे जलमें दुसरा जल फेरले लेते है इस बातोंका खयाल रखणा एक वरसातसें छपरा छत मोरी वगेरे धुपके साफ भये बाद जल लेना (जीवाणी) जलके जीवोकू छाणके कूवेके बाहर कूडी वगेरेमे डलवाणा आखिर यह दया पळणी मुसकिल है क्योंके कूडीमे थोडा जल होय तो गरमीसे सूकके मरते है जादा होय तो जानवर पी जाते है बहोत दिन पडे रहे तो गधकीके डरसे कूवेका मालक धोकर जमीनपर फेक देता है जीवाणी लेजाणेवाले रस्तेमें गिरा देते हैं एक जलके जीवको दुसरे कूवेके जलमें गेरणेसें दोनु मर जाते हैं बस विचारके देखा तों आखर हिंसाका बदला देना होगा कोई उपाय संसारवासमें इसका नहीं है इसपर ये बात है ढुहा गोतमका प्रश्न है वीर भगवा-

नसे, जीवे जीव आहार विना जीव जीवे नहीं भगवत कहो विचार दया धर्म किसविधपलै १ उत्तर भगवानका (दुहा) जीवे जीव आहार जयणासें वर तो सदा गौतम सुणो विचार टले जितनोही टालिये २ करुणावतपणा है वो ही दया धर्मपणा हे नलका पाणी, नदियोंका या तलावोंमेंसें छणणेके वास्ते गहरे कूवेमे लिये जाता है उहांसें छाणकर (फील्टर) होकर नलमें आता है साफ कीये जाता हे नदीके जलसें ये अच्छा हे बादस्याही अमल राजोंकें अमलदारीमे नदीके इधर क्यारे बणाये जातेथे उसमेंसेजा आकर जो जल जमा होताथा सो अछा होताथा घरोमे नल किसीराज वियोनें लाख वर्षमें तो लगाये नही आगेकी क्या खवर विना प्रमाण लिख नही सकते सहरोके बाह्रतो दूर २ से जलकी नेहरे राजोनें वंधवाईथी यहतो इतिहास है और किसी राजवीने लगाया होगा नल तो आपकेही घरमें लेकिन प्रजाके नही, आगे पाणीकू दूर पोंहचाणेकूं चमडेके वने पिचकारे वगैरे यत्र तो प्रचलितथे नलके पाणीसें आदमी गोरा और वृथा पुष्ट थोडे दिनमें दिखणे लगता है अदर सत्व कम होता है लेकिन जिस २ जगेके जलकी लागसे हजारो आलम मरतेथे वो तो सुधारा हो गया मुवई कलकत्ते वगेरे वडे सहरोमें नीचै गटरकी गंधी सरदीसें बुखार (प्लेग) दुष्ट विस्फोटक रोग प्रजाकू भारत वर्षमे वहोत दिककर रख्का है ये सर्व महिमा दुष्ट गध गटर मोरियोकी हवा और तरीसें चल रही है । स । विक्रमके तेपनसें मुंवईसे सरूभया सात वर्ष भया अगर उधम आदि पांचो समवाय सुलटे होकर वर्ते जरूर मिटेगा, जगल खुसक मुलकमें ये रोग होणा नहीं पांचो समवाय सीधे हें जहांतक, तलावका, पाणी कितनेक तलाव तो तलसीके जलका होता है जिसके नीचे या आसपास तलावके पहाडका झरणा होता है उसका तो अखूट जल होता हे कितनेक वरसाती जलका होता हे इसमेंभी आसपासके गधे कचरे वगेरे जलके पूरमे वहके आते हे दोय च्यार दिनवादनीचे जमता है तब जल साफ होता हे लेकिन जिस तलावमें लोक नदीका हाल लिखा है वैसेही नाह्णा धोणा वगैरे होता होय तो वो जल पीणेकू नही लेणा तलावका पाणी मीठा भारी रुचिकर त्रिदोपहर और सरदी करता है लेकिन मैला जल वहोत वैमारियोंको पैदा करता हे पाणी विगडणेके कारण नदी तलाव का एक हे नदीका जल वहता है तलावका वधा भया है इस्वास्ते नदीसें तलावके पाणीसे जादा विगाड होणा सभव है, ऋतुमुजब पाणी का उपयोग लिखते हे, सो वणआणा राजा महा राजोंसेंभी दुस्वारहे लेकिन जाणपणा होणा येभी वडी वात हे, हेमत ऋतु तथा । शिशिर ऋतुमें सरोवर तलावका जल पीणा अछा हे वसत और ग्रीष्म ऋतुमे कूवेका वावडीका तथा पहाडके झरणेका पाणी अछा है वर्षाऋतुमें आकाशसें गिरता झेलाभया जल अथवा कूवेका जल अछा हे सरद ऋतुमें नदीका जल अथवा जिस जलपर दिनभर तो सूर्यकी किरण पडती होय रातकू चादकी चादनी

एसा जलपथ्य है ये जल अंतरीक्ष जल जेसागुणकारी है रसायण रूप है ताकतवर है पवित्र बडा हलका अमृत जैसा है एक प्राचीन आचार्यनें एसाभी लिखा है पोषमें सरोवरका माघमे तलावका फागुनमे कूएका चेत्रमें पहाडोके कुंडका वैशाखमे झरणेका जेठमे जमीनकूं चीरडाले एसे जोरसे वहते भये नालेका, या नदीका अशाढमे कूवेका श्रावणमे अंतरीक्षजल भादवेमेकूएका आसोजमे पहाडके कुडोका काती मिगसरमे सबजलाशयका जल पीणे लायक है लक्ष्मीवल्लभ जैन निघंटसे पूर्वोक्त विवरण लिखा है.

॥ खराब जलसे प्रगट बेमारी ॥

खराब जलसें अनेक रोग होते है उसमें मुख्य २ रोग लिखते है, कितनेक रोग जीवोंसे याने कृमीसें पैदा होते हैं लेकिन उन जीवोंके पैदासकी जगे असलमे खराब जल है, जमीनके संयोगसे पाणीमे खार मिलणेसें पाणीमे मिठास और पाचनशक्ति बढती है लेकिन जो खारका अंस जादा होता है तो येही जल कितनेक रोगोंका कारण बण जाता है जलमें वनस्पतीका सडना और मरे जानवरोंके दुरगंधित परमाणु जब मिलता है तो बहोतही खराबी करता है बुखारठंढ देके (ज्वर) तेसें विषमज्वर तेसें मेलेरिया नाम हवासें पैदा होणेवाले तावका कारण खराब पाणी है पाणीकेभिगाणेसें हवा बिगडती है हवा बिगडणेसें पाचनशक्ति मंद पडती है तब बुखार आता है जगल देशका जल लगणेसें जो रोग होता है सो पाणी लगे कहलाता है, दस्त मरोडा ॥ २ ॥ ये दस्त मरोडेकी बेमारी खराब पाणीसें पैदा होती है क्यौंके ये रोग चोमासेमे जादा पैदा होता है मतलबवरसातके जलमे मैला कचरा वहकर आय मिलता है एसा जल पीणेसे अतिसारकी बेमारी पैदा होती है (३) कबजीयत । अजीर्ण भारीअन्न खराब जलसें अजीर्ण अथवा कबजियतका रोग होताहे (४) कृमि जंतु खराब पाणीसें शरीरके अंदर तेसें बाहर कृमियोका उपद्रव होता है साफ पाणी चमडीमे पैदा होणेवाले कृमियोंकों मिटाता है गधेजलसे पैदास होती है (नारू) नारूके दरदसें बहोत लोक कष्ट पाकर मरजातेहे ये नारू खराब जलके स्पर्शसें अथवा बिगरछाणे या गंधेजलके पीणेसे होता है (६) चमडीका रोग दाद खाज गडगुमड वगेरे खराब जलसें होता है कृमिनाशक दवाओंसे ये रोग मिटता है इसरोगमे जीव खराब जलसें पैदा होता है ये अनुभव है (७) हैजा [कोलेरा] कितनेक आचार्य लिखते है विशूचिका रोग अजीर्णसें होता है और कितनेक कहते हैं पाणी तथा हवाके अदरके जहरी जानवरोंसें होता है इसमें जादा फरक नहीं है कारण अजीर्णसे कृमि कृमीसें अजीर्ण होता है [८] पथरी [अस्मरी] जलके विकारसें पैदा होती है लोकीकका एसा कहणा है धूल ककर खाणेसे पथरी बध जाती है ये तदन झूठ है असलमें जादा खारवाला जल पीणेसे पथरी प्रायें होती है येबात माधवाचारीके भी देखणेमें नही आई दूसरे तो माधवकूं सर्वोपरी

निदान समझते हैं प्राचीन जैन शोमाचार्यने लिखी सो वात डाक्तर भी मांनते है इत्यादि प्रत्यक्ष अनुभविक पाणीके रोग मेंनें लिखा है सो यथार्थ है नमाने सो पतवाण लेवे ॥

॥ जलकी परिक्षा साफ करणेकी विधि ॥

साफ जल रंग खसवो स्वाद रहित तथा निर्मल और पारदर्शक होता है याने आर पार साफ होता है सेवाल तथा वनस्पतीके योगसें जल हरा रग पकडता है और प्राणियोंके शरीरका कोई भी द्रव्य जलमें मिला भया होता है तव जल पीलास पकडता है जलकी परिक्षा बहोत तरे हो सकती है जिसमें सहज परीक्षा इस तरेसें है साफ काचके सुपेद प्याले पारदर्शकमें जल भरके वो प्याला उजालेमें धरणेसें उसका निज रग अथवा मैलापणा मालम हो सकता है पाणीमें दुरगंध होय वो पीणेसें श्वासूधनेसें एकदम उसकी खवर पडणी मुसकिल है लेकिन उसकू उकालकर उसकी खसवो सूंघी जावे तो उसके गधकी मालम हो सकती है यह तो प्राचीन जैनीयोकी चलती परीक्षा है डाक्टरी परीक्षा लिखते हैं पाणीकू एक शीसीमें भरकर पीछे खूब हिलायकर वो पाणी सूघणा जलमें पोटास डालणेसे जो वो (गध) आवे तो समझना जल अछा नहीं है जलमें दो पदार्थोंका भेल है एक तरेका पदार्थ पिघलके पाणीके सग मिला भया होता है दुसरी तरेका पदार्थ पाणीसें अलग होजानेवाला लेकिन जलमें मिला भया होता है प्यालेमें जल भरके थोडी देर स्थिर रखनेसें जो नीचै बैठता है तो समझ लेणा इस जलमें दुसरी वस्तुका भेल है पाणीमें खार वगेरे पदार्थ कितनाक है वो जाननेके वास्ते थोडा जल तोलकर वरतणमें जलाणा पाणी सव जलेवाद तपेलीकेतले जो खार वगेरे पदार्थ रहे उसकू तोलनेसें मालम होगा की इतने जलमें इतना खारका भाग है एक ग्यालन जलमें खार वगेरे पदार्थ १५ रत्ती होय उहांतक वो जल पीणे लायक है खार ज्यों कम होय सो जल अछा लेकिन खार विगरका अछा जल भी स्वाद नहीं देता खार मिला जल पीणेमें मीठा और पाचन शक्तिकू मदत देता है खार जादा होय तो जल खारा लगता है और नुकशान भी करता है पाणीकू साफ करने और अछा करनेका अनेक उपाय है सहज उपाय जैनोंकी प्रसिद्ध क्रिया है ॥ पाणीकू शेरका तीन पाव उकालके मट्टीके वरतणमें ठारके पीणा ये जलकू कल्पसूत्रमें शुद्ध लिखा है साफ है गुणकारी है और हलका है जलमें फिटकडी और निर्मली वाटके डालनेसें पाणीके मैलकू तले विठलाती है जल छाणे विगर कभी पीणा नहीं नातणा जाडे मजवूत वस्त्रका होना, अथ डाकतरी क्रिया॥ एक मटकीके नीचे महीन छेद करना उसमें आधेतक वेलू तथा कोयलेका भूका भरना उसपर दुसरा मटका जिसके तले छेदकर उसमें डोरा पोकर लटका देना उसमें जल भरणा तीसरा खाली मटका रेती कोयलेवालेके नीचे धरना उसमें टपक २ जो जल आवे वो पीणे लायक होता है स्टेसनोंपर ऐसा देखा है ॥

॥ पाणीका दवा मुजब वर्त्ताव ॥

जैसें खराब जल कितनीक वैमारियां पैदा करता है तैसें कितनेक रोगोंकूं मिटानेमें दवाका काम करता है जो जो वेमारी अशुद्ध जलसें पैदा होती है वो शुद्ध जलसे होती नही इलाजके तरीके गरम जल तथा ठंडा जल दोनुं काम देता है सो इस मुजब १ शीतोपचार ठंडे जलका गुण, रक्त स्तंभक दाह शामक और संकोचकारक होणेसें खून गिरतेकू बंध करता है इसवास्ते इतने रोगोंकों फायदे बंद है १ खूनकागिरणा नकसीर वहती है तब तालवेपर ठंडा जल डालनेसें बंध होता है ऐसे बंध नहीं होय तो नाकमें छावके या पिचकारी मारणेसें उसी वखत खून बंध होता है जखमके खूनकू ठंढे पाणीका पाटा एकदम बंध करता है हाथमें चकु वगेरे कोई हथियार लगा होय तो ठडे जलका पाटा बांधणेका रिवाज है चोट वगेरे लगके खून नहीं निकला और लील जमणेका संभव है जलका भीगा वस्त्र बांधे रखनेसें तुरत खून विखरके दरद मिटता है तरवार वगेरेका जादा जखमपर हरदम गीला पाटा रखनेसें जलदी आराम होता है सुवावड कुसुवावड यानें अधूरा गिरणा जब खून गिरणासरू होता है तब गर्भाशयपर ठंडा पाणी डालनेसें अथवा उसमें बरफका टुकडा धरणेसें खून गिरता बंध होजाता है पेडू साथल याने जांघ उत्पत्ति अवयवपर ठंडा पाणीका भीगा वस्त्र धरनेसें फायदा होता है लेकिन गर्भपातके चिन्ह मालम पडते ही ये इलाज करना मासिक ऋतु धर्मका खून अगर जादा जाने लगे तब भी इसीतरे ठंडे पाणीके इलाजसें मिटता है मूर्छा मृगी हिस्टिरिया वगेरे तथा मेसमेरिजमसें वेसुद्धी वगेरे रोगादिकोंमें आंख तथा शिरपर ठंडा पाणी छांटणेसें जलदी जागृत अवस्था होती है, २ संकोचन ॥ ठंडा जल स्नायुओंकों संकुडाता है इस वास्ते आंडोमें सूजन हो जावे अथवा-आंतरे उतरकर बहोत दरद करे तब वृषणपर ठंडे पाणीका भीगा वस्त्र धरणा अथवा बरफ धरणा जिस्सें आंतरे सकुडा कर चढ जाता है प्रदर और तोके धुपणी सुपेद पाणी गिरनेका रोग होता है जिस्से सुपेद लाल तथा मिश्र रंगका खून गिरता है वो ठंडा पाणीके छांटनेसें या पिचकारीसें बंध हो जाता है इसतरे औरतोका शरीर नाताकत बालककी कांच निकलती है ये दोनू ठंडे पाणीकी धार देनेसें संकुडा कर अंदर चली जाती है शरीरका आवाज बैठते ऊठते औरतोके मूत्र मार्गमें अवाज भया करती है वो भी ठंडा पाणी उसपर छाटणेसें फायदा होता है पुरुषके वीर्य गिरणे अथवा स्वप्न दोष होणा तब रातकू सूती वखत पेडू तथा कमरपर जल छिडकणेसें वीर्यकी गरमी कम होती है वीर्यकू वहनेवाली नसो मजबूत और संकुडाती है ऐसा होनेसे कितनेक दरजे फायदा पहुचता है ३ दाह शमन । ठंडा जल शरीरके अंदरकी और बाहरके दाहकी शांति कर्त्ता है आंखकी गरमी जैसें खूनसें आंख लाल हो गई होय तो मूमें ठंडा पाणी भर लेना ऊपरसें ठंडा पाणी छांटणा मिट जाती

है सखत ताप बुखार शिरपर ठंडा पाणीका वस्त्र धरणा या बरफ जिससें मगजमें बुखारकी गरमी नही चढसके क्योके बुखारकी गरमी मगजपर चढनेसें तुरत प्राण निकल जाता है (उष्णोपचार) गरम इलाज,वादीपर कफके रोगोंमें गरम पाणी वहोत फायदे वद है जैसें सेक वफारा नास पिचकारी कुरले जलमें बैठणा स्नान धोणा वगेरे शेक शरीरपर गांठ गड गूमड सोजा इसपर लूपरी(पोटिस) बांधनेकी रिवाज हैं लेकिन गरम जलका सेक पोटिस बांधनेसे जादा फायदे वद है होतेभये दरदमें गरम जलका सेक दरदकू दबा देता है और जोर करे पीछे पीडाकू कमकर देता है और जलदी पकाता है पेटमें दरद गुरदेकावरम सोजा पांसली तथा छातीमे चमक शूल जम गया खून वगेरे दरदोमें गरम पाणीका सेक फायदा करता है गरम जलमें फुलालीनका कपडा या ऊनका गरम कपडा नीचोकर दरदकी जगोंपर वेर २ धरणेसें वाफका सेक लगता है अथवा अगीठीपर जलकी तपेली रखकर ऊपर चालणी रखणी उसपर गरम कपडा धरकर ऊपर थाली ढक देना इसतरे पाणीकी वराल कपडेमें आती है उस कपडेसें किया भया सेक वहोत फायदा करता है योनि तथा इंद्रीका पकणा आंडोकी सूजन ये भी गरम पाणीके शेकसे आराम होता है पेडूपर गरम जलके सेक करनेसे पैसाबका खुलासा होता है (नास)गरम पाणीकी नास अथवा वफारेसें पसीना आकर शरीर हलका पडता है शरद गरमीका तप शरदी शिरका दरद मिट जाता है शिरके दरदमें गरम जलकी नास फायदा देती है सखत बध कुष्ठके पुराणे दरदमें जब किसी भी दवासें दस्त नहीं आवे तो गरम पाणीकी पिचकारीसें तुरत आता है डाकदर गरम जलमें एरंडीका तेल भी मिलाते हैं (कुरले) गरम पाणीके करनेसें मूंके फाले मू आजाणा दांतकी पीडा दांत निकलाये वाद जो तकलीप हो जाती है सो सब मिट जाती है गरम जलमें बैठनेसे हिचकी धनुर्वात जो कबाणकी तरे अदमीकू करदेती है सो, मूत्रकृछ वगेरे बहोतसे दरदोमे गरम जलमे सहसके ऐसेमें कमर बूड बिठाणा जिस औरतका ऋतु धर्म अटके और दरदकरके आता होय उस स्त्रीको गोडेतक गरम जलमे खडी रखणी घटे भर में आराम होता है अब हमने जो जो बेमारिया पसीने निकालके लोकोकू आराम किये है गरम पाणीसे सो लिखते है, उपदंश(गरमी) लिंगेंद्रीपर गरम जलकी धारा देना वायके रोगोमे पसीना गरम पाणीसे देना स्नान भी करवाना सन्निपात और आमके ज्वरमे पसीना निकालना जीर्णज्वरमे पसीना निकालना सूजाकसे गठिया होय जिसमे पसीना निकालना वायके अजीर्णमे पसीना निकालना खासीमे हिचकीमे श्वासमे आफरेमे कफके रोगमे सर्व वादीके रोगोमे उलटीमे स्नान कराना उन्मादरोग पागल पणेमे गरम जलसे जलकी धारा देता भया घटे मस्तक स्नान कराना उरू स्तंभमें पसीना निकालना वद रोगमे पावोमे हाथोमे रग उतरके फूल जाये या कीडीनगरा छी

पद्रोगमे विद्रधी अंदर पेटमे या बाहर पकनेवाली गांठमे मस्तक रोगमे कर्ण रोगमे नेत्र रोगमे नाककेरोगमे मुख रोगमे सूजनके रोगमे पथरीके रोगमे शूलके रोगमे पसीना गरम जलसे निकालना औरतके जापेके रोगमे नरम थोडा पसीना निकालना विष रोगमे जलकी धारा और स्नान कराना जिस २ रोगोमे वायूकी और कफकी प्रबलता है वो रोग ऊपर लिखे सो सब आराम होते है मैने अनुभव किया है सो ही लिखा है ये समझ रोगोकी जो निदान मैने आगे लिखा है उस प्रकार रोगोकी परिक्षा कर लेना अथ पसीना निकालनेकी विधि लिखते हैं, पहली तेल या घीमे सींधा निमक मिलाकर घटे भर शरीर मसलाणा फेर एकांत कोठेमे हवा न आतीहोय जहां बैठ कबल या रजाइ जिस्से शरीर सब ढाककर.संकडे मूके घडेमे खूब उकाला भया जल झबोलके अंदर धरवा देना पसीना पूछके साफ करते जाणा जब बाफ बध हो जाय तब कपडे पहन लेना पसीना सूके बाद फेर बाहर आणा पूर्वोक्त रोगी बहोत निर्बल होय तो पसीना थोडा देना या सर्वथा देना ही नहीं पित्तसे उठे रोगोमे पसीना देना नहीं इसीतरे वाय कफके सर्व रोगोमे शेरका तीन पाव रहा जल पथ्य है अति सारके रोगमे दशांस सोले शेरका शेर या सो शेरका शेर औटाया जल सो दवाकी एक दवा है जल उकालती वखत वाय हरण कर्त्ता कफ हरण कर्त्ता रोगोके अनुसार दवाये भी मिलाते हैं पसीने निकालनेवाले जलमे दवायोका असर बाफसे अदर पोहचके गुण करता है।

॥ किरण दूसरी २ खुराककी जरूरी ॥

अदमीका शरीर एक जीवित चलता सांचा है एनजिनका दृष्टांत शरीर ऊपर घटता है जिसतरे अजन चल शके इसवास्ते वलीता हवा और पाणीकी जरूरत पडती है इसतरे शरीरके चलनेवास्ते खुराक पाणी और हवाकी जरूरत है इजनकू हांकनेवाला नोकर पगार बध एनजीनीयर चाहिये तैसें अदमीके शरीरमें कर्म वद्ध स्वभाव शक्ति सिद्ध जीव इस शरीरका चलानेवाला है इसवास्ते बाहरकी गतीकी उसकू जरूरत है नहीं बिगडे कलोंको कारीगर सुधारते है तैसे वैद्य डाकटर इस शरीर सचेके सुधारनेवाले है ये स्वाभाविक गती कायम रखनेकू उसकू खुराक हवा पाणीकी जरूरत पडती है शरीर उसके जन्मके सग ही ओछे अधिक प्रमाणमें कोईकू कोइ तरे हमेस क्रिया करताही रहता है जैसे एनजीन उसकी क्रियामें धूआ और राख वगेरे निकम्मे पदार्थकू बाहिर फेंक देता है तैसे शरीरभी चमडी फेफसा मलाशय मूत्राशय द्वारा निरर्थक पदार्थ पसीना मल तथा पैसाब रूपको बाहर फेक देता है ऐनजीनके अदर वलीता जल और हवा जोकी ऐनजीनसे पूरा होता है तो भी उस अजनसें अलग रहता है लेकिन अदमी जिस खुराक हवा पाणीकू शरीरके अदर लेता है वो चीजों शरीरमे क्षय पाणेके पहले उस शरीरके सग मिल जाता है और उससे उस वस्तुओंका पोषण कारक भाग शरीरमे मिलता

है और निरर्थक हिस्सा बाहिर निकलता है मल मूत्र तथा पसीनेके रूपमे शरीरमेंसे जाता है वो शरीरका क्षय कहलाता है इय हमेसां होता है और इसक्षयका वदला खुराक हवा और पाणीसे पूरा होता है अदमी जो महनतका काम जादा करता है त्यो जादा घसारा लगता है और जो जादा क्षय होगा तो पोपण कारक पदार्थ जादा चहियेगा चलने वोलणेमे वांचणेमें और आंखमटकारणे जेसी क्रियातकमें शरीरके परमाणु समय २ में खिरता है और उसकी जगे नये परमाणु आते जाते हैं इसपर विद्वानोने एसी भी गिणती करी है सात २ वर्षसें अपणे शरीरका सावत खोखा नयाही वंधता है मतलव आगे जो सातवर्ष पहिले अपणे शरीरमे जो हाड मांस खून वगेरे था सो सव खिरते २ खिरजाता है और क्रम २ से नये २ रजकणोसें शरीरकुं दुसरे परमाणुओंसे नयाही वणा देता है सापकू कांचली गिराते तो आदमी देखते हैं लेकिन् वो तो मुदतपर छोडता है। अदमी और सव तरेकी जीवायोनि समय २ में कांचली गिराते हैं और नई धारण करते है इसवास्ते जैनसूत्रकार शरीरकू पुद्गल कहते हैं शरीरमेंसें हमेस एक वडाजथा नासपाते जाता है नख तथा वाल वढता है और गिरते भये अपणे नजरोंसे देखते हैं लेकिन् लाखों सूक्ष्मरजकणे शरीरमेंसे उडते है सो अपणेकु दिखता नहीं शरीरमें लाखों छेद मल मूत्र और श्वासवगेरोंके दुसरे द्वारोसे शरीरका भाग विनास होते जाता है समय २ में जो परमाणु शरीरमेसें खिरते जाते है अगर भरती नही होय तो सूक २ कर प्राणी मरजाते क्षय राजरोग इसीका नाम है उत्पत्ति स्थिती और नाश ये तीनों सृष्टिका जो नित्यनियम है सो क्रम अपणे शरीरमे हमेसा चलता है ऐसा देखकर सव सृष्टिका प्रवाह इसीतरे नित्यानित्य समझ लेणा शरीरके पुराणे पडे भाग वुड्ढे अदमीकीतरे अपणा २ काम नहीं कर सकते वो विखरकर उसकी जगे नये पर्याय लग जाणा ये कुदरती स्वभाव है उस नियमकू चलानेवाला क्षुधा वेदनी कर्म याने भूख नामका हलकारा टेमोटेम शरीरके भागोकू भरने वास्ते अन्न पान मांग लेता है जो मागणीका अनादर किया जावे या देरीसे दिया जावे तो उसकी मदतगार अशाता नाम वेदनी कर्म वो जोर करके नाश अथवा जादा परमाणुओंका विखरना इसकू कोई रोक नहीं सकता अर्थात् वेमारीका हो जाणा ये उस कर्मकी सावूती मिल जाती है क्योंके जितना जलदी शरीरके परमाणु नास होते हैं इतने जलदी रोगके कारण वो परमाणु पीछे नहीं भरती होते जैसे चराकके रोसनी लायक तैल नहीं भरणेमे आता है तो चराक वुझ जाता है इस तरे शरीरकी घसाई नुकशानी भरनेके वास्ते कुछ वाहरके तत्वोकी जरूरी पडती है उसका नाम खुराक है खुराक जरूरी वस्तु है तो भी उसका वजन जाती और खाणेवालेकी प्रकृतीका विचार करेविगर खाणेमे आवे तो वो ही खुराक अनेक रोगोंकों पैदा कर देता है खुराकका वजन सवोके लिये एक नियम नहीं हो सकता

शरीरका कद यथा प्रकृती तथा कसरत मेहनतपर खुराकका प्रमाण रहता है अदमी अपणे २ खुराकका प्रमाण आपही करसकता हे इसवातका निश्चय वैद्य याडाकदर नहीं बांध सकते अपनी बुद्धि द्वारा निश्चयकर खुराकका अनुमांन बांधकर उसी प्रमाण मुजब हमेसां खाना पीणा करणा चाहिये हमेसां कमसे कम ४० रुपियेभर खुराक पोपनकूं जरूरही चहिये जादेमे जादा सेर या सवासेर खुराक दुरस्त है लेकिन् मथुराके चोबे औरभी बहोतसे लोक वे प्रमाण खानेवाले होते है उनोकू ये प्रमानसे क्या होसकता है महनती लोक जाट कुनवी मल्ल वगेरे तो महनत कसरतके सबबदूना तिगुना खाते है महनतमें जितना क्षय उतनी भरती परमाणुओंकी होनीही चहिये फेर सहरमे बाहर साफ आब हवाकी कसरतसें प्राणी दुगुणा आहार करते है ये भी एक कसरतही समझना लेकिन् एसा तो प्रत्यक्ष देखते है बाजे तो थोडे खाणेवाले निरोगी होते है और बाजे बहोत खाणेवाले रोगी, लेकिन सामान्य बात तो इतनींही है कद और महनत मुजब जादा खुराक खाना चहिये देखते है बडे एनजीनमे बडा बोइलर होता है सो जादा कोयला खाता है छोटा थोडा खाता है काम दोनुं करता है चलता है शक्तिमें फेरफार जरूर होता है इस मुजब ही आदम्योंका समझणा प्रकृती तासीरका भी बहोत विचार है एक ऊमर बराबर कदके दो अदम्योंमें एक कफकी तासीरवाला जादा नहीं खा सकता और दुसरा पित्त प्रकृतीवाला जादा खा सकता है थोडे खाणेवाले बहोत खानेवालेकी निंदा किया करते है और बहोत खानेवाले थोडे खानेवालेकी असलमें दोनोंकी भूल है शेरभरकी खुराक निरोग शरीरवालेकी चाहे तीन शेर तककी होय, लेकिन उद्यमी और सूरवीरता आलस्य रहित प्रमाणोपेत निद्रा ये सब पूर्व पुण्यकी निशाणी है क्योके आहारमें विवहारमे चातुरको इतनी जाय लज्जा न चाहिये थोडा खाना मदाग्नि छोटा शरीर ये पापकी निशाणी है थोडा खाके नाजुक बणना मरदमीका चिन्ह नहीं और बहोत खाके वृथा पुष्ट बणना नहीं महनत करे नहीं ऐसे मांगखानेवाले सब भिक्षुक जानना, मांगखाना उनहींको अछा है जो ससारकी ममता त्याग परमेश्वरकी भक्तीमे ही एक तल्लीन है शरीरके बसणेसें मनकी इछा जो खुराक लेणेकी होती है सो भूख कहलाती है भूख मुजब हरअदमीकू खुराक लेना चहिये कम लेनेसे पूरा पोषण मिलता नहीं और चहिये जिससें जादा लेनेसे बरा-बर पचता नहीं इन दोनों कारणोसें शरीरमें तरे २ की बेमारिया पैदा होती है ॥

॥ खुराककी तपशील ॥

सृष्टीका प्रवाह चलते प्रजापति ऋषभ जगदीश्वरने सरीकू हितकारी वनस्पतीकी खुराक चलाइ १ इस वास्ते प्रथम खुराक वनस्पती १ बाद वनस्पती, और मांस, ये दुसरी खुराक अदम्योने कालादिकोंमें अन्नादिक नही मिलनेसे सरूकी २ ऐसा जैन सूत्रोंमें लिखा है अब साढी अठारे हजार वर्ष बीतनेपर भारत वर्षकी प्रजा फकत मांसाहारसेंही

निर्वाह करेंगी क्योंके असी १ मसी २ कृपी ३ इन तीनो कर्मोंका प्रलय होगा वनस्पती मिलेगी नहीं ऐसा अनती वेरहोचूका ओर फेर भी होगा हितकारी खाणा अहितकारी छोडणा ये विचार ज्ञानसे हैं, बुद्धेः फल तत्वविचारणं च । अर्थात् बुद्धि पानेका फल यही है सो सुखकारी सदा चरणा करे ॥ इन दो वर्गोंमेंसें प्रजालोकोंमें मांसाहारियोका जथा वहोत है अगर इन दोनो प्रकारके जत्थेका विचारकी बारीकीमें जगली लोकोको टाल दिये जावे तो बाकीकी सुधरी भई प्रजा समुदायमें विशेष पणे वनस्पतीके खुराकसें निर्वाह करते मालम देते है क्योंकी जो वेजीटेरियन है वो तो फकत वनस्पती पर ही जीते है और जो मांसाहारी है उनोके खुराकमें भी जादा भाग तो वनस्पतीका ही है इसें ये बात सिद्ध है के वनस्पतीसें वहोत लोक जी रहे है अब ये दो तरेका खुराक है लेकिन् मनुष्य अदमीके लायक और पौष्टिक खुराक तो मुख्य वनस्पती ही है जो तत्व वनस्पतीमें रहे भये हैं उसके अनुमान कुछ अशांस तत्व मासमें है ऐसा मासाहारियोंका निश्चय है क्योंके केवल मांसाहारी लोक मांस खानेसें जीते है उसमें भी हम बुद्धिद्वारा अनुमान करते है के उन मासोमें मुख्यपने वनस्पतीकाही तत्व है सो ही जीवन है बकरी भेड गाय सूअर हिरण भेंसे वगेरे जो जानवर मुख्यपणे वनस्पतीके खानेवाले है केवल मांसाहारी जानवर सिंह चीता स्याल वगेरेका मास वो लोक खाकर जिंदगानी कभी नहीं निभासके अर्थात् खाय तो निश्चै मरे इस वास्ते सर्व प्रजाके वास्ते फकत वनस्पतीके आहारकी ही जरूरी है १ इस भारत वर्षमें तरे २ के अनाज और फल फूलेल वनस्पतीका बडा पाक होता है इस भूमी बराबर कोइ भूमी नहीं है क्योंके कुदरत स्वभाव सिद्ध शुद्ध खान पान हाजर रहते क्यों अभक्ष खाणा २ मनुष्य जातीका शरीर मासाहारके लायक नही है जैन वैद्यक आयुज्ञानार्णव ग्रथमें खूब निश्चय कीया है और डाकतर लोकोंके भी आपसमें इस बातपर वहोत तकरार है तो भी टेव प्रकृती हवा पाणीका विचार करनेपर इस आर्यावर्त्तके लोकोंकी होजरी बिलकुल मास पचा नहीं सकती यह तो खूब निश्चय हो गया है ३ जन्मसे टेव पड जानेसे इस देशमें भी कितनेक मासाहारी लोक मासाहार करते है और काबलसेंपरे शीत कटिबधके वहोत लोक मांसाहार जत्था वध करते है यह हमेसेका मावरा और शरीरके अदरकी गरमीसें ऐसा निर्दइ खुराक होजरी स्यात् धारण करती होगी लेकिन् हमारा देशका थोडा भाग उष्ण कटिबधमें बाकीका सब समशीतोष्ण कटिबधमें है इस वास्ते इनोकी होजरी बिलकुल मास पचाणे लायक नहीं ४ मावरेसे लोक सोमल अफीम भी वढा लेते है आखिर उनोंकी प्रत्यक्ष दशा बिगडती है यह चोथा निर्णय वहोत ही बुद्धिवानीका है ॥ मांसाहारी लोकोंकू वनस्पतीके खुराक विगर चलता नहीं और वनस्पतीके खुराककी धारणावालेको मांसकी जरूरी कीसी वखत भी नहीं होती ५ ॥ वनस्पतीके खुराकसे शरी-

रकूं जितना नुकशान होनेका संभव है उससे मांसाहारसे नुकशान होना जादा संभव है प्रत्यक्ष देखो मांस जलदी बिगड जाता है फेर प्रत्यक्ष आंखोसें देखनेमें अछी बुरीकी परिक्षा जैसें शट वनस्पतीकी हो जाती है तैसी परिक्षा मांसकी नहीं हो सकती रोगी जानवरका है या निरोगीका है वनस्पतीका अजीर्ण ऐसा नुकशान नही करता मांसका अजीर्ण वहोत ही नुकशान करनेवाला प्राण घाती अनेक रोगोंका कारण है जिसमें डर थोडा फायदा वहोत ऐसा व्यवहार विशेष पसन करने लायक होता है ये सृष्टिका अनादि नियम है॥६॥ वहोतसी बेमारियोमें हमेस मांस खानेवाले अदम्योकों मांसका त्याग करके वनस्पतीके खुराकका आसरा लेना होता है मतलब वनस्पतीका खुराक विशेप पथ्य (प्रकृतीके) अनुकूल है इस वास्ते डाकटर भी विशेपपणे परसन करते है॥७॥ जो जो अदमी मांसमें जादा ताकत बतलाते हैं उसका दृष्टांत और प्रमाण हम आगे लिखते हैं मांसाहारी सिंह चीता स्पाल काग चील वगेरे सव जानवर महा आलसू वेकाम क्रूर प्रकृती प्रजाघाती महाशठ इत्यादि, वनस्पतीके खानेवाले घोडे जिससें सूरवीर पृथ्वी जीते, वलद सब कामके धोरी हत्थी जो इतनी ताकत धराता है की सिखाई भई हत्थणी स्त्री जाती होकर नाहरकू ठोकरसें मार डालती है, और हिरणकेसी सीघ्र गति धराते है इस वास्ते विचार लेणा चहिये ये वनस्पतीमें घास है सो हलकीमें हलकी खुराक है वो खानेवाले उद्यमी साहस सत्वधारी और सरल बुद्धीवाले होते है इस दृष्टांतसें मांसकी ताकत कैसी कहे सो बुद्धिवान समझ लेगें॥८॥ अदमियोंके खूनमें एक हजार भागमें तीन भाग फीब्रीन नामका एक तत्व होनेकी जरूरी है वनस्पतीके खुराकसें वो पदार्थ बराबर बणके रहता है लेकिन मांसमें फीब्रीनका तत्व जादा है इस वास्ते मांसाहारियोंके खूनमें फीब्रीनका तत्व चहिये जिससें जादा बध कर वहोत बखत अनेक रोगोंका कारण हो जाता है ॥९॥ डाकटर पार्क नामका एक यूरोपि विद्वान प्राणी जन्य और वनस्पती जन्य आहार विवरण लिखता भया जताता है के उत्तम मांसमें उष्णता और उत्साहकू पैदा करनेवाला तत्व सो भागमे ३ भागका है और गहु चावल तैसे फलीके नाजमें ये तत्व सो भागमें ४५ सें लेकर ८० तक होता है ऐडमस्मिथ नामका एक यूरोपि विद्वान वेल्थ ओफनेशन्स अर्थात् प्रजाकी दोलत इस नामके ग्रथमें लिखता है के मास खाने बिगर अनाज घी दूध और दुसरी वनस्पतीसे शारीरक और मानसिक शक्ति और वहोत ही अछी तन दुरस्ती अदमीयोमें पैदा हो सकती है इसतरे और भी सईकडो डाकटर विद्वान वनस्पतीके खुराकको परसन कर रहे हैं॥१०॥ वैद्यक विचार धर्मशास्त्रसें वहोत दर जे सबंध रखता है अगर धर्म शास्त्रका सारांश विचारके देखे तो मांस खानेकी सकत मनाई जैनोके सूत्र सिद्धांतमें है अहिंसा परमोधर्मः ये सबोके सम्मत है आर्यवेद, स्मृति पुराण, बाइबल, कुरान, अवस्ता, लेकिन् इन २ ग्रथोमें प्रवृत्ति भी मानी है

और निवृत्तीमें जादा फल लिखा है दुनियांमें जैनियोंकी दयाके बारीकीका विचार विख्यात है नालक वचन भी है, दुहा, शिव भक्ती अरु जैन दया, मूसलमीन इकतार, तीन बात एकठ करै, उतरे वेडा पार, ॥

॥ जिंदगीकूं जरूर खुराक ॥

जिंदगीकू कायम रखनेवास्ते हमेसां चहिये उस खुराककी पांच जात है नाइट्रोजन (अर्थात् पुष्टिवाला १ चरबीवाला २ आटेका सत्ववाला ३ जिसकू अंग्रेजीमे स्टार्च कहते हे सो, खार ४ पाणी ५ अपने शरीरमें वहोत तरेका तत्व है सबोंका इन पांच तरेके खुराकसे पोषण होता है इस वास्ते अपनी नित्य खुराकमें इन पाच प्रकारोंकी जरूरी है इन पांचोमें दुसरे सब तत्वोका समावेस हो जाता है १ पौष्टिक खुराक शरीरकू पोषण तथा वढानेकू जरूरका है कोइअनाजमें जादा नाइट्रोजन, कोईमें कम होता है अपने हमेस वापरनेवाले पदार्थ घी मक्कन सकर और साबू दाणोंमें पौष्टिक तत्व बिलकुल नहीं है ऐसा विद्वानोने निश्चय किया है घी मक्कणमें तो मुख्य भाग चरबीका है सकर और साबू दाणोमें स्टार्च आटेका सत्व है लेकिन् ये चारोही पदार्थ शरीरकी गरमी कायम रखनेका काम करते हैं २ चरबीवाले पदार्थोमें मुख्य घी मख्कण तेल वगेरे है, अनाजोमे चरबीका भाग सइकडेमें १ (गहुमे है) जादे मे जादा सइकडेमें ६ (मकीमें है) चरबीवाले पदार्थ ठंड कालेमें जादे खाणा चहिये ३ स्टार्च याने आटेके सत्ववाले पदार्थोमें मुख्य मिश्री खांड गुड चावल और दुसरे अनाज है शरीरमें श्वासो श्वासकी जो क्रिया चलती है वो कार्बोन नामके पदार्थसे होता है और वोकारबोन इसतरेके खुराकमेंसे तैसें चरबीवाले पदार्थोमेंसें पैदा होता है गरम देश मारवाड अरबस्थानादिकोंमें तैसें गरमीकी मोसममें स्टार्च तत्ववाला पदार्थ जादे माफगत आता है ४ क्षार, शरीरका हरेक भाग खारके मेलसें वणा भया है दूधमें भी खार है अनमें भी खार है खार तो खानेकी चीजोंमें थोडा और वहोत असों करके रहा भया ही है हाडतो मुख्य खारसें ही घणा भया है इसवास्ते हाडोके पुष्टिवास्ते खारकी बहोत जरूरी है खार कमती होनेसें हाड पोचे और वरडे होकर तूटे ऐसे हो जाते हैं छोटे वालकोंका दूधसें पोषण होता है और उसमें स्वभाव सिद्ध खार होता ही है इसवास्ते खुराकमे उनमान मुजब खार लेणा ही चहियें ५ (पाणी) शरीरके पोषणकू पाणी जैसे प्रवाही पदार्थकी जरूरी है क्योंके खूनके प्रमाणो पेत फिरनेपर जिंदगीका आधार है वो खून पतला है इसवास्ते ही फिर सकता है जो शरीरमें प्रवाही भाग कम हो जाय तो खुन जाडा पडके फिरते बंध हो जाता है ये प्रवाही तत्व जैसें पाणीसें मिलता है तैसें दुसरे खानेके हरेक पदार्थसें भी शरीरकू मिलता है गहु बाजरी चावळ वगेरे जो कुछ खानेमें आता है उसमें पाणीका भाग है सागतरकारीमें फलादिकोमें पाणीका बहोत भाग होता है इन पाच तरेके खुराकमेंसें

हरेकका कितना वजन शरीरके पोषण वास्ते हमेस जरूरीका है शरीर रचना टेव (याने मावरा) प्रकृती याने तासीर देशकी हवा पाणी तैसें ही ऊमर मुजब जादा और कम खुराक लेनेमें आता है तो भी विचले दरजे कोनसा २ खुराक कितने २ वजनमें लेना चहिये उसका प्रमाण नीचे मुजव ॥

१ पोष्टिक तत्ववाला खुराक हमेस	१० रु भर.
२ चरवीवाला खुराक	८ रु भर.
३ आटेका सत्ववाला खुराक	३० रु भर.
४ खार	४ रु भर
५ पाणी	१५० रु भर.

ऊपर लिखा है के पाणी और प्रवाही तत्व चरवीवाले पदार्थकूं टालके और सब तरेके पदार्थोमें रहा भया है ऊपरके कोठेमें पहिले चार प्रकारका खुराकका जो प्रमाण लिखा है उसमें प्रवाही तत्व वाद करके लिखा है जो इन चारों प्रकारके पदार्थोकों प्रवाही तत्व साथ गिणे तो लगवग दुगुणा प्रमाण आवे मतलब ऊपर (५२) रुपिया भर चारों लिखा है मध्यम प्रमाणसें उसके वदले सग १०० रुपिया भर खुराककी हरेक अदमीकों जरूरत है और जल १५० रुपिये भर अलग गिणना चहिये ॥

खुराककी मुख्य चीजोंमें ऊपर लिखा पांच
तत्वोंके प्रमाणका यत्र ॥

खुराकके मुख्य २ वस्तुओमें पौष्टिक तत्व (नाइट्रोजन) चरवी आटेका सत्व (चरवीवाले और आटेके सत्ववाले पदार्थमें कारबोन वहोत है खार और पाणी ये हरेक वस्तुओमें १०० सइकडे कितना भाग है सो नीचेके कोठेसे मालम होजायगा मांस मछीयोंका तथा इंडोका भाग आर्य वैद्यक ग्रथनें लिखणा परसन नहीं किया यह तो परमार्हतोका वैद्यक ग्रथ है आगे जो डाकदरी दवा हम लिखेंगे सो तो वणी भई तइयार है और लोक अजाण पने आपत्काले मर्यादा नास्ति इसवास्ते वर्त्तमान प्रवाह है ग्रंथ कर्त्तायों नहीं लिखता है के तुम निश्चे वो हीलो ॥

खुराककी चीज	नाइट्रोजनका पौष्टिकतत्व	चरवीका तत्व	स्टार्च याने आटेका तत्व	क्षारका तत्व	पाणीका प्रवाही तत्व
चावल	५	।।।	८३।	।।	१०
साबूदाणा	०	०	८२	०	१८
गहू	१४।।	१	६९	१।।	१४
ज्वार	१२।।	४	७०	१।।	१२
वाजरी	१०	४।।	७१।	२।।	११।।।
चिणा	२२	३	६२	२	११

उडद्	२४॥।	१।	५८॥	३	१२॥
तूर	२२	१	६२	३	१०
मटर	२२	२	५३	२	१५
मसूर	२५	१।	६०	२	११॥।
जव	१३	२	६८	२	१५
मकी	१०	६॥।	६४॥	१॥	१३॥
कुलथी	२३।	२॥	५९।	३।	१२
आलू	१॥	१०	२३॥	१	७४
कोथीज	-।	-॥	५॥	-॥।	९१
गाजर	-॥	-।	८॥	-॥।	९०
सकरमिश्री	०	०	९६॥	॥	३
दूध	४	३॥।	५	-॥	८६॥।
मख्कण	-।	९१	०	२॥।	६
घी	-।	१००	०	०	०

रसायण शास्त्री विद्वानोंने रसायणिक प्रयोगोसें जुदा २ भाग छांट कर वस्तुओंका ऊपर लिखे मुजब तत्व सोधके निकाला है इसके प्रताप सब लोक तत्वोके जाणकार इस पदार्थोंसे भया है इय सोध यूरोपी विद्वानोका है हमकू प्राचीन शास्त्रोमें ऐसी तपसील मिली नहीं अगर भडारोंमें बध होगा तो होगा बाकी तो मतांतरोके द्वेषियोने जलादिये पाणीमें गलादिये वर्त्तमान सोधकोका उपकार कबूल कर इस ग्रथमें दाखिल किया है ॥ गुण मुजब खुराककी दो जात है पुष्टिकारक, और गरमी देणेवाला २ जो शरीरमेंके खिरे परमाणुओंकों भरती करे सो तो पुष्टिकारक और शरीरके गरमीकू कायम रखे सो गरमी दाता खुराक, पुष्टिकारक खुराककी चीजो बहोत है लेकिन् हरेकके अदरका पौष्टिक तत्वोंका गुण एक दुसरेसें मिलता है पौष्टिक खुराकमें नाइट्रोजनका तत्व जादा है और गरमी देणेवालेमें कारबोनका तत्व जादा है ऐसा जुदे २ करणे वालोने निश्चय किया है गरम खुराकसे मोसम पलटणे पर भी शरीरकी गरमी बराबर रहती है जिंदगीके मिलते सब काम गरमी बिगरचल नहीं सकते बाहरकी हवामे चाहे जितनाफेर होय लेकिन गरमी देणेवाली खुराकसे शररकी गरमी एक हालतसें रहती है जिस जगे ठड बहोत पाणीका बरफ जम जाता है पारेकी घडीमें पारा ३२ डिग्रीसेंभी नीचे जाता है और गरम देशोंमें जहां पारा १२५ डिग्रीसेभी उचा चढता है उहाभी बदनकी गरमी तो ९० सें सो १०० डिग्री हमेसां रहती है जो खुराक शरीरकी अदर गरमीकू जगे परकायम रखती है उस खुराकमें मुख्य दोय तत्व है १ कारबोन और २ हाइड्रोजन और ये दोय तत्व प्राण वायूके सग रसायण सयोगसे जब मिलता है तब गरमी पैदा होती है ये सयोग हर वखत होते रहता है जब किसी रोगके कारण फेरफार होता है

तभी गरमी कम या वैसी हो जाती है पौष्टिक खुराक बहोत खाणेसें खून चहिये जिसें जादाताकतवर हो जाता है उससें खूनका कलेजेमें या मगजमें तथा दुसरे अवयवोंमें बहोत जमाव होणेसे वो अवयव बडे हो जाते है तथा कलेजेमें रोग हो जाता है मगज पर खूनका जोर चढता है उससे ऐसे खुराक खाणेवाले बडे धास्तीमें आगिरते है पौष्टिक खुराक प्रमाणसरखाकर अगर अंगकू कसरत मेहनत देणेमें आवे तो बहोत नुकशानका संभव नहीं तो भी खुराक एकही तरेका विशेष खाणेसे जरूर नुकशान करता है खुराक ऐसा खाणा चहिये जिसमें शरीरमें चहिये जितना सब पोषणका तत्व होणा अपणे आर्य-लोकोका खुराक सामान्य सब तत्ववाला है बहोतसे अनाज तथा दालोमें चहिये जैसा पोषणका सब तत्व आया भया है प्राणियोंके अगसें पैदा भया खुराक घी माखण मांस इंडे माछी वगेरोमें मांसाहारमें आटेका सत्व अर्थात् गरमी देणेवाला तत्व बिलकुल नही है इस तरे प्राणी जन्य वस्तुओंमें तो फकत दूध सब तत्ववाला है जभी तो इकेले दूधसें बहोत वर्षोतक गुजरान चल सकता है घी मक्खणमें बिलकुल चरबी हे बाकी कोईभी तत्व नहीं है चावलमें बहोत भाग आठेके सत्वका है पौष्टिक तत्व सैकडेमें पांच रुपिया भर है इस वास्ते आर्यलोक भातके सग दाल तथा घी खाते हैं ये बहोत अछा करते हैं दालसें पौष्टिक तत्व पूरा होता है और दालमे निमक डाला जाता है सो चावलोमें क्षारका भाग कम होता है सो निमकसें पूरा होता है और घीसें चरबीका तत्वभी मिल सकता है लडकोंको चरबीवाला तथा बहोत पुष्टि कारक खुराक कामका नही उनोंको चावल दूध खांड मिश्री आलु वगेरे खुराक माफ गत आता है क्योंके इनोंमे पौष्टिक तत्व कम है गरमी देणेवाला तत्व जादा है गहुमें चरबीका भाग थोडा है इसवास्ते गहूकी रोटीमें जादा घीलेके खाणा चहिये ज्वारमे तथा बाजरीमें चरबीका भाग तो चहिये जितना है लेकिन् पौष्टिक तत्व गहुसें कम है तो भी इस वस्तुओसे पोषणका काम चल सकता है उडदमें सबसें जादा पौष्टिक तत्व है ठडकालेमें पौष्टिक तत्ववाला उडदके आटेके सग घी सक्करका सयोग बहोत गुण करता है गरम देशमें ताजी साग तरकारी फायदा करती है अपणा देश गरम है इसवास्ते ठड कालेसें गरमी मोसममे हरीताजी वनस्पती फायदा करती है खाणा जरूर है चरबीवाले और चिकणासवाले भोजनमें नींबूकी खटाई थोडा २ मसालाभी चहिये इस तरे खानपानके अनेक भेद होते है एक मुख्य भेद तो ऐसा है के भूख प्यास मिटाणेका गुण तो जरूरही होणा, खुराककी उत्पत्तीके मुख्य दोय भेद है थावर १ और जगम २ थावरमें तो तमाम वनस्पती और जगममें प्राणीजन्य दूध दही मक्खन छाछ आदि, आहारकी जैनसूत्रोंमें चार जात लिखी है असन खाणेका पान पीणेका खादिम चावके खाणेका स्वादिममें पान बिडादि पच सुगंध तथा चाटके खाणे आदि, इनोका भेदातर बहोत है गुणोके प्रमाणसे आहारकी आठ जातभी है भारी

चिकणा ठंडा कोमल तथा हलका लूखा गरम और तेज पहिले चार तरेका खुराकशीत वीर्य है इसवास्ते चद्रमाका गुण है पिछला चार तरेका खुराक उष्णवीर्य है इसवास्ते सूर्यका गुण है रसके भेदसे आहारके छव भेदभी है मधुर (मीठा) अम्ल (खट्टा) लवण (खारा) कटुक तिक्त (कडवा) और कषायला प्रभावसें आहारका तीन भेद है पथ्य पथ्यापथ्य कुपथ्य पथ्य तो सुखकारी, पथ्यापथ्य हित अहित दोनूका करणेवाला कुपथ्य बिलकुल नुकसान करणेवाला इन तीनोंका विस्तार लिखेगें खानपानके पदार्थोका ऐसे सुक्ष्म भेद बहोत है तोभी सामान्य तरे समझ सके इसवास्ते वांचणेवा-लोंकों छवरस और पथ्यापथ्यकी जाणनेकी जरूरी है, अपणे शरीरके पोषणवास्ते मुख्य खुराकमे छवरस है पृथ्वी पाणीके गुणकी अधिकतासें मीठा रस पैदा होता है पृथ्वी तथा अग्निके गुणकी अधिकतासे खट्टा रस पैदा होता है, पाणी तथा अग्निके गुणकी अधिक-तासें खारा रस पैदा होता है, वायु तथा अग्निकेगुणकी अधिकतासे तीखा रस पैदा होता है वायु तथा आकाशके गुणकी अधिकतासे कडवा रस पैदा होता है, पृथ्वी तथा वायुके गुणकी अधिकतासें कषायला रस पैदा होता है

इन (छ व) रसोमें.

मीठा खट्टा खारा ये तीन रस वायु नासक है, कषायला रस वायुके जैसा गुण लक्षणवाला है,
मीठा कडवा कषायला तीनो पित्त नासक है, तीखारस पित्तके जैसा गुणलक्षणवाला है
तीखा कडवा कषायला कफनाशक है, मीठा रस कफके जैसा गुण लक्षणवाला है

मीठा रस खून मांस मेद हाड मीजी ओज वीर्य स्तनका दूध बधाता है, आखोकों हितकर बाल, और रगकू साफ करता है, बल बधानेवाला तूटे हाडोंकों सांधनेवाला बुड्ढे-कों जखमसें क्षीणकों हितकारी है प्यास मूर्छा दाहकू मिटाता है सब इंद्रियोको प्रसन्न करता कृमि तथा कफकू बधानेवाला बहोत खानेसें खासी श्वास अलसक कै (छर्दि)मूमीठा गलेका बिगाड. कृमिरोग कठमाल अर्बुद श्लीपद वस्ति पेडूका रोग मधुप्रमेह वगैरे पेसाबका रोग अभिस्यद वगैरे रोग पैदा करता है, १ खट्टारस आहार वातादिक दोष सोजा तथा आमकू पचावे वादीका नाश करे वायु मल तथा मूत्रकूं खुलास करे पेटमे अग्नि करे लेपकरनेसे ठडक करे हृदयकू हितकारी बहोतखानेसें दातजकडे अधी जै नेत्र बध हो जाय रूखडे होय, कफका नाश होय शरीर ढीला हो जाय कठ छाती हृदयमें दाह होय२खारा रस मल शुद्ध करे खराब व्रण फोडोकू साफ करे गलादेवे खुरा-ककू पचावे शरीरकू ढीला करे गरमी करे अवयवोंकू नरम करे बहोत खानेसे खुजली कोढ सोजा थोथर हो जाय चमडीका रग बिगडे मरदमीका नाश होय आंखोका और इंद्रियोका व्यापार कम हो जाय मूपकजावे आंख दूखे रक्त पित्त वातरक्त. खट्टीडकार वगेरे दुष्ट रोग पैदा होता है ३ तीखा रस अग्नि दीपक पाचन मल मूत्रका सोधन करे शरीरका जाडापणा. आलस. कफ कृमि. जहरसें पैदा होनेवाले रोग कोढ खुजली इत्यादि

रोगोकूं मिटावे सांधोंकोंढीला करे उत्साह कम करे. स्तनका दूध वीर्य तथा मेदका नाश करे, वहोत खानेसें भ्रम. मद गलेमें तालवेमें होठमें सूकापणा शरीरमें गरमी ताकतका नाश कंप पीडा वगेरे रोग पैदा करे, हाथ पांव तथा पीठमे वादी करके शूल पैदा करै ४ कडवा रस खुजली. खाज. पित्त प्यास. मूर्छा बुखार वगेरेकों शांत करे स्तनके दूधकों साफ करे, मल मूत्र मेद चरवी पीप वगेरेकू सुकाय डाले वहोत खानेसें गरदनकी नसकू जकडा देवे. नसां खिचने लग जावे वदनमें दरद होय. भ्रम होय. शरीर तूटे सरणें चले कटता होय ऐसा मालमदे भूखमें मीठापनी कम होजाय. ५ कषायलारस दस्तकू रोके शरीरके अवयवोंकों मजबूत करे, व्रण तथा प्रमेहको शुद्ध करे व्रण वगेरेमें घुसके उसके दोषोंकों निकलता है, क्लेदयाने,गारे जैसा पदार्थ पीप पकावका सोधन करे, वहोत खानेसें हृदयमें दरद होय मूं सूके. पेटमे आफरा नसे जकड जाती है शरीर फुरकता है कांपणी होय तथा शरीर सकुडाता है ६ खानेके पदार्थोंमें अपने अदमी छउ रस खाता है कषायला और कडवा रस खानेमें जादा जाहरा देखनेमें नही आता तो भी कितनेक पदार्थोंमें ये रस गुप्तपनें रहे भये हैं वाकीके चार रस तो खानेमें जाहरा दिखता है जादा ये रसोके खानेसें वहोत नुकशान है सो ऊपर लिखा ही है मीठा रस जादा उपयोगी है तो भी हद उपरांत खानेसे वहोत नुकशान करता है ॥

॥ उजाला २ धान्य वर्ग ॥

चावल, गुण मीठा, अग्निदीपक,वलवर्द्धक, कांतिकर, धातुवर्द्धक, त्रिदोषहर, और मूत्रवर्द्धक, विचार, चावलोंकी वहोत जाति है सामान्यतरे कमोद चावल अछे होते है सबसें साठी चावल पथ्य है, लेकिन वो लाल और मोटा होता है, इस वास्ते लोक खाते भी नहीं है सोखीनलोक तो महीन और लंबे खसबोदारकों परसन करते है, मुलकोकी अपेक्षा वधिया चावलोंका नाम अलग २ हे, चावलोंमे चिकणास (याने) चरवी थोडी है उससे जलदी पचता है और हलका है बालकोंको वैमारोको इसीवास्ते अनुकूल आते हैं साबूदाणे चावलकी जात नहीं है लेकिन गुणमे वो चावलोसे हलका है इसवास्ते बचोको और वैमारोकों खिलाया जाता है डाकटर या मारवाडी लोक चावल खाणेसे संका करतेहैं उसका कारण ऐसा मालम देता है. के लोक चावलोंको बराबर सिजाते नही जादा आंच देकर जलदी उतारा भया बरावर सीजता नहीं, तैसें दाल होनेवाले सब अनाज (वाफ) उबालकरके लोक खाते है लेकिन उनोको मंद आंचपर वहोत देरतक चुलेपर रक्खे तो अछी तरे सीजते हैं पूरे सीझणेकी परिक्षा इसतरेसे है थालीमें डालनेसें ठण २ अवाज नहीं करे फूल जेसे हलके हो जाय हाथसें मसलनेसे मक्खन जैसा मुलायम होय चपठीमें दाबते चावलोमें जितना जोर लगे उतनांही कच्चा समझणा लोक चावलोको वायु कर्त्ता समझते हैं. सो ऐसा वायु करता नहीं है कितनेक सस्ते दामोके चावल थोडा वादी करे तो ताजुब नहीं. वाकी तो सिजानेकी वे शुद्धीसे वायु करते हैं. ऐसा मालम देता है चावल

वर्षभर उपरांत पुराणे होना भातके संग दाल घी मिलणेसें वायु कम हो जाती है निमक पूरा होना दाल चावल अलग २ रांधनेसे फेर मिलाकर खानेसे जलदी पचता है सामल रांधनेसें खीचडी होती है वो पचनेमें जरा भारी है खीचडी मूग तूर वगेरोकी होती है (गहूका गुण) पुष्टिकर धातुवर्द्धक बलवर्द्धक मीठा ठंडा भारी रुचिकर तूटीहड्डीकू सांधनेवाला व्रणकू मिटानेवाला दस्तकू साफ लानेवाला (विचार) गहूकी मुख्य दोय जात है काठा और वाजिया (सुपेद और लाल) सुपेदसें लाल जादा पुष्टिकारक है गहूमें पुष्टिका तैसे गरमीका तत्व रहा भया है इसवास्ते दुसरे अनाजोंसें ये विशेष उपयोगी और उत्तम पोषणकी वस्तु है गहूंमें खार तथा चरबीका भाग बहोत थोडा है इसवास्ते लोक निमक डाल फेर रोटी वगेरे बनाते है द्रव्यानुसार घी मक्खन और मलाई वगेरेके संग खाना । जादा फायदेवद है गहूका मैदा पचनेमे भारी इसवास्ते मंदाग्निवालेनें मैदेकी रोटी पुडी खानी नहीं मकसूदावादी ओसवालोंके इहां नित्य खुराक मैदा है इसवास्ते पित्त वढाणे दालमें अमचूर बहोत डालते है दोनो खुराक निर्बलताका हेतु है फकत दूध विदामकी कतलीसे जिंदगानीका आधारउन लोकोका है गहूके आटेसे बहोत पदार्थ बनते हैं गहूकी राब पचनेमें हलकी है जिसकू पटोलिया कहते है उससे रोटी भारी फेर पीछै पूडी हलवा लड्डू मगध गुलपपडी वगेरे अनुक्रमे पचनेमें एकएकसें भारी है गहू घीके संग खानेसें बादी नहीं करता (बाजरीका) गुण गरम लूखी पुष्ट हृदयकू हितकारक स्त्रियोंमें कामकू बढाणेवाला पचनेमें भारी और वीर्यकू नुकशान करता (विचार) बाजरी गरम है इसवास्ते पित्तकू खराब करती है इसवास्ते बने जहातक पित्त प्रकृतीवालेकू बचणा अछा है लूखी होनेसे वायू करती है जिन २ मुलकोमे बाजरीकी पैदास जादा है और अनाज कम पकता है तब उहांके लोकोंको नित्यके मावरेसें बाजरी पथ्य हो जाती हैं जैसें बीकानेर जिलेमें बाजरीका खतक है मोठ बाजरी और तरबूज (कालिंगा) इस जमीन जेसा और कहांइ भी नही होता पोषणका तत्व गहूके लगभग बाजरीमें है लेकिन गहुसें चरबीका तत्व जादा है इसवास्ते घी विगरभी नुकशान नहीं करती है (ज्वारका गुण) ठंडी मीठी हलकी लुखी पुष्ट (विचार) ज्वारमें बाजरी जेसाही पोषणका तत्व है चरबी भी बाजरी जितनी ही है ज्वार करडी और लुखी है इसवास्ते वायु करती है लेकिन् नित्यके अभ्यासी,मरेठे कुणबी गुजरात काठियावाड वगेरेके गरीब लोक विशेषपणे ज्वार और तूरकी दालसे काम चलाते है (मूगका गुण) ठंडा ग्राही हलका स्वादिष्ट कफ पित्तकू मिटानेवाला आखोकों हितकर कुछ वायु करता है(विचार)दालोंकी जातमें उत्तम है आनंद श्रावग उपाशक दशा सूत्रमे मुगकू श्रेष्ठ दाल समझके मोकला रखा है सब रोगोंमें मुगकी दाल तथा ओसामण कितनेक दरजे दूधकी गरज सारता है और नये सन्निपात ज्वरमे जहा दूधकी मनाई है उसमेभी मुगकी दालका पाणी हितकारी है बहोत

दिनोके उपवासके पारणेमें भी यही पाणी हितकर है सावित मुंग वायु करता है इकेली दालकू जरा कोरी तवेपर सेककर सीजाकर उसकी दाल या ओसामण पूरव दक्षण देशोंमें तथा किसी भी बैमारीमें वायु नहीं करतीहै मुंगकी वहोत जात है उसमें हरे मुंग गुणकारी है (तुंवरका गुण) मीठी तुरी भारी रुचिकर ग्राही ठडी त्रिदोष हर होकर कुछ वायु कर्त्ता है(विचार)खून विकार मस्सा(अर्स)बुखार और गोलेके रोगमे फायदा करता है दक्षण ओर पूरवधरामें इसकी दाल मुख्य है उहां इसकी पैदास है चावल तूरकी दाल और घी मिलाके खानेसें वायू नहीं करती गुजरातवाले इस दालमें कोकम अंवली वगेरेकी खटाई कोइयक दही और गरम मसाला देते है इससें वायडी नहीं होती दालकी वस्तुमें दही छाछ कच्चा मिलानेसें दो इंद्रीवाले जीव थूकके स्पर्शसे पैदास होते हैं इसवास्ते अभक्ष्य है अभक्ष चीज रोग कर्त्ता होती है इसवास्ते कडी राईता वगेरे द्विदलके बनाना होय तो पहली गोरसमें वाफ निकले ऐसा गरम कर फेर वेसण वगेरे द्विदल मिलाना रोग नहीं कर्त्ता दही खीचडी इस मुजब ही खाना बे समझ लोक गोरस खीचडा खाते है गोरस गरम किये विगर,सो, बडा नुकशान कर्त्ता है, बावीस बडे अभक्ष जैनाचार्योंनें रोग होनेके कारण मना किये हैं,देखो अतीचार सूत्र (उडदके गुण) बडापुष्ट वीर्य वधानेवाला मीठा तृप्तिकारक पैसाब लानेवाला मलकू जुदा करनेवाला स्तनमे दुध वधानेवाला मांस मैदेकी वृद्धि करता ताकत देनेवाला वायुकू तोडनेवाला पित्त कफकू वधानेवाला (विचार) श्वास थकेला अर्दितवायु जिससें मु टेढा पडजाय और भी केइयक वायू रोगमे उडद पथ्य है ठंडकालेमे तथावादीकी तासीरवालेकू फायदेबद है पचेबाद उडद गरम और खट्टा रस पैदा करता है इसवास्ते पित्त तथा कफकी प्रकृतीवालेकू तथा इन दोनोके रोगीकू नुकशान करता है दिल्लीकी चोतरफ पजाबतक इसकी दाल हमेसां खाते है का-ठियावाडवाले इसके लड्डू पुष्टिके वास्ते बहोत खाते है (चणेका गुण) हलका ठंडा लूखा तुरा रुचिकर रंग सुधारक ताकतवर (विचार) कफ तथा पित्तके रोगमें फायदे बद कुछ ज्वरकू भी मिटाता है लेकिन् वादी कर्त्ता कबजी करता अथवा जादा दस्त लगावै खु-राकमें चिणेकी बहोत चीजें बणती है साबूत आटा और दाल तीनोतरे काम देता है मोतीचूरका ताजा लड्डू पित्तीके रोगकू जलदी मिटाता है गुजरातवाले तेलके सयोगसे चने वापरते है चणेमें चरबीका भाग कम है इसवास्ते इसमें घी तेल वगैरे जादा डा-लना तासीर मुजब उन मान माफक खानेसें नुकशान नहीं करता घी कम होनेसे इसके पदार्थ सब नुकशान करते हैं (मोठका गुण) रुचिकर पुष्टिकारक मीठा लुक्खा ग्राही बल-वर्धक हलका कफ तथा पित्तकू मिटानेवाला और वायू करता है रक्तपित्तमे पथ्य है बुखार दाहमें कृमिरोगमें उन्मादरोगमें पथ्य है (चवलोंका गुण) मीठा तुरा भारी दस्त लानेवाला लुक्खा वायुकर्त्ता रुचिकर स्तनमें दूध वधानेवाला वीर्यकू विगाडनेवाला गरम

है(विचार)नहोतवायु कर्त्ता है इसवास्ते इस चीजकू जादे खाना नहीं जैन ग्रंथोंमें लिखा है महाकजूस मम्मण शेठ अडवों सोनइयोंका मालक तेलके छमके चवला खातां था और पेटे यहुओंकों खिलाता था खानेमें मीठा पचे बाद खटा रस पैदा करता है ताकतवर है लेकिन् लूखा और भारी है इसवास्ते पेटमें बोझा कर वायू करता है गरम दाहकारी वदनकू सुकाता है वीर्य नास कर्त्ता है चवला शरीरके जहरका नाश करता है लेकिन् आंखोंके तेजका भी नाश करता है(मटरका)गुण रुचिकर मधुर पुष्टिकर लुखा ग्राही ताकत वढानेवाला हलका पित्त कफकू मिटानेवाला और वायु करता है निघटुराजमें जो जो गुण अवगुण हेमाचार्यने लिखा है उसमेंके गुणापगुण विशेषपणे वणानेकी क्रियामें रहता ही है यह तो सामान्यवात है वाकी सस्कारके फेरफारसें गुणोंमें फेरफार भी होता है(दाखला)पुराणे चावलोके राधे भये भात हलका है लेकिन् उसके चुरमुरे पवा वहोत भारी है फेर खीचडी भारी कफ पित्तकू पैदा करनेवाली मुसकिलसें पचे बुद्धिकू अडचल करनेवाली दस्त पैसावकू वधानेवाली फेर थोडे जलमें पकाया भात जलदी पचता नहीं चावलोंको अछीतरे धोकर पाचगुणे पाणीमें खूब सिजाय गरमहीकू ओसाय डालणा ऐसा भात हलका और गुणकारी खीचडीकू मद २ आचमे वहोत देरतक पकाणा तब फायदेबंद होती है चणे चवले मोठ वगेरे वायडे हैं फेर कितनेक अनाज पचनेमें खराव होते हैं तो भी घीके सग खानेसें पचता है और वादी कम करता है वीकानेर फलोधीवाले जैसे ज्वारका खीचड और वहोत घी आखातीजकू खाकर ऊपरसें अमलीका सरवत पीते हैं ग्रीष्म ऋतुमें और तासीर देस मुजब पचजाता है. ऋषभ देवजीने तो सांठे ऊखका रस इस दिन पीया था श्रेयांस पड पोतेने वर्षभरके भूखेकों सुपात्र दान दिया अखय सुख उपार्जन किया इसवास्ते अक्षयतृतीया नाम भया॥

॥ उजाला ३ शाक वर्ग ॥

नित्य खान पानमें शाक तरकारी वहोत कम उपयोगी है समस्त शाग दस्तकू रोकनेवाला पचनेमें भारी लूखा वहोत मलकू पैदा करनेवाला और पवनकू वधानेवाला शरीरके हाडोंकों भेदनेवाला आंखके तेजकू कम करता शरीरका रग खून तथा कांतिकों घटानेवाला बुद्धिका क्षय करनेवाला वालोंकों सुपेद करनेवाला यादशक्ति और गतिकू कम करता है सव सागोमें रोग रहता है वो रोग शरीरका नाश कर्त्ता है इसवास्ते विवेकी लोकोकू साग नहीं खाना जैन सूत्रकार शरीर रक्षणकू ही ऐसा वर्त्ताव चलाया है रोगादिकारणमें जतना लिखता है इस मुजब ही चरकादिकोंका मत है जो दोष खटे पदार्थोंमें है उसके मिलते वहोत दोष सागोमें है यह तो सामान्य अभिप्राय है पश्चिमके पडितोनें ऐसा भी निश्चय किया है के ताजा फल साग तरकारी विलकुल नहीं खानेसें स्कर्वी याने रक्त पित्तका रोग होता है शाक फलादि उत्तम होना माफक सर उप-

योग करना ऐसा वो लोक कहते है एक तरफसें ताजे साग फलोंमें बहोत कम तो फायदा दुसरे तरफ अपणे बजारमें विकते साग फल वगेरेकी दशा उसके बेदरकारी वापरणेसें होता भया बेहद नुकसान इन दोनों बातोंका मुकाबला करणेपर आखिर पहली कलमपर ही चलणा हददरजे हितकारीपणा ठहरता है हरी चीजोंका बहोत सावचेतीके साथ घणे जहांतक थोडाही वरताव करणा बुद्धिमानोंका काम है सामान्य अभिप्राय सब वैद्यक ग्रथोका एसा है तोभी अपणे लोकोमें साग तरकारीका वेहद वरताव देखणेमें आता है जिसमें भी गुजराती भाटिये वैष्णव शैव संप्रदाई तथा जिभ्भाके लोलपी, शरीर सुधारणेमें अज्ञानजो जैन इसवास्ते इन सबोकों अंकुसरूप शाग तरकारीका गुण दोष आगे लिखताहूं जिस वनस्पतीमें ताकत देणेवाला तथा गरमी देणेवाला भाग थोडा होय पाणीका भाग जादा होय इस तरेकी ताजी वनस्पती थोडी खाणी, येसिद्धांत है पान फूल फल कद वगेरे शागकी कितनीक तरा है ये अनुक्रमसें एकके पीछे एक जादा भारी है पानोका साग सबसे हलका है कंदका साग सबसे भारी है जो की जैन पन्नवणा सूत्र-में बत्तीस अनत काय लिखी है वो महागरिष्ट रोगकर्त्ता कष्टसे पचता है चंदलिया (चौलाई)। हलका ठडा रूखा मलमूत्रकू उतारणेवाला रुचिकर्त्ता अग्निकू दीपन करता जहरकू हरणेवाला पित्त कफ तथा खूनके विगाडकू मिटाणेवाला सब रोगोमें प्राय चद लिया सबोकी प्रकृतिमें पथ्य है वो जैसें सागमे पथ्य है तैसें स्रीके प्रदरमें इसकी जड बालकके दस्तकबजीमे उकाले भये पत्ते तथा जड कोढ वातरक्त खून विगाड रक्तपित्त चमडीके खाजदाद फुनसी वगेरे दरदोमें इसका साग बिना ठाल मिरचके खाणेमेंआवे तो दाह खुजली सब मिट जाती है इय ठडा है तोभी वाय पित्त कफ तीनोंकों शांत करता है दस्त पेसाब साफ लाता है पैसाबकी गरमीकू शांत करता है खून शुद्ध करता है पित्तका विगाड मिटाता है किसीभी विगडी दवाकी गरमी अथवा जहर उकालके रस सहतया मिश्री डाल पीणेसें या साग खाणेसे जहर, दस्त पेसाबके रस्ते निकलजाता है चदलियेकु जैसें जादा बाफा जाय तैसें जादा स्वाद और गुण करता होता है मद रक्तपित्त शीलस त्रिदोष ज्वर कफ खांसी दस्तकी वैमारीमें बहोत फायदेबद है (पालका) अग्निप्रदीपक पाचक मलशुद्धिकारक रुचिकर तथा उष्ण है सोजा विषदोष हरस तथा मदाग्निमें हितकारक है (बथवा) बथवेका साग अथवा चीलका साग पाचक रुचिकर हलका दस्तकू साफ लाणेवाला तापतिली खूनविगाड पित्त हरस कृमि त्रिदोषमें फायदे-बद है (पत्तागोभी) यह फूल गोभीकी चार जातसें अलग होती है भारी है ग्राही है मधुर रुचिकर वातादिक तीनों दोषोमें पथ्य है स्तनकादूध वीर्यकू बधाणेवाली है (लवेकी भाजी) तीनों दोषोको हरणेवाली बुद्धिकू हितकारक रुचिकर और सामान्य तोर सब रोगोमें पथ्य(सुणीकी भाजी)गरम तुरी मधुर रुचिकर और पाचक है(सरसूके पत्ते) त्रिदो-

पहर रुचिकर और पाचक है (मेथीके पत्ते) पित्त करता तथा ग्राही है लेकिन् कफ वायु तथा कृमीका नास करता है रुचिकर तथा पाचक है (अरवीके पत्ते) अरवीके पत्तोका साग रक्तपित्तमें अच्छा है लेकिन् दस्तकूं कवजकर वायुकू कोपाता है इससें दस्त मरोडा हो जाता है (मोगरी) तीक्ष्ण तथा उष्ण है लेकिन कफ वायुकी प्रकृतीवालेकू अच्छी है (गलजीभीके) पत्ते हलके हैं कोढ प्रमेह खूनविगाड मूत्रकृच्छ्र तथा बुखारकू फायदेवद है (मूलीके पत्ते) मूलेके ताजे पान पाचक हलके रुचिकर और गरम मुलेकेपत्तोंकों बीकानेर गुजरात काठियावाडी तेलमें पकाते है सो तीनो दोषमें अच्छा गिणते है लेकिन कच्चे पत्ते पित्त और कफकू बिगाडते है, जेसलमेरके रावलजीने तो एसा फुरमाया है मूलामूल नखाव जो सुख चाहे जीवरो, कची मूली वहोत रोगोमे पथ्य भी लिखी है(परवल)हृदयकूं हितकर वलवर्द्धक पाचक उष्ण रुचिकर कामवर्द्धक हलका और चिकणा खासी खून विगाड बुखार त्रिदोष सन्निपात कृमिके दरदोंमें वहोत फायदे वद है फलोके सागोमें सर्वोत्तम साग परवल है,(दुधी) मीठी धातुवर्द्धक पौष्टिक शीतल और रुचिकर है लेकिन पचणेमें भारी कफ करता दस्तकू वध करता गर्भकू सुकाणेवाला दुधीका साग जिसकू कदु मीठातूबा लवाभी कहते है इसका सीराभी वणता हे (कोला पेठा) इसकी दो जात हे एक तो पीला लाल सोतो कोला, जिसका साग होता है दुसरेका पेठा आगराई मुरब्बा वणता है वो सुपेद होता है वहोत मीठा ठडा रुचिकर तृप्तिकर पुष्टिकारक वीर्यवर्द्धक है भ्रांति और थकेलेकों मिटाता पित्त खूनविगाड दाह वायूकों मिटाता है छोटाकोला ठडा और पित्तकू मिटाता है विचलेकदका कोला कफ करता है और वडे कदका कोला वहोत ठडा नहीं मीठा है खारवाला अग्निदीपक हलका मूत्राशयकू साफकरता पित्तके रोगोंकों मिटाणेवाला एक कविने कहा है, वेंगन कोमल पथ्य है, कोला कचा जहर है हरडे कची और पकी सदा पथ्य है वेर कचा पका सदा कुपथ्य है, वेगण वृताक, वेंगणकी दो जात है काला और सुपेद, काला नींद लाणेवाला है रुचिकारक है भारी तथा पौष्टिक है सुपेद दाह तथा चमडीका दरद पैदा करता है सामान्यतरे वेंगण गरम वायुहर तथा पाचक कहलाता है एक दुसरीतरेके गोल काचर नीवू जैसें गोल वेंगण होता है वो कफ तथा वायु प्रकृतीवालेकू अछा है तैसें खुजली वातरक्त बुखार कामला और अरुचिरोगवालेकू हितकारी है(घीया तुराई)स्वादिष्ट तथा मीठी है वायु पित्तकू मिटाती है बुखारके रोगीकूभी अछी है (तोरी) वायडी हैं ठडी तथा मीठी है कफ करती है लेकिन् पित्त दमा श्वास बुखार कृमि इतने रोगोंमें अछी है (करेला) कडवा गरम रुचिकारक हलका अग्निदीपक माफक सर खावे तो सव प्रकृतीके अनुकूल है अरुचि कृमि ज्वर वगेरे में पथ्य है(काकेडा) (कटोला)हलके अग्निदीपक रुचिकर मधुर पचेवाद तीक्ष्ण है गोला शूल पित्त कफ खास श्वास ज्वर प्रमेह अरुचि कोढ वायू तथा हृदयके रोगोंमें पथ्य है

(टीडोरा) भारी है ठंडा है वायडा है मोल उलटी करा देवे एसा है स्तनका दूध वधाता है दस्त कब्ज करता है पित्त रक्तदोष सोजा दाह तथा खास रोगमें पथ्य है लेकिन् बुद्धिकों विगाडती है(पडोला)वातहर पित्तहर ताकतवर रुचिकर शोषणकरता हितकारक परवलसें गुणमें कुछ कम है(ककडी)इसकी जात वहोत है जिसमें क्षीरा नांमकी है जिसकू आनंद श्रावकने मोकली रक्खी है उपाशक दशा सूत्रमें,उसके गुण, कची ठडी है लूखी है दस्तकू रोकती है मीठी है भारी है रुचिकर है पित्त हरता है पक्की ककडी अग्नि तथा पित्तकू वढाती है मारवाडकी ककडी जिसकूं गुजराती चीमडा कहते है ये तीनों दोषोंकों कोपातीहै इसवास्ते खाणे और साग लायक विलकुल नहीं है(कालिंगा,)मतीरा,तरबूज कफकारक वायुकारक लोक कहते है पित्तवालेकूं अछा है मतीरेसें क्षयकी बैमारी पैदा होती है इसकू तरबूज भी कहते है जो गरमी मोसममें पैदा होता है, ककडी और मतीरा निश्चै तीनों दोषोंकों बिगाडणेवाला है इसवास्ते किसीकामके नहीं वीकानेरवाले कचेका साग पक्केकूं हेमंतऋतूमें खाते है सो तदन खराब है जब करसान लोक कचीवाजरीका मोरण खाकर ऊपरसें कालिंगे खाते है उससें किसी अंशमें कम नुकशान करते हैं लेकिन् महीनोंतक सीत दाहज्वरका मजाभी वोही लोक चाखते है (वालोल) सेमकी फली,मीठी ठंडी भारी इसवास्ते वायडी है पित्तकू मिटाती है ताकत देणेवाली है(गुवार फली)लूखी भारी और कफ करता अग्निदीपक सारक पित्तहर लेकिन् वहोत वायु करती है (सहजनेकी फली) मीठी तुरी कफहर पित्तहर और अत्यंत अग्निदीपक है शूल कोढ क्षय श्वास तथा गोलेके रोगमें वहोत पथ्य है, सहजनेकी फली टाल वाकी सब फलियां वायडी है (सूरणकंद) अग्निदीपक लूखा तुरा हलका पाचक पित्तकरतां तीक्ष्ण मलस्तंभक रुचिकर हरस शूल गोला कृमि कफ मेद वाय अरुचि श्वास तिली खासी इन सब रोगोमें फायदे बंद है दाद कोढ रक्तपित्त वालेकू महा खराब है हरसकी बेमारीमें शाक इसकी रोटी पुडी सीरा वगेरे करके खाणेसे दवाका काम करता है कदसाकमें सूरणका साग श्रेष्ट है(आलु) ठडा मीठा रूखा मलमूत्रकूं रोकणेवाला पोषणकारक बलवर्द्धक स्तनकादूध वीर्यकू वधाणेवाला रक्तपित्तका नासकरता कुछ वायु करता है जादा घीके संग खाणेसे वायु नहीं करता अंगारमे वाफ करके अथवा घीमें तलकर पांच दस वर्षके बालकोंकों खिलाणेसें पोषण अछी तरे करता है हाडोंकों वधाता है(रतालु) (तथा सक्करकद)पौष्टिक तथा मीठा है मल रोकणेवाला कफ करता है (मूले) भारी है मलकू रोकता है तीखा है इससें गरम है अग्निदीपक रुचिकर है हरस गुल्म श्वास कफ ज्वर वायु नाकके रोगोमें हितकारी है कची मूली तीनों प्रकृतीमें अछी है पक्के मूले (वडे मूले) लुखे जादा गरम और कुपथ्य है मूलेके ऊपरके छिलके भारी है और तीखा है सो अछा नहीं मूलेकू गरम जलमें वाफके फेर जादा घीमें या तेलमें तलते है सो तीनों प्रकृ-

तीकूं अनुकूल पडता है गाजर मीठा रुचिकर तथा ग्राही है खुजली और खून बिगाडके रोगोमें अछा नहीं हे कितनेक रोगोमे अच्छाभी हे लेकिन वीर्यकू बिगाडता हैं इसवास्ते इसकू समझदार लोक नहीं वरतते है जैनकोम इसीवास्ते जमीकंदोसें विशेप परहेजरखती है (कांदे) डूगली बलवर्द्धक तीखा भारी मधुर रुचिकर वीर्यवर्द्धक कफ तथा नींद पैदा करे क्षीणता रक्तपित्त उलटी हैजा कृमि अरुचि पसीना सोजा खूनके सब रोगोंमें हितकारी है इसके साग मुरब्बे पाक वगेरे लोकवणाते है दुरगध इसमें बहोत है कादे और लसणकू तो गोकुल वैष्णव बिलकुल छीते नहीं बचे हैं सो अछे हैं रांधणेकी युक्ति और दुसरी चीजोके सयोगसे साग तरकारीके गुणोंमे फेरफार होता है जो साग वायु करता होता है वो बहोत घी तेलके सयोगसें वायु नहीं करता जो साग पचणेमे भारी होता है उसकू पहली खूब जलमे वाफके फेर घीमे तेलमे लोक छमकते है सूरण आलु वगेरे कंदोकों वो नुकशांन नहीं करता बहोत लाल मिरच मसाला खाणा अछा नहीं क्योंके जादा मसालोंसें पाचन शक्ति कम होकर दस्त सग्रहणी आम्लपित्त रक्तपित्त कुष्टादिक खून विकार हो जाता है

॥ उजाला ४ दूध विचार ॥

(सामान्य गुण) दूधका मीठा ठडा पित्तहर पोषण करता दस्त साफलानेवाला वीर्यकू जलदी पैदा करनेवाला बल बुद्धि वधानेवाला मैथुनशक्ति वधानेवाला अवस्था स्थिर कर्त्ता ऊमर वधानेवाला रसायणरूप तुटे हाडोको सांधनेवाला भूखेकू बचेकू वृद्धकू तृप्तिदेनेवाला स्त्री भोगादिकसें क्षीणको तथा जखम वालेकों जीर्णज्वर भ्रम मूर्छा मन सबधी रोग शोप हरस गुल्म उदररोग पांडु पैसाबका रोग रक्तपित्त थकेला तृपा दाह छातीके रोग शूल आफरा अतीसार गर्भश्राव इनोमें दूध पथ्य है विशेप रोगोमें दूध पथ्य है,सन्निपात नवीनज्वर वातरक्त कोढादिकमें मना है नवीनज्वरमे कोनेनपर डाकदर पिलाते हैं (सन्निपातकी अवस्थामे दूध जहर है) निश्चय सिद्धांत है सुजाक फिरगकी तरुण अवस्थामें भी दूध खराब है लिस्सी पीते है वो गठियाकी जड है) धातूकीवृद्धि जितनी जलदी दूधसें होती है एसी कोइभी चीजसें नहीं होती (दुहा) वीर्यवधावण बलकरण जो मोह पूछो कोय पयसमान तिहु लोकमे अवरनऔपध होय १ गायका दूध ये सब गुण धराता है ऊपर लिखे मुजब (काली गायका दूध) वायु हरता और जादा गुण करता है (लाल गायका) वात हर पित्त हरभी है(सुपेदगायका दूध) जरा कफ करता तुरतकी जणी भई तथा वछडे विगरकी गायका दूध तीनो दोषोको पैदा करती है वाखडी याने व्यायेकू दोय चार महीने वीतने वाली गायका दूध उत्तम है इस उपरात जैसा खुराक खानेमें आवे गुण दोषका आधार उसपर है (भैंसका दूध) गुणमें कितनेक दरजे गायसें मिलता है मीठाजादा जाडाजादा भारी वीर्यजादावधानेवाला कफकरता नींदकू

निमक है, इस उपरांत गहूंकेपदार्थ पूडी रोटी चावल घी मख्कण कालीमिरच छोटीपीपर पाकमें डाले जाय एसी पुष्ट दीपन चीज भी दूधके मित्र वर्ग है, (दूधके दुस्मन) सींधा निमक टाल सब तरेका खार, दूधके गुणकूं बिगाड डालता है, आंवले टाल सब तरेकी खटाई, गुड मूंग मूले साग दारू मछी मांस दूधके संग मिलके दुस्मनका काम करता है दूधके संग निमक खार तथा गुड खानेसें कोढ प्रमेह मूत्रकृछ् वगेरे रोग पैदा करता है दूधके संग मूग मोठ मुले गुड तथा मछी मांस कोढ चमडीका रोग करता है दूधके सग बहोत साग दारू आसव खानेसें पित्तके रोग होकर मर जाता है ऊपर लिखी चीजोंकों दूधके सग खाने पीनेसे अवगुण होता है ये बातकी तुरत खबर नहीं पडती लेकिन् सर्वज्ञ परमात्मानें भक्षाभक्ष निर्णय जो फुरमाया सो जिन दत्तसूरि महाराजने विवेक विलास चर्चरी आदि ग्रथोंमे लिखा ऐसे महा पुरुप विद्वानोंके वचनोंपर प्रतीति रखना और सर्व जीव हितकारक परम पुरुषकी आज्ञा मुजब चलना ये सलामत रस्ता है जो इन बातोंमें प्रजाकूं नुकशानका रस्ता सर्वज्ञ महावीरकू दीख पडा सो कहा वो वचन पूर्वानुगत बडे दादा साहिबनें तथा और २ ग्रथोमे उमास्वाती वाचकादिकोने भी ऐसा ही लिखा सत्य वचन सदा पथ्य है सइकडो अदमी जुदे २ नहीं समझ शके ऐसे रोगोके सपाटेमें आते है तब अदम्योंको आश्चर्य आता है मतलब बहोत दिनपहले जो ऐसे विरुद्धखान पान करा होता है उन २ रोगोंका दूरकारण वो विरुद्ध पूर्वोक्त बावते समझनी इय संयोगी जहर जाणना, सदापथ्य और प्रमाणोपेत आहार करनेवालोंको अचानक जो रोग हो जाता है सो अज्ञानपनेसे ऐसे सयोग विरुद्ध खान पान कभी करते हैं या किया भया होता है वो ही समय पाय समवायोके सग झट रोगी कर देता है इसके अलावा संयोग विरुद्ध और भी खान पान बहोत है क्रम २ सें लिखेगें ॥

॥ घी–घृत ॥

(घीके सामान्य गुण) रसायण मधुर नेत्रोंकोंहितकर अग्निदीपक शीतवीर्यवाला बुद्धि बधानेवाला जीवनदाता शरीरकुनरमकरता बल कांति वीर्यकू बधानेवाला मलकू खिसानेवाला भोजनमे मीठास दाता वायुके पदार्थोंका वायु, सग खानेसें मिटानेवाला गड गुमडकू मिटानेवाला जखमीकू बलदाता कठ तथा गायन सुधारनेवाला मेद कफकूं बधानेवाला अगारसेजलेकू फायदेबंद वातरक्त अजीर्ण नसा शूल गोला दाह सोजा क्षय कानका मस्तकका खून बिगाड इत्यादि रोगोंमें फायदे बद है सामज्वर याने आमसंयुक्त नये बुखारमें सन्निपात बुखारमें कुपथ्य है, सादे बुखारमें बारेदिन बीते पीछे कुपथ्य नहीं, बालक वृद्धकू बधेभये क्षयरोगीकू कफकेरोगमें आमवातवालेकु खुराकमें हैजेमे मलबधमें बहोत दारू पीनेसें भये मदात्पय रोगमें और मदाग्निमें इतने रोगोंमे घी नुकशान करता है, सादे अदमीके हर वखत भोजनमें थकेलेमें क्षीणतामे पांडु

रोगीकूं, आंखोके रोगमें ताजा घी फायदे चद है, मुर्छा कोढ जहर उन्माद वादी तथा तिमिर आंखोंमें अंधेरी आवे सो इन रोगोमें एक वर्षका पुराणा घी फायदे चद है श्वास वालेकू बकरीका घी पुराना फायदेवद जादा है, गाय भैस वगेरेके दूधके गुणोंमें जेसा तफावत है ऐसा उनोके घीमेंभी समझलेना सब तरेके मलमोमे पुराणा घी गुणकरता है पुराणा घी मलमके जितने लगबग गुण धराता है ॥

॥ मक्खण ॥

गइयाका मख्कण हितकारी है बलवर्द्धक है रगसुधारता है अग्निदीपनकरता है दस्तकू रोकता है वायु पित्त खूनविगाड क्षय हरस अर्दितवायु तथा खासीकी वैमारीमें फायदा करता है बचोकों अमृतरूप है भैंसका मख्कण वायु तथा कफ करता है भारी है दाहकू पितकू श्रमकू मिटाता है मेद तथा वीर्यकू वधाता है (वासी मख्कन) वासी मख्कण खारा तीखा और खट्टा होनेसे उलटी हरस कोढ कफ तथा मेदकू पैदा करता है॥

॥ दही ॥

(गुण दहीका) गरम अग्नि दीपक भारी पाचनभयेवाद खट्टा दस्तकूं रोकता है पित्त खूनविगाड सोजा मेद कफकू पैदाकरता है मूत्रकृछ श्लेष्म ठडकातप अतिसार अरुचि और दुर्बलतापर दही अछा है लेकिन् युक्तिसें खाना चहिये, दही पांच तरेका होता है मीठा और खट्टा असलमे दोजात है १ (मददही) कुछ एक तो जाडा लेकिन् दूधकी तरे समझमें नहीं आवे ऐसे स्वादवाला होय सो मददही दस्त पैसावकी प्रवृतिकू और तीनो दोषकू और दाहकू पैदा करता है २ (स्वादुदही)जो दही घट्ट हो गया होय अछी तरे जिसका स्वाद मालम देवै मीठे रसवाला होय प्रगट तो नहीं मालम देवे ऐसा खट्टा रसवालाभी होवे वो स्वादुदही सरदी मेद तथा कफ पैदा करता हे लेकिन् वायु हरता है रक्त पित्तमें भी फायदा करता है३(स्वाद और अम्ल दही) खट्टा और मीठा घट्ट जमाभया जरा तुर लगे ऐसादही मध्यम गुणवाला समझना ४ (अम्ल दही) जिसमें मीठास बिलकुल होय नहीं खट्टास्वाद प्रगट मालम देवे ऐसादही अग्निप्रदीप्त करे लेकिन् पित्त कफ और खूनकू वधावे और विगाडे ५ (अत्यम्ल दही) जिसके खानेसे दांतअचीज जाय रूंवाडे होजाय कठमे जलण होजावे ऐसा खट्टा दही अग्निप्रदीप्तकरे लेकिन् पित्तकू खूनकू बहोत ही विगाड देता है, इन पाचों जातमे स्वादाम्ल दही अछा है (विचार) पकाये भये दूधमे जांवण दिया भया दही, कचे दूधके जमाये भये दहीसे गुणकारी है, ऐसा दही रुचि करता पित्तकों वायूकों मिटानेवाला धातुओकों ताकत देनेवाला है, मलाइ निकाले पीछेका दही) दस्तकूरोकता है ठडा है वायूकोंपैदाकरनेवाला हैं हलका है ग्राही है अग्नि दीप्त करता है इसवास्ते ऐसा दही पुराणे मरोडे ग्रहणी दस्तकू हितकारी है कपडेसें छाणा भया दही बहोत स्निग्ध वायुहरणकरता कफ पैदाकरता भारी ताकतवर पुष्टि-

कारक रुचिकारक और मीठा होनेसें पित्तकू वहोत वधातानहीं, जो कपडेमेंबांध पाणी टपकादियाजावे उस दहीका इतना गुण है, अब ऐसेदहीमे मिश्री मिलाय खानेसें प्यास पित्त खूनविगाड तथा दाहकू मिटाता है गुडडालके खायाभयादही वायुकों मिटाता है पुष्टिकरता भारी है, रातकू सब भोजनकी मनाई वैद्यकशास्त्र और धर्मशास्त्र करता है जिसमें भी दही खानेकी बिलकुल रातकू मनाई है कोइमहाभयकररोगके कारण वैद्य बतावे तो इतनी चीजोंमे की कोईभी चीजका सयोग होना, जैसे लूण जल घी सक्कर बूरामिश्री वगेरे सहत मूंगकीदालके संग वाफनिकाला दहीं आंवला वगेरे मिलाया अनुपान होना रक्त पित्त तथा कफ संबधी कोइ भी रोग शरीरमे होय तो ऊपर लिखी चीजे डालकरभी खानेसे नुकशान रातकू होगा, ऋतु प्रमाणसें दही खानेका विचार देखे तो) हेमत शिशिर वर्षा ये तीन ऋतुमें दही दुरस्त है और (शरद) आसो काती (ग्रीष्म) वैशाख ज्येष्ठ (वसंत) फागुण चैत्र इनोमें सबकू दही मना है इस ऊपर लिखे नियम विगर वीकानेरवाले ओ-सवालोकेतरे अपनी इछामुजब चाहेजैसा वहोतदही खानेवाले बुखार खूनविगाड पित्त वातरक्त कोढ पांडू भ्रम और भयंकर कामला सोजा कुडजाणा बुढापेमें खासी निद्रानास कमऊमर हो जाणा इत्यादि विकार जरूर होजायगा क्षयरोगी वादीकारोगी पीनसकारोगी कफकारोगी इनोनें खाली दही भूल चूक कभी नही खाना संयोगसें जेसेंकी गुड कालीमिरच औरदहीसें तो प्रायें पीनस मिट जाता है खानेसें इत्यादि, दहीका योग याने दोस्त) लूण,खार घी सक्कर बूरामिश्री सहत आंवले इनोके सग दही खाना, गरमा गरम चीजोकेसग दहीखाना जहर जैसा है,घीके सग दही वायु हरता है आंवलेकेसंगखायाभया कफ हरता है सहतके सग खानेसें पाचनशक्ति वढती है तथा थोडासा विगाड भी करता है मिश्री बूरा कदके संग दही दाह खून पित्त तथा प्यासकू मिटाता है गुडके सग खायाभया दही ताकतदेता है वायुकूं दूर करता है तृप्ति करता है निमक जीरा और जल डालके दही खानेमें आवे तो विशेप नुकशान नहीं करता तो भी जिस रोगोंमें दही मना है उस रोगमेंतो निमक जल मिलानेपर भी दही विकार करता है ॥

॥ तक्र–छाछ ॥

(छाछकी जाति और गुण)जादा पाणी डालनेसें या कम डालनेसें अथवा विगर पाणी-की छाछके गुणोंमें फेरफार होता है पाणी डाले विगर तेसें दहीकीमलाई विगर निकाले जो विलोया जावै वो घोलिया कहलाता है, मलाई निकालकर विलोया भया मथित कह-लाता है, आधादही आधाजल डाल विलोया दही उदश्वित् कहलाता है जिसमें पाणी जादाडालके मक्खन विलोयकरविलकुल निकाल लिया जावै सो छछिका कहलाती है, घोलमें मीठा डालकर खावै तो कैरीके रस जेसा गुण करता है, मथित वायुकू पित्तकू तथा कफकूं हरनेवाला और प्यारा लगता है, तक्रउसका नाम है जिस दहीके शेर भरमें पाव पाणी डाला जावै सो छाछ दस्तकूं रोकती है पचती वखत

मीठी है इसवास्ते पित्त नहीं करती और तुरा उष्ण वीर्य तथा लुखी होनेसें कफकूं तोडती है योगचिंतामणि तथा श्रीआयुर्ज्ञानार्णव महासहितामे श्रीहेमचद्र लिखता है तक्रका यथा योगसेवणेवाला कभी विवहारनयसें रोगी नहिं होता और तक्रसे जले भये रोग फेर पीछे कभी होतेभी नहीं जैसें स्वर्गके देवतोकूं अमृत सुख देता है तैसे मृत्यु लोकमे अदम्योको तक्र अमृत समान है तक्रमें इतना गुण लिखा है लेकिन् वो गुणोका मुख्य आधार जिस तरेके दहीमेंसे छाछ करनेमें आवे उसपर समझणा, उदश्वित जातकी छाछ कफ करती है, ताकतवढाती है, और आमकू मिटाती है, छछिका हलकी पित्तकू थकेलेकू प्यासकू मिटाणेवाली वायुकू मिटाणेवाली कफकू करनेवाली है, निमक डाल उपयोगमे लीभई छाछ अग्नि प्रदीप्त करता और कफकू कम करती है, दही खराब होय उसकी छाछ भी अवगुणकारी होती है (छाछ पीणेकी विधि) वायुकी प्रकृतीवालेने अथवा वायुके रोगीने खट्टी छाछमें सींधा निमक डाल पीणी अछी है, पित्त प्रकृतीवालेने अथवा पित्तके रोगीने मिश्री डाल मीठी छाछ पीणी अछी है, कफ प्रकृतीवालेने अथवा कफकेरोगमें सेंचलनिमक सूठ मिरच पींपरका चूर्ण मिलाकर पीणी अछी है, ठड कालेमें अग्नि मदमे कफके भये रोगोंमे मल मूत्र साफ नहीं ऊतरता होय जिसमे जठराग्निके विगाड उदररोगमे गोलेकेरोगमे बवासीरकेरोगमे इकेली छाछका ऐसा प्रयोग है सो असाध्य सग्रहणी तथा हरस जैसा भयंकर रोग अछे होते है, लेकिन् देशी पूर्ण विद्वान वैधकी सलाहसे उपयोग करना कारण आम्लपित्त सग्रहणी एक सदश प्राय रोग है वैधकी पूरी अकल वरी निदान याने रोग परीक्षामे हीं है अम्ल पित्तकू तक्र जहर है ॥ (छाछ पीनेकी मनाई) चोटलगेभयेजखमी सोजेकानिजरोग जोकी मलसें होता है, श्वासकेरोगीकू, शरीरसूककर दुर्बल हो गया होय जिसकू, मूर्छा भ्रम उन्माद फकत प्यास के रोगीकू रक्तपित्तके रोगीकू वैशाख जेठके महीनेमें आसोजकाती केमहीनेमे राजयक्ष्मा तथा उर क्षत रोगीकू तरुणज्वर सन्निपातज्वरीकों इत्यादि रोगीकू छाछ पीणा नहीं पीनेसे दुसरे अनेक रोग पैदा होनेका सभव है ॥

॥ उजाला ५ मा फल वर्ग ॥

अपणे मुलकमें अनेक फलोका लोक वरतावा करते है जिसमें मुख्य(केरी)सामान्यतरे केरी हितकारी है कचीकेरी गरम खट्टी रुचिकर ग्राही तथा रुचिकर है पित्त वायु कफ तथा खून विगाड करती है लेकिन् कठके रोग वायु प्रमेह योनिदोप व्रण अतीसार तैमे प्रमेह रोगमे अछी है, (पक्कीकेरी) वीर्यवर्द्धक है कांतिकारक तृप्तिकारक मांस तथा वल वधानेवाली है कुछ कफ करती है इसवास्ते इसके रसमे सूठ थोडीसी डालके उपयोग करना (कचीमीठीकैरी) मकसूदावादमे होती है जातिभेदसे कुछ २ विशेप गुणमें फेर फार भी होता है(सामान्य गुण) एकजेसा सव केरीका समझना (जामून)मलकू कचजकरे

मीठा कफका नासकरे रुचिकरता वायुकोंमिटाणेवाला प्रमेहकोंमिटानेवाला उदरविकारमेंइसकारस अथवा सिरका अजीर्ण मंदाग्नि मिटादेता है (बोर) अनेक जातिके होतें है लेकिन् (खट्टा और मीठा)कफकरता बुखार खासी इनोंकों पैदा करता है इनोके अदर लट्टे होती है इत्यादि तुछफलोकों जैन सूत्र अभक्ष लिखता है इस वास्ते खुलेख्याल खाणा अछानहीं है (अनार) सर्वोत्तम फल है तीनों दोषोमें हितकर है अतीसारके रोगमें फायदेंबद है ऊमदा जातिकाबलकी है वाकी कंधार जोधपुर पूना वगेरेकीभी अछी है (केला) केलाभारी है ठंडा रुचिकर पित्त नाशक है बलदायक है वृष्य है वीर्य वर्द्धक है तृप्तिकारक है. मांसवर्द्धक है कफकर्त्ता है दुर्जर याने पचनेमें भारी है प्यास ग्लानी पित्त रक्तविकार प्रमेह भूख नेत्ररोगोंकू मिटाता है भस्मकरोग जिसमे मनुष्य कितना भी खाय लेकिन् तृप्तिनहींहोय उस रोगमे केला फायदे बद है (आंबला) स्वादमे तुरा तथा खट्टा है गुणमें रसायण पित्तशामक त्रिदोषहर सारक बलबुद्धिदायक वीर्यसुधारक पौष्टिक स्मृतिदाता थोडेसेमें समझलेना सर्वोत्तम फल है (गीले) हरे आंमलोमें इतनेगुण है लोकसमझते नहीं इसवास्ते जहां बजारोंमें विकते है उहां विशेष कोइ लेता भी नहीं, फकत दिल्ली वनारस वगेरे शहरोमें मुरबा और आचार भी बणाते हैं लेकिन् मुरबा जेसा बनारसका है वैसा और जगे नही देखा, शेरकेआठ ही तुलते हैं सूके आंवले काली मिरच मिलाके चैत आसोजमे भोजनपर फक्की बीकानेरवाले मारवाडी बहोतलेते हैं हरकिसीरोगमे लेकिन् तैलका वरतावाबहोत इसवास्ते गुण धुप जाता है, आंवले सूकेकू हरेआमलेके रसकीया सूके आंवलेके काथकी, भावना सो वेरदेके सुकाता जाय बाद इसका सेवन करे ऊपरसें दूध पीवे इसके गुणोकी सक्षामे लिख नहीं सकता, प्राये सर्व रोग जाकर बूढापा जरा बिलकुल नहीं आती गहू घी बूरा चावल मुंगकी दाल पथ्य खाना, इसके कचेफलभी कभी नुकशान नहीं करते मुरब्बे वगेरे सदा खाना लाभकारी है, (नारंगी) सतरे मधुर रुचिकर शीतल पौष्टिक वृष्य जठराग्नि प्रदीपक हृदयकू हितकर त्रिदोषहारक शूल तथा कृमिहारक मदाग्नी स्वास वायु पित्त कफ क्षय शोष अरुचि ओकारी वगेरे रोगोंमे पथ्य है, नारगीकी मुख्य दोय जात है खट्टी और मीठी उसमेंसे खट्टी नहीं खाणी (करने जभीरी) वगेरे बहोत जात है, सर्वोपरी नागपुर दक्षणका सतरा ऊमदा होता है (दाख अगूर) गीलीदाख खट्टी औरमीठी तैसें काली और सुपेद मुंबईमें कार्फर्डमारकीटमें मणो बध हमेसां मिलती है और भी जगे २ अंगूरकी पेटियां विकती है खट्टीदाख नहींखानी हरीदाख कफ करती है इसवास्ते थोडासा सींधानिमक लगाके खानेसें कफ नहीं होता दाख उत्तम मेवा है सूकी मुनक्का कालीदाख सब प्रकृतीके और सब रोगोंमे पथ्य है बेमारोकों वैद्य मना भी नहीं करता मीठी है तृप्ती करती है नेत्रोंको अछी है ठंडी है भ्रमनाशक है सारक याने दस्त

साफ लाणेवाली है पैसाव खुलास लाती है पौष्टिक है खूनविकार दाह शोप मुर्छा बुखार श्वास खास मदिरापीनेसेभयेरोग उलटी सोजा वातरक्त वगेरे रोगोकों फायदेवंद हे (नींबु) नींबु खट्टे और मीठे दो जातके होते है मीठा पूरवदेशमे वहोत है जिसमें वडेकू चकोतरा कहते है फलोमें मीठेकी गिणती है खट्टेकू एकेला कोइ खाताभी नहीं डाकटर सूजनपर मसूडे पककर खूनगिरता होय जिसपर चूसाते भी है सिकजी जलमे डालके पिलातेभी है बाकी तो प्रजा आचार चटणी मसाला दाल सागमें रसडालके खाते है लेकिन चूसके हमेस कोइ खाता नहीं सयोगसें खट्टे नींबु फायदा करता है (मीठा नींबू) स्वाद मीठा तृप्तीकरता अतिरुचिकारक हलका कफ वायु उलटी खास कठरोग क्षय पित्त शूल त्रिदोप मिटाणेवाला मलस्तभक है हेजा आमवात गोला और कृमि पेटमे कीडोकानासकरता जिसकापेट जकडगयाहोय दस्तबद होकर बद्धगुदोदररोग भया होय खाणे पींणेकी अरुचि भई होय पेटमें वायू तथा शूलका रोग होय किसी तरेका शरीरमें जहरचढा होय इन सब रोगोमें नींबू देणा अछा है, नींबूकी खटाईसे लोक डरके नीबुकू वापरते नहीं लेकिन ये ना समझपणेकी बात है बुखार जैसी बेमारीमें भी जो नींबुकू युक्तिसे वापरे तो नुकशानके बदले फायदा करता है च्यार फाड एकमें सूठ सींधा लूण, एकमें काली मिरच, एकमें मिश्री, एकमे डीकामाली, ये चुसाणेसें । जी मचलाणा कै बदहजमी बुखार प्रमुख मिटजाता है और अनेक युक्तिया है (खजुर) पौष्टिक स्वादिष्ट मीठी ठडी ग्राही खून साफ करता हृदयकू हितकर त्रिदोपहर श्वास थकेला क्षय विप प्यास शोप याने वदनसूकणा आम्लपित्त जैसे महाभयकर रोगमें पथ्य और हितकारक है उसमे इतना अवगुण हे पचणेमेंभारी कृमि पैदा करता है इसवास्ते छोटे बच्चोंकू खजुर कोइजातकीभी खाणे नहीं देणी खजुरकू घीमे तलणेसें फेर ये दोनो दोप कितनेक दरजे कम हो जाते है फेर गरमीकी मोसममें खजुरका पाणीकर उसमें जरासा अमलीका खट्टा पाणीदेकर सरबतकी तरे पीणेमे आवे तो फायदा करता है (पींड खजुर) सूकी खारक खजुरही है गुणमें जरा फरक है (फालसे)तैसें (पीलू) तैसें करोदेके फल पित्त तथा आमवायूका नास करता है सब तरेके प्रमेह रोगीकू फायदेवद है (सीताफल) मधुर ठडा पौष्टिक है लेकिन कफ वायु करता है दक्षण हैदरा-बादके गरीब लोक खाकर पेटभर पाणी पीकर टक टालते है (जाम फल) स्वादिष्ट ठडा वृष्य रुचिकर वीर्यवर्धक और त्रिदोपहर है लेकिन तीक्ष्ण है भारी है कफ करता है वायु कर्त्ता है उन्मादरोगी पागलकू अछा है (सफरजद) मधुर रुचिकर हृदयकू हितकर शीतल ग्राही और पित्तहर है अतीसार रोगीकू फायदेवद है और उसका मुरब्बाभी लोक बनाते है (आलु) हृदयकु हितकर ठडा भारी उष्ण जड ग्राही तथा धातुवर्धक प्रमेह हरस ज्वर तथा वायुका नास करता है (अजीर) ठडाऔर भारी हे प्रमेह मिटाता है (गूलरकाफल)

लेकिन इसमे छोटे जीव होते है इसवास्ते वड पींपर पीलू ढालू तथा गूलर वगेरे पांच दरखतोकेफल अभक्ष जैन सिद्धांत लिखता है रोगादि कारणमें यतना लिखा है असल अंजीर कावल मेहोतेहे मुसलमीनहकीम वेमारोंकों वहोत खिलाते है (कची अमली)अमलीके फल अभक्ष है सदा छोडणेलायक है रोगकर्त्ता है रक्तपित्त आमके तथा रोगकू पैदा करता है(पकी अमली) वायू रोगमें शूल रोगमें फायदे वंद है वहोत ठंडी है इस वास्ते सांधोंकों पकडे है नसोकों ढीला करे है इसवास्ते हमेस खाणी अछी नही मधरास द्रविडदेस कर्णाटकदेश तैलगदेसवाले इसका कट्ट मिरची मसाला तूरकीदालकापाणी चावलोंका मांड डालकर गरमपकाकर भातके सग नित्य दोनो वखत खाते है मावरा पडणेसें गुजराती तथा गरम मुलकोंमें गरम ऋतुमें लोक दालमें सागमें और गुजराती लोक गुड डालके हमेस इसकी कढी वनाकर खाते है वेमारलोकभी हैदराबादमे इमलीका कट्ट खाते है लेकिन एसा निडर होकर अमली जादा खाणा अछा नहीं है ऋतु तासीर और रोग और अनुपानका विचार कर वरतणा अछा है, क्योके नालक वचन है, गया मरदजो खाई खटाई, गईनारजो खाई मिठाई, गईहाटजहां मंडी हथाई, गया वृक्ष जहां वुगला वैठा गया घर जहां मोडा पैठा, नई अमलीसे एकवरसकी पुराणीइमली अछी उसकेभी निमक लगाकर रखणा चहिये (नालेर) वहोत मीठा चिकणा हृदयकू हितकर पुष्ट वस्ति सोधक रक्तपित्तहर गरमीपारेवगेरेकी तथा आम्लपित्तमें इसका पाणी तथा नालिकेर खडपाक वहोत फायदेवंद है और वीर्यवर्द्धक है (सकर टेटी) मीठे काचर खट्टेकाचर इयभी एक ककडीकी जात है नदीकी रेतमें पके है (खरबुजा) गुजरातमें सकर टेटी कहते हैं ये स्वादमें मीठा होता हे इसका लोकपनावनाते है गरम होता है हेजा चलता है उस दिनोंमे इसकु विलकुल खाणा नही सुणा है खरवूजेकापना और चावलसग खाते जो गुचलका आ जावे तो प्राणी मर जाता है कुछ इलाजभी नही है जमीनखेतोमेपके सो ककडी और काचर कहलाता है गुजरातवाले कोठींवडा कहते है इसकु सुकाकर खेल खेणाते है काचरोकु सुकाकर रखते है स्वादिष्ट तो होता हे लोकवहोत खातेभी है लेकिन् गुणोंमे तो सवसे हलके दरजेके फल ककडी और काचर है क्योके तीनों दोषोंको विगाडता है कचे वायु कफ करते हैं पकेवाद तो जादाही कफ वायुकों विगाडते है तरवूज मतीरा इसीदरजे गुणमे है अभ्रक पारदभस्म सूवर्णभस्म इन तीनोंको ककाराष्टक खराव कर डालता है कोला १ केलकद २ करोदे ३ कांजी ४ कारेला ५ कैर ६ ककडी ७ कालिंगा ८ (विदाम चिरोंजी पिस्ता) ये तीनों मेवे हितकर है सव तरेके पाक लड्डु वगेरेमें लोक इनोकों खाते है फल और वनस्पतीकी अनेक जाति है (प्रसिद्ध) विशेप वरतावेका गुण दोष लिखा है इतना जाण लेगा उसकी वुद्धि अनेक वस्तुओंपर प्रसार करेगी विदाम मगजकूं तरावट और पुष्ट करता है लेकिन कडवे (खारे) विदाम

जहरका असर करता है बालकके खणोमे तीन च्यार कडवे विदाम आजाय तो पूरा जहरका असर करके प्राणोंकी हानी कर देता है इसवास्ते (चाय २ के) उपयोग करणा विदाम पचणेमें भारी है ॥

॥ उजाला ६ छट्ठा गुड-खांड-मिश्री ॥

सेलडीके रससें केइ पदार्थ बनते हैं जिसमेसें गुड खांड मिश्री मुख्य पदार्थ है आगे तो सक्कर सांठे ऊखके रससेंही बणती थी लेकिन आजकल (पदार्थ विद्याके) सोधकोने ताड फल खजूरादिक बहोत पदार्थोसे सक्कर बणाणी सरू करी है इसवास्ते गुड खांडके अदर बहोत तरेका भेल होके आता है उसकी फेर मिश्रीभी वैसीही बणणे लगी है व्यापार और खाणेके पदार्थोमे फकत धनकी लालचसें एसा दगा होणा सरू भया है और ऐसे दगेकी भेलकी वस्तु जाहिरा बजारमें बिक रही है ऐसी चीजोंपर सरकारकू बदोबस्त और निगेदास्ती करणेकी जरूरी है के खाणेपीणेके पदार्थोंमे क्या क्या चीज मिलके आती है ये बात लोक नहीं जाणते हैं और प्रजाका बहोत लोक विचले दरजेके तथा गरीबी हालतमें है सो जो चीज सस्ती मिलती है वोही लेकर अपणा काम चलाते है लेकिन व्यापारकी हरीफाईसें एक दूसरेसे सस्तामालबनाणेकू उसमें कितनीक चीजें नुकशानकारीभी मिला देतें हैं बजारमे हरसाल नई २ तरेके गुड खांड बनके आती है इसका सामान्य प्रजासे निश्चय होणा मुस्कल है के कोणसी सक्कर तथा मिश्री अछी है इसवास्ते जादा निश्चय और सुधारा तो जबी हो सकता है के देसी गुड खाडही व्यापारीवेचे और प्रजा वापरे अब इनोका सामान्य गुण दोष इहा लिखताहू, नया गुड गरम तथा भारी होता है खून विकार तथा पित्त विकारकू नुकशान करता है पुराणा गुड एक वरसके पीछे तीन वरसका बहोत अछा होता है, हलका अग्नि प्रदीपक और रसायणरूप है फीकापणा पांडू पित्त त्रिदोष और प्रमेहकू मिटाता है दवायोंमें पुराणा गुड काम देता है सहत नहीं होय तो पुराणा गुड लेणा चहिये तीन वरसके गुडसग आदा खाणेसे कफका रोग मिटता है हरडेके सग खाणेसे पित्तका रोग मिटता है सूठके सग खाणेसे वायूका नास करता है तीनवर्ष पीछे गुडका गुण कम हो जाता है पुराणा तीन वरसका गुड गोला बवासीर अरुचि क्षय खास छातीकाजखम क्षीणता पाडु किसीअनुपान यादवायोंके सग फायदा करता है ऊपर लिखे रोगोंपर, नयागुड कफ श्वास खास कृमि तथा दाहकू पैदा करे है गरमी पित्तकी तासीरवालेने नयागुड कभी खाणा नहीं चहिये, चूरमा लापसी सीरा वगेरे चीजोमें गिमार लोग गुड बहोत वापरते हैं मजूर लोग रोटीवगेरेमें हमेसां गुड खाया करते है ये गुड साल उतार होणा नहीं तो तनदुरुस्तीमें खलल पोहचाये विगर नहीं रहेगा चूरमा लपसी वगेरे गुडके पदार्थोंमें घी बहोत होणेसे गरमी बहोत नही करता दुबले बदनवाला सूकगयाहोय जखम

चोट लगी होय चवासीर श्वास मुर्छाकारोगी थकाभया रस्तेचलणेसें वहोत महनतका कामकियाहोय गिरणेसे पछाट लगी होय जिसकूं कोइ किसमका भैणा दिया होय उससें मनमें फिकर होय, नसा,हर किसमकाजहर चढा होय मूत्रकृच्छ पथरीकारोगहोय, जीर्णज्वरसेंक्षीणहोय विषमज्वरलगाहोय तो पींपर हरड सूठ अजमोद इनोकेसंग एकके अथवा चारोंके पुराणे गुड सग दोनों ज्वर मिटता है रक्तपित्त और दाह रोगीकूं भिगाकर सरवतपिलाणा क्षय और खूनविगाड शिलाजीत गिलोयसत अथवा गिलोय कू घोट स्वरससंग पुराणा गुड ऊपर लिखे सर्व रोगोंमे अछा है पुराणा गुड चडा गुणकारी और अनुपान है गुड मेवाडका अछा एसाही सहतका गुण पुराणे साल उतार तीनवर्ष-तकका समझणा (खांड) सक्करसुपेद पित्तकूं मिटावै ठंडी वलदेनेवाली आंखोकों बनारसी खांड वहोत फायदेवंद वीर्यवर्धकहै खांड कफकरताहै कच्चीखांडकू जैनसिद्धांतमें अभक्ष्य लिखीहै इसवास्ते कफकेरोगमें रसविकारसेंभये सोजेमें ज्वरमें आमवातमें इत्यादि केइयक रोगोंमें नुकसान करता है वरतावेमें वूरालेणा मिश्री; कंद,मधुर ठडी ताकतवर वीर्यवर्धक मलशुद्धकरता लेकिन कफकरता क्षय सूकीखासी प्यासकू मिटावे है भ्रांति दाह श्रम ववासीर जहरकाविकार मोह मूर्छा मद श्वास उलटी अतिसार खूनविकार तथा पित्तकेविकारोंकों मिश्री कंद गुणकारी है, गुडमें खार, वगेरे पदार्थोंका भेल रहता है खांडमे मैल रहता है लेकिन् मिश्री कद वहोत दरजे साफ होता है मिश्री कालपीकू लोक ऊमदा वतलाते हैं लेकिन मरुस्थल वीकानेरवाले हलवाइ जैसी मिश्री सिट्टेदार कूजा वनाते है एसी मिश्री च्यारो खूंटमे नहीं है मिष्टान्नमें डालणेकू मिश्री उत्तम है खांड मध्यम है गुड कनिष्ठ है ये तीनों इक्षुरसकी होणी, विलायतीखांड मध्यम और औगुणकारी आर्योंके खाणे लायक नहीं है आर्यका अर्थ सरल स्वभावी मांस मदिराके त्यागी जिनोके रहणेका स्थान सो आर्यावर्त्त कहलाता है इस भरतक्षेत्रमे साढे-पच्चीस देश आर्योंके हैं गंगासिंधुकेवीच उत्तरमें पिसोर दक्षणमें समुद्रका किनारा तीर्थंकर २४ चक्रवर्त्ति १२ नवनारायण ९ नवचलदेव ९ नव प्रतिनारायण ९ इग्यारेरुद्र ११ नव-नारद ९ इत्यादि उत्तमपुरुष इसी आर्यावर्तमें जन्म लेते हैं,मुक्तितो सब मनुष्यक्षेत्रोंसें प्राणी जाता है, लंदन अमेरिकातक जैनसूत्रकार भरतक्षेत्र मानता है, अमेरिकाकू जैनरामचरित्रमे पाताललका मानी है विद्याधरोकी वस्ती इहां है रावणने जन्म उहांही लिया था ॥

॥ तेल ॥

तेल वहोत जातका है लेकिन खाणेमे तिलीका मारवाडमें, सरसूंका गुजरात, वगाले, वगेरेमें, तेल खाणेमें वापरणेसें, जलाणेमे या शरीरके मसलाणेमें जादा उपयोग देता है उत्तम खानपानके करणेवाले लोक तेलकूं विलकुल खाते नहीं, घी जैसे उत्तम पदार्थकू छोडके वुद्धिकूं कमकरणेवाला तेलकू खाणाभी अछा नहीं है लेकिन तेल सस्ता और

मोठ गुवारफली चिणे वगेरे वायडी चीजोंमे मिरच मसालोसें लज्जितदार होणेसें मोठके भुजिये चणेकीसेव तो सब मुलकोंमे गरीब और तालेवर जगे २ तेलकी बहोत खाते है मारवाडमें तो बीकानेरवाले बहोत तेल खाते है गुजरातमे मिठाईतक तेलकी बगालियोका तो जीवनही तेल बण रहाहै, जोधपुर मेंवाड नागोर मेडताआदि बाकीके इकीस रजवाडोमें प्रजा कम तेल खातीहै इसवास्ते तेलका खास गुणदोष जाणनेकी जरूरी है मसलाणेसे शरीरकू मजबूत करे है बलवर्धक है चमडीका रग अच्छ करे है वायुकू मिटाता है पुष्टिदेता है, अग्निप्रदीप्त करे है, शरीरमें जलदी प्रवेशकरता है, कृमिकू दूर करता है कानकीशूल योनिशूल शिरकीशूल शरीरकू हलका करता है, हड्डीतूटे भागे कचराया मुरडाया दबाभया कटाभया पछाडा भया जलेभयेकू तिलका तेल अछा करे है ये विशेष गुण कल्पसूत्रमे तेलके मसलाणेमें लिखा है वोभी किसी औषधीके सग पकाभया होणा, खालीतेलमें इतना गुण नही है, गरमी पित्तवालेकू ठडी और खून साफ करणेवाली दवाइयां, कफ और वायुमें उष्ण कफकूं काटणेवाली दवायां होणा, नारायण लक्ष्मीविलास पटबिंदु चद-नादि लाक्षादि शतपक सहस्रपकादि अनेक पूर्वोक्तगुण इन तैलोंका है पिचकारी भीदी जाती है पीणेमें जैसे मालकागणीका इस उपरांत गरीबलोक खाणेमें तलणेमें अनेक किसम बघारमें बरते है कांनमें नाकमें डालते है, इस कामोमें तिलका तेल दुरस्त है, (अवगुण) सांधोंकों ढीला कर धातुओंको नरमकर डालता है रक्तपित्तरोगकू करता है शरीरके मसलाणेसें पूर्वोक्त फायदेबद है, शरीर बाल चमडी तथा आंखोंकों फायदेबद है लेकिन् तेलपेटमें तिलीका या सरसूका खालीखाणेसें इनतीनोंकू नुकशान करता है हेमत और सिसिर रुतुमे वायुकी प्रकृतीवालेकू सदा पथ्य है

॥ निमक तथा खार ॥

खाण जमीनमेसें पैदा होता खार लोक हमेस खाते है दक्षिण प्रांत देशतक लोक जो निमक खाते है वो दरियावके खारे जलसे जमाये जाता है सेंभरपडा सो सबलूण सेंभरमें क्यारे जमाये जाते हैं पचपदरेका लूण, और निमकोसें श्रेष्ठ है, लूणकरणसर बीकानेरमेंभी लूण होता है इत्यादि स्थान निमक मारवाडमे है लेकिन सींध आदि देशोमें जमीनमे निमककी खाण है जिसमेंसे खोदके निकालते हैं वो सींधा निमक कहलाता है ये सब निमकोंसें उत्तम निमक है बैमारकों तथा धातुवेगेरे रस रसायण देवी इलाजोमे वैद्यलोक सींधा निमक बताया करते है बुद्धिवानलोक हमेस सींधा निमकही खाते है इग्लडसें लीवरपुल-साल्ट जो निमक आता है वो बहोत अछा डाकटरलोक बतलाते हैं खुराककी चीजोंमें निमक ये बडा जरूरीका पदार्थ है यहभी निश्चय हो चुका है निमक बिगर अदमीकी जिंदगानी बहोत दिनोंतक नहीं रह सकती है दूधसे जो लोक बरसो गुजरान चलाते हैं उसका कारण एसा है के दूधमें खारका भाग चहिये जिसके लगभग

आया भया है खानपानमें निमक स्वाद और रुचि पैदा करे है हाडोंकों मजबूतकरता है निमकमें कितनेक अवगुणभी है निमकका अथवा खारका स्वभाव सडाणेका अथवा गालणेका है इसवास्ते प्रमाणसें जादा लेनेमें आवे तो शरीरकें धातुओंकों गलाकर विगाड देता है वहोतसें अदम्योंकों सोख पड जाता है सो भोजनकी चीजोंमें निमक जादा खाते है, गहुं वाजरीमें दूध वगेरे चीजोमे कुदरती खार थोडा २ होताही है और दाल साग वगेरेमे जितना चहिये सो पूरा डालणेसें होता है अपणे लोकोंमे क्षारवाले पदार्थ जादा हमेसां खाणेमें आता है जैसें दाल साग चटणी राईता पापड आचार इन सवोंमें निमक है थोडा २ करतेभी जादा हो जाता है जादा खार निमक खाणेमें आजाता है तो सरीरमेंगरमी शरीरतूटना धातुगिरना वगेरे तुरत मालम देता है तापतिल्ली वगेरे पेटकी गांठ मिटाणेकू अनसमझु वैद्य वैमारोको जादा खार खिलाते हैं उसका नतीजा आगे बुरा मालम देता है मरदीपणा जाते रहता है उसमें मुख्यपणे जादा खार खाणेंसेंही विगाड सिद्ध होता है खार जादा वीर्यका नास करता है इय बात हमेसां ध्यानमें रखणेकी है प्रमाणसर खाणा अति निमक अंधाकरदेता है कल्पसूत्रकी टीकामें लिखा है

॥ दाल सागके मसाले ॥

जैसें २ प्राणियोंकी विषय वासना वधते चली उसकूं मिटाणे धातु पुष्टि तथा स्तंभनकी कितनीक नुकशानकारी दवाइयोंके उलटे सुलटे रस्ते लोक चढ रहे हैं सराप अफीम भांग माजम कोकिन इत्यादि औरभी कइ किस्मकी नुकशानकारी जहरी चीजोंकों खाते है ये सब जीवतव्यकी खरावीका निशान है, तैसेही हमेसाके खुराकमें तरे २ के उत्तेजक मसाला स्वादमें लोकोंका सत्यानास करणा सरू कर दियां है प्राचीन पंडित एसा कहतेहै जगतका वहोत सुधारा और हुन्नर कलाने लोकोंकू दुर्वल और निसत्व गरीव कर डाला है अन्य देसांतरी द्रव्य लिये जा रहे है शरीरका वल जरूर प्राणियोंका घट गया इय तो वात सब सच्चीही मालम देती है लेकिन् इसतरे खानपानमें वहोत स्वादीपणा वेहद शोखीन पणेने वहोत खरावी कर डाली है और फेर होगा एसावी समझदार लोक विचारते हैं सादे खुराककी तारीफ अगले विद्वानोंने तथा वर्त्तमान विद्वानोंने करी हैं लेकिन इस वातोंकेतरफ थोडोंका ख्याल है रस्ता उलटा चलरहा है दाल चावल घी गहू वाजरी जुवारकी रोटी घी मूंग मोठ तूरकी दाल धाणा हलदी जीरा निमक उनमान मुजव थोडी मिरच ये सामान्य खुराकका थोडासा नमूना है लेकिन् व्यसन स्वाद और सोख इसकु ... साहरा और मान मिलता है तवतो वेहद वढ जाता है और उनके ... ...को ... स्वादमें और शोपमें डूवा देते हैं इसकेसग तीन चीजोंकी प्रत्यक्ष ... ...रीर विगडे २ इजत कमाई और अमोलक वखत

मसालोंमें वापरणेमें वस्तुओं तनदुरस्त अदमीके हमेसकेवास्ते वणी भई नही है उसमेंके कितनेक पदार्थ इद्रियोंकों बहकानेवाली उत्तेजक है शरीरके बेमारीमें दवाकी तोर युक्तिसें देणेमें आवे तो वो चीजें शरीरकू फायदेबद है जैसे इलायची वडी छोटी लोंग जीरा स्याहजीरा दालचीणी तेजपत्ता काली मिरच इत्यादि अलग २ दवाका कांम देती है और येही गरम मसाले हैं, हमेस खुराकमे गरम मसाला खाते हैं सो अच्छा नहीं है निजस्वभावकी जठराग्निकू दुसरे मसालोंकी बनावटी गरमीसें बधाकर खुराक जादा खाणा बिलकुल अछा नहीं इलाज और खुराक वोही अच्छा है के जिसका आखरी दरजा अछा होय कोइ समेमेंभी बिगाड नहिं करे ये बात वैद्य और सामान्य प्रजाकू हमेस याद रखणेकी है इसवास्ते गरममसाला चमचमाटकरती चटणियां सब अदम्योंकों एक सदश कभी हितकारक होती नहीं रुचिकू जादा जाग्रत करे है जठराग्निकू जादा तेज करे है जिससें खाणेमें तो जादा आता है लेकिन् स्वाभाविक जठराग्नि कृत्रिम अग्निकू होजरी पचा नहीं सकती जैसें एनजीनमे बोइलेरकू जादाजोरमिलणेसें गाडियोको जोरसे तो चलाता है लेकिन बोइलरका माप और प्रमाणसें गरमी वढ जाती है तो बहोतभार खेंचता भया कभी फटभीजाता है जादा बोझा खेंचनेकू बोइलरकू जादा गरमीदेना ये नियम नही है लेकिन् जादाबोझा खेचणेकू वडे एनजिन और बडा बोइलर जोडना यह तो नियम है जन्मसे छोटे कदवाला अदमी दिलमें एसा विचारे गरम मसाले या गरम दवासें जादा खुराक खाकर कदमें और ताकतमे वढजाउ इस समझसे ऐसें खुराक और दवासे असली निजताकतभी खो बैठता है जादा जोरके काम करणेकू जैसा वडा एनजिन वडा बोइलेर बनाना पडता हैं तैसें जादा ताकत बढाणेकु अदम्योंकों ब्रह्मचर्य व्रतपालणा उचित वर्त्तावसें चलता भया एकसे एक जादा ताकतवर वडे कदका सतान उत्पन्न करना चहिये ऐसें मनुष्योंको नकली उपचार करनेकी कोइ जरूरी नहीं रहती आर्यराजा राठोडवारे २ वर्ष दिलीमें बादशाह पास रहतेथे ब्रह्मव्रत पालते और जब रुतुदान देतेथे तो केसरीसिंह पदमसिंह जेसे राठोड जैसिंघ कछावा, प्रतापसिंघ सिसोदिया, जैसे नरसिंह पैदा होते थे, खुराक इनोकी साधारण थी मगर वर्तांव ऊमदाथा, लोक समझेगे गरम मसालोंकी शास्त्र कारने बिलकुल निंदाकीहै एसाभी मत समझणा जिस बातपर निषेध कियाहै उस बाबतपर मनाई है स्याद्वादपक्ष हम जैन धर्मियोंका है, अगीकार इस पक्षसें करणा सो लिखते है बहोत वायुकी तासीर होय तब वायुको शरीरमें बराबर रखणेवास्ते खुराककेसग माफकसर गरम मसाला लेना तेसे गरीष्ट पदार्थ मिठाई वगैरे खाणेका होय उसके सगभी गरम मसाले चटणी खाणी चहिये सादे खुराकमे विशेषकी जरूरी नहीं, भारी पदार्थ पचाणे जो गरम मसाले मिरचोंकी चटणी खाणी वोभी उनमान मुजब, बहोतसे लोक तथा बुभुक्षत ब्राम्हणोकों जब मिष्टान खानेकू मिलता है तब एधी ओघडोकीतरे घरके हमेस खुराकसें

दूणातिगुना माल खा जाते हैं उपरसें चमचमाट साग दाल अचार चटणीभी पधराते है उससे पाचन शक्ति वरावर रहणी मुसकिल है अधसेर अनाज अथवा तरावट माल खाणेवाला एक १ रुपे भर गरम मसाला खाकर एसा हिसाव लगावे की २ भर गरम मसालेंसे सेर माल हजम करलुंगा एसें पांच रुपये भरसें पांच सेर नही तो तीन सेर तो जरूर हजम करलूगा ये त्रिरासीका हिसाव खुराकमें काम आवेगा नही अजीर्णहोकर मरणा पडेगा मतलव इतनाही है साग दालमें वहोत मिरच अवली अचार चटणी और गरम मसाला खाणेका रिवाज वहोत वढता जा रहा है इससें रस विगडता है खून गरम हो जाता है पित्तविगडके रस्ता छोड देता है इसीसे तरे २ के रोगोका जन्म होता है उसका वर्णन कहांतक करें वहोत गरम प्रकृतीवालेकूं सादामसाला धणा जीरा सिंधा निमक और सवकू माफगत आवै जैसा मसाला है चरकासकू पथ्य काली मिरच है लोकोंमें लाल मिरच खाणेका वहोत प्रचार वढगया है ये चीज वहोत नुकशान कर्ता है वीकानेरके ओसवाल और तेलंगदेसवाले जितना मिरच खाते हैं एसा कोइ विरली प्रजा खाती होगी लेकिन् ओसवाल घी तो खूव डालते हैं आज कल तो ओसवालोके वीकानेरमें प्राये तिलोकचदजीका वरतावा वहोत है तैलिंग तो चावल और अमली मिरचोकी चटणी लूखीही खाते हैं मलेवारवाले कचे नारेल और थोडी मिरचोंकी चटणी भात सग खाते घीका और खुदाका तोमू किसने देखा है इसहालतमें गरीव लोक जिंदगानी गुजारते हैं चरकासकी चाहवालोनें मिरचकू छोड आदा काली मिरच सूठ पींपर वरतणा शूद्रोके वरतावमें लसण देखणेमें आता है जिनोकूं लाल मिरचका वहोत मावरा पडा है उन लोकोनें जैपुर जिलेकी लाल मिरच वीज निकाल रातकूं एक दोय जलमें भिगाकर पीस घीमें सेक फेर थोडी वरतणी अथवा घीमे कूट थोडी खाणी खट्टा रसका तोड निमक है निमकका तोड खट्टा रस है खट्टे रसमे नींवू अमचूर कोकम खाणे योग्य है लेकिन प्रकृतीकू माने तो खाणी वघार देणेमे जीरा हींग राई मेथी मुख्य वस्तुओं है वायु कफकी प्रकृतीमें अछी है.

आचार—राईता

आचार और राईता पाचन शक्तिकूं तेज करता है लेकिन् जितने पदार्थ पाचन शक्तिकू वधावे है और जलदहे इन सवोंका जो प्रमाण चढ जाय तो येही पाचन शक्तिकू उलटा विगाड देते हैं, दुनिया निरविवेकी समझती नही इनही चीजोंसें तो पाचन शक्ति विगडती है और फेर पाचन शक्ति सुधारणेकू दुनिया इनही चीजोंको सेवन करती है आचार राईता तेल राई निमक जादा मिरच वगैरे तेज पदार्थोंसे जीभकू आदमी तह डूबकर देते हैं ये चीज कम अथवा मिठाई तरमालके संगही खाणा हमेस नहीं खाणा खूनविगडजाता है खूनविगडाके मदाग्नि पडकर अनेक रोग शरीरमे जन्म लेता है

वचके रहो मारवाडी गुजराती वगैरे इनही बातोंसें जादा बेमार होते है, मिरचलाल आगरे दिल्लीसें लेकर ब्रम्हाके देसतक लोक नहीं खाते, बंगाल सरसूका तेल और मछी संबंधी कुपथ्य हमेस खाते है, उनोमें वैष्णव मांस मच्छी नहिं खाते हैं

चा

आजकल घरघरमें चाहकी उकाली चल रही है अपने देशमें चा चीनसें आती है कितनेक वरससें नीलगिरि तथा आसाम जिल्लेमेभी चा पैदा होणे लगी है अपने देशकी चा उतरते दरजे बजारमें विकती है चीन जेसी चा कहांइभी पैदा होती नहीं रतलका आठ आनासें सो रुपे रतल तक एसी कीमती और इससे जादा कीमतकीभी चीन देशमे पैदा होती है एसें अवल दरजेकी चा बजारमें विकते देखाभी नहीं और लेमी कौन इहां तो सस्तादाम और चोखा कामहोना सो तो वणनामुसकिल है चा दर खतके सूकाये भये पत्ते है मैंने सेंतालीसकें फागुणमे शिखर गिरि पहाडपर ये दरखतोके छोटे २ झुंम देखेथे सूकेवाद इन पत्तोंकों गरम करते हैं तब उसकी सुगध और स्वाद अछा होता है ये एक थोडे नसेकी चीज है इसवास्ते हमेस पीणेसें दुसरे नसोंकी चीजे अफीम गांजा सुलफा तमाखू सराप भग धतुरेकी तरे जादा नुकसान नही करती है चाहमें सइकडेके हिसाव गुण करनेवाला भाग १ से ६ तक होता है सवसे हलकी चा मे १ वधियासे वधियामे ६ पोष्टिक तत्व हे, सइकडे में १५ भाग और तत्वहे, कवजी करनेवाला तत्व बहोत थोडा है, काली और हरी चा एकही दरखतकी होती है पीछे बनावटी रगमें फेरफार होता है चाहके ताजे पत्तोंकू गरम कढाइपर अथवा पाणीकी वाफसे सूकाय गरम करनेसे वो रगमे काली अथवा हरी होती है लेकिन हरी चाहकू रग देनेवास्ते नीला थोथा अथवा प्रश्यन ब्लू नामकी जहरी वस्तु किसी बखत लोक देते हैं उसका असर बहोत खराब होता है चा वजनमें बहोत थोडी पीणेसें शरीरमे सुस्ती पैदा होती है और थोडी नींद लाती है और जादा वजनमें पीणेसें अगमे गरमी और हुसियारी आती है नींद आती होय सोभी चली जाती है नींद रोकनेकों कितनेक लोक रातकू चा पीते है उससें नींदतो नहीं आती लेकिन बेचैनी पैदा होती है नींद रोकणेकों जो रातकू वेर २ चाह पीते है और नींद रोकते है इसमें मगजकू नुकसान पोहचता है जो अदमी अछा ताकतवाला खुराक (टेमोटेम) खाते हैं वोलोक प्रमाण मुजव चाह पिये तो कुछ नुकसान नहीं लेकिन हलका और थोडा खानेवाले अर्थात् गरीव अदमियोंनें थोडी चाह(जो थोडी तेज होय सो)पीणी क्यों के हलके खुराक वालोंकों तेज चाह धीमें २ नुकशान करती है बहोत चा पीणेसें मगज तथा मगजके ततुओंकों थकेला चढता है निर्बलपणेसें भमल भ्राति हो जाती है लोक कहते हैं चा खून जला देती है ये वात कुछ सचभी हैं चा दूधके सग पीणी दूधसें चाहका कैफ याने नसा कम होता है और पोषण मिलता है कितनेक अदमी

भोजनके संग चाह पीते हैं उससें पाचन शक्तिकूं वडी हरकत पहुंचती है भोजनपर तीन चार घंटे बीत जाय पीछे चा पीणी अछी हैं क्योंके चा पित्तकूं वधाणे वाली है इसवास्ते तीन चार घटे वाद जो भोजनका भाग पचना वाकी रह गया होय वो उसकूं पचाकर नीचे ऊतारता है चा मे थोडासा गुण है सो होजरीकू तेज करता है पाचन शक्ति तथा रुचिकूं पैदा करेहे चमडी तथा मूत्राशय ऊपर क्रिया कर पसीना तथा पेसाव खुलासा लाता है जिससें खूनपर कुछ अछी असर होती होगी नरमभये ज्ञुस्सोंकों जाग्रतकर थाकेला ऊतारता है ये चाका फायदा है लेकिन उसमें नसा है जिससें तनदुरस्तीकों खलल पोहचाता है जो चाकू जादा देर उकाले तब पत्तोंका जादा कस निकले तो चा जादा नुकसान करती है इसवास्ते जल उकला और चाके पत्ते डाल चादाणी ढक देणा दोय तीन मिनटसें जादा चूलेपर नहीं रखणा जादा उकलणेसें स्वाद गुण दोनुं विगड जाता है खांड मिश्री उनमान मुजब डालणी जादासें पेट विगडता है चामें नींबूका स्वादभी देतें हैं कली या काचके वरतनमें नींवूकी फाड रख ऊपरसे चाका गरमपाणीडाल चार पांच मिनट बाद दुसरे वरतनमे छाण लेणा चामे फायदा जादा है नहीं, लेकिन दुनियांमें सोखीनताईकी हवा घर २ चलगइ चा का तो एक व्यसन हो गया सव पीते है तो हमभी पीवें इसमे तो वडा नुकसान है फकत चासे कोइ जादा फायदा नहीं है दूध बूरा संग चहिये जो लोक हमेस तरावट माल खाते है अंग्रेज पारसी या औरभी कोई; चा तो उनोकेही पीणे योग्य है, जो लोक घीका दर्शन तो वारतिवार करते है और चाकी उकाली तो हमेस देखादेखी चलरही है ये तदन खराब है वणे तो वच्चोंकी तनदुरस्ती रखणेको हमेसां दूध पिलाया करो

काफी

काफी दुसरी वस्तु है ये अरवस्थानसें आती है ये दोनोका गुण मिलतासा है काफी एक दरखतके बीज है इसकूं बूददाणाभी कहते हैं कोइ २ मुलकोमें बुंद दाणोंकों सेक सुपारीकी तरे लोक चावकर मुं साफ करते है भोजन किये वाद बूदकों सेकणेसें उसमेंसें खुसबोदार और मसालादार चीज पैदा होती है वूंदमे एकभाग गुणकारी सिवाय बूदमे कडवा भाग और कबजी करणेवाला भागजादाहे एक भाग खट्टा है, कचे वूद दाणे वहोत दिन रह सकते है विगडते नहीं सेका भया अथवा दला भया वूंद दाणोको वहोतदिन रखनेसें खसबो उड जाती है चासें काफी जादा पौष्टिक तथा शक्ति देनेवाली है लेकिन् वो भारी है इससें निर्वल और वैमार आदमीकू पचे नही काफीसें अंगमें गरमी और हुसियारी आती है ठडी मोसममें तैसें ठंडे मुलकोंमें मुसाफरी करते काफी पीणेमें आवे तो ठडमेंभी सरीरमें गरमी रह सकती है व्यसन जितने है सब नुकसान करनेवाले हैं लेकिन् किसी वेमारीपर कोइ व्यसनीं चीजसें फायदा वैद्य वतलावे तो दवा मुजब रोग मिटाणेवास्ते

लाचारीसेंभी लोक लेते है जैसें संग्रहणीमे सेकी भांग या पुराणा अफीम खासीके रोगमें, निजुलके दरदमें तमाखूसूघणा इत्यादि समझना तैसें चा और काफी माफ-कसर(युक्तिसे अपनी तासीर मुजब जो)पीते है उनकू फायदा देता है, सात व्यसन जैन-सूत्रकारने वडे बताये है वो इस भव परभव दोनों विगाड देते है जैसें जूवा तो सात व्यसनोका राजा १ चोरी २ परस्त्रीगमन ३ वेश्यागमन ४ मदिरा नसा पीना ५ मांस खाना ६ सिकार खेलना ७ इन सातोंसें वचे सो जगतमें धन्य है छोटे २ इसके अतर्गत औरभी बहोत है जूवा कोडीका तो नहीं खेले अनेक तरेका फाटका करे १ चीजोंमें नई पुराणी खोटे तोल दगावाजी ठगाई ये सब चोरी है २ परस्त्री टाल दासीके गमन करे ३ और अनेक तरेके नसा करे ४ घरका असवावभी वेचे लेकिन मोल मगाकर हमेस मिठाई खावे ५ रातकू खाये विगर चैन नही पडे ६ सच्च नहीं बोले ७ ये सब जिनोंकों व्यसन पड जाते हैं वो वरवाद सव तरेसें होते है फिर छूटनाभी मुसकल है(दुहा)डाकण मत्र अफीमरस, तस्करने जूआ, परघर रींझींकामणी, येछूटसी मूआ ॥ १ काफीके भूकेकी थेली वणाकर तपेलीके उकलते जलमें पांच सात मिंट रखकर उतारणेसें काफी तइयार होती है चा तथा काफीमें बहोत मीठा डालणेसे निर्वल कोठेवालेकों जरूर नुकसान करती है. (कारण) विशेष पीणेमें ये दोनु चीज आवे तो थोडा मीठा अछा है, काफीके पाणीमें चोथा भाग दूध डालना इन दोनो चीजोंको गरम पीनेसै पाचनशक्ति कम पडती है धातूमें भी नुकसान होता है अपणे गरम देशमे काफी गरमी पैदा कर नींदका नास करती हैं इस-वास्ते रातकू पीनी नहीं फजरका वखत पीणेका है,किसीने जहर खाया होय तो उसकू नींद नहीं लेना चाहिये इसवास्ते जाग्रत रखणेकू बेर २ काफी पिलाया करते हैं १ बहोत जाडे शरीरवाला अथवा बहोत खाणेवाला चा और काफी पीणी अछी है २ दुवले अदमी और निर्वल अदमी बणे जहांतक चा काफी पीणी नहीं, वहोत तेजभी पीणी नहीं, अछी तरे दूध मिलाकर पीणा ३ हलका लुखा सूका खुराक खाणेवालेनें और जो उपवास आंबिल एकासना उनोदरी वगेरे तपस्या करनेवालोने चा काफी पीणी नहीं पीणी तो थोडी हलकी पीणी ४ फजरमें पुडी वगेरे नास्तेके सग चाकाफी पीणी अछी है भोजन पेटभर किया पीछे पाच चार घटे बीते विगर पीना नहीं ५ निर्वल कोठेवालेनें बहोत मीठी बहोत सखत उकाली भई अथवा गरमागरम पीनी नहीं थोडा मीठा और दूधमिला-कर कूएके जल जैसी गरम पीनेसे फायदा तासीर मुजब है ॥

॥ उजाला (७ मां) पथ्यापथ्य वर्ग ॥

खानपानकी कितनीक चीजें तनदुरस्त अदम्योंकों थोडासा बिगाड बाकी सर्व ऋतूमें और सब देसोंमें अनुकूल आता है (२) कितनीक चीजें एककी तासीरकू माफगत, दूसरे की तासीरकू नामाफगत, एक मोसममें अनुकूल, दुसरी मोसममें प्रतिकूल, तैसेंनी

देशमें अनुकूल, दूसरे देशमें प्रतिकूल, होती है, (३) और कितनीक चीजों एसी है के सबकी प्रकृतीमें सब मोसममें और सब देसोमे हमेस नुकसानही करनेवाली है । पहिले आंककी वस्तुपथ्य, दूसरे अककी पथ्यापथ्य, तीसरेकी कुपथ्य, पथ्य सो हितकर्त्ता, पथ्यापथ्य सो किसीकू माफगत किसीकू नही, कुपथ्य याने सबकूं नुकशान करता, पूर्वाचार्योंका लेख और हमारा अनुभव किया भया ये विचार विश्वास रखनेलायक है सो लिखता हू.

पथ्यपदार्थ.

(अनाज) चावल गहूं जव मूग तूर चणा मोठ मसूर मटर ये सब साधारण तोर सर्वकू हितकारी है, ये चीजो हमेस खानेमें आवे तो कोइ तरेकाभी नुकसान नहीं करता इन सब अनाजोमे जुदे २ गुण रहे भये हैं, इसवास्ते इनोका गुण और अपनी तासीरके अनुसार थोडा या जादा वरताव करना, चनोंकों, पथ्यवर्गमे गिणाया है, तोभी जादा खानेसें पेटमें हवा भरकर पेट फूलता है चावल वर्षभरपीछे उतार अछे होते है तूरकी दाल घी डाल खानेसे बिलकुल वायु करेनहीं, मूंग वायु करे, लेकिन दालका पाणी त्रिदोषहर, भयंकर रोगमेंभी पथ्य, फेरदेश २ वालोंके अवलसें मावरेकी चीज उनोंके वोभी पथ्यही गिने जाती है (शाग) चदलियेकेपत्ते परवल पालका वथुआ खरवोडी पोथीकीभाजी जिसकूं पूरबमें अलता कहते है, रग होता है, सूरणकद पानमेथी तोरी भींडी कदू वेगेरे, दुसरे पदार्थ, गऊका दूध, गऊका घी । छाछ मीठी गऊकी, मिश्री, अदरक, आंवले, सींधानिमक, अनारमीठी, मुनका, मीठी दाख, अब दुसरी तरे पदार्थोंकी उत्तमता दिख लाते हैं, चावलोंमे, लाल साठी तथा कमोद, अनाजोंमें गहु और जब, दालोंमें मूंग तूर, मीठेमें मिश्री, पानोके सागमें चंदलिया, फल सागोमे परबल, कद सागोमें सूरण, निमकमेंसेधव, खटाईमें आंवले, दूधमे गऊका, पाणीमे वरसादका, अधरलियाभया, फलमें, विलायती अनार, या मीठी दाख (मसालेमे) आदा धाणा जीरा ये चीजें सादे मिजाजमे सदा पथ्य सब मोसम और सब देसोमें, तोभी किसी२रोगमें कोइ वस्तु कुपथ्य इनोमेकी होती हैं, जैसें नये बुखारमें बारे दिनतक घी, इकीस दिनतक दूध, ये बात हमारे पूर्वाचार्योंने मनाई की है और अज्ञानपणे जिनोनें खाया है उनोकों कष्ट और प्राणांतभी देखा है, फकत वातज्वरके पूर्वरूपमे घृतपान लिखा है, लेकिन् ऐसे निदान करनेवाले वैद्यका दर्शन पूरे पुन्यवानोंकों ही होगा, इसवास्ते सामान्य तोर घीसे नये ज्वरमे कुफायदाहे, पानीझरा मोतीझरा ये तीन बातसेंही निकलता है, वैद्य और प्रजा हमेसध्यानमें रखणा, नयेज्वरमेंचिकनासका खाना, अथवा आते भये पसीनेमें बुखारमें हवा ठडी लेना, या गलीचहवा या विगडा भया पानी पीना, या एसी खुराकका खाना २ तीसरे मलज्वर टाल नये बुखारमें बारे दिन पहले जुलाव संबधी हरडे वगेरे दवा, या कुटकी चिरायता आदि कडवी कषायली दवाका देना, इस बाबतोसें सन्निपात मरणांततक प्राणी पहुच जाता है, बचे तो जैसें अग्नि-

विष शस्त्रसेभी बचता है, तैसें आयु प्रबल समझना, नयेज्वरमे पश्चिमके विद्वान सबमे दूध पिलाते हैं, ये बातका निश्चय अभीसात् भया नहीं, या किसी दवाका अनुपान होगा मगर विचारने लायक बात है, तैसें कफके रोगीकू तथा (सूआ) जापेके रोगवालीऔरतकू मिश्री इसबजे और २ चीजोंकाभी समझ लेना

पथ्यापथ्यपदार्थ.

बाजरी उडद् वाल याने (चवला) कुलथी गुड खांड मक्खन दहीं छाछ भेसकादूध घी आलू तोरी कांदा करेला ककेडा गुवारफली दूधी (लवा) कोला मेथी मोगरी मूला गाजर काचर ककडी गोभी घीयातोरी, केला अननास आंब जामुन करोंदे अंजीर नारगी नींबूजामफल सफरजद् पीलू गूदा तरबूज वगेरे ये सब पदार्थ नित्य लोक वापरते है परतु प्रकृतीका और मोसमका विचार बिगर किये खावे तो तुरत नुकसान करताहै, जैसें दही शरदऋतूमें शत्रुका काम करता है, वर्षाऋतू हेमतऋतूमें हितकर है, गरमीकी मोसम जेठ वैशाखके महीनेमें मिश्रीकेसग खानेसेही फायदा करता है,तैसें ज्वरवालेकू कुपथ्य है, और अतिसारवालेकू पथ्य है, इसतरे हरेक वस्तुका स्वभाव समझकर समझदार पूरे वैद्यकी या इस दीपककी सल्लालेकर ये वस्तु खानेमें आवे तो नुकसान नही करती.

कुपथ्य पदार्थ

दाहकरणेवाला, जलाणेवाला गालणेवाला सडाणेकीकुदरतवाला जहरकागुण करणेवाला पदार्थ कुपथ्य कहलाता है, ये पाच तरेके पदार्थ जो अगर बुद्धि पूर्वक रोग मुजब बरतणेमे आवे तो फायदाभी करता है, तोभी ये चीजें एकदर शरीरकू नुकशानही करणेवाली है, क्योंके एसी चीज एक रोगकों मिटावे तो दूसरेकू पैदा कर देती है खार अर्थात् निमक जादा खाणेमें आवे तो पेटकीवायु गोला या गांठकू गलाती है, लेकिन शरीरकी धातूकों बिगाड मरदमीकू नुकशान कर्ता है, दाहकरणेवालापदार्थ, पित्तकू बिगाड अनेक किस्मके रोग पैदा करे है, अबली वगैरे अति खट्टा पदार्थ,शरीरकू गलाकर साधोंकों ढीलाकर मरदमी कम करती है, एसे २ पदार्थोंसें एकदम नुकशान तो देखणेमें नहीं आता है लेकिन बहोत दिनोंतक सेवन करणेसे एसा मिजाज बिगाड देता है सो ये बदन अनेक रोगोंका मकान बण जाता है, इसवास्ते पहले जो पथ्य वर्ग लिखा है वो हमेस खाणापीणा चहिये, और पथ्या पथ्यमे लिखा है, उसका थोडा बरताव रखणा चाहिये, ऋतु, प्रकृतीके, अनुसार, और कुपथ्य पदार्थ तो रोगोंपर दवा मुजबही बरतणा, सोभी बहोत जरूर होय तो, हमेसके खुराकमें एसे कुपथ्य पदार्थ कभी वापरणा नहीं, दूसरी बात फेर एसी है के, पथ्यापथ्य पदार्थ है सोभी जिणोंको नित्यका अभ्यास खाणेका है, जन्मसें, उनोंको वो चीजें कभी नुकशान नहीं करती, जेसे बाजरी गुड उडद छाछ दही ये चीजें मोसम और तासीर मुजब जेसें पथ्य है, तेसें कुपथ्यभी है, लेकिन मारवा-

यही चार चीज हमेस वहोत लोक वापरते है,उडद पजाववाले,लेकिन उनोकों नुकशान नहीं करता,इसवास्ते मावरा है सो वचावका कारण है,नुकशान करताभी है, तो थोडे प्रमाणमें, सो मालम नहीं देता, दूध पथ्य है, तोभी किसीकूं नहीं सदता दस्त होता है, इसपरसें एसा निश्चय भयाके खानपानमें अपनीतासीर शरीरकावंधा नित्यकाअभ्यास ऋतु और रोगकी परीक्षा इनसवोंका विचारकर खानपान करणा चहिये जेसे एकही पदार्थमें प्रकृती और ऋतुभेदसें पथ्य कुपथ्य दोनों गुण रहा भया है, तेसें वोका वोही पदार्थ रसायणी सयोग अर्थात् दुसरी चीजोके मिलणेसें जिसकू तंत्र कहते है उससें पदार्थोंका धर्म बदलकर तीसराही गुण प्रगट होता है, वो नुकशान करणेवाला नही, अथवा है इसका पूरा प्रमाण जहांतक किसीकू नहीं है, उनोकेवास्ते सीधा और अछा रस्ता एसा है के, वैद्य विद्याके हुकमके अनुसारही चलणा, सहत अछा पदार्थ है त्रिदोपहर है तोभी गरम पाणीके सग, या हर कोई गरमागरम वस्तुके या गरम चीजोंके सग, या सन्निपात ज्वरमें, देणेसें नुकशान करता है, दूध पथ्य पदार्थ है, तोभी मूलेके मूगके क्षार निमकोंके अथवा एरड टाल वाकीके तेलके सग खाणेमें आवे तो जरूर नुकशान करता है, वरतणके योगसे वस्तुओमें फेरफार गुणोंमें हो जाता है, खटाइ तांवे पीतलके वरतणमें तथा खारमें, इसीतरे घी कांसीके वरतणमें थोडी देर रहे तो नुकशान करता है, सात दिन रह जाय तो प्राणीकों प्राणांत कष्ट पोहचाता है, फेर दूधकेसंग खट्टेफल गुड दही खीचडी वगेरे खाणेमें आवे तो नुकशान करता है, बुद्धिवानो विचार करो सर्वज्ञ भगवानने संयोगी विपका वर्णन वैद्यक शास्त्रमें किया उसके पढे सुणे विगर इन २ वातोकी खवर क्या पडे एसाही सूत्रप्रकीर्णोंमें किया है, उहां कुपथ्यका नाम अभक्ष लिखा है, एसे कुपथ्यों-का फल कुछ तुरत मिलता नही है,लेकिन् जब वहोत दोपएकठा हो जाता है, तव दुसरेही रूपसें दिखाई देता है, उसवखत उसका कारण लोक समज नहीं सकते ये संयोग विरुद्ध खान पानसे अनेक रोग पैदा होता है.

सामान्य पथ्यापथ्य आहार विहार

पथ्य आहार

पूराणाचावल जव गहूं तूर चिणा वाजरीदेसी, गरमवाजर थोडी खाणी, घी दूध मखन छाछ, सहत मिश्री वूरा पतासा सरसूकातेल गोमूत्र आकाशका पाणी कूवेका परवल सूरण चदलिया वथुआ मेथी मामालुणी मूले मोगरी कद्दूं तोरी करेला ककेडा भींडी गोभी, वालोल (थोडी खाणी) कचे अद्रक आंवला नींवू वीजोरा कवीठ हलदी धाणा केपत्ते पो-पींपर धाणा जीरा सींधानिमक हरडे इलायची केशर पाननागरवेल केसग (कथेकी गोली) गहूकेआटेकीरोटी पुडी

भात मीठाभात बुदिया मोतीचूरकालड्डू जलेबी चूरमा दिलखुसाल पूरणपोली खडी दूधपाक खीर श्रीखड बासुंदी (थोडी खाणी) दालकेलड्डू घेवर सकरपारे बिदामपाक घीकेतलेमोठके थोडेभुजिये, बडे, दूधघी डालीभइ सेव, रसगुला गुलावजामुन कडाकद गुलकद सरबत मुरब्बा चिरोंजी पिस्ता, राईतादाखोंका, मीठा तथा चरका दाणोंका, पापड मूंग मोठकी बडी दाल जाडी पतली ।

कुपथ्य आहार .

उडद चवला वाल मोठ मटर ज्वार मकाई ककडी काचर खरबूजा गुवार कोला मूलेकेपत्ते जामफल सीताफल फणस करोंदा गूदा गरमर अजीरजामून बोर आंवली तरबूज भेंसकादूध दही, तेल नयागुड दरखतोकेझुडकापाणी वहोतसाएकदम पाणीकापीणा, निराहारठंडापाणी पीणा, मैथुन करके पीणा, वासीअन्न, छाछदहीके संग खीचड, खीचडी वगेरे दाल मिले भये पदार्थ, सूर्यकेप्रकाशभयेविगरखाणा, आचार, लगभगबखत भोजनकरणा सबजातकेजहर, ठडीखीर, सब दूधके पदार्थ, वासीचासणी और खोबेकी दालके, गुजरातमें चोंटियालड्डू, केलाकेलड्डू, रायणकेलड्डू, गुलपपडी तीन भेलकी दाल, पचमेलीदाल, करडा, कच्चा गरिष्ठ मैदेकी मैदेकी चीज पुडी सत्तू पेडा वरफी चावलोंका चिवडा रातकाभोजन दस्तबधकर देवे एसी कोईभी चीज मूजलेएसा गरमागरम अन्न पान, उलटी, पिचकारीदेदेकर, दस्त कराणा येवात अभीके डाकटरलोक परसन करते है, हमारे प्राचीनशास्त्रकारोने हमेस सलाईसे पेसाब और वस्ती (पिचकारीसे) दस्त कराणापरसन नहीं किया, और हमेसअच्छाहेभीनहीं कारणविशेपदेखणा, चबीणा चावणा, पांच घटें विनावीते भोजनपर भोजन करणा, वहोत भूखे मरणा, शरीरतथा वस्त्रमेला रखना, परनिंदा, देव गुरूसें द्वेप करणा ॥

विहार पथ्य

वस्त्र धोये भये साफ पहरना, और शक्ति होय तो अतर गुलाबजल केवडाजलसे सुवासित करणा, पोसाखी अतर, पनडी औरखस ठडकालेमे हीना मसाला १ विछोणे तथा पिलग वगेरे सोनेके साधन, साफ सुघडपणे रखना २ हवा दक्षिणकीसर्वोत्तम है सोलेणीं ३ हाथपैर कान और गुसजगे मेलजमणे नहिं देणा ४ गरमी मोसममें महीन कपडे पहनना, थड कालेमें गरम, वो कपडे वजनमें, ज्यों कम होय त्यो अच्छा ५ पांच २ दिनसे हजामतकराय दलिद्र निकाल देणा, इससेनया खून सचरता है ६ कसरतकरणी प्रमाणमुजब हवा खाणी, घोडे वगेरे असवारीपर सुखसें बेठीजे तो बैठणा, कष्ट मालमदे एसानहींबैठणा ७ गहणे हलके वजनके, जिसमे मनुष्यकों हार कुडल अगूठी, आनद श्रावकने उपासग दशासूत्रमे कुडल अगूठी दोयही मोकली पहरणे रक्खी है ८ मल मुत्रकी सका रोकणी नहीं, जबर न सका पैदा करणी नहीं, मूत्र तथा दस्तकी हाजतरहते स्त्री गमन करणा नहीं स्त्री

संगका वहोत नियम रखणा ९ चित्तकी वृत्तिमें वहोत सतोगुणी आनंदीपणा रखके या सतो गुणीपणा रखणेकू सतोगुणवाले भोजन करणा, दो घडी प्रभात, दो घडी सांजकूं, समता परिणाम सब जीवोंपर धरणा, फेर वखत मिले तो, दोघडी सदगुणीके मडलीमे बेठके निर्दोष बात (व्याख्यान) सुणना, ससार अनित्य हे, इत्यादि विचार करणा,जिस वर्त्तावसे रोगहोय इज्जतजाय धनजाय फेर धनकी आवद होय नहीं, एसावर्त्ताव है सोही कुपथ्य है, इनही बातोंसे परभव .विगडता है, ये पथ्यापथ्यका विचार विवेक विलास आचार दिनकर तथा राज निघटसे सक्षेप मात्र लिखा है

उजाला ८ दुवले अदमीके खाणे योग्य खुराक

वहोत अदमी दिखणेमे पतले और इकेली हड्डीके दिखते है, लेकिन ताकतवर होते है, वाजे पुष्ट और जाडे होकरभी ना ताकत होते है, वहोत जाडापणा है सो तनदुरस्ती पणा नहीं समझणा, और वहोत दुवलापणा और वहोत स्थूलपणा है सो प्राये नाताकतीका निशान है, शरीरभी वेडोल दिखता है, खुराकके फेरफारसें, योग्य उपायसें, दुवले अदमी ताजे पुष्ट हो जातेहै चरचीवढकरजाडाभयाअदमी उपायसेंपतले होजाते है, अब दुवले अदम्योकों पुष्ट होणे वास्ते नीचे लिखे सो उपाय करणा, दूध थोडी २ मिश्री मिलाय थोडा२ दूध दिनमें वहोत वखत पीणा, उनमान मुजब कसरत कर पीणा, दड बैठक मोगरी शक्ति मुजब फैरणी, वो नहीं वणे तो, फजर सांझकीवखत महनतका कामकरणा, या साफ हवामें फिरणा, जिससे कसरत मिलके दूध हजम होजाय, तथा हमारे दवाखानाकी अमृतवटी, वो पुष्टिकाकाम, पुष्टि खुराकका काम करती है, और क्रम २ से, दससेरसें वीससेरतक दूधको हजम करती है, शरीरमें पुष्टि और वहोत ताकत पैदा कर देती हैं, दिन४०लेणा चहिये, तोलेके रु२०। लगते है,गहू,जव मकी मटर चावल दाल इनोमें पुष्टिकारक तत्व रहा भया है, दुवले अदमीके कामका है, आलू केला केरी सफरजंद पनीर ये सब पुष्ट वस्तु खाणे योग्य है, येसब पुष्टिकारक खुराक दुर्बलकू ताकत देती है, लेकिन् इस खुराककू पचाणे वास्ते महनत करणा चहिये, एसी खुराक खाकर पूरी कसरत शरीरकू नहीं मिलेतो चरवीबढकर शरीर जाडा पड जाता है, और अशक्त हो जाता है एसी खुराकसे शरीर मजबूत और पुष्ट होगयेपीछे खुराक बदल देणा चाहिये, तनदुरस्तरहे एसा खुराक खाते रहणा, वेमारी होय जिसमें फेर पाचन शक्ति मद होय उहांतक पुष्टिकारक खुराक खाणा नहीं,और परिश्रमभी नहीं करणा, वेमारी मदाग्नि मिटायकर पीछे पुष्टता करणी

जाडे आदमीलायक खुराक

जाडे अदमी सब नातकत नहीं होते, खूनवाले पुष्ट आदमी शरीरमें मजबूत होते हैं, फकत मेद चरवी तथा मेदवायूसें जिनोका शरीर फूलता है वो अशक्त होते हैं, जो

अदमी पुष्टिकारक खुराक जैसें घी मक्खन तेल मीठा मिश्री वगेरे जो हमेस बहोत खाते है विना महनत कियेविगर एक जगे बैठे रहते हैं, वो ऐसे व्रथा पुष्ट हो जाते हैं, घी मक्खनादिक शरीरकी गरमीकायम रखणेकू लोकखातेहै, वो प्रमाणसरही खाणा चहिये जादा खानेमें आवे तो वो पाचन नही होकर चरबी शरीरमें एकठी होती है शरीर बेडोल हो जाता है, स्नायु वगेरे चरबीसें रुक जाकर अशक्त करदेता है चरबीके पुडपर पुड चढ जाता है, ताकतवर जाडे अदमीका शरीर लाल मजबूत सख्त और स्थिती स्थापक स्नायुओकेटुकडोसें बना भया है, और उसपर चरबीका बहोत छोटा अस्तर लगा भया है, ये चरबी खुराककी तगीसे अथवा उपवास करे तब कमहोती है और फेर चरबी शरीरकू खपसुरत सुघाट रखती है वधीभइ चरबीसे बहोत स्थूलता और श्वास आखर प्राणांततकभी हो जाता है, मीठा और आटेके सत्ववाला पदार्थभी महनत नहीं करनेवाले अदमीके शरीरमें चरबी चढाता है, फेर दवा थोडाफायदा भाग्य-योगसेंही करती है,खुराककी निगेदास्ती उपयोग रखकरप्रमाणमुजब करणा कसरतके अभ्या ससें शरीरका जाडा पणा और वजन कम होता है, अति स्थूल शरीरवालेके(खानेलायक पदार्थ) चरबीवालेपदार्थ घी मक्खन खांड और आटेके सत्ववाला पदार्थ बहोत थोडा खाना, और पुष्टिवाला खुराक जादा हेसो खाना, गहु जव मटर दाल चना पनीर छाछ हरी तरकारी कोबिज सफरजद सलगम नारगी वगेरे फल पथ्य है, (नहींखानेलायक) अथवा थोडा खानेलायक पदार्थ, घी मक्खन मलाई तेल खांड (अनाज) साबूदाना चावल मक्की पूरणपोली कोकम केरी दाख केला जिसमें तेल है इस तरेका सब सूका मेवा, बिदाम पिस्ता निमजा चिरोंजी क्रिष्ठा वगेरे तैसे आलू सूरन सकरकद अरबी वगेरे खाना नहीं, दूध थोडा खाना चा काफी पीनेकी टेव होय तो उसमें दूध बहोत थोडा डालना अथवा नींबुमे सुवासित करकेही पीना

॥ उजाला ९ मगजमज्जातंतूकूं मजबूत करनेवाला खुराक ॥

जिसमें आल्ब्युमीन नामका तत्व जादा होता है वो मगजके मज्जाततूओंकों पोषण करता है, पौष्टिकतत्ववाले खुराकमें आल्ब्युमीनका कुछ २ अश होता है, लेकिन सतावर नामकी वनस्पतीमे इसका अश बहोतही होता है, इसवास्ते सतावर वगेरे कित-नीक उत्तम वनस्पतीका पाक तथा मुरब्बा बनाकर खाना चहिये, मगज तथा वीर्यकी मजबुतीवास्ते वैद्यकशास्त्रमें कितनीक उत्तम वनस्पती खानी बतलाई है वो दवा मुजब या खुराक मुजब खानी बतलाई है गुणभी पूरा करती है

मूकोला, शतावर, आसगध, गोखरू, कौंचकाबीज, आवले, शखाहुली.

एसी वनस्पती गुणवाली औरभी मुरब्बा बणाकर लड्डू बनाकर अवलेहीचाटनेजैसी खानेमें आवे तो मगजके मज्जाततू मजबूत होते है बलबुद्धिवीर्य बढता है और मनसबधी व्यग्रता अस्थिरता दूर होनी है.

अमृतवटी गरमी वगेरे मगजके विकारोंकों दूरकर ताकत वीर्य वढानेमें सर्वोत्तम वस्तु है दूध सितोपलादि चूर्ण और सहतमे लेनेसें, गहु चणा मटर प्याज करेला अरवी सफरचद अनार केरी वगेरे इस रोगमें पथ्य है

॥ यादशक्ति तथा बुद्धि वधानेकी खुराक ॥

यादशक्ति बुद्धि मगजसे संबध रखती है, उसकी शक्तिका आधार मनका सुखीपणा और निरोगता पर रहा भया है पिछाडी सतावर वगेरे जो खान पान लिखा हैं वो सब बुद्धिको वढानेवाली है सो लिखते हैं ॥ दूध घी मक्खन मलाई आवलेकापाक या मुरब्बा दवा तरीके थोडा २ खाना विदाम पिस्ता जायफल कांदे इन चीजोंमेकी चीज पाक वणाकर घी चूरेकेसंग न्यारी २ हरेकचीज विदामकीकतली लड्डू सीरा वगेरे पाचनशक्ति मुजव फजर या सांझकू इनमेंकी कोईभी एक चीजसें बुद्धि यादशक्ति वहोतही वढती है अमृतवटी हमारी वनाई दवा बुद्धि शक्ति वहोतही वढाती है ब्राम्ही१मासा पींपल मासा१ मिश्री मासा४आवलामासा भर रत्तीभरअमृतवटी१टक एसे दोनु टंकले दूध भात मिश्री खाय दिन ३१ तथा ४१ इसके सिवाय दो दवा देशी वैधकमें मगजकी शक्ति याद शक्तिकू बुद्धी वढाणेकू बडी कीमियागर लिखी है ब्राह्मी एक तोला दूधसें लेणी या घीसें चाटणी या ब्राह्मीका घी बणाकर पानमें या खुराकके संग खाणा, कोरी मालकांकणी या उसका तेलभी ऊपर मुजव लेणा मालकांकणीका तेल इस मुजब निकालणा मालकांकणी २॥ रुपीयाभर लेकर उसकूं एसा कूटणासो एकेक बीजका दोदो तीन२फाड होवे पीछे एक दो मिंट तवेपर सेकणा पीछे तुरत सणके कपडेमें डाल दवाणेके संचेमें देकर दवाणा तेल निकलेगा, इस तेलकी दो तीन बूंद नागर वेलके कोरे पानपर धरकर खाणा इसतरे दिनमें तीन वखत, तेल निकल सके तो, नहीं तो पांच २ बीज पानके सग खाणा, डाकटरी दवा फासफोरिस मिली भई हरकोइ चीज बुद्धिकू मगजकू फायदेवंद है

उजाला १० रोगीकूं खुराक

साबूदाणा अरारूट टापीओका

सब तरेके खुराकमे ये तीन चीज सबसें हलकी और सहजसे पचे एसी मालम डाकदरोंनें जाहिर कीहे, जिस बेमारीमे पाचन शक्ति विगडगई होय उसमे ये खुराक फायदे वद है साबुदाणोंकू पाणीमें या दूधमें सिजाकर जरूरीहोय तो मिश्री डालकर पिलाणा चावल साबुदाणोंके दूसरे दरजे पचणेमें है साबुदाणोंसे पोपणका तत्व चावलोंमें जादा है, बेमारकों बरसभरके पहिलेका तीन बरस वाद पांच छ बरसोंकाभी चावल नहीं देणा, आधा दूध आधे पाणीका सिजायाभया भात बहोत पुष्ट होता है, फकत दूधका सिजाया भात पुष्ट तो वहोत होता है, लेकिन् बेमार और निर्बल अदमीकू पचता नही, बुखार दस्त मरोडा अजीर्णमें चावल देणा चहियें, रांधेभये बहोत पाणीके चावल उसका

निकाला भया मांड वो ठडा और पोषणकारक होता है इग्लंड वगेरे और मुलकोंमें हेजे की बेमारीमें सूप और ब्राथ देते है उससे अपणे मुलकमें इस बेमारकों चावलोका मांड वहोत माफगत आता है एसा पत चाणे गया है (अतीसार) दस्तकी सामान्य बेमारीमे चावलोंका ओसामण दवाका काम देती है दस्त बध कर देती है दाल हिन्दु लोकोंका जरूरीका नित्य खुराक है, एसा जीमणवार कम होगा जिसमे दाल नहीं होती होगी. दाल पोषणकारक पदार्थ है, पुष्टितत्व दालमें वहोत है, कितनीक दालोंमें मास-सेंभी पौष्टिक तत्व जादा है, दालोंकी अनेक जातमें मुख्य मूग है,मसूरकी दालभी हलकी है, वहोत निर्बल अदमीकों दाल अछीतरे वाफ उसमें सींद्धानिमक हींग धाणा जीरा धाणेके पत्ते डालके नितारागयाजल दियाजाता है, तो पुष्टि और दवाका काम देती है, मूग सर्वोपरिहै तूरकी दुसरे नबरकी दाल है, सो पीछाडी लिखाही है, दूधभी बेमारको वहोत अछी खुराकहे पुष्ट करे पेटमे बोझाभी नहीं करता है लेकिन् किसी २ कू माफगत नहीं आता है, दूधकू वहोत ऊकालणा नहीं पचणेमे भारी हो जाता है, और उसके अदरका पुष्टितत्वभी कम हो जाता है, दूहाभया दूधमेंसे हवा निकालणे अथवा दूधमें कोई नुक-शानकारक वस्तुकू निकालणेकू पांच मीन्ट अदाजन जरा गरम करणा दूध नहीं देणेमें आवे एसें रोग वहोत कम है, मदाग्निवालेकू दूधसें आधा पाणी अथवा तीसरे भागका जल समेत गरम कर पिलाणा, माके दूधकी गेर हाजरीमे बच्चेकूभी एसा जलवाला दूध पिलाणा जल डालणेसे जो लोक नुकशान मानते है, वेसा दूध जल डालाभया कोई नुक-शान नही करता, (अमृतवटी) बालक तथा बुड्ढेको बेमारको दूध मिश्रीके सग देणेसे तनदुरस्त कर देती है, जीर्णज्वर दुबला हो गया होय अतिसार सग्रहणी मस्सा उलटी आम्लपित्त मरोडा क्षय बादी पित्तकाकास इतने रोगोंको मिटाकर वदनमें खून वीर्य ताकत वढाती है, आयु वढाती है, पाचनशक्ति वढाती है, कोडलीवरआइल डाकदरी दवा दवामें देते है, पुष्ट है, इसवास्ते रोगीके खुराकमे दाखिल किया है, ताकतवरी दवा या खुराक जिस रोगमें देणा होय जहां कोडलीवरआइल डाकदर लोक देते हैं, क्षयरोग, भूख मरणेसें भये रोग कठवेल कान नाकमेसें पीप वहताहै, सो रोग फेफसे कासोजा (न्यूमोनिया) कास श्वास (ब्रोनकाइटीस) फेफसेके पुडतका वरम खुलखु-लिया (बचेका वडाखास) निर्बलता इन सबोमे वो लोक देते हैं, इसमें वदवो हलके दरजे वालीमें होती है बढियामे नही गरम पाणी या दूधमे इसकीं टिकिडिया सहजसें लिये जाती है माल्टाइनके सगका कोडलीवर बेमारकू खुराककी गरज सारती है, और जलदी हजम होती है,माल्टाइन जव तथा ओट नामके जवके मिलते अनाजमेंसें वनाई जाती है (बेमारके पीणे लायक जल) साफ निर्मल पाणी बेमार और तनदुरस्त दोनोकों अछा है (जैसे गंदी खाईका जल सुबुद्धि प्रधाननें एसा साफ कर राजा जितशत्रूकूं पिलाया राजा-

वडा आश्चर्यवत हुवा) ये वृत्तांत ज्ञाता सूत्रमें है इसतरेसें या अग्रेजोंकीतरे (डिसटील्ड) करणा अथवा पहले लिखा ज्यूं तीन उकालेका उकाला ठडा साफ छाणकर देणा डाक्तदर लोक हेजेमें सखत बुखारकी प्यासमें एसे जलमें थोडा २ वरफ मिलाकर पिलाते है, (नींबूका पानक) कितनेक बुखारमें नींबूका पाणी देते है, नींवूकी दो फाड कर एक वरतणमे मिश्रीपीसकर दोनोंको धरणा उसपर ऊकलता पाणी डालणा ठंडा भये वाद पिलाणा या गूदका पाणी २॥ तोला मिश्री १। तोला दोनोंकों एकजगे मिलाकर ऊकलता पाणी डालना इस जलसें कफ श्लेपम हांफणी कठ वेलका रोग ये सब मिटता है, (जवका पाणी) छडेभये जव एक वडा चमचाभर दो तीन चीमठीभर बूरा नींबूकी छाल एक वरतणमें रखकर ऊपरसे ऊकलता जल डालणा ठडा भयेबाद छाणकर पीणा इसजलसें बुखार छाती का दरद अमूंझणीयेसब मिटती है

॥ किरण ३ री ऋतुचर्या आहार तथा विहार ॥

रोग होनेके बहोतसे कारण विवहारनयसें मनुष्यकृत है, तैसें निश्चयनयसें दैवयाने स्वभावजन्य कर्मकृतभी हैं, उसमें पांच समवायोंमेंसे काल अग्रेश्वरीपणा धारण कर ऋतुओंके, फेरफारका समावेश होता है, बहोत गरमी और बहोत ठड ये कालधर्मका कुदरती कृत्य है, मनुष्य उसकू किसीतरे रोक नहीं सकता और वस्तुओंके संयोगसें याने रासायणिक प्रयोगोंसें कुदरती मामलेमें फेरफार ऊपर अदमी थोडीदेर जय पा सकता है, जेसैंके मोसम विगर वरसाद वरसा देणा लेकिन् जो अपने स्वभाव वस कुदरती फेरफार होते रहता है वो सब प्राणियोंके हितका विचार करे तो अछा है इसवास्ते अदमीकू इस वातका उद्यम करना फजूल है, कुदरती ऋतूके फेरफारसें हवामें फेरफार होकर शरीरके अदरकी गरमीसरदीमे हेरफेर होता है, इसवास्ते एसी वखतमें हवाकू सुधारना शरीरपर असर नही होसके एसा उपाय करना ये मनुष्यका काम है, वर्पकी जुदी २ ऋतूमें गरमी और ठंडीसे अपने आसपासकी हवामें और हवाके योगसें अपने शरीरमें जो जो फेरफार होताहै उसके अनुसार आहार विहारका नियम रखना इसका नाम ऋतुचर्या है हवामे गरमी और ठडी ये दोय गुण मुख्य रहा भया है इन दोनोका प्रमाण हमेस एक सदश होता नहीं द्रव्यक्षेत्र कालभावसें उनोंमें फेरफार देखनेमें आता है भरतक्षेत्रकी पृथ्वीके उत्तर और दक्षिण किनारेपर आयेभये प्रदेशोमें अत्यत ठंड गिरती है, इस पृथ्वीके गोलेके मध्य रेखाके आस पासके प्रदेशोमें वहोत गरमी गिरती है और दोनु अर्द्धगोले के, बीचके प्रदेशोंमें गरमी और ठड वरावर रहती हैं इसतरे क्षेत्रका विचार करे तो उत्तर ध्रुवके आसपासके प्रदेशोमें अर्थात् सेवेरिया वगेरे मुलकोंमें ठड वहोत गिरती है, उसके नीचेके तातार टीवेट और अपने हिन्दुस्तानके उत्तरभागमे गरमी और ठड बराबर रहती है उससेभी नीचे विपुववृतके आसपासके मुलकोंमे अर्थात दक्षिण हिन्दुस्तान और (शिलोन)

याने लंकामें धूप बहोत गिरती है, और ऋतुके फेरफारसे उहां फेरफारभी होता है, अर्थात् इन देशोंमें बारे मास एक सदृश ठंड या एक जैसी गरमी नहीं रहती ठंड और गरम ऋतूकी पृथ्वीपर सूर्यकी चालपर आधार है भरतक्षेत्रके उत्तर तथा दक्षिण किनारेपर देशोंमें सूर्य कभीभी सिरेपर सीधी लकीरपर नहीं आता छछ महीना उहांपर सूर्य दिखाई भी नहीं देता बाकीके छछ महीनोमें उहां सूर्य अपने देशमें जेसाउदय अस्त होता जैसा झांखा प्रकास दिखाई देता है, कारण इसका एसा है, सूर्यके उदयहोणेके १८४ मंडल जंबूद्वीपपन्नती सूत्रमें लिखा है, जिसमें कितनेक मंडल तो पृथ्वीके ऊपर आकाश प्रदेशमे मेरूके पाससे सरू है कितनेक मंडल लवण समुद्रमें है सम भूतल मेरूके पास है, उहासे सातसे नव्वे जोजन ऊपर आकाशमे तारामंडल सरू है, सूर्य पहले है, एकसो दश योजनमें सब नक्षत्र तारामंडल है, जमीनसे नवसें जोजनपर अंत है, सूर्यके विमाण पृथ्वीसे चंद्रकी विमान पृथ्वी असी जोजन उंची है, सब तारे मेरूकी प्रदक्षणा फिरते है सात ऋषिके तारे मृगादिक ध्रुवकी प्रदक्षणा फिरते है, हमेसांके वास्ते मुलकोकी गरमी या ठंडी कायम सिद्ध नहीं होती जिस हिमालयके पास आजदिन बरफाण गिरके ठंढा देस बण रहा है, ये देस किसी कालमें गरम था एसा सिद्ध होता है, कारण गरमीके सबब जब बरफाण गलता है, तब नीचेसें मेंमांथ याने मरेभये हाथी निकलते है, ये हाथी विनागरम देशविना होते नहीं और बरफाणमे क्या खाते थे बस ये मुलक कोइदिन गरम ओजपर था हाथीयोके रहनेलायक बन था एकाएक बरफ गिरा नीचे दबगये सो केइ बेर निकल चूके है, बरफमें दबी वस्तु केइ कालतक नहीं बिगडती है अब मध्य हिन्दुस्तान समशीतोष्ण देशमेंभी सूर्यके नजीक पणेसें अथवा दूरपणेसें जुदे २मुलकोंमें कम वैसी गरम और ठंड गिरती है, इसवास्ते वर्षके अथवा ऋतूके दो अयन गिणे जाते है उत्तरायन उष्णकाल दक्षणायन शीतकाल पृथ्वीके गोलका एक नाम मुकररकर उसके बीचमें पूर्व पश्चिम एक लकीर कल्पनकर उसका नाम पश्चिमी विद्वानोंनें विषुववृत धरा है,जैनधर्मवाले मध्य प्रदेशकानाम मेरूधराहै हमारे सर्वज्ञ सिद्धांतसें पृथ्वी गोल थालकी सि कलहै, असली दरियाव खाईके तोर जंबुद्वीपबीचमें लाख जोजनका, जिसके बाहिरकर दो लाख योजनका है, पश्चिमी विद्वान गेंदया नारंगीके डोल पृथ्वीकी गोलाई मानी है, और जमीन बहोत थोडी मानते है, सर्व पृथ्वीकी परिक्रमा ८२ दिनकी रेल बोट द्वारा देणका कहते हैं, जो कुछ देखा स्यात् कथंचित् सत्य है, जगतीकी दिवालचीण पास दक्षणदिसाकी थोडी दिखतीहे बाकी बरफमे दबणेसे नहीं दिखतीहै पृथ्वी बहोत लंबी चोडी है, दरियाव सगर चक्र वर्त्तकी वखत दक्षिणकी तरफसें खुली जमीनमें आया बहोत जमीन जलमें चली गई उत्तरमेंभी दरियाव चक्कर इधरहीसे खा गया ऋषभदेवके वखत जो नकसा भरत क्षेत्र जंबूद्वीपका था सो बिगड गया औरही सिकल दिखणे लगी दरियावके आये जलमें बर-

फाण जमगया बुद्धिवान् फिरते हैं, मगर जा नहीं सकते है, खोज करते २ जेसे अमेरिका नई दुनियाका पता लगा कालांतरमे खोजी ओर बुद्धिवान उद्यमीकों फेरभी कइ पते मिलेंगे सर्वज्ञ तीर्थंकरने जो केवल ज्ञानद्वारा देखके प्रकाश किया है, सो तो सब यथार्थहे बाकी सब पदार्थ निर्णय उनोंका कहा सत्य दीख रहा है, और सत्य है तो येकेसे सच न होगा हमारे समझमें जो बात नहीं बेठे वो हमारी भूल है, इतनीसी जमीनमें गोलाइ पृथ्वीकी मानणी प्रमाणसें सिद्ध नहीं होती लेकिन भरत क्षेत्रकी गोलाईसें ये हिसाब हम न्याय पूर्वक मजूर करते हैं, सूर्य छ महीने तक लकीरके उत्तर तरफ उष्ण कटिबंधमें फिरता है, छ महीने विषुववृतकी दक्षण तरफके उष्ण कटिबंधमे फिरता है, जब सूर्य उत्तरके तरफ फिरता है, तब उत्तरके तरफका उष्ण कटिबधके प्रदेशोपर उत्तर सूर्यकी किरणे सीधी गिरती है, इससे उस प्रदेशोमें सखत ताप गिरता है इसीतरे दक्षिण तरफ जब फिरता है, तब दक्षण तरफके उष्ण कटिबधके प्रदेशोपर दक्षण सूर्यकी किरणे सीधी गिरती है तब सखत ताप गिरता है, अपणा हिन्दुस्थान देश विषुववृत्त याने मध्यरेखाकी उत्तर तरफ आया भया है दक्षिण हिन्दुस्थान उष्ण कटिबधमें है, बाकीका सब उत्तर हिन्दूस्थान समशीतोष्ण कटिबधमें है, इसतरे सूर्य उत्तरायन छ महीनेका होता है, तब उत्तर तरफ ताप जादा गिरता है, दक्षण तरफ कम, सूर्य दक्षिणायन छ महीनेका होता है, तब दक्षण तरफ गरमी जादा उत्तर तरफ कम, उत्तरायनके छ महीने फागण चैत वैशाख जेठ आषाढ सावण दक्षणायनके छ महीने भादवा आसोज काती मिगसर पोह माह छ महीने उत्तरायनके क्रमसें ताकत घटाणेवाले हैं, दक्षणायनके छबतर २ क्रमसें ताकत वढाणेवाले हैं, वर्ष भरमें सूर्य बारे रासीपर फिरता है दो दो रासीसें ऋतु बदलती हैं एक वर्षकी छ ऋतु कुदरती है न्यारें २ क्षेत्रोंमें जुदी २ ऋतु एकही वखत नहीं बैठती है, तोभी प्राये आर्यावर्त हिन्दुस्तानके देशोमे सामान्य तोर ऋतू इसमुजब गिणे जाती है बशत ऋतू फागुण चैत, ग्रीष्म ऋतु वैशाख जेठ, प्रावृट् ऋतु असाढ सावण, वर्षाऋतू भादवा आसोज, शरदऋतू कार्तिक मिगसर, हेमत शिशिरऋतु पोह माह, इहां बसतऋतूका आरभ फागुणसें गिणा है लेकिन् असली गिणती जैनाचार्योंने चिंतामणी ग्रंथमे सक्राती पर लगाई है ओर यथार्थभी है जेसे मेख वृखकी सक्राती ग्रीष्म ऋतू, मिथुन कर्ककी प्रावृट् ऋतू, सिंह कन्याकी वर्षाऋतू, तुल वृश्चिकी शरदऋतू, धन मकरकी हेमतऋतु, हेमतमें मेघ वरसे ओले गिरे तो शिशिरऋतू कहलाती है वहोत ठंड गिरणेसे, तेसें कुभ मीनकी बसतऋतु, सक्राती लगणेके आठ दिन पहलेसे पिछली ऋतूकी चर्या धीमे २ छोडणी अगली ऋतुकी ग्रहण करणी, ऋतुओंका कितनाक पथ्य तो, ऋतू है सो अदमी पास आपही पलाती है, जेसे ठंड गिरे तब गरम वस्त्रादि वस्तुओंकी इच्छा, गरम जादा गिरे तब महीन वस्त्र ठडे जल आदि वस्तुओंकी

इच्छा प्राणी स्वतः साधन करताहे केइयक इग्लंड कावल वगेरे देशमे ठड हमेश जादा है, उहां वैसाही साधन प्राणी करता है देखो इस हिन्दुस्थानमे ग्रीष्म ऋतुमे क्षेत्रकी तासीरसे चार पहाड वहोत ठडे है उत्तरार्धमे विजयार्द्ध जिसकू इस वखत लोक हेमालिया कहते है, दक्षणमें नीलगिरी, पश्चिममे आवू, पुरवमे दरजलिंग, कालांतरमें इनोकी तासीर वदल जाना ताजुन नहीं गरमसेंसरद, सरदसे गरम, हवाके फेरफारोको तों अपणे समझ सकते हैं, जितना समझतें है, उस मुजव यथा शक्ति उपायभी करते हैं, लेकिन ठढ और ताप ऋतूओंका फेरफार अपणे वदनमे क्या क्या फेरफार करता है, और अलग २ छव ऋतू दो दो महीने वातावरणमें किस २ तरेका फेरफार करता हे, उसकी अपने शरीरकू केसी असर होती है, ये वात अपने लोकोंमें वहोत कम समझते होंगे इसवास्ते छव ऋतूओंका सक्षेपवर्णन इहां करता हू, शरीरकी हिफाजत और निरोग रखणेवाले समझदारोकों ये निर्णय वहोतही फायदेवद होगा, हेमंत तथा शिशिर ऋतूभरठड कालेमें खाये भये पदार्थोसें वदनमे रस याने कफका सग्रह होता है वसत ऋतू लगते गरमी गिरणी सुरू होती है, उससे शरीरके अदरका कफ पिघलणे लगता है, जो उसका शमन इलाज नहीं करणेमें आवे तो खास कफ ज्वर मरोडा वगेरे रोग होता है, वसतमें कफकी शांति भये पीछे ग्रीष्मके सखत तापसें शरीरके अदरका जरूरी चहिये एसा रहा भया कफ जलणे याने क्षय होणा सुरू होता है, तव वायु वदनमें गुप्तपणे एकठी होणी सरू होती है, वर्षाऋतुकी हवा चलतेही दस्त उलटी बुखार वगेरे वायुसें सन्निपातादि कोप अग्नि मद खून- विकारादि होता है, उस वायुकों मिटाणे गरम इलाज करणा अथवा अज्ञानपणे गरम खानपानसें पित्तका सचय होता है शरद्ऋतू लगतेही सूर्यकी किरण तुलसक्रांतीमें सोलेसे होकर सखत ताप गिरता है, इतनी किरण और किसी सक्रातिमे भी नहीं होती है, ये वात सूर्यपन्नत्तीसूत्र तथा कल्पसूत्रकी लक्ष्मीवल्लभी टीकामें लिखा है लोकीक कहना वटभी है (दुहा–आसोजोकी धूपमें, जोगी होगये जाट ॥ ब्राम्हण होगयेसेवडे, करसे वण गये भाट ॥ १ ॥ धूपके योगसें पित्तका कोप होकर पित्तका बुखार मोतीझरा पाणीझरा सन्निपात उलटी वगेरे अनेक उपद्रव होता है, तव यातो ठडे इलाजोंसें अथवा हेमतऋतूकी ठडी हवासें या शिशिरऋतूकी तेज ठडसे पित्त शात होता है, लेकिन् उस हेमतकी ठडसें खानपानमे पौष्टिक तत्व जादा आता है, जिससे कफका सग्रह होता है, वो वसतऋतूमें कोप करता है, हेमतमें कफका सन्चय वसतमें कोप, ग्रीष्ममें वायुका सचय प्रावृट्में कोप, वर्षामें पित्तकासचय सरदमें कोप, इसवास्ते वमत वर्षा और शरद इन तीनोंही ऋतूमें रोगकी जादा उत्पत्ती होती है, खानपान तथा विपरीत विहारसे वाय पित्त कफ विगडकर सव ऋतूओंमें रोग हो जाता है अपणी २ ऋतूमें जादा कोप करता हे, जिसमेंभी वेसी २ प्रकृती

वालोंकू जादा, वसंतमें कफ सबोंके उपद्रव करता है, लेकिन् कफकी तासीरवालेकूं जादा इसीतरे औरोकाभी समझ लेना.

॥ वसंतऋतू ॥

वसंतऋतू, जो ठंड कालेमें चिकणा और पुष्ट खुराक खाये जाता है उससे कफका संग्रह होकर ठढ है सो कफकूं अछीतरे शरीरमें रखता है वसंतकी धूपसें गलना सरू होता है कफ जादेतर मगज छाती और सांधोंमे रहता है, शिरका कफ पिघलकर गलेमें ऊतरता है उससें जुखाम कफ खासीका रोग होता है छातीका कफ पिघलकर होजरीमें जाता है, उससें अग्नि मंद होती है और मरोडा होता है, इसवास्ते वसंतऋतू लगतेही उस कफका यत्न करणा मुख्य इलाज दो तीन है जो तासीरकू माने सो कर लेना कफकी शांति करणी आहार विहारसे, १ या उलटी जुलाबकी दवासें कफकूं निकाल डालणा २ जिसकूं कफकी बहोत तकलीप होय और शरीरमें शक्ति होय वो तो उलटी जुलाब लेना बालक बुड्ढा नाताकत कभी लेना नहीं सोले वर्षतक हरडे रेवचीणीका सत वगेरे बालककूं रोगपर सामान्य दस्त देना तेज जुलाब देना नहीं, (वसतऋतूका नियम) । भारी तथा ठंडाअन्न, दिनकी नींद, चिकणा खट्टा तथा मीठा पदार्थ नया अनाज इनोंको छोडणा एक वर्षका पुराणा अन्न सहत कसरत जगलमें फिरणा तेलमर्दन पगचंपी इत्यादि उपाय कफकी शांति करता है पुराना अनाज कफकू कम करे सहत कफकूं तोडे, कसरत तेलमर्दन दबाणा शरीरके कफकी जगे छुडाय देता है, लूखी रोटी खाकर महनत मजूरी करनेवाले गरीबोंकों ये मोसम बिगाड नहीं करती माल खाकर एक जगे बैठणेवालेकू नुकशांन करती है तभी तो पूर्ण वैद्योकी सलासे मदनमहोत्सव राग रंग गुलाब जल अबीर गुलालादि खेल बगीचोमें जाणा,इत्यादि चला होगाजिसमें धर्मी पुरुष तो मकसूदावादमें परमेश्वरका रथ फागुण महोछवादिक निकालकर सैल करते है,कामी पुरुषोका मदन महोछव गवरां तथा होली वगेरोंसें परिश्रम करते हैं, दालिये वडे कफोछेदक खाते है, खेलतमासेके बाहने रातकू जाग परिश्रमसें कफ घटाते हैं, लेकिन् होलीमें असंबद्ध वचन बोलते हैं, ये रूढी बहोत खराब है इस भडचेष्टाकू छोडणा अछा है इस बकणेसें मज्जा-तंतु कम जोर होकर वदनमें तथा बुद्धिमें खराबी होती है प्राये दो हजार वर्षसें ये भड चेष्टा वाममार्गियोके मतकी है लोकोने ए मगलीक माना है कूडापथियोका ये भजन मुख्य है ॥ मारवाड लोकोमें बडी भूल है, जिस्सें नुकशांनी पाते हैं, लेकिन् संभलते नहीं ऋतु विपरीत मनोकल्पित आचरणा चली अब तो कूएमे भग गिर गई जिसमेंभी वो कहणा वट, सत्य वणपडी के, हमकूं तो रातींधा भाभेजीने भजलोई राम, सोमरद लोक तो बाजे २ इस बातोंकों रोकेभी चाहै लेकिन् घरधणियाणीयोंके सामनें निलीसें चूआकू डरनाही पडे वसंतमें ठडा खानेसे बडाई नुकशान सो शीलसातमकू सब ठंढा खाते है

गुड महा नुकशानकारी, इस ऋतूमें सो गुडराव गुलपपडी अवस्य इस मोसममें खाते है, शील देवीके नामका वाहना अरे कुलवती लक्ष्मीयों विचार करो दयाधर्मसे विरुद्ध और शरीरकू नुकशान करता एसा खानपानसे क्या फायदा है, जिस शीतलादेवीकू पूजते तुमारी पीढिया गुजर गई जब बचोंकों ये रोग माके दूधका विकार निकलता था तो काणे अधे विदरूप लुले लगडे होते थे हजारों मरते थे जिसको खोदके निकाल डाला बालकों का महासकट टाल दिया ऐसे प्रत्यक्ष देव तुम अगरेजोंको क्यो नहीं पूजते वो आज साहिबके नामसे विख्यात तुम कल्युगमें इनोंकों दशमा अवतार प्रत्यक्ष विष्णुका समझो, रूढीपर नहीं चलना, तत्वविचारणा बाजे औरते तीन २ दिन ठडा खाती है, इससे मतलब क्या निकलता है, रोग शीतलाकातो डाकदरोनें निजोखम कर दिया, अव्वलमे किसी महापुरुषने सत्तमीको शीलपालणा चूलेकों नहीं सिलगाणा अर्थात् उपवास करना कहा होगा, जिससे कफकी और कर्मोकी निवृत्ती हो जावै, तुम लोकोंनें मिथ्यात्वके वसये मामला सरू कर दिया अवल तो एक दोयनेही सरू किया होगा क्रमसें चढा है; जैसें दिल्लीमें, पनघटपर किसी औरतका घाघरा खुल गया लोकोनें कहा घाघरा पड गयारे घाघरा पड गया, दूर खडेकूं सुनाई दिया आगरा जल गया, आखर बादसाहतक पहुचीके आगरा जल गया आखर तहकीकातसे घाघरा पडणा सिद्ध भया दुनियाका तो ऐसा ढग है ॥

॥ ग्रीष्म ऋतु ॥

(ग्रीष्म)गरमीमें बदनका कफ सूकणे लगताहे तब उस कफकी खाली जगे(हवा)वायु भरी जती हैइस मोसममें जैसें सूर्यका ताप जमीन केऊपरके रस कसकू खेच लेता है तैसें अदम्योंके शरीरके अदरके कफरूप प्रवाही वहणेवाला पदार्थोंकू शोषण करता है इस वास्ते सावधानपणेसे उपाय जरूर करना इस मोसममे जो गरम पदार्थ खानेमें आवे तो बडा नुकशान होता है रस सूके जितना जो पीछा भरती होताजावै वायुकू जगे नही मिले ऐसे पदार्थ खाने पीणे चाहिये कुदरती पैदा भई वस्तु मधुर रसवाली इस मोसममे चहिये, सो मिलती भी है देशांतरोंमें, जैसें केरी, आब, फालसा, सतरा, नारगी, अबली नेंबु जामुन वगैरे इस मुजब वरताव करना, १ खारा तीखा खट्टा और लूखा पदार्थ कसरत तैसे धूप अग्नि ये सब चीजे रसकू सुकाकर गरमी बधाती है तैसें गरम मसाला अथाणा चटणियां मिरचां वगैरे हमेसा ही वहोत खानेसें नुकशान करती है इस मोसममें वहोतही करती है मीठा ठडा हलका और रसवाले पदार्थ जादे खाना जिससें क्षय होता रस पैदा होता है भाग्यवान लोकोंने दहीका पाणी झार मिश्री मिलाय श्रीखड खाणा शरबत मुरब्बा पना इत्यादि खाना पीना तलघर तह खानेमें बैठना रक्तपित्त रोगमें जो पथ्य आगे लिखा है वो सब इस मोसममें पथ्य समझना स्त्री गमन ६

दिनसें अथवा पनरे दिनसें पथ्य लिखा है दुपहरकों, शक्ती मुजब, गरीव साधारण
गुलाब अनार नारंगीके वढिया सरवतोंकी एवजीमे अंबलीका पाणी कर उसमें
अथवा पुराणा गुड मिलाकर पीणा अंबली हमेसां खाने लायक चीज नहीं है तोभी
तीकूं माफगत आवे तो गरमीकी सखत मोसममें साल उतार अमलीका सरवत फा
करता है रोटीके सग खानेसें भी फायदेवंद है ॥

॥ वर्षा प्रावृट् ऋतु ॥

चार महीने वरसातके है मारवाडमें आद्रासें, दक्षिणमें मृग नक्षत्रसे, वर्षातकी
सरू होती है ग्रीष्ममें वायूका संचय भया होता है रस सूकनेसे ताकत घटी भई ह
है जठराग्नि मद भई होती है जलके कणों समेत जव वरसाती हवा चलती है मेह
सता है पुरानेमें नया पाणी मिलता है ठडा पाणी वरसणेसें शरीरकी गरमी वाफ
होकर पित्तकू विगाडती है जमीनकी वाफ और खटासवालापाक पित्तकू वधाय वायू त
कफकूं दवानेका प्रयत्न करता है और पालर पाणी मैला कफकू वढाय वाय पित्तकू द
ता है इसतरे इस मोसममें तीनों दोपोंके आपसमें झगडा चलता है इसवास्ते इन ती
दोषोंकी शांतिवास्ते युक्ति पूर्वक आहार विहार रखणा वर्षाऋतूका वरताव इस मुज
करणा, जठराग्नि प्रदीप्त करे सव दोपोको वरावर रखे ऐसा खान पान करणा अर्थात् स
रस खाना १ वण सके तो ऋतू लगते ही हलकासा जुलाव लेणा खुराकमें वर्षं भर
पुराणा अनाज वरतणा २ मूग और तूरकी दालका ओसावण उसमें छाछ डालके पी
फायदेवंद है इस मोसममे दहीमें सेंचल सींधा या सादा निमक डालके खाणा वहोत अ
है लोक मूर्खताईसें गरमी मोसममे दही खाणा अछा समझते हैं वेसा है नहीं, खाते ठ
मालम देता है लेकिन् पचती वखत पित्त वढाता हे उलटा गरमी करता है मिश्री डा
खानेसें पित्त शांत करता है वरसादमे दही वायूकों शमाता है अग्नि प्रदीप्त करता
युक्ति विना खाया भया दही सव ऋतूमें नुकशान करता है वरसात तथा हेमंतमें निम
डाला भया दही पथ्य हे ३ छाछ नींवु केरी वगेरे खट्टे पदार्थ और मोसमसे इस मोसम
जादा पथ्य है प्रकृतीके अनुसार प्रमाण मुजव सवकू ये चीज इस मोसममें पथ्य है ४
नदी तलाव कूएके पाणीमें वरसादका मैला पाणी मिलता है इसवास्ते इनोंका जल पीणे
लायक नहीं जिस कूएमें या कुडमें वरसाती पाणी नहीं मिलता होय सो पीणा ५ वरसा-
दके दिनोंमें क्षारवाला पदार्थ पापड काचरी आचार वगेरे तैसें घी तेलवाले पदार्थ भुजिये
वडे चीलडे वेढवी कचोरी जादा फायदे वद है ६ तल घरका वैठणा नदी तलावका पाणी
गुड दिनकी नींद धूपका लेना कसरत इतनी वातोंकों वरसातकी मोसममे छोड देना
इस मोसममें लूखे पदार्थ खाणा नहीं, वायू वढाता है, ठडी हवा लेनी नहीं कादा और
भीजी जमीनपर पांव उघाडे फिरणा नहीं भीगे कपडे पहरणा नहीं वाय छांट सामने

बैठणा नहीं घरके सामने कादा और गदकी होणे देनी नहीं पालर जल पीणा नहीं पालरमें नहाणाभी नहीं ८ एसा चार महीनोका श्रावृद्वर्षाका वरतावा हैं, लूण इस मोसममें जादा खाणा कल्पसूत्रकी टीकामें लिखा है.

॥ शरदऋतु ॥

सब मोसमोंसे शरदऋतू रोगोंके उपद्रवोंकी जड है, सो लिखाभी है रोगाणां शारदी माता, पितातु कुशमाकरः॥सरदऋतू रोगोंकी पैदा करनेवाली माता है, वसतऋतू रोगोंकू पैदा करके पालनेवाला पिता है, सर्व रोगोंमे ज्वर राजा है, ज्वर है सो इस मोसमका मुख्य उपद्रव है इस मोसममें बहोत सभलके चलणा चहिये वर्षातमे सचय भया पित्त शरदऋतूकी धूपकी गरमीसें पित्तका कोप बदनमें होकर बुखार आता है, और वरसादसे जो भीगी जमी होती है वो धूपसें जलकी वराल होकर हवाकू बिगाडती है विशेषपणे (जो मुलक नीचे है) जहां वरसादका पाणी भरा रहता है, उहां हवा जादे बिगडती है, उसकूं अंग्रेजीमें मेलेरिया कहते है ये जहरी हवा बुखारकू पैदा करनेवाली है जिसकू (मेलेरियसफीवर)कहते है शीतज्वर एकातर तिजारी चोथिया वगेरे विषमज्वरकी ये खास मोसम है ये सब पित्तके ज्वर है बहोत अदम्योंकों ये ज्वर वरसोवरस आके हाजरी देता है और कितनोकी सेवा तो मुदततक बजाया करता है, सो छोडताभी नहीं है, शरीरकू मिट्टी मिला देता है, पेटमें तिल्ली बढ जाती है सरीरकू विदरूप कर देता है, जीर्णज्वरकेरूपसे बदनमें निवास करता है, वेर २ उथला मारता है, इसवास्ते हुसियारीपणेसे ऋतूमुजब आहार विहार करे पित्तकू शांत करे बेदरकार लोक अज्ञानकेवस बडे २ कष्ट भोगते हैं, एसी मूर्खताईका वैसा फल चाखना होता है, इस पित्तकू जीतनेका मुख्य उपाय तीन है (१) (पित्तशमन) खान पान और दवासें पित्त दबाणा(२उलटीसें) या जुलाबसें, पित्त निकाल डालणा (३ तीसरा उपाय तो विरले भाग्य योगसेंही बण आता है,) याने खून निकलवाणा फस्त या जोक वगेरेसें थोडा २ पहलेके दो इलाज तो सहज करने जैसा है, मगर उलटी या जुलाब पथ्यसें कराणा,(मरदका जुलाब और औरतका जापा बराबर है,)पूरे वैद्यसें या इस दीपकके प्रकासकू देखणा, जुलाब लेना तब मालसकराय घी पीकर तीन पांच या सात दिनतक पहली वमनकर तीन दिन के बाद जुलाब लेना घी पीनेकी मात्रा नित्यकी २ तोलेसें चार तोलेकी बस है आगे लिखेगे ॥ वायुकी प्रकृतीवालेनें शरदऋतूमें घी पीकर पित्तकी शांति करणी, पित्त प्रकृतीवालेनें कडवे पदार्थ खाणा पीणा सो नीमके दरखत परकी गिलोय, नीमकी अतर छाल, पित्तपापडा, चिरायता वगेरे मुख्य है, इनोमेंसे हर कोईएक चीजकी फक्की या रातकू भिगाकर फजरमें उकालकर छाण ठंडाकर मिश्री डाल पीणा, मात्रा तोला १। इससें बुखार आवे नहीं होय तो चला जाय पित्तकी शांति हो जाती है, इससें दूसरा इलाज दूध मिश्री चावलोंके खानेसेंभी पित्त शांत होता है,

जुलाब पित्त सामक एसा गुणवाला लेना हरडे अमरसरी जवा हरडे अथवा निसोतक छाल बूरा मिलाय फकी लेनी, दालभात पतला पथ्य लेना जादा दस्त काली निशोतके छालसे आता है, लकडी बीचकी निकाल डालणी शरदऋतूका वरताव इस मुजब करण १ फजरकी ओस पूरबकी हवा क्षार पेटभर भोजन दही तेल खटाई तीखा सूठ मिरचा दिक हींग खारा चरबीवाला जादा पदार्थ सूर्य तथा अग्निका तप तेजदारू दिनकी नींद इतनी वस्तुओंका त्याग करना शरीरके निरोगार्थ त्याग है, सो तप है, इछा रोधन है सो तप है १ मिश्री बूरा कंद कमोद साठीचावल दूध ऊख थोडा निमक गहूं, जव, मूंग नदी तथा तलावका पाणी चदन चंद्रमाकी किरण फूलोकी माला सुपेद वस्त्र ये सब शरदऋतुमें पथ्य है २ वैद्यकशास्त्र कहता है, ग्रीष्मऋतूमें दिनकू सोणा, पोसमाहमस्त हेमतमें गरम पुष्टिदार खुराक खाना शरदऋतूमे दूध मिश्री पीणा इसतरेसें प्राणी निरोग दीर्घायु होता है२ शरदऋतूमें भारी खुराक खाणा नहीं आसोज काती तुलवृश्चिककी सक्रांतीमें बहोत पेटभर खानेसें बहोत नुकशान है, काती वद अष्टमीसे मिगसरके आठ दिन बाकी रहे जहांतक यमदाढ कहलाती है, जो इन दिनोंमें थोडा और हलका भोजन करता है सो मौतकी दाढसे बचता है, शरदऋतूमें खीचडी कुपथ्य है रक्तपित्तका पथ्य इस मोसममें पथ्य है, नदी तलाव जिसपर दिनकी सूर्यकी किरण पडे रातकूं चंद्रकी एसा जल पीणा पथ्य है.

॥ हेमंतऋतु ॥

ग्रीष्मऋतू जैसें अदमीकी ताकतकूं खेंच लेती है, तैसे हेमंत शिशिरऋतू ताकतकी बढो तरी कर देती है, सूर्य ताकत पदार्थोंका खेंचनेवाला, चद्र ताकत देनेवाला, शरदऋतू लगते सूर्य दक्षणायन होता है हेमतमे चंद्रकी शीतलता बढनेसे अदम्योंमे ताकत बढणा सरू होता है सूर्यका उदय दरियावमें होता है बाहर ठड रहणेसें अंदरकी जठराग्नि तेज होणेसें खुराक जादा हजम होता है, गरमीमें सुस्ती रहती है ठड कालेमें तेजी, उसका यही कारण है जठराग्नि जिसकी तेज उसकू पौष्टिक खुराक लेणा चहिये मंदाग्निवालेनें हलका और थोडा खुराक लेना चहिये तेजाग्निवाला पूरा पुष्ट खुराक नहीं खावे तो वो अग्नि रस खून वगेरेकू सुकाय डालती है मदाग्निवालोंकू पुष्ट खुराक खानेसे नुकशान होता है इस ऋतूमें मीठी चीज खट्टा और खारा पदार्थ खाणा चहिये मीठे रससें कफ बढता है तभी प्रबल भई जठराग्निका बराबर पोषण होता है मीठे रसके सग रुचि पैदा करणेकू खट्टा और खारा रस जरूर खाणा चहिये फेर ये तीन रस अनुक्रमें भी खाणेका दिखता है हेमत ऋतूके साठ दिनोंमेंसें पहले बीस दिनतक मीठा रस जादा खाना. बिचले बीस दिनोंमे खट्टा रस जादा खाणा अंतके बीस दिनोंमें खारा रस जादा खाणा मीठा रसका ग्रास पहली लेणा पीछे नींबु कोकम दाल साग राईता कढी अचार वगेरेका ग्रास लेणा चटणी

पापड खीचिया वगेरे अतमे खाना इस क्रमसें उलट पुलट खावे तो जरूर नुकशान करता है, क्योंके शरद ऋतूका पित्त हेमतके पहले पक्षमें शरीरमें कुछ्यकरहा भया होता है, सो पहले खट्टा खारा रस खानेमे आवे तो उलटा नुकशान होता है (हेमत ऋतू-का वरताव इस मुजब करना) जुलाब लेणा नहीं, तीखा और तुरा पदार्थका जादा सेवन करणा नहीं, खुली जगेमें सोणा नहीं, ठडे पाणीसे नाहणा नहीं, दिनका सूणा नहीं १ अछीतरे पोपण करे ऐसा पुष्टिकारक खुराक खाना, स्त्री सेवन, तेलका मालिस, कसरत, पुष्टिकारक दवा, पौष्टिक खुराक, पाक, गरम कपडे, अगीठीसे मकान गरम रखणा हेमत शिशिरका एकही वरतावा है, ये दोनों ऋतू वीर्य सुधारणेकू वहोत अछी है सब ऋतूमे आहार विहारका नियम पालनेसें शरीरका सुधारा होता है लेकिन् वीर्य सुधरे विगर शरीरका सुधारा कुछ भी नहीं समझणा वीर्य सुधारणेकू ठडी मोसम ठडी प्रकृती ठडा देश विशेष अनुकूल होता है ठडी तासीर ठडी मोसम ठडे देशके वसणेवालोंका वीर्य जादा मजबूत होता है लेकिन् इन तीनोंकी अनुकूलता अपणे देशवासिंदोकों पूरी तोर हासिल नहीं है क्योंके अपना देश समशीतोष्ण है प्रकृती तथा ऋतुकी अनुकूलता तो अपणे आधीन है अपणी प्रकृतीकू ठडी, याने दृढता, और सत्व गुणवाली करणी, ये अपणे स्वाधीनताकी वात है तैसें वीर्य सुधारणेवास्ते तथा गर्भ धारण करणेवास्ते शीत कालकू परसन करणा येभी अपणे स्वाधीनकी वात है इसवास्ते इस मोसममें अछे वैद्य या डाक-टरोकी सल्लासे पौष्टिक दवा पाक और खुराक खाणेसे वहोत ही फायदा होता है इस ऋतुमें शरीरकू जो पोपण देणेमें आता है वो वाकीके आठ महीनेतक ताकत रखता है वीर्यकू मजबूत करता है ये ऊपर छव ऋतुओंका पथ्य लिखा है सो निरोगी मिजाज वालोंकेवास्ते है रोगीका पथ्य रोग प्रकरणमें लिखेगें देश अपणी तासीरकू पहचान कर पथ्य करणा विशेष विवेचन वैद्य डाकदरोकी सल्लासे समझणा ॥

किरण ४ थी दिनचर्या.

रोगरहित अदमियोंनें आयुष्यकी रक्षावास्ते पिछली चार घडी रात रहै तब ऊठणा जादा निद्रा आती होय तो पांच वजेके पहले उठजाणा जिनके सोते २ सूर्य उदय हो जाता है जिसका वीर्य धैर्य और आयु कम हो जाता है, निरोग अदमी सूर्य उदयतक सोता रहै उसके शरीरकी चिन पिन और सुस्ती कभी मिटती भी नहीं अदमी रोगी सोतारहे सो प्राणात हो जाता है, जलदी उठणेसें मन उछाहमें रहता है दिनमें काम काज अछी तरे होता है देरके उठणेसें अथवा जागते भी विछोणेमें पडे रहणेसें आलस वढता है प्रभातसमे बुद्धि निर्मल रहती यादशक्तीभी तेज रहती है इसवास्ते पढणा और शत्रू मित्रपर सम परिणाम रखके परम पदका साधन पहले दो घडी निश्चय करणा फेर इस भवके परभवके दोनोके सुधारणेका प्रयत्न विचारणा परमेष्ठि परमेश्वरका स्मरण करणा (सो इसतरे है) जगजीव

रक्षक, संसारबंधनके छुडाणेवास्ते दया प्रमुख ज्ञानके उपदेशक राग द्वेषादिक अठारे दूषण रहित, इंद्रादिक देवतोंके पूजने योग्य, कर्मरूप वैरियोकों हननेवाले, केवल ज्ञान लक्ष्मीसे लोकालोकके सर्व भावके जाणनेवाले, स्याद्वादनय चक्रसे पदार्थोंके उपदेशक, अनंतवली, अनंत गुणधारक, चोतीश अतिशय, पैतीस वचनातिशय गुण विराजमान, ऐसा परम पुरुष जो परमेश्वर है संसारके तारणेकू वो वीतराग देव है सो देवाधिदेव है, इति प्रथम पद स्मरण १ दुसरे पदमें सिद्ध बुद्ध पूरण ब्रह्म परमेश्वर ज्योतमें ज्योति विराजमान लोकाग्रपर, सर्व जगतका सचराचर भावके ज्ञायक, दर्शक, जन्ममरणरहित अचल अक्षय अव्यावाध सादि अनंत निर्मल स्थितिरूप सिद्ध परमात्मामें मेरी आत्मा तद्रूप हो जावे तो फेर ससारमे मेरा जन्म भरणरूप अवतार नहीं धारूं,इति द्वितीय पद स्मरण, (देवतत्व) २ पंचाचारके पालक, छत्तीस गुण विराजमान, ससारमें दीपककीतरे सत्य पदार्थ दिखला कर उजाला करणेवाले सर्व धर्माचार्योंकों मैं वदन करूं ३ द्वादशांग रूप सूत्र अर्थ पढावे अज्ञानी शिष्योंकों ज्ञान पढाकर जगतमें पूज्य वणा देवे संसारका सर्व स्वरूप यथार्थ दिखला मुक्ति पंथ सधावे ऐसें सर्व उपाध्याय पचीस गुणोसें विराजमान जिनोंकों मे वंदन करू ४ मोक्षका मार्ग साधे सचा उपदेश सीधा देवे सो साधू शांत दांत ज्ञानी ध्यानी ऐसे सत्ताईस गुण विराजमान सर्व साधूकू में वंदन करूं ५ इति गुरुतत्व ॥ इत्यादि ईश्वर स्तवना करणी ।

ऊषापान.

ये वैद्य विद्याका हुकम आदमियोसे नहीं वणे जैसा है कफ और वायूके रोगवालेकू तथा शन्निपातमे बुखारमें भी नहीं करने योग्य है, पिछली चार घडी रात रहणेसें ऊठके ईश्वर स्मरण करे पीछे आठ अजली याने अधसेर जल नाकसे पीणा, नही वणे तो ऐसा ही चसूडके पीणा, पीछे थोडी नीदले लेणी, फेर उठ जाणा, पांच बजे, नींद नहीं आवे तो वेसा गुण नही करता, इससें आयुष्य वढता है, हरस, सोजा, दस्त जीर्णज्वर पेटका रोग, कोढ, मेद मूत्रका रोग, खूनका, विगाड, पित्तविगाड, कान आंख गला और शिरका रोग मिटता है, अलग २ तासीर मुजब घी सहत दूध छाछ अनुपानमें वैद्य लोक दिलाया करते है तैसे पाणी सामान्य पदार्थ सर्वकी तासीरकू अनुकूल है लेकिन् जो वे टेम उठते है तथा रातके खान पानके बिलकुल त्यागी है, उनोकों ऊषा जल पान नहीं करने लायक है, जो फायदा रातके खान पानके त्यागमें हैं, सो फायदेके हजारमें हिस्से ऊषा जल पान नहीं है ॥

मलमूत्रत्याग.

मलमूत्रका फजरमें त्याग करणेसें आरोग्य, आयुष्यकी वढोतरी होती है, हाजत भये पीछे रोकणा नहीं, वहोतसी बेमारियां हो जाती है वण पडे तो पावकोस शहरसे बाहिर

जंगल जाणा, घडे शहरोंमें चणना मुसकिल है, कहा है, ओले सोवे ताजा खावै, पाव कोस मैदाना जावै, तिण घर वैद्य कभी नहीं आवै, निर्जीव साफजमीनपर मस्तकढांक मलका त्याग करणा दूसरेके किये मल मूत्रपर करणा नहीं दाद खाज सुजाक वगेरे रोग होणा संभव है १ मलमूत्र करते बोलना नहीं २ जोर जबरनसें करना नहीं ३ गुदालिंग मलत्याग किये बाद जलसे धोकर साफ करणा ४ बाद हाथ पांव अछीतरे धोकर साफ करणा वेलू वगेरेसें ५ ॥

मुखशुद्धि दांतण.

नियम वगेरे संभाल कर प्रत्याख्यानकी समाप्तीपर ईश्वरकू यादकर फेर मंजन या दांतन करणा मैलकू कफकू और पित्तकू साफ करे ऐसा बबूलका तथा बोरका दांतण अच्छा होता है दांतण सीधा होणा वांकाटेढा नहीं होणा खूना पकडके दांतका मैल उतारा जावै इतना लंबा होणा बहोत जाडा नहीं होणा ज्यू बहोत पतला नहीं होणा चीरा करके जीभका मैल घसके उतार डालणा हर किसमका दांतण हाथ लगा सोई करणा नहीं नफे नुकसानका गुण देखणा दक्षणके लोक दांत मजबूतीकू मासेका दातण बहोत श्रेष्ठ बतलाते है दातण नहीं करणेवालोंनें मंजन करणा, सींधा निमक, सेका भया जीरा पीसकपड छाण कर मसलणा, तथा पीसा भया सींधा निमक तिलके तेलमें मिलाकर रगडणेसें मूंके दांतोंके सब विकार दूर होते हैं, तथा जीरा हीराकसीस मांजू फल बिदाम छोतू जलाये कोयले १।२।४।८।१६ इस तोलसे क्रमसें लेकर चूर्ण करणा, मुख सुगंधी करणा होय तो जीरेके बदले आरती कपूर डालणा इससें दांत मू साफ रहता है मूंके अंदरकी बदबो और रोग मिटता है ॥

कसरत तथा तैलमर्दन.

बण सके तो तनदुरस्त अदमियोनें शरीर निरोग रखनेवास्ते हमेस थोडी २ कसरत करनी मुदगर फेरणा दंड बैठक करणी चलणे फिरनेकी कसरत सबसें अछी है, कसरतसें बदनका खून जलदी २ फिरता है, जहरी तत्व बहोत जलदी बाहिर निकल जाता है, अंग प्रफुल्लित रहता है, अवयव सुघाट हो जाते हैं, फुरती, काम करनेकी शक्ति बढती है कफका नास होता है, जठराग्नि बढती है, शरीरका बेडोल जाडापणा मेदवृद्धि मिट जाती है, एसा दवासें नहीं मिट सकता, एकाएक रोग पास नहीं आता, चिकणे माल खानेवालोंकू भी कसरतसें बहोत फायदा है, ठंढकालेमें वसंतऋतुमे कसरत फायदेबंद है निराहार ठंढी वखत करनी, दम हाफणी नहीं चढे जहांतक करणी १ बुढ्ढा बालक बैमार और अशक्त अदमीनें दंड बेठकादिक तो नहीं करणी लेकिन् शक्ति और तासीर माफक थोडी देर खुली हवामें फिर आणा, इनोंकी वो कसरतही समझणी २ जुवान अदमीनेभी कसरत माफकसरही करणी कसरत करते मू सूके, पसीना होजावे, तब छोड देना ३

खास श्वास क्षय रक्तपित्त छातीकाजखम शरीरमें किसी जगेभी जखम होय और वहोतदुवले रोगमें, कसरत करणी नही ४ भोजन किये पीछे, स्त्रीगमन किये पीछे, रस्ते चलकर उपवास करके चिंता मलमूत्रकी संकारहते कसरत करणी नहीं ५ वहोत कसरत करनेसें खासी वुखार उलटी ग्लानी प्यास क्षय मूर्छा श्वास तथा रक्तपित्त वगेरे रोग हो जाता हैं, तेल मसलाना यहभी एक तरेकी कसरत है, हमेस फजरमें स्नान करनेके पहले तेलकी मालिस कराणी वहोतही फायदेवंद है निरोगपणा दीर्घायुकरणेवाली ताकत वढाणेवाली जरूर करणेलायक तेलकी मालिस है थोडे दिन कराणेसें इसका फायदा आपही मालम देता है १ चमडी सुंहाली होती है चमडीका लूखापणा खसरा औरभी चमडीका दरद जाते रहता है आगेके होय तो मिट जाते है २ वदनके सांधे नरम और मजबूत होते है ३ रस और खूनकेवंधभये रस्ते खुले हो जाते है ४ जमा भया खून खुला होकर वदनमें फिरणे लगता है, ५ खूनमें मिली वायू दूर होकर वहोत रोग आते भये अटकते हैं ६ जीर्णज्वर तथा ताजे खूनसे तपा भया वदन ठंडा पडता है ७ हवामें उडते जहरी तथा चेपी रोगके जंतू। तथा परमाणू वदनमें विगाड नहीं कर सक्ते, कसरत जितना फायदा है ताकत और क्रांती वढती है पुरुषार्थपणा प्राप्त होता है, तेलमे मसाले ऋतु तथा अपनी तासीर मुजव डालके तयारकर मसलावे तो वहोतही अछा तेल वनानेकी मुख्य चार किस्म है लोग भिलामा जमालगोटाका विशेषपणे पाताल यन्त्रसे १ तथा उकालकर दवायोका रस तेलमे डाल पकाया जावै २ घाणीमें डालकर फूलोंकी पुट देकर चवेली मोगरे आदिका ३ सूके मसाले कूटकर जलमें भकरोय तेलमे डाल मट्टीके वरतणका मू बंधकर धूपमें धेरे रातकू अंदर रक्खे महीने २० दिनसें छाण लेवे ४ सुलसा श्रावकणीके चरित्रमे लक्षपाक तेलका वर्णन है कल्पसूत्रकी टीकामें शतपाक सहस्त्रपाक लक्षपाक तेलराजा सिद्धार्थके मालसका वर्णन और गुण लिखा है सव रोगोकूं मिटाणे न्यारे २ तेल और घी दवाईसें वणते है इसकी रिवाज वंगदेशमें अभी जारी है मगर चार महीने वाद वनानेके, हीन सत्व हो जाता है वेसा गुण नही रहता, तोभी सामान्य तोर तिलीका सादा तेल सवकूं फायदेवद है शिरमें डालणा कानमे डालणा, सव शरीरकी मालस नहीं वण आवे तो शिरमें कानमें पगकी पींडिया हाथ पावके तले तो जरूर तेलसें मसलणा, हमेस नहीं वने तो अठवाडे, वोभी नहीं वने तो ठंड कालेमें तो अवस्य मसलाना। चणेके आटेसें अथवा आंवलेको चूर्णसें चिकणास दूरकर स्नान करणा या मसालेसे या आजकल सावूसें भी चिकणास दूर करना कहते हैं, देसी सावूमें चरवी नही गिरती

स्नान वलिकर्म.

स्नानका हेतू समझके स्नान करणा लिखा है स्नानमे धर्म माननेवाले धर्मांध लोक

वेर २ नाहते हैं लेकिन् जिस कामके वास्ते नाहणा और जिस तरे स्नान करणा वो बात विरले विवेकी जाणते हैं स्नान करनेका मुख्य हेतु शरीरकी पवित्रताका है बस इसकू चाहे कितनेइ गाडे भरके धर्म समझो ऊपरके शरीरकी शुद्धि स्नान विगर कभी होणी नहीं है वो करके पीछे क्या करणा उसका खयाल बहुतोकों नहीं है सो लिखते हैं, जैसें भगवती सूत्रमें तुगीया नगरीके श्रावक साधूओंकों वांदणे चले तहां पहले (न्हाया कयबलिकम्मा) अर्थ इसका ऐसा है वो श्रावक पहिले स्नान कर बलि कर्म याने देवकी पूजा करे ऐसें सुदर्शन सेठका अधिकार भगवतीमें है जो भगवान महावीरकू वांदने निकला, उहांभी एसाही लिखा है, ज्ञाता अतगडदशा प्रमुख अनेक सूत्रोंमें जहां किसी श्रीमत गृहस्थका शुभकार्य करणा चला हैं, उहां न्हाया कयबलिकम्मा एसा पाठ है, उहां केइयक एकांत नयहठ ग्राही एसा कहते हैं कोइ कुलदेव पूजा होगा भगवतीजीमें खुलासा तुगिया नगरीके श्रावकोंका सम्यक्त निश्चलका एसा पाठ है, नही चाहते हैं वो श्रावक किसी यक्ष भूत नाग आदि किसी देवताका सहाय, एसे दृढ धर्मियोके, स्थापना अरिहतही देवकू पूजणा स्वतः सिद्ध है श्रावक दृढ सम्यक्तवत अरिहतदेव या (अरिहतचैत्य) याने उनोकी मुर्त्ति टाल अन्य देवकू वदे पूजे नहीं, उवाई सूत्रमें देखो अबड सन्यासी श्रावकका अधिकार, आनद श्रावकके अधिकार उपासक दशामें तों इहांतक निश्चय दिखलाया है वो श्रावग वदे पूजे अरिहतके चैत्यकों, अन्यमतवाले जो हैं वो जिनराजकी मूर्त्तिकों अपना देव बनाकरके पुजे तो आनद कहता हैं हेवीर परमात्मा और देवतो, हरिहरादिक नपुजू सो तो नपुजू, लेकिन् मेरा इष्ट अरिहंत देवकी मूर्त्ति अन्य रूप स्थापनासें पूजे जाय, उसकू पूज तो वो अन्य देवकी लोक समझे तो मुझें सम्यक्तमे अती चारलगे जैसें बद्रीनाथकी मुर्त्ति जगन्नाथजीकी मूर्त्तिके चोलेके अदरकी बुद्ध भगवान पार्श्वनाथकी, मूर्त्ति और दक्षणमें नेमनाथजीकी काउसग्गधारी पांडरीनाथकी मुर्त्ति, गिरीकेवालाजीकी मुर्त्ति श्रीगोरधननाथजीकी मूर्त्ति, जैपुरपासडिग्गीमें श्रीऋषभदेवजीकी कल्याणरायजीकी मूर्त्ति, यद्यपि जिनराजकी मूर्त्तिया और मदिर जैनियोंका कराया भया हजारों अन्य मतवालोनें अपणी स्वतत्रता कर पूजा और वेसमें फेरफार कियाहै ऐसे जिनराजकी मूर्त्ति अन्य तीर्थी ग्रहीतकी आनद ने खुलासा कियाहै स्वतत्रता और विधि स्थापितकी ग्रहणता वदना पूजा रक्खी है इसपर एकात नयग्राही एसा कहते है, रायपसेणी सूत्रमें चित्रसारथीके अधिकारमें, जैनी होणेके पहिले न्हाया कयबलि कम्माका लेख है, उसने कोनसा देवपूजा (उत्तर) जिस २ धर्मवालेके जो जो अपणा इष्टदेव है, उसकी पूजा करके फेर दूसरे कार्यमे लगे अबीभी एसा है, शिवके इष्टवाले शिव, विष्णुवाले विष्णु, इत्यादि, मुसलमीन लोकोंकाभी एसा दृढ निश्चय है, पलीतपणे निवाजगुजारे सो काफर, इल्म मनादिक सिद्ध करणेमें पाकी जा मुख्यपणे सबको मंजूर है, इसवास्ते स्नान करना, शरीर पवित्रकरणा देव-

पूजाकेवास्ते, नास्तिकोंके कोई देवका इष्ट नहीं होता के इयक जैनलोक, कल्पवृक्ष कामधेनु चिंतामणी समान देवाधिदेवकी स्थापना छोड अन्य भूत प्रेतोंकी मूर्ति पूजने जाते हैं, येभी एक बुद्धिकी विचित्रता है, कोइ पूछे तुम जैनी नाम धराके उस तुमारे धर्मके चलाणेवाले धर्म उपदेशककी मूर्त्ति क्यों नहीं वंदते पूजते, तो कहते हैं, हिंसा होती है और पाप लगता है, फिर पूछे इहां किस किसम पधारे हो तो कहतेहै जात देणेकू, फिर पूछे इहां क्या करते हो इसमें पाप नहीं, होता तो कहते है, संसार खाते अब वो बुद्धिवान अन्यमती दिलमें सोचणे लगा इनोंकी समझ केसी है, सो देवकूं संसार खातेके अलग ठहराया, इय तो हमने किसी भी धर्ममें सुणा नहीं सो दो तरेके देव होय, मुसलमीन एक खुदा, अग्रेज एक ईश्वर, जैन एक अरिहंत, शिवएक, विष्णु एक, जिनोंका जो इष्ट है वो सब तरेके सुखकी चाहना, एकही परमेष्टसें चाहते हैं, और दमदार वेडा पार भी होता है, देव प्रत्यक्ष तो ऐसे बुद्धिवानोकों कब भया होगा, सो रूबरू कह गया होय के, हम तेरे ससारी नोकर हैं, सो तुम कहोगे सो करेंगें, इय लोक एकांतनय हठग्राही अन्य दर्शनीयोंकों कहतें है, भला इनोमें कुछ कमी है, नाम धराते है,जैन स्याद्वाद धर्मी हैश्रावक, तुमनें कोनसी हिंसा त्यागी है, अनाज वेचते,घी वगेरे रस वेचते हो,चूला चक्की खेती वाडी गाय भेंस उंठ घोडे जूठ बोलते हो सेरका तीन पाव देते हो सवा सेर लेते हो, इत्यादि तुमारे कर्त्तव्य तो पंचेंद्री जीवोंतक महा घोर हिंसाके है, उहांतक हिंसा भया नहीं पाप लगा नहीं और धर्मोपदेशक परमात्माकी मूर्त्ति पूजामें तुमकों पाप लगा जो की तुमारे सूत्रोमें करणा लिखा हजारों मदिर हजारो वर्षके मोजूद लाखों वर्षकी मुर्त्तियां मौजूद है, औरंगाबादमें हमने तुमारे पद्मप्रभुजीका मदिर पचीससें वर्षोंका देखा रिणीगांव वीकानेर तालकेमें नवसे वर्षका देखा है मित्र तुम सर्व संसार छोड शिरके वाल लोच द्रव्य छोड द्रव्य पूजामें पाप मानते, और नहीं करते, तो हम तुमारा वचन और नहीं करणा मजूर करते, स्यात् एक न्यायसें, क्योंके हमने कनीरामजी ढूंढिये साधूसें सुणा है श्रावक जब इग्यारे प्रतिमा धारता है तब ऊपरकी प्रतिमामें स्नान छोंडता है और स्नान छोडता है तब ही बलि कर्म याने देवकी द्रव्यपूजा छोडता है नहीं तो तुम हमकूं दिखावो पहले पोसाटालकर श्रावककूं किस जगे स्नान और देवके पूजाकी मनाई लिखी है जैसें और २ कृत्यका नाम लेलेकर पाप बताया है ऐसा लिखा बतलावो के श्रावक अरिहंत देवके मुर्त्तिकी पुष्पादिकसें पुजा करे सो पाप है, हां साधूकू तो द्रव्यके अभावसे द्रव्य पूजाकी मनाइ है मनाई महानिसीत सूत्रमें हे साधूकू उत्सर्गनयसें जावजीव स्नानभी नहीं करणा है तो देव पूजा भी नहीं इतना सवाल योगंधर गाम देश दक्षणका लखोटिये महेश्वरी रामसुखदासका यथार्थ जाणके हमने उचित समय लिखा है ये पुरुष वडा विवेकी था अन्य दर्शनमें हजारों

आदमी शांतशील परमार्थिक गुणवंत हमने देखे हैं जभी तो जैन ग्रथोमें लिखा है (हे गोतम अन्यदर्शनीमें अभी एसे मौजूद है, सो एक भवकरके माहाविदेह क्षेत्रसें मुक्ति जाणेवाले अभी भरतमें हाजर है,) सत्य है ॥ नहीं कोई जातको कारण मन मानेकी वाताहूरी भजे सो हरिका होय ऊंच नीच अतर नहीं कोय ॥ स्नान करते वखत सर्व शरीरकू मसलके धोणा(क्यूके) मैला कुचीला रहणेसें चमडी सबधी अनेक रोग पैदा हो जाता है जू लीख चमजू फूलण (जिसमे) फेर वदवो हो जाती है, तनदुरस्त अदमी तथा वडा छोटा वालककों दिनमें एक वेर तो स्नान जरूर करना, स्नानके इतनें नियम है, १ शिरपर गरमागरम पाणी कभी डालना नहीं इससे आखोकू नुकशान पहुचता है २ वेमार अदमी तथा ज्वर गये वाद जहांतक वदनमें ताकत नहीं आवे एसे अदमीकू स्नान करना नहीं जिसमें फेर ठडे जलसें तो विलकुल नहीं करना, वेमार निर्वलने भूखे पेट नहाणा नहीं चा दूध वगेरे नास्ता कर ठहरके नाहणा, धूप चढे पीछे नाहणा ३ सिरपर तो ठढा जल या कुनकुना कूबेके निकले जल जेसा नीचेके धड परठीक गरम जल कमरके नीचे सुहावता गरम तेल जलसें नहाणा पित्तकी तासीरवाले जवान अदमीने ठडे पाणीसें न्हाणा नुकशान नहीं करता, लेकिन सामान्यतोर थोडा गरम जलका स्नान सवकू माफगत आवे जेसा है ४ वहोत हवावाली तेसें जाहर खुली जगामे नाहणा नही एकांत जगे विगर पूरा स्नान नही हो सकता पूरी पवित्रता विगर देवपूजा जो स्नानका हेतू है सो पार नहीं पडता व वदनकू पीठी उवटणेसे साफ करे या सावूसें रगडके धोकर साफ स्नान कर सूके रुमालसे पोंछ डाले जिसमें मैल ओर जल साफ हो जावे, भीगे कपडेसे वो काम हासल नहीं हो सकता अपवाद मार्गमें जैन मुनि भीगे कपडेसे मैल उतार डाले ये वात भगवती सूत्रके पचीसमे शतकमें देह वकुसके निर्णयमें टीकाकारने लिखा है, तनकू साफ पूछणेसें खून अछीतरे फिरता है, चमडीपर तेज आता है, कसरत होती है, ५ वुखार दस्त जुखाम कफ वादीके रोगमें तेसें भोजन किये वाद तुरत न्हाणा नहीं जिसने मगज वगेरे गरिष्ट पदार्थ वहोत पेटभर खाया होवे प्यास वहोत उसपर लगे पेटमें जल मावे नहीं एसें कों जलमे गलेतक २ घटे वैठाणा हजम हो जाता है, स्नानसें जठराग्नि प्रदीप्त होय आयुष्य ओर शक्ति चढे उत्साह वल तेज प्रताप चढे मैल खाज थकेला पसीना आलस प्यास ओर जलण मिटती है, रगडके नाहणेमें चमडीके ऊपरके छेद खुले हो कर वदनके अदरका निकम्मा पदार्थ जो पसीनासो वाहीर निकल सकता है, स्नान करे पीछे शरीर ओर मन प्रफुल्ल होता है इद्रिये शांत होती है रगतपित्त कम होता है ठडे जलसें इसवास्ते निचिंत होकर अपणे १ इष्ट देवका आवस्यक सूत्रकू लोगस्समें जो लिखा है कित्तिय १ वदिय २ महिया ३ इसका अर्थ एसा है, हे अतर्यामी सिद्ध शुद्ध परमात्मा तुम कीर्तन करणे योग्य हो एसा विचार गुण वर्णनरूप

पूजा करे १ है, परमात्मा तुम वंदना करणे योग्य हो एसा विचार कायासे दो हाथ दो पांवको जानू गोडे पांचमा मस्तक नमाय पंचांग प्रणाम वंदन करे २ हे पूरण ब्रम्ह इंद्रादिक जो तीन ज्ञानयुक्त एका भवतारी सम्यक धारी कोटानकोटि देवतोंके आप जल १ चंदनादि सुगंध २ कमलादिक सुगंध उत्तम पुष्पोंसे ३ धूपसें ४ दीपसें ५ अक्षत ६ नेवेद्यसे ७ फुलसे ८ महिमा याने द्रव्यादि पूजाके योग हो इसवास्ते है, प्रभूसे शरीर धारण किया कर्मोंके वस आहारी वन रहा हु इसवास्ते ये चीजोंमें आपके सन्मुख अर्पण कर ये प्रार्थना करता हूं है, दीनबधु मे भोग उपभोग वस्तु ओंसे सतोप पाय निराहारी पदकों प्राप्त होवू एसा करो जेसे आप भये एसा भावसै बलि कर्म १ याने देवपूजा कर फेर सुपात्रोंको तथा दिन दुखियोंको भूखे अनाथकों गाय बैल प्रमुख अपणे स्वाधीन पराधीनकों कुलगुरु तथा भिक्षुकोंकों यथाशक्ति भोजन वस्तु यथायोग्य दान करै । देवपूजाकी वखत केसर चदनका तिलक करे उत्तम अग मस्तक है, तेसेंइ केशर चदन उत्तम पदार्थ है, सो तिलक पांच तरेका है,(सुदर्शन तिलक)नीचेसें चोडा उपरसें पतला १(सुमेरु तिलक)नीचे उपर सम श्रेणिका २(वडपत्र तिलक)वडके पत्र जेसा ३ (पूर्णचंद्र तिलक) बिंदाकार थाल जेसा ४(अर्ध चंद्राकार) शिद्रशिला जेसा ५ ये तिलक आत्मा जो श्वासाके संग भृकुटीके बीचमै चक्रपर ठहरता है, फेर मगजमे जाकर करोड रज्जू वकनालमे होकर पीछा नाभीमे जाता है सो छः चक्र है, जिसमें पांच चक्र केसर चदनसे बुद्धिमान पहले पूजते हैं, निश्चय नयसें आत्मा है सो देव है, आत्मा है, सो गुरु है, २ आत्मा है सो धर्म है, ३ आगम सारमे लिखा है, विवहार-नयसें देव सो आठकर्मोंकि हननेवाले गुरु शुद्ध सच्चा उपदेस देणेवाले २ धर्म केवली सर्वज्ञका कहा भया सो द्वादशांगमें लिखा भया ३ नाभिचक्र १ इहां आत्माका ७ रुचिक प्रदेश निर्मल है जिसमे(सोह)एसी ध्वनि श्वासाके संग ऊपरको आती है, दुसरा(हृदय चक्र)२ जिसमे चेतनकू सुखदुखका ज्ञान होता है २(कठचक्र)२ जिसमेसें सप्त सूरादिक प्रकाश है ३ (भृकुटि मध्य चक्र) ४ दशमा द्वार भेजा (आत्मा चक्र) ५ इनोका अहवाल २ दुसरे प्रकाशमें हमने लिखा है

भोजन.

भोजनकी रिवाज न्यारे २ अदमियोका न्यारा २ हे, इसवास्ते इहां लिखणेका प्रयोजन नहीं लेकिन् कितनीएक वात सामान्यतोर सबकेलायकहै सो लिखते हैं, खाणेमें जहांतकवणे जहांतक उनमान मुजवही खाणा येवात तनदुरस्ती रखणेकू और उमर वढाणेकू हमेस ध्यानमें रखणे लायक है, अधूरी भूखमें तथा अजीर्णमें जीमणा नही, हेजा और सन्निपातमें तो दोष पके विगर खाणे देणा मोतकी निसाणी है, पूरी भूख लगे वाद भूख मारणी नहीं. ये दोनो कामोंमें सावधान रहणा नहींतो नुकशान होता

है, भूख लगे बाद नहीं खाणेसें (जैसें लकडीके लगी अग्नि दुसरी लकडी नहीं मिलती है, तब उस लकडीकों जलाते जाती है, और आप बुझते जाती हैं,) तैसें शरीरकी अग्नि बुझ जाती है, पक्की भूख लगे वोही वखत भोजनका है, ये नियम दिनका है, रातका नहीं, शुद्ध और सादाभोजन करणा, भोजनकी जगे तथा वासणवरतण माजेधोये साफ रखणा भोजन वणाणेकी जगे१ भोजन करणेकी जगे२सीधी सामान रखणेकी जगे३ पाणी रखणेकी जगे ५ सोणेकी जगे ६ बैठणेकी जगे ७ देवपूजा करणेकी जगे मदरीमे ८ स्नान करणेकी जगे ९ उत्कृष्टनव जगे चद्रवे बांधणे चहिये, मकडी गिलेरी वगैरे जहरी जानवरोकी लाल मलमूत्रादिकसे अनेक रोग होता है, सो नहीं होवे, भोजनकी वखत मन प्रसन्न रहे ऐसी तयारी होणी, ऐसीही वात करनी तथा सुणनी मनमें खेद आनी तथा क्रोध होय ऐसी वस्तु नजरके सांमणे रहणे देणी नहीं प्रियमित्र स्त्री वगैरे स्वजनसबधीयोंकों पास रहते जीमणा, बहुत तीखामिरचादिक बहुत खट्टा बहोत खारा और बहोत शाक मसालेवाला पदार्थ खाणा नहीं, मोसम और तासीरकू देख स्वाद और रसवाला भोजन करणा भोजनमें जो रस जादा होता है, सब रस वैसाही बण जाता है, १ भोजन करती वखत सींधा निमक लगाय आद्रक तोलेभर पहली खाणा २ भोजन करती वखत रोटी रोटा वगैरे करडे पदार्थ घीसे पहले खाना, वाद दालसागसें खाणा पित्त तथा वायुप्रकृतीवाले मीठे पदार्थ भोजनके मध्यमे खाणा, पीछे दाल भात वगैरे नरमपदार्थ खारकर अतमें दूध या छाछ वगैरे पतला पदार्थ खाणा ३ स्वादविना आखकू रुचे नहीं. तथा वासी अन्न खाणा नहीं. ४ गरमागरम उष्ण ताकतका नाश करता है, बहोत ठढा वायु कफ आम पैदा करता है, ताजा तयार अन्न खाणा ५ मदाग्निवालेकी उडद वगैरे पदार्थ स्वभावसेंही भारी पडता है, मूग मोठ चिणा तूर उनमानसें जादा खाय तो भारी पडता है, मिस्साकी पुडी या रोटी वडी नुकशानकारी है, मल और हवा पेटमें वढाती है, अतिसार सग्रहणी होणा ताजव नहीं और दला भया अन्न वणाणेके फेरफारसें भारी होता है, जेसे गेहूंका सादा वाट राधे तो वैसा भारी नहीं और लपसी भारी गरिष्ट है, ६ भोजनके पहिले पाणी पीणेसें अग्नि मद होती है, वीचमें थोडा २ एकाध दफे जलपिया भया घी जितना फायदा देता है, भोजनके अत आचमनमात्र दो घूट पीणा, जादा पीणेसें अन्न हजम नहीं होता है, ७ उडद बाजरी गहु वगैरे (आटेके बणें) पदार्थोंसें आधा पेट भरणा, मुग तूरकी दाल तथा भातसें पूरा पेट भरणा, दूध या छाछ गऊकी मौली पीणी (क्योंके) हलका पदार्थ है, सो अतमें पीणा८कितनेक पदार्थ अमृत रूप हैं, लेकिन दुसरी चीजके सग मिलणेसें नुकशानकारी होता है, एकदमतो नफे नुकसांनकी खवर नहीं पडती लेकिन सर्वज्ञ परमात्माने जो वैद्यकादिक शास्त्रोमें हुकम दिया है सो हितके वास्तेही दिया है, उपगारीपणे तो ग्रंथही वणाया है

जो दूधके सग विरुद्ध पदार्थ है, सो हम दूध प्रकरणमें लिख आये है, बाकी इहां लिखते है दूध और मछलीके सग मिलणेसें जहर होता है, केला और छाछसें, केला और दहीसें दही और उष्ण पदार्थसें, घी और सहत बराबर तोल मिलणेसें, सहत और जल बराबर वजन मिलणेसें, बासी अन्नकू फेर गरम करणेसें इत्यादि पदार्थ सांमिल मिलणेसें जहरका कार्य करता है, सांझकू दो घडी दिन रहते भोजन हलका करणा रात्री भोजनमें लाल या काली च्यूंटी खाणेमें आवे तो बुद्धि भ्रष्ट होके पागलपणा, जूसें जलंदर कांटेसे स्वरभंग मकडीसें पित्तीके ददोडे दाहके दस्तादि होते है, रातका अंधा भोजन है, बद हजमी वगैरे अनेक रोग होणा सभव है, जादा इस रात्रीके भोजनके शरीर नुकशान संबंधी दोष रात्रि भोजन निषेध चरित्रमें देखणा रोगादिकपर दवा (या) खुराक वैद्य कारण कठण-पर बतलावे तो सोणेसें दो तीन घटे पहली जतना करणी धन्य पुरुष तो वोहेजो सूर्यकी साक्षीसेही खान पांनकर व्रत निभावे १० जीमे बाद मूकू कुरलोंसे साफ करणा खुराक मसूडोंमें या दांतोंकी छेकडमे रह जाय तो मू मे बदबो आती है, और दांतोंका मूका रोग पैदा करता है, ११ भोजनबाद तुरत मेहतनका काम करणा नहीं क्योंके आमवातका रोग होता है, भोजनकर तुरत सोणा नहीं क्यों के कफ बढकर अग्निका नाश करता है, १२ भोजनकर तुरत नाहणा नहीं, क्यूके, सरीरमे नुकाशान पहुचता है, इत्यादि विवेचन (कल्पसूत्रकी टीका तथा) भोजन वागविलास ग्रथमे है,

मुखसुगंध.

भोजनबाद मू साफ करणेकू पाणीके बहोतसे कुरलेकर अगलीसे मू साफ करणा, मुख सुगधका कारण मू साफ करणेका हे. जैनमुनिभी आहार किये बाद दत मार्जन करते है, एसा विवहार है, दांत मूं साफ अन्य उपायोंसे भयेबाद सोपारीके फालके और पान चाबणेकी कोइ जरूरीभी नही हैं, मुखसुगधमें अपणे देशमें सुपारी पांन इलायची वगैरे मुख्य है लेकिन इस वखतमें तो घरोघर चिलम चुट्टेका अग्रेश्वरीपणा दीखता है, आगे तो इसमें बडी एब समझे जातीथी लेकिन अब तो बिछोणेसें उठतेही हरिभजन येही बण रहाहे, इसकू लोकोनें मुखवास ठहरा रक्खा है, मुखवासका कारण तो इतनाही है, के दाढ तथा दांतमें कोइ अनाजका अस रहगया होय तो कोइ चावणेकी चीजसें चाबके साफ करणा, फेर वो चीज खुसबोदार और फायदेबद होय तो मुख सुवासित होय और थूक पैदा करणेवाली होय तो वो थूक होजरी में जाकर खाये भये खुराककू पचाणे मददगार होय, इसवास्ते नागरवेलके पांन कथा चूना केसर कस्तूरी सुपारी इलायची भीमसेनी कपूर वगैरे पच्चखाण भाष्यकी टीकामें दुविहारके निर्णयमें मुखवास लिखा हे, और लोक खाते हैं, लेकिन् तमाखू गांजा सुलफा चडूलसें मूंकी खसबो के सीक ऊमदा होती है, सो तो दुनियांसें छिपी नही है, तमाखूमें थूक पैदाकरणेका

स्वभावतो है, लेकिन वो थूक ऐसा स्वाद होता है, सो अदर पोहचतेहीजिगर जांनका खाया पीया उसीवखत निकालके बाहिर लाता है, इसवास्ते लोक कहतेभी है, खाय जिसका घर और मू भ्रष्ट, पियेजिसका जन्म और मूं भ्रष्ट, सूधे जिसके कपडे भ्रष्ट बडे आदमी पीकदानी रखते है मगर जो थूक जठराग्निके उपयोगका है, वो निरर्थक जाता है, दक्षणके लोक पांनके संग तमाखू खाते हैं, उनोकाभी यही हाल है,

सुपारी.

मुखवासकी अच्छी चीज है, लेकिन बहोत थोडी खाणी अच्छी है, जिसमें पूरबदक्षणमें छालिया लेकिन बीकानेरवाले कत्थेकी उकालीभई चिकणी सेरोंभरखाते है इसमें औरतोकू तो फेरभी जरा अच्छी है, मरदकू नुकशान करती है, सोपारीमें बदनके सांधोंको तथा धातूको ढीला करणेका स्वभाव है, जादा खाणा बिलकुल अछा नहीं है, भोजनकर जरासा टुकडा चावकर नाखदेणा चाहिये, सुपारीका जादा टुकडा कठकू बिगाडता है, पांन ताजा और मू में गरमी नहीं करे ऐसा होणा चाहिये, व्यसनी बणके जैसा मिले जैसाही चाब लेणा इसमें उलटा नुकशान होता है, पान और सतरे नागपुर जैसे कहांइ भी नहीं होते ठढकालेमे बगला पान दुरस्त है, सबदिन पान चावते रहणा येभी जगलीपणा है, कत्था चुनोमें कोइतरेकी दुसरी चीजका भेल नहीं होणा और प्रमाण सर लगाया होणा इन २ बातोकी हुसियारी नहीं होय तो पान खानेका विसनभी नहीं रखणा बहोत पान खानेसें आंख और सरीरकातेज बाल दांत जठराग्नि कान रूप और ताकत इन सबोको नुकशान पहुचता है, इलायची लोंग तज येभी मुखसुगधीकी चीज है, इलायचीतर गरम है, और अच्छी है, छोटी जातकी तज लोंग वायु कफवालेकू थोडा २ खाणा अच्छा है, इलायचीभी जादे नहीं खाणा धाणा सूफ ये दो चीज सब मुखसुगधीकी चीजोंमें जादा परसन करणे लायक है, दीपन पाचन है, और कोइ तरेका दोप नहीं स्वाद है, और कठकूं सुधारे है

सदाचार.

अच्छाविचार और अच्छी चाल चलण ये अदमीकू दोनों भवमें सुखदाई है, अच्छेबरतावेके करणेवाले पुन्यवतकों अच्छे विचारही पैदा होता है, दुष्टबरतावेवाले दुष्टपापीकू बुरे विचारही पैदा होते है, दानशील व्रत नियम भलाइ परोपगारीपणा दया क्षमा धीरज सतोपके साथ रुजगार व्यापार नोकरी आदि ससार व्यवहार चलावै, देखो हमारा बनाया ग्रहस्थ व्यवहारलकार ग्रथ छपा भया उसमें ग्रहस्थका सर्व रुजगार व्यवहार इह भव परभव नहीं बिगडे जैसा सब दृष्टांतकथाओंसें दिखलाया है, श्रावग व्यवहारभी उसीका नाम है, ज्ञान पढकरवणे जहांतक उस रस्ते चलना नहीं तो ज्ञान कोण कामका है, लेकिन आर्यलोकोंकी बहोतसी बुद्धि और विवेकका नासतो खोटी आचरणासे होगया

तवतो यथायोग्य आचार विचार सतसंगत रही नहीं, इनोके सुधरणेकी जड पहिले जो लिखा है, ऋतु और नित्य नियम पालणेकी विधि इसके आधीन है, इतनाहीं नहीं किंतु बहोतसे भ्रष्टाचारोसें बचणाभी अपणे सदाचारके आधीन है, भ्रष्टाचारोंकी मुख्य जड है, सो व्यसन है, उससे बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, ये बात सब लोक जाणते हैं, लेकिन व्यसनोके फदसें विरलेही बचेहोंगें सात विसनादि विवरण हमने पहली लिखा है, अफीम भांग तमाखू मदिरा आदि मुख्य है इससे शरीर न्यात जात कुटंब और देशकी बहोतही खराबी होगई है, जैसे खराबी आज कल बडीमरी अग्निरोहणी (ब्यूबोनिकप्लेग) नेभी नहीं करी होगी इसके मारे प्रजाकूं सरकार बचायके उपाय करती हैं, व्यसनका जादा नुकशानतो इहां क्या लिखे लेकिन जो अदमी अपणा कुशल क्षेम शांति चाहता होय तो इनसब जातकेनसा आदिसें बचणा भला है, एकवेर लगा तो फेर छुटणा दुस्वार है॥

(शयन) निद्रा ॥

अच्छीनींद आणेका सरस उपाय महनत है, जो लोक दिनकूं महनत करते नहीं आलसू होकर पडे रहते हैं, उनकू रातकू नींद अछीतरे आती नहीं है, सांझका जादा खाणेसें स्वप्ने आया करते है, पक्की नींदका नास होता है, स्वप्ने आल जंजाल आणेसें ऐसा समझणा के मगजकू बराबर चैन नहीं है, स्वभावी दर्शनावरणीकर्म जन्य नींद अच्छी होती है, स्वप्नशास्त्रमें स्वप्नोका शुभाशुभ बहोत फललिखा है, वो निमित्त शास्त्र है, वागूभट्टने रोग प्रकरणमें शकुन और स्वप्नोंका फल रोगकूं साध्यासाध्य जाणनेका अच्छा प्रकरण लिखा है, ग्रथ बढजाय इसवास्ते हमारा विचार अष्टांग निमित्त संग्रह करणेका है, समयानुसार देखा जायगा निमित्तशास्त्रकू झूठा कहते हैं, वो तत्ववेत्ता नहीं है, १ उत्तर या पूर्वके तरफ शिर करके सोणा २ सोणेकी जगा साफ एकांत गडबड शब्दविगरकी और अच्छी हवावाली होणी ३ सोणेके बिछोणे साफ होणा मलीनजगे मलीन बिछोणेमें मांकड सुरले वगेरे जानवरसताते हैं नींदमे खलल पहुचती है चोमासेमें जमीनपर सोणा नही चूनेका गचि वायु कफ प्रकृतीवालेकूं सोणेसें नुकशान करता है, पिलग वगेरे परसदा नरम बिछोणे सोणा चाहिये सायरोंने कहाभी है (दुहा) सावण सूवे साथरे माह उघाडे खाट, बिन मारे मर जायगा जो जेठ चलेगा वाट ४ खुली जगे फकत ग्रीष्म ऋतुमें सोणा चहिये गरम तासीरवालेकू बाकी तो खुली चांदणीमें सोणा नहीं वदनपर जादा हवाका झपाटा सामने होय ऐसा खुला सोणा नहीं, तैसें सोणेके महल मालियेके बिलकुल दरवज्जा बधकरसोणा नहीं क्यों के ताजी हवा आणे देणी ५ बहोत पढणे आदि अभ्याससें बहोत विचारसें नसाकरणेसें या दुसरे हर कोइ कारणसें मन उचका भया होय तो तुरत सोणा नहीं ६ सोणेके पहिले शिरकू ठंडा रखणा, गरम होय तो ठंडे जलसें धोणा पांवके तलिये तेलसें रगडाकर गरम पाणीमे रखणा हमेसां मगजतो

ठंडा और पांव गरम रखणा चाहिये ७ देरसें सोणा नहीं बहोत पेटभर खाके तुरत सोणा नहीं रातकू जलदी सोणा फरजमे जलदी उठणा ८ दुनियादारीकी चिंता सब छोड च्यारसरणा लेकर चारू आहारका त्याग करणा, जीता रहा तो सूर्य उदयबाद खाणापीणा बाकी है, चोरासी लाखजीवायोनिसे अपणे कसूरकी माफी मांगकरके सोणा सात घटेकी पूरी नींद कहलाती है, फेर तो दलद्रियोंका काम है

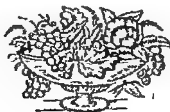
॥ सर्वहितकारी कर्त्तव्य ॥

शरीरकूं निरोगपणा रखनेकी जो जो मुख्य २ बाते है, वो सब अदम्योंके जानने योग्य है, और वैसेही चलणा चाहिये इस २ बातोंका सक्षेपसे सग्रह इस पुस्तकमें किया गया है; लोकोंके सामान्य सुखकेवास्ते जुदे २ अदम्योंनें अन्नपान और विवहारकी निगेदास्तीसें सावचेती रखनेकी जरूरी है, तैसें सभालोकोनें तथा सरकारके मुकरर किये सहरसफाई खातेके अमलदारोंनें तनदुरस्तीवास्ते पक्की रेखदेख करनेकी जरूरी है, प्रजाके हस्तू जो जो तनदुरस्तीके उपाय है, उस बातोंसें अज्ञान प्रजालोक अनेक उपद्रव और रोगोके कारणमें जागिरते है, इस तनदुरस्तीके ज्ञानसे बाकब होणा छोटे मोटे सब अदम्योंका जरूरी काम है, किसी वखतपर एक अदमीके अज्ञानसे हजारों लाखों अदमियोंकी जानकू जोखम पहुच जाती है, इसवास्ते अज्ञान प्रजाकू आहार विहारादिक आरोग्यताके बातोंसें वाकब करणेका फरज विद्वान वैद्य डाकतर और सरकारका है, लोक सुखी रहे एसी कालजी रखनेवाले वैद्य डाकतरोंने वैद्यकविद्याकू उद्धारकर ऐसें करणा चाहिये के जिस २ कारणोंसें रोगोंकी पैदास होती है, उन २ कारणोंकों सोधकर बाहिर जाहिरकर देणा चाहिये ऐसे कारणा, फेर नहीं होसके उसका योग्य इलाज कामपर लगाणा चाहिये प्रजाकू ऐसे कारणोसें जाणाकार करणा चाहिये म्युनिसपाल कमेटीवाले बडे २ रस्ते गलीकूची वेगरे महोलोंमें जाकर तपासकर चाहे जितनी सफाई रक्खे लेकिन् जहातक लोक अपने घर अगणमें एकठी भई रोग पैदा करनेवाली गदकीको तथा आहार विहारके चोकस नियमोंको नहीं जानेंगे जहांतक सहरसफाईका मुख्य हेतु पार पडेगाहि नहीं अज्ञानलोक बहोत है, पढे लिखेभी बहुत अदमी शरीररक्षाके नियमसें अजाण है, कोइ कहेगा अब तो इसकूलोंमें कला जो सिखाई जाती है, उसके सग लोकोका अज्ञान दूर होणा सरू भया है, ये बातभी ठीक नहीं है, इस वखत जो कलाये सिखाये जाती है, उसमें (अगर) पूरे दरजे ख्याल करे तो शरीरसरक्षणकी कोईभी शिक्षा देनेमे नहीं आती है, मारवाडमें तो विद्या पढाणेका आगला क्रम तो रहा नहीं ये लोक याती इस दरजे पढते है अनुनासका ॥ क्याती फेर पढते है लखो पचाईग, खैर इनोकी तो बातही रहणेदो गुजराती बगाला माराठी अग्रेजी जो पाठशालाओंकी कितावोंमें कसरत हवा पाणी उजाला वेगेरेका विषय दाखल

करनेमें आया है, लेकिन् वो क्रम एसा है सो छोटे बालकोंके समझमें नहीं आसके, जैसा है, क्योके वो शिक्षा विस्तारसें नहीं लिखी गई अंग्रेजी पांचमें धोरणमें थोडे वर्ष भये (सेनीटरी प्राइमर)याने आरोग्य विद्या दाखल करी है, लेकिन् वो वर्षके अतकेदिन वर्गमें सरू होती है, एसा मालम देता है और परीक्षा करनेवाले फलाणी २ बाबतोका सवाल पूछते है, इस बातपर ख्यालकरके सिखाणेवाले माष्टर मुख्य २ बातोंका सवाल कंठाग्र करा देते है, इसमें माष्टरोंका कुछ दोषभी नहीं है, क्योके दुसरे जो जो मुख्य २ बातें मुकरर करी है, उन २ बातोंकों सिखानेकूही जब पूरा वखत नहीं मिलता तो जैसे विषयोकों गोण पक्षमे दाखल करी है, उसपर तो पूरा ध्यान कैसें शीखनेवाले दें, इसवास्ते सरकारका ये फरज है, सो इस विद्याकूं वडप्पन देणा चहिये, आरोग्य वैद्यविद्याकू सर्वविद्या शिरोमणी समझके मुख्य विषय तरीके धोरणमे दाखल करणा चाहिये, सर्व वैद्यकविद्या शीखाणी एसा हेतु हमारे लिखनेका नहीं है, लेकिन् हवा खुराक पाणी कसरत वगेरे हमारे ग्रंथका जैसा तीसरा प्रकाश है, जो के नित्यके खान पान व्यवहार बरतते होय उसके गुणदोष इतनी बाततो अवस्य सबके जाननेयोग्य है, इसके पहले तो सामान्य नियम पीछे बारीक विषयके कितनेक पाठ निसालोके चलती किताबोंमें दाखल करणी जरूर है, पाणीका साफ करणा मूसे बोलदेनेवाला विद्वान विद्यार्थी जब घरमे हमेस खानेमें आवे एसी चीजोंकाभी गुण और दोष नहीं जाने ये कितनी अज्ञानता है, मूला और दूध मूगकी दाल या दूध जब सामल खानेमें आवे तो रोज शरीरमे थोडा २ जहर एकठा होवै, वो आगे क्या बिगाड करता है, ये बात वो विद्यार्थी स्वप्नेमें भी जब नही जाणता तो आरोग्यताके विशेष नियम वो क्या जाने, आकाशके ग्रह और तारोकी गति तथा फेरफारका नियम तो मुखपाठ पढ जाता है, लेकिन् ऋतुओके फेरफारसे अपने बदनमें क्याक्या हाल होता है, उसकेवास्ते क्याक्या आहार विहारकी सभाल रखणी चाहिये, वो बात वो बिलकुल नहीं जाणता, सूर्य तथा चंद्रमाके ग्रहणका कारण और उनके आकर्षणसें दरियावके भरती वेल चढनेका नियम तो वो समझा सकेंमें लेकिन् इसही ग्रहचक्रोकी शरीरपर केसीक असर होती है और उनके आकर्षणसें शरीरमें किस तरेकी भरती और ओट होती हैं, उसका उस विद्यार्थियोको जराभी ज्ञानके भांन नही होता इत्यादि कारणोसें ही पांच तिथोंका उपवास व्रत नियम वैद्यविद्याके आधारसेही धर्मरूपसे दाखल भया है, दूज १ पांचम २ अष्टमी ३ इग्यारस ४ चौदस ५ पूनम तथा अमावस उलटी उस बातोंकी हासीकर अपणी विशेष अज्ञानता जाहिर करते है, भादवेमें जो पित्तका सचय भया उसके कोपका समय नजीक आता है, इसवास्ते सर्वज्ञनें पर्यूषण पर्व स्थापन किया जिसमे तेला उपवासादि करणा पारणे उत्तर पारणेमें लोका मीठारस दूध वगेरेके पदार्थ खाते है, इसमें पित्तकी

बिलकुल शांती होती है, चरकने लघनकू सर्वोपरी पथ्य दोषोकूंपकानेमे लिखा है, जिसमे भी पित्त और कफकेवास्ते तो कहनाहीक्या, आसोज सुद अष्टमी सत्तमीसे ओली जिसमें जैनधर्मकी सनातन प्रजा आंबिल नवदिन करते हैं, मदिरोमे स्नात्र अष्टप्रकारी नवपदादि पूजामे दीपधूपादिक करते है, जिससे हवा इस सरदऋतूकी साफ होती है, क्योकेइ समोसमकी हवा वहोत जहरी होती है, सरीरमे जो पित्तसे खूनसबधी विगाड होता है, वो आबिलका तप (याने जिसमे सब रसोका त्याग) करके एक चावल या गेहू या चणा मूग या उडद ये पाच अनाजोमेंसें एक अनाज बिगर निमक खाया जाता है, जिससे वो बिलकुल शात हो जाता है, इसतरे ही वसतकी हवा सुधारणेकू (चैत सुद सप्तमी अष्टमीसें ओली किये जाती है, आसोज मुजब सब पूजा कीये जाती है, जिससे हवा साफ होती है, और आंबिलसे कफकी शाति होजाती है इसतरेही जो जो पर्व बाधा हे सो सब वैद्य विद्याके आधारसें ही धर्म व्यवस्थाका प्रसार उस सर्वज्ञने चलाणेका हुकमदिया है,॥श्राद्ध जो आश्विन वदीमें ब्राह्मणोने भोजनार्थ चलाया है, इसमे एक नयका अशतो वैद्यकसें सबध कथचित् वर्त्तमान श्राद्ध रखता है, मनुमें जो लिखा श्राद्ध (बकरे वा हिरण वगैरेका मास खाणेका) वोतो शरद ऋतूकी अपेक्षासें तदन विरुद्ध है, और धर्मशास्त्रसे तो विरुद्ध होय जिसमें तो कहणाही क्या, दया परमधर्म फेर कैसे ठहरेगा (क्योंके) मास खाणेवालेके हृदयमें फेर दया कैसें सिद्ध हो सकती है, दूध और मीठा खाणेसे पित्त शात होता है, इय एक नय है, १सर्वांग नयसे श्राद्धकी क्रियामे इस ऋतूकी अपेक्षा तदन नुकशान है, वैद्यक शास्त्रमे क्षीरका भोजन इस ऋतूमें कुपथ्य है, पित्तकारी और गरम है इसवास्ते॥फेर श्राद्धके जीमणेवाले पेटभरके पराया माल खाते है, सो शरद ऋतूमे जादा खाणा है, सो जमकी दाढमें जाणा है, फेर एकेक अदमीके आठ २ निहुते आते हैं, दक्षणाके लालच भोजनपर भोजन करणा है सो अध्यशन सर्व रोगोंकी जड है, श्राद्ध चलाणेवालेका मतलब और होगा वैद्यक मुजब, लेकिन् अभीतो आचरणा रोगी बणणेकी है,॥नवरतोंमे जो बकरे भेंसे देवी पूजामें जगे २ मारे जाते हैं, इससे हवामें दुरगधिके परमाणू फैलते हैं, धूप तथा दीपसें सुगधीके परमाणू फैलकर हवाकू साफ करता है, गुजरातमे ब्राह्मन लोक आसोज सुदि अष्टमीकों हवन करते है, उस (घी दूध चिरोंजी बिदाम तिल जवके) होमसें स्वामी दयानदजी सत्यार्थप्रकाशमें हवा साफ होती है ऐसा लिखते हैं, अग्निका हवन जो लोकोंने माना है इसका कारण तो ऐसा मालम देता है, जब ऋषभदेवके वखत कल्पवृक्ष फल कम देणे लगे कालके माहात्मसें तब भगवान लोकोंकू भूखे मरते देखके कदमूल फल और वनस्पती खाणेका हुकम युगलिक प्रजाकों दिया उनोने खाया लेकिन् पेटमे पचा नही पेट दूखने लगा उनलोकोंने अपणे पेटका कष्ट बयानकिया, भगवान प्रजाकी तनदुरस्ती निर्वाहका विचार करतेथे इतनेमें

वांससे वांस घसणेसें जंगलमें अंगार पैदाभई, क्योंके आगे अठारे कोडाकोडी सागर वर्ष पर्यंत सूक्ष्म अग्नि पदार्थोंमें व्यापक होके रहीथी स्थूल अग्नि नहींथी क्योंके अत्यंत रूक्ष कालमें और अत्यत सचिक्कण कालमें स्थूल अग्नि नहीहो सकती है, तब भगवान युग लिकलोकोको हुकम दियाके आज पीछे सब चीज अग्निमें डालकर पकाके खाया करो तबसें लोकोने वैसाही किया बाद भगवान अपणे हाथसें हंडी बणाकर अग्निमें पका कर पाणी और जंगलमेंसे चावल मसलकर पकाणेकी विधि सिखाकर भोजन करणा सब लोकोंकूं सिखलाया फेर तो अनेक वनस्पती पदार्थोंकी भोजनकी तरकीब प्रभुने प्रजाकू सिखलाई तबसें लोकोने अग्निसें रसोइ और दीपककाउजाला वगैरे देख अग्निकूं देव मांनके हवनादिक करणे लगे. बाद असक्षावर्ष बीतनेसें हवनादिकमें घोडा बकरे आदि जानवर होमके खाणे लगे, जैनीयोंके जो जो धर्म पर्व या पूजा. स्नात्रादिक करणा चला है, वो सब प्रजाके आरोग्यताके वास्तै वैद्यकशास्त्रकी आज्ञा मुजब है,॥सर्वज्ञके चलाये नियमोंमें आजकलके मनोमती अल्पज्ञ लोक अनेक तरकियां निकालते हैं, और सास्त्रको निकम्मा समझते है, और लोकोंकू समझाते हैं, प्रत्यक्षमे वैद्यक शास्त्रकी बातोसें प्रजाकू शरीरसबधी अनेक लाभ है, और द्रव्यभावपूजामे भगवत भक्तीका जो लाभ है,उस पुन्यकातो कहणाही क्या है, एक पंथ दो काज श्री जिनराजकी मूर्त्ति पूजामें है, इसी मुजब देवकी दीप धूपादिककी पूजासें हवाकी शुद्धि तो जरूरही होती है, मानना, न मानना, अपणी, २ खुसीहे इतना लाभ तो निश्चय सुधारेका प्रगट है, न्यायसें विचारके देख लेणा, इसवास्ते जिस२बातोंका आरोग्यताके साथ संबध है, वो सब बाते पालणी और पलावणी, उसका हेतु समझणा और समझाणा ये सब चतुर आदमियोका काम है, जो बात हेतू समझाके कही जावै उसकू केइयक मांनतेहे बहोतसें नहीं मांनते लेकिन् जो जो फायदेकी बातोकूं धर्ममें दाखल करदिया है, उसकूतो प्राये प्रजा आस्तिकलोक धर्मके आग्रहसे निश्चय मानते हैं, नास्तिकोका तो हिसाबही जुदा है ॥ इतिश्रीमज्जैनधर्माचार्यसंग्रहीते उपाध्याय रामऋद्धिसारगणिःकृत वैद्यदीपक ग्रथे आहारविहारादि पथ्यापथ्यवर्गे तृतीयोः प्रकाशः ॥



प्रकाश ४ था.

रोगके सामान्यकारण.

निदान.

किरण १ पहली

तनदुरस्तीकी हालतमें फेरफार होणा उसका नाम रोग है,(लेकिन्) निरोगपणा और रोगीपणा इन दोनोंके बीचमें की भईजो मर्यादा उसकी, कोइ साफ प्रगट पहिचान नही है, इसवास्ते तनदुरस्तीका वर्णन करणा ये जरा मुस्कल बात है, अदमींको खबर तो पडती नहीं और धीरे २ एक हालतसें दुसरी हालतमें जागिरता है, (याने निरोगीका रोगी बण जाता है) इस बातकी खबर नहीं पडती है, तोभी वांचणेवाले इतना समझ जायगें तो बस है, इद्रियोका काम स्वभाविक रीतसें चलता रहे, और सासोश्वास अच्छी तरे चलतारहे, होजरी तथा आंतरोंमें खुराक अच्छी तरे पचता रहे खून सब नसोमें फिरता रहे इत्यादिक ठीक२समझणेसें तन दुरस्त रहता है, लेकिन् जो श्वास लेणेमें अडचल मालम देवे या होजरीमें दरद होय, खूनकी चालमें सम विखम होय, या बचकारा होता होय, और पाचन क्रियामें कुछ खलल होय तो समझणाके तन दुरस्तठीक नहीं है,(कोई न कोई रोग भया है,)ऐसा निश्चय समझणाके जब किसी जगेपर दरद होता होय तो रोग समझणा,विशेषपणे दाहयुक्त रोगोमें अथवा रोगकी सरुआतमे अदमीकाशरीर नरम हो जाता है, कोईभी तरेका दरद होता है,शरीरके अवयव थक जाते है शिरमे दरद होता है, भूख नहीं लगती ऐसे लक्षणोंसे समझ लेणा कोइभी बेमारी होगई है, तब काम काज महनत छोडके रोग बढे नही और ये रोग काहेसे भया है, ऐसा निश्चय और इलाज करणा, तनदुरस्तीरहणा ये जीवकी स्वाभाविक स्थिती है, लेकिन् अशाता वेदनी नाम कर्म जब अपणे उदयमें आता है, तब चाहे कितनीभी सभाल रक्खे लेकिन् अदमीसें भूल हुये विगर हरगिज नहीं रहती, साता वेदनी कर्मके योगसें जहातक अदमीकुदरती कायदेके अनुसार चलता है, और जहातक शरीरकू साफ हवा पाणी और खुराकका उपयोग करता है, उहातक रोग आणेका डर नहीं रहता, लेकिन् अदमी चूके नहीं ये असभव बात है, तोभी विचारवतअदमी शरीरके कायदेकू अच्छी तरे समझके ज्ञानी होकर वर्त्ते तो बहोत रोगोसे कायाकू बचा सकता है, ज्ञानी तो कर्मकू श्वासोश्वासमें तोडता है, सो अज्ञानी कोड बर्षतक नरकादिकके कष्ट भोगकर नहीं तोड सकता (ऐसा भगवती सूत्रमें लिखा है,)कारण विगर रोग होता नहीं, ये बात अदम्योंकों निश्चय ध्यानमें रखणेकी है" और रोगका कारण जाणे विगर अच्छी तरे इलाजभी नहीहो सकता, इस बातकू अदमी अच्छी तरे समझ लेवेतो फिर अदमी(अभ्यतर)विचारवत होकर

उपचार करणा प्राणीके हाथ है, कर्मगति विचित्र है, जो रोगके कारण,कुदरती कारणोंसें पैदा होता है, वो अदमीयोके रोगका कारण विरलो के होता है, वातावरणमे जो जो फेर फार होता है, सो तो रोग तथा रोगके कारणोंको दूर करनेवाला है, लेकिन् उसमें अपने कर्मवस प्राणी केइयक रोगी हो जाते है, इसवास्ते कुदरती ऋतुओंका फेरफार वातावरण याने हवाकी शुद्धीका है, लेकिन् जो रोगी हो जाते है उनोंकी अपेक्षा इस विकारोको दैवकृत चाहे मान लो, असलमें हरकिसमेक भये रोगोंकू पहचानकर इलाजकर मिटाणा ये इस ग्रथकी सम्मती है,

रोगी करनेके दूर कारण.

घरके अदर रहणेवाले वहोत अदम्योंमेंसें एक किसी आदमीकू कोलेरा मरी(हैजा) हो जाता है दुसरोको नहीं होता इसका क्या कारण है, इसके जुवावमें रोगके लायक करनेवाले कारण आ जाते है, क्योंके आहार विहारके विरुद्ध वरतावसें अथवा मावापके तरफसें वारसे याने औलादमे मिली भई शरीरकी तासीरकी निचलाईसें फलाने अदमीका शरीर फलाणे २ दोपोसे जेर होगया है, और ये दोप इसी रोगकेलायक करनेवाला कारण होजाता है, ऐसे २ कारणोसे फलाने २ दोपवाला शरीर फलाणे २ रोगोके ग्रहण करणेकू आगेसेही तैयार भया २ होता है, इसवास्ते वो रोग उसी अदमीकूं लगता है, दुसरेकू नहीं लगता है, जिस कारणोसे रोग पैदा नही होता मगर वदनकू नाताकत कर दुसरे तुरतके कारणोके लायक करदेवे सो रोगके लायक करनेवाला कारण कहलाता है, जैसे वीज जमीनमें वोणा होय तव पहली जमीनकू फाड खात वगेरे डाल तईयार करते हैं जो जमीन वीजकेलायक होय तभी वीज ऊगता है इसतरेही कितने कारण दोप शरीरकू ऐसी हालतमें ले आता है, तव पीछे तुरतके वणे कारण तुरत रोग पैदा कर देता है, रोगके लायक करणेवाले कारण वहोतसे वणते है, जिसमेके मुख्य २ लिखते है, (१) मावापकी निर्वलता (२) सगे कुटवमें व्याह (३) वालपणेमें व्याह (४) औलादका विगडणा (५) ऊमर(अवस्था) (६) जाति (७) [illegible] (८) प्रकृती(तासीर) (१) मावापकी निर्वलता गर्भ रहती वखत दोनु मा [illegible] एकका शरीर ना ताकात होगा तो वालक जरूर ना ताकत होगा, तैसे वापसेती मा [illegible]
होत वडी ऊमरकी होगी अथवा मासें वाप जादा ऊमर [illegible] डी ऊमर हद
पुरुपकी ऊमर तक तो जोडाही गिणे जाता है, ६५७ [illegible] तफावत
गिणा जाता है, उनोसें पैदा भया वचा ना ताकत होता [illegible] चार
स्त्री चार जातके पुरुषोंका, समरति १ उच्चरत २ [illegible] ४
वालक पैदा होय सो ताकतवर या नाताकत लवी [illegible]
या दलद्री या सूरवीर होता है,इत्यादि लिखा है, देखो [illegible]

प्रकाश ४ था.

रोगके सामान्यकारण

निदान.

किरण १ पहली

तनदुरस्तीकी हालतमे फेरफार होणा उसका नाम रोग है,(लेकिन्) निरोगपणा और रोगीपणा इन दोनोंके बीचमें की भईजो मर्यादा उसकी, कोइ साफ प्रगट पहिचान नही है, इसवास्ते तनदुरस्तीका वर्णन करणा ये जरा मुस्कल बात है, अदमींकों खबर तो पडती नहीं और धीरे २ एक हालतसे दुसरी हालतमे जागिरता है, (याने निरोगीका रोगी बण जाता है) इस वातकी खबर नहीं पडती है, तोभी वांचणेवाले इतना समझ जायगें तो बस है, इद्रियोका काम स्वभाविक रीतसे चलता रहे, और सासोश्वास अच्छी तरे चलतारहे, होजरी तथा आंतरोमे खुराक अच्छी तरे पचता रहे खून सब नसोंमें फिरता रहे इत्यादिक ठीक२समझणेसें तन दुरस्त रहता है, लेकिन् जो श्वास लेणेमे अडचल मालम देवे या होजरीमें दरद होय, खूनकी चालमे सम विखम होय, या धबकारा होता होय, और पाचन क्रियामें कुछ खलल होय तो समझणाके तन दुरस्तठीक नहीं है,(कोई न कोई रोग भया है,)ऐसा निश्चय समझणाके जब किसी जगेपर दरद होता होय तो रोग समझणा,विशेषपणे दाहयुक्त रोगोमें अथवा रोगकी सरुआतमे अदमीकाशरीर नरम हो जाता है, कोईभी तरेका दरद होता है, शरीरके अवयब थक जाते हैं शिरमें दरद होता है, भूख नहीं लगती ऐसे लक्षणोंसे समझ लेणा कोइभी बेमारी होगई है, तब काम काज महनत छोडके रोग बढे नही और ये रोग काहेसे भया है, ऐसा निश्चय और इलाज करणा, तनदुरस्तीरहणा ये जीवकी स्वाभाविक स्थिती है, लेकिन् अशाता वेदनी नाम कर्म जब अपणे उदयमे आता है, तब चाहे कितनीभी सभाल रक्खे लेकिन् अदमीसें भूल हुये बिगर हरगिज नहीं रहती, साता वेदनी कर्मके योगसे जहातक अदमीकुदरती कायदेके अनुसार चलता है, और जहातक शरीरकू साफ हवा पाणी और खुराकका उपयोग करता है, उहातक रोग आणेका डर नहीं रहता, लेकिन् अदमी चूके नहीं ये असभव बात है, तोभी विचारवंतअदमी शरीरके कायदेकू अच्छी तरे समझके ज्ञानी होकर वर्त्ते तो बहोत रोगोंसें कायाकू बचा सकता है, ज्ञानी तो कर्मकूं श्वासोश्वासमें तोडता है, सो अज्ञानी कोड वर्षतक नरकादिकके कष्ट भोगकर नहीं तोड सकता (ऐसा भगवती सूत्रमें लिखा है,)कारण विगर रोग होता नहीं, ये बात अदम्योंकों निश्चय ध्यानमें रखणेकी है" और रोगका कारण जाणे विगर अच्छी तरे इलाजभी नहींहो सकता, इस बातकू अदमी अच्छी तरे समझ लेवे तो फिर अदमी(अभ्यतर)विचारवंत

अपणे अपणे रोगकी परीक्षाभी करसकता है, परीक्षा किये पीछे इलाज करणाभी स्वाधीन है, रोग होणेका कारण दूर किये पीछे रोग रहताभी नहीं अज्ञानसें भई भूलकू ज्ञानसें सुधारे. तब कुदरत अपणा काम करके फेर तनदुरस्तीमें ले आती है, जीवका स्वरूप अव्याबाध है, इसवास्ते शरीरमें रोगके कारणोको अटकाणेवाली स्वाभाविक शक्ती रही भई है, और पुन्य कृत्योंके करणेसेंभी शातावेदनी कर्मकीभी रोगकू रोकणेकी स्वाभाविक शक्ती रही भई है, इसवास्ते रोगके बहोतसे कारण तो बिना उद्यमसेंही कुदरती क्रियासे दूर होते जाते है, रोगके और कुदरती शक्तिके या शाता वेदनी और अशाता वेदनीके निश्चय नयसे जीव और कर्मके. आपसमें लडाई भया करती है, शाता वेदनीकी जब जीत होती है, तो रोगकूं पैदा करणेवाले कारणोंका कुछ असर नही होता, और उस शाता वेदनीकी हार होणेपर रोगके कारण उसी वखत रोगकूं पैदा करदेता है, पुन्यके योगसे ताकतवर अदमीके शातावेदनीयाने रोगके कारणोंकों अटकाणेवाली शक्ति जादा हो जाती है, निर्बलमें कम होती है, उससें नाताकत अदमी बेर २ बेमार होता है, जीवकी कुदरत शक्ती अपणे शरीरमें ऐसी है, उससें बेमारी पैदा भये पीछैभी बिगर उपाय केइकवख्त दब जाती है, या चली जाती है, ऐसें इस शरीरमें वो दाखले अनेक दीखते है, जैसें आंखमें कोईभी फूस फांटा चला जाय तो तुरतही आपसें पाणी झर २ करवो फांटा धुपकर बाहिर निकल पडता है, या प्रभातसमें गीडके साथ निकलता हैं, आख बिना इलाजके अच्छी होती है, किसी वखत जादा खाणेमें आता है, तो पेटमें बोझा और दरद होता है, तब बहोतसी वखत अपणे आपही उलटी और दस्त होकर मिट जाता है, ऐसी उलटी दस्तकू रोकणेसे नुकशान होता है, क्योंके जीवकी जो शाता वेदनी सबद्ध शक्ति है, वो पेटके अदरका बोझा और दरदकू मिटाणेवास्ते उलटी और दस्तकी क्रियावेपार करती है, फेर बदनपर फोडे फफोले छोटी गुमडियें होकर अपणे आपही मिट जाती है, जुखाम सरदगरमीसें खासी होकर बहोतवखत बिगरइलाजकिये अपणे आपही मिट जाती है, इस बजे बुखारभी होकर अपणे आपही चला जाता है, मतलब असातावेदनी प्रदेशबध होता है, सो शाता वेदनी जो जीवने बांधी है, जिस्सें रोग दूर हो जाता है, जैसे पक्की दिवालपर चूना सूका या धूलकी मुठ्ठी डालणेसें थोडासा रहता है, बाकी तो गिरजाता है, बाकी रहासो हवाके झपट्टेसें अलग हो जाता है, ऐसें वो रोग स्वत मिटता है, इसपरसे जीवके च्यार बध सिद्ध भया कर्मोंका प्रकृती बध १ जिसका स्वरूप हमने पहले प्रकाशमे आठ कर्मोका मूल स्वभाव लिखा है, १ स्थिती बध, जेसे मोहनी कर्मकी अवधी सित्तर कोडाकोडी सागरोपम वर्षोंकी हे, बधे भये कर्म मुदतपर भोगणेसे छूटे सो स्थिती बंध जैसें सन्निपातोंकी मुदत है, ३ अणु भाग बध ३ प्रदेश बध ४ इस चारों बधोको लड्डूके दृष्टातसेंभी

समझणा जैसे सूठके लड्डूकी प्रकृती तीखा स्वभाव होता है,ऐसा प्रकृतीबंध जाणना १ वो लड्डू महीनाया वीस दिनतक अपणे निज स्वभावसे रहता है,बाद स्वभाव वो नहीं रहता वो स्थिती याने मुद्दत बंध २ अनुभाग बंध, जैसें आने भरका अध पावका या पावका बंधा भया इत्यादि ३ प्रदेश बंध सो जिस २ पदार्थोंके परमाणु एकठा करके लड्डू बाधा गया उसमें रहे प्रदेश सो प्रदेश बंध ४ जैसे ज्ञानावरणी कर्मका स्वभाव आखपर पट्टा बाधणे जैसाहै तैसे सूठका स्वभाव वायु कफ हरणेका है ऐसें जुदे २ कर्मोंका जुदा२स्वभाव, तैसे जुदे२ लड्डूका जुदा २ स्वभाव, पित्तके वायूके कफके हरणेका है कर्मोके संबंध मुजब, प्रदेश बंधसें भया रोग साध्य कष्टसाध्यतक होता है, स्थिती बंधवाला साध्य १ असाध्य २ कष्टसाध्य ३ तीनू होता है, इसतरें कितनेक दरद स्वभावसेही विगर उपाय मिट जाता है लेकिन् उससें एसा नहीं समझणा के सब दरदयाने रोग विगर महनत विगर इलाज अछे होजायगें थोडे अज्ञानसें थोडा कष्ट सो बुखार शरदी पेटका दरद वगैरे ये तो थोडी भूलसे जो हो जाता है, तब तो बदनमें एकाध दिन गरमी शरदी दस्त उलटीकी तक-लीप देकर पीछा मिट जाता है, अज्ञानसें बडे कष्टका रोग बहोत दिनोंतक चलता है, जो उसके कारणोकों नहीं रोके तो फेर रोग गभीर रूप पकडता है, रोगके दूर करणेका पहिला उपाय उस रोगका कारणकू रोकणेका है, जैसें अजीर्णसें बुखार आवै और एक दो दिनका लंघन कर दिया जावे अथवा मूगकी दालका पतलासा पाणी अथवा बहोत हलका पथ्य लेवे तो तुरत चला जाता है, इसवास्ते रोगका कारण समझे विगर बहोतसे रोग बढ जाते है, दवा रोगकू नही मिटाती है तो क्या करती है, अर्थात् रोग मिटाणेकू मदतगार होती है, ऐसा समझणा ऊपर जो जीवकी कुदरत शक्ति रोगकू मिटाणेवाली लिखी है, निश्चय नयसें तो वो शक्ति शरीरमे रात दिन अपणा काम करतेही रहती है, उसके सानुकूल आहार विहार और दवा मदतगार होतेही संयोग प्रयत्नसें, कर्म रोगपर,जीवकी जीत होती है, साता अशाताकू हटाती है, ये विवहार नय है, वैद्यडाकदरोने ऐसा घ-मड कभी नहीं रखणाके हम रोग मिटाते है ये गर्व रखणा झूठा है, काल और कर्मसें बडे २ हार गये तुम तो चीजही क्या हो पाच समवायोंमेंसें एक तुमारा उद्यम समवाय है, सोभी पूरे दरजे जभी सिद्ध होता है, पिछले चारू सुलटे होय तो, हा अलबत कितनेकरोग बाहरके है सो काटबाढके लायक उपचारोंसें केइ यक जलदीभी अच्छे हो सकते है,तोभी शरीरके भीतर बहोतसे रोगोपर तो अदरकी रोग मिटाणेकी कुदरती शक्तीही काम देती है, उसमें दवाकू समझकर युक्तिसे देणेमें आवे तो कुदरती शक्तीके मदतगार होती है, (अगर) विगर समझे देणेमें आवे तो वोही दवा कुदरती शक्तिकी क्रियाकू बंधकर उलटी नुकशान करती है, इस वार्तोंसें कोइ समझेगा दवासें क्या होता है, सो पक्षभी एकात नय है और दवासें निश्चेही रोग मिटता है,येभी पक्ष एकात नयकाहै, इसवास्ते स्याद्वादकू

मजूर करणा कल्याणकारी है, जीवकी कुदरत रोगकूं मिटाती है, इय निश्चय नयकी वात है,विवहार नयसें दवा और पथ्य रोगकू मिटाती है, विवहार साधे विगर निश्चयकी खबर नहीं पडती है, इसवास्ते अशाता वेदनीकी कुदरती शक्तीयाने शाता वेदनीकों नाताकत करणेवाले कितनेक कारण अशाताके पायक होते है, ये कारण शरीरकू रोगके असरके लायक कर देते है, और शरीर रोगके लायक भये पीछै दुसरे कारण बणते है, सो रोगकू पैदा करदेते हैं, सो रोगके दो कारण बतलाते है, एकतो रोगका दूर कारण सो तो शरीरकू रोगके लायक करणेवाला, दुसरा नजीकका कारण सो जलदी रोगकू पैदा कर देता हैं, अब इन दोनोंका वरणन करते है, क्योंके प्रजाकू हुसियारकरणा तनदुरस्तीकेलायक ये विद्वानोंका फरज है सर्वज्ञ भगवान ऋषभदेव अपूर्व वैद्यने रोगके कारणोका अनेक भेद दिखाया जिसमे मुख्य तीन है, १ अध्यात्मिक, जैसें स्वकृत पापकर्मके वस माता पिताके बीजकों विगाड और अपने आपही आहार विहारके अयोग्य वरतावसें प्राप्त भये रोगके कारण ॥ एक तो माबापका बीज बिगडा भया होय और फेर गर्भावस्थामें गर्भणी स्त्रीका विरुद्ध वरतावा होय फेरबच्चा जन्मे पीछै माता वगेरे अयोग्य आहार विहारकरे या करावे ये कारण तो सब जीवके पूर्व कृत पापके उदयसें दुखका बण आता है, लेकिन् इन सबोमे दोयनय सर्वत्र जाण लेना ये अध्यात्मिक रोगके कारण समझणा (२)[आधिभौतिक] सस्त्रका जखमया जहरी जलसें भया जखम इस तरे दुसरेभी अनेक आगतुक कारणसे रोग होता है, निश्चयमें पूर्वबद्ध कर्मोदय, विवहारमें आगतुक कारण ॥

(३ आधिदैवक) इसमें कुदरती रोगके कारण,जैसे, हवा जल गरमी ठंड वगेरे कुदरतके फेरफारसे होय इसमेभी पूर्वोक्त दो नयही समझणा इनही कारणोंको फेर दुसरे तीन प्रकारसे लिखा है

(१ स्वकृत) कितनेक रोग प्रत्येक अदमीके अपणी भूलसें होता है.

(२ परकृत) कितनेक रोग अपने पडोशीकी न्यातकी तथा जातिकी भूलसे या दुसरे आदमीकी भूलसे अपणेकूं होता है.

(३ दैव) याने कर्म स्वभावजन्य कितनेक रोग स्वभाव कुदरतकी फेरफारसें होता है, [illegible] ऋत बदलणेसें हवा और मनुष्योंकी प्रकृतीमे विकार होणा सो दैवाधीन कर्म स्वभाव [illegible] है ॥

[illegible] जे दोयही भेद होता है. (मनुष्यकृत) प्रत्येक [illegible] मिलकर बांधेंभये व्यवहारोंसे जो रोगके कारण पैदा [illegible] इसतरे होता है (१) प्रत्येक कारण, हरेक अदमी [illegible] वे प्रमाणताईसे और नियमके उलांघणेसें जो रोग या मृत्यु [illegible], कुटुबमे चलते भये विरुद्ध विवहार और आचारमें रोग

पैदा होता है, कितनेक कुटुवोमें खास व्यसन और दुराचार होणेसे उस कुटुंबके मेंबर-लोक रोगी वण वैठते है, (३) जातिकारण, अपणी न्यात तथा जातका खोटा विवहार और रूढी जो पडी भईसे रोगकी पैदासका कारण होय इसमे पुरुषका तथा स्त्री जातिका जुदा २ नुकशान होणाभी आ जाता है,कितनीक जातोंमे वालविवाह वगेरे कुचाला होता है, वो रोग उत्पत्तीका दूरका कारण वण जाता है, कितनीक जातोंमे जैसें, वोहरे वगेरोमें बुरगा पडदा होता है, जिससें ओरते नाताकत और रोगी होती हे ऐसे औरभी जाति कारणके अनेक दृष्टांत है (४) देशकारण, कितनेक देशोका हवा पाणी अथवा अदम्योंकी प्रकृती अपनेकू माफगत नहीं आवै जिससे रोग पैदा होय एसा विवहार कल्पीजैसो (५) कालकारण, वालपणा जवानी और बुढापा वगेरोंमे जुदी २ अवस्थामें तैसें छ ऋतुओंमें जो काम करणा चाहिये अथवा वरतणा चाहिये उसतरे न वरतीजै अथवा विपरीत वरतीजै उस कारणोसें जो रोग पैदा होय सो (६) मडली कारण, अदम्योंकी जूदी २ मडली एकठी होकर ऐसे नियम वाधे सो शरीर सरक्षणसे विरुद्ध होय जिस कारणोसें रोग पैदा होय सो (७) राज्यकारण, राज्यके कायदे और धोरण एसे होय सो लोकोंकी तासीर और हवा पाणीके विरुद्ध होय उससे वहोत रोग पैदा हो जाय जैसें अपणा गरम देशके लोकोकू सरापयाने-दारूका पीणा वहोतही नुकशान करनेवाला है, और दारूके व्यसनसें वहोतसी वेमारिया हो जाती है, एसा है तोभी दारू वगेरे मादक और मारणेवाली चीजोंकों वेचनेकू जाहिर लाईसेन्स देणा इय राज्यकारण है, (८) महाकारण, सव सृष्टीके जीव मोतके डरमें आयपडे एसा कोइ व्यवहार वधें जैसें ब्रह्मचर्य गर्भाधान वगेरे शारीरक उन्नतीके शिखरपर लेजाणेवाली क्रियाओकू प्राचीन लोक धर्मकी आवश्यक क्रियामे दाखल करके मांनते थे वो अव सृष्टिके लोकोमें विरलोंमे रहा इसका कोइ वदोवस्तवाला कायदा नहीं होणेसे लोक मनोमती होकर वरतणे लगे, इससें सव सृष्टीकू डर तथा वहोत खरावी होती है सो दैव कहो चाहे कर्म कहो भवतव्यताकहो जैसें पहली हमने पाच समवाय लिखे हैं ये रोग होनेके सव कारण पाच समवाय और निश्चय १ विवहार २ ये दोय नय विगर होते नहीं, विजली या मकानादि गिरके मरणा या चोट लगणा इसमें भवतव्यता समवायकू अग्रेश्वरीपणा समझणा गरमी ठढके फेर फारसें रोग होय जिसमें काल अग्रेश्वरी (न्युम्योनिक) प्लेग,हैजेके होनेमें समुदाणी कर्म वधेभये कर्मकू अग्रेश्वरीपणाहे इसतरे तो पांचो समवाय समझणा, निश्चयनयसें वैसेंही कर्म उस जीवने होणा वांधा था विवहारनयसें उसनें उद्यम आहार विहारादिकका वैसा रोग होनेका किया, इस तरे समझणा, वहोतसे रोग विवहारनयसें प्राणीके उलटे उपचार और वरतावेसेंही होता है, कालका स्वभाव तो वरतनेका है, सो कभी ठढ कभी गरमी फेरफार होताही है ५५ अपणा स्वभाव, पदार्थोका स्वभाव, और ऋतुओंके स्वभाव मुजव वरतणा आहार

उपचार करणा प्राणीके हाथ है, कर्मगति विचित्र है, जो रोगके कारण, कुदरती कारणोंसें पैदा होता है, वो अदमीयोंके रोगका कारण विरलो के होता है, वातावरणमें जो जो फेर फार होता है, सो तो रोग तथा रोगके कारणोकों दूर करनेवाला है, लेकिन् उसमे अपने कर्मवस प्राणी केइयक रोगी हो जाते है, इसवास्ते कुदरती ऋतुओंका फेरफार वातावरण याने हवाकी शुद्धीका है, लेकिन् जो रोगी हो जाते हैं उनोंकी अपेक्षा इस विकारोको दैवकृत चाहे मान लो, असलमें हरकिसमेक भये रोगोकू पहचानकर इलाजकर मिटाणा ये इस ग्रथकी सम्मती है,

रोगी करनेके दूर कारण.

घरके अदर रहणेवाले वहोत अदम्योमेसें एक किसी आदमीकू कोलेरा मरी(हैजा) हो जाता है दुसरोंकों नही होता इसका क्या कारण है, इसके जुवावमें रोगके लायक करनेवाले कारण आ जाते है, क्योंके आहार विहारके विरुद्ध वरतावसें अथवा मावापके तरफसें वारसे याने औलादमे मिली भई शरीरकी तासीरकी निवलाईसे फलाने अदमीका शरीर फलाणे २ दोषोसे जेर होगया है, और ये दोष इसी रोगकेलायक करनेवाला कारण होजाता है, ऐसे २ कारणोंसें फलाने २ दोषवाला शरीर फलाणे २ रोगोके ग्रहण करणेकू आगेसेंही तैयार भया २ होता है, इसवास्ते वो रोग उसी अदमीकू लगता है, दुसरेकू नहीं लगता है, जिस कारणोसें रोग पैदा नहीं होता मगर वदनकू नाताकत कर दुसरें तुरतके कारणोंके लायक करदेवे सो रोगके लायक करनेवाला कारण कहलाता है, जैसे बीज जमीनमें वोणा होय तव पहली जमीनकू फाड खात वगेरे डाल तईयार करते हैं जो जमीन वीजकेलायक होय तभी वीज ऊगता है इसतरेही कितने कारण दोष शरीरकू ऐसी हालतमे ले आता है, तव पीछे तुरतके बणे कारण तुरत रोग पैदा कर देता है, रोगके लायक करणेवाले कारण वहोतसे वणते है, जिसमेके मुख्य २ लिखते है, (१) माबापकी निर्बलता (२) सगे कुटवमें व्याह (३) वालपणेमें व्याह (४) औलादका बिगडणा (५) ऊमर(अवस्था) (६) जाति (७) धधारुज़गार (८) प्रकृती(तासीर)(१) माबापकी निर्बलता गर्भ रहती वखत दोनु माबापोमेसे एकका शरीर ना ताकात होगा तो वालक जरूर ना ताकत होगा, तैसें वापसेती मा वहोत वडी ऊमरकी होगी अथवा मासें वाप जादा ऊमरका होगा, डेढी ऊमर हद दूणी पुरुषकी ऊमर तक तो जोडाही गिणे जाता है, हदउपरांत ऊमरकी तफावत कुजोडा गिणा जाता है, उनोसें पैदा भया वचा ना ताकत होता है, कामशास्त्रमें चार जातकी स्त्री चार जातके पुरुषोंका, समरति १ उच्चरत २ विषमरत ३ और नीचरत ४ इनोसे वालक पैदा होय सो ताकतवर या नाताकत लंबी ऊमरवाला या कमऊमरवाला भाग्यवान या दलद्री या सूरवीर होता है,इत्यादि लिखा है, देखो शकरलाल जैन वैद्यकृत कामशास्त्र

मुरादाबादका छपा भया।।और ये निर्बलता बहोतसे रोगोंका मूल कारण है,।।(२)निज कुटंबमे विवाह होणा येभी निर्बलताका हेतू हैं, वैद्यकशास्त्रमें निषेध कीया है, तभी तो भगवान ऋषभदेव अपणी प्रजाकू बलवत करणेकेलिये युगला धर्म दूर किया, सगमे जन्मे जोडोसे मैथुन होता था तब प्रजाकी वृद्धि नही थी और नहीं वो कोइ पुरुषार्थका काम करते थे फकत पूर्वबद्ध पुन्यका फल कल्पवृक्षोसें भोगते थे, कल्पवृक्षका हीनपणा देख प्रभूने पुरुषार्थ बढाणेकू दुसरोंकी ओलादसे, विवाह करणेका हुकम दिया, कोइ कहेगा भगवान दो माताओंकी औलाद भरतबाहुबलसे ब्राह्मी सुदरीका विवाह कैसे किया पिता तो दोनोंके आपही थे।।इसमे विचार ऐसा है, भगवान प्रजापतीने ये विधि इसवास्ते दिखलाईके तुम लोक दुसरे कुटंबकों बेटी दो वो आपतो जाणतेथे मेरी दोनों बेटिया बाल ब्रह्मचारणी यां हैं, इनोके तो रति या शतानकी प्रवृत्ती होयगी नहीं,भगवानकू ऐसा किया देख एकके सग जणा भया जोडा दुसरेके जन्में भये जोडोंसें विवाह दुनिया करणे लगी,बडी मनूमें ऐसाही हुकम हैं,और छोटी मनू भृगु ऋषीकी बनाइमे ऐसा लिखा है, माताके सपिंडमें नहीं होय और पिताके गोत्रमे नहीं होय ऐसी कन्या, उत्तम जातिवालोंकों विवाह करणा चहिये छोटी मनुनें नीच कोमका ये काम है, ऐसा बाकी रखा है, बडी मनूका जो कायदा है, उसका कायदाही अर्हन्नीती है, वो बडी और छोटी दो है, कुटंबमें लग्न करणेका निषेध बाबत लोकीक कारण तो बहोत है, इहा लिखणेकू जगे नहीं है, लेकिन् दुहिता जो नांम बे-टीका सस्कृतमें धरा है, सो उसका अर्थ तो ऐसा होता है, के जिसके दूर जांणेसें सबका हित होय, पचास वर्ष पहिले गोत्रमें विवाह करणेका बडा तिरस्कार होता था, अब तो धीरे २ उत्तम वर्णके हिंदुओंमें प्रचार चला है, पूर्व विद्वान तथा अर्वाचीन विद्वान सगा कुटुंबमें व्याह करेणेकी मनाई करते हैं, क्योंके जैसें रसायणिक योग दोनु जुदे २ गुणोका तत्व मिलता है, तभी सिद्ध होता है, गोत्र विवाहसें जाहिर देखते कोईभी पाप नहीं दिखता इसवास्ते कितनीक जात तो सगी बहिन काकाकी बेटीसें व्याह कर लेते हैं, शास्त्र और लोक मर्यादा तथा आदमके बाधे नियमकों तोडकर चलते है, ऐसे सब-धसे पैदा भयी औलाद शरीरशक्ती और मानसिक शक्तिसे उतरते जाते हैं, फेर जैसें दुसरे सोध और सुधारोंके साधनोंसे जैसा ताकतवर होणा चहिये ऐसी ओलाद बलवान नहीं हो सकती है, जो की शास्त्रादिक ऊपर लिखे प्रमाणोंकों नहीं मानते उनोंनें अपणी औला-दके हित सुखकेवास्ते इतना तो जरूरही ध्यानमें रखणा चाहिये जो के बापके तरफसें कोइ तरेकाभी सबध न लगता होय ऐसोंके सग व्याह करणा सबसे अच्छा है, दूर देशकी स्त्रीसें व्याह करणा सर्वोत्तम सबध है, (३) (बालविवाह) बालपणेमे जो व्याह कर देते है, उससे जो जो खराबियां होती है, सो तो किसीसे छिपी नहीं है, इसका तो इहा क्या लिखे बचपणेमें जो विषय सेवते हैं, उनोके शरीरमे जितनी नुकशानी

होती है, ऐसी स्यात् कोईभी रोंगसें नहिं होती होगी ये बालपणेमे व्याह करणेसें शरीरकू नाताकत कर सत्यानास करणेवाला महा पाप है, निर्बल शरीरमें वेर २ वेमारीका हुमला भया करता है, जिस वखत उठती जवानीके लडका लडकियोंका शरीर वंधणेकू लगताहै उसवखतउनके वदनकू अछापुष्टिदार खुराकदेकरखून वढाणेकी जरूरी है, जहांतक वीर्य पूरा दोनोंका पका नहीं उसमें संबंध होणेसें उलटा खून घट जाता है उसकरके उनोका मन वदन जितने कदमें वढणा पोपणा और कसणा होय वैसा हो नहीं सकता जवान औरत मर्दोंका वदन मजबूत और पूरा ताकतवर होणा जिसकी जगे बाल विवाहसें हीनसत्व दुर्बल मरदमी हीण हो जाता है, वल बुद्धि घट जाती है, जिससें उद्यम रुजगार विवहारका पूरा फायदा नही पासकते है जब पूरी कमाईमें धन पास नहीं होता तब खानपांनका साधनभी पूरा नहीं मिलताहै चिंता और मुसी बतोंसें अपणेहीफाके गुजरे ऐसा सकस अपणे कुटंबकी क्या सार सभाल कर सकेगा, फेर ऐसें ना ताकतोंके लडकेवाले ना ताकत होय जिसमेंतो अचभाही क्या माता पिताके वीर्यका बिगाड बालकोके वचपणेमे कोइ २ तो दिख जाता है, वहोतसें वडी ऊमरमें प्रगट होता है, इसवास्ते वचपणेमें व्याह करणा वडे नुकशांनका हेतू है, ये बालविवाह बडे २ रोगका कारण जाणना(४)औलादका विगडणा, कितनेक दरद गतानोके होता है, उसका कारण एसा हेसो बाप माका रोग वचोंकू होता है, इन रोगोंमें मुख्य २ ये रोग है, क्षय दम दिवानापणा मृगी गोला हरसमस्सा सुजाक गरमी (फिरग) आंख और कानका रोग औलादमें ऊतरते वहोतसे रोग, वहोतसी वखत सर्व कुटबका संहार कर डालता है, उस वखत लोक कहते हैं, देखो इस कुटुवपर परमेश्वरका कोप हो गया निश्चयमें बिचारे तो परमेश्वर कीसीपर कोप नहीं करता न खुस होता है, उन २ जीवोंके कर्मके वस वेसाही सयोग आय वणता है, क्यों के क्षय और दिवानापणेके रोगमें रहा भया गर्भ क्षयरोगी अथवा पागल होता है, ऐसा वैद्यकशास्त्रका नियम है, इसवास्ते चतुर अदम्योंको ऐसे रोगमें सादी करणा और प्रजा पैदा करणेसें दूर रहणा किसी २ वखत औलादमें ऊतरणेवाले रोग एक पीढीकू छोडके पोतेके हो जाता है, औलादमें ऊतरणेवाला रोगोवाला वालक वहोतसी वखत पहली तनदुरस्त दिखता है, लेकिन् वो तनदुरस्तीकू देख ऐसा नही समझणाके वो निरोग है, एसे वचोंका वदन रोगके लायक अथवा लायक होणेकी हालतमेंही होता है, रोगकू उत्तेजन देणेवाला कोइ कारण वणाके रोग झट दिखाई दे देता है औलादमें ऊतरता रोगोका जो अपणेकू ज्ञान होय तो वचपणेमेंही सभाल रखणेसें कभी वो रोगकी बिलकुल जड नहीं जाय तोभी कितनेक दरजे अदमीका सीधा उद्यम उसरोगकू रोक सकता है, (५) (ऊमर) अवस्थाभी रोगके लायक करणेवाला कारण होता है, वचपणेमे शरीरकी गरमी कम होती है, उससें ठडी जलदी असर

कर जाती है, संभाल नहीं रखणेसें हांफणी दम खासी कफ वगैरेके रोग थोडीसी देरमे हो जाता है, जवानीमें रोगोकू अटकाणेवाली शाता वेदनी नामकी शक्तिका जोर होणेसे रोगके लायक करणेवाले कारणोका जोर थोडा लगता है, तींसरी वृद्धावस्थामें फेर शरीर निर्बल पडता है, और ये निर्बलता वदनकू वेर २ रोगके लायक करती है, (६) (जाति) जातिका विचार करके देखते हैं, तो पुरुषसेती औरतका शरीर रोगके असरके लायक जादा होता है, कुछ तो अज्ञान विचाररहितपणा और हठ इस कारण आहार विहारमे विलकुल नफे नुकशांनका खयाल नहीं रखती और फेर असलमे वदनके बधेज नाजुक होणेसे गर्भ स्थानमें वेर २ फेर फार उथल पुथल भया करती है, इसवास्ते स्त्रीका निर्बल शरीर रोगके लायक होता है, औरतकी पैदास इस वखत पुरुषसे तीगुणी दिखती है, जादा मरती है, एक २ अदमी तीन २ चार २ सादी बहोतसें किया करते है, जैन सिद्धांत किसी अपेक्षासें औरतकी पैदास पुरुषसें सत्ताइस गुणी जादा लिखते है, (७) (धदा) कितनेक रुजगार रोगके लायक करणेवाला कारण बणता है, सबदिन बैठके काम करणेवाले आंखकू बहोत महनत खेचल देणेवाले कलेजा और फेफसा दबे इसतरे बैठके काम करणेवाले, रंगका काम करणेवाले, पारा तथा फासफरसकी चीजों बनाणेवाले, सिलावटे पत्थर घडणेवाले, धातुओका काम करणेवाले, लुहार कसारे ठठेरे सुनार वगैरे कोयलेकी खाण खोदणेवाले मजूर, कपडेकी मीलमे काम करणेवाले मजूर, बहोत बोलणेवाले, बहोत फूकणेवाले, रसोइका काम रात दिन करणेवाले, इत्यादिक धदा रुजगार करणेवालोंका शरीर रोगके लायक हो जाता है ऊमर इनोकी प्रमाणसे कम हो जाती है (८)(प्रकृति)प्रकृती, स्वभाव, मिजाज, येभी रोगके लायक करणेवाला कारण है किसीका मिजाज ठढा, किसीका गरम, किसीका वायडा, किसीका मिश्र, इसमेंके दोय अथवा तीन प्रकृतीकी प्रधानतावालेभी केइयक होते है, गरम मिजाजवाला अदमी क्रोध तथा बुखारके तुरत आधीन होता है, शरदी मिजाजवाला अदमी सरदी कफ दम वगैरे रोगके तुरत स्वाधीन होता है, वायु प्रकृतीवाला अदमी वादीके रोगके स्वाधीन होता है, मूलमे ये प्रकृतीरूप दोष तो उनोंके होता ही है, पीछे उस प्रकृतीकू बिगाडे ऐसे आहार विहारसें मदत जब मिलती है, तब उस मुजब रोग पैदा होता है, इसवास्ते प्रकृतीकू रोगके लायक कारणोमें गिणते है,

॥ रोगकूं पैदा करनेवाला नजीकका कारण ॥

रोगकू पैदा करणेवाले नजीक कारणोमें मुख्य २ कारण अठोरे है, १ हवा २ पाणी ३ खुराक ४ कसरत ५ नींद ६ कपडे ७ विहार ८ मलीनता ९ व्यसन १० निपयोग ११ रसबिगाड १२ जीव १३ चेप १४ ठढ १५ गरमी १६ मनके विकार १७ अकस्मात १८ और दवा, ये ऊपर लिखी बाबतें जुदे२रोगके कारण हो जाते हैं, इनमेंसें मुख्य

सात बातें अच्छी तरे उपयोगमें लेणेसें शरीरकों पोषणकर तनदुरस्ती रखता है, और इनही चीजोंकों चहिये जिससें कमलेवेया चहिये जिससें जादा लेवे चहिये जिससें उलटी रीतसे लेवेतो बदनमें तरे २ के रोग पैदा कर देते हैं, इसमेंकी बहोतसी बातोंका विवरण हमने विस्तारसें तीसरें प्रकाशमें किया है, इहां हरेक बाबतसें कोनसे २ रोग पैदा होता है, वो संक्षेपसें इहां लिखेंगें, वांचणेवालोंको इसपरसें अनेक रोगके लायक करणेवाले कारणोंका मालम हो जायगा (१हवा)अच्छी हवा रोगकू मिटाती है, खराब हवा रोगकू पैदा करती है,खराब हवासें मेलेरीया याने विषमज्वर जीर्णज्वर नामका बुखार दस्त मरोडा हैजा कामला आधासीसी शिरकादुखणा मंदाग्नि अजीर्ण कबजियत वगैरे रोग पैदा होता है, बहोतठडीहवासें उधरस खास कफ दम सिसकणा सोजा संधिवायु वैगेरे दरद पैदा होता है, बहोत गरम हवासे जलण लूखास गरमवायु कटणा प्रमेह प्रदर भ्रम अंधेरी चक्कर भमल वातरक्त गलतकोढ शीतला ओरी अछबडा हैजा दस्त वगेरे रोग पैदा होता है, (२पाणी) निर्मल साफ पाणीका फायदा आगे पाणीके प्रकरणमे लिखा है, और खराब पाणीसें बहोत रोग पैदा होता है, खराब जलसे हैजा कृमि कितनीक तरेका बुखार दस्त कामला अरुचि मंदाग्नि अजीर्ण कबजियत मरोडा गलगड फीकापणा नि-बलाई दुर्बलता वगैरे रोग पेदा होता है, जादा खारवाले पाणीसें पथरी अजीर्ण मंदाग्नि कबजियत गलगड वगैरे रोग होता है, वनस्पतीके अथवा दुसरी चीजोका सडा भया मिले पाणीसें दस्त ठडदेकेतप कामला तापतिली वगैरे रोग होता है, मरेभये जांनवरोके सडे पदार्थ मिले भये पाणीसें हेजा अतिसार और दुसरे भयकर जहरी बुखार पैदा क-रता है, धातुओके मिले पाणी याने जिसमें पारा सोमल सीसा वगैरे जहरी पदार्थ गलके मिला भया होता है, ऐसा जलभी रोगोको पैदा करता है,(खुराक)शुद्ध और अच्छा प्रकृ-तीके अनुकूल और बराबर सिजायाभया खुराक खाणेसें शरीरकू पोषण करता है, अशुद्ध सडाभया वासी बिगडाभया कच्चा लूखा बहोत ठंडा बहोत गरम भारी, तथा अच्छाभी खुराक जादा खावे, अथवा पूरी खुराक नहीं खावे इससेंभी बहोत रोग पैदा होता है, (१) सडे खुराकसें कृमि हेजा उलटी कोढ पित्त तथा दस्त इत्यादि रोग होता है, (२) कच्चा खुराकसें अजीर्ण दस्त पेटदुखणा कबजी कृमि वगैरे रोग होता है, (३) लूखे खुराकसे वायु शूल गोला दस्त कबजी दम श्वास वगैरे रोग पैदा होता है, (४) बायडा खुराकसें शूल पेटमें चूक गोला तथा वायुकू पैदा करता है, (५) बहोत गरम खुराकसें खांसी अम्लपित्त (खट्टी उलटी) रक्तपित्त (मूं वगैरे छेदोमेंसें खूनका गिरणा) अतिसार वगैरे रोग पैदा होता है, (६) बहोत ठंडा खुराकसें खास श्वास दम हाफणी शूल शरदी कफ वगैरे रोगपैदा होता है (७) भारी खुराकसें अपचा दस्त मरोडा बुखार वगैरे रोग पैदा होता है, (८) जादा खाणेसें दस्त अजीर्ण मरोडा बुखार वगैरे पैदा होता है,

(९) पूरा खुराक नहीं खाणेसें क्षय निवलाई(चेहरा) वदनफीका बुखार वगैरे पैदा होता है, इस उपरांत मट्टीके मिले खुराक खाणेसें पांडुरोग होता है, बहोत मसालेदार खुराक खाणेसें यकृत् कलेजा याने लीवर विगडता है, और बहोत उपवास करणेसें शूल वायू वगैरे रोग पैदा होकर शरीरकू निर्बल करता है, (४)(कसरत) पहली लिखे मुजब कसरतके नियमानु सार शक्ति मुजब कसरतके याने महनतके करणेसे फायदा है, बहोत महनत या आलसु वण वैठे रहणेसे बहोत रोग होता है, बहोत खेचलसें बुखार अजीर्ण उरुस्तंभ (याने नीचेका तग रह जाणा) श्वास वगैरे रोग होणा सभव है, अल्प श्रम (याने आलसुवणणेसें) अजीर्ण मदाग्नि मेदवायु अशक्ति वगैरे रोग होता है, भोजनकर कसरत करणेसें कलेजेकू हरकत पहुंचती है, भारीअनाज खाकर कसरत करणेसे आमवातका याने सांधोंमे दरदका रोग होता है, कसरत २ तरेकी हे, शरीरकी १ और २ मनकी (१) शरीरकी कसरत हदसे जादा खेचल करणेसें हृदयमे धवका धडधडाट नसोंमे खून बहोत जलदी फिरता है, श्वासोश्वास बहोत जोरसे चलता है, उससें मगज तथा फेफसा वगैरे जरूरीके भागोंपर बहोत दवाव होणेसें उनोंका रोग होता है, बहोत खेचलसे भमल आती है, कानोंमें अवाज होती है, आंखोंमें अंधेरी आती है, भूख मारे जाती है, अजीर्ण होता है, नींद नहीं आती बेचैनी होती है (२) मनकी कसरत शक्ति उपरांत खेचल देणेसें अदमीके मगजमें ज्रुस्सा भरजाणेसे बेहोस हो जाता है वाजे वखत मरभी जाता है, बहोत खेचल करणेसें याने चिंता फिकरसे अग तबाये जाता हे शरीरमें निवलाई घर करती है बहुत पढणे वांचणेसें बहोत विचारसें फेर मनपर बहोत दबाव करणेसें कामला अजीर्ण वादी पागलपणा वगैरे रोग पैदा होता है स्त्रीयोके योग्य कसरत नहीं मिलणेसें उनोंका शरीर फीका नाताकत और बेमार रहता है गरीब लोकोसे पइसेवाले ऐसआरामवाले लोकोंके घरकी औरते भागसभागी सुखी होती है जो औरतें हमेस बैठी रहती है उनोका हाथ पाव ठढा चहराफीका शरीर तवाया भया दुवला अथवा वादीसे फूलाभया नाडीनिर्बल पेटकाफूलणा वदहजमी छातीमेंजलण खट्टी डकार हाथ पांवमेंकांपणी तथा चसका हिस्टीरियाका तरे २ का दुखदाई रोग और ऋतू धर्मसबधी केइ तरेकी बेमारी इत्यादिक रोग जो स्त्रियें अगकू पूरी कसरत नहीं देती है उनोंके होता है (नींद) चहिये जिससें जादा देर नींद लेणेसें खून बरावर नहीं फिरता है तव शरीरमें चरवीका भाग जमा होता है पेटकी दूद वाहिर निकलती है इसकू मेदवायु कहते हैं कफका जोर होता है उससे कफके केइयक रोग होणा सभव होता है और चहिये जिससें थोडी नींद लेणेसें शूल उरुस्तभ रोग होताहे दिनकेसोणेसें कफ वढता है, कपडे जेसें शरीरकी हिफाजत करता है तेसें योग्य रीतसें ऋतु मुजब तासीर

मुजव नही पहरणेमें आवे तो उस कपडोंसें नुकशान पोहचता है, बचोंके वदनपर ठंढकी असर जलदी होती है इसवास्ते गरम अछे कपडे पहराणा चाहिये, नहीं तो उनोके छातीका तथा पेटका रोग होता है, पांवोंकों हमेसा खुला रखणेसें तथा वेर २ जलमें रखणेसें सरीरमें नुकशांन होता है, क्षय (राजरोग) जैसे भयानक रोग पैदा हो जाता है तग (सक्थ) पोसाकसे छाती तथा कलेजे (लीवर)पर दबाव होणेसें ये अवयव अपणा काम बराबर नही बजाता, तब फिरता खून अटकता है, उससे श्वास नलीका तैसें कलेजेका रोग पैदा होता है, गरम मुलकमें अथवा गरम मोसममें ढीले कपडे पहरना ठंढी मोसममें जरा तंग पहरणा चहिये इसतरेसें उलटा पहरनेमें आवे तो गरमी मोसममें गरमीका रोग ठंढ कालेमें ठंढका रोग पैदा होजाता है, मैले कपडे पहरनेसें चमडीका रोग हो जाता है, कपडे मैले और चिकणे होनेसें उडते भये चेपी रोग वदनकूं लगजाता है, (७) (विहार) विहारकूं इसजगे स्त्रियोंके भोगकू लिया है, भोग करणा येभी शरीरका एक स्वभाव है, उसमें जो जादा करे या मैथुन करता बीचमें उठे या वेगकू जबरन पैदा करै फेर वीर्यकू रोके तो बहोतसे रोग पैदा होते हैं, बहोत विहारसें क्षय धातुक्षीणता पांडू शूल, प्रमेह, प्रदर, गरमी, रक्तपित्त, मृगी, उन्माद वगेरे रोग बहोतसा पैदा होजाता है, मन चचल भयेबाद जादा वीर्यके रोकनेसे धातूका गिरणा, स्वप्नेमे धातुका जाणा, वगेरे रोग होणा संभव है, (८) मलीनता, बहोतसे रोगोकू पैदा करती है, घरके अदरकी तथा आसपासकी गंदकी खराब हवाकूं पैदाकर उस हवासें अनेक रोग होणा संभव है, वदनकी मलीनतासें चमडीके बहोतसे रोग हो जाते हैं, लूखापण, खुजली, गडगूमड वगेरे इस उपरांत मैलसें चमडीके छेदोके रुक जाणेसें पसीना अंदरसें बाहिर निकलणे नहीं पाता जिसकरके खून बराबर शुद्ध नही हो सकता, और केइयक रोग होजाता है, (९) व्यसन, सेवणेसें अनेक महाकष्ट देणेवाले रोग पैदा होजातें है, सराप ताडी सींधी अफीम भांग तमाखू(तबखीर)चा काफी वगेरे व्यसनकी बहोतसी चीजों है, ये चीजोंमेसे केइयक चीजें रोग पर दवातरीके योग्य रीतसें वापरणेसें फायदा करता है, जैसें ज्ञातासूत्रमें सेलक ऋपीके मदिराके पीणेसें रोग गया, लेकिन बहोत वैद्यके हुकम बाहिर पीया तब बेशुद्ध होगये आखिर (पथक)चेलेने नरकका रस्ता मद्यकू छोडाय परम पद सधाया इसवास्ते ये सब नसेकी चीजे थोडे दिनतकभी जो वरतणेमे आवे तो व्यसन पड जाता है, व्यसनतरीके नित्य वापरणेसें इतने रोग पैदा हो जाते है, सरापसें रस बिगडणा बदहजमी उलटी दस्तकी कबजी पेटमें खटास मंदाग्नि और मगजकी खराबी करता है, आलस सुस्ती हिम्मतहारपणा डरोकडपणा बेअक्कलपणा, दारू पीनेवालेके खास लक्षण है, दारूसे फेफसेकी भयंकर बेमारी यकृत् याने लीवरका सकोच तथा पकणा क्षय, मधुप्रमेह, गुरदेका विगाड ऐसे २ बडे २ भयकर रोग पैदा करता है, शरीरमें जहरका असर करता है, सराप

बुद्धिकूं विगाडता है, ताडी (सींधी) पेसावके गुडदेका रोग मदाग्नि आफरा दस्त वगेरे रोग करती है, बुद्धिकू भ्रष्ट करती है, अफीमसें सुस्ती अक्कलका घटणा दिवानापणा पैदा होता है, ज्यादा क्या लिखें शरीर अफीमसें बिलकुल बरबाद होजाता है, एक दूध इसका दोस्त है, बदन माने तो तईयार कर देता है, भांग बुद्धि तथा हूसियारीका नाश करती है, अदमीपणा मिटकर पशूकी तरे मुर्खताई और खुराक होती है, यादशक्ति घट जाती है, विचार शक्तिनहीं रहती चक्कर आताहे मनखराब होताहे ऊमर घटजाती है (तमाखू) तमाखू चावणेसे पाचनशक्ति मंद पडती है, बदहजमी रहती है, पहले तो हुसियारी लेकिन्पीछे सुस्ती आतीहे हाथपैर ढीले होतेहै मनकी चचलता तथा हुसियारी कम होजाती है, विचारशक्ति कम होजाती है, जादा खानेमें आवे तो जहरका असरकर जीव जान लेती है, तमाखू पीणेसें छातीमें दाह श्वास तथा कफका रोग पैदा होता है, तमाखु सुघनेसे गदकी होती है, फेर तरे २ के रोग होते है, (चाकाफी) इसकाभी लोकोकू विसन पड जाता है, इसमेभी थोडा२ नसा होता हे, लूखेसूके कम खुराक खानेवाले गरीब लोकोको बहोत नुकशांन करती है, चाकाफीसे मगज तथा उसके ततु नाताकत हो जाते हैं, (१०) विषयोग, खाने पीनेमे जहरी अभक्ष वस्तु आजावे या एकसें दुसरा पदार्थ विरुद्ध खानेमें सामल आजावे तब वो जहर जितना नुकशांन बदनमें करती है, सो पहले लिखा है, फेर तरे २ के जहर पेटमें जाकर नुकशांन करता है, जहरी हवासें बुखार पांडू मरोडा वगेरे रोग होता है, सीसाके तांबेके पेटमें जाणेसे चूक होती है, बछनाग पेटमें जानेसे मूर्छा तथा दाह होती है, सोमल तथा रसकपूरसें दस्तके बध खुल जाते है, ये सबतेरेके जहर पेटमें जाकर नुकशांन करता है (११) रसविगाड, दस्त पेसाब पसीना थूक पित्त इत्यादि पदार्थ खूनमेसें पैदा होता है, उन सबोंकों शरीरका रस एसा नाम कहणेमें आता है, ये रस चहिये जिससें जादा बढकर शरीरमें रहै, तो जादा नुकशान करता है, पसीना नहीं निकले तोभी नुकशान करता है, और जादा निकलें तोभी नुकशान करताहै, इसीतरेही दस्त वगेरे समझणा पेसाब कम होय तो पेसाबके रस्तेसे जो नुकशानकारक अस बाहर निकलणा चहिये वो निकल नहीं सकता और खूनमें जमा होता है, जो पेसाब होणा बिलकुल बध होजाय तो प्राणी मर जाता है, हेजामरीमें पेसाब रुकके मृत्यु होती है, बहोत पसीना बहोत दिनोका अतिसार मस्सा तथा नाकमेंसें जाता भया खून तैसें औरतोंका प्रदर इत्यादि बहते भये प्रवाहकू एकदम बध करनेसे नुकसान होता है, पित्त बधनेसें नुकशान होता है, पित्त बधणेसें पित्तके रोग होते हैं, और खटास बधणेसें साधोमें दरद होजाता है, (१२)जीवजतु, कृमि अथवा जतुवोंसें कठमाल वातरक्त उलटी मृगी अतिसार चमडीके अनेक रोग पैदा होते हैं (१३) चेप, चेपी हवासें अथवा

दुसरे अदमीके स्पर्शसें बहोतसी बेमारियां होती है, उपदंश (गरमीका रोग) वातरक्त (गलतकोढ) प्रमेह प्रदर टाईफोईड तथा टाईफस नामका बुखार याने शीतला ओरी हैजा न्युम्योनिकप्लेग याने अग्निरोहणी विस्फोटक औरभी उडते रोग चेपसे होते है (१४) ठंढी, बदनकी गरमी जब कम होती है, जब उसकूं ठंढ कहते हैं, बहोत ठंढसें तथा सरदीसे बुखार मरोडा चूंक मूत्रपिंडका सूजणा सधिवात(याने गठिया)मधुप्रमेह हृदयका रोग फेफसेका सोजा दम क्षय खास, वगेरे रोग पैदा होता है, (१५) गरमी, शरीरकी स्वाभाविक गरमीसें जादा गरमी जब बढ जाती है, तब बुखार वातरक्त यकृत रक्तपित्त गरमीकीखासी अतिसार वगेरे रोग होता है, सखत् धूपकी गरमीसें मगजकी बेमारी सखत बुखार हैजा शीतला मरोडा वगेरे मरज पैदा होता है, गरमीसे बदनपर फुनसियें फफोले वगेरे चमडीकीभी व्याधि होजाती है, विस्फोटक वगेरे दुष्ट रोग जैसें, दुष्टसर्प भये गरमीके जहरसें होते हैं, तैसें गरम पदार्थ खानेसें बधीभई गरमीसेंभी ऐसे रोग होते है, (१६) मनके विकारसे बहोतसे रोग होते है, बहोत क्रोधसें बुखार वातरक्त बेमारियें होजाती है, बहोत डरसें मूर्छा कामला चूक गुल्म दस्त अजीर्ण वगेरे होता है, बहोत चिंता फिकरसें अजीर्ण कामला मधुप्रमेह क्षय रक्तपित्त वगेरे रोग होता है, (१७) अकस्मात्सें याने गिरजानेसें किचर जाणेसे डूब जाणेसे जहर खाजाणेसें इत्यादिक अनेक अकस्मात् कारणोंसें अनेक रोग होता है, सो आगे खुलासा लिखा है, (१८) दवासे, याने दवा रोगोंकों मिटाती है, अथवा मिटाणेमें मदत करती है, लेकिन युक्ति विगर अणघडपणेसें लीभई या दीभई दवा किसी २ वख्त रोगकू मिटायभीदेती है, (अथवा) एक रोगकू दबा कर दुसरेकू पैदाकर देतीहै, भूलसे दीभई दवाईसें अदमी मर जाता है, उस बातोकों अपणे गफलतमें या अकस्मातके वर्गमें गिणते है, लेकिन् लेभागु डाकटर नीमेहकीम और मूर्खवैद्य इनोके अल्पज्ञानसें अथवा लोभसें अथवा रोगीकी पूरी दया नहीं रखताभया बेपरवाईसें सइकडों रोगोंका कारणरूप वो चिकित्सक हो जाते हैं, हजारो आदमी इण लेभागुओके हाथ मारे जाते हैं, केइयक कष्ट पाते हैं, इन बातोको थोडे दृष्टांतोसे खुलासाकर दिखाते हैं, बदनमें वायु बढ जाणेका प्राये कारण ठंढ अथवा सरदी होती है, लेकिन् वाजे वखत बदनमें बहोत गरमी बढ जाणेसेंभी वायु जोर करती है, अब वो कारण गरम है, रोगी पुकार सो वादीकी करता है, और पूर्वोक्त वैद्यवादीकी उत्पत्ति सरदी समझ गरमी दवा देते जाते है, जो कदास वैद्यकहे, ये रोगवादीसे हैं, सो गरम दवासें नहिं मिटेगा तो उस रोगीके घरवाले मरद औरते वैद्यकू मूर्ख ठहराते है, और उसकी बताई दवाई मजूर नहीं करते आप मनोक्त गरम दवाई देते है, उससें गरमी उलटी बढकर रोगकूं असाध्य कर देती हैं, जैसें पित्त संबधी भयकर गरमीसे भये पाणी झरेमें, सो सो लोंग कुलियेमे छमककर वृद्ध रंडाओ

दिलाती है रोगी मर जाता है, फेर धातूके बिगाडसें गरमीका नाश होता है, उपदंश फिरंग गरमी सुजाकसें अथवा डर चिंता फिकरसें बहोत अदम्योंका मगज फिर जाता है, विचार वायु हो जाती है, पागलतक होजाता है, ऐसे रोगोपर अज्ञानलोक अज्ञानवैद्य आंख मूचकर गरमएकांतदवा घसोडे जाते है, सो घटाना तो दूर रहा उलटी वायू बढ जाती है, क्योंके ऐसे रोग मूल मगजके खाली पडनेसें धातूके नास होनेसें होता है, इसवास्ते मगज और धातू सुधरे तबही वायु मिटती है, इसवास्ते मगजकू पुष्ट करे एसी तराघटवाली और शीतल इलाज करणा चाहिये जिसका बदन बहोत जुलाबके लायक नही होय, उसकु बहोत जुलाब देनेसें दस्त मरोडेका रोग होता है, आम तथा खून तूट पडता है, और बहोतसी वखत आंतरे काम नहीं देकर अशक्त होकर मरजाता है.

एक रोग दुसरे रोगका कारण.

कितनेक रोग जैसें आहार विहारके विरुद्ध बरतावसें स्वतत्रपणे होता है, तैसे दुसरे रोगमेंसेंभी रोग पैदा होता है, जैसें बहोत खानेसें अथवा अपनी तासीरसे प्रतिकूल बहोत गरम या बहोत ठंढा पदार्थ खानेसें जठराग्नि बिगडती है, तैसें जादा विषय सेवणसेभी शरीरका सत कम होकर पाचनशक्ति मंद पडती है, इस मंदाग्निके कारणोका इलाज नहीं करनेमें आवे तब इस मंदाग्निके अंदरसें अनुक्रमसे बहोत रोग पैदा होते है, जैसें (१) मंदाग्निसें अजीर्ण होता है, (२) अजीर्णसें दस्त होता है, (३) दस्तसें मरोडा होता है, (४) मरोडेसें संग्रहणी होजाती है, (५) संग्रहणीसें मस्सा हरस होजाता है, (६) हरससें पेटका दरद आफरा गोलेका रोग होजाता है, (२) शरद गरमी जुखाम ये छोटासा एक मरज है, तीनचार दिन रहकर ये आपसेंही मिट जाता है, लेकिन् किसी २ वखत जब बदनमे जड जाता है, तो बडे २ भयंकर रोगोंका कारण बण जाता है, शरीरमें खाणे पीणेकी हिफाजत नहीं रहणेसें दोष बढकर खांसी होती है, कफ बढता है, उसकरके फेफसेमें हरकत पहुच जुलमगार क्षयरोगके निशाण प्रगट होते हैं, पीनस रोगभी जुखामसेंही होता है, (३) अजीर्ण अजीर्णभी एसा साधारण मरज है, अदम्योंकों बहोतसी वखत अजीर्ण होता है, वो अपणे आपही सहज साधारण उपायसें मिट जाता है, जहातक बदनमे ताकत रहती है, उहातक तो जादा हरकत मालम देती नहीं, लेकिन् नाताकत अदमीकू एसा साधारणभी अजीर्ण बडी बेमारीका कारण बण जाता है, (१) अजीर्णसें मरोडा होता है, (२) मरोडेसें संग्रहणी जैसा असाध्य रोग होता है और (३) हेजेमरीकू बुलानेवालाभी अजीर्णही है, अजीर्णका इलाज नहीं करनेसें अजीर्ण जीर्णरूप पकडता है, तब हमेसाकेवास्ते घरकरके रह जाता है, ये रोग अंग्रेजीमें डिस्पेपस्या नामसे प्रसिद्ध है, प्राये अजीर्णसें बहोतसे

रोग होजाते है मुख्य २ तो ये है, (४) कृमि (५) बुखार (६) चूंक (७) दस्तकी कबजी वगेरे (४) बुखारमेंसें तिल्ली (२) जीर्णज्वर (३) सोथ (४) अरुचि (५) कास (६) श्वास (७) प्यास (८) उलटी (९) अतिसार वगेरे ५ कृमि. कृमिकी बेमारी जुदीगिणी गई है, उस करके (१) हिचकी (२) हृदयका रोग (३) हिस्टिरीया (४) शिरका दर्द (५) छींक (६) दस्त (७) उलटी (८) गड गूमड वगेरे रोग होजाता है, ६ धातु बिगाडसें असाध्य क्षयकी बेमारी हो जाती है, जो उसका जावता नहिं करे तो फेर (२) मगजकी वायु विचारवायु अथवा भ्रम हो जाता है, बुद्धिका नाश होजाता है, पागल जैसा बण जाता है, ७ खासी साधारण रोगका जावता नही करनेमे आवे तो वधकरके राजयक्ष्मा होजाता है, ८ मदात्यय बहोत सराप पीनेसे जो रोग होता है, उसकू मदात्यय एसा कहते है, उससें (१) अजीर्ण (२) दाह (३) पागलपणेका असाध्य रोग होता है, ९ उपदंश दुष्ट स्त्रियादिकसे पैदा भई गरमीके रोगसे (१) विस्फोटक (२) गांठ (३) वातरक्त (४) रगतपित्त (५) हरस (६) भगदर (७) नासूर (८) गठिया वगेरे रोग होजाता है, १० प्रमेह सुजाक पहले होकर प्रमेह होजाता है, इससें वद गाठ (१) मूत्रकृच्छ (२) मूत्राघात (३) प्रमेहपीडिका वगेरे उपदसवाली सब बेमारियां होती है.

किरण २ दुसरी.

वाय पित्त कफसे पैदा होयसो रोग.

आर्यवैद्यक शास्त्रमुजब तमाम रोगोकी जड वाय पित्त कफ है, ये तीनों दोष बराबर अथवा अपणे मूलस्थितीपर होते हैं, तहांतक शरीर निरोग गिणे जाता है, इनमेंसें एक अथवा जादा दोष अपनी २ मर्यादा छोड उलटे रस्ते चलते है, तब बहोतसे रोग हो जाते है, ये तीनो दोष किसतरे मर्यादा छोडते हैं, उनोसे कोनसा २ रोग प्रगट होता है, सो लिखते है, वदनमें वायुका कोप होनेका कारण वायु स्वरतेकू रोकणा दस्त पैसाबके वेगकू रोकणा, तुरारसका पदार्थोका खाणा बहोत ठढा पदार्थ खाणा रातकूं ऊजागरा करणा, बहोत स्त्रीगमन मैथुन करणा, बहोत खेंचल करना बहोत खाना, बहोत रस्ते चलना जादा बोलना डर लूखेपदार्थ खाना उपवास करना बहोत खारा कडवा तीखा पदार्थ खाना बहोत हिचका खाणा असवारीपर बैठके मुसाफरी करणी इत्यादिक वायुकों कोपाणेका कारण है, फेर बहोत ठंढमें वरसादकी भीगीजमीनमें अथवा वरसात वरसतेमें स्नानकियेपीछे पाणीपीयेपीछे दिनकेपिछले भागमे खायाभया पचेपीठे और जोरसे पवन (हवा) चलतीमें इतने कारणोसे वदनमें वायु जोंर करती है, वदनमें ८० प्रकारका रोग पैदा करती है

आक्षेपवायु १ शरीरकी नसोमे हवा भरकर वदनकू इधरउधर फेंकती है
हनुस्तभ २ जवाडी वादीसें अर्थात् दाढी जकडके टेढी होय सो
उरुस्तभ ३ जाघ वादीसें अकड जाकर चलणेकी शक्ति कम करे सो
शिरोग्रह ४ शिरकी नसोंमे वादी भरकर शिरकू जकडा देवे और पीडा करे
बाह्यायाम ५ पीठकी रगोमें वादी भरकर धनुषकीतरे टेढा वांका झुका देवे
अभ्यतरायाम ६ छातीके तरफसे वदनकवाण जैसा वांका टेढा होजावे.
पार्श्वशूल ७ पसवाडोंकी पांसलियोमें चमके चले
कटिग्रह ८ कमरकू वादी पकडके जकड कर देवे
दडापतानक ९ लकडीकी तरे वदनकू सजड जकडा देवे
खल्ली १० पांव हाथ जांघ गोठण पींडीमें वायु भर खाली चढाती है.
जिह्वास्तंभ ११ जीभकी नसोंकू वादी पकडके बोलनेकी गति बध करे
अर्दित १२ मुका आधा भाग टेढाकर देता है, जीभका लोचा बधता है करडा होता है.
पक्षाघात १३ आधे शरीरकी नशोंकू सोपणकर गतीकू अटकाता है
कोष्टुसीर्षक १४ गोडोमें वादी खूनकू पकडके कठन सूजन पैदा करती है
मन्यास्तभ १५ गरदनकी नसोमें वायु कफकू पकडके गरदन जकडाती है.
पगु १६ कम्मर तथा जांघोमें वादी घुसके दोनु पगोकू निकम्मा कर देती है.
कलायखज १७ चले तो शरीरमें कापणी होकर पांव आंढेटेढे पडते हैं
तूणी १८ पक्काशयमे चिणक पैदा होकर गुदा और उपस्थमे जाती है
प्रतितूणी १९ तूणीकी पीडा नीचे ऊत्तर पीछी नाभीकी तरफ जाती है
खज २० पांगला जैसा लक्षण लेकिन् एक पावमें होता है लंगडा कहते है
पादहर्ष २१ पावमे खाली झणझणाट होय पाव सून्य सो जाता है
गृद्धसी २२ कमरके नीचे जाघ और पाव वगेरे जकड जाते है
विश्वाची २३ हथेली तथा अगलियां जकड जाय हाथसें काम नहीं होय
अपबाहुक २४ हाथकी नाडी जकडकर सब हाथ दुखते रहता है
अपतानक २५ वादी हृदयमें जाकर दृष्टिकू स्तब्ध करे ज्ञानभानका नाश करे और कठमेंसे विलक्षण तरेका आवाज निकले वो वायु हृदयसें अलग हटे तब होस आवे ऐसें हिस्टीरीयाका जैसा चिन्ह वैर २ होय ओर मिट जाय सो अपतानक वायु कहाती है
व्रणायाम २६ चोट अथवा जखमसें भये व्रण घावमें वादी दरद करे.
वातकटक २७ पांवमें तथा गिरिये घूटणमें चलते दरद होय सो
अपतनक २८ पावमें तथा शिरमें दर्द होय मोह होय गिरपडे वदन धनुषकमाणकी

तरे वांका होय दृष्टि स्तब्ध होय कबूतरकी तरे गलेमें शब्द होय.
अगभेद २९ सब वदन तूटाकरे उसकू अगभेद कहते हैं
अगशोष ३० वादी सब वदनका खून सूकाय डाले वदनकूं सुका देवे.
मिणमिणत्व ३१ मुंमेसें निकलनेके शब्द नाकमेंसें निकले गुंगापणा.
कलता ३२ हिचक २ कर अटकता थोडा २ बोले चकाई खाता बोले सो
अष्टिलिका ३३ सूडीनाभीके नीचे पत्थर जैसी गांठ होती है
प्रत्यष्टिला ३४ इसतरेहीकी गांठ पेटमें आडी होके रहती है.
वामनत्व ३५ गर्भमे प्राप्त होकर वादी गर्भविकार करे तब लडका वामना होता है.
कुजत्व ३६ पीठमें और छातीमे वायु भरकर कूब निकाल देती है
अगपीड ३७ सब वदनमें दरद होता हे उसकू अगपीडा कहते हे.
अंगशूल ३८ सब वदनमें चसके मारते हे वो शूल कहलाती है.
सकोच ३९ वादी नसोंकों सकुडाकर शरीरकूं अकडाती है सो संकोच.
स्तभ ४० वादीसे सब वदन झलजाता है उसकूं स्तभवायु कहते है
रूक्ष ४१ वादीके कोपसे वदन लूखा और निस्तेज होता है सो
अगभंग ४२ वादीसे जाने शरीर तूट जायगा एसा होय सो.
अगविभ्रम ४३ वदनका एकाध भाग लकडे जैसा जड होय सो.
मूकत्व ४४ बोलनेकी नाडीमें वादीभरजाणेसें जुवान बंध होजाती है सो
विड्ग्रह ४५ आंतरोमें वायु भरकर दस्त पेसावकी कबजी होय सो.
बद्धविट्कता ४६ वादीसे दस्त बहोत करडा आता है
अतिजृंभा ४७ उबासी (जभाई) वादीसे बहोत आवे सो
प्रत्युद्गार ४८ वादीके कोपसे डकारे बहोत आया करती है
अन्नकूजन ४९ वादीके कोपसें आंतोमे कुर २ अवाज वेर २ होय सो
वातप्रवृत्ति ५० वादीके जोरसे अधोवायु पाद बहोत होय सो
स्फुरण ५१ वादीके जोरसें कोईभी अग फुरके आंख हाथ वगेरे सो.
शिरापूर्ण ५२ वादीसे नसो (शिराओ) सब भरजाती है सो
कंपवायु ५३ वायुसें सब अगया शिर कांपा करता है
कार्श्य ५४ वादीके कोपसें वदन दिनपर दिन दुबला होते जाता है
श्यामता ५५ वादीसें शरीर काला पडते जाता है.
प्रलाप ५६ जिस वादीसें अदमी बहोत बकता बोलता है सो.
क्षिप्रमूत्रता ५७ जिस वादीसें दम २ में पेसाब उतरा करे सो.
निद्रानाश ५८ जिस वादीसें नींद नही आवे सो

स्वेदनाश ५९ वादी पसीनोके छेदोंको रोक पसीना बध करे सो
दुर्वलत्व ६० वायुके कोपसें वदनकी ताकत जाती रहे सो
वलक्षय ६१ वादीके कोपसें ताकतका बिलकुल नाश हो जाय सो.
शुक्रप्रवृत्ति ६२ वादीके कोपसें शुक्रवीर्य बहोत गिरा करे सो.
शुक्रकार्ष्य ६३ वायु धातुमें मिलके धातूकू सुकाय डाले सो
शुक्रनाश ६४ वायुसे धातूका बिलकुल नास होजाय सो
अनवस्थितचित्त ६५ वायु मगजमे जाकर चित्तकू अस्थिर करे सो
काठिन्य ६६ वायूके कोपसें वदन करडा होजाय सो
विरसास्यता ६७ वायूके कोपसें मूमें रसका स्वाद बिलकुल नहीं रहता.
कपायवक्रता ६८ वादीके कोपसें मूका स्वाद कपायला रहे सो
आध्मान ६९ वायुके कोपसें सूटी धरणके नीचे आफरा चढे सो
प्रत्याध्मान ७० हृदयके नीचे और सूटीके उपर आफरा चढे सो
शीतता ७१ वायूसें वदन ठढा पड जाय सो
रोमहर्ष ७२ वादीके कोपसे वदनके रूखडे होय सो.
भीरुत्व ७३ वायुके कोपसे डर लगता रहे सो.
तोद ७४ वदनमें सूइया चुभावे एसा लगे सो.
कडू ७५ वदनमें खाज आवे वादीसें सो
रसाज्ञता ७६ रसोका स्वाद मालम नहीं देवे सो.
शब्दाज्ञता ७७ कानोंसें सुणीजे नहीं सो वायु
प्रसुप्ति ७८ स्पर्शकी खबर नहीं पडे सो वादी
गधाज्ञता ७९ गधका ज्ञान खसबोकी मालम नही पडे सो
दृष्टिक्षय ८० निजर (दृष्टिमें) वायु प्रवेशकर देखणेकी शक्ति कम करे

वायूके कोपसें वदनमे इसमेंके एक अथवा अनेक लक्षण दिखते है, इसपरसे निश्चय होसकता है, ये रोग वादीके है, खून और वादीका निकट सबध है, वादी खूनमें मिलके कितनेक खूनके विकार पैदा करती है, ऐसे रोगोंमे खूनकी शुद्धि और वायूकी शाति करे एसा इलाज करणा

पित्तप्रकोपका कारण

बहोत गरम तीखा खट्टा लूखा दाहकारी चीजोंके खानपानसे दारूवगेरे नसोंका विसन उपवासबहोतकरणा क्रोध अतिमैथुन बहोतशोक बहोततप धूप अग्नि वगेरे इत्यादि आहार विहारसें पित्तका कोप होता है.

पित्तके ४० रोग.

धूमोद्गार १ धूंये जैसी जली भई डकार आवै औधी. विदाह २ वदनमें जलण वहोत होय
उष्णांगत्व ३ वदन हरदम गरम रहे. मतिभ्रम ४ शिरचकडोलचढ घूमा करे.
क्रांतिहानी ५ वदनके तेजका नाश होय. कंठशोष ६ गलासूके शोप पडे
मुखशोष ७ मूसे शोप पडे सूके अल्पशुक्रता ८ धातू वीर्य कम होजावे
तिक्तास्यता ९ मू कडवा रहै अम्लवक्त्रत्व १० मूखट्टा रहै
स्वेदश्राव ११ पसीना वहोत आवै अगपाकता १२ वदन पक जावै
क्लम १३ ग्लानि तथा अशक्ति रहै. हरितवर्णत्व १४ वदनका रग हरा दीखे
अतृप्ति १५ भोजन करे तृप्ति न होवै पीतकायता १६ वदनका रग पीला दीखै.
रक्तश्राव १७ शरीरके किसी जगेसे खून जावै. अंगदरण १८ चमडी फटे.
लोहगधास्यता १९ मूमेसें लोह जैसी वो आवे दौर्गंध्य २० मूमेसें दुरगध छूटे.
पीतमूत्रत्व २१ पेसाब पीला उतरे अरति २२ पदार्थोंपर अप्रीति रहै
पित्तविट्कता २३ दस्त पीला आवै पीतावलोकन २४ आंखसें पीला दीखे
पीतनेत्रता २५ आंख पीली हो जाय पीतदतता २६ दांत पीले हो जाय.
शीतेछा २७ ठंढे पदार्थकी वांछा रहै. पीतनखता २८ नख पीले होय
तेजोद्वेष २९ प्रकाशका तेज सहा न जाय अल्पनिद्रता ३० नींद थोडी आवै
कोप ३१ क्रोध (गुस्सा) चढे गात्रसादर ३२ वदनमें पीडा होय.
भिन्नविट्कत्व ३३ दस्त पतला आवै. अधता ३४ आंखसे आंधा होय
उष्णोच्छ्वासत्व ३५ श्वास गरम निकले. उष्णमूत्रत्व ३६ पेसाब गरम आवै
उष्णमलत्व ३७ दस्त गरम उतरे तमोदर्शन ३८ आंखसे अधेरी आवै.
पीतमडलदर्शन ३९ पीले चक्कर दीखे निःशरत्व ४० उलटी दस्तमे पित्त निकले

पित्तके कोपसे इनोमेंसे एक अथवा अनेक लक्षण दिखाइ देते हैं, मतिभ्रम याने बुद्धिका बिगाड तिक्तास्यता स्वेदश्राव क्लम अरति अल्पनिद्रता गात्रसादर भिन्नविट्कता तमोदर्शन वगेरे कितनेक पित्तके रोगोकू साधारण अदमी अपणी समझ मुजब वायूके रोगमें गिणकर उसकू मिटाणे गरम इलाज किया करते है, उससें उलटा रोग बढता है, बहोतसे रोग बाहरसे वायुकेसे दिखते है, लेकिन असलमे निश्चय करणेपर वो पित्तका ठहरता है, वहोतसें रोग बाहरके लक्षणोसे पित्तका तथा गरमीका मालम देवे असल निश्चयपर वो रोग वायुसे भये सिद्ध होते हैं, इस वास्ते रोगोका कारण सोधणेमें वहोत विचार शक्ति और सुक्ष्म बुद्धिसें तपासणेकी जरूरी है

कफ प्रकोपका कारण.

मीठा गुड सक्कर बूरा मिश्री वगेरे घी मक्खन वगेरे चिकणे और भारी पदार्थ केला

और भेंसका दूध वगेरे ठढा और भारी पदार्थोंके वहोत खानेसे दिनकीनींद अजीर्णमें भोजन करना महनतका काम करे विगर वेठे रहणा ठढकालेकी मोसममें वहोत ठढा पाणी पीणा वसतऋतुमें नया अनाज खाणा इत्यादि आहार विहारसें वदनमें कफ वढकर वहोतसे रोग पैदा होते हैं,

कफके २० रोग.

तद्रा १ आंखमे भींट लगे अतिनिद्रता २ वहोत नींद आवै.
गौरव ३ शरीर भारी होय मुखमाधुर्य ४ मू मीठा र लगे.
मुखलेप ५ मूमें चिकणास होय. प्रशेक ६ मूमेंसे लाल गिरे.
श्वेतावलोकन ७ सव वस्तु सुपेद दीखै. श्वेतविट्‌कत्व ८ दस्त सुपेद रगका उतरे
श्वेतमूत्रता ९ पैसाव सुपेद उतरे श्वेतांगवर्णता १० वदनका रंग सुपेद होय
उष्णेच्छा ११ गरमागरम खाणेकी इच्छा तिक्तकामता १२ कडवी चीजकी इच्छा.
मलाधिक्य १३ दस्त जादा होय उतरे, शुक्रवाहुल्य १४ वीर्य वहुत सचय,
वहुमूत्रता १५ पेसाव वहोत आवै. आलस्य १६ आलस वहोत आवै
मदवुद्धित्व १७ वुद्धि मद होय तृप्ति १८ थोडा खानेसे तृप्ति होजावै
घर्घरवाक्यता १९ अवाज खोखरा वोले अचेतन्य २० चेतना भूल जावै

वदनमें कफका कोप होणेसे इनोमेंका एकरोग अथवा जादा हो जावें सर्व वस्तु सुपेद दीखे दस्त सुपेदरगका होय इसका मतलव एसा है, तदन सुपेद रगका दीखे एसा नहीं है, लेकिन् तनदुरस्ती हालतमें जेसारग दिखणा चहिये उसकरके जादा सुपेद दिखाइ देवे.

किरण ३ तीसरी.

रोगपरीक्षाके प्रकार.

रोगकी परिक्षाके वहोत प्रकार हे जेसें तीनतो निमित्त शास्रसे, रोगीकू स्वप्न आवे तथा शकुनपरीक्षा वैद्यकू दूत वुलाणे जावे उसकू गरम सुकन मकानसें निकलते होणा सौम्य ठढा होयतो अछा नही वैद्यके पास पोहचे वाद वैद्यस्वरोदय देखे सो भरीदिसमें दूत वैठके या खडा रहके प्रश्नकरे तो सजीवदिस समझै, अग्नितत्व उस वखत वैद्यके चलता होय तो पित्त गरमीका रोग समझे रोगीके, वायु वहता होयतो वादीका इत्यादि तत्वोका विचारकरे जो खाली दिसमें वैठके या सुखमना नाडी चलती स्वरोदयमें होय तो रोगी मरे, वैद्यकु जस आकाशतत्वमें नहीं आवे इत्यादि विवरा देखणा होय तो हमारी छपाई सत्‌ज्ञान चिंतामणी स्वरोदय ग्रथ देखणा वैद्यके चद्रश्वर चलता होय उसमें फेर पृथ्वी जल तत्वचले उस वखत रोगीके घर जावै निश्चैजसपावे दवादेतीवखत वैद्यके सूर्यश्वर होणा इसतरेफेर वैद्यकु मकानसें निकलते ठढे सौम्यशकुन [illegible] गरमग्र-

कुन अच्छा नहीं इसतरे स्वरोदय १ शकुन २ और स्वप्न ३ ये तीनोसें विगर रोगीकूं देखे निमत्तज्ञानसें रोगी जियेगा १ या वहोतदिन भुगतेगा २ या आराम होजायगा ३ इत्यादिक वैद्य जांण सकता है लेकिन् ग्रथ वढजाणेके सवव इहां नहीं लिखताहू अष्टांगनिमित्त यर्थार्थ ज्ञानकूं झठा कहे सो झठा है अव रोगपरीक्षालोकीक प्रसिद्धमें जो मुख्य है उसका विस्तार वर्णन इहां लिखताहू १ प्रकृतिपरीक्षा २ स्पर्शपरिक्षा ३ दर्शन-परीक्षा ४ प्रश्नपरीक्षा १) प्रकृतीपरिक्षा सो रोगकी प्रकृती वायु-प्रधान है या पित्त-प्रधान है या कफ-प्रधान है के रक्त-प्रधान है इस बावतका निर्णय प्रकृतीके स्वरूपमें बता-णेमें आवेगा २ स्पर्शपरिक्षा रोगीके शरीरका जुदा २ भागोकू हाथके स्पर्शसें तेसें दुसरे साधनोमें तपासकर देखणेकी परिक्षाका वर्णन करणेमें आवेगा स्पर्शपरिक्षा हाथसें या थरमोमीटर (उष्णता मापक नली) सें और स्टेथोस्कोप (हृदय तथा श्वास नलीकी क्रिया जांणनेकी भूगली) वगेरे दुसरे साधनोंसें भी होसकती है, नाडी हृदय फेफसा तथा चमडी ये स्पर्शपरीक्षाका अंग है ३ दर्शनपरिक्षा रोगीकावदन तथा उसके जुदे २ अवयव फकत नजरसें देखणे मात्रसेंही रोगका कितना एक निर्णय होसके इसपरीक्षामें बहोत वावतें आजाती है, रूप यानेचहरा त्वचा याने चमडी नेत्र जीभ मल यानेदस्त मूत्र वगेरेका रग तथा उनोके दुसरे चिन्होसें रोगकी परिक्षा होसकती है ४ प्रश्नप-रीक्षा, रोगीकी हकीगतमें तथा पूछणेसें जो जो बातकीवाकवी होय उसकूं इहां प्रश्न-परीक्षानाम दिया है.

प्रकृतीपरिक्षा.

आर्य वैद्यकशास्त्रका विशेषपणेसेंवाय पित्त कफ परही आधार रख्का भया है नाडीपरि-क्षामें भीयेही तीन है इसवास्ते इन तीनोंका विचार पहली करणेमें आता है, नाडी वगेरेकी परिक्षाके विषयपर आवते पहली एसा निश्चय करणा चहिये के हरेक दोषवाली प्रकृ-तीका स्वरूप कैसा होता है, सब अदम्योंको अपणी २ तासीरसें वाकव होना जरूर है, अपणी प्रकृती शांत है, के तामसी है, ये बात तो सब अदमी आपभी जाणते हैं, और उनके सहवासी यार दोस्तभी जाणते है, वैद्यक शास्त्रके नियमानुसार वायकी पित्तकी या कफकी अपणी प्रकृती है, या खूनकी है, या मिश्र मिली भई है, ये जाणे बाद खानपांन के पदार्थोंका सामान्य गुण दोष धर्म जब अछीतरे जाण लेता है, तो अपणी प्रकृतीकू अछीतरे तनदुरस्त रख सकता है, इलाजभी रोगोका कर सकता है, इन तीनो प्रकृतीकी परिक्षामें वहोतसी परिक्षा सामान्य तोर आजाती है, सब अदम्योंमें वाय पित्त कफ और खून होताही है, लेकिन बराबर सब अदम्योंका देखणेमें नहीं आता है, इन तीनोंमेंसे किसीके वदनमें एक प्रधान किसीकें वदनमें दो, अदमीकू उसी प्रकृतीसें पहचानते हैं, एक चीज एक प्रकृतीवालेकूं माफगत आती है, दुसरेकू नही आती इसका मूल मतलब इतनाहीं

है, के अदम्योंकी प्रकृती जूदी २ होती है, इसतरे वस्तुओंका स्वभावभी जूदा२ होता है, जब अदमी आप अपणी प्रकृतीकू नहीं जाण सकता तब खानपानकी वस्तु प्रकृतीकी परिक्षा करणेमें मदतगार होसकती है, जेसें दवासें रोगकी परीक्षा होती है, जिस वखत दुसरी तरे रोगकी परीक्षा नहीं होसकती तब चतुर वैद्य डाकतर ठडा या गरम इलाजसेती रोगका कितनाएक निर्णयकर सकते है, तेसें खानपानके पदार्थोंसे प्रकृतीकी परिक्षा होसकती है, जेसें गरम वस्तु माफगत नहीं आवे तो समझणा तासीर पित्तकी है, ठंढी वस्तु माफगत नहीं आवे तो प्रकृती वायूकी या कफकी है, प्रकृती मुख्य चारतरेकी है, वातप्रधान प्रकृती १ पित्तप्रधान प्रकृती २ कफप्रधान प्रकृती ३ रक्तप्रधान प्रकृती ४ इन चारोंका सेलभेल होकर लक्षण होय सो मिश्रप्रकृती जांणनी अब इन चारोंका विवरण लिखते हैं

वातप्रधानतासीरके अदमी.

शरीरके अवयव यडे लेकिन् विवस्था विगरके छोटे बडे बेडोल शिरसोशरीरसें छोटा या बडा. निलाड मूंसें छोटा, बदनसूका और लूखा बदनका रग फीका झांखा और खून विगरका आखगहरी काले रगकी बाल जाडे काले और छोटे चमडीतेजविगरकी लूखी लेकिन् स्पर्शकाज्ञान जलदी करणेवाली, मांसके लोचे करडे, लेकिन् विखरे भये, चाल जलदी चचल और कांपती, खूनका फिरणा वे प्रमाण, इसवास्ते कोईका शिर गरम तो हाथ पैर ठंढा, और कोइका शिर ठडातो हाथ पैर गरम, काम करणेमें प्रवल लेकिन् मन चचल अस्थिर, कामक्रोधादि वैरियोंकों जीतणेमें अशक्त, प्रीति अप्रीति तथा डर जलदी पैदा होय, न्याय अन्यायका विचार करणेमे सूक्ष्म दृष्टि होती है, लेकिन् अपणे इनसाफी विचारकू अपणे अमलमें लाणा उसकु मुसकल होता है, सब जिंदगी अस्थिर चचल वृत्तिसें गुजारता है, सब कामोंमें जलदी करता है, उसके शरीरमें बेमारी बहोत जलदी आती है, उसका मिटणा भी मुसकिल बेमारीसह भी नहीं सकता कष्ट चोगुणा दिखा देता है दुसरी २ प्रकृतीवालेका शरीर और मन ज्यू ज्यू अवस्था आती जाती है, त्यों त्यो शिथिल और मद पडता है, लेकिन् वायुप्रधानप्रकृतिवालेका उलटा ऊमर चढणेपर मन करडा और मजबूत होता जाता है, इस प्रकृतीवाले अदमीके अजीर्ण बधकुष्ट दस्त पेकटकारोग शिरकादर्द चसका वातरक्त फेफसेकावरम क्षय उन्माद वगेरे रोगहोणा जादेसभव है, फेर इसप्रकृतीवाले अदमीकी ऊमर ताकत धन थोडा होता है, इसप्रकृतीके अदमीकू तीखा चमचमा गरमागरम तथा खारा पदार्थोंपर जादा प्रीति होती है, खट्टा मीठा ठडा पदार्थोंपर अप्रीति अरुचि होती है

२ पित्तप्रधान प्रकृतीके अदमी.

शरीरके अंग उपांग खपसूरत अछाबधा, मासके लोचे ढीले होते हैं, बद

लिये बालथोडे करवेरे, जलदी सुपेद होय, तेसें वदनपर थोडी २ फुनसियां भयाकरती है, भूख प्यास जलदी लगे, मूमेसें शिरमेंसें, बगलमेंसें दुरगध आवै, बुद्धिमानहोय क्रोधी होय आंख पैसाब तथा दस्तका रग पीला होय, साहसीक उत्साही तथा कलेस करणेपर सहणेकी शक्तिवाला, उसकी ताकत उमर द्रव्य तथा ज्ञान मध्यम होता है, इस प्रकृती-वालेकू अजीर्ण पित्त हरस वगेरे रोग होणा जादे सभव है, मीठा तेसे खट्टेरसपर जादा प्रीति होती है, तीखा और खारेरसपर कम रुचि होती है.

३ कफप्रधान प्रकृतीके अदमी.

शरीरसुंवाला भराहुवा मजबूत अवयवसंपूर्ण वदनकारंगसुंदर चमडीकोमल वाल सुंवाले, रगस्वच्छ आखचिलकती सपेद तथा धूसर रंगकी, दांतमैला सुपेद, स्वभाव गभीर, बल तथा नींद जादा, आहार थोडा, विचारशक्ति, कोमल, बोलणेकी शक्ति थोडी यादशक्ति और विवेकबुद्धि जादा, न्याययुक्त विचार, व्यवहार अच्छा, शरीरकी शक्तीसें मनकी शक्ति जादा होती है, शरीरकी चाल मंद, लेकिन् मजबूत विशेषपणेकरताकतवर और धनवान लंबी ऊमरवाला होता है, सामान्य कारणसें रोग होजाता है, कफके सग रसकी वृद्धि होती है, शरीरभारी मेदवाला होता हैं, उसकरके अशक्ति बढती है, बदन बहोत जाडा होता है, पेटकी दूद छिटक पडती है, हाथ बडा सांधेभी बडे और जाडे होते है, मांसके लोचे ढीले होते हैं, चहरा विरस और फीका होता है, शरीर जेसा जाडा मोटा दिखता है, वैसी अंदर ताकत नहीं रहती, निर्बलता सोजा जलवृद्धि हाथी जेसे पांव वगेरे, इस प्रकृतीके मुख्य रोग है, तीखा खारा पदार्थोंपर जादा प्रीति मीठे पदार्थोंपर कम रुचि होती है

४ खूनप्रधान धातूके आदमी.

वात पित्त कफ ये तीन प्रकृतिसिवाय जिस अदमीमे खून जादा होता है, उसके ये लक्षण है, शरीरसे शिरछोटा, मूचपटा चोखूणा, निलाडवडा और कितनोंका पिछाडीसे ढलता, तथा छाती चौडी गभीर और लबी होती है, खडे रहणेसें सुटी पेटकी सपाटीके सग मिल जाती है, बाहरया अदर दिखती नहीं, चरबी थोडी, वदनपुष्ट खूनसेभराभया खपसूरत वालनरम पतले और आंटेदार चमडी करडी उसमेंसें मासके लोचे दिखाई देते नाडीपूर्ण और ताकतवर दांतमजबूत पीलास पडते भये, पीनेकीचीजपर खुसबहोत, पाचनशक्ति प्रबल, महनत करनेकी शक्ति बहोत, मानसिक वृत्ति कोमल, बुद्धि स्वाभाविक सहनशील सतोषी लोकोपर उपगार करनेवाला बोलणेमेंचतुर सरलभाषी हिम्मतवान खूनवालाअदमी हरदम कांममेंभी नहीं लगे रहता, और घरमे बैठके निकम्मा वखत भी नहीं गमाये चाहता, दाह, फेफसेकावरम, निजला, दाहज्वर खूनकागिरणा कले-जेकारोग, फेफसेका रोग होणा संभव है, धूप नहीं सदता, जुदी २ प्रकृतीकी पहचान

करणी मुसकिल है, बहुतोंकी मूल प्रकृती दोदो दोषोकी मिली भई होती हैं, दोनोके लक्षण सग मिलेभये होते हैं, एक प्रकृतीके लक्षण जाणे पीछै दूसरीका जाणना सहज है, सूक्ष्म विचार अदमी जब करके देखता है, तो यहभी मालम होजाती है, के मेरी प्रकृतीमें फलाणा दोष कम हे, रोगकी परिक्षा, उसका उपाय, तथा पथ्यापथ्यका निर्णय प्रकृतीकी परिक्षा भयेबाद बण आती है, इसवास्ते वैद्य या डाकदरोने तथा सब अद्म्योनें प्रकृतीकी परिक्षा हमारे लिखे ग्रथानुसार पहली कर लेणा, रोगीकू पूछणेसें परीक्षा वैद्य या डाकतरलोक कर सकते हैं, दोषके और प्रकृतीके कुछ सबध है, या नहीं एसा एक जरूरीका प्रश्न है, बहोतकरके प्रकृतीमें जो दोष प्रधान होता है, वो दोषके कोपसें रोग होता है, एसा कहणेमे कुछ बाधा नहीं है, रोगीकी प्रकृती वायु प्रधान होय तो उसकू बुखार वगेरे जो कोई रोग जतावे तो वो रोग वायूके दोष सग विशेष सबंध रखता है, एसा अनुमानकर सकते हैं, एसाही पित्त कफादिकका समझ लेना अब स्याद्वादका दुसरा पक्ष दिखाते हैं, रोग हमेसा शरीरकी मूल प्रकृतीके अनुसार होता है, एसा एकांत निश्चय नहीं है, बहोतसी वखत एसा बणता है, रोगीकी मूल प्रकृती पित्तकी होती है, और रोगका कारण वायु होता है, प्रकृती वायूकी होती है, और रोगका कारण पित्त होता है, इसतरे बहोतसें रोग ऐसें हैं, सो प्रकृतीसें बिलकुल तालूक नहीं रखते तोभी रोगीकी परिक्षा करनेमे और इलाज करनेमें रोगीकी प्रकृती तासीरका ज्ञान बहोत उपयोगी बण आता है.

२ स्पर्शपरिक्षा.

शरीरके कोईभी भागपर हाथसें अथवा दुसरे ओजारोसें दरियास करणी याने शरीरमें गरमी या सरदी या खून श्वासोश्वासकी क्रिया कितने अदाजन है, उसकू इहां स्पर्श परिक्षा लिखा है, इस परिक्षामे (अ) नाडीपरिक्षा (ब) त्वचा परिक्षा तैसें (क) थरमोमिटर अर्थात बदनकी गरमी मापनेकी नली और स्टेथोस्कोप अर्थात छातीकी दरियास करनेकी भूगलीका समावेश होता है, स्पर्शपरिक्षाका सबसें पहले अछा साधन तो हाथ है, रोगकी परिक्षामें हाथ बहोत मदत करता है, बदन गरम है या ठडा है, सुहाला है, या खरखरा है, ये बात हाथसें तुरत खबर पडती है, बदनके अदरका फलाणा भाग नरम है, पोला है, या कठण है, या अदरके भागमें गाठ है, या सोजा है इत्यादिक नाडीकी परिक्षाभी हाथसेंई होती है, नाड देखकर बदनमें कितनी गरमी या सरदी है, जिसकी खबर हो सकती है, अनुभवी वैद्य और हकीम अपने अनुभवसें और मावरेसे बदनकी चोकस गरमी फकत नाडीपर अगुलिया धरकर कह देता है, थरमोमिटर जितना काम करता है, लगभग इतना काम चालाक हाथ और अनुभवी अगुलिया कर सकती है, सोधक खोजी लोकोंनें हाथका काम दुसरे साधनोंसें लेणा सरू

वदनकी गरमी मापणे थरमोमिटर जो बनाई है सो दुरस्त है, क्योके इस साधनसें एक साधारण अदमीभी अपणे आपसें वदनकी गरमी या बुखारकी गरमी माप सकता है, इत्यादि बात वर्त्तमानमें प्रसिद्ध है, साधारण गरमी फकत इससें मालम होती है, दोषोंके अंसांसकी कुछ खबर नहीं पडती इस बातमें कितनेक दरजे चतुर वैद्योके हाथ प्रबल होतेहैं बाकी तो रोग परिक्षामें सर्वोपरी निदान है, हृदयमें खूनकी चाल श्वासो श्वासकी क्रिया जाननेवास्ते (स्टेथोस्कोप) नामकी भुंगली बनाई है, यहभी हाथका काम करती है, और कानकूं खबर देती है.

(अ) नाडीपरिक्षा.

अंतःकरणमेंसें खून बाहर धकेलीजकर धोरी नसोंमें जाता है, उससें धोरी नसोंमे धबका भया करता है, और उस धबकोंसें खूनका कमती वैसी जोरसें फिरणा मालम पडता है, उसकू नाडीज्ञान कहते हैं, इस नाडीज्ञानसें रोगकीभी कितनीक परिक्षा हो सकती है, किसीभी धोरी नसके ऊपर अगली धरणेसें नाडीकी दरियाप्त हो सकती है, लेकिन् जादा निश्चय करनेकू हाथके अगूठे नीचे नाडी देखते हैं, हाथके पोंचे आगे दोसखत डोरी जैसी नसों है, गोरी चमडीवाले तथा पतले शरीरवालेके ये रगों दिखाइ देती है, उसमेंसें अगूठेके तरफकी डोरी जैसी नाडपर बाहरकी तरफ हाथकी दो तीन अगली धरणेसे अगलीके नीचे धब २ करता मालम देता है, उस धबकोंकू नाडीका ठणका या चाल कहते है, नाडीकी दरियाप्त करनेपर कितने वेगसे चलती है, जो खाली है के धीमी है, अंगमें कितनी गरमी है, या बुखार है, इत्यादिक बातका निर्णय चतुर वैद्य अगलिया धरकर कर सकता है, घडी एक हाथमें रखकर एक हाथसे नाडी देखणी एक मिनटमें कितना ठणका नाडी देती है, एक मिनटमें नाडीके ठणके ११० चले वैद्य और डाकदर गिणती करके कहे तो समझ लेणा, रिदयमें शुद्ध खूनका होद है, वो एक मिनटमें ११० वखत ढीला तथा तग होता है, और खूनकू धक्का मारता है, तनदुरस्त शरीरमे ऊमरमुजब नाडीकी गति इसमुजब होती है.

उमर	एक मिटनमें नाडीकी चालकी गिणती
बालक गर्भस्थानमें होय तब,	१४० से १५०
तुरत जन्मे बालककी नाडी,	१३० सें १४०
पहिले वर्षमें,	११५ से १३०
दुसरे वर्षमें,	१०० सें ११५
तीसरे वर्षमें,	९५ से १०५
४ सें ७ वर्षतक,	९० सें १००
७ से १४ वर्षतक	८० सें ९० तक

१४ से २१ वर्पतक	७५ सें ८५ तक
२१ से ५० वर्पतक	७० सें ७५ तक
बुढापेमें	७५ सें ८० तक

नाडी ग्यानमें समझनेवाली वातें.

हमारे शास्त्रोंमे आधुनिक ग्रथोंमें नाडीका हिसाव पलोंपर लिखा है, उस हिसावसें इस हिसावमें थोडासा फरक है, ये हिसाव हमने जो लिखा है, सो विद्वान डाकतरोंका निश्चय किया भया हैं, वहोत प्राचीन ग्रथोंमे नाडी परिक्षा देखणेमे नही आई ये परीक्षा पीछेसें देसी वैद्योंने बुध्दिद्वारा निकाली है, वाद यूरोपियोनें पूर्वोक्त हिसाव लगाया है, तोभी जुदी २ जाति और स्थितीकू लेकर उसमेंभी फरक पडता है, ऊपरके कोठेमे तनदुरस्त वडे आदमीकी नाडीकी चाल एक मिनटमें ७० सें ७५ तक वताई है, लेकिन् इतनीही ऊमरकी तनदुरस्त औरतकी नाडीकी चाल धीमी होती है, पुरुपसें दसवारे चाल कम होती है २ अदमी खडा होता है, उसकरके वैठेकी चाल धीरी होती है, नींदमें इससेभी जादा धीरे चलती है, ३ फेर कसरत करते दोडते चलते खेंचलका काम करते नाडीकी चाल वढ जाती है, ४ फेर नाडी दोनों हाथोंकी देखणी किसी वखत एक हाथकी धोरीनस अपणी हमेसकी जगे छोडके हाथके पीछाडीकी तरफसें अगूठेके नीचेके साधेके आगे जाती है, उसकरके नाडी देखणेवालेके हाथ नहीं लगती तव देखणेवाला घवराता है, लेकिन् जो वदनमें खून फिरता होगा तो उस हाथकी नाडी हाथ नहीं लगी तो दुसरे हाथकी जरूर हाथ लगेगी इसवास्ते दोनों हाथकी नाडी देखणी ५ हाथपर या हाथके पोंचेपर कोइ पट्टा या डोरी या वाजुवध वधाभया होय तो नाडीकी वरावर मालम नहीं पडती वाधणेसें धोरी नसमें खून वरावर आगे चल नहीं सकता इसवास्ते वधन खोल फेर नाडी देखणी, हाथ सिर नीचे रखकर सूता होय तो हाथ निकालकर पीछे नाडी देखणी ६ डरोकड अदमी डरसें या डाकदरकू देख डर जाता है, तव नाडी जलदी चलने लगती है, इसवास्ते ऐसे अदमीकू दम दिलासासें दिल ठहराकर अथवा वातोंमें लगाकर फेर नाडी देखणेसें दुरस्त नाडी मालम देगी ७ नाडी अदमीकू वैठाकर या सुलाकर देखणी, खेंचल करे भयेकी, रस्ते चलके तुरत आयेभयेकी थोडी देर वैठणे देकर पीछे नाडी देखणी ८ वहोत खूनवाले अदमीकी नाडी वहोत जलदी और जोरसे चलती है, ९ फजरसें सांझकी नाडी धीमी चलती है, १० भोजन कियेवाद नाडीका जोर वढता है, तैसें सराप वा तमाखू वगेरे मादक और उत्तेजक वस्तु खाये पीछे नाडीकी चाल वढती है, इसतरे तनदुरस्त अदमियोंकी नाडीभी जुदी २ स्थितिमें और जुदी २ वखतमें फेरफार मालम पडता है, इसवास्ते वेमारोकी नाडीमें फेरफार होणा क्या ताजव है, ये नव वातोंकों ध्यानमें रखणा चाहिये

देशी वैद्यकशास्त्रोंमे नाडीपरिक्षा इसतरे लिखी है, अंगुठेके पास तीन अंगली बराबर धरणेसें पहली ऊपर अगूठेपास अगलीं नीचे वायुकी नाडी चलती है,दुसरी बिचली अंगली नीचे पित्तकी, तीसरी अंगलीके नीचे कफकी, चरक सुश्रुत ब्राह्मणोके बनाये प्राचीन ग्रथमें नाडीपरिक्षा बिलकुल नहीं लिखी हैं, जैन वणिये महाविद्वान वागभट्टनेंभी नाडी परिक्षाबाबत कुछभी नहीं लिखा श्रीमज्जैनाचार्य हेमचंद्रने आयुज्ञानार्णवमें हर्षकीर्तिसूरीने योगचिंतामणीमें इत्यादि ग्रंथोमें नाडीपरिक्षा लिखी है, सो हम इहा प्रकाश करते हैं

(१) वायुकी नाडी साप तथा जोककी तरे वांकी टेढी चलती है.
(२) पित्तकी नाडी कउआ या मेंडककीतरे कूदती सीघ्र चलती है.
(३) कफकी नाडी हस कबूतर मोर मुरगेकीतरे धीरे २ चलती है.
(४) वाय पित्तकी नाडी सांपकीतरे वांकी मेंडककीतरे फदकती चलती है
(५) वात कफकी नाडी सांपकीतरे टेढी हंसकीतरे धीरे चलती है.
(६) पित्त कफकी नाडी कउएकीतरे कूदती मोरकीतरे मद चलती है.
(७) सन्निपातकी नाडी लकडी वहरणेकी करवतकीतरे यातीतर पक्षीकीतरे नाडी चलती २ अटके फेर चले फेर अटके अथवा दो तीन कुदका मार फेर अटके वो त्रिदोष सन्निपातकी नाडी समझणी ॥

(८) विशेष विगत) धीरी पडकर पीछी सरसर चलणे लगे वो दो दोषकी नाडी जाननी जो नाडी अपणा स्थान छोडे जो नाडी ठहर २ कर चले तथा जो नाडी बहोत क्षीण तथा ठंढी पडे ये चार तरेकी नाडी प्राणघातक है, (२) बुखारकी नाडी गरम और बहोत जलद चलती है, (३) चिंता तथा डरकी नाडी मंद पड जाती है, (४) कामातुर और क्रोधातुरकी नाडी जलदी चलती है, (५) खून विगडा होय उसकी नाडी गरम तथा पत्थर जैसी जड भारी होती है, (६) आमके दोषकी नाडी बहोत भारी चलती है, (७) गर्भवतीकी नाडी गहरी पुष्ट और हलकी चलती है, (८) मदाग्नि, धातुक्षीण, नींदसें तुरत उठते, आलसु, सुखी, इन सबोकी नाडी स्थिर चलती है, (९) बहोत भूख लगेकी नाडी चचल चलती है, (१०) बहोत दस्त लगते होय जिसकी नाडी बहोत जलदी चलती है, (११) जीमे बाद नाडी धीमे चलती है, (१२) जो नाडी तूट २ कर चले क्षणमें धीरी क्षणमें जलदी चले बहोतही जलदी चले लक्कड जैसी करडी स्थिर और टेढी चले बहोत गरम चले अपणे ठिकाने चलती २ बध होजाय ये सबतरेकी नाडी प्राणनाशका चिन्ह दिखाणेवाली है, अब डाकटरोके मतसें नाडी परिक्षा दिखाते हैं ॥ केइयक देशी अजाण लोक तथा उठ पटांग वैद्य एसा कहते हैं, के डाकटर लोक नाडीका ग्यान नहीं जाणते और नाडी नहीं देखते ये सब बात

मूर्खताईकी है, डाकतर लोक नाडी देखते हैं, और उसपर कितनाक आधार रखते हैं, कितनेक तबीब नाडी परिक्षामें वहोत गहरे ऊतरते हैं, और नाडीपर वहोतसा आधार रख नाडीपरिक्षाके अनुभवसें कितनी एक बाते कहते है, सो मिल जाती है, देशी वैद्य नाडीके जुदे २ वेगोकू वायकी पित्तकी कफकी इन तीनोसें मिलीभई नांम धर रखा है, इसतरेसें डाकदर जलदी धीमी भरी हलकी सखत अनिमियत अतरिया ऐसे २ नाम दिये है, जुदे २ रोगमें जुदी २ नाडी चलती है, उसकी परिक्षाभी करते है, सो इसतरे (१ जलदी नाडी) तनदुरस्त स्थितिमें नाडीके वेगका प्रमाण आगेके कोठेमें लिखा है, तनदुरस्त अदमीकी पुख्त ऊमरकी नाडीकी चाल ७५ से ८५ तक होती है, लेकिन बेमारीमे बोचाल बढकर १०० से १५० तक बढजाती है, इसतरे नाडीका वेग वहोत बढता है, उसकू जलद नाडी कहते हैं, क्षयरोग लूलगणी और दुसरी वहोत निबलाईमें भी नाडी जलदी चलती है, झडपवाली नाडीकेसग हृदयका धवकारा वहोत जोरसे चलता है, नाडीकी चाल हृदयके धवकारोंपर विशेष आधार रखती है, जैसें २ नाडीकी चाल जलदी २ होती जाती है, तैसे २ रोगका जोर वहोत बढते जाता है, रोगीका हाल बिगडते जाता है, बुखारकी नाडी जलद अग गरम होता है, सादा बुखार अतरेवाला तैसे सन्निपातज्वर सखतसांधोंकादरद सखतखासी क्षय मगज फेफसा हृदय होजरी आतरा वगेरे मर्मस्थानकासोजा सखतमरोडा कलेजेकापकणा आंख तथा कानकापकणा प्रमेह और सखत गरमीकी टाकी इतने रोगोंमें चलती है २ धीमी नाडी) तनदुरस्त हालतमें जैसी नाडी चहिये उस करते मद चालसे चलणेवाली नाडीकू धीमी कहते हैं जैसे ठढ थकेला भूखेमरणेकारोग दिलगीरी उदासी मगजकी कितनीकबेमारी जैसेंके फेफरा (मिरगी) बेशुद्धि और तमाम रोगकी अतकालकी दसामें नाडी वहोत धीमे चलती है, (३) भरी नाडी) नाडी परिक्षामें अगलियोंकू जैसें वेग याने चाल मालम देती है, तैसे नाडीका वजन अथवा कदभी मालम देता है, ये कद अथवा वजन चहिये जिससे जादा बढता है, तब उसकू भरी नाडी अथवा वडी नाडी कहणेमे आती है, खूनके भरावमें तैसें ताकतवर अदमीके बुखार तथा बरममे नाडी भरी भई मालम देती है, भरी नाडीसें एसी हालत मालम देती है के, बदनमें खून पूरा और वहोत है, जैसें नदीमे जादा पाणी आणेसें पाणीका जोर बढता है, तैसे खूनके भरावमें नाडी भरीभई लगती है, ४ हलकी नाडी) थोडे खूनवाली नाडीकू छोटी या हलकी कहते हैं, अगलीके नीचे एसी नाडीका कद पतला याने हलका लगता है, कोईभी द्वारमें खून वहोत चला गया होय या जाता होय ऐसे रोगोंमें,तथा वहोतसे पुराणे रोगोंमें हैजेमें रोग गये पीछे रही निबलाईमे नाडी पतलीसी मालम देती है, इस नाडीपरसें एसा मालम होजाता है के खून इसके कम है या वहोत कम होगया है, खूनके वजनपरसें नाडीके

तीन चार वर्ग किये जाते हैं, भरीभई मध्यम छोटी पतली और बेमालम, खूनके विशेष जोरमे भरीभई, मध्यम खूनमें मध्यम, थोडे खूनमें छोटी पतली, हैजेके रोगमें खून बिलकुल चला जाकर नाडी) आंगलीके नीचे मुस्किलसे मालम पडे उसकूभी बे मालम नाडी कहते हैं, ५ सखतके नरम नाडी) फेर नाडीके सखत १ और नरम २ भेद होता है, जिस धोरी नसमें होकर खून वहता हैं, उस धोरी नसके अदरके पडदेकी तांतोंमें संकोचाणेकी शक्ति जादा होती है, तो नाडी सखत चलती है, और संकोचाणेकी शक्ति कम होती है, तो नाडी नरम चलती है, उसकी परिक्षा इसतरेसे है, नाडीपर तीन आंगली धरकर ऊपरकी तीसरी आंगलीसे नाडीकूं, दबाते जो बाकीके नीचेके दो आंगलीकों धडका लगे तो समझणाके नाडी सखत है, और दोनो अंगलियोंकों धडका नहीं लगे तो नाडी पोची नरम है, एसा समझणा (६) अनिमियत नाडी) नाडीकी प्रमाण मुजब चालमें उसके दो ठणकेके बीचमें एक सदस तफावत चलता चला आवे तो नियमित याने कायदेसर चलणेवाली नाडी जाणनी,लेकिन् जिस वखत कोइ बेमारी होय और नाडी बे कायदे चले एक ठणका जलदी आवे और दुसरा जादा देर ठहरके आवे उस नाडीकू अनियमित समझणी, एसी नाडी चले तब इतने रोगोकी सका होती है, रिदयका दरद फेफसेका रोग, मगजका रोग, सन्निपातज्वर, सुवारोग, वदनका सखत सडणा, और कोइभी बैमारीकी सखत भयंकर स्थिति (७) अंतरिया नाडी) नाडीके दो तीन ठणका होकर बीचमें एकाध ठणके जितनी नागा पडे याने ठणका लगेही नहीं फेर ऊपरापर दो तीन ठवका होकर फेर इसीतरे नाडी बंध पडे और चले वो अतरिया नाडी कहलाती हैं, रिदयकी बेमारीमें जब खून बराबर फिरता नही तब बडी धोरी नस चोडी हो जाती है, और मगजका कोइभी भाग बिगडता है, तब एसी नाडी चलती है, डाकटरलोक नाडी परिक्षामें तीन बात ध्यानमें रखते हैं, १ नाडीकी चाल जलदी या धीमी २ नाडीका कद बडा या छोटा २ नाडी सखत है,या नरम, खूनवाले जोराबर अदमीके बुखारमे मगजके सोजेमें कलेजेके रोगमे और गठिया वायु वगेरे रोगोमे जलदी बहोत बडी और सखत नाडी देखणेमे आवेगी, एसी नाडी बहोत देर चले तो जांनकू जोखम बढती जाती है, जो बुखारके रोगमें एसी नाडी बहोतदिन चले तो रोगीकी आसा थोडी रहती है, जो नाडीकी चाल धीरे २ कमपडे तो सुधरणेकी आशारहे फस्त खोलणेसें जोकलगाणे सें अथवा अपणे आपही खूनका रस्ताहोकर बधाभया खून निकल जाताहे तो नाडी सुधर जातीहे ताकत वर या अदमीकू बुखार आताहे अथवा शरीरपर कोइभी जगे सूजन आती है तब जलदी या छोटी नरम नाडी चलतीहै क्योंके खून कम होताहे आंतरेमें सोजा होता-है, तथा पेटके पडदेपर सोजाहोता है, तब जलदी छोटी सखत नाडी चलतीहै ये नाडी छोटी महीन लेकिन् बहोत सखत होतीहै, आंगलीकूं तारजेसी महीन और करडी ल-

गती हे, एसी नाडीभी खूनका जो रवताती है, नाडीके बावत लोकोंका विचार फकत नाडी देखणेसे सब रोगोंकी संपूर्ण परीक्षा हो सकती है, एसा लोकोंके मनमें जो हद उपरांत विश्वास बैठगया है, उसमे वो लोक ठगाये जातेहै क्योंके नाडीकी बावत झूटा फाफा मारणे वाले वैद्य और हकीम अज्ञान लोकोकू वचनजालमे फसाते हैं, वहोतसी वखत नाडी परिक्षाकी बावत अदभुत और असभववातें सुणते हैं, एसी वातोंमें सच्च थोडा और झुट वहोत होताहै, इस ग्रथमें जो जो नाडी परीक्षाका विवरण लिखा है सो नाडी ज्ञानके सच्चे अभ्यासियोंकों जरूर मिलसकता है, वहोत अभ्यास और अनुभवसें नाडीका वारीक विचार और रोगपरिक्षाकी कितनीक कूचिया मिलसकती है लेकिन् ये वाते तदन झूठ हे के रोगी छ महीने पहली फलाणा साग खाया था इत्यादि तो नाडी परिक्षामें सब गप्पें चलती है, सो मानणे योग्य नहीं है कितनेक हकीमसाहिबोंने और वैद्योनें नाडीकी हदउपरात महिमा वधाई है, और असभवित अणघडगप्योंकू लोकोंके दिलमे जमा दियाहै, एसे भोले लोकोंका रोग मिटणामुसकिल है, अथवा देरी लगती है; तव एसें मूर्खलोक डाकटरोंपर अपणी वेकूवी धर देते हैं के डाकतरोकू नाडी परिक्षाका ज्ञान नहीं है, और पीछे देशी वैद्यके पास जाकर कहताहै के देखो हमारी नाडी हमारे वदनमें क्या रोगहे, वैद्य उसीकूही हम समझते हे के जोकी नाडीसें रोग कहदे, तव सत्यवादी वैद्य तो सत्य कह देताहै के नाडी परसें तुमारी कितनीक प्रकृतीकी वात तो हम समझलेंगे लेकिन् तुम तुमारी अवलसें आखरी तक जो जो हकीगत वीती है, और हे सोकहो क्या कारणसे रोगभया कितने दिन भया क्या क्या दवाली क्या क्या पथ्य तुमने खाया पीया इस परसें हम परीक्षा रोगकी समझ सकेंगे विद्वान और चतुर वैद्य नाडी देखकर रोगीके शरीरकी स्थितिका कितना एक अनुमान वाध सकताहै वो अनुमान विशेष कर सच्चाभी निकलताहै, लेकिन नाडी परिक्षापर अतिशय श्रद्धा रखणेवाले अज्ञान लोकोंके सामने अपणी परिक्षा देकर अपणी कीमत नहीं कराणे चाहते लेकिन धूर्त चालाक पाखडीवैद्य जोहे सो नाडी देखकर वडा आडवर रचकर दोय वात वायूकी दोय वात पित्तकी दोय वात कफकी करते भये इसतरे पाच पच्चीस वातोंकी गप्पें इधर उधर की हकालते हैं, तव उसमेंकी थोडी वहोत वात रोगीके वीतक अहवालोसें मिलजाती है तव विचारे भोले अति यकीन लाणेवाले एसे ठगोरोसें ठगाते हैं, और मनमे जाणते हैं वस ससारमें इनके जोडेका कोई हकीम नहीं हे तव विद्वानवैद्य और डाकतरोंकों छोडके ढोंगी उठ पटाग वैद्योंके जालमें फसजातेहैं नाडी ये क्या चीज है और कैसें पैदा भईहे, और उसके आधारसें कितनी वातोंकी खवर पडती है, इयवात तो हमने इस ग्रथमें वहोतही विस्तारसें लिखीहै सो वाचणे वालोंकी खातरी होगी, रोग पेटमेंहे, शिरमेंहै नाकमेंहै के कानमेंहै, इत्यादि वेमारी

नाडी देखणेसें कभी मालम पडेगी नहीं हां अलबत अनुभवी उपचारक रोगीकी नाडी उसका चहरा आंख चेष्टा और वातचीत ऊपरसें रोगीकी कितनीक हालतकू ग्रहण करसकताहै और रोगीकी विशेप हकीगत सुणे विगर भी वहारकी निगेदास्तीसें रोगी का मुख्य स्वरूप कह देतेहें, लेकिन् उस परसें एसा नहीं समझणाके सव परिक्षा इनोनें नाडी परसेही करीहै और हमेसा ये परिक्षा सचीही होती है, इस वास्ते जो लोक नाडी परिक्षापर हद उपरांत विश्वास रखकर ठगाते हैं उण लोकोकू हमारा इतनाही कहणाहै के फक्त नाडीपरीक्षा पर रोगकी कभी निश्चय भई न होयगी, इस वास्ते विद्वान वैद्य या डाकटर पर विश्वास रखकर यथार्थ हुकमकी तामील करो इतना फेर कहणाहै कितनेक वैद्य और डाकदर रोगीकी प्रकृतीपर बहोत थोडा खयाल करकर रोगका बाहरका चिन्ह और हकीगतपर विशेप आधार रखकर इलाज किया करते हैं लेकिन इस तरे रोग अछा होणा मुसकलहै कारण वाजे रोगी एसे होतेहें सो अपणे वदनकी पूरी हकीगत नहीं जाणते और नहीं वतासकते फेर बेशुद्धि और सन्निपात जेसे महाभयंकर रोग उन्माद मुर्च्छा मृगी आदिमें रोगीके मुके कहे लक्षणोसे रोगकी हकीगत कभी पूरी मिलनही सकती उसवखत नाडी ऊपर जादा आधार रखणा होताहै रोगीकी प्रकृती पर इलाजका बहोत आसरा लेणा होताहै नाडी वगैरेवहोत तरेसे प्रकृतीकी दुसरी तरेसेंभी परिक्षा होती है, डाकटर लोक भुगली लेकर रिदयका धडका देखते हैं, वोभी नाडी परिक्षाही है, क्योंके हाथके पोंचेपर जो ठवका है, सो रियदका धडका और खूनके प्रवाहका आखरी धडका है, वदनमे जिस २ जगे धोरीनसमें खून उछलता है, उहां अगली रखणेसे नाडी परिक्षा हो सकती है, लेकिन् खूनके फिरणेमें कुछभी फेरफार होता है, तो पहली धोरी नसोके अतभागकू खूनका पोपण मिलणा बध होता है, और हाथकी नाडी ये धोरी नसका छेडा होणेसें तथा पोंचे परकी नाडीका धवकारा अंगलीकू प्रगट मालम देता है इसवास्तेही हमारे पूर्वाचार्योंने नाडी परिक्षा करणेकू पोंचे परकी ठीक २ जगे ठहराई है, पावमे गिरियेके पासभीयेही नाडी देखी जाती है, उहाभी धोरीनसका छेडा है, औरतका वाया अग तथा हाथकी नाडी देखी जाती है, उसका कारण एसा है, नाभीपर कछपाकारक मलचक्र है, सव देहधारी अदमीयोंके सो कछपाकार औरतके तो उपर मूवाला है, और पुरुपके नीचे मूवाला इसवास्ते वो नाडी वांये आंगमे औरतके हाथमें प्राप्त है, पुरुपके दहणेमे वाकी तो दोनों हाथोंमें धोरीनसका छेडा है, और दोनु पावोमें है वांया प्रधानभाग औरतका ऊपर लिखे कारणसें है, इस वास्ते वामा नाम स्त्रीका सस्कृतवालोंनें धरा है ॥

(व) त्वचा-चमडीकी परीक्षा.

चमडीके स्पर्श करणेमें वदनकी गरमी ठंढी तथा पसीना वगैरेकी परीक्षा होती है,

वायुके रोगवालेकी चमडी ठंढी, पित्त रोगवालेकी चमडी गरम होती है, और कफ रोगवालेकी चमडी भीगी होती है, लेकिन् सब जगे एसा निश्चय नहीं है, तोभी प्राये ए लक्षण होते है,(२ गरम चमडी) पित्त और तमाम तरेके बुखारमें चमडी गरम होती है, चमडीकी गरमाससेभी बुखारकी गरमी मालम होजातीहै, लेकिन् अतर वेगीज्वरमे बुखार अदर होता है, बाहरकी चमडी बहोत गरम नहीं होती मध्यसर होती है, उस अवस्थामें चमडीकी परिक्षामें वैद्य ठगा जाता है, उसजगे नाडी परिक्षा या थरमोमीटर अदरकी गरमीकू बता सकती है, बहोतसी बखत चमडी जलती बुखारजेसा मालम देता है, और अदर बुखार नहीं होता (३ ठढी चमडी) कितनेक रोगोमे वदनकी चमडी ठढी पड जाती है, बुखार ऊतर गयेबाद नाताकतीमें दुसरी बेमारीकी निबलाईमे हैजेमे बहोतसे पुराने रोगोमें चमडी ठढी पड जाती है, सखत बेमारीमें वदन ठढा पड जाय तो पूरी जोखम समझणा (४ सूकी चमडी) चमडीके छेदोमेंसें हमेसा पसीना निकलता है, उससें चमडी नरम रहती है, लेकिन् कितनेक रोगोमें पसीना बद होजाता है, तब चमडी सूकी और खरखरी होजाती है, बुखारकी सरुआतमें पसीना बध होजाता है, इसवास्ते बुखारवालेकी तथा वादीके रोगवालेकी चमडी सूकी होजाती है, (५ भीगी चमडी) चहिये जिससें जादा पसीना आणेसें चमडी भीगी रहती है, वो भी रोगकी निशाणी है, कितनेक रोगोमें चमडी गरम और भीगी होती है, और कितनेक रोगोमे ठढी और भीगी होती है इसमे रोगीकू पुरा डर है, सधिवात (गठिया) में चमडी गरम और भीगी होती है, और हैजेमे ठढी और भीगी होती है, बहोत ठढा और भीगा अग निबलाईमें जोखम जताता है, रातकू पसीना होय चमडी भीगी रहे, और नाताकती बढती जाय तो क्षयकी निशाणी समझ जलदी सावचेत होणा चहिये

(क) थरमोमीटर.

वदनमें गरमी कितनी है, उसका चोकस माफ थरमोमीटरसें हो सकता है, थरमोमीटर काचकी नलीमें नीचे पारेकी भरा गोल पपोटा (काचका गोल बल्ब) होता है, इस पारेवाले बल्बकू मूमें जीभ नीचे या बगलमें पाच मिनटतक रखकर पीछे बाहर निकालकर देखनेसें उसके अदरका पारा वदनकी गरमीमें उपर चढता है, सरदीमे नीचे उतरता है, अछे तनदुरस्त अदमीके वदनकी गरमी ९८ सें १०० डिग्रीके बीचमे रहती है, बहुतोंके वदनमें मध्यम गरमी ९८ सें ९९ होती है, और बहारकी गरमी अथवा खेचलसें उसमें कुछेक बढोतरी होती है, तब १०० तक चढती है, नींदमें और सपूर्ण शांतिकी बखतमें एकाध डिग्री गरमी कम होती है रोगमे वदनकी गरमी विशेष चढा उतार होती है, और वदनकी स्वाभाविक गरमीसें पारा जादा उतर

जाता है, या चढ जाता है, सादे बुखारमे वो पारा १०१ सें १०२ तक चढता है, सखत बुखारमें १०४ तक चढता है, और जादा भयकर बुखारमें १०५ आखर १०६ तक चढता है, वदनके कोइभी मर्मस्थानमें सोजन और दाह होय तव बुखारकी गरमी इससे बढकर १०८ अथवा इससेंभी ऊपर चढती है, तव रोगी बचता नहीं स्वाभाविक गरमीसें दो डिग्री गरमी वढती है, उसकरके जितना डर रखनेमें आवे उससें एक डिग्री गरमी जव कम होती है, उसमे जादा डर है, हैजेमें जव वदन आखर ठंढा पड जाता है, तव शरीरकी गरमी घटकर आखर ७७ डिग्री जाकर ठहरती है, तव रोगीका बचना मुस्किल है, १०४ डिग्रीके अदर बुखार होता है, उहांतक तोडर नहीं है, लेकिन उसके आगे वढती है, तव समझ लेणा रोग भयकर रूप पकडा है, एसा समझ वहोत जलदी वडा इलाजकरणा सहज दवासें आराम होयगा नहीं गफलत कियाके मर जायगा स्वाभाविक गरमीसें एकडिग्री गरमी बढती है तो नाडीका स्वाभाविक ठवकोंसे १० ठवका वढता है, एक डिग्री वढणेसें दस २ ठवका नाडीका वढणा होता है, ये क्रम समझणा, जिस अदमीकी नाडी तनदुरस्त हालतमे एक मिनटमे ७५ ठवका खाती होय उसकी नाडीमे एक डिग्री गरमी बढनेसें ८५ ठबका होता है, दो डिग्री वधणेसे बुखारमें एक मिनटमें ९५ वखत धडका होता है, और इस मुजबही दरएक डिग्री गरमीके बढणेसे साथ १० ठवका वढता है, ये सामान्य गिणती समझणी, वगलभीजी होती है, अथवा हवा या भीगी जमी होती है, तो थरमोमिटरसें वदनकी गरमी बराबर परखी नहीं जाती, इसवास्ते वगलका पसीना पूछकर फेर वगलमे थरमोमीटर देकर दवाके रखणा पांच मिटतक फेर देखणा, थरमोमीटरसें वदनकी गरमी आंखोंके सामने दिखती है, सो सव लोक देख सकते हैं, एसी नाडी परिक्षासे प्रत्यक्षता नहीं ये काम हरकोइ अदमीभी कर सकता है, इसवास्ते वहोतसे भाग्यवान इस थरमोमीटरकू घरमे नाडीपरीक्षाकेवास्ते रखते हैं, दो पैसेका काम है, लेकिन बुद्धवानीके हुन्नरसे रुपे पांचतक युरोपी वेपारी लेते है

(ड) स्टेथो स्कोप.

इस भूंगलीसें फेफसा श्वासनली रिदय तथा पासलीमें चलती क्रियाकी खवर होती है, इहां लिखे जिसकरके अनुभवी डाकतरोंके पाससे रहके सीखणेसें तथा आप अपणी बुद्धिके वरतावसें देखणेसें इस भुगलीसे देखणेका ज्ञान आ सकता है, इसवास्ते इहां जादा लिखणेकी जरूरत नहीं.

दर्शनपरिक्षा.

आंखसें देखकर रोगीकी परिक्षा करनेमें आवे उसकू इहा दर्शन परीक्षाके नामसें लिखा है, इस परीक्षामे (अ) जीभ याने जिन्हा (आ) आंख नेत्र (इ) चहरा

रूप (ई) त्वचा चमडी (उ) मूत्र याने पैसाव (ऊ) दस्त मळ इतनी परिक्षा ली गई है

(अ) जीभपरीक्षा

जीभकी हालतसे गलेकी होजरीकी और आंतरेके हालतकी खबर होती है, क्योंके जीभके ऊपरका बारीक पुडत गला होजरी और आतरेके अदरका बारीक पुडतके साथ जुडा भया और एक सदस मिला भया है, जीभपरसें इसके अलावाभी कितनेक रोगोंका विचार बाध सकते है, तनदुरस्त हालतमें जीभ भीजी अछी और अणी उपरसे जरा लाल होती है, गीलास, रग, और जीभके ऊपरसें मैलपर, रोगकी परीक्षा हो सकती है (१) गीली भीगी जीभ) अच्छी हालतमें जीभ थूकसेभी भीजी रहती है, बुखारमें जीभ सूकणे लगती है, इसवास्ते जीभ भीजी होय तो समझणा बुखार नहीं है, कोईभी रोगमें जीभ सूककर फेर पीछी भीजणी सरू होय तो समझणा रोग अछा होनेपर है, जल पीनेसें एक वेर गीली होती है, लेकिन जो बुखार होता है तो तुरत फेर सूक जाती है (२) सूकी जीभ)कितनेक रोगोमें वदनमें रस चहिये इतना पैदा नहीं होता उसही मुजब थूक थोडा पैदा होता है, इससेंही जीभ सूक जाती है, और रोगीकू भी जीभ सूकी मालम देती है, तब सन मू सूक गया एसा रोगी कहता है, एसी जीभपर अगली लगाणेसें और करडी मालम देती है, बुखार शीतला ओरी और दुसरे चेपी बुखारोमे होजरी तथा आतरोके रोगमें और घहोत जोरके बुखारमें जीभ सूक जाती है, ज्यों बुखार जादा त्यों जीभ जादा सूकती हे, करडी भई जीभभी मौतकी निशाणी है, (३) (लाल जीभ) जीभकी अणी तथा कोरपर हमेसाजरा लाल होती है, लेकिन जो सब जीभ लाल अथवा जादा भाग लाल होय तो शीतला मूका पकणा मू आणा पेटका सोजा और सोमलका जहर इतने रोगका अनुमान होता है, बुखारमे जीभ अणीपर तैसे दोनों तरफ कोरपर जादा लाल होती है, (४) फीकी जीभ) वदनमेसें बहोत खून निकले पीछै अथवा बुखार तिल्ली और एसीही दुसरी बेमारीमे वदनमेंसे खूनके रक्तकण कम होणेमे जैसे चहरा तथा चमडी फीकी पडती है, तैसें जीभभी सुपेद और फीकी फक्कर पड जाती हे, (५) मैली जीभ)रोगोमें जीभपर सुपेद थर आती है, उसकू मैली जीभ कहते है, बहोत सखत बुखारमें सखत सधिवातमें कलेजेके रोगमें और मगजके रोगमे दस्तकी कबजीमें जीभ मैली होती है, जीभकी अणी और दोनों तरफकी कोरसें जीभका मैल कम होणा सरू होय तो समझणा के रोग कम होणा सरू भया है, लेगिन जो जीभके पिछले भाग तरफसें मैलका थर कम होणा सरू होय तो जाणनाकी रोग धीरे २ घटेगा घटणा सरू भया है, जीभके ऊपरका थर जलदी साफ हो जाय और जीभका वो भाग लाल चिलकता और चीरा २ फटा

दीखे तो समझणाके आंतरेमें किसी जगे सडा है, या जखम भया है, ये जीभका फेरफार खराब निसाणी जाहिर करतीहै, बहोत दिनोके बुखारमें जीभका थरभूरा अथवा तमाखूके रंगका होताहै, और जीभके ऊपर बीचेमें चीरा पडताहै. वोभीवडे डरकी बेमारी का निशाणहै पित्तके रोगमे जीभपर पीला मैलजमताहै (६) कालीजीभ) कितनेक रोगोंमे जीभकारग जामूंनीरग या काले रगकी होती है दम श्वास और फेफसेके साथ सवध रखणेवाले खासी वगैरे रोगोंमे जब दमलेणेमें अडचन पडतीहै, तब खून बराबर साफ होता नही इस करके जीभ काली झांखी अथवा आसमानी रगकी होतीहै, फेर कितनेक दुसरे रोगोंमें जब जीभ काले रगकी होतीहै तब दरदीके बचणेकी आसा थोंडी रहती है (७) धूजती जीभ) सन्निपातमे मगजके भयकर रोगमे और दुसरेभी कितनेक सखत रोगोंमें जीभ धूजा करतीहै, रोगीके अखत्यारमें नहीं रहती वो बाहर निकलताहै, तब भी धूजतीहै, एसी धूजती जीभ अत्यंत निबलाई और डरकी निशाणीहै (८) सामान्य परीक्षा) बहोतसे रोगोकी परीक्षा करणेमे जीभ दर्पणरूपहै, जीभपर सुपेद मजबूत थर याने मैल जमा होय तो पाचन शक्तिमें गडबड समझणी जाडी और सूजीभई और दांतोके नीचे आणेसे दांतोकी निसाणी मडीरहै, एसी जीभ होजरी तथा मगज तंतुओमे दाह होय तब होतीहै, जीभपर जाडा पीले रगका थर होय तो पित्तविकार जांणना, काला झांखा भूरे रंगका पुडत खराब बुखार होताहै तब होता है, सुपेदथर साधारण बुखारकी निशाणी है, सूकी थरवाली काली और धूजती जीभ इकवीस दिनोंका भयकर ज्वर सन्निपातकी निशाणी है, एक तरफ लोचा करती जीभ आधी जीभमे वादी आणेकी निशाणी है, जब जीभ बहोत मुसकिलसें नीठ २ बाहर निकले और रोगीके इच्छामुजब अदर नहीं जावे तो समझणा रोगी बहोत नाताकत और लिवाईजगया है, बहोत भारी रोग होय उसमें फेर जीभ धूजणे लगेतो बडा डर समझणा, हेजा तथा होजरी ओर फेफसेकी वैमारीमें जब जीभ सीसेके रगजेसी झाखी दिखाइ देवे तो खराब चिन्ह समझणा, जरा असमानी रगकी जीभ दिखाई देवे तो समझणा के खूनकी चालमें कुछ अटकाव भयाहै, सू पकजाय और जीभ सीसाके रग जेसी होजाय तो नजीक मृत्युकी निशाणीहै वायूके दोपवाली जीभ खरदरी फटी भई तथा पीली होतीहै पित्तके दोपवाली जीभ कुछ इकलाल और कालास पडती होतीहै, कफ के दोप वाली जीभ सुपेद भीजी और नरमहोतीहै, त्रिदोपवाली जीभ कांटेवाली और सूकी होतीहै, मृत्युकालकी जीभ खरखरी अदरसे वधीभई फेणवाली लक्कडजेसी करडी और गतिरहित होजातीहै देशी वैद्यक शास्त्रसें इस ग्रथमे जादा जिह्वापरीक्षा लिखीहै.

(आ) नेत्रपरीक्षा

रोगी की आंखोसें भी रोगकी परीक्षा होतीहै, वायूके दोषवाले नेत्र लूखे निस्तेज धूम्रवर्ण (धूयेके जेसें धूसरारग) चचलतथा दाह वाली होतीहै, पित्तके दोषवाले नेत्र पीले दाहवाले और चराकके तेजकू नहि सके ऐसे होतेहैं, कफके दोषवाले नेत्र भीगे सुपेद नरम मद और तेज विनाकी होतीहै तद्रा याने मीटवाली आखकाली और जड (टमकारीजती नहीं) एसी होतीहै त्रिदोष सन्निपातकी आख भयकर लाल जरा-काली और मिंचीभई होतीहै

(इ) रूपपरीक्षा

चहरा देखणेसें कितनेक रोगोकी परिक्षा होसकतीहै, फजरमे रोगीका चहरा तेज रहित विचित्र और झाखा के काला दिखता होय तो वादीका रोग समझणा, जो चह-रा पीला मद और सूजाभया दीखे तो पित्त रोग समझणा, जो चहरा मद तेलिया ते-लके जेसा चिकणास वाला दीखेतो कफका रोग समझणा, कुदरती निरोगका चहरा शात स्थिर और चैनवाला होताहै, रोगसें चेहरा फिर जाताहे तरे २ का स्वरूप दिखताहे रातदिनके अभ्यासी चहरेपरसें रोगपरखसकते है हर कोई नही परख सकता (१) फिकरवद्चहरा सखतबुखार वडे भयकर रोगोंकी सरुआतमें हिचकी तथा खेंचता णके रोगोंमे दम तथा श्वासके रोगमें कलेजे और फेफसेके रोगमें इत्यादि रोगोमें चेहरा चींतातुर रहता है, (२) फीका चहरा) वहोत खून जाणेसे जीर्ण ज्वरसें ति-ल्लीकी वेमारीसें वहोत निवलाईसें वहोत फिकरसें डरसें धास्तीसें इत्यादि कारणोसें खूनके अदरके लालरजकण कम होणेसे एसाचहराहो जाताहै औरतोंके ऋतुधर्ममें जादा खून जाणेसें अथवा जन्मसें नाताकत वधेकी औरतकू वालक चूग २ कर खून कम करदेताहै, पोषण पूरा मिलता नहीं एसी औरतोंका भी चहरा फीकाहोजाता हे, (३) (लाल चहरा)सखत बुखारमे मगज के सोजेमे लूलगे तव आखेंतो खून जेसीलालगालपर गुलाबी रग और उपसे भये मालम देतेहें वदनका चहरा लालतथ समझणाके खूनका शिरके तरफ तथा मगजमें जादा जोस चढा है, (४) फूलाभया चहरा) वहोत निवलाई जीर्णज्वर जलदर वगेरे रोगोंमे चहरा फूलाभया याने थोथरवाला होता है, आखकी ऊपरकी चमडी चढ जाती हे, गालमें आगलीसें दवानेसें खड्डा गिरता है, चहरा सूजा भया दिखता है, (५) अदर खुड्डा वैठाभया चहरा) जैसें दरखतके डालीकेपत्ते तथा छिलका छीलेवाद डाली सूडी भई मालम देती हे, इसतरे कितनेक भयकर रोगोकी आखरी अवस्थामें रोगीका चहरा एसा होजाता है, हेंजेमें मरणेकी वखत जो सिकल वनती हे, यो चहरा अथवा इस तरेका चहरा होता हे, निलाटमें सल आखके डोले अदर घुसेभये आखमें खड्डे पडे भये नाक गणीदार भयाभया कनपटी आगे खड्डे पडे

भये गाल बैठेभये हाडोंपर सल पडे भये चहेरेका रंग आसमानी एसा लक्षण दिखाई देवे तो रोगीका जीणा मुस्किल समझणा.

(इ) त्वचापरीक्षा.

जैसें चमडीके स्पर्श करनेसें गरमी ठढीकी परिक्षा हो सकती है, तैसें चमडीके ऊपरके रगसे तैसे उसपर कितनेक चठे गाठो वगेरे निकलती है, उसपरसे वदनका कितनाक दोषोंका अनुमान होसकता है, शीतला औरी अचपडा वगेरे रोगोमें पहले बुखार आता है, इसवास्ते उसके अणसमझपणेसे उस बुखारकू पहले सादासा बुखार लोक समझते है, लेकिन चमडींका रगलाल फेर उस चमडीपर महीन २ दाणे उन रोगोंकी परिक्षा बता सकती है, अछीतरे देखणा चहिये वदनपर किसीभी जगे ललाई होयतो पित्तके बिगाडसे समझणा, जिसके चमडीका रग काला पडता जाय उसके शरीरमें वायूका दोष समझणा जिसके वदनका रंग पीला पडता जावै सो पित्तका दोष समझणा गोरा सुपेद पडता जावै उसके वदनमें कफका दोष समझणा जिसके शरीरके चमडीका रग बिलकुल लूखा होकर अंदरमें चीरा सा दिखाई देवे तो समझना खून विगड गया या तपाभया है, लोक उसकू गरमी कहते हैं ‘चमडीतक खून जब नही पोहचता है, तब गरम तथा लूखी पड जाती है, चमडीका रग तावेके रग जैसा तामडा होय तो समझणा रगतपित्त तथा वातरक्तका रोग है, चमडीपर काले चठे और धब्बा पडे तो समझणा केइसकू ताजा और अछा खुराक नहिं मिला है, जिससें खून विगडा है, इसतरे एकतरेका चठा और विस्फोटक होय तो समझणाके इसकू गरमीका रोग है, हैजेकी दुष्ट बेमारीमे चमडीका तथा नखका रग आसमानी काला पड जाता है, और वो मरणेकी निशाणी है, इसतरे चमडीसें कितनेक रोगोंकी परिक्षा होती है

(उ) मूत्रपरीक्षा

तन दुरस्त अदमीके पेशाबकारग बराबर सूके घासके रंग जेसा होताहे जेसें घाससूका नही हरा, नहीं पीला, नही लाल, नहीं काला, नहीं सुपेद, लेकिन् इन सब रगोकी छाया वाला होताहे, वेसाही निरोग आदमी कापेसाब समझणा पेसावसे बहोत रोगोकी परिक्षा होसकती है, पैसाब ये खूनमेंसे छुटा निकलाभया निरुपयोगी प्रवाहीहे खूनकू शूद्धकरणेवास्ते मूत्राशय (किडनी) पेशाबकू खूनमेसे खींच लेतीहे, और उसकरके जो कोइ बेमारी भई होयतो खूनका कितनाक उपयोगी भागपेसाबमें जाताहै, इसवास्ते पेशाबसें बहोत रोगोंकी परिक्षा होसकती है, चिंतामणी शास्रसें हमने अष्टविधपरिक्षा इहा लिखीहै, डाकतरी ग्रथोसे डाकदरोंकी, विशेष बातें हमारे अनुभवीहै, (१) वादीके दोषवाला रोगीके मूत बहोत और वादलीके रगजेसा होताहै, (२) पित्त दोषवाला रोगीका मूत लाल कसूंभेका रंग जेसा अथवा केसूलेके फूलके रग जेसा

पीला गरम तेल जेसा तथा थोडा होताहै, (३) कफके रोगीका मूत ठंढा तलावके पाणी जेसा सपेद फेणवाला तथा चिकणा होताहै (४) मिलेभये दोषोंवाला पेसाब मिलेभये रगका होताहै (५) सन्निपात रोगमें पेसाब झांखा काला होताहै, (६) खूनके कोपवाला मुत्र चिकणा गरम और लाल होताहै, (७) वातपित्तके दोष वाला गहरा लाल अथवा किरमची रगका तथा गरम होताहै (८) वात कफदोष वालेका मूत सुपेद तथा बुदबुदाकारहोताहै (९) कफपित्तवाले रोगीका मूत्र लाल लेकिन् गुमला होताहै, (१०) अजीर्ण रोगीका मूत्र चावलोंके धोवणके जेसा होताहै (११) नये बुखारवालेका मूत्र किरमची रगका तथा जादा होताहै, (१२) पेसाब करते लाल धार होय तो घडा रोग समझणा काली धार होय तो रोगी मरजावै पेसाबमें वकरीके पेसाबजेंसी गघ आवेतो अजीर्णका रोग समझणा (१३) (साध्यासाध्य परिक्षा) रोग साध्य याने सहजसें मिटे जेसाहे अथवा कष्टसाध्य याने मुस्किलसें मिटे जेसाहै, अथवा असाध्य याने नहीं मिटे जेसाहे, सो परिक्षा लिखते है, फजर चार घडीके तडके रोगीकूं ऊठाकर उसका पेसाब एक काचके सुपेद प्यालेमें लेणा जिसमें पहली और पिछली धार नहीं लेणी विचली धार लेणी पीछे उसकू स्थिर रहणे देणा वाद सूर्यके धूपमें घटाभर रखके पीछे एक घासके तिणखेसें धीरेसें-तेलकी बूंद डालनी जो वो वूद डालतेही पेसाबपर फेल जाय तो रोग साध्य समझणा जो वूद वो फेले नहीं ऊपर यूकी यू बने रहे तो रोग कष्ट साध्य समझणा जो वो वूद अंदर पेसाबके तले बैठ जाय अथवा अदरसें फेर पीछी ऊपर आकर कुडालेकी तरे फिरणे लगे अथवा वूदमें छेद २ पड जावै, अथवा तेलकी वूद पेसाबके सग मिल जाय तो रोग असाध्य जाणना फेर तलाव हस छत्र चमर तोरण कमल हाथी इत्यादि चिन्ह दीखे तो रोगी बचे, तलवार दड कवाण तीर इत्यादि शस्त्रोके चिन्ह वूदके होजाय तो रोगी मरे, बुदबुदे उठे वूदमें तो देवताका दोष जाणना, इत्यादि मूत्र परिक्षा योग चिंतामणी ग्रथमें लिखी है, इसमें कितनीक बातें तो अनुभवसें सिद्ध है, क्योंके फकत ग्रथ वांचनेसेंही परिक्षा नहीं हो सकती है, करता उस्ताद और अणकरता सागिडद होता है, ग्रथके वांचणेसे फकत वायका पित्तका कफका खूनका तथा मिले भये दोषोंका इत्यादि परिक्षा पेसाबकी देखनेसें हो सकती है विशेष पहचान अभ्याससे होसकती है, ॥ २ ॥ अग्रेजी मतसे मूत्र परिक्षा लिखते है ॥ रसायणशास्त्रकी रीतसें मूत्र की परिक्षा डाकतरोनें करी है, इसवास्ते प्रमाण करणे लायक है, पेसाबमें मुख्य दो चीज है, युरीआ और एसिड इसके सिवाय उसमें लूण, गधकका तेजाब, चूना, फासफरीक एसिड, मेगनिशिया, पोटाश, और सोडा, इन सव वस्तुओंका थोडा २ तत्व होताहै बहोतसा भाग पाणीका होता है, पेसाबमें जोजो पदार्थ है सो लिखते हैं

पेशावमेंके पदार्थ.	पेसावके १००० भागमे.
पाणी,	९५६।।। भाग.
शरीरके घसारेसें पैदा होती चीजें.	
युरीआ.	१४।। ,,
युरिक एसिड.	०।। ,,
चरबी चिकणाई वगेरे	१५ ,,
खार.	
लूण	७। ,,
फासफरीक एसिड.	२ ,,
गंधकका तेजाब.	१।।। ,,
चूना	०।। ,,
मागनिशिया.	०। ,,
पोटास.	१।।। ,,
सोडा	बहोत थोडा.

पेशावमें ऊपर लिखे सो पदार्थ है, लेकिन् तनदुरस्त हालतमें पेसावमें ऊपर लिखी चीजें हमेशां एक वजनमे होती नहीं खुराक और कसरत वगेरेपर उसका आधार है, पेशावमेंकी चीजोंकों पक्के रसायणी शास्त्री विगर दुसरे नहीं परख सखते और एसी परिक्षा होती है तभी पेशावपरसें रोगोंकी पक्की परिक्षा हो सकती है, हमारे देशी पूर्वाचार्य इस रसायण विद्यामे वडे प्रवीण थे तभी तो वीस जातके प्रमेहमें सर्करा प्रमेह क्षार प्रमेहादिकी पहिचान करीहे इस मुजब तत्वके वेत्ता थे तभी तो उनोनें लिखा है, डाकतरोकी करी परिक्षाकू लोक नई समझ हैरतमे रहते है, लेकिन् नई नहीं है, पेसावकूं फकत आंखोसें देखणेसें उसमेके अनेक चीजोंका चोकस वधणा या घटणा मालम नहीं देता तोभी पेसावके जथेपरसें पतलापणा या जाडेपणेपरसें कितनेक रोगोकी परिक्षा अछीतरे तपासणेसें हो सकती है, निरोग अदमीकू सब दिनमें याने २४ घंटेमें सरासरी २।। रतल पेसाव होता है, जो कभी पतला पदार्थ कमती या वैसी खानेमे आवे तो वृध घट होती है, ऋतुमुजबभी पेसावके जथेमें फेर पडता है, ठंढकालेसें उष्ण कालमें पेसाव थोडा होता है, मूत्राशयका एक रोग जिसकूं अंग्रेजीमें (वाइटस डिझीझ) याने मूत्राशयका जलंदर कहते है, वो मूत्राशयमें विगाड होनेसें खूनमेसें एक जरूरीका तत्व (आल्युमेन) के रस्ते निकल जाणेसें होता है, पेशावमें आल्व्युमेन है या नहीं उसकी निगेदास्ती करनेसें इस रोगकी परिक्षा हो सकती है, इसीतरे पेसावका महा भयकर रोग मधुप्रमेह (डायाबीटिस) मीठा पेशाव होता है इसरस्ते पेसावमें मीठेका

जादा हिस्सा जाता है, पेसावकूं आंखसे देखणेसें उसमें मीठा है, या नहीं उसकी मालम नहीं पडती लेकिन् अछीतरे परिक्षा करणेंसे मीठा जाता है, जिसकी खबर हो जाती है, मीठे पेसावपर हजारो चिमटियां लग जाती है, पेशावमे जुदा २ खार है, वो प्रमाणसें जादा या कम जाता है, तैसेही (खटास) याने एसिडका भाग पेसाचमें जादा जाता है, तो उससेंभी अनेक रोग पैदा होता है, इन जाते भये पदार्थोंकी अछी तरे परिक्षा हो जाय तो रोगोकीभी परिक्षा हो सकती है

पेसावमें जाते भये पदार्थोंकी परिक्षा.

पेसावकी परिक्षा बहोत तरेसें करी जाती है, कितनीक बात तो पेसावकू आंखसें देखणेसेंही मालम होती है, कितनीक चीजे रसायणिक प्रयोग करके देखणेसें मालम देती है, और कितनेक पदार्थ सूक्ष्म दर्शक यत्रसे देखणेंसें मालम पडती है, इसमेंकी थोडी परिक्षा इहां लिखते है, (१) आंखोंसें देखणेसे पेसावके जुदे २ रगकी पहचानसें जुदे २ रोगोंका अनुमान बांध सकते है, निरोगी पेसाब पाणी जैसा साफ और जरा पीलासपर होता है, पैसाबके सग खूनका भाग जाता होय तो पेसाब लाल अथवा काला दिखता है, कितनीक दवाओंके खानेसें पेसाबका रग बदल जाता है, वो बातभी ध्यानमें रखणी चाहिये पेसाब थोडी देर रखनेसे जो नीचे किसी किसमका जमाव होय तो समझणा खार खून पीप चरबी वगेरे कोईभी पदार्थ जाता है, आल्युमीन और सक्कर पेसाबमे गया होय तो उसकी परिक्षा आखोंके देखनेसें नही होती, खार पेसाबके सग मिला भया होता है, तोभी वो जादा जब जाता है, तो पेसाबकू थोडी देर रहणे देनेसें वो खार पेसावके नीचे जमता है, पेसाब ऊपर रोगकी परिक्षा करते इतनी बातोंका ख्याल रखणा (१) पेसाब धूएके रग जैसा होय तो उसमे खूनका संभव होता है, (२) पेसाबका रग लाल होय तो जानना उसमें खटास (एसिड) जाता है, (३) पेसाबके ऊपरके फेण जलदी बैठे नहीं तो जानना उसमें आल्युमीन अथवा पित्त है, (४) पेसाब गहरे पीला रगका जाता होय तो उसमें पित्त जाता है, एसा समझना (५) पेसाब गहरे भूरा या काला रगका होय तो समझना रोग प्राणघातक है, (६) पेसाब पाणी जैसा बहोत होता होय तो मीठा पेसाब (डाया बीटिस) की शका होती है, हिस्टीरियाके रोगमेंभी बहोत पेसाब होता है, बहोत आता है, तब पाणी जैसा होता है, पेसाब ऊपर हजारों चिमटिया लगे तो समझ लेणा मीठा पेसाब है, (७) जो पेसाब मैला और गुमला होय तो जाणना उसमें पीप जाता है, (८) पेसाब लाल रगका और बहोत थोडा होय तो कलेजेका मगजका और बुखारके रोगकी शका होती है, (९) पेसाबमें खटास जादा जाती होय तो समझना पाचन क्रियामें हरकत पहुची है, (१०) कामलेमें और पित्त प्रकोपमें पेसाबमें बहोत पीलापणा और हरापणा होना

है, किसी वखत वो रंग एसा गहरा होजाता है, सो काले रंगकी शंका होती है, ऐसे पेसाबकू हलाकर देखणेसें अथवा थोडा पाणी मिलाकर देखणेसें पेसाबकी पीलास मालम देगी (२) रसायण प्रयोगसें पेशाबमेंकी जुदी २ वस्तुओंकी परिक्षा करणेसें कितनीक बातोकी खबर होगी सो नीचे मुजब. (१) पित्त, पेसाबके रंग ऊपरसें पित्तका अनुमांन बांध सकते है, और रसायण रीतसें परिक्षा करणेसें विशेष खातरी होती है, पेसाबकी थोडी बूद काचके प्यालेमें या रकेबीमें डालणा उसमें थोडा नाइट्रिक एसीड डालणा दोनो मिलणेसें हरा जाम्बूनी और पीछै लाल रंग होय तो पेसाबमें पित्त है एसा समझणा (२) युरिक एसिड वगेरे पेसाबका स्वाभाविक तत्व है, लेकिन वो जादा जाता होय तो उसकी परिक्षा इस मुजब है, पेसाबकूं एक रकेबीमें डालकर गरम करणा बाद नाइट्रिक् एसिडकी थोडी बूद उसमें डालणी उसमें अगर पासे बंध जाय तो पेसाबमें युरिया जादा है एसा समझणा और पेसाब रकेबीमे डालकर उसमें नाइट्रिक एसिड डालकर तपाणेसें उसमेसें पीले रंगका पदार्थ हो जाय तो जाणना पेसाबमें युरिक एसिड जाता है, (३) आलब्युमीन) आलब्यूमीन ये एक पौष्टिक तत्व है, जो वो पेसाबमें जानेलगे तो शरीर कम जोर होता है, पेसाबके परीक्षा करनेकी नली (ट्युब) आती है, उसमें दोतीन रुपेभर पेसाव लेणा उस नलीके नीचे डाकदर लोक तो स्पीरिट (दारू) की चराक करते हैं, आर्य लोकोंने मोमबत्तीकी करणी उसमें पेसाबकू गरम करणा पेसाब ऊकले तब उसके अदर वो सोरेके तेजाबकी थोडी बूंद डालणी इसकी बूंदोसें पेसाब बद्दलोंकीतरे गुमला हो जायगा और गुमला भया पेसाब ठहरे पीछे अलब्युमीन नीचे बैठेगा और आंखोंसें दीखेगा लेकिन् पेसाब गरम करणेसे या गरम करकर उसमें सोरेकी तेजाबकी बूदे नाखनेसें जो वो पेसाब गुमला नहीं होय अथवा गुमला होकर गुमलापणा मिट जाय तो समझनाके पेसाबमें आलब्युमीन नहीं जाता इस परिक्षासें गरम किया भया और नाइट्रिक एसिड मिला भया पेसाबमें जमा पदार्थ फोसफेट (क्षार) होयगा तो पीछा पेसाबमें मिल जायगा और आलब्युमीन होगा वो वैसाका वैसाही रहेगा (४) स्युगर याने सक्कर—पेसाबमें जादा या कम पेसाबमें सक्कर जब जाती है, तब उस रोगकू मीठे प्रमेहका भयंकर रोग कहणेमें आता है, पेसाब बहोत मीठा सुपेद पाणी जैसा होता है, उसमें सहत जैसी गध आती है, तोभी रसायणिक रीतसें परिक्षा करणेसें सक्कर है, जिसकी बराबर खातरी होगी सक्करकी शका होय तो पीछे पेसाबकू गरमकर छाण लेणेसें जो उसमें आलब्युमीन होगा तो अलग हो जायगा पेसाबकू काचकी नलीमें लेकर उस पेसाबसें आधा लीकर पोटाश अथवा सोडा डालणा पीछे मोर थोथेके पाणीकी थोडी बूंदे डालणी वो नीलेथोथेकी बूंद बहोत हुसियारीसें एक बूद पीछे दुसरी बुद डालणी और नलीकूं हिलाते जाणा इसतरे करणेसें वो पेसाब आसमानी रंगका

आरपार दीखे जेसा होताहै पीछे उसकू खुब उकालणा जो सक्कर होगी तो नलीके पींदे नीचे नारगीके रगजेसा लाल पीले पदार्थका जमाव होकर ठहरेगा और स्थिर भये बाद जरा लाल भूरे रगका होगा जो एसा नहीं हो यतो समझणा पेसावमें सक्कर नहीं जाती (५) खार और खटासकी परिक्षा (अेसिड और आल्कली) क्षार पेसाबमें) खारका भाग जितना जाणा चहिये उसमें जादा जाय तो रोग होताहै, इस जादा खार जाणनेकी परिक्षा हलदीका पाणी करके उसमें सुपेद बलार्टींग पेपर (स्याही चूसणेका कागज) भिजाणा डाकदर लोक हलदीका टींकचर लेते हैं फेर उस कागजकू सुकाकर उसमेका एक टुकडा लेकर पेसाबमें भिजाणा जो पेसाबमें खारका भागजादा होगा तो इस पीले कागजका रंग वदलकर नारगी अथवा बिदामी रग हो जायगा फेर इस कागजकू पीछे कोईभी खटाईमें भिगाणेसे पीछा पीला रग था जेसाका जेसा होजायगा इस पेसाबकी परिक्षा करणेकूं टरमेरिक पेपर इगलससें आताहै. वो नहीं होय तो हलदीमे भिगाया भया पूर्वोक्त कागज लेणा अब खटाइ जादा जाती होय उसकी परिक्षा लिखते हैं ॥ इससेंभी रोग जादा होजाताहै, लीटमस पेपर तईयार आताहै अगर वों नहीं मिले तो बलोटिंग पेपर लेकर कोबिजके रसमे भिगाणा फेर सुकाणा तब उसका ब्ल्यू (आसमानी) रंग होगा उस कागजका टुकडा लेकर पेसाबमें भिगाणा जो खटास जादा भया तो उस कागदका रग लाल होगा खटाईके जादा या कमपर कागदभी कमी वेसी लाल होगा

(ऊ) मलपरिक्षा

मल याने दस्तपरसें भी कितनीक परिक्षा होसकतीं है और साध्य असाध्यकी भी परिक्षा होसकतीहै (१) वायुके दोषवालेका मल फेणवाला लुखा धुयेके रग जेसा और चोथा भाग पाणी जेसा होताहै (२) पित्तके दोषवालेका मल हरा पीला गधवाला ढीला तथा गरम होताहै, (३) कफदोषवालेका मल सुपेद कुछ सूका कुछभीजा तथा चिकणा होताहै (४) वातपित्तके दोषवालेका मल पीला और काला भीजा तथा अदर गांठोवाला होता है (५) वातकफके दोष वाला मल भीजा काला तथा पपोटेवाला होताहै (६) पित्त कफके दोषवालेका मल पीला तथा सुपेद होताहै (७) त्रिदोषका मल सुपेद काला पीला ढीला तथा गांठोवाला होताहै (८) अजीर्णका दस्त दुरगधवाला और ढीला होताहै (९) जलदरवालेका दस्त बहोत दुरगधवाला और सुपेद होताहै, (१०) मरणकी वखतका दस्त बहोत बद बो मारता लाल जरा सुपेद मांस जेसा तथा काला होताहै जिस रोगीका दस्त पाणीमें डूब जावै वोरोगी बचता नहीं पतला दस्त अपचेसें अथवा सग्रहणीके रोगसें पतले दस्त होतेहैं दस्तमें खुराकका कचा भाग दीखे तो समझणा बराबर पाचन भय

नहीं आंतरेमें पित्त बढणेसें भी दस्त पतला और नरम आताहै अतिसार और हेजेमें दस्त पाणी जैसा पतला आताहै क्षयेके रोगमे जो विगर कारण दस्त पतला आवे तो समझणाके रोगी वचणेका नहीं (करडा दस्त—हमेस करते करडा दस्त आवे तो कबजियतकी निशाणी समझणी हरसके रोगीकूं हमेस सखतदस्त आता है उसमें बहोतसी वखत सफरेका भाग छिल जाणेसें उसमेंसे खून आताहै, पेटमें या सफरेमें वादी रहे तो उससें हमेस दस्तकी कबजी रहतीहै कलेजेमें पित्तकी क्रिया बराबर नहीं चले और चहिये जितना पित्त पैदा नही होय अथवा मलकूं आगे धकेलणें वास्ते आंतरेमें तंग और ढीला होनेकी चहिये जितनी ताकत नहि होनेसें दस्त करडा आता है, खून वाला दस्त—दस्तकेसग मिला भया खून अथवा आम (पीप) पडे तो समझनाके मरोडा भया है, हरसमें तथा रगतपित्तके रोगमें खून दस्तसे अलग गिरता है, याने दस्तके पहले या पीछे गिरता है, धार होकर, कलेजाका वरम (यकृतका पकणा) जिसमें खून दस्तके रस्ते बहोत गिरे और पीप एकदम आणे लगे तो समझणाके कलेजा पककर आंतरेमें फूटा है, जो दस्त धोयेभये मांसके पाणी जैसा आवे उसमें जरा खून होय या नहीं होय लेकिन काले छोतू जैसा होय और बहोत वदवो गंध मारे तो समझणा आंतरा सडने लगा है, दस्तका रग सुपेद होय तो समझना कलेजेमेंसें पित्त चहिये जितना आंतरेमें आता नहीं है, कामला पित्ताशय तथा कलेजेके रोगमे एसा दस्त आता है, हैजेमे तथा बडे अजीर्णमें दस्त सुपेद कांजी जैसा अथवा चावलोंके धोवण जैसा आता है. काला अथवा हरा दस्त आवे तो समझणा कलेजेमे रोग तथा पित्तका विकार है, आंवला गूगल तथा लोहकी बनावटकी दवाओं खानेसे दस्त काला आता है, ऐसे कारणोको देखकर काले दस्तसें डरणा नहीं.

प्रश्नपरिक्षा ४.

रोगीकू कितनीक हकीगत पूछनेसें रोगोंकी वाकबकारी होती है, एसी वाकबकारी पिछली लिखी परिक्षासेंभी नहिं हो सकती है, बहोतसी वखत एसा हाल बणता है, सो रोगीकू पूछणेसेंभी रोगका यथार्थ हाल मालम नहीं देता अथवा एसी हालतपर बहोतसा यकीनभी नहीं रखना, तोभी दरदीकी अगली पिछली हकीगत जांननी जरूर चहिये कारण पूछनेसें कोइ २ नई हकीगतभी निकल आती है, उसमेसें रोगकी पैदासका कारण पता मिल सकता है वैद्योको बहोतही फायदेबद है, पूछ २ कर खूब निश्चय कर लेणा चहिये इस उपरांत बहोतसी बाते रोगीके पास रहणेवाले अथवा सहवासियोंकों पूछके निश्चय करणा चाहिये जैसें रोगीकू उलटी होती है, तो उलटी किस कारणसें भई वो कारणकू पूछकर कारणकू वंद करणा चहिये उलटीकूं वंध करणेकी जरूरी नहीं जो पित्तसे उलटी होती होय तो पित्तकू दवाणा अजीर्णसें होती होय तो अजीर्णका इलाज

करणा जो होजरीकी हरकतसें होती होय तो उसहीका इलाज करणा इसवास्ते उलटीका कारण निश्चे करणेकू वहोत पूछताछ करणेकी जरूरी है, इसतरे सब रोगोंकी निश्चे करणी बुखार अजीर्णसें आया होय और इलाज दुसरा करणेमें आवे तो जलदी आराम नहीं होता बुखार अजीर्णसें भया है, या और कोई कारणसें उसका निर्णय जैसें दुसरे लक्षणों वगेरेसें मालम देता है, तैसें रोगी दो तीन दिन पहले क्या किया क्या खाया वो पूछणेसें तुरत निर्णय हो जाती है, वहोतसें रोग चिंता भय क्रोध काम विकार वगेरे मनसंबधी कारणोंमेंसें पैदा होता है, और वो शरीरके लक्षणोपरसें बरावर मालम नहीं देता इसमें पूछणेकी वहोत जरूरी है, शिर दुखणेके वहोत कारण है, जैसें के शिरमें गरमी दस्तकी कबजी धातूका जाणा प्रदर वगेरे वहोतसें रोग शिर दुखणेका कारण होता है, शिर दुखणेके इन कारणोकों तलास करणेमें नाडी परिक्षा कितनेक दरजे काम करती है, लेकिन् पक्का अनुभव होय तो बाकी परिक्षा कोईभी काम नहीं देती फकत रोगीकू पूछणा काम देता है, तेरा शिर किसतरे कबसे दुखता है, इत्यादिक ऊपर लिखे कारणोंसें शिर दुखता होय तो अमोनिया सुघाणेसें बिलकुल फायदा नहीं होता फेर दांतके या कानके रोगसेंभी शिर घेतरे दुखता है, ये बातभी विरले लोक समझते है, कान वहता होय उससें शिर दुखता है, ये बात रोगी स्वप्नेमेंभी नही जाणता कान दुखणेका हालभी रोगीकू विगर पूछै क्या खबर पडे इत्यादि अभ्यतर सरब हकीगत वैद्य पूछै या रोगी अपणे आपही वैद्यकूं अवलसें आखरीतक हकीगत कह देवै, ये सब हकीगत विगर कहे कभी खबर पडणीही नहीं है, केइ इक मूर्ख लोक वैद्यकी परीक्षा लेनेकू हाथ लबा करते हैं, आप देखो नाडीमें क्या रोग है, एसा नहीं करणा आप अपणी सर्व हकीगत कह देणी चाहिये और वैद्योकू चहिये सो नाडी देखणेका खाली आडबर रचके रोगीकू भरमाणा और डराणा नहिं चहिये उसकू धीरजसें पूछ २ कर रोगकी असली पहिचान कर लेणी चहिये रोगकी परिक्षा पूरी कराणेकू कोई नया या अजाण रोगी आवै तो उसकू थोडी देर बैठ देणा वो स्वस्थ हो जाय बाद उसका चहरा आंख जीभ वगेरे देखना पीछे दोनों हाथोंकी नाडी देखणी पीछे उसके मूसें हकीगत सुणनी पीछे उसके शरीरका जो जो भाग तपासणा होय सो देखणा फेर हकीगत पूछ अछीतरे निश्चयकर फेर रोगीकी जाती रुजगार रहणेका ठिकाणा ऊमर कोइ व्यसन होय सो अथवा पहली कोइ रोग भया होय, क्या क्या दवा कैसें २ ली क्या खाया पीया कैसें फायदा या नुकशान भया इस उपरात रोगीके मावापका हाल शरीर सबधी व्यवस्थासें वाकब होणा क्योके वहोतसे रोग उनोके होय सो पुत्रोंके होता है, स्वरपरिक्षाभी रोगीके मरणे जीणे कष्ट रहणा गरम शरद वगेरे रोगोंकी परिक्षा है, सो इहां नहीं लिखा हे, स्वरोदय देखणा, साध्यासाध्यकी परिक्षा बल

परसेंभी होती है, मृत्युके चिन्ह संक्षेपसे काल ज्ञानमें हैं, कानोंमें दोनों अंगली देणेसे गरडाट नहीं होय तो प्राणी मर जाता है आंख मसलके अंधेरेमें खोले जब बीजलीका साझबका होता है, सो नहीं होवे आंख मसलके मींचनेसें रग २ का आकाससें बरसता दिखता है, सो नहीं दीखे तो मृत्यु जांणनी इत्यादिक वा छाया पुरुपसें अथवा काचमें देखणेसें मस्तक वगेरे नहिं दिखाइ देवे तो मृत्यु जाननी चेतसुद ४ फू चंद्रश्वर नहीं चले प्रभात समे तो नो महीनेमें मृत्यु जाणणी इत्यादि विवरण ग्रंथ वढ जाय इसवास्ते इहां नही लिखा है, बाकी छट्टे प्रकाशके निदानमें साध्यासाध्य खूब परिक्षा लिखेंगें. इति श्रीमज्जैनधर्माचार्यसग्रहीते उपाध्यायश्रीरामऋद्धिसारगणि-विरचिते वैद्यदीपकग्रथे अष्टविधरोगपरिक्षाविवरणे चतुर्थ. प्रकाश. ॥



पांचमा प्रकाश ५

दवायोंका गुण तथा औगुण.

किरण १ पहली.

औषधीका प्रयोग देशी दवा.

यतः जन्मतोयस्यसञ्जाता शुगेशान्तिः प्रभावत सश्रीशांतिजिनाधीशः करोतुसुखम-क्षत १ ग्रथस्यनिर्विघ्नार्थंमध्यमंगलकृत ॥

जगलमें पैदाभई अनेक वनस्पति बजारमें विकती अनेक दवायें तथा फूकी भई धातुओंकी भस्मी और इनोंसे बनती हजारो दवाइयां इनसबोका नाम औषधी याने दवा है, इस ग्रथमें जो जो वनस्पती या दवायोका सग्रह है सो सब साधारण है जिस दवाकू बनाते बहोत ज्ञान ओर चतुराई चहिये बहोत समय चहिये और बहोत धन चहिये एसी बडी दवा शास्त्रोक्तरसविद्याशाला (लेबोरेटरी) सिवाय दुसरी जगे यथास्थित बणसके ये असभवित बात है इस वास्ते साधारण इलाजीतेसें घरगृहस्थी आप बनासके अथवा बजारमेंसें मगाकर उपयोगमें लेसके एसी दवायोंका सग्रह इसमे किया गया है इसी तरे साधारण अग्रेजी तथा होमियोपेथिक दवा जोकी सब जगे लोक वरतते है, उनोंकाभी सक्षेप उप-योग इस ग्रथमें लिखा है

(अरिष्ट-आसव) पाणी काढा अथवा पतले प्रवाही पदार्थमें औषध डालकर मट्टीकेवर तणमें भरके कपड मट्टीसें मूं बधकर एक दो पखवाडेतक धरे रहणे दे जब खमीर पैदा होजाय तब अरिष्ट–आसव बनता है दवायोंकों विगर उकालेभी धरणेसे आसव तइयार होता है और जादातर तो लोकउकालकर दुसरी दवायें पीछे डालकर धरते हैं तब अरिष्ट तइयार होता है जहां वजन नहीं लिखा होय उहां इस प्रमाण लेते हैं अरिष्ट वास्ते उकालीकी दवा ५ सेर सहत ६। सेर गुड १२॥ सेर पाणी ३२ सेर आसववास्ते चूर्ण १। सेर, बाकी ऊपर मुजब, पीणेकी मात्रा दोनोंकी ४ तोला, यत्र चढाकर अर्क टप-काते हैं, सो सराप (इसप्रीट) कहलाता है, दवायोंकू एक दिन भीगाकर जत्र चढाके भभका खेंचते है, वो अर्क होता है, दयाधर्मवालेके अर्क पीणे योग्य भक्ष है, अरिष्ट आसव सराप अभक्ष है, रोगादि कारणे छुडी चार आगार है ॥ बावीस अभक्ष खाणेसे बचे उसकू पूरा जैन समझणा

(अवलेह) जिस वस्तुकी अवलेही बणाणी होय चाटी जाय सो अवलेही कहलाती है, उस वस्तुका निजरस लेणा अथवा काढाबणाकर उसकू छाणलेणा पीछे उसपाणीकू धीरी आचसें जाडा पडणे देणा फेर उसमे सहत गुड अथवा सक्कर मिश्री अथवा दुसरी दवा-भी मिलाते हैं चाटणेकी मात्रा० ॥ सें २ तोला.

(कल्क) गीली वनस्पतीकूं शिलापर पीसकर अथवा सूकीकूं पाणी देके पीसणा लुग दीकरणी जिसकूं मुसलमीन लऊक कहते है, इसकू संस्कृतमें कल्क इसकी मात्रा खा णेकी १ तोलेकी है

(काथ) उकालीभी कहते हैं, १ तोला औषधीमें १६ तोला पाणी उसकूं मट्टी या क लीके पात्रमें उकालणा आठमे भागका पाणी रखणा और छाणलेणा वहोत करके उका लणेकी औषधीका वजन एक वखतकी ४ तोलेकी है काथ थोडानरमकरणा होय तो चोथा हिस्सा पाणी रखणा और एकवेर उकालेवाद कूचा पिछाडी छाणे वादरहै, उसक दुसरी वेर फेर सांझकू उकाला इसी तरे किया जावे वो परकाथ कहलाता है, लेकिन सांझकू उकाले भये काथका कूचा दुसरे दिनवासी उपयोगमें लेणा नही फजरका सांझकू लेणा नाताकतकूं काथका जादा पाणी देणा नहीं, नये ज्वरमें पाचन काथ अर्द्धावसेप रखकर देणा, कुटकी आदिखारा पदार्थकाकाथ ज्वरपके वाददेणा, इसकू काढा जोसिं-दाभी कहते है ॥

(कुरला) दवाकूं उकालकर पाणीका अथवा रातकू भिगाये भये ठढे हिमका फिट-कडी नीलाथोथा वगेरे यूही सादे पाणीमें मिलाकर मुखपाक रोगमें कुरला करणेमे आवै उसकू सस्कृतमे गडूप कहते है, त्रिफला रांग तिलकटा चपेलीके पत्ते दूध घी सहतसें.

(गोली) कोईभी दवाकू अथवा सत्वकू (घन अथवा एकस्टाकट) सहत नींबूका रस आदेकारस पानकारस गुड अथवा गुगलकी चासणीमे डालकर गोलियां बनाई जाती है, छोटी, वडीकूं तो मोदक कहते हैं, गूगल त्रिफलाके काथमे सुधता है शिलाजीतभीइसीमें.

(घी-तथा तैल) जिस जिसका घी अथवा तैल बणाणा होय उसका स्वरस अथवा दवायोंका पूर्वोक्त काढा याकल्क उससें चो गुणा घी अथवा तैल लेकर घी तेलसें चो-गुणा पाणी अथवा दूध गोमूत्र लेणा, सूकी औषधीकू १६ गुणा पाणीमे उकालकर चतु-र्थास रखणा, काथसे चो गुणा घी तथा तेल लेणा, गीलीकी चटणी डालणी, सबकू उकालते पाणी जलजाय औषधका भाग पक्कालाल होजाय घी अलग होजाय तब ऊतार ठढा कर छाणलेणा, तैलमे तो झाग आते बंध होजाय तब तैल तइयार भया समझ झटनीचे उतार लेणा, घीमें झाग आतेही उतार लेणा ये परिक्षा है, बाकी घाणीमें १ पाताल यंत्रादिक २ सेभी वस्तुओंका तैल निकलता है, गुरुगम शास्त्र प्रमाण है, पीणेकी मात्रा ४ तोला.

(चूर्ण) सूकी दवाइयोंकों सामलकर कूट कपडछाण करै उस चूर्णकी मात्रा ०॥ सें १ तोला.

(धूआं–धूप) अंगारमे दवा सिलगाकर जेसें घरकू धूप देकर हवा साफ करी जाती है, तेसे शरीरपर कितनेक रोगोंमें चमडीकू दवाका धूआंदेणेमें आता है अंगारेपर दवा डाल उसपर खाट बिछाकर उसपर बैठकर मूतो उघाडा रखणा और सब वदन

कपडेसें एसा खाट समेत चो तरफसे ढकणा सो धूआं बाहर नही निकलणे पावे अगपर लेणा.

(धूम्रपान) जेसें दवाका धूआं वदनपर लिया जाता है तेसें दवाकू हुक्केमें भरकर मूसे यानाकसें पीते हैं, फिरग रोगकी गठियापर.

(नस्य) नाकमें घी तेल के सग भूकी सूघणी उसकू नस्य कहते हैं

(पान) कोईभी दवाकू ३२ गुणा अथवा उससें भी जादा पाणीमें उकालकर आधा पाणीवाकी रहणेमे आवे उसकू पिये सो पान कहलाता है, (पुटपाक) कोईभी हरी वनस्पतीकू पीसकर गोलावणाकर उसकू वडयाएरडीके याजामूनके पांनमे लपेट ऊपर कपडमट्टीका थर देकर थेपडी छाणोके भूकेमें सिलगाकर धरदेणा गोलेकी मट्टी लाल होणेसे निकालकर मट्टी दूर कर रस निचोडलेणा वनस्पती सूकी होय तो जलमें पीस गोला करणा इस रसकूं पुटपाक कहते हैं, उसके पीणेकी मात्रा २ सें ४ तोलेतक

(पचांग) मूलयाने जड पान फल फूल छाल इसकू पचांग कहते हैं

(फलवर्त्ती) योनि अथवा गुदाके अदर जाडी वत्ती दवाकी देणीसो इसमें घी अथवा दवाका तेल यासाबुन वगैरे दिया जाता है.

(फांट) एक भाग दवाके चूर्णकू आठ भाग गरम पाणीमे कितनेक घंटोंतक भिगाकर पीछे उस पाणीकू दवा मुजब पीणा, ठढे पाणीमें १२ घटेतक भीजणेसे फाट तइयार होता है, इसकी मात्रा ५ सें १० तोलातक

(वस्ति) पिचकारीमें प्रवाही दवा भरकर मलया मूत्रके ठिकाणे दवा चढाणी वो खाणेके दवामाफक फायदा करती है, इसवास्ते असर होणेवास्ते पिचकारी मारफत दूणी दवा चढाणी

(भावना) दवाके चूर्णकूं दुसरा रस पिलाणा उसकू भावना कहते हैं, एकवेर रसमें घोटकर सुकाणा तब एक भावना कहलाती है

(बाफ) बाफ बहोत तरेलीजाती है, बहोतसे सेक और बांधणेकी दवाभी बफारेका काम देती है, एकेलापाणी अथवा कोइभी चीज डालके उकाला भयापाणी साकडे मूके वरतणसे लेणा विधि गरम पाणीमे पीछे लिखी है

(बधेरण) पान वगैरे कोईभी वनस्पतीकू गरम करके शरीरकी दुखती जगेपर बाधणा उसकू बधेरण कहते हैं

(मुरब्बा) हरडे आमला वगैरे जिस चीजका मुरब्बा बणाणा होय उसकू उनालकर करडी वस्तु होय तो फिटकडी वगैरे के ते जानसें नरमकर धोकर दुगणी या तिगुणी खांडया मिश्रीके चासणीमें डुबाकर रखणा मधुपक हरडे वगैरे उसकु मुरब्बा कहते हैं.

(मोदक) बडी गोलीकूं मोदक लड्डू कहते हैं, वो मेथी सूंठपाक वगैरेका गुड ख मिश्री वगैरेकी चासणीकर बांधणेमें आवै सो.

(मथ) दवाके चूर्णकूं दवासें चोगुणे पाणीमें डालणा हिलाकर या मथकर छा कर पीणा सो.

(यवागू-कांजी) अनाजके आटेकूं छगुणे पाणीमें उकालणा जाडा सो

(लेप) सूकी दवाके चूर्णकू अथवा गीली वनस्पतीकू पाणीमे पीस लेप करणे आवैसो, लेप दोपहरकू करणा ठढीवखत नहीं करणा रगतपित्तके सूजन तथा दाह खून विकारकू हर कोईभी वखत करणा

(लूपरी पोटिस) गहूंकाआटा अलशी नीवकेपत्ते कांदा वगैरेकूं जलमें वाफक अथवा गरम पाणीमें मिलाकर लुगदीकर सोजा तथा गडगूमडपर बांधे सो

(शेक) शेक वहोत तरेसें किये जाता है, कोरे कपडेके गोटेका रेतीका इंटक गरमपाणीका भरीकाचकीसीसी वगैरेका और गरम पाणीमें डुबाकर निचोये भये फला लीण उनू कपडेका अथवा वाफ दिये कपडेका पाणीके वाफका सेक पहली लिखाभी है तोभी लिखते हैं, तपेलीमें पाणी तथा अफीमकाडोडा वगैरे डाल पाणीकू ऊकालणा तपेलीपरचालणी ढकणी चालणीपर फलालीणके कपडेका टुकडा धरणा उसपर दुसरा वरतण थाली वगैरे ढकदेणा चालणीके छेदोमेसे फलालीणकू वाफ लगेगा उसकु दुखते जगे सहे जाय ऐसा धरणा

(स्वरस) कोईभी गीली वनस्पतीकूं पीसकर जरूर पडेतो थोडा जल मिलाकर रस निकालणा सो जो गीली वनस्पती नहीं मिले तो सूकी दवा अठगुणे पाणीमें उकालकर चोथा भाग रखणा अथवा २४ घंटे पाणीमे भिगाकर रखणेसे पीछे मसलकर छाण लेणा, गीली वनस्पतीके स्वरसके पीणेकी मात्रा २ तोला सूकीदवाके स्वरसकी ४ तोला बालककू ॥ तोला

(हिम) औषधके चूर्णकूं छ गुणे जलमें रखकर रातभर भिजाणा फजरमें छाणलेणा उसकू हिम कहते हैं.

(क्षार) जव वगैरे वनस्पतीमेंसें जवखार मूलीका खारपाठेका आंधी झाडेका इत्यादि वहोत चीजोंका खार करणेकी रीत इस मुजब है, वनस्पतीकू मूलमेंसे निकाल-कर पचांग जलाकर राखकर पीछे चोगुणे जलमें हिलाकर एक मट्टीके वरतणमें एकदिन रखकर ऊपरका नीतरा जल कपडेसें छाण लेणा उस जलकूं फेर हिलाणा आखरक्षार नीचे सूककर जम जायगा.

(सत) गिलोय वगैरेका गीलीकूं कूट जलमें मथकर एक पात्रमें जमणे देणा वाद ऊपरका जल धीरेसें निकाल डालणा पीछे नीचैजोलुपेदरहजाय सो, सूके वाद सत जमता है.

(सिरका) अंगूर जामून इक्षु वगेरेका रस निकाल थोडा नोसादर डाल धूपमें धरणा सडवडणेपर तीन दिनसे या सात दिनसें वोतल भर धरदेणा.

(गुलकद) गुलाबके फूलकी पखडिया या सेवतीके जिसमे मिश्री वुरकाकर थरपर थर देणा ढककर धरदेणा जब फूल गलके एक मेक हो जावे महींने दो महीनेसे वो गुलकद होता है.

(जुलाब) पहिली तीन दिन तैलादिकका मर्दन कराणा वायुके कोठेवालेकू दस्त नहीं लगता इसवास्ते ४ तोला घी या औपधीका घणाया घी तेल दिन ७ पिलाणा पित्त वालेकूभी पिलाणा कफवालेकुं जादा मालस कराणा स्नेहभी पिलाणा वाद कोठा नरम करणेकू सूफ गुलकंद या मुनका जीरा सूफ सोनामुखी निशोतकी छाल गुलाबकली दोदो रुपे भर लेकर ६ पुडीकर १६ तोला पाणीमें उकालकर आधारहै तब उतार ठढाकर २ तोला वूराडालकर दोनु वखत दिन तीन पिलाणा, ये मुंजस है, खीचडी या दालभात चदलियेका सागविनामिरचका खाणा, चोथेदिन काली निशोतका चूर्ण तोलेभर चैत्रमहीनेमें सींधा निमक ५ मासे कफ तथा वायु रोगमेंभी निमक मिलाकर फक्की देणा, दिनकी वारे-घजे खीचडी पतली घीके सग खिलाणा, एक वखत, दिनकी नींद लेणी नहीं, बोझा उठाणे आदि कोइभी तरेकी खेचल करणी नहीं, आसोजकाती तथा पित्त और खून विकारमें वूरेके सगदेणा, दिनकू च्यार पाच वजेकफरोगी टाल सूफ गुलकद घोटकर या सूफ १ भर उकाल पाणी छाण २ रुपे भर गुलकद डाल ऊपरसें पी लेणा, मिरचाईके वीज १ भर लेणेसे ऊपर मुजब दस्त होता है, हेजा चलता होय तो दस्तकी दवा नही देणा कफके रोगीकू जुलाफा विपमा १ तोलेभर सूठ ३, मासा सींधा निमक ३ मासा नींवूके रसमे घोट फेर देणा, छन दिन जुलावपर खीचडी दाल भात या दलिया ६ दिनतक खाणा इच्छाभेदीरस पूज्यपादगुटी नाराचरस छुरीकार रस सोनामुखी कपीला साढकादूध अर्कदूध थोहरका दूध इद्रायण इत्यादि जुलाबकी अनेक दवाइया है, रसोके जुलाबपर दस्त होता जाय ज्यो ज्यों वूरेका सरवत पीणा आंमके सग दवा दस्तमें निकले वाद फेर दस्त नहीं होता, उलटीकी दवा पहली देकर फेर बाद दो या तीन दिनके पीछे जुलाब देणा, आम पचाणेकिरमालापचक अच्छा होता है, मुसलमीन हकीमोके उमदा जुलाब अमलतास याखीरकिस्त दूध, या कची गुलाबकली मात सग राधकर मिश्री मिलाकर खिलाते हैं, तीन दिनमे ३० दस्तका उत्तम जुलाब २० का मध्यम १० का हलका, गरमी जुलाब वाद जादा मालम देतो सूफ गुलकद ६ दिन पिलाना विशेप विधि सायर हकीमोंकी टहल वदगी और उनकी मह्रवानी है, मुसलमीनोंकी तवारीकपै कवराइमें लिखा है. अयपेकवर मेरे कुदरतीका दावा दुनियापर नामी हकीम करसकते हैं, दुसरा कोइभी नहीं, आखर उस पेकवरने ये वात हुकम खुदा मुजब हकीममें प्रत्यक्ष देखी है,

इसीवजे भागवतमें शैव लोकोंके वैद्य धन्वतरीकू परमेश्वर लिखा है, अग्रेजोंके सर्वोपरी हुकम डाक दरोका है, लेकिन् ये बात पूर्ण विद्वानोकेवास्ते है, अदमीका जुलाब औरतका जापा विगडा भया महा कष्टकारी, होता है काष्टादिक जुलाव लेकर निराहार ठंढा पाणी अदमी पीलेतो जलदर हो जाता है, वहोत खयाल करके जुलावपरवरतणा जुलावसें जादा दस्त होजाय तो शूल कफका दरद कै खूनभी दस्तमें आने लगता है, वाइटे हाथपैर ठढे होते हैं, तब ठढे जलसे हाथपैर धुलाणा आंखोपर छांटणा वेर २ चावलोकी भूनी भई खील और मिश्री जलमें मिलाकर पिलाणा, गुलावका अतर या मिटिया ठढा अतर सुघाणा जुलावकी दवाखाये पीछे जीमिचलावे तो पान बीडी चबाणा पित्त रोगीकू आमसें पैदा भये रोगोंमें पेटके रोगमें आफरेके रोगमें कोठा शुद्ध करणेकू कोठ हरस कृमि विसर्प वातरक्त कफ खास पांडू जहर दोष निकालणे इतनोमे जरूर दस्त देणा, रोगीकी ताकत अवस्था विचारके, बालककूं बुढ्ढेकूं वहोत घी तेल पिये भयेकू जखमवालेकोक्षय उरक्षतरोगीकू, डरे भयेकू, थकेकू, प्यासके रोगीकू, वहोत जाडावदन मेद वृद्धिवालेकू, गर्भणीकूं, घारेदिन पहले बुखारवालेकूं, जापेवालीकू, मदाग्नीवालेकूं, मदात्यई रोगीकू, लूखे वदनवालेकू, इतनोंकों जुलाव नहीं देणा, इति जुलाब विधि ॥

॥ अथ वमन वीधिः ॥

पहले यवका पतला दलिया घाट गलेतक भरकर पिलाणा, या दही या दूध पिलाणा लेकिन् वमन कराणे वालेकू घी तेल सात दिन पिलाय, मालस कराय, पसीना निकलवाके फेर दुसरेदिन ये चीजें फजरमें पिलाकर फेर वमन करणा कफके रोगीकू वमन करणेकू पींपल आरीठा वच सींधा निमक, सहत मिलाकर, गरम जलसें पिलाणा, पित्तके रोगीकू पटोलमे खारापरबल या खारी तुराई या वृंदाल फल अरडूसा या नींबकी छाल उकालकर ठढे जलसें पीणा कफवायूके रोगमे पहली दूध पिलाय मैणफल पिलाणा अजीर्णके रोगमें वच और गरम जल पिलाणा उकडू विठलाकर गलेमे एरडपत्रकी पिछलीनाल डाल वमन कराणा फेर कफ रोगीकू पींपल इद्रजव वच अथवा मैणफलके चुर्णकू गरम जलमे सहतडालकर पिलाणा और वमन कराणा जहर खाया भया निकालणेकू खट्टी छाछमें निमक डाल पिलाणा अथवा मैणफल या नीलाथोथायाकपासकी मींजी या अफीम खाये भयेकू श्वानविष्टाभी पिलाते हैं, इतने रोगोंमें वमन कराणासो लिखते हैं कास श्वास कफके रोगमें रिदय रोगमें जहरपीडामें गलशुंडी रोगमें भ्रम रोगमे कोठ रोगमे वमन करणा चाहिये रसकपूर खाणेसें गठियाभई होय उसमेंभी वमन कराणा, वहोत उलटी होणेसे हिचकी होती है, गलेमे दरद वेहोसी होय प्यासभी होजाती है, तब आंवले खस चावलोंकी खील (लाई) चदन इनसबोकों मथकर सहत मिश्रीके संग पिलाणा या पीस घी सहत मिश्रीसें चटाणा वाद पथ्य मूगकी दाल विना मिरचकी, या भात मिलाकर खिलाणा तीन दिनतक, वाद जुलाव देणा इति वमनविधि ॥

दवाईकी चीजोंकी इंग्रेजी तथा हींदीमें नाम

१ इनफ्फुजन=चा	२ ऐकवा=पाणी
३ ऐकस्ट्राकट=सत्व–घन	४ ऐनिमा=पिचकारी–वस्ति
५ ओल्यम=तेल खाणेका	६ अग्वेन्टम=मलम
७ कन्फेकशन=मुरब्बा–आचार	८ टिंकचर=अर्क
९ डिकोकशन=काढा–उकाली	१० पल्वीस=चूर्ण
११ पलास्टर=लेप	१२ पोल्टीस=लूपरी
१३ फोमेनटेशन=शेक	१४ याथ=वाफ स्नान
१५ विलस्टर=फफोला उठाणा	१६ मिक्श्चर=मिलावणी
१७ लाइकर=प्रवाही	१८ लिनिमेन्ट=तेल लगाणेका
१९ लोशन=पोता–धोणेकीदवा	२० वाईन=आसव

देशी वजन=तोल

१ रत्ती=चिरमीभर	४ वाल=अंदाजन १ दोआनीभर
३ रत्ती= १ वाल	८ वाल= १ पावलीभर
३ वाल= १ मासा	१६ वाल= १ आठआनाभर
६ मासा= १ टक	३२ वाल= १ रुपियाभर
२ टक= १ तोला	४० रु० भर= १ शेर पाउड रतल
कहाइटक ४ मासेका है	८० रु० भर= १ शेर साहजानी

अंग्रेजी तोल माप.

सूकीदवायोंका तोल	पतली दवायोंका माप
१ ग्रेन= १ गहूभर	६० बूद= मीनीम= १ ड्राम
२० ग्रेन= १ स्कुपल	८ ड्राम= १ औंस
३ स्कुपल= १ ड्राम	२० औंस= १ पीन्ट
८ ड्राम= १ औंस	८ पीन्ट= १ ग्यालन
१२ औंस= १ पाउन्ड	

२ ग्रेन= १ रत्ती ६ ग्रेन= १ वाल १ औंस= २॥ रुपियाभर

जो प्रवाही पतली दवायें जहरी अथवा वहोतते जनहीं होती ऐसी दवा साधारण रीतसें चमचा वगेरे भरकेभी पिलाते है, वो इस मुजब

१ टी० स्पूनफुल= १ ड्राम	१ टेबल स्पूनफुल= ४ ड्राम ½ औंस
१ डिझर्ट० स्पूनफुल= २ ड्राम	१ वाईनग्लासफुल= २ औंस

निकाल दो दो फाडकर विचकी जिल्ली निकालकर फेर पाव बीजोंकूं सेर दूधमे मद आंचसें सिजाकर जब दूध बहोत गाढा हो जाय तब निकाल गरम जलसें धो डालणा फेर पीस कोरेमट्टीके बरतणमें लगा २ कर इसका तेल सुका लेणा जब बुरादाविना तेलका होजाय तब फेर नींबूके रसमें खूब घोटणा बाद सूकाय किसीभी प्रयोगमें लेणा१ (२) जहर कूचीला पहली सात दिन बेलूरेतमें पाणीसें तरबतर करके रखणा बाद इसका पाव वजन २ सेर दूधमें मंद आंचसे पकाणा बाद चक्कूसें इसके दो पुडतोंके बीचकी जहर जिल्ली निकालकर छोटे २ तुकरे कतरकतर प्रयोगमें लेणा (३) बछनाग (कालासींगी मोहरा) पाव,हंडीमें दो सेर दूध डाल इसकी पोटली बांध दो आंगुल अधर ऊपर दूधके लटकाकर ढकणी देकर कपड मिट्टीसें मू बंधकर मंद आंच जरा २ पोहरभर देणी बाद ठढीकर पोटलीमेंके मोहरेमें नाजोरी सूई निकले तो सुद्ध समझणा दूसरी वृद्धसंप्रदाय सेठ । श्रीमगनमलजीकी बताई ॥ तोलेभर मोहरेकूं दो तोले काली मिरचसंग घोटकर प्रयोगमें लेते हैं ॥ (४) खुरासाणी अजवाण इसीतरे दूधमें सुधता है, इसतरे वहोतसी जहरी चीजोंका सोधन दूध है, (५) अतीसकू गोबर पाणीमें डालकर मद आंचसें सिजाकर नरमभये बाद बरतणा (६) जायफलके ४ टुकडेकर गेहूंके आटेमें सेककर भोभरमें परिपककर फेर प्रयोगमें लेणा (७) लौंग पींपर भग तवेपर ऊनारणा याने थोडे गरम करणा जलाणा नहीं जीरा दोनुभी इसीतरे (८) गूगल शिलाजीत त्रिफलाके काढेमें सुधता है, (९) तेलिया सुहागीकू पहली गोबरसें मसल धोकर फेर पात्रमे धर फुला लेणा फिटकडीयोंही फुला लेणी हींग घीमे तलकर फेर प्रयोगमे लेणी (१०) नख लिया जो धूपादिक सुगधीमें प्रसिद्ध उसकू भेंसके गोबरमें या इमलीके पत्ते इनोके सग जल डालके औटावे ये नमिले तो फकत मिट्टीमें जल डालके ओटावे मट्टी चिकणी मुलतानी वगैरे लेणी फिर निकालके जलसे धोकर घीमें भूनकर फिर पीछे गुड और हरडके जलमें भिगाके रखदेवे तो नख द्रव्य शुद्ध होय फेर खाणेकी दवामें उपयोग करे (११) हलदी और वचकी शुद्धि गोमूत्रमें या लजालूके काढेमे या पचपल्लवके काढेमें ओटाय फिर किसी खसवोइदार जलकी वाफ दोला यंत्रसें देतो वच, ओर हलदी, शुद्ध होय (१२) नागरमोथेकी शुद्धि, कूट कर अधकिचरा कांजीमें भिगा देवे फिर पच पल्लवके काढेमें या जलमें ओटाय धूपमें सुकावै फिर गुडके जलसें छिडकके आगसे भून चूर्ण कर लेवे फिर वकरीका मूत्र यासहजणेके छालके जलकी भावना दे तो मोथा शुद्ध होय (१३) छड छबीलेकी शुद्धी, कांजीमें छडछबीलेको ओटाय फिर भून लेवै फेर गुडके जलमे डवोयके फेर फूलोसें अधिवासित करे अर्थात् सुगधित फूलोके सगरक्के तो छडछबीला शुद्ध होय [१४] केशर घीमें पीसणेसें शुद्ध होय अगर केशरमें कलोंजी सहतमें तेजपते चावलोंके जलकी भावना देणेसें शुद्ध होय, कूठ

हिरणके सींग जेसी होती है लेकिन् उसमें कीडे नहीं होणा (१५) पारेकी सामान्य शुद्धि, पारेको तीनदिन इटसें मर्दन करे फेर कुवारपठेसें फेर अमलतासके काढेसें फेर चित्रकके काढेसे तीन २ दिन तब पारा शुद्ध रसोंमे डालणेलायक होय (१६) गधककी शुद्धी (आमलसार गधक पाव पाव घीकू गरमकर उसमें डाल फेर दूध दुसरे ठाम पात्रमें रखकर सेरभर उस पात्रके ऊपर वस्त्र वांधणा उसमें गला भया घीसमेत गधक डाल देणा मैल वस्त्रमें रह जायगा फेर दूधमेसे गधक निकाल लेणा) इति गधक शुद्धि (१७) मोती शख कोडी मूगे नीबूके रसमें भिगाये शुद्ध होता है आठ पहर, धातु उपधातु रत्न उपरत्न विप उपविपोंका सोधन दूसरे भागमे लिखेगे.

देसीदवा. सामान्य अनुपान.

कोईभी चूर्ण गोली भस्मकी पुडी जिस चीजके सग खाणेका शास्त्र हुकम देता है, उसकू अनुपान कहते हैं, इस शब्दका असली अर्थ तो एसा होता है, दवा खाकर उसपर पीछेसें कुछ पीणा सो अनुपान, जहां कुछभी अनुपान नहीं लिखा होय उहां अनुपान पाणी समझणा देशी इलाजोंमें अनुपानकी माथा पच बहोत है, लेकिन् कितनेक अनुपान ऐसे है सो वो दवा जितना काम गुजारते हैं, सहत तीक्ष्ण और भेदक होणेसें अनुपान तरीके वो बहुत उपयोगी है, सहत घी गुड मिश्री आदेका रस छाछ मखण हींग पींपर सूठ सहजनेकी छाल ये सब सामान्य अनुपान है शास्त्रोमें कितनेक मुख्य २ रोगोंमें खास अनुपान लिखे हैं, वो दवा उन२रोगोंमे इसही अनुपानसे देणा एसा तो कोई पक्का नियम बधा नहीं है, तो भी ये अनुपान उन २ रोगोंकों दूर करणेवाले हैं इसवास्ते इलाज करती वखत ध्यानमें रखणा चाहिये बहोतसी बखत ये अनुपानोकी दवाई उन २ रोगोंकों मिटाती है सो अब नीचे लिखते हैं

(अजीर्णमे) नींद, हरडे, उपवास, नींबू,

(अतिसारमें) छाछ, कूडाछालरस, बकरीका दूध, दही, मोचरस,

(मिरगी) वच, अकलकरा, ब्राह्मी, सहत, पेठा, मालकांगणी,

(सन्निपात) आदेकारस, पानकारस कस्तूरी, अबर,

(खासी) अरडूसेकारस, या रींगणीका,

(विपमज्वर) सहत, तथा पींपर, हरडे, अजमोद, या कुटकी चिरायता,

(सग्रहणीमें) छाछ, या पतले मीठे रसका आम,

(जीर्ण ज्वरमे) सहत पींपर, या दूध सग, वर्द्धमान पीपर, या खपरिया शुद्ध, कालीमिरच मिला भया

(कृमि) वायविडग, हींग, कपीला, कोंचकेरू,

(अर्शमस्सा) भिलावा, चित्रकमूल, सूरण,

(पांडु) मंडूर, तीन वरसका गुड, षडूष्ण, वायविडंग, नागरमोथेके संग छाछमें,
(क्षय) शिलाजीत, शितोपलादि चूर्ण, सोना,
(श्वास) भाडंगी, सूंठ,
(प्रमेह) हलदी त्रिफला.
(सुजाक) आंवला, तुलछीके पत्ते, गुलरके पत्ते, शिलाजीत,
(शूल) हींग, कुचीला, घी,
(आमवात) एरंडीया, गोमूत्र, लसण, गूगल, मेथीपाक, भिलावा,
(वातरोग) गूगल, लसण, घी, नयेक कुचीला, पुराणेकू सींगीमोहरा,
(वातरक्त) गिलोय, भिलावापाक तथा एरंडीका तेल,
(मंदरोग) सहतमिलापाणी, त्रिफला,
(अरुचि) बीजोरा, अनार, नींबू,
(व्रण) त्रिफला, गूगल, सोनामुखी,
(आम्लपित्त) मुनक्का, आंवला, पींपर, अद्रक, नारेलजल,
(उपदंस) आककी जड, तूयेकी जड, विरेच, उलटीकी दवा देनी,
(नेत्ररोग) त्रिफला,
(उन्माद) पुराणा घी, मनशिल शुद्ध,
(मूत्रकृच्छ्र) शिलाजीत,

किरण २ दूसरी.

निघंट दवा गुण.

(१ अकलकरा-) गरम वायुहर थूक लाणेवाला दांतोंके रोगमें जीभके जडपणेमें मूमें रखणेसें फायदा जादा करके और दवायोंके संग दिया जाता है (आकार करभादि चूर्ण) अकलकरा सूंठ शीतलमिरच केशर पीपर जायफल लौंग सुपेदचनण ये आठों एकेक तोला अफीम चार तोला (गुण) स्तंभन धातूकों जाती होय तो बंधकरे (मात्रा-)१ रत्ती से २ रत्तीभर रातकू सहतसें चाटणा (२ आंधीझाडा) कफघ्न उष्ण पेसाब लाणेवाला है इसका खार निकालणेंकी विधि देखो खारकी (अपामार्ग खार) खांसी कफ दम और श्वासमें फायदा करता है छातीका कफ जुदा करता है, तेसें पेटकी चूंक आफरा वांईटेभी मिटता है कानमें इस क्षारमें तेल बनाया भया बूंदे डालणेसें कानकी शूल तथा फडफडाट मिटता है, तेल बणाणेकी विधि पीछे लिखी है, आंधी झाडेका खार सम वजन हरताल संग पीस लगाणेसें छोटे २ मस्से गिरजाते हैं, अपामार्गके फूल वि-छूके डकपर मसलणेसें जहर उतरता है, इसके पंचांगकी राखकू चोगुणे सहतमें चटा-णेसें कास दम तथा आम्लपित्त निर्बल हो जरीवालेकूं गर्भिणी स्त्रीकू छाती तथा गलेमें

खटास चढकर जलता है, सो मिटता है, (३ अजवाण) उष्ण वातहर दीपन वायु आंटा आफरा पेटकी चूक वगेरे पेटके रोगमें अछी असर करती है,(अजमोदादि चूर्ण) अजमोद सेंचल सींधानिमक जवखार हींग तथा हरडे सव समभाग ये चूर्ण पेटका आफरा तथा अजीर्णपर अछा है, (अजमोदादि गुटिका–) अजमोद हरडे खारक केशर एक २ भाग जायफल मोचरस अफीम ये तीनों आधा २ भाग जावत्री लोंग तथा सहत ये तीनो दो दो भाग बाजरीके दाणे जितनी गोली करणी वालकोंकी उलटी दस्त नींद नहीं आवै अथवा नींदमेंसें झचक उठै इन सवोंमें वहोत अछा फायदा, करता है (मात्रा) गोली १ सें २ (४ अतीसकी कली) ज्वरहरे कृमिहरे दीपन ग्राही वहोतसे बुखारोंके काथमें डाली जाती है, बचोंकी तो खास दवा है, (अतिविष चूर्ण) फकत कलीका चूर्ण कर बचोंकों सहतमें चटाणेसें बुखार खासी उलटी मिटती है, (मात्रा) वाल०॥ सें १ वाल (चातुर्भद्रचूर्ण–) अतिविष मोथा काकडासींगी पींपर चूर्ण सहतमें चाटणेसें उलटी दस्त बुखार खासी वगेरे बचोंके रोगोंपर वहोत फायदेवद है (शृग्यादि चूर्ण–) काकडासींगी अतीस पींपर इनोंका चूर्ण सहतमें देणेसें बचोंकी खासी बुखार उलटीकू मिटाती है, मात्रा हरेक चूर्णकी १ वाल (५ अफीम–) ग्राही पीडाशामक नींदलाणेवाला स्वेदल स्तंभन दवा तरीके अफीम वहोत रोगोंपर फायदा करता है, मरोडा सग्रहणी अतिसार रक्तातिसार हैजा विना बुखारकी खासी दम अनिद्रा अगपीडा उन्माद हिचकी मधुप्रमेह आंखके रोग तथा स्त्रियोंको अधूराजाणा और ऋतुधर्मके दोषमें अफीमकू युक्तिसें तेसें दुसरी दवायोंके योगसे देणेसें जलदी असर करता है जहर है इसवास्ते वहोत साव चेतीसें उपयोग करणा (मात्रा० । सें ॥ रत्ती) (कुकुमवटी) अफीम तथा केशर सम भाग सहतमें चावलके वजन जितनी गोली करणी सखत दस्तभी रुक जाता है, अजीर्ण अतिसार सग्रहणीकू (मात्रा गो० १) (आमराक्षसी) अफीम जायफल लोंग शुद्ध हिंगलू और कपूर समभाग इनोंकी दो दो रत्ती भरकी गोली करणी उससे हैजेकाभी सखत झाडा वध होता है वाइटेभी वंध होते है, शरीर सतेज होता हैं, मात्रा २ रत्ती(अर्क अहिफेनादि गुटिका–) आकके सूके भये फूलोंका भूका दो तोला सींधा निमक २ तोला सेकाभया अफीम० ॥ तोला तीनोंकों मिलाकर एकेक वालकी गोली-करणी रगतपित्त अर्थात् शरीरके किसीभी रस्तेसें खूनगिरे सो तथा उरक्षत याने जिस क्षयनमें खूनमिले खखार गिरे सो एसे रोगोंमें ये गोलियां वहोत फायदा करती है,(मात्रा २ रत्ती) (६ अरडूसा) कफघ्न रक्तस्तंभक ग्राही) अरडूसेका पान वहोत काढोंमें गिरता है, खासी क्षय श्वास दम वगेरे छातीके रोगोंमें वहोत फायदा करता है, रक्तस्तंभक और कफघ्न होणेसें कफकू निकाल खूनकू वध करती है, और फेफसा सडताभया मिटता है, कफके बुखारमें तथा बचे सरदीसें जकडजाते हैं. गलेमें तांत बोलती

है, बुखार चढ जाता है, और श्वास चलता है, उसमें पानका रस जरा गरमकर पिलाणेसें तथा पानके कूचेकू छातीपर रखकर ऊपरसें सेक करणेसें तुरत आराम होता है, (वासा स्वरस) अरडूसेके गीले पानोंका रस १ तोले रसमें १ तोला सहत पींपरका चूर्ण १ सें २ वाल भुरकाकर पिलाणेसे कफ निकल जाता है, छाती हलकी पडती है, (वासा पुटपाक) देखो पुटपाक बणाणेकी विधि, रसनिकाल सहतमिलाय पीणा (मात्रा १ से दो तोला, इस पुटपाकसें क्षय अतिसार रक्तातिसार मिटता है (वासादि क्वाथ) अरडूसेकापान गिलोय भोरींगणी जो हरडे दाख और पींपर समभाग क्वाथ करणा (क्वाथवणाणेकी क्रिया देखो) इससें खासी क्षय कफज्वर तथा दमकूं फायदा करता है (वासावलेह) अरडूसेके पत्तोंका रस३२तोला मिश्री८ तोला पींपर २ तोला ताजा घी २ तोला ये सबोंको उकाल जाडा करणा ठरेवाद इसमे १। रुपेभर सहत मिलाणा क्षय उरक्षत खासी दम श्वास वगेरे छातीके रोगोंमें बहोत फायदा करता है (वासाखंड पाक) अरडूसेके पत्ते सेर १। लेकर पाणीमें उकालणा चोथा भागका पाणी बाकीरहे तव पाणी छाण उस पाणीकू फेर चूलेपर चढाकर उसमे हरडेका बारीक चूर्ण तोला १३० तथा बूरा तोला ५० डालकर पाक करणा उतार ठंढा भयेवाद सहत तोला ४ वासकपूर तो २ पींपर तो १ और तज तमालपत्र इलायची नागकेशर ये चारों दोदो वाल एकेक वस्तु डालकर मिलाणा ये रक्तपित्तके भयकर रोगको मिटाताहै (७अरणी) उष्ण वातहर सोथघ्न कफघ्न दसमूल तथा दुसरेभी कितनेक काढोंमें अरणी की जड काम देती है, इसके पत्ते सूजनपर बधाते हैं (अग्निमंथादिलेप) अरणीकी जड काली जीरी कीडामारी शरपखा सूंठ समवजन पाणीमें पीस जरा गरमकर सोजेपर लेप करणेसे भयकर सोजन चलाजाता है सूवारोग सग्रहणी सधिवात दुसरीभी वादीमें सांधोंमें तथा दुसरी जगे सोजन आतीहै उण सबोंको ये लेप फायदा करता है (८ आरीठा) उष्ण वांतिकारक सांपके तथा अफीम वगेरेके जहरमे आरीठेका पाणी पिलाकर उसकू उलटी कराणेमे आता है नाकमें पाणीकी बूंद नाखणेसें बेशुद्धि तथा आधासीसी मिटती है इसके पाणीसे दाह मिटती है (९ असालिया) उष्ण वातहर वाजीकर पौष्टिक असालियेकी खीर खाणेसे गुमचोट यकृत् (लिवर) तथा तिल्लीके खूनके जमावकू तोडता है शूल तथा चोटलगे पर असालिया इकेला अथवा साजी खार हलदी मेदालकडीके साथ मिलाकर गरम कर लेप फायदा करता है (९ अलशी) शीतल मूत्रल फेफसा पेटके पडदेका रिदय वगेरे शरीरके कोइभी मर्मस्थानमे वरम होजावै उसमें खून चढताहै शूल चलतीहै और पकजाताहै तब अलसीकी पोटिस बेर २ बांधणेसें बहोत फायदा होताहै किसीभी दुखती जगे दरद होता होय तो सादेजलमें अथवा पोस्तके डोडेकूं उकालकर उस पाणीमें अलसीकी पोटिस बणाकर बांधणेसें दरद मिटताहै (लूपरी बणाणेकी विधि)

देखो) (११ आकडा) उष्ण शोधक स्वेदल वमनकारक कफघ्न क्षोभक वातहर (आकडेकीजड, फूल, पान, तथा उसका दूध, दवामें काम आता है, जडकी छाल सोधक है, उलटी करताहै, इसके सर्वगुण, एपीकाक्युऐन्हा नामकी अंग्रेजी दवाके गुणसे मिलता है, जडकी मात्रा एक वाल, (पान) बुखारमें पानकू सेककर शिरकपालपर बाधणेसें पसीना आताहै बुखार नरम पडताहै और बुखारमे शिरपर बांधणेसें मगज ठंढा रहता है पेटपर पत्ते बांधणेसे पेट नरम पडताहै पानके वाफे भये रसकी बूंद डालणेसे कानकी शूल मिटजाती है (अर्कतैल) तिलकातेल तोला १० आकका दूध तोला ४० हलदी तो २० मनसिलतोला २० तेल घणानेकी विधिसें तेलघणाणा इसके लगाणेसे खाज खुजली तथा हरसका मस्सा सूक जाता है (अर्कादिक्वाथ– गजपीपर मिरच सूंठ और सींधा निमक सम भाग और चारोंके वजनसे वीसमा भाग आकके जडकी छाल तिल्ली और कलेजा और जलदरमे अछाफायदा करताहै (आकके दूधका घी) आकका दूध तथा मखण समवजन मिलाकर तपाकर घीवणाना खुजलीखाज इसकी मालिससें चलीजाती है (१२ अद्रक) उष्ण दीपन पाचन वातहर रुचिकर अनुपानमें इसका रस बहोत फायदे वंदहै बदनकूं जागृति करणेका इसके रसमें गुण है (आर्द्रकस्वरस) आदेका रस सहतमें पीणेसे खासी कफ तथा पेटपर वोझा होय सो नरम पडता है आंडोंमें वादी आगई होय तो आदेका रस और सहत पीणा भ्रम चक्कर पित्तके रोगमें आदेका रस २ तोला गायका दूध ७ तोला दोनोंकों उकाल कर आधा दूध जले तब उतार उसमें मिश्री डालकर पिलाणा (१३ आमली) सारक पित्तशामक तथा रुचिकर है दवामुजब अमलीकी राख अथवा उसका खार शखवटी नामकी गोलीवणाणेमे काम आताहै पत्ते इसके आखवगेरेके सोजेपर वाफकर बांधे जाता है भिलावा चढा होय तो उसपर अवलीका पान पीसकर मसलणेसें जलण मिटती है वदनपर भिलावा थोहरका दूध अथवा जमालगोटा लगणेसे चमडी उपडे और जलण होजाय तो अमलीकी गिर पाणीमे मिलाकर चुपडणा थोहरका रस अथवा एसीही कोई दुसरी गरम चीज आखमें पडगई होयतो उसमें अवलीके गिरमे घी मिलाकर अजन करणा जमालगोटेका या थोहरके दूधवगैरेका जुलाव लिया होय और बंध नहीं होता होयतो अवलीके गिरका सरवत मिश्री घी मिलाकर पीणेसें जो कदास पेटमें नही ठहरे तो दो तीनवखत पीलाणेसे जरूर जुलावका दस्त बंध होजाता है गरमीकी मोसममे अवलीका सरबत सोडावाटरका काम करता है और गरमीकी लू गरमी तथा पेसाबकी जलण मिटतीहै पित्तके बुखारमें इसका पाणी पिलाणेसें फायदा करताहै इन बातोके सिवाय दुसरी तरे अवली बहोत नुकशान करतीहै कच्चीअमली कभी खाणी नहीं पक्की अमलीभी तासीरकू माने तो गरमीकी मोसममें खाणी आवलीसें दांत जकड जाते हैं. जबाडी झल जाती है, शिर पकडीज जाता है, किसी वखत इससें खासी सिसकणा तथा दम उठ

जाता है, बुखारवाला तथा ऋतुधर्ममें आई भई औरत अंमली खाती है, तो हिचकी उठणेका डर रहता है, (१४ आंवला) खट्टा शीतल पित्त शामक शोधक सारक आंख तथा वालोंकू अछा है, आंवले वहोत उत्तम रसायण चीज है, गीले तेसें सूके आंवलोंसें वहोतसी उत्तम दवायें वणती है, सहजसें बणसके एसी थोडी दवायें इहां लिखी है, (त्रिफला चूर्ण–) आंवले वीज विगर४ रुपेभर बहेडेकी छाल २ भर हरडे अमरसरीकी छाल १ भर अथवा जव हरड, कितनेक तीनोकों सम वजन लेते हैं, ये चूर्ण शीतवीर्य है और आंखका रोग मगजकी गरमी कामला तथा पित्त विकारमें अनेक तरेसें दिये जाते हैं ऋषभ पुत्र आत्रेय राजाने इसके गुण अपणी बनाई संहितामें वहोत लिखे हैं. (धात्री स्वरस–) पित्त ज्वरकी उलटी बुखारकी उलटी तीक्ष्ण पित्तप्रकोप तृषा शोषदाह इन सर्वोकों गीले आंवलोंका स्वरस मिश्री सहत काली दाख मिलाकर पिलाणेसें दब जाता है,(रसायण चूर्ण)आंवला गोखरू गिलोय तीनोंसम भाग लेकर वारीक चूर्ण कपड छाणकर करणा अनुपान घी सक्कर पित्तके विगाडसें भये तमाम धातु दोषकू सुधारताहै, वीर्य पतला पड गया होयतो जाता होयतो अथवा मरदमीका नाश होगया होयतो वहोत दिनोंतक सेवन करणेसें जरूर पीछा होजाता है, मूर्च्छाका भयंकर रोग तेसेंही मिरगी और उन्मादमें भी अच्छा असर करता है, धात्री चूर्णकू– दूधके सग सांझकू खाणेसें कठ बैठ गया होय सो सुधरता है, (१५ आसगंध–) धातु पौष्टिक है पाकमे चूर्णमें क्वाथ वगैरेमें डाला जाता है, नाताकत और हीन सत्व छोकरोंकू इसका चूर्ण दूधमें देणेसें वदनकू ताकत देता है, आसगध कालातिल घीमें तलकर चूर्णकर मिश्री मिलाय खाणेसें दुबलापणा मिटकर पुष्टता होती है, आसगध तथा विरियालीका चूर्णकर टक मे० ॥ भरचूर्ण दो दो तोला घी मिश्रीमें मिलाकर चाटणेसें सबतरेकी वायु सरण चमका कमर तथा सांधोंकी वायु मंदाग्नि निर्बलता मिटती है, स्तनोंमें दूध बढता है, सूतिका वायु मिटती है, मगज भर जाता है, धातु तथा ताकत बढती है, (१६ असोंद्रा–) मूत्रल तथा शोधक है, आसोदरेका काढा दूध मिलाकर पीणेसें हृदयरोग छातीका दुखणा शूल वगेरे मिट जाता है, (१७ इद्रजव–) ग्राही दीपन पाचन ज्वरघ्न और कृमिघ्न है, दस्त हरस खूनका दस्त बचोंका मरोडा चूक वगैरेकू मिटाता है, लघु गगाधर चूर्ण–) इद्रजव मोथ कचीबीलगिरि लोद मोचरस ओर धावडीका फूल ये सब बराबर लेकर चूर्ण करणा इद्रजवकी फकी– इद्रजव तथा वायविडग शेककर चूर्ण करणा ये चूर्णसें बचोंका दस्त मरोडा उलटी कृमि सब मिट जाती है, (१८ इद्रायण–) रेचक कृमिघ्न तथा पित्तनाशक है, इसके फल तथा जड ली जाती है, इंद्रायण (तूंबेके) संग दुसरी वायु हरता दवायोंकों मिलाकर वापरणेसें फायदा करता है, इकेला नहीं दिये जाता जलदर वगेरे पेटके रोगोंमें अच्छा है, (१९ अहिखरेका बीज–) मूत्रल

और धातु पौष्टिक है, अहिखरे (तालमखानेका) चूर्णकर दूधमें पीणेंसें धातु पुष्टी होती है, पाकोंमें भी पडता है, (२० एरंड) रेचक शोधक तथा वायु हरता है, एरडकी जड पान तथा फलका तेल दवामे वापरते हैं, (जड—) वहोतसे वायु हर क्वाथमें पडती है, पान जरा गरम करके आंडोंके तथा आंखोंके सूजनपर तथा औरतोके स्तनके पकणेके ऊपर बांधणेसें सोजा नरम पडता है, अथवा पत्तोंकों पाणीमें उकालकर उस पाणीका सोजेपर सेककरणा (एरंडीका तेल—) जुलावमें वहुत अच्छा है, बच्चोंकोभी एरडतेलका जुलाव निशकपणे दिये जाता है, मरोडा तथा आंतरोंके शूलमें ये जुलाव वहोतही अच्छा है, मरोडेकी आंकसी दस्त होणेका कारण (आंतरोमें भराभया पदार्थ) दूर करके पीछे मरोडेको दस्तकू वध करता है, बिछोणेमें पडे रहणेसें पडी भई चांदी इस तेलका फोआधरणेसें तुरत आराम होता है, नारूके रोगमें सोजेपर नारू निकलेवाद उसकू अच्छा करणेकू एरंडीके तेलका फोआ धरणेसें अच्छा होता है, (मात्रा) सबसें जादा मात्रा २ रुपे भरसें ३ रुपेभर ऊमर मुजब १ भर० ॥ भर आखर दो वर्षके अदरके बच्चेकूं दो आनीभर दूधके सग रोगो मुजब अनुपानसें दिया जाता है, एरडीका तेल उरुस्तभ आमवात आडोंमें दरद सोजन वगेरे रोगोंमें वहोत अच्छा है, (एलायची) ठढी तेसें वायु हरता है, भोजन किये वाद पेटमें गडवडाट जीमिचलाणा चूक आफरा वगेरेमें खाणेसें मिटता है, मुखवासमें अच्छी है, इलायची कबाबचीणी और मिश्री मूमे रखणेसें मूकी गरमी कम होती है, स्वर कठ वैठा भया खुल जाता है, वाहर लगाणेके इलाजोंमें वहोत काम देती है, ठढी होणेसें (एलच्यादि चूर्ण) इलायची गऊला मोथ घोरकामगज पींपर चदन कमोदचावल लोग नागकेशर चूर्ण-कर सहतमे चाटणा (२२ एलिया—) रेचक तथा ऋतुलाणेवाला है, कार-पठेके सुकाये भये रसकू एलिया कहते हैं, (एलीयेकी गोली—) एलिया तो १ शुद्धकरा भया कुचीला दो आनीभर तजतो २ कलभा तो १ कुटकी तो २ इन सर्वोका चूर्णकर उसकू बीजोरेके या नींबूके रसमे घोट दो दो वाल अदाजन गोलीयांकरणी वध कुष्टवालेके वास्ते ये अछी है एलिया और हींग येहिस्टीरीया (उन्मादके) तोफानकू दबाता है एलिया तथाडीकामालीका लेप पेटपर करणेसें बच्चोंके पेटका गोटा और चूंक मिटतीहै औरतोंके ऋतु धर्मके रोगमें एलिया अच्छा है गर्भवतीकू एलियेकी दवा नहीं देणी और दुसरी वेमारीमें भी एलिया देते सावचेत रहणा वहोत देणेसें मरोडा होजाता है (२३ ओथमीजीरा) ईसबगुल कहतेहैं ठढा ग्राही याने दस्तकू रोकणेवाला इसकों पाणीमें भिगाकर लुआब निकाल मिश्री मिलाकर पीणेसें अतिसार रक्तातिसार पित्तातिसार तेसें आमातिसार याने पुराणी सग्रहणीकूंभी फायदा करता है उलटी और प्यासकू मिटा-ताहै शेककर दहीमे डालकर पीणेसे दस्तबध होताहै प्रदर चिणगिया वेमारमें फायदा

करताहै दही ईसबगुल तेलिया सोहगी फुलाईभई १ वाल मिलाकर पीणेसें सखत मरोडा बंध होजाता है (२४ अकोल) शोधक स्वेदल तथा उलटी लाता है, चूअेके जहरमें अंकोल बहोत फायदा करता है ऊंदरवायुमें इसकी लकडी घसकर पिलाणी चूहेके जहरसें तेसें और भी किसी जहरसें वदनमें चीरे २ पडजाते हैं उसमें ये लकडा घसकर लगाणेसें मिटजाताहै (२५ अंबर) उष्ण पौष्टिक सुगंधी मछलीकी सुकाई भई हंगारहे सचा अंवर भाग्यसेंही मिलताहै बजारमे जो अंबर मिलता है सोनकली है, असल अंवर बहोत गरम इसवास्ते किसीभी रोगमें अशक्त वेमार ठंढा वदन पडगया होय दांतखीली बैठगई होय रोगी मरण दशातक पहुचा होय उसकूं अवर तथा कस्तूरी जेसे वस्तु देणेसें जरा हुसियारी तो आती है धातूकों तथा मगजकों सतेज करता है, इसी वास्ते भाग्यवांन लोक धातु पुष्टि दवामे इसकु मिलातेहैं (२६ कडवी तुराई) रेचक तथा उलटी लाणेवालीहै पीलियेकी बेमारीमें इसका रस याकडवी तूंबीकी रसकी वूदे नाकमे सुघाते हैं जादापाणी नाकसें गिरणेपर नाकमें घी सुंघाते हैं. पीलिया चला जाता है (२७ कडवीनई) शोधक तथा सोथघ्न है दवामें उसकी गांठ काम आतीहै दोय आनेसे चार आनेभर घसकर पीणेसें महींनज्वर ऊतरताहै हाथ पैरोंका दाह तथा निर्वलताके सोजेपर उसका लेप करणेमें आता है (२८ कूडाछाल) ग्राही ज्वरघ्न पित्तशामक तथा ठडीहै दस्तोके रोगमें उसका काढा अवलेह चूर्ण तथा पुटपाक करके देतेहैं रक्तातिसार याने खूनके दस्तोंमे बहोत फायदा करती है और अेपीकाक्युआना अंग्रेजी दवाकी बरोबरी करती है (कूडेकी छालका पुटपाक) छालकू पीस चावलोके धोवणमें गोलावणाय पहली लिखी पुटपाककी रीत मुजबरसनिचोड लेणा मरोडेमे रक्तातिसारमें ये पुटपाक बहोत फायदा करता है (कूडाछालका घन) कूडाछालतो २ बीलकी गिर २ तोला अनारकी छाल तो १ इनोंका घन मुजब घनकरणा दोदो आनीभर गोलियां करणी मात्रा १ अथवा २ गोली मरोडेके दस्तमें देणी (कुटजावलेह) कूडाछालका चूर्ण १० सेर जल २५सेर उकालकर चोथे भागका जल रहे तब ३ सेर गुडडालकर फेर उकाल फेर चाटणे जैसा होय तब उसमें रसोत मोचरस त्रिफला त्रिकटु रेसाखतमी चित्रककी जड कालीपाट कचा बील इंद्रजव अतिविप वायविडग और नेतरवाला एकेक दवा चार चार तोलेका बारीक चूर्णकर डालणा ठरेवाद अधसेरघी अधसेर सहत मिलाणा चाटणेसें हरस तथा रक्तपित्तमें खून गिरतेकू बंधकर रोगोंकू मिटाताहै (२९ कुटकी) सारकहै पाचक ज्वरघ्न कुटकीमें बुखार मिटाणेका पाचन करणेका और दस्त साफ लाणेका गुण होणेसें बुखारके बहोतसे काढे और चूर्णमें डाले जाती है (कुटकी पाचन) कुटकी मोलेटी भुनकानींबकी बतरछाल बराबर वजन कूटकर दोदो रुपेभर काथ तीनपाव पाणीमें उकाल चतुर्थांस रखकर पीणा इसकरके बुखारपकताहै दस्तसाफ आता है बुखार उतरताहै (कड-

भार्जित) कुटकीकू तवेपर सेककर चूर्णकरणा बच्चोंके सादेबुखारमें सहत अथवा गुडके संगमिलाके १ वालचूर्ण लेणेसें एकाधदस्त होकर पेट हलका पडता है बुखार उतरजाताहै (३० कपीला) कृमिघ्न तथा दस्तावर है चिपटे चूरणियाकू मिटाताहै कपीला जादा लेणें में आवेतो दस्तके सगपेटमें चूक पैदा करता हैं इसवास्ते दोयसें चार आनीभर गुडमें अथवा छाछमें पीणा अथवा वायविडग सेंचल जवखार जवाहरड वगेरे दवायो कों समवजन मिलाके उसमेंसें आधे रुपेभर छाछमें पिलाणा (३१ कपूर) उष्ण पसी नालाणेवाला और स्नायुको ढीला करता है कपूर खाणेमें तैसें बाहर लगाणेकी बहोत दवायोंमें डाले जाताहै पुरुषकी गुह्येंद्रि वेर २ जाग्रत होकर धातु निकलपडे तब १ वाल-कपूर १ रत्ती अफीममिलाकर उसकी २ अथवा तीन गोलीकर दिनमे २ तीन वखत लेणी इस तरे कितने एक दिन लेणेसें नसोंका उत्पातनरम पडता है और धातु स्रावधध होताहै, तैसें प्रमेहमें उस अवयवके दरदमें १ रत्ती अफीम २ रती कपू-रकी दो तीन गोलियांसे दरद मिटता है, कुचीलेका जहर कपूरसे ऊतरजाताहै फकत कपूर रती १ या १ वालतक देणा चाहिये वीन्छूके जहरमें पानमें और वच्छनाग (मोहरेके जहरमें) पाणीमे लेणेसें फायदा करता है, जिस घावमें जीव पडगयें होय उसमें कपूर भरणेसें कीडे नहीं रहते वडके दूधमें घसकर अंजन आंखमे करणेंसें दो महीनेका फूला कट जाता है, (३२ किरायता) चिरायता ज्वरघ्न है, कडुआ पौष्टिक सारक तथा कृमिघ्न है, बुखारकी दवामें प्रसिद्ध है, बुखारके बहोतसें चूर्णोंमें काढेमें चिरायता पडता है, (लघुसुदर्शनचूर्ण) गिलोय पींपर पीपलामूल कुटकी हरडे सूठ लोग नींमकी अतरछाल तज सुपेद चनण इन सबोंके वजनसें आधाचिरायता मिलाके चूर्ण-करणा साधारण सब बुखारमें अच्छा है, (लघुसुदर्शन न० २) कुटकी चिरायता पित्त-पापडा इन तीनोंका चूर्ण सामान्य बुखारकू पाचन करके मिटाता है, चिरायता बुखा-रकी कम जोरीकू दूर करणेमे जितना फायदा करता है, एसा बुखारकू मिटाणेमें गुण-कारी नहीं है, इसवास्ते उसके सग दुसरी ज्वर हर दवायें मिलाणी चहिये (३३ क-लभा) कडवा पौष्टिक पाचक भेदक साधारण बुखार तथा बुखारकी नाताकतीकू मिटाता है, गर्भवती औरतकी उलटी मिटाता है, अशक्त अदमीकू तथा बच्चोंकों फायदा करताहै, पाचन करता है, तथा कृमियोंकों मिटाता है बुखारकी दवामे डाले जाता है, (३४ कौं-चके वीज) धातुपौष्टिकहे है, मरदमी देणेवाले पाकोंमे गिरता है, (आत्म गुप्तादि चूर्ण) कौंचवीज गोखरू सम वजन दोनोंके बराबर मिश्री दूधमें पीणेसे ताकत वढती है, (वृद्धदड चूर्ण) कौंचवीज गोखरू सुपेद मूसली सुपेदसेमलकीजड आंवला गिलोयसत सबसम वजन सबके बराबर मिश्री दूधसे पीणा बुड्ढेकू जेसें लकडी आधार देतीहै तेसेंना ताकत अदमीयोकू ये चूर्ण ताकत देताहै, इसवास्ते वृद्ध दड नाम दिया है, (३४ —

लथी) मधुर मूत्रल भेदक उष्ण पथरीकूं मिटाणेवाली पसीना हरणेवाली दालोंकी जात धान्य है, दक्षणमें वहोत पैदा होती है, काठियावाडवाले खाया करते हैं, दवामें कुलथी पैसावके रोगपर चलती है, पैसाव अटकके आता होय जलणसें बूंद २ ऊतरता होय या पथरीका रोग होय तो कुलथीकूं उकालकर उसमें नवटांक कुलथी चहिये काढा छाणकर शिलाजीत चद्र प्रभागुगल अथवा सोराखार वगेरे पेसाव लाणेवाली दवायोंके संग एकवाल सींधा निमक मिलाकर पीणेसें पेसावकी पथरी कंकर निकल जाता है, ऐसे रोगीकों खाणेमेंभी कुलथीका उपयोग करणा सींधा निमक डाल इसकी दालखाणी कुलथीकूशेक पीछे आटा करके बदनके मसलावेतो वहोतपसीना आता होय सो बंध होजाय (३६ कस्तूरी) वाजीकर उष्ण वीर्यस्तभक आक्षेप वायूको मिटाणेवाली कस्तूरीभी नकली वहोत आती है, अंबरकी तरे उपयोग होता है, कास कफ दम वगैरे रोगोंमे दुसरी दवायोंके संग दिये जाता है, (३७ कांकच) कृमिघ्न कडुई पौष्टिक ज्वरघ्न तथा पाचन है, बच्चोंके पेटकी कृमि दरद अजीर्ण आफरेमें कांकच के बीजोंको सेकके उसका चूर्ण देणेसें फायदा करता है, विपमज्वर याने ठढदेके बुखार अतर देके बुखार आता है, जिसमे कितनेक दरजे क्वीनाईनके जितना काम करता है, इसवास्ते कांगसीके बीजोंको काली मिरच मिलाके गरीब गांमोंके लोकोंने लेणा चहिये काकचका बीज तीन भाग काली मिरच १ भाग चूर्णकी मात्रा ४ सें ६ वाल छ छ कलाकके अतरसे लेणा विषमज्वर ठंढके सब बुखारो मिटाता है, (३८ काकडा सींगी) कफघ्न है, वहोतसें क्वाथोमें गिरता है, शृंगादि चूर्णमें लिखा है, (३९ काकडीके बीज) ठंढा तथा मूलघ्न है, तरबूजका ककडीका खीरेका कदूका खरबूजेका पेठेका इत्यादिक सब पाणीमें घोट खीरेके बीजोंकों मिश्री मिलाय पीणेसें बंध भया पैसाव खुल जाता है, प्रमेह मूत्र कृच्छ गरम वायुपर अच्छा फायदेवद है, इस बीजोके घोट पीणेसें सराप जादा पीणेसें जो मदात्यय रोग होता है, उसमें फायदा करता है, (४० कांचनार) शोधक पौष्टिक स्तभन और रोपण है. गलेमे शरीरमें जुदी २ जगे गांठे उठ जाती है, उसकू गडमाल कहते है, कच नारकी छाल अथवा कचनार गूगल इस रोगके वास्ते सर्वोत्तमउपाय है गडमालसें हाड सडता है एसे दुष्टरोगकू मिटाता है (कचनारका चूर्ण) कचनारकी जडकी छालकाचूर्ण चावलके धोवणमें पीसकर अदरथोडी सूठडाल उसका वहोत दिनसेवन करणा गडमालामे तथा कूब (पीठका हाडोमें सडणा घुसता है, उससें कूबनिकलतीहै एसे रोगोंमें इस चूर्णसे फायदा होताहै वचपणेमे निकलती कूब होतीहै सो मिटती है, वडीऊमरकी कूबका रोग असाध्यहै (कचनार गुगल) कचनारकी छाल ४०० तोला वहेडा ८ तोला आंवला ८ तोला सठ मिरच पींपर तथा वायु वरणा एकेक चीज चार २ तोला तज एलायची तमालपत्र हरेकएकेक तोला सर्वोका

बारीक चूर्णकर चूर्ण बराबर शुद्ध गुगल मिलाकर गोलियां करणी चूर्णसें ये दवा बहोत फायदे बद है (४१ काथा) स्तंभन शीतल रोपण है पुराणे अतिसारमे अफीम वगैरे दुसरी दवाओके सग देणेसें बहोत फायदा करता है, कितनेकठंढेमलमोंमे डाले जाता है चांदीकूं घावकूं रोपण क्रियाकर फायदा देताहै कत्थेकी मुख सुगधकी गोलियां बणती है पांनवीडेमें खाते हैं (घाव चादीका मलम) कथा मांजूफल बोदार इलायची इन चारोंका चूर्णकर पाणीमें पीसकर लगाणा (कायफल) उष्ण कफघ्न तथा वातहरहै, शरदी तथा शरदीका बुखार और कासमें बहोत फायदे बद है (कट्फलादिचूर्ण) कायफल मोथ कुटकी कचूर काकडासींगी और पोकरमूल सम वजन ठढ लगणेसें जो बुखार चढजाता है तथा छातीमें कफका जमाव होताहै दम गलेमें तांती बोले कफगिरे सहतमे चटाणेसे फायदा होताहै (४२ कालीजीरी) कृमिघ्न शोधक चमडीका दोषहरता तथा वायुहरताहै कालीजीरी खाणेमें तैसें लगाणेमे चमडीके दोषोंकों मिटातीहै बहोत दिनोंतक सेवनकरणेसे चमडीपरका कोढ ददोडे दाद पेटकागोला कृमि पेटकीचूक अजीर्ण आफरे पर उसकी फक्की दोदो रुपेभर सातदिन लेणेसें ठढका तपभी मिटजाता है अवस्था तासीर मुजबकममात्राभी है (कुष्टहरलेप) हरताल १ भागकाली जीरी ४ भाग त्रिफला एक भाग इन सबोंकों गोमूत्रमे पीसलेप करणेसें सुपेदकोढ चित्री कोढपर बहोत जलदी फायदा करता है, काली जीरीकीचा होती है, सोबिलकुल कडवी नहीं लगती और येचा वायु प्रकृतिवालेकु तथा ऊपरके रोगोंमें फायदा करती है, नीबुके रसमे पीस लेप करणेसें जूये मिट जाती है, निर्दोष दवा काली जीरी है, इसमें किसीभी तरेका डर नहीं है, (अवल गुजादिलेप) कालीजीरी कासमर्द पवाडिया हलदी तथा सेंचल इनोंका लेप सब चमडीके दोष सुपेद काला लाल सब कोढ सुधारता है, (४३ कालीपाठ) शोधक सोथ हरता ग्राही मूत्रल कडवी पौष्टिक बुखार तथा दस्तके काढोमे बहुत बरते जाती है, सोजेपर कालीपाठ काम देती है जलमे घसकर लेप किये जाता है, उसका रस पीणेसे सूजन ऊतर जाती है, (पाठादिक्काथ) कालीपाठ इद्रजव चिरायता मोथा गिलोय सूठ पित्तपापडा समवजन मिलाकर २ रुपियेभर ३२ तोला जलमें उकाल ८ रुपेभर पाणी पीणा इससें सादा नहीं उतरे सो तप गरमतप एकातरिया तेजरा चोजरा बुखार जाता है, पित्तकी उलटी मिटती है, (४४ कीडामारी) कृमिघ्न ज्वरघ्न तथा शोथघ्न है, इद्रजव बायविडंग कालीजीरी कीडामारी कांकच जेसीचीजों घरमे रखणेकी जरूरी है, बचोंके वेर २ बहोत कामकी है, बचोंकी उलटी उबाकी पेटमें चूरणीयेपर इसकू अथवा इसके बीजोंकू पीसके दिये जाता है, कीडामारी लिये पीछे ऊपरसें जुलाब लेणेसें चूरणिये कृमियां निकल पडती है, गधवाले गुमडे फोडेमे जीवपड जाता है, उसपर कीडामारीकी लुगदी बाधणेसे जीव मिट जाते हैं, कीडामारीकारस

बच्चेकू ॥ आधे रुपेभर बडेकूं २ रुपेभरसें जादा देणी जहरी असर होकर दस्त उलटी होती है, (४५ कूकडवेल) सखत रेचक छींकलाणेवाली जहरका नाश करणेवाली हिड-कवाय तथा सांपके काटणेमें कूकडवेल देणेसें सखत उलटी होकर कितना एक जहर कम होजाता है, साधारण जुलावमें इसकू वरतना नहीं वहोत नुकशान होता है, (४६ कुवाडिया) पमाडके बीज चमडीका दोषहर ज्वरघ्न दाद चमडीके सब दोष ऊपर लगा-णेसें अच्छा फायदा होता है, बीज और जड दोनू काम आती है, बीजकू थोहरके रसमें भिगाकर गोमूत्रमें महीनपीस लेप करणेसें आगड दोगड गांठभी मिटजाती है, बीजोकों नींबूके रसमे या छाछकी आछमें पीस लेपकरणेसें दाद मिट जाती है, (४७ कवार पाठा) रेचक शोधक पित्तशामक गोलेको मिटाणेवाला वहोतसी दवाइयां वणाणेमें कुंवार पठेका रसकामदेता है, (कुमारिकासव) बहोत उपयोगी वस्तु बणती है, सो योगचिंतामणी वगैरे ग्रथोमें लिखा है, सहजमें नहीं वणता है, इसवास्ते इहां नहीं लिखा है, पेटपर बांधणेमें तथा फोडा फुनसियोंके पकाणेवास्ते कुवारपठेकी फाड-पर ऊपरका छिलका दूरकर साजीखार हलदी वगैरे भरके अंगारमें सेक गरमकर गरम २ बांधे जाता है, पेटका रोग जेसे तिल्ली लीवर गोला मलका रुकणा वगैरोपर कुमा-रिकासब वहोत गुण करता है, दस्त साफ लाता है, सोधक गुण है, इसवास्ते चमडीके रोगमेंभी फायदा करताहै, औरतोंके आर्त्तव दोष सुधारणेवाली दवाइयोंमें कुमारिकासव मुख्य दवा है, जिस २ रोगोंमें दस्तकी कवजी होय और पित्तका दोष वढ गया होय उन सब रोगोंमें कुवार पठा फायदा करता है, (४८ केल) ठढी भारी तथा अस्मरी योनिदोष तथा रक्तपित्तकूं मिटाणेवाला है, केलेके गाभेकारस पीणेसें सखिया सोमल वगेरेका जहर मिटता है, केलेके पत्तोपर सोणेसें दाहकी शांति होती है, (४९ केला) शीतल भारी धातुवर्धक मांसवर्द्धक तथा कफ करता है, भस्मक रोगमें पके भये केला घीके संग खाणा प्रदर वदनका धुपणा मूत्रातिसार ओरतोंके बहुत पेसाब उतरे उसमें पक्का केला आमलेका रस अथवा सूके आंवलाका उकालारस और मिश्री मिलाकर चाटणा केलेका अजीर्ण होयतो इलायची खाणी पेसाबमें धातु जाती होयतो और पाचन शक्ति अच्छी होय तो फजर और सांझ एक अथवा आधा केला घीके सग खावे ठंढा मालमदे तो अंदर सहत मिलाणा (५० केशर) शीतल स्तमन वाजीकर और पौष्टिक है, इसवास्ते बहोतसी पौष्टिक दवायोंमे गिरती है, पाकोमें बकरीका दूध उकालकर उसमें रत्तीसें १ ॥ रत्तीतक केशर डाल पीणेसें नाकमेंसें मूमेसें खासीमेंसें गिरता खून अटकाता है, नाकमें पीनसमें तथा आधाशीशीमें ताजे घीमे केशर घोट उसकी नाकमें नासलेणी गर्भणी ओरतकू रक्तगिरणे लगे तब मखणके सग केशर देणा (मात्रा) १ रत्तीसें ३ तक (५१ कोला) शोधक पौष्टिक तथा पित्तशामक है, सुपेद भूरा पेठा पाक मुरब्बा वणता

है, दवायोंमें काम देता है, पित्तशामकपणेसें रक्तपित्त मगजकी गरमी औरतोके गर्भाशयके कितनेक विकारोंमें अच्छा फायदा करता है, वदनमें ताकत देता है (५२ ककोल) उष्ण दीपन पाचन कफघ्न तेसे कृमिनाशक है, मिरचककोलके नांमसें बजारोंमें विकती है, काली मिरचसें कदमें दूणी होती है, मिरगी यानेवाई तथा हिस्टीरीयामें उसका बहोत फायदा देखा है, इसके दो दो चार २ दाणे हमेस खाणेसें कितनेक दिनोंसें मिरगी बाई हिस्टीरीया उन्माद कम होणे लगता है, उसके आणेमें तफावत अतर पडते जाता है, इस रोगमें कक्कोलकी निश्चे अजमायस करणी बाकीभी काम आती है, लेकिन् अजमायी भई नहीं है, (५३ खडसलिया) जिसकू पित्तपापडा कहते हैं, बुखारमे बहोत फायदेवद है, (पर्पटादि हिम अथवा इकेलेकाहिम– पित्तपापडा मुनका दाख वाला धाणा गिलोय चिरायता समवजन कूट अढाईसेर जलमें भिगाके रखणा येहिम सादे बुखारमें गरम् बुखारमें पुराणे बुखारमें पित्तके बुखारमें इत्यादिमें बहोत फायदा करता है, इस इकेलेके हिममें मिश्री मिलाणेसें एक तरेका ठढा पित्तशामक शरबत होजाता है, वो उलटी गरमवायु चिणखिया पेसाब तथा पित्तके बुखारकू मिटाता है, (५४ खापरिया) खापरियेके काले और भूरे रंगके ठीकरे बजारमें मिलते है, सात दिन गोमूत्रमें रखणेसें कडवे नीमके रसमें घोटणेसें अथवा गोमूत्रमे तीन कलाक उकालणेसें शुद्ध होता है (खापरियेका अंजन) शुद्ध खापरियेकू पाणीमें खूब घोटणा बहोत पाणी डालके हिलाय डालणा तब निकम्मा हिस्सा नीचेजमेगा नीतरे जलकू दुसरे पात्रमे लेकर ऊकालणा उकालतेजो बाकी रहे उसकू त्रिफलाके काढेके पाणीकी तीनभावना देणी सूकेबाद दशमें भागका कपूर डाल मिलाके शीशीमें भर रखणा आंखोकी जलण निर्बलता धूधका जाला धुयें जेसा दिखाई देणा ताजाफूला सब इस अंजनसे अच्छा होता है, (बसत मालनी) एक भाग सुपेद मिरच दोय भाग खापरिया पीसकपड छाणकर गऊके मखणमें खरलकरणा चिकणास सूके जहातक नींबूके रसमें खरल करके टिकियां बांधणी एकेक बाल बसत छोटीं पींपल सहतके सग खाणा दूध भातका भोजन करणा पुराणा धातुगतज्वर प्रदर निर्बलता तथा क्षयमें बहोत फायदा करता है, खापरिया इकेला महीनपीसाभया जलेपर गिरणेसें चोटलगेपर घावपर खुजलीके पर छिडकणेसें सुकाय डालता ह (५५ गरमाला) किरमाला सारक है, थोडी मात्रासें दस्त साफ लाता है, बहोत देणेसें जुलाब लगाता है, कितनेक सन्निपात ज्वरके काढेमें किरमाला डाले जाता है, इसका दस्त सादा हलका और निडर है, इसवास्ते बचोंकोभी दिये जाता है, ॥ रु० भर लेणेसें दस्त साफ आता है, एक भर लेणेसें जुलाब लगता है, बचोंको ऊमर मुजब दो आनीसे चार आनीभर (५६ गाजवा) गळजीभी शोधक शीतल मूत्रल तथा

भगंदर तथा नासूरवालेकों कितनेक दिन देणेंसें फायदा करता है, (गोक्षरादि गूगल) गोखरू ११२ तोला छगुणे जलमें उकालणा आधाजले तब पाणीकू छाणकर उसमें २८ तोला शुद्ध गूगल डालणा मंद आंचसें कुछ गाढा होणे लगे तब इतनी दवाइयें अंदर मिलाणी सूंठ मिरच पीपर हरडे बहेडा आंवला मोथ एकेक ४ चार तोला पीछे चार २ आनी भरकी गोलियां करणी प्रमेह मूत्रकृच्छ्र प्रदर मूत्राघात वीर्यदोष तथा पथरीके रोगमें अच्छा गुण देता है, इसके सिवाय कचनार गूगल सिंहनाद गूगल अमृता गूगल षडगगूगल चंद्रप्रभा वगैरे दवायोंमें गूगल मिलाता है, वादीसें कमरमें पीठमें तथा सांधोमे चसके और शूलचलै उसपर गूगलका अथवा गूगलके संग वादी हरता दवायें मिलाकर लेप करणेसें फायदा होताहै, (५९ गूंदी) पत्तोंका स्वरस ४ रुपेभर उसमे सहत २ रुपेभर मिलाकर पिलाणेसे जलते पेसाबवाला प्रमेह प्रदर उष्णवात उधरस कफ ये सब मिटता है, तजा गरमी मिटती है, खून सुधरता है, (६० गुलबास) धातुपौष्टिक है, उसके सांझकू हमेसां फूल खिलता है, सुपेद लाल पीला और मिश्र रंगके फूलोवाली होती है, गडगूमडपर उसके पानोंकों गुडके संग पीसके लेप करणेमे आता है, उसकी जड धातुपुष्टी तथा धातू जाणेपर बहोत फायदा करता है, इसकी जडका चूर्ण दो दो तोला दूध तथा मिश्रीके संग लेणेसें बहोत दिनोंसें धातू जाती होय सो बंध होजाती है, ये गरम है, ९ इसपर दूध अच्छीतरे खाणा सुपेद फूलवालेकी जड बहोत फायदेबंद है, चोपचीनीभी इसही की जातीहै इसवास्ते इसके जेसाही फायदा करतीहै (६१ गुलाबके फूल) ठंढा रेचक तथा पित्तहर हे इसके फूलोंका जुलाब लिये जाताहै दो रुपियाभर गुलाबके फूलोंकी चाकरके अंदर सूठ और बूरा डालकर पीतेहैं गुलकंदभी बणताहै गुलकंद पित्तकू शमन करताहै औरी शीतला ओखा इत्यादि और भी पित्तके प्रकोपमें गुलकद फायदा करताहै, बणाणेकी विधि पीछे लिखी है (६२ गुवारके पत्ते) गुवारके पत्तोंका साग घीमें रांधकर एक अठवाडे खाणेसें रातींधापणा मिटताहै, (६३ गेरू) ठंढा तथा रोपणहै चमडीके कोईभी रोगमें अथवा मधुमखी टांटियां भ्रमरे आदिकी डंककी जलणकू गेरूका लेप शांत करता हे (गेरूका उबेरा) गेरू ५ भाग फुलाया भया नीलाथोथा २ भाग घराघर घोटकर लेपकरणेसें सादीटांकी तुरत मिटजाती है (६४ गोखरू) मूत्रल शीतल तथा धातुपौष्टिकहै, गोखरू धातुपुष्टिमें अछा है, छोटेगोखरूसें बडे दखणी गोखरू गुणमें बहोत अछे होतेहैं धातूका गिरणा हथरससे भईनाताकती गरमवाय मूत्रकृच्छ्र पेसावकी रेती वगेरे रोगोंमें गोखरू बहोत फायदा देती है, (गोक्षरचूरण)गोखरू तथा तिल दोनोंका चूरण करके बकरीके दूधमें तथा सहतमें मिलाकर खाणेसे हस्त क्रियासें भई नाताकतीईमें फायदा करती हे गोखरूका (लुआव-गोखरू जडसमेत लाकर पीसकर जलमें लुआब बणाणा पेसावकी दाह गरमवायु तथा पेसावके रुकणेकों मिटाता है (६५गोमूत्र) उष्ण

पाचन कफघ्न वातहर तथा कुष्ठहर है धातूओंकों शोधणेमें तथा कितनेक विकारी पदार्थोंके शोधनकरणेमें कामदेताहै खुजाल कोढ शूल गोला सोजा खासी कृमि कामला तापतिल्ली वगैरे रोगोंमें फायदा करता है गोमूत्रसें स्नान करणेसें वदनकी खुजली मिटतीहै, इसवास्ते चमडीपर लगाणेके लेप अथवा सूकी दवाकूभी गोमूत्रमें तइयार करणा चाहिये गोमूत्रकू एकवेरवस्त्रसें छाणकर अदर हलदी डालकर पीणेसें हमेस थोडे दिनोंमें पांडूका रोग उपद्रव युक्त मिटजाता है (६६ गधक) शोधक सारक तथा कृमिघ्नहै गधककी वहोत जात है लेकिन् पेटमें खाणेमें आमलसार जिसकी गोलडली होतीहै सो सोधकर खाणेमें काम आता है और ल्यानलीवाला गधक आता है सो वाहर लगाणेमें कामदेताहै गधक शुद्ध करणेकी अच्छी विधि लिखते है एक कडाईमे पावघी गरमकर गधक डालदेणा आमलसारा १ सेर एक पात्रमें अधसेर तीन पाव दूध डाल उसपर ढीलासा कपडा बांध देकर झट गधक गलतेही घीसमेत दूधवाले वस्त्रपर उधादेणा ठरेवाद दूधमेसे निकाललेणा येगधक सब कार्यके लायकहे रसोंमें येहीकामिलहै केइयक दूधमें दाणेटपकातेहै सोविधि वहोतोंकों माल्रुमहे जादा आंच लगणेसे लाल पडजाता है तो गुण कम होजाताहै दूधपात्रपर ढीला लटकता वस्त्र बांध उसमे गंधकपीस डालदेणा उसपर मट्टीकी पाल दो दोअगल उची लगाकर लोहके तवेपर झग २ ते अगारेधर उसपात्रकी पालपर धरके परेसे झपटणा गधकके मोती जैसे दाणे दूधमें गिरेगा इसमें गधकके जलणेका डर नही है लेकिन् सोधणेमें देरी वहोत लगती है गंधकका मुख्य उपयोग हरसके रोगपर है दस्तकी कवजीपर अजीर्ण हेजे वगेरेमें और जादा करके चमडीके रोगमे खाणेसें तेसे चोपडणेसें फायदा करता है हरसमें गधक दूधके सग लेणेसें फायदा होताहै और दस्तसाफ लाता है हरसके मस्सेमें सें खून गिरता होयतो गधके संग एक दो वाल फिटकडी मिलाकर दूधमे लेणा खुजलीमें गधक दूधमें पीणा वदनके गधकका मालिस करणा अदरके जतुकाविकारमिटजाताहै इकेले गधककी मात्रा २ सें ८ वालतक (गधकवटी) शोधागधक तीनभाग सींधानिमक लसण सूठ मिरच पींपर सेकी हींग तथा जीरा ये सब एकेक भाग मिलाकर नींबूके रसमें याजलमें झाडवेर जितनी २ गोलिया करणी मात्रा २ सें चारवाल अजीर्ण अरुचि हेजा उलटी मौल शूल वगेरेमें फायदा देतीहै (गधणका तेल) शुद्धगधककू दूधमें उकालणा पीछे उस दूधकू जमाकर दहीकर विलोयेवादघी निकले वोही गधकका तेल समझणा ये तेल चमडीपर मसलणेसे वहोत फायदा करता है (६७ घी) वातहर पित्तशामक विषहर रोपण स्निग्ध पौष्टिक तथा रसायण है उन्माद शूल गोला विषव्रण क्षयक्षीणता तथा क्षत वगेरेमे फायदा करता है महनत करणेवालोंके वास्ते अच्छा है, वायुके कोठेवाला हमेस नवटक घी पीवेतो वदनमें गरमी वढकर कुव्वत आतीहै, सोमल वगेरे जहर खाया होय उसकू घी पिलाणेसें जहरकी गरमी कम होतीहै दूसरा घी पिलाणेका ओर भी

लव है जहरवालेकूं घी खूब पिलाकर उलटी कराणी या आपसेंही होयतो घीके चिकणास के संग जहरी पदार्थके परमाणू पकडी जकर बाहर निकलाहै, घी ठंढा है, इसवास्ते चमडीपर लगाणेसें दाह तथा जहरकी जलण कम होतीहै, अंगार तथा तेजाबसें वदन जलगया होयतो घी लगाणेसें वदनमें शांति होतीहै पुराणा घी जादा गुण करता है, जादा पुराणा घी नहीं मिले तो सोवेर जलसें घीकूमथ डालणा ज्यों जादा मथे त्यों अछा होताहै, (घीका उपयोग नीचे मुजब) (१) आधासीसी— गउका अछा ताजा घी सांझ सवेरे नाकमें सूघणा (२) शिरकापित्त— शिरपर ताजा घी मसलणा (३) हाथ पैरकी जलण (तलियोंपर रगडणा) (४) अत्यंतदाह— जादा बुखार वगेरोसें वदनमें जलण लगगई होय तब सोवेरका धोया घी गऊका मसलणा (५) धतूरा तथा रसकपूर का जहर— गऊका जादा घी पीजाणा (६) दारूकानसा— गउका घी मिश्री खेलाणा (७) चोथिया बुखार उन्माद वाईयानें मृगी— गऊका दही दूध तथा गोबरका रसमें गऊका घी सिद्धकरके पिलाणा (८) प्यासका रोग गऊका घी तथा दूध पीणा (९) विसर्प याने रक्तवायु— सो अथवा हजार वेर धोया भया गऊका घी वेर २ लगाणा (१०) बचेकी छातीका कफ— कफका जमाव जमगया होयतो गऊका घी छातीपर धीरे २ मसलणा (६८ घोडेकीलीद) पांचरुपेभर आसरे लीदमें पाचरुपा भर जल डालके मसलके जल छांण लेणा उसमें तलीभई हींगका भूका दो अढाई मासा डालकर पीणेसें भयंकर भी शूल मिटती है (६९) चीणीकबाब—मूत्रल ठंढी दीपन तथा पाचन है प्रमेह गरमवादी तथा जलते पेसाबमें दीजातीहै, कबाबचीणीका चूर्ण २ सें ४ वालचूर्णमें चंद- नके तेलकी पांचचार बूंद डालके पीणेसे पेसाबकी जलण मिटती है (७० चिणेकाखार) दीपन तथा पित्तशामक है खेतमें ऊगेभये चणोके दरखतोंपर फजर झांझरके महीन वस्त्रो- कू ओसके जलपर फेरणेसें पाणी जो लगता है वो चणखार कहलाताहै अजीर्ण चूक शूल- वगेरे पेटके दुखणेमें इसखारमें जरासेकी हींग डालके पीणी उसमे अंग्रेजी दवा सल्फेट ओफ झिंकके जैसा गुणहै (७१ चणोठी) चिरमी शीतल वातहर रोपण तथा पौष्टिकहै, इसके पत्ते मूमें रखणेसें अवाज खुलती है। जडकू पाणीमें घसके उसका पाणी आधाशीशी तरफके नसकोरे फुरणियोंमें सुघाणेसे तीनचार दिनोमें आधाशीशी मिटती है (गुंजादि तैल— भांगरेका रस १ सेर लाल चिरमीका भूका २॥ रुपियाभर तथा तिलका तेल तोला १० इन सबोकों उकाल तेल करणा ये तेल टाटपर लगाणेसें बाल ऊगजाताहै, गिरते भयेवालोंको मजबूत करता हे, सुपेद चिरमीका पाक बणता है वो पुष्ट होता है, लाल चिरमी उलटी करातीहै, और चमडी द्वारा शरीरमें दाखल होयतो जहरका असर करतीहै (७२ चित्रक) दीपन पाचन दमक तथा दाहक है इसकी जडकी छालकू छाछमें पीस लगाणेसें (बलस्टर) फफोला उठता है (चित्रकलेप) चित्रक टकणखार हलदी

तथा गुड समभाग पीस लगाणेसे हरसके मस्से गिरपडते है कितनीक दवायोंमें चित्रककी जडका उपयोग होताहै (७३ चीमेड) आखके रोगमें अछी है(भरण) चीमेडके बीज भिगाकर बाद दांतोंसें फोंतरे उतारकर अदरके मींजींकू महीन चाबकर आंखमें आजणा इस भरणेकू अवलीके अदरके गिरके सग मिलाकर आजणेसें आंखकी गरमी दुखती कड-कती आख जलदी आराम होतीहै (७४ चूना) दवामुजब चूनेका नितरा भया जल काम देता है पेट छाती तथा वादीकी सूजन और शूलपर चूना और सहत मिलाकर लेप कर-णेसें फायदा होताहै चूनेका नीतराजल उलटी मिटातीहै चूना और हरतालका लेप वालोंकों उडा देताहै, पत्थर शख कोडी मूंगिया सीप इनसबोकी भस्मी चूना है मोतीत कात (७५ चोपचीणी) शोधक तथा पौष्टिक है, उपदशयाने गरमी रोग जब शरीरमें पुराणा होकर फूटता है शीतलाजैसें चट्टे पडते हैं चमडी स्याह होजाती है सांधोमें दरद और पकडीज जाते हैं उसमें चोपचीणी अछीहै (चोपचीणीका पाक) चोपचीणीका चूर्ण तो ४८ बराबरसें जादा घी डालकर सेकणा पीछे ५६ रुपेभर बूरेकी चासणी करके वो चोपचीणी तथा पीपर पीपरामूल सूंठ मिरच तज अकलकरा लोंग इन सबोंकू एकेक रुपिया भरलेके इसमें पीसकर मिलाकर लड्डुबांधणा ये पाक हमेस नवटाक खाणा (७६ छाछ) छाछकी जाति गुणदोष आगे लिखा है दवामें छाछके गुण इसमुजब हैं, (१) सग्रहणी—फकतछाछ पीके रहणेसें असाध्यसग्रहणी भी साध्य होजाती है (२) बध-कुष्टमें सोवा तथा सेंचल डालकर छाछपीणी (३) हरसमें चित्रकके जडकी छाल पीसकर गऊकी छाछ या दही लेणा (७७ छाण) गऊका गोबर गरमकर काचपर सेककर बांध-णेसे निकली भई काच अदर घुसती है भैंसके गोबरकू पाणीमें हिलाकर उसपाणीकू छाण उसमें बूरा डालकर पीणेसें परमेंकी सखत जलण मिटजातीहै, (छाणेकी राख) शीतला निकलणेसें जो फफोले बदनपर चकचकते फूटजाते हैं उसपर राखकू कपडेसें छाणके दबाणेसे सूकजातेहैं (७८ जवखार) जवकी गीली डाखलियोंकों जलाकर राखकर खार निकालणेकी विधिसे खार निकालणा इससें उधरस कफ तथा बच्चोकी छाती भराणीमें दुसरी दवायोंके सग अनुपानतरीके वापरते हैं, खासीमे १—२ रत्तीभर जवखार लेते हैं जवखारमें बहोत भाग कारबोनेट ओफ पोटाशकाहै, (७५ जाई) रोपण है औरतों का योनिदाह व्रण खुजाल तथा फोडे फुनसियें जाईके पत्तोंकी लुगदी बाधणेसें अछे होतेहैं (जात्यादि घृत) जाई पटोल तथा कडवा नींब इन तीनोके पत्ते कुटकी हलदी दारूहलदी उपलेट मजीठ नीलाथोथा मैण जेठीमध करंजके बीज तथा चाला ये सब एके कतोला चूर्ण किया भया घी ५१ रुपेभर पाणी २०४ भर विधिमुजब घी सिद्ध करणा (८० जामुन) गुणमें ग्राहीहै वीछूके डकपर पत्तोंकी पोटिस गुण करतीहै, पथरीके रोगमें जामुन अछी है, मीठे पेसाब उतरे उसमें जामुनके बीज दियेजाते हैं रक्तातिसारमें जामु-

नके छालकारस दूधमें पीसकर सहत डालकर पीणा मधुप्रमेहपर जामुन अछा
देताहै (८१ जावत्री)उष्ण तथा दीपन है गरम मसाले खुसबोईमें लीजाती है तथ
अजीर्ण अरुचिपर जावंत्री देते हैं (८२ जीरा) दीपन पाचन ग्राही जरा उष्ण रुचि
गर्भाशयकूं सुधारणेवाला युक्तिसें उपयोग करणेसे बहोत फायदेवंद है शरीरके
बुखारकी गरमी निकालणेमें जीरा फायदे मंद है जीराकी भूकी फजरमें पैसेभर
मिश्रीया पुराणे गुडमें खाणी केइ यकदिन खाणेसें बुखार या बुखारकी गरमी व
निकल जाती है गायके दूधमें सिजाकर सुकाकर खाणेसेभी एसाही फायदा कर
जीरा मिश्री चावलोंके धोवणमें पीणेसें औरतोंका प्रदर धोलेका लालका रोग मि
डाभकीजड उसमें जीरेकी भूकी मिश्री डाल पीसकर पीणेसें स्त्रियोंका धातु गिरत
होताहै (८३ जेठीमधु) मोलेठी शीतल कफघ्न तथा पौष्टिकहै सूपकजावे कठ बै
खालीखासी आवे तब जेठीमधकी जड अथवा रवेसूस मूंमे रखणेसें फायदा होताहै
केजडमें मोलेठीजैसा गुण है उसके एवजीमे चिरमीकी जड वपरातीहै देशी ओ
कितनेक जीवनीय गणके उत्तम दवायें हैं, उसमे मोलेठीकू भी गिणी है मोलेठी पुष्ट
इसका चूर्ण घी तथा सहतमें चाट ऊपरसें दूध पीणेसें वीर्यकी वृद्धि होती है, और
प्रदर रोगमें लालपाणी गिरता होय उसमें जेठी मध १ तोला चावलोके धोवणमें
४ तोला मिश्रीडाल पीणेसें फायदा होताहै छातीमेसें खून गिरताहोय एसे (उरक्षत रोग
जेठी मधुके काढेमें पीपर और भीमसेनी कपूरका चूर्णपीणा खूनकी उलटीमें मोलेठी
सुपेद चंनण दूधमें घसकर पिलाणा और स्वरभग याने साद बैठ गया होय तो मोलेठ
चूर्ण मिश्रीडाल दूधमे पीणा (८४ जहर कुचीला) पौष्टिक वायुहरता तथा पाचक
इसकू बहोत सावधानीसे वरतणा कारण जहर है जादामें जादा १ वालसें जादा म
लेणेसें इसका जहरी चिन्ह मालम देता है, इतनाहीनहीं बहोत दिनोंतक इसका से
करणेसें भी नुकशान होताहै, लेकिन् युक्तिसे इसका उपयोग होयतो बहोत फायदेव
(कुचीलेकी काफी) कूचीलेकू गोमूत्रमें उकालकर ऊपरका छिलका दूरकर घीमेंतल का
करणी ये काफी अजीर्ण पेटचूक तथा अग्निमांदमें लेणी अछीहै, जुदी २ वादीका रो
(संधिवात) कमरझलणी अर्द्धांग पक्षाघात अर्दित वगेरेवायु जीर्ण भये पीछें उसमें ज
कुचीला बहोत फायदा करता है इन रोगोकी शरुआतमें उनोकी तीक्ष्णतामें जहर कु
लादिया जायतो फायदेके वदले नुकशान करता है पीठके वरडा जो हाडहै उसमें रो
होणेसे हाथपांवोंमें धूजणी होजातीहै, और कितनीक वखतलिखते २ हाथ धूजताहै
और अगलियेंासें कलम नहीं पकडे जाती एसे रोगोंमें कुचीलेका दोयच्यार महीना सेव
करणेसें फायदा होताहै धातूका गिरना ... बहोत फायदा करत

ी गोलियों चणाणी गठिया कमरका भारीदरद अर्द्धांगवायु अर्दितवायु पक्षाघात वगेरे ादीके जीर्णरूपमें मात्रा १ रत्तीकी कुचीलेकू जलमें घसकर लेप करणेसें सोजेकू उता- ताहै, (८५ टकणखार) मूत्रल शीतल कफघ्न ऋतुलाणेवाला कष्टीकू वचा जणाणेवाला ारहर तथा रोपण, टकण सुहागेकी दो जात हैं पाटिया (तेलिया) दुसरा सुनारोकें ामवाला दवामें दोनु काम आतेहै शुद्धकरणा अथवा अग्रेजी दवा वेचणेवालोके पास शुद्ध टकण (बोराक्ष) मिलता है सोवरतणा पेसावकी रेती तथा जलणमें ठढे जलके संग ीणेसें अथवा गरमपाणीमें डाल पिचकारी मारणेसें पेसाव खुलास होकर आराम होताहै, ूमें चांदी घाव गिरगया होय तो पावजलमें ४ वाल टकण डाल कुरला करणा वच्चेके ूके रोगमें टकणकू सहतमे मिलाकर अगलीसें लगादेणा टकण दांतोंकोंभी सफा करणे- वाला है, इसवास्ते दतमजनमेभी डालेजाताहै टकणके जलसें मसलकर धोणेसें दाद खाज लूखास तथा शिरके वाल उडणा (उदरी) दाद अछा होताहै (८६ कूगली) कांदा उष्ण वातहर तथा वीर्यवर्द्धकहै, कांदेका रस सूघणेसें जागृति तथा शुद्धी आतीहै, और हैजेमें शीतांग होताहै, उसमें कांदेकू मसलणेसें वदनमें गरमी लाताहै, वेर २ उसकू पिलाणेसें दस्त उलटी रुकजातीहै घरमें कादोंकों टागदे तो हवाकी शुद्धि होतीहै, हेजा- मरीके जीवजतु उस घरमें नहीं आते हैजेमें पिलाणेसें हैजा मिटताहै, शाक अथवा मुरब्बा घणाकर ताकतके वास्ते लोक खातेहैं. उनोके कामेच्छा बढतीहै, कादेकारस आदेका- रस मिश्री सहत तथा घी हमेस फजरमें पीणेसें गईमरद मी पीछी आतीहै, वीर्यकी वृद्धि होतीहै कादेका रस नाकसें पीणेसें वादीके असाध्य रोगमेंमी फायदा होता है रसमें एक रत्ती अफीम मिलाकर पीणेसें अतिसारका दस्त वध होताहै अम्लपित्त जिसमें गले और छातीमें जलण होतीहै उसमें सुपेद कादेका रस मीठा दही मिश्रीमिलाकर पीणा वद तथा दुसरीगाठ कठवेलपर कांदे सिजाकर उसमें घी हलदी डालकर फेर गरमकर गरमा- गरम पोटिस वांधणी येवडी ऊमदा पोटिसहै, (८७ डीकामाली) कृमिघ्न तथा वातहरहै वचोके पेटकी चूक गोटा कृमि उलटी वगेरे रोगमें दियेजातीहै, पेटपर सूकीभी मसले जातीहै, इद्रजव कालीजीरीकी माफक समझवार औरतें निडरपणे ऊपर लिखे मुजब घरमें रखकर उपयोग किया करती है, (८८ तुकमरिया) शीतल है, तुकमवा लिंगाका लुआव तुकमरीआ १ रुपेभर मिश्रीका जल २ रुपेभर मिलाणेसें चिकणा लुआव होताहै यो पीणेसें पेसावकी जलण गरम वायु लू तथा पेटकीदाहमें फायदा चदहै (८९ तज) उष्ण दीपन वातहर तज खाणेसें अथवा उसकी उकाली पीणेसें उलटी तथा मूकी मौठग्लानी मिटतीहै शरदीसें शिरचढा होयतो तजकू घस गरमकर लेप करणा शूलके सग मरोडेमें ४ वाल चीलका गिरतज १२ वाल ओर ४ वालगुड दहीमें मिलाकर पीणेमें फायदा होताहै (९० तमाखू) कफकू शमाणेवाली रगोंकों ढीली करणेवाली तमाखू मादकहै, जादालेणेसें

नसा चढता है सूंघणा चावणा और पीणा एसें तीनकाममें लोक लेते हैं लेकिन् थोडे दिन लियाके झलजातीहै दांतकारोग दम श्लेषम वगेरेमें दवातरीके तीनोंतरे उपयोग करणेसें कुछ एक फायदा देतीहै लेकिन् शोखसें जो वापरते हैं उसमें चडानुकशान है खून बरावर फिरता नहीं फेफसेकूं इजा पोहचतीहै, खालीउधरस पैदा होतीहै शरीर फीका और पीला पडताहै मगज तथा आंखकू इजा पहुंचतीहै जादा वरतावेसें अदमी अंधा होजाताहै मधुमखी भमरी वगैरेके डंकपर तमाखू लेपकरणी सापके जहरमें उलटी कराणेकू नव २ टांक पाणीमें मिलाकर दोचार वखत पिलाणी जूओंका इलाजभी ये पाणीहै फेर आरीठेके पाणीसे सिर धोडालणा (९१ तांदलजा) चंदलिया चोलाई सारक शोधक शीतल पित्तशामक खुराकमें उत्तम गुणकारी शागदवाका काम चंदलिया करताहै, ये तीनों दोषमें अछा है, जादातर पित्त शमनकरणेवालाहै इसवास्ते इसकू जलमें वाफ-कर उसका जल पीणेसें कलेजेकी गांठ सोजा यकृत् तापतिल्ली नरम पडतीहै इसके रसमें पोटासका विशेप भाग होणेसें ये जहरका नाश करता है सापवीछु सोमल तथा गरमीके रोगकी जहरी असरकू निकाल डालता है वाफकरके पेटपर तथा गांठपर बांधणेसें पेट नरम पडता है, पारा वगेरेका जहर वदनमें फूट गया होय रहा होय तो एकाध अठ-वाडियेतक पाव २ चंदलियेका रस घीमें पीणा चदलियेकी जडपीस उसमें रसोत सहत चोगुणा चावलोका धोवणडाल थोडे दिन पीणेसें औरतोंका प्रदररोग मिटताहै, (९२ त्रि-फला) हरड बहेडा आंवला ये तीन फलसामिल मिलताहै तब त्रिफला कहलाताहै गुणमें ठंढा शोधक पित्तशामक तथा दाह शामक हैं तजागरमी खूनकी गरमीकू वो फायदाबंधहै (त्रिफलाचूर्ण) हरडे १ भाग बहेडा २ भाग आंवला ३ भाग इसका महीन चूर्ण शिरकी गरमी वदनका तपणा पेसावकी जलण गरम वाय प्रदर चिणख कामला आंखकी गरमी झांखा झमर शीलस वगेरे रोगोंमें त्रिफलेका चूर्ण सक्करमें अगर जलमें लेणेसें अछा फायदा देताहै मात्रा अढाइ मासेसें पांचमासा (त्रिफलाहिम) हिमके कुरले करणेसे मूकी चांदी जखम गरमी मिटतीहै, आंखोपर छांटणेसें जलण शिरकी गरमी तेसें आंखोंके सांमनें धूंवेका गोटा दीखेसो झमर वगेरे सुधरता है आंखका तेज वढजाता है (त्रिफलाकी भस्मी) जलाकर राखकर थोडा कथा मिलाकर येगरमीकी टांकीपर भरणेसें जलदी आरा महोतीहै, (९३ तुलसी) कफघ्न तथा उष्ण है तुलसीके पत्ते वायूकू दूरकर वदनमें गरमी लाती है, इसके पत्ते हिचकी शूल वगैरेमें अनुपान तरीके काम आता है पान तथा आदेके टुकडेके सग दांतके नीचे चावणेसे दांतोकी शूल मिटतीहै (तुलशीका स्वरस) तुलसीके पानोकों जलमे पीसकर रसनिकाल २ रुपियाभर उसमें कालीमिरच अढाई मासेडा लकर ठंढके बुखारमें आणेके २ घटे पहले तीनचार पाली देणेसें विपमज्वर शीतज्वर मिटता है तुलछीके रसमें इलायची चूर्ण डालकर पीणेसें तीनों दोपोंकी उलटी भ्रम

होती है, बच्चेकी उलटीमें रसमें सहत मिलाकर देणा. (९४ तैल) तिल) चिकणा स्पर्शमें शीतल पचनेकी वखत तीखा और पित्तल व्रणशोधक मूत्रल कांतिकारक तिलोंकी सूकी लकडीकू जलाकर खार निकालते हैं, वो खार मूत्रल तथा पेसाबकी कंकरी तथा पथरीकूं निकाल डालता है, ये खार सहतमे मिलाकर चाटकर ऊपरसे गऊका दूध पिये तो अटकाभया पेसाब खुल जाता है, जलण मिटती है, अगारसे जले भयेपर तेल और कली चूनेका नितरा भया जलकू मथफुलर्मा बणाकर लगाणेसे पट्टी मारणेसें और ऊपरसें तेल सींचते जाणा जलणेका जखम मिटता है, तेलमे सींधानिमक मिलाकर कुरला करणेसें दांतका दरद मिटकर दांत मजबूत होता है, तिलोंको दूधमे पीस अथवा तिल और वायविडगको जलमें पीस शिरपर लेप करणेसे आधासीसी मिटती है, कुत्तेके जहरऊपर तेल खल और जरा आकका दूध अथवा जडकी छालका चूर्ण अथवा जडका चूर्ण गुड सबके समवजन मिलाके पीणेसें जहर उतरता है, धतूरेके जहरपर तिलका तेल गरम पाणी मिलाकर पिलाणा, हरसके मस्सेमेंसे पडता खून तिलोंकों मखणमें पीस चाटणेसें मिटता है, गर्भिणी तथा सूतिकाके खूनके गिरणेमें तिल जव तथा सक्कर सुपेद तीनोंका चूर्ण सहतमें चाटणा, शुक्राश्मरी अर्थात् गिरते भये वीर्यकूं रोकणेसें वीर्यकी पथरी बध जाती है, उसमें तिलोंके लकडोंकी राख सहतमे चटाणी औरतोंका ऋतुबध होताहै, और पेडूमें (रक्तगुल्म) खूनका गोला चढता है, उसमें तिलका काढाकर उसके अदर सूठ मिरच पीपर हींग और भारगमूल इन सबोंका चूर्ण अढाई मासा या पांच मासा डालकर पीणेसें ऋतु आता है, और गोला मिट जाता है, रक्तातिसार, खूनके दस्त लगणेसें कालेतिल १ भाग बूरा या मिश्री दो भाग बकरीका दूध ४ भाग सामिल करके पीणा, नारूपर तिलकी खल छाछमें पीसकर बांधणा (९५ थोर) उष्ण शोधक तथा स्नायुनसोंकों ढीला करता है, थोरकी बहोत जाति है, डडेवाली कटेवाली पजेवाली त्रिधारी चोधारी वगेरे दवाके काममें जादातर डडेवाली थोर कामदेती है, और वो खुरसाणीके नामसे प्रसिद्ध है, डडोको वाफके रस निकाले जाता है, इसकी जलाई भई राख काम देती है, इस रसकी दूसरी दवाओंको भावना दीजाती है, राखकू अरडूसेके रसमें देणेसें कफ नरमपड बाहर निकल जाता है, जलदर वगेरे पेटके रोगवास्ते जो जो वादी हरता दवाइयें है, उसकू थोरके रसकी भावना देकर देणेसें बहोत फायदा करतीहै, इसका दूध है, सोजहरहै दूधकू दरदकी जगे लगाणेसे फफोला उठता है, सांधोंकी वादी तथा गरमी सुजाक दरदवालेकों केइ दिनोंबाद गठियावायु होजाती है, उसपर तीन २ चार २ दिनके फासलेसें तीनचार वखत इसका दूध लगाणेसें फफोला उठता है, और दरद मिट जाता है, सूकी खुजलीपर दूध लगाणेसें एक वेरतो पक जाता है, लेकिन् पीछे मिट जाता है, मुलायमजगेजेसें आख भगद्रीपर

दूध थोहरका लगाणा नहीं, जो दूध लगाणेसें तकलीप होयतो घी लगाणा दूधकू सुकाकर गूंद जेसा करकेरखे तो उन मान मुजब मात्रा देणी (९६ दही) दहीके गुण दोष तीसरे प्रकाशमें लिखा है, दवामें दही इस मुजब काम देता है, (१) सूर्यावर्त्त– दिन चढणेके संग शिर दुखणेलगे सो (सूर्यावर्त्त) शिरके रोगमें सूर्य ऊगणेके पहली दही मीठा और भात खाणा (२) तृष्णा– (प्यास) श्रीखंड वणाकर खिलाणा अथवा मीठादही १२८ तोला वूरा ६४ तोला घी ५ तोला सहत ३ तोला काली मिरचका चूर्ण २ तोला सूंठका चूर्ण २ तोला इलायची २ तोला सब मिलाकर काचके या कलीके वासणमें रखकर थोडा २ खाणा (३) अजीर्ण) दही अथवा बराबर जल मिली भई छाछ पीणी (४) हरस) चित्रकके जडके महीन चूर्णकूं पाणीमें पीस दही जमाणेके पात्रमें अंदर लेप करणा उसमें दही जमाकर अथवा छाछ करके पीणी अथवा भोजनमें लेणी (९७ दशमूल–) उष्ण वातहर त्रिदोषहर दशवनस्पतीकी जडसो दसमूल इनोमें बहुत मतभेदहै तोभी सुलभता लिखतेहै जगलीगांजा बहुफलीकी जड पसरकंटाली खडीकंटाली तथा गोखरूकी जड यहतो लघुपंचमूल और बीलकी जड अरणीकी जड अरडूसेकी जड श्रांकचकी मूल खाखरा पलासकी जड (ये बृहत्पचमूल) जंगली गांजेके बदले कोइ समेरवा और कोई कासंदरीकी जड लेते हैं, और बहुफलीकी जगे पीलूकी जडभी लेते है वायु तथा कफका सन्निपातज्वर सूतिकावाली स्त्रीका सर्वरोग ऊरुस्तभ शूल दम खासी मींट पसीना शीतांग वगेरेमें अछा फायदा देताहै (९८ दूध) दूधके गुण तीसरे प्रकाशमें लिखाहै इहां दवा मुजब उपयोग लिखतेहैं गऊके दूधका गुण सर्वोपरी है इहां उसकाही ग्रहण हैं (१) आधाशीशी–) दूधकी मलाई अथवा विदाम और वूरा डालकर दूधकी खीर खाणी (२) (धतूरेकाजहर–) सहज साधारण धतूरेका जहर दूध मिश्रीसें दूर होता है (३) सोमल–) नीलाथोथा–) वछनाग–) इन जहरोंपर उलटी होय जहांतक दूध पिलाणा कै बद होय वादनहीं पिलाणा मिश्री डालकर पिलाणा लेकिन् जहर जादा खालिया होय तो इस साधारण सादे इलाजपर विश्वास रखकर निचिंत नहीं वैठे रहणा दुसरा वडा इलाज करणा (४) गंधकका जहर, दूधमें घी डालकर पीणा (५) जीर्णज्वर–) दूधमें घी सूठ खारक कालीदाख डालकर पीणेसें पुराणाज्वर मिटताहै (६) मूत्रकृछ्र–) दूधमें गुडडालके पीणा (७) रिदयरोग–) याने छातीके रोगमें–दूधमें भिलावेके तेलकी १० वूंद डालकर पीणा (८) रक्तपित्त–) दूधमें पांचगुणा जल डालके पाणी जलेवाद ठढाकरकेपीणा (९) हाडोंका टूटना–) दूधमें वूरा डालकर गरमकर पीछे उसमें घी तथा लाखका महीन चूर्णडालकर ठढाकरके पीणा (१०) श्लेषम–) शरदी, आधादूध आधाजल अढाई मासे या पांच मासे वूराडाल आधे रुपेभर सूठकी भूकी चार पांच विदाम दोयचार केशरकी पांखडिया डाल पाणीजले तहांतक पीछे सूंठके टुकडे

निकाल दूधपीजाणा विदाम चावजाणा इसतरेका दूध तयार कर रातके सोंणेके वखत पीणा फेर जलपीणा नहीं दूधमें मिश्री और काली मिरचका भूका डालकर पीणेसे भी झुखाम मिटता है (११) महनत काथकेला– महनत करके थकाभया अदमी गरम किया भया दूध पिये तो थकेला उतर जाताहै और हुसियारी आतीहै, (१२) पुष्टि– (वीर्यवृद्धि–) गरम करेभये दूधमें घी तथा चूरामिलाकर पीणा इसके जेसा धातुपुष्टीका कोइ दुसरा इलाज नहीं (१३) इद्रीजुलाव–) दूध तथा जल सगमे मिलाकर पीणेसें पेसाब बहोत आता है, (१४) बचेके (दूधकी उलटी–) चूगणेसें या दूधपिलाणेसें जो बच्चाके करके दूध निकाल डालता है उसकू दूधके सग चूनेका नितरा भयाजल डालकर पिलाणेसें दूधपेटमें रहजाता है (९९ देवदारू–) खेदल कफघ्न तथा पेसाब लाणेवाला है (देवदार्वादिकाथ–) देवदारू वच पींपर सूठ कायफल मोथ चिरायता कुटकी धाणा जोहरडे गजपींपर गोखरू कौंचबीज धमासा भोंरीगणी अतीस गिलोय काकडासींगी और स्याहजीरा सब चीजोंकों समवजन लेकर उसमेंसें २। रुपिया भरसे ३ रुपयेभर तककी पुडी बणाकर सोलेगुणे जलमें काढा करणा ये काढा प्यास औरतोंके सूआरोगमें बहोत फायदा करताहै, सूआरोगमे बुखार सोजा दस्त शूल हिचकी वगेरे डरावणे रोगोंमें फायदा करता है थोडादिन देणेसे जापेका रोग मिटजाताहै (१०० धतूरा–) नशोंकों ढीला करणेवाला तथा पीडाशामक धतूरा जहर है, इसवास्ते विद्वान वैद्यकी या डाकदरकी सल्ला विगर दवातरीके भी कभी नहीं वरतणा इसवास्ते इहां सक्षेप वर्णन कराहै शीतज्वरवालेकू १० बूद चढणेके डेढ कलाक पहले पत्तोंके रसकी आनेभर गऊके दहीमें देणेसें शीतज्वर मिटता है धतूरेके पत्तोंकी तथा डांखलियोंकी बीडी दमके जोरकों शातकर देतीहै जो कमी इससें दमका रोग नहीं मिटे तोभी रोगीका दरद तथा घबराट कमहोकर वायु और कफ दबजाताहै तबदमभी बैठजाताहै लेकिन् वो बीडीपीती वखत बहोत सभाल रखणा चाहिये क्योंके शक्ति ऊपरांत पीणेसें तोफान करजाताहै, धतूरेके पत्तोंका लेप स्तनपकणा तथा स्तनोंमें दूध चढजाता है उसके सोजेकू मिटाता है (१०१ धाणा–) दीपन तथा पित्तशामक है (धान्यादिहिम–धाणा तथा दाखका हिम येहिम आधाशीशी तथा गरमीसें शिर चढताहै, उसकू मिटाता है धाणाकू रातकू मिश्रीके जलमें भिगाके रखणेसें फजर घोट पीणेसें हाथ पैरोंकी जलण मिटतीहै, (१०२ द्राख-) मुनक्का दीपन शीतल पित्तशामक तथा सारक याने दस्तावर है दाखोंकी बहोत जातिहै लेकिन् दवामें और बेमारकू खिलाणेमें काली मुनक्का अछीहै (द्राक्षासव) इसकी दवा बणतीहै सो क्षयजेसें बेमारकू सतेज रखकर शक्ति देती है दवा मुजब दाख इकेली कम चलती है (द्राक्षादिहिम–) मुनक्का पित्तपापडा तथाधाणा इस हिमसें पित्तका बुखार जलदी पकताहै सादा गरमीका तप इसहिमसें बुखारकू कमकर देताहै शिरकीऔर आंख-

की गरमी शांत होतीहै उनालेकी सखत गरमी तथालूमें दाख व्रियालीका हिम सरबत प्यास तथा बुखारकू कमकर देती है दाख हरड बहेडा आंवला पींपर मिरच तथा खजूर ये सब सम वजन लेकर सहत घी मिलाकर गोली चणाणी सूकी खासी तथा अवाज बैठे जिसमें फायदा करती है (१०३ नगड--) संभालू--) वादीहर तथा सोजनहर है सूजन तथा गांठपर संभालूके पत्तोंकों वाफकर बांधतेहै अछा फायदा करता है, (१०४ नवसादर--) पित्तकू श्रवाणेवाला ऋतूलाणेवाला शोधक तथा तीक्ष्णहै दुसरी दवाइयोंके संग खाणेमें दियेजाताहै शरीरके कोइभी भागमें खूनका जमाव होकर सोजन होगया होय तो नवसादरके पाणीका वस्त्र भिगाकर रखणेसें सूजन पकता बधहोकर खूनविखर जाता है सुआवडपीछे तुरत औरतोंके स्तनमे दूध पैदा होते कितनीक वखत उनोंमें सो जा तथा दरद होताहै जो उस स्तनका जलदी इलाज नहीं किया जायतो स्तन पककर फूट जाताहै, और कठण गांठे बध जातीहै नव सादरका भीगा कपडा फायदा करताहै अडवृद्धिरोगमें आंतरे उतरते है उसमें जो आंडोपर नवसादरका भीगा कपडा धरणेसें आंडोके सुकडतेही आंतरे उचे चढजातेहै और सोजा नरम पडताहै और उलटी वगैरे दुसरेभी चिन्ह होते होय सो बंध होजाताहै (१०५ नसोत--) दस्तावर झुलाबमे अम्ल-पित्तरोगमें काम देतीहै निसोत ॥ भर आंवले ॥ रुपेभर पावजलमें उकाल आना जल रखके ठंढाकर छाण मिश्री सहत उनमान मुजब डालकर पीणेसे बहोत दिनोंका आम्ल-पित्त महीनाभर पीणेसें मिटजाता है (पथ्य) दूध भातमिश्री (त्रिवृतादि चूर्ण दस्तावर--) निशोत ४ भाग सूठ १ भाग सींधा ॥ भाग मात्रा अढाईमासेसें ५ मासा (१०६ नाग केशर--) शीतल ग्राही दीपन नागकेशरका चूर्ण बूरा तथा मखणमिलाकर खाणेसें मस्से; मेंसें गिरता खून बंध होजाताहै, मात्रा २ आनीसें चार आनीभर औरतोके पाणी जेसा प्रदर बहताहै उसमें नागकेशर छाछमें पीस तीन दिनपीणा छाछभात भोजन करणा रक्त-प्रदरपर चूर्ण घीमें देणा (१०७ नालियर--) शीतल तथा पेसाब लाणेवाला नालियेरका पाणी ठढा तथा मूत्रल है, इसवास्ते पेसाबकी जलण मूत्रकृच्छ्र तथा प्यासपर देणेमें आता है टोपसीकू जलाकर लगाणेसे अगारसें जलेवाद जो जखम होजाता हैं सो रुक जाताहै टोपसीकू याखोपरा जलाकर लगाणेसें अगारसे जले बाद जो जखम होजाताहै, सोरुकजाता है, टोपसीके भूकेका धूआपीणेसें हिचकी बैठजातीहै इसकी जोटी जलाईराख रेसमकी राख मोरके चदेकी राख जीराकोरेतवेपर भूनाभया पींपर लोंग तवेपर उनारा भया सहतमें या अनारके सरवतमेंके उलटी होते ही दोतीनवखत चटादेवेतो उलटी हिचकी बध होजा-ती है (शूलहर चूर्ण--) नालेरमें छेदकरके अदर संचलनिमक भरणा पीछे छेदकू बधकरके कपडमिट्टीकरणा फेर छाणोके जगरेमें सिलगा देणा पीछे इसका चूर्ण पीपरके चूर्णके संग खाणेसे शूल मिटती है (१०८ पारा) शोधक तथा पौष्टिक शास्त्रोंमें पारेका अनत

गुण लिखा है सो सच है जो पूरे सस्कारसें पारेका शोधन मूर्छित कर देणेमें आवेतो अद्भुत गुण दिखाताहै लेकिन् पारेके शोधनवास्ते तथा उससें बडे दरजेका रस बणाणेवास्ते जादा अनुभवकी जरूरी है पारेगधकसें हजारो रस बणते हैं जिसमें चद्रोदय मकरध्वज रससिंदूर सुवर्णपर्पटी पचामृतपर्पटी चिंतामणिरस लोकनाथरस वन्हिरस त्रिविक्रम आदि मुख्य है पाराके बनावटकी चीजों अनुभवी वैद्योंसिवाय दुसरे पासलेणेमे जोखम है, भिलावा शुद्ध १ तोला पाराशुद्ध १ तोला अजमोद १ तोला अजवाण १ तोला १ खुरासाणी अजवाण दूधमे सुद्धकरी १ तोला जोड अजवाण १ तोला तिल १ तोला सबकू ४ पहर खूब खरलकर झाडबेर २ जितनी गोली करणी गोली १ दहीकी मलाईमें लपेट प्रभात अधर निगलजाणी १सांझकू(पथ्य)अलूणी रोटी गहूकी और घी दहीकी मलाई या मीठा दही दिन ७ दवालेणी १४ दिनपथ्य इससें सुजाक गरमी गरमीकी गठिया वदन फूटा दिन ३० लेणेसें भगदर नासूर कीडीनगरा प्रमुख सब मिटजाताहै, मरदमी आतीहै, भूखक्रांतिकामेछा बढतीहै, केइयक लोककेरीके अचार तेलके वेंगण बडोंमें भीये पारे हींगलू रसकपूरकी गोली इस रोगपर देतेहैं अशुद्ध पारा वगैरेकी दवा मूर्ख अनाडीयोंसें-बचके रहणा पारामलममे गिरताहै शुद्ध होयतो अछा नहीं तो जादा नुकशान सोवेर वस्त्र छाणेवाला नहीं करता(पारेकी कजली) गंधकपारा सम वजन लेकर४पहर घोटणेसें खरलमें स्याह कजली होतीहै गरमीकी चादी इसके लगाणेसें मिटजातीहै (पारेका मलम–) पारा १ भाग सादा मलम तीनभाग मिलाणा ये वदवगेरे उठती गाठोंपर लगाणेसें बैठजातीहै (१०९ पटोल) ज्वरघ्न शोधक तथा रेचकहै पटोलकू परबलभी कहते हैं (पटोलादिक्काथ–) सतत शतत आतरेवाला विषम ज्वरमें फायदा करता है, पटोल इद्रजव देवदारू हरडे बहेडा आवला मुनका नागरमोथा मोलेठी गिलोय अरडूसेके पत्ते इन इग्यारे चीजोंका काढा करणा पीलियेमे पटोलका जुलाब फायदा करता है पटोलकी एवजीमें कितनेक कडवी तोरी लेते हैं पटोल अथवा तोरीके रसकी बूद नाकमें डालणेसें पाणी झरकर पीलियेका जहर निकल जाताहै, गरमी उपदश जो वदनमें फूटकर बाहिर निकलतीहै उसमें पटोलाष्टक क्काथ अछा फायदा करता है, पटोल हरड बहेडा आंवला नींबकी छाल चिरायता खैरकी छाल और बीब्ला जिसकू कितनेक लोक मिलामा कहतेहें, पेटमें पीणा इन आठोंका काढा करणा (११० पीपर–) उष्ण दीपन पाचन तथा वातहर है एकतो लींडीके सिकलवाली लींडी पीपर कहलाती है बडीसो घोडा पींपर कहलाती गजपीपलकी ओरही सिकलकी लकडी आतीहै, जहा पीपर लेणा लिखा होवे उहा लींडी पीपर लेणी पींपर बहोत दवाओंमें गिरती है इकेली पींपरभी युक्तिसे ताकतकू पहचानके देणेमें आवे तो बहोत रोगोंकों मिटाती है पीपरका चूर्ण पुराणे गोलेके रोगमें अरुचि हृदयका रोग श्वास कास कामला मंदाग्नि जीर्णज्वर वगेरेमे फायदा

उधरस तथा कफकूं अच्छा फायदा करतीहै (१२० बहुफली) मूत्रल तथा पौष्टिक है पेसा-बके रोगोंमें फायदेबंदहै गरमवायु तणख तथा प्रमेहकी जलणमें बहुफलीका लुआब बूरा डाल पीणेसें फायदा करतीहै दूधके संग बहुफली पीणेसें धातुपुष्टि तथा नाताकती मिट तीहै,(१२०चांवल)बबूल ग्राही शीतल तथापौष्टिकहै बबूलकी फलियों जब पकणेपर आवै उसकू जलमें पीस २॥ रुपियाभर रस बूरा मिलाकर दिनमें तीन वखत पीणेसें प्रमेह जलण गरमवायु तजागरमी मिटतीहै बबूलके छालका रस पीणेसें अतिसार बंध हो जाताहै बबूलके कचेपानोंका रस आंखमें आंजणेसें आंखकी गरमी तथा जल गिरणा बंध होताहै छालकू उकाल जलसें कुरला करणेसें मूकी गरमी मिटतीहै (१२२ बील) ग्राही दीपन तथा पित्तशामक है दवातरीके विशेष करके बीलकी जड तथा कचे बील अथवा बीलगिर काम देतीहै संग्रहणी तथा अतिसारमे बहोत बरतते हैं बीलके पक्के फल जरा रेचकहै इसवास्ते बंधकोष्टमें कचेफल अथवा उसका मुरब्बा दस्तकूं रोकणेवाला है अति-सार तथा खूनके मरोडेमें बीलकी गिर अढाइमासे दहीमें पीस दिनमें दो तीन वखत पीणा (बिल्वादिचूर्ण) सूकी बीलगिर मोथ धावडीके फूल कालीपाट मोचरस ये सम वजन लेकर महीन चूर्ण करणा ये चूर्ण गुड तथा छाछमें पीणेसें सखत अतिसार मिटताहै (१२३ बकरीका दूध) गार्भिणीस्त्रीके विषमज्वरमें बकरीका दूध बहोत फायदेबंद है, अधसेर बकरीका दूध अधसेर जल मिलाकर उसमें थोडा दूध तथा सूठकी किटकियां डाल जल जले उहांतक उकाल पीछे दूधकूं छाणके पीणेसें गर्भिणीका बुखार उतरेगा और ताकत आवेगी मिजाजकूं सूंठ गरम पडे तो मोलेठीके टुकडे डालणा छोटे बच्चोंका मूंपक-ताहै तब बकरीके दूधकी धार दिराणेसें फायदा होता है (१२४ बहेडा-) शीतल शोधक तथा पित्तशामक है बहेडेकी छाल त्रिफलामें आतीहै, मूमें छालरखणेसें खाली खासी बंद होती है (बहेडा पुटपाक-) खासीमें बहोत फायदा करताहै (१२४ ब्राह्मी) शोधक तथा पौष्टिक है चित्तभ्रम मिरगी तथा जीर्ण उन्माद रोगमे ब्राह्मीके पानोका रस या चूर्ण घीके संग बहोत दिन सेवन करणेसे फायदा करता है, उन्मादके जोरमें ब्राह्मी देंणेसे उलटा नुकशान करतीहै, उन्मादका जोर कम पडे पीछे ब्राह्मी देणी अछीहै, (ब्राह्मीघृत) ब्राह्मी का रस १ सेर घीसेर १ वच कूठ सखाहोलीकी जड इनोंका चूर्ण २० तोला ये डालकर उकालते रस जलजाय घी बाकी रहै तब ठंढा भये छाणलेणा खाणेकी मात्रा २सें ४ तोला (१२५ बोदार) रेचक तथा रोपणहै धूलमट्टी खाणेवाले बचोकू उसका जुलाब दिये जाताहै, एकदो बालबोदारमाके दूध या सादे दूध संगदेणेसें जुलाब लगकर पेटका भार निकल जाता है घीके संग मिलाकर लगाणेसे घाव भर जाता है, (१२६ भांग) पीडा-शामक नींदलाणेवाली तथा नसोको ढीला करणेवाली भांगमें नसा है इसवास्ते दवाइमें बहोत सावचेतीके संग उपयोग करणा दूधमें उकालणेसें भांग शुद्ध होतीहै, शुद्ध भांगकू

सेककर अथवा घीमें तलकर उसका चूर्ण रती १ से १ वालतक सहतमें चाटणेसें नींद लाता है भांग पीडाकारी रोगोंमें तेसें अनिद्रावाला मगजके रोगोमे भांग देणेमें आती है, भांग वाजीकर होणेसें कितनेक पाक तथा आकूती माजमोंमें गिरतीहै,(१२७ मोंपाथरी) गलजीभी पिछाडी लिखी है वोही मोंपाथरीहै, मूत्रलहै, (१२८ भोरींगणी–कफघ्न तथा ज्वरघ्न है, भोरींगणीकी बहोत जातिहै, लेकिन् दवामें जादातर छोटी बैठी भोरींगणीका पचाग वापरते हैं खासी दम श्वास तथा कफके बुखारमें बहोतही उपयोगीं चीजहै, भोरीं गणीका काढा अथवा पुटपाक कर उसके रसमें पीपल मिलाके देणेसें दम तथा कफमें फायदा करती है, (कटकारी अवलेह–) लेणेसें दम तथा हिचकीकू बैठाता है, छातीके कफकू तोडताहै, (१२९ मजीठ–) शोधक शीतल तथा पित्तशामक है, (मजीष्ठादिकाथ-) मजीठ हरडे बहेडा आंवला कुटकी वच दारूहलदी गिलोय तथा कडवे नीमकी छाल सम वजन सब खूनकू साफ करता है, वातरक्त विस्फोटक वगैरे चमडीके रोगोकों मिटा ताहै, (बृहत्मजीष्ठादि काथ–) जिसमें ४५ चीजों आती है वो जादा गुणकारी है, मजीठ मोलेठी तथा लोद इन तीनोंको जलमें पीस छाण मिश्री डालकर पीणेसें गर्भणीका दस्त मिटता है (१३० मधु)(सहत–) कफशामक सारक पौष्टिक तथा रोपणहै, रोपण और भेदक गुणसें अनुपान तरीके उपयोग होताहै प्यासके रोगमे सहत और पाणीं पीकरके उलटी करणेसें प्यास मिटती है, सहत पाणी पीणेसें चरबी बढा भया मोटा अदमी पतला होताहै, दवामे बहोत काम देती है (१) दाहमें– चावलोके धोये जलमें चदन घसकर सहत मिश्री डालकर पीणी (२) कलेजेका सोजा–) कलीचूना तथा सहत सोजेकी जगापर लेपकर ऊपर रूदवादेणी (३) कानमें बुग्ग–) चलाजाय तो इकेली सहत अथवा तेल सहत सामल कर डालणा (४) मेदरोगमें–) फजरमें जलदी ऊठके ४ तोला गरम जलमें २ तोला सहत डालकर पीणा (५) मुखरोगमें–) मूमें सहतका कुरला भरके कितनीक देर रखकर डालदेणेसें इसतरे कितने एक कुरलोंसें मूके अदरके व्रण घावचादी गरमी जलण तथा प्यास दूर होकर मू साफ होगा(६) रक्तपित्त–) सहत तथा मिश्री बकरीके दूधमें पीणेसें खूनका गिरणा बध होताहै(७) तृष्णा–) ठढा पाणी तथा सहत मिलाकर खूब पिलाकर उलटी कराणी (८) कुचीलेका जहर–) सहत घी मिश्री चटाणी (१३१ मिरी मिरच–) दीपन पाचन तथा सारक है मोल पेटचूक साधारण अजीर्ण वगेरेमें काली मिरच चबातेहैं तद्रा बेहोसीकू दूर करतीहै, मिरचकी चाय मिश्री डाल पीणेसें सादा बुखार मिटातीहै, दस्त खुलास आताहै, ये चाय बचोंकों चुगाणेसें माकू अथवा बचेकू पारगला रोग होजाता है सोभी मिटाती है बूरा तथा घीके सग मिरचका चूर्ण खाणेसें शिरकी भमल आखकी गरमी हाथपांवोंकी जलण मिटती है आखोंकी तेजी बढातीहै मिरचका चूर्ण गुड दहीमें डाल पीणेसें नाकका सलेखम तथा

पीनसरोग मिटता है (१३२ माया–) मांजूफल) ग्राहीहै, मूंका पकणा उसलणा चीरा वगेरेमें मांजूफल तथा फिटकडीके कुरलोंसें बहोत फायदा होताहै, इसका पाणी छांटणेसें कांचसकुडाकर अंदर चलीजातीहै, हरसके मस्सेपर अफीम तथा मांजू फल लगाणेसें फायदा होताहै, (हरसका मलम)–अफीम तोला २ मांजूफलका चूर्ण तोला ५ सादा मलम तोला ३० (सादा मलम, मेण घीका आगेलि०) तीनोंको मिलाकर हरसपर लगाणेसें जलण खूनका गिरणा बध होता है, मस्से सूकजातेहै औरतोके० योनिसंकुडाणेकूं मांजूफल फिटकडीका चूर्णकी पोटली धरे जाती है, अथवा कपूर और मांजूफलकूं पीस अंदर लेपकरणेमें आता है, (१३३ मालकांकणी) उष्ण स्वेदल वातहर तथा बुद्धिवर्द्धक है, मगजके रोगोंमें मालकांकणीके बीज तथा तेल बहोत फायदा करता-है बीजोंमेसें पीले रंगका तेल निकलताहै, यादशक्ति जादा इस तेलसें रह सकती है हमेसपांच या दस बूंद मिश्रीमे या दूधमें लेणा मू साफ करणेकूं ऊपरसे इलायची खाणी तेल हाजर नहीं होयतो बीज बरतणा इसके सग मिरच जेसीं दुसरी बादी हरता दवाकी फाकी लेणेसें बेहोसी भ्रमवायु आंचकी वगेरे वादीके रोग मिटजातेहै तेल मसलणेसें हिचकणेके जाडा खुलतीहै और हैजेके वांईटे मिटते है मालकांगणीकी जड सांपके डकपर लगाणेसें जहर ऊतरता है (१३४ मींढल) मेणफल) वांतिकराणेवाला जहर खायेंभयेकू उलटी कराणे मैणफल दिया जाता है दो एककू पीसणा बीजनिकाल डालणा शक्ति और तासीर मुजब दो आनीसे चार आनी भरतक सींधा निमक मिलाकर जलके संग लेणा जादा उलटी करणी होयतो ऊपर गरम पाणी पीणा (१३५ मीण) मैण) व्रण रोपण तथा हाडोंकों सांधणेवाला मेणकामलम होताहै, (सादामलम) मेण १ भाग तेल १॥ भाग दोनोंकों एक वासणमें धरके मद आंचदेणी एक रस होकर जमजावै तब उतारकर धर देणा (१३६ मूसली) धातुपौष्टिक तथा वाजीकरहै, मूसली काली तैसें धोली दोजातकी होतीहै सुपेद जादा गुण करतीहै इसका पाक धातुपुष्टी करताहै अथवा दूधमें उकाल कर पीणेमें आतीहै लेकिन् बहोत दिन पीणेसे फायदा दिखाती है (१३७ मेथी) वादीहर तथा पौष्टिकहै (मेथीमोदक) मेथीदाणोंको दलके किया भया आटा घी तथा बूरा मिलाकर नव २ टकको गोलियां करणी इसको दोनों टंक १४ दिनखाणेसें वायु सरण कमरका दुखणा सधिवात वगेरे रोगमे फायदा करता है (१३८ मेंहदी) ठढीहै, उसके पत्ते पीस लेप करणेसें हाथपांवोकी जलण पांउकी व्यायु फटणी तथा हर किसी जगेकी दाह मिटतीहे चिकते घावकी खुजाल तथा जलणपर लुगदी धरणेसें मिटजातीहै, (१३९ मोचरस) शीतल ग्राही तथा स्तंभक है (वृद्धगगाधर चूर्ण) नागरमोथा इद्रजव अरडूसेकी जड सूंठ धावडीके फूल लोद वाला बीलगिर मोचरस कालीपाठ कूडेकी छाल आंबकी गुठली अतीस लजालू ये १४ चीजोंका चूर्ण सब तरेका अतिसार तथा मरोडामें

बहोत फायदाकारक है, मात्रा अढाइमासे सें ५ मासेतक (अनुपान) चावलोंका धोवण तथा सहत (१४० मोथ) देखो पिछाडी नागरमोथा (१४१ मोरथोथा) स्तंभन उलटी लाणेवाला और रोपण है, तांबेके खारकू नीलाथोथा मोरथोथा कहते हैं शुद्धकरे विगर खाणेके कामका नहीं उलटीके कामसिवाय दुसरी तरे पेटमे नीलाथोथा अच्छा नही जहर खाया होय तो उलटी कराके निकाल देताहै गरम होताहै रोगी इसकी कराई उलटीसें नाताकत नहीं होता गरम जलमें १ वाल देणेसें कैलाताहै इसके अलावा संग्रहणी रक्तपित्त औरतोंका सुवारोग तथाहिस्टीरीया मिरगी उपदश उपदशकी गठियापर दोतोले नीलेथोथेकू सोनीबूकेरसमें खरलकर झाडवेर जितनी गोलियां करणी दहीके संग गोली १ देणी दही भात खाणा अलूणा ये दवासें कितनोंकी गरमी चलीजाती है, केइयककेरीके आचारमे देकर दही वगेरे सब खिलाते हैं नीलाथोथा आककी जड अथवा कडवी तूंबीके जडकों गरमीपर चिलममें डालकर पिलातेहैं इसका जलाभया गुलपीस गरमीके घावपर घीमे मिलाकर लगाणेसें गरमी मिटती है ये दवाइयें मू. आणेकी नहींहै आंखके दरदमे मोरथोथा फायदेवंद है, आंख दुखणा शांतपडे पीछे आंखकी ललाई खीलो वगेरेमें इसके जलकी बूंदे फायदा करतीहै, आंखकी खील गुरांजणीपर नीलेथोथे काडुकडा दोतीनदिन एकवेर फिराणेसें खीलमिटतीहै (अंजनशलाका) मोरथोथा फिटकडी तथा सोरा तीनोंकों सामलकर नीचे आंच देणा तब रस होगा उसके अंदर तीनोंके वजनसें ५० मे भागका कपूर डालणा बाद इसकी सलियां वणाणी मांफणेकू उलटाकर येसली एकदोदफे इमेस फेरणेसे खीलघस जातीहै और पाणीका झरणा बंध होताहै, (मोरथोथेकीबूंद) २ तोला जलमें एक रत्ती नीला थोथा आंखकी मांसवृद्धि चेपलगणेसें अथवा शीतला वगेरेसें गरमीसे दुखणी आई आंखकी सखत पीडा मिटेवाद मोरथोथेकी बूंदे डालणी चमडीके रोगोंमें बाहिर लगाणेमें न्यारी रीतसें लगाये जाताहै जोजगे घावसें चिक २ ती होय उसकू इसके जलसें धोणेसें जलदी सूकजातीहै दुष्टव्रण घावपर नीले थोथेका टुकडा लगाणेसे अथवा इसके जलसें धोणेसें उसका सडा भया भाग जलजाताहै नीलाथोथा जुआरके दाणेजितना गुडमें गोलीकर तीन दिन निगलाणेसें नारू अंदर मरजाताहै ये दवा किसी अनुभवी पुरुषकी कही भईहै, हमनें अजमाया नहींहै, कहाके जहातक नारूमरेगानही उहांतक उलटी होयगी नहीं नारूमरे बाद उलटी होयगी ये निशानी हैं, इसवास्ते नारूसे दुखपाते भये रोगीने इस प्रयोगकी अजमायस करणी इसमें कोइ जोखम नहींहै इसीतरे हींगका प्रयोगभी सुणाहै माही सातमकू माघमें मिश्री विनाजलपिये रातकू चवाकर सुलादेणा तारे नहीं देखे, पावभर, इयप्रयोग अजमायाभयाहै, नारूनहीं निकलता(१४३मोरका चदवा)मोरके चदवेकी राख और लींडी पींपर मिलाकर सहतमे चाटणेसें हिचकी तथा उलटीभी मिटजातीहै मोरकाचंदवा तमाखू संग

चिलममें पीणेसें सांपके जहरकूं उतार देताहै, (१४४ रतवेल) शीतल दाहशामक रतवेलकी नदीके किनारोंपर वेलों पसरतीहै गुजरातकी तरफ जादा है, रगतवायुके चठोंपर चोपडे जाताहै, (१४५ रतांजली) रगतचंदण शीतल तथा पित्तशामक है बहोतसे काढोंमें गिरताहै कितनेक ठढे लेपमे गिरताहै रगतचंदण तथा नींबकू जलमें घसकर मसलणेसें टपोरिया गरमीके गडगूमड और दाहकू शांत करताहै, (१४६ राई) तीक्ष्ण क्षोभक वांतिकारकहै, राईतेमें आचारमें लेप करणेमें और उलटी कराणेमें काम देती है, राईकू भरडके फोतरे निकालकर लोक इसकूं पीस आटा करतेहैं राईका लेप याने पलास्टर मारणेकू जलमें मिलाकर अथवा सावित राईकों जलमें पीसकर कागजपर लगाकर दुखती जगापर चेपदेणा फेर कितनीकदेरसें वोजगे जलणी सरू होतीहै उससें डरणा नही आधी घटे या घंटेभर रखणा दरदका जोर होयतो एसा पलास्टर दिनमें दोतीन वखत इसी जगे लगाणा पलास्टरकी जगे चमडी लाल होतीहै, लेकिन् फफोला उठेगा नहीं कोई वखत चमडी जरा उपस जातीहै पट्टी उखेडे पीछै चमडीपर जलण जादा होती होयतो घी लगाणा इससें दरद कम होजाताहै, होजरीपर राईका पलास्टर लगाणेसे उलटी और दस्तवध होजाताहै, पेटपर मारणेसें पेटका दरद मिटता है, पेडूके दुखणेपर लगाणेसे मरोडा मिटताहै, पांवोंकी पींडियोंपर तेसें होजरी तथा हाथ पांवोंपर मारणेसें हैजेका जोर कमपडताहै, हाथपांवपर राईमसलणेसें गरमी आतीहै गरम पाणीमें राईका आटा डालकर पांव डुबाकर रखणेसें पसीना आकर बुखार उतरताहै वदनके कोईभी जगे शरण शूल चसका आंकसी वगेरेकू राईका लेप मिटा देताहै राईतेमें अथवा मसालेमें राईखाणेसें रुचि तथा पाचन होताहै जादा गरम पाणीके संगपीणेसें कै होतीहै सहजनेकी छालका चूर्ण राई जेसा कांम करतीहै, (१४७ रास्ना) उष्ण तथा वातहरहै रासनाकी जड मारवाडमें राठ नांमसें प्रसिद्धहै पत्ते इसके सोनामुखी जैसे होतेहै. जादातर दवामें जडलीजातीहै, बजारमे कितनीक वखत रास्नाकी जडकी एवजीमें हरकोई जड पसारी पकडा देते हैं, इस वास्ते दवामें असली गुण जो रास्नाका है सो होता नहीं सब तरेकी वात व्याधिपर रास्ना बहोत अछीहै, महारास्नादि रास्ना सप्तक रास्ना पंचक वगैरे जुदे २ काढेमें रास्ना मुक्षहै इनकाढोंमें रास्ना दुसरी दवाइयोसें जादा फायदा करतीहै, (रास्नापचक) रास्ना गिलोय देवदारू सूंठ एरडकी जड सव समवजन लेकर काढा करणा इयइकेला अथवा गूगल अथवा योगराज गूगल मिलाकर पीणेसें अथवा लिखे भये और काढोंसें पीणेसें सब वादीमें फायदा करती है (१४८ रेवचीणीका सीरा) रेचक तथा कृमिघ्न है रेवचीणीका जुलाब करडालगता है इसवास्ते जलधर जेसे रोगमें तथा सखत वध कुष्टमें दिये जाता है जुलाबकी वावत इसका जादा वरताव नहीं करणा इससें पेटमें चूक होती है मात्रा १ रत्तीसें

१ वाल (१४९ लवंग) उष्ण वातहर तथा दीपन है लौंग मुख खसवोईमें तथा गरम मसालोमें काम देता है अजीर्ण वगेरेमें चवाते हैं (लवगादिवटी) लौंग मिरच-काली वहेडा और खेरसारका चूर्ण इनोंकों वांवूलके छालके काढेमें कितनेक दिनखर-लकर मूग प्रमाण गोलियें वांधणी येगोलिया खाली सूकी खासीमे वहोत फायदा करती है मूमें रखकर चूसणा (१५० लसण) वादीहर तथा उष्ण है साधोंकी वादी कम-रका दुखणा हिचकी चमकणा चूंक वायुका गोला तथा हैजेमें दिया जाता है लसण आमके पाचन करणेमें सूठ जेसा गुण धराता है इससें आमातिसार अजीर्ण हैजे वगे-रोंमें तथा दस्तके रोगमें लसणका रस अथवा उससेंवणी कोईभी दवादस्त वघ करता है (लशनादि चूर्ण) लसण जीरा सेंचल सूठ मीरच पींपर और हींग सब समवजन चूर्ण करणा अजीर्ण तथा हैजेके दस्तकूं मिटाता है खाज खुजलीपर लसणकी लुगदी धरणेसे जलण तो होती है लेकिन् खाजकी चमडी जलके लाल चमडी हो जाती है पीछे उसकू कोइभी सादा मलम अछा कर सकता है चार तोले लसणके छिलके अलग कर हिंग जीरा सींधानिमक सेंचल सूठ मिरच पींपर इन सबोंका तीन वाल चूर्ण मिलाकर गोली करणी इन गोलियोंकों ताकत पहचान करके एरडीके जडके उकालेमें सब तरेकी वायुमें दीजाती है कुत्तेके काटे जहरपरभी लसणका लेप करणा लसण उ-कालके पीणा खुराकमेंभी लसण खाणा अर्दित वायु (मूटेढा होय सो) लसण पीस इस रोगमें तिलके तेलमें खाणा अथवा उडदके आटेमें लसण मिलाकर तिलके तेलमें वडे तलकर तेलमें फेर खाणा अथवा मक्खणके सग खाणा लसण घीमें खाणेसें शूल मिटती है (१५१ लींव) (नींव) ज्वरघ्न शोधक पित्तशामक पौष्टिक तथा कुष्ट हर है नींमके अतर छालकाहिम सादा हमेसका एकातरा तेसें चोथिया बुखारमें बुखारके पहिले देणेमें आवे तो बुखार बध हो जाता है इस हिममें कुछ एक कोनाइन जेसा गुण है इतना इसमें जादा गुण है सो कोनाइनतो वदनमें बुखार होय तो दिये नहीं जाता और नींवकाहिम तो बुखार रहतेभी देणेसें गुण करता है पित्तके बुखारमें तैसें सादा अणउतार बुखारमें शीतला ओरी अछवडामें और पित्तके हरेक रोगमें ये हिम अछा है नींव पचाग चूर्ण—नीमका पचाग एक भाग जो हरडे पवाडके बीज चित्रककी जड भिलावा वाय विडग आंवला हलदी सूठ मिरच पींपर वावची किरमाला गोखरू तथा वूरा ये सब मिलकर पचागकी वरावर इस चूर्णकू वण सके तो खैरसारके का-ढेकी तथा भागरेकी एक अथवा जादा भावना देणी इस चूर्णका वहोत दिन सेवन करणेसें वातरक्त अथवा रगतपित्त कोढ चमडीके सब रोग अछे हो जाते हैं नींवके पत्तोंको उकाल उससें स्नान करणेसें खसरा लूखास दाद वगेरेकी चलहलकी होती है जो घाव वहोत चिकता है जिसमें कीडे पडते हैं वो सब नींवके उकाले जलके धोणेसें



मिट जाते हैं पत्तोंकी लुगदी सहत मिलाकर घावपर बांधणी नींबका रस और आंवलेका रस पाव पाव तोला पीणेसें शीलस लुखस तथा खोटी गरमी दबती है नींबके पत्ते बकरीकी मींगणी दोनोंकों बाफके सांधोंके दुखणेपर तथा सोजेपर बांधणेसें हलका पडता है नींबके बाफे भये पत्तोंकी पोटिस गड गूमडकू पकाती है नींबोलीमेंसे तेल निकलता है वो तेल कान बहतेकू बध करें घावकूं भरता है मगज पकणेसें नाकके रस्ते खून गिरता होय अगर मगजमें कीडे पडणेका सक होय तो ये तेल नाकमें सुघणेसे जंतु मिटते हैं खून बध होता है सापके जहरमें नींबके पत्तोंका रस अथवा छिलकोंका रस-उसकूं खारा मालम दे जहांतक पिलाणा क्योंके जहरका जहांतक जोर होगा जहांतक नींब कडवा मालम देगा नहीं छालकूं ऊकाले जलमें धाणा तथा सुठका चूर्ण डालकर पीणेसें सब विषम ठंडका आंतरेका बुखार सब मिटता है हैजा प्लेग वगेरे मरकीके वख,तमें कडवे नींबके पत्ते १ रुपिये भरमें रत्तीभर कपूर रत्तीभर हींग मिलाकर गोलीकर ये गोली आधे रुपेभर गुडके सग हमेस रातके खाणेसें इस रोगके जुलमसें बचता है, (१५२ लींबु) नींबु शीतल दीपन तथा पित्तशामक है जठराग्नि प्रदीप्त करता है इसवास्ते खुराककी चीजों संग इसका उपयोग करणा चाहिये तोभी देश काल प्रकृतीका विचार करके उपयोग करणा बहोतसी दवा गोलियों नींबूके रसमे बणती है नींबूका सरबत गरमीकू पित्तकू जलदी शांत करता है पित्तकी उलटीकू जलदी मिटाता है दांतकी छेकडोंमेंसें मसूडोमेंसें खून गिरता होय वो नींबु चूसणेसे बध होता है चूसणेमें खट्टे नींबुसें मीठे नींबू अछे होते हैं (१५३ लोबान) कफ शामक तथा रोपण है लोबान एक दरखतका रस है वो कफ शामक होणेसें २ से ४ वाल देणेसें सादी खासी बध होती है लोबानके फूलमोल मिलते हैं वो उलटीकूं बध करता है लोबान रोपण है इसवास्ते कितनेक मलमोमें गिरता है (१५४ बखमा) वातहर ज्वरघ्न है कृमिघ्न है तथा कटु पौष्टिक है बखमा बछनागकी जाति है लेकिन् जहरी नहीं है अतीसमी इसी दरखतकी पैदाश है बखमा गुणमें तथा कीमतमें चढता है अजीर्ण गोटा पेटका दरद तथा अजीर्णका दस्त उलटीकू बखमा तुरत मिटाता है पेटकी कृमिकू भी मिटाता है जीर्णज्वरमें बहोत फायदा करता है (मात्रा) १ सें २ वाल) (१५५ बछनाग) ज्वरघ्न तथा वातहर है बछनाग बहोत रसादिक दवायोंमें गिरता है इसकू मारवाडीमें सगी मोहरा कहते हैं सींग जेसा होता है इसवास्ते ॥ जहरी चीज है सावचेतीसें वरतना तीन दिन गोमूत्रमें भिजाये रक्खे तो शुद्ध होता है मोलेठी मासा भर बछनागरतीभर कपड छाण कर सुघणेसें चाहे जैसा सिर दुखता मिटता है हमारा अजमाया है (आनदभैरवरस) हिंगलू शुद्ध (शुद्ध करणेकी विधि) पहली गाडरके दूधमें खरलकर सुका देणा सातबेर बाद नींबूके रसमें सातबेर भावना देके सुकाणा एसा हींगलु शुद्ध

वछनाग मिरचकाली टकन शुद्ध पींपर ये सब सम वजन लेकर चूर्ण करना या गोली बांधणी अतिसार ज्वर खासी मदाग्नि वगेरे रोगोंमें फायदा करता है मात्रा १ सें दोय रती (१५६ वज) वातघ्न कफघ्न तथा उलटी लाणेवाली है वचकी मुख्य दोय जाति है एक तो दूधिया अथवा सुपेद वज दुसरा गधीला घोडा वच वचमिरगी रोगमें हिस्टीरीया जेसा मगजके रोगमें फायदा करता है मात्रा दो आनी भर सहतमे मिलाय चटाना (१५७ वड) ग्राही तथा कफ शामकहे वडका दूध पौष्टिक है (पचवल्कल) वड पींपल पीपलो पारसपीपल तथा गूलर ये पांच दरखतोंके छालकू पंचवल्कल कहते है इसकी उकालीके पाणीसें फोडे घाव चांदी विस्फोटक वगेरे चमडीके सडे भये जगेकू धोणेसें बहोत फायदा होता है चिकते भागपर इनोंका कपड छाण किया चूर्ण दबानेसें घाव जलदी भर आता है वड गूलर पीपर पीपला आंब तथा जांमूनकी जडकी छाल तथा भिलावा इन सबोका काढा कर एक तोलेसें सरू कर चार तोलेतक चढते २ पीणेसे कफ प्रमेह अर्थात् नींदमें पेसाब हो जाता है सो मिटता है (१५८ बिरियाली) (सूफ) दीपन तथा वातहर है बुखारकी उलटीकू सूफका हिम मिटाता है (१५९ वायविडग) कृमिघ्न तथा वायु हरता है कृमि कैंचूये कृमिके सब विकारोंकों मिटाती है वायविडगका चूर्ण सहतमें लेनेसें अथवा उकालीसहतडाल पीणेसें तमाम जतु मिट जाते हैं मात्रा बचोंकू १ सें २ वाल वडेकू अढाई मासेसें पांच मासे तक (१६० वाला) ठडा शोधक तथा पित्तशामक है ठडे लेपमें सरबतमें तथा पित्तके बुखारके काढेमे गिरता है एक तो काला नेतरवाला कमलके ततु दुसरा सुपेद खसवाला (१६१ वांस कपूर) शीतल कफशामक पौष्टिक और मरदमी देनेवाला है वंसलोचन लोक प्रसिद्ध नाम है (सीतोपलादि चूर्ण) मिश्री १६ भाग वश लोचन८ भाग इलायची ४ भाग पीपर २ भाग तज १ भाग सबोका चूर्ण करना पुराणी खासी दम तथा क्षयमे सीतोपलादि चूर्ण बहोत फायदा करता है सरू होते क्षयकू मिटाता है बचोंके दम खास जीर्ण ज्वर तथा नाताकतीपर बहोत दिनोंतक ये चूर्ण खिलाना मात्रा दो आनी भरसें चार आनी भरतक अनुपान घी अथवा सहत अथवा तासीर मुजब फेरफार करना(१६२ विदारी कद) पौष्टिक तथा वाजीकर है तथा मूत्रल है ये कंद भूकोला भू आंवलेके नामसे प्रसिद्ध है इस कदके ऊपर बेल होतीहै, कदजमीनमें बहोत गहरा होताहै जो पुराना होताहे, त्यों कद बडा होताहै, ताजेविदारी कदका रस काम देता है सूकेकू उकालकर रस करणा कदकारस ४ रुपेभर घी तथा सहतमें पुरुषातन तथा धातु बढाताहै मगज भरताहै, औरतोंके दूध चढता है मात्रा ५ मासा या रुपेभर घी मिश्रीमें (१६३ शतावरी) शीतल मूत्रल धातुपौष्टिक और ग्राहीहै, शतावरी धातुवर्द्धक और मगजकू पुष्टी देनेवाली है, वो दूधमें डाल अथवा पाक बणाकर खाये जाताहै, औरतोके गर्भाशय

दोप धातु प्रदर वगैरेमें बहोत फायदेवंदहै औरतोके दूध वढाता है, चूर्ण स्वरस इसका काम देताहै, चूर्ण घीसकर सहत मिलाकर चाटणा (फलघृत) घी सेर १ सतावरका रस तथा गोमूत्र चार २ सेर जीवनीय गणमें मिले सो सव दवा एकेक तोला उनोकों जलमें पीस कल्ककर उसके अंदर डालणा घी पकाणेकी विधिसें पकाणा उसमेंसे २ तोला घी पीणा ये घी वंध्यादोप दूरकरता है, औरतोका गुह्य दोप मिटाता है, ताकत देता है, (१६४ सरपखा) पौष्टिक मूत्रल कफघ्न है जडके कांटेमें मिरच डाल पीणेसें प्रमेह मिटताहै, बीजोंके तेलसे खुजली मिटती है, चाहे उकालके तेल वणालेवे जड छाछके सग पीणेसें तिली मिटती है, इसके जडका चूर्ण एक महीना लेणेसे अंडवृद्धिमें फायदा देताहै, जडकी छालका कल्क बणाकर सींधानिमक कुलथीके काढेसें पीणेसें पथरी रेती निकल जाती है, (१६५शिलाजीत–)पौष्टिक मूत्रल शोधकपेसावके सब रोगोंकूं मिटाताहै पेसावकूं वधारणा खुलासा लाणा ये उसका खासगुण है, प्रमेह मूत्रकृच्छ्र रेती पथरी गरमवायु चणख वगेरेमें फायदा करता है, चद्रप्रभा नामकी गुटिका ये शिलाजीतकी खास वनावट है, सो ऊपर लिखे सरबरोग गरमी खून विगाड और चमडीके सब विकारोमें बहोत अछी दवाहै, धातू गिरणा नाताकती और नपुंसकपणा इसमेंभी शिलाजीत अछा फायदा करताहै, दूधमें पीये जाती है, औरतोंका ऋतुदोप और वीर्यकू सुधारतीहै,(१६६ शेवाल)पाणीपर शेवाल आता है, उसकूं गरमकर सहसके एसा पेडूपर बांधणेसे बंध भया पेसाब खुलजाता है, (१६७ शेलारस) पौष्टिक कफशामक ग्राही तथा वदनमें गांठोंके दोपोंकों दूर करणेवाला इसका मुख्य उपयोग आंडोंके वढणेपर होताहै, सूजे भये आंडपर शिलारस लगाकर ऊपर तमाखूका पत्ता बांधणा सोजा ओर गांठ दरद कम होजाताहै, (१६८ शेसगूद) एकेक दोदो वाल सहतमें दो तीन वखत चटाणेसें दिनमें कितनेक दिन चाटणेसें अंडवृद्धिमें फायदा करताहै, औरतोका ऋतुधर्म वध होयतो लाताहै, शेसगूदका गुण गूगल तथा बीजा वोल जैसाहै, (१६९ शख) पाचक रोपण दंभक तथा वात हरहै, दवामे शंखकी भस्मी कामदेतीहै, शंखके टुकडोकूं नींबूके रसमें ४ घंटा रखकर पीछे एक संपुटमे रखकर जलाणेसे सुपेद भस्मी होतीहै शख भस्म प्राये इकेली नहीं दीये जाती कितनीक दवायोंमें गिरतीहै, (शखवटी) आंवलीकी छालकी राख ४ तोला पांचनिमक सींधा सेंचल विडलूण खावेसो सेंभरलूण कचलूण कोइ नहीं मिलेतो एवजीमें सींधा निमक जादा डालणा ४ तोला इन दोनोंको खरलमें नींबूका रस निकाल भिजाणा पीछे शखके टुकडे ४ तोला अंगारमें खूबलाल बबकर २ के खरलमे रहा नींबुका रस उसमें बुझाते जाणा जब निजोरा पीसा जाय एसा भूका होजाय तबतक फेरसेकी हींग सूठ मिरच पींपर ये हरेक एकेक तोला और शुद्धगंधक शुद्धवछनाग शुद्धपारा हिंगलूमेंका निकाला भया ये तीनों सवापांच २ तोला पहलें पारे गधककी कजली करणी पीछे

कपड छाण सब चीजों मिलाणी नींबूके रसमें खूब घोट झाड बेर जितनी २ गोलिया करणी इससे अजीर्ण चूक गोला हैजा उलटी दस्त मदाग्नि वगेरे पेटके सब रोगोमें फायदा करती है (अग्निकुमार रस) शुद्ध टकण शुद्ध पारा शुद्ध गधक ये तीनो एकेक भाग कोडी भस्म शख भस्म मिरच ४ भाग नींबूके रसमे चार पहर खरल कर वाल वालकी गोलियां करणी पेटकी चूक मदाग्नि अजीर्ण मोल उलटी वगेरेमें देना (१७० शखा होली) मगजकू ताकत देनेवाली पौष्टिक तथा सारकहै शखके आकारके फूलवाली होनेसें शखपुष्पी इसका नाम है मगजकू ताकत देनेवाली होनेसें उन्माद हिस्टीरीया मिरगी चित्तभ्रम मनकी नाताकतीकू अछा फायदा करती है (शखावली स्वरस) स्वरसमें सहत तथा कूठ मिलाकर देनेसे पागलपणा मिटाती है, शखावलीका काढा—क्काथ कर उसके सग योगराज गूगल मिलाकर देनेसे चित्तभ्रम तथा मगजके दुसरे विकारोकू मिटाकर बुद्धिकू अछी करती है (१७१ समुद्रफेण) ठडा स्तभन तथा आंखोको हितकर है, समुद्र फेण ये एक जातकी मछलीका हाड है, आंखकी तेजी वढाती है, मिश्रीके सग आखमें अजन करनेसें रातींधापणा ललाई और सुजाल मिटती है, कानमें भूकी डालकर ऊपरसे नींबूका रस निचोडेतो कानका पीपवहणा बध होता है, (१७२ सहजना) (सरगवा) मत्रल दभक तथा सोजन हरता है सहजनेकी फली का साग तथा दक्षणी लोक कढीमेंभी डालते हैं रुचिकर तथा पाचन है छालकी उकाली कर पीनेमें कलेजेका सोजा तिल्लीका सोजा नरम पडता है, छालकी उकालीमें जरा २ सें चल औरसेकी हींग डालकर पीनेसे पेटमें ओर पेडूके अदरमें सोजा होय सो मिटता है, (दोपघ्न लेप) सहजनेके जडकी छाल सरसू सूठ देवदारू तथा साटेकी जड इनोंको छाछमें पीस जाडा २ लेप करनेसे जलण सिवाय तमाम सोजा सांधोका सोजा गांठ तथा गुमडके दोपकू खेच लेता है, पाठे जेसा भयकर रोग व्रण तथा रसोली और अर्बुद जेसी करडी असाध्य गाठोकूभी ये लेप नरम करता है, उसके अदरके दोपकू धीमे २ खेंच लेता है, वायु तथा कफके सोजेमें तथा गाठोंमें ये लेप फायदा करता है, ये लेप नरम चमडीपर जरा जलण करता है, लेकिन् डरणा नही जलण कम करनेकू अथवा वद वगेरे गरमीकी गाठोपर लगानेकी जरूरत पडे तो अदर जरा गहूका आटा तथा नीमके पत्ते मिलाकर लेप करना (१७३ सरेस) शीतल तथा दाहशामक है, (दशाग लेप) सरेसकी छाल मोलेठी तगर इलायची रक्तचनण जटामासी लोद दारूहलदी कूठ तथा वाला इसकू दशाग लेप कहते हैं, रक्त वायु गलगड वगेरे गरमीका अथवा जलणवाले सूजनपर अथवा सोजे विनाके दाह ऊपर ये लेप भीजा या सूका चुपडणेसें तुरत आराम होता है, इस लेपकू जरासा घी देकर गऊरोना पीछे उसकू ठंड जलमे पीस चदनकी तरे लेप करना सुकेके फेर लेप करना

दोप धातु प्रदर वगैरेमें बहोत फायदेवदहै औरतोके दूध चढाता है, चूर्ण स्वरस इसका काम देताहै, चूर्ण घीसकर सहत मिलाकर चाटणा (फलघृत) घी सेर १ सतावरका रस तथा गोमूत्र चार २ सेर जीवनीय गणमें मिले सो सब दवा एकेक तोला उनोंकों जलमें पीस कल्ककर उसके अंदर डालणा घी पकाणेकी विधिसें पकाणा उसमेंसे २ तोला घी पीणा ये घी वंध्यादोप दूरकरता है, औरतोका गुह्य दोष मिटाता है, ताकत देता है, (१६४ सरपंखा) पौष्टिक मूत्रल कफघ्न है जडके कांटेमें मिरच डाल पीणेसें प्रमेह मिटताहै, बीजोंके तेलसे खुजली मिटती है, चाहे उकालके तेल बणालेवे जड छाछके संग पीणेसे तिल्ली मिटती है, इसके जड़का चूर्ण एक महीना लेणेसे अंडवृद्धिमें फायदा देताहै, जडकी छालका कल्क बणाकर सींधानिमक कुलथीके काढेसें पीणेसें पथरी रेती निकल जाती है, (१६५शिलाजीत–)पौष्टिक मूत्रल शोधकपेसावके सब रोगोंकूं मिटाताहै पेसावकूं वधारणा खुलासा लाणा ये उसका खासगुण है, प्रमेह मूत्रकृच्छ्र रेती पथरी गरमवायु चणख वगेरेमें फायदा करता है, चद्रप्रभा नामकी गुटिका ये शिलाजीतकी खास बनावट है, सो ऊपर लिखे सरवरोग गरमी खून विगाड और चमडीके सब विकारोंमें बहोत अछी दवाहै, धातू गिरणा नाताकती और नपुसकपणा इसमेभी शिलाजीत अछा फायदा करताहै, दूधमें पीये जाती है, औरतोंका ऋतुदोप और वीर्यकूं सुधारतीहै,(१६६ शेवाल)पाणीपर शेवाल आता है, उसकू गरमकर सहसके एसा पेडूपर बांधणेसें वंध भया पेसाब खुलजाता है, (१६७ शेलारस) पौष्टिक कफशामक ग्राही तथा वदनमें गांठोंके दोषोंकों दूर करणे- वाला इसका मुख्य उपयोग आंडोंके वढणेपर होताहै, सूजे भये आंडपर शिलारस लगाकर ऊपर तमाखूका पत्ता बांधणा सोजा ओर गांठ दरद कम होजाताहै, (१६८ शेसगूद) एकेक दोदो वाल सहतमें दो तीन वखत चटाणेसे दिनमे कितनेक दिन चाटणेसें अडवृद्धिमे फायदा करताहै, औरतोका ऋतुधर्म बध होयतो लाताहै, शेसगूदका गुण गूगल तथा बीजा बोल जैसाहै, (१६९ शख) पाचक रोपण दभक तथा वात हरहै, दवामे शंखकी भस्मी कामदेतीहै, शंखके टुकडोकू नींबूके रसमें ४ घंटा रखकर पीछे एक सपुटमे रखकर जलाणेसे सुपेद भस्मी होतीहै शख भस्म प्राये इकेली नहीं दीये जाती कितनीक दवायोमें गिरतीहै, (शखवटी) आंवलीकी छालकी राख ४ तोला पांचनिमक सींधा सेंचल विडलूण खावेसो सेंभरसूण कचसूण कोइ नहीं मिलेतो एवजीमें सींधा निमक जादा डालणा ४ तोला इन दोनोंकों खरलमें नींबूका रस निकाल भिजाणा पीछे शखके टुकडे ४ तोला अगारमें खूवलाल बंवकर २ के खरलमें रहा नींबुका रस उसमें बुझाते जाणा जब निजोरा पीसा जाय एसा भूका होजाय तबतक फेरसेकी हींग सूठ मिरच पींपर ये हरेक एकेक तोला और शुद्धगधक शुद्धवछनाग शुद्धपारा हिंगलूमेंका निकाला भया ये तीनों सवापांच २ तोला पहलें पारे गधककी कजली करणी पीछे

कपड छाण सब चीजों मिलाणी नींबूके रसमें खल घोट झाड बेर जितनी २ गोलियां करणी इससे अजीर्ण चूक गोला हैजा उलटी दस्त मदाग्नि वगेरे पेटके सब रोगोंमे फायदा करती है (अग्निकुमार रस) शुद्ध टंकण शुद्ध पारा शुद्ध गंधक ये तीनो एकेक भाग कोडी भस्म शंख भस्म मिरच ४ भाग नींबूके रसमे चार पहर खरल कर वाल वालकी गोलियां करणी पेटकी चूक मदाग्नि अजीर्ण मोल उलटी वगेरेमें देना (१७० शंखा होली) मगजकू ताकत देनेवाली पौष्टिक तथा सारकहै शंखके आकारके फूलवाली होनेमे शंखपुष्पी इसका नाम है मगजकू ताकत देनेवाली होनेसें उन्माद हिस्टीरीया मिरगी चित्तभ्रम मनकी नाताकतीकू अच्छा फायदा करती है (शंखावली स्वरस) स्वरसमें सहत तथा कूठ मिलाकर देनेसे पागलपणा मिटाती है, शंखावलीका काढा-क्वाथ कर उसके संग योगराज गूगल मिलाकर देनेसें चित्तभ्रम तथा मगजके दुसरे विकारोकू मिटाकर बुद्धिकू अछी करती है (१७१ समुद्रफेण) ठंडा स्तंभन तथा आंखोंको हितकर है, समुद्र फेण ये एक जातकी मछलीका हाड है, आंखकी तेजी वढाती है, मिश्रीके संग आंखमे अंजन करनेसें रातींधापणा ललाई और खुजाल मिटती है, कानमें भूकी डालकर ऊपरसें नींबूका रस निचोडेतो कानका पीपवहणा बंध होता है, (१७२ सहजना) (सरगवा) मूत्रल दभक तथा सोजन हरता है सहजनेकी फली का साग तथा दक्षणी लोक कढीमेंभी डालते हैं रुचिकर तथा पाचन है छालकी उकाली कर पीनेसें कलेजेका सोजा तिल्लीका सोजा नरम पडता है, छालकी उकालीमे जरा २ सें चल औरसेकी हींग डालकर पीनेमे पेटमें ओर पेडूके अंदरमे सोजा होय सो मिटता है, (दोषघ्न लेप) सहजनेके जडकी छाल सरसू सूंठ देवदारू तथा साटेकी जड इनोंको छाछमें पीस जाडा २ लेप करनेसे जलण सिवाय तमाम सोजा साधोका सोजा गांठ तथा गुमडके दोषकू खेंच लेता है, पाठे जेसा भयंकर रोग व्रण तथा रसोली और अर्बुद जेसी करडी असाध्य गांठोंकूभी ये लेप नरम करता है, उसके अंदरके दोषकू बीम २ खेंच लेता है, वायु तथा कफके सोजेमे तथा गांठोंमे ये लेप फायदा करता है, ये लेप नरम चमडीपर जरा जलण करता है, लेकिन् डरणा नहीं जलण कम करनेकूं अथवा वद वगेरे गरमीकी गांठोंपर लगानेकी जरूरत पडे तो अंदर जरा गहूंका आटा तथा नीमके पत्ते मिलाकर लेप करना (१७३ सरेस) शीतल तथा दाहशामक है, (दशांग लेप) सरेसकी छाल मोलेठी तगर इलायची रक्तचंदण जटामासी लोद दारूहलदी कूठ तथा वाला इसकू दशांग लेप, कहते हैं, रक्त वायु गलगंड वगेरे गरमीका अथवा जलणवाले सूजनपर अथवा सोजे विनाके दाह ऊपर ये लेप भीजा या सूका चुपडणेसें तुरत आराम होता है, इस लेपकू जरासा घी देकर मकरोना पीछे उसकू ठंडे जलसे पीस चंदनकी तरे लेप करना सुकेके फेर लेप करना

(१७४ सरसुं) वादीहर उष्ण शोथघ्न दोपघ्न लेपमें सरसूं गिरती (१७५ सरसूंका तेल) सरसूंका तेल आचारमें तथा सागके वघार वगेरेमें बं तथा गुजराती लेते हैं वो रुचिकर अग्निप्रदीपक और उष्ण है श्वास रो सरसूंका तेल गुडमें दिया जाता है कानमें शूल चलती होय तो इसकी बूंदे डा वंग देशवाले बदनके भी यही मसलाते हैं (१७६ साजीखार) पाचन दीपन वातहर है (अंग्रेजी कारबोनेट ओफ सोडा) उसके वहोतसे गुण जवखारके मि है अजीर्णमें वो वहोत फायदा करता है (सर्जिकादि लेप) साजी मेदा लकडी आंबीहलदी इन तीनोकों जलमें पीस गरम कर लेप करनेसे गुप्तचोट पछाट किचरा जमा भया खून विखर जाता है ओर सोजा हलका पडता है (१७७ साटा) शो शोधक सारक तथा मूत्रल है साटेकी जड दवामें काम देती है दोषघ्न लेपमें त कितनेक काढोंमें उपयोग होता है अदरके तेसें वाहर सोजेमें फायदा करती है तथा सुदर्शनका काढा पीणेसें जलदर तेसें पेटके सोजेपर सब विकारोंकू मिटाती सोजेके सग बुखार होता है सो भी नरम पडता है जडकू घीमे घसकर अंजन करने आंखकी झांख फूला दाह पाणी खुजाल सब मिटती है (पुनर्नवादि क्वाथ) पे अंदरके सोजेपर साटा गिलोय देवदारू हरडे सूंठ इनोंका काढा करके उसके अं गोमूत्र तथा गूगलमिलाकर पीणेसें अथवा विना डाले पीणेसें (शोफोदर अर्थात् पेटके अंदर सोजा होता है सो सब मिटता है (पुनर्नवादि क्वाथ) श रके ऊपरके सोजेपर) साटा दारूहलदी हलदी सूंठ गिलोय जवाहरड चित्रककी ज भाडगमूल तथा देवदारू काढा करना इससें हाथ पांव पेट मू वगेरेका सोजा उतर है (१७८ सिंकोना) उत्तम ज्वरहर कटु पौष्टिक ये दरखत पहली अमेरिकामे हो था लेकिन् थोडेसे वर्षोंसे वो दरखत इस आर्यावर्त्तमें वोया गया अव उसकू देश वनस्पतीमें गिणनेमें कोई हर जाना नही है सिंकोनेकी छाल दवामें काम देती उसकी तीन जात है लाल पीली और भूरी उसमें पीली सर्वोत्तम है उसमें कीनाईन सत्व जादा है ठढका बुखार इस दवासें वहोत जलदी अछा होता है कीनाईनकीतें ये दवा बुखार आनेके पहली लेणी चाहिये सींकोनेकी छाल २॥ रुपिये भरकूं वारीक कूट उसकूं ॥ सेर जलमें डालणा उसमें नींबूका रस १ रु० भर अथवा गधकका तेजा- वकी १० या १५ वूद डालकर उसका आठ हिस्सा कर बुखार उतर गये पीछे बुखार आनेके पहली दो दो घटेसें आठ वखत देके पूरी करणी इसतरे देनेसें दो तीन पालीमें बुखार ऊतर जाता है जो बुखार अतरदेके आता होय तो ये दवा वारीके दिन अथवा बुखार चढनेके वखत पहले वारे घंटेसे पहले देणी सरू करणी बुखारके वखततक दो दो घटेमे चार छ वखत पिलाणी चिरायतेकीतरे ये दवा अग्नि जाग्रत कर ताकत देती

हे (१७९ सिंदूर) शोधक तथा रोपण है चमडीके रोगोंमें कितनेक मल्हमोंमें सिंदूर गिरता है खुजलीमें मिरच सिंदूर घीमें मिलाकर लगाये जाता है इससे खाज खुजली मिट जाती है (१८० सूठ) उष्ण दीपन पाचन और वादी हरता है त्रिकटुमें सूठ होती है अनेक दवायोंके योगमें सुठ गिरती है जापेवाली ओरतोंके फायदेवद है वादीका जोर वधे तो घटा देती है सौभाग्य सुठमें मुख्य सुठ होती है बुखारमें सुठकू पीस जरा गरम कर कपालमें भरकर ओढ कर सोनेंसें वहोत पसीना आकर बुखार उतर जाता है सुठ मरोडा तथा दस्तके शूलकू मिटाती है उसकूं घीमें तलकर देनेसें अथवा सुठकी उकालीकर उसमें थोडा एरडका तेल डाल पीणेसें वाइटे चूक शूल वगेरे मिट जाता है एर-डीके जडकी उकाली कर हींग तथा सूठ मिलाकर पीनेसे शूल मिटती है पाणीमें वहोत देर भीजे भयेकी ठड मिटानेकू सूठ गुड घी मिलाकर चाटना गरमी लाकर फायदा करती है हैजे वगेरे रोगमें हाथ पांव ठडा होता है तव सूठका चूर्ण मसलनेसें गरमी ओर हुसियारी आती है गर्भणी ओरतकू बुखार आता होय तो आधे रुपिये भरके छोटे २ टुकडे कर वकरीके दूधमें उकालकर अथवा पीसकर पीणी सूंठ आंवला ओर मिश्री-का वारीक चूर्ण फजरमें नित्यलेणेसें आम्लपित्तका रोग मिटता है सुठ तज और मिश्री-की उकाली पीनेसे सलेखम एकदम वैठ जाता है आम याने विगर परिपक्व हुआ मल पेटमें रह गया होय तो सूठ विराली खसखस खारक सम भाग लेकर उसके दो भाग कर एक भाग घीमें तलना पीछे दोनु भाग एकठा कर चूर्ण करना उसके वरावर बुरा मिलाकर फकी लेणी सूठ और वायविडगकी फकीसें मदाग्नि तथा पेटकी कृमि मिटती है (१८१ सूरण) शोधक तथा अर्शघ्न है सूरणका शाग होता है उसमें हरस मिटा-नेका गुण होनेसें मस्सेकी दवाईमें लोक वरतते हैं खुराकमें जुदी २ तरे लोक खाते हैं (सूरण मोदक) सुरण ८ तोला चित्रक जड ४ तोला सुठ २ तोला मिरच १ तोला इन सबोंको १६ तोला गुडमे मिलाकर एकेक रुपे भरकी गोली करणी ओर हमेस फजर सांझ एकेक खाणी हरस रोगमें फायदा करती है (१८२ सोरा खार) मूत्रल स्वेदल तथा शीतल है इस गुणसें सोरा पेसाबके जुलाबमें तेसें वहोतसे बुखारमें पसीनालानेकू अंग्रेजी दवायोंके प्रवाही मिक्श्चरोंमें काम देता है कामला रोगमें भी काम देता है (१८३ सोवा) वातहर दीपन पाचन सोवेके पत्तोंका साग होता है सोवेका दाणा सुवावडमें ओरतोंके उकालीमें काम देता है छोटे वच्चोंके पेटमें दरद होता है तव सोवे-का दाणा चावकर ऊपरसें उकालीका १० पनरे वूंद पिलानेसें पेटका दरद मिट जाता है और वच्चा खेलने लगता है (१८४ सोना गेरू) गेरूके गुण पीछे लिखा है, (१८५ सोमल) सोमलकू शखियाभी कहते है ये जहरी चीज है इसका वरतावा अनुभवी पूरे विद्वान विना करना नहीं वो ज्वरघ्न तथा शोधक है तथा पौष्टिक है और

युक्तिसें उपयोग करनेसें भयकर रोगोंको मिटा देता है, सोमल १ तोला मारू १४ वें गणोंमें डाल कर कपड मिट्टी कर भोभरमें पकाना वाद मिरचकाली तोलेभर हींगलू सुद्ध तोला भर डाल खरल करना मोठ जितनी गोली ठडका बुखार चढे तब टैढ घटे प्हले गहूकी ताजी रोटी घी वूरा डाला भया झर २ ता चूरमांमे लेना जल नही पीना वारीटले वाद लूखी रोटी खाकर वाद जल पीना तीन दिनसें जादा देना नही ये पतवाणी दवा है चोकस रोगमें दरदीकी चोकस अवस्थामें सोमल देना वडा नुकशान करता है वादी कफकी प्रकृतीकू माफगत क्रिया विधिसें कभी आता है पित्त प्रकृतीमें तथा पित्त रोगमे वडा नुकशान करता है फेर सोमलकी मात्रा जादा लेनेमें आ जाय तो हेरान करता है फेर सोमलका जहर जो एकठा हो जाय तो खरावी करता है (मात्रा १ रत्तीका शोलमा भाग) भी वहोतसी वखत सहन नही होता (१८६ सोनामुखी) सारक शोधक तथा चमडीका दोष हरती है सोनामुखीकू गुजरातवाले मीढियावलभी कहते है सोनामुखी हलका ओर नरम जुलाब है छोटेसे वडे तककूभी दिये जाता है वदनमें भरा भया विगाड पित्त तथा शिरकी गरमीकूं कम करती है चमडीके पुराणे विगाडमे सोनामुखी शोधक अछा असर करती है गलतकोढतककू फायदा पोहचाती है पुराणे जहर दोषवालेकू हलके जुलावकी जरूरी है और ये काम सोनामुखी अछा करती है वातरक्त रोगवालेने हमेस फक्की लेनी चहिये सुधार सकती है सो इस मुजब (पवित्र चूर्ण) सोनामुखीके पत्ते लेकर मट्टीके कोरे पात्रमें गोमूत्रमें भिगाके रखना फजरमें सुका देना फेर रातकू भिजाणा एसें दस दिन कर फेर चूर्ण करना फेर रातकू सोती वखत गरम पाणीसें हमेस लेना मात्रा १ सें २ तोला सोनामुखी गुलावकली जो हरडे सुफ सम वजन ले चूर्ण करना वरावर मिश्री मिलाणी रातकू फकी लेणेसें दस्त साफ आताहै, (१८७ सेचल) दीपक पाचक तथा वातहर है लूणसादा और साजीकू मिलाकर भठीमे मूंसकर ढालणेसें सेंचल वणता हे, चूक आफरा गोला वगेरे रोगोमे दुसरी दवायोंके सग दिये जाता है, (१८८ हरडे) सारक शोधक शीतल तथा रसायण है, आर्यदेशी वैद्योने हरडेका वहोतही गुण लिखा हे, निश्चयमें येचीज लायक तारीफकेही है, लेकिन् वापरणेमें उसकू जरूरीमें जादा नहीं लिखी हरडे ज्यो वजनमें जादा होय त्यों उसका गुण और कीमतमें जादा होतीहै, हरडे वुखार आंखके रोग कोढ चमडीके रोग वायुके रोग विषमज्वर अजीर्ण सग्रहणी हरस खासी कफ पांडू तिल्ली गोला वगेरे वहोतसें रोगोंमें दीजाती है, हरडे वहोत तरेकी होतीहै मुख्य सात जाति हे, जो हरडे भी इसकी होतीहै, गुणमे दोनु हलकी होतीहै (वडीहरडे) वडी मात्रा लेणेमें जुलाव लगता हे, अपक दस्तकू पकाके निकालतीहै, आमका पाचन करती है, वदनमें कुव्वत लातीहै, अजीर्ण हरस तथा चमडीके दोषका सोधन करणा दस्त साफ

लाणा अनाजकू पचाणा क्षीणताकू मिटाकर ताकत देतीहै, ये हरडेका हितकारी स्वभावहै हरडे त्रिफला चूर्णमें क्वाथ वगेरेमे पडतीहै, हरडे वदले जो हरडे काम देती है, २ तोले पीछे हरडे वडी जातमे गिणे जाती है, शिखर गिरिकी जादा गुण करता नहीं बद्रीनाथ हिमालियेकी हरडे गुणोंमें श्रेष्ठ होती है, जोकी पजाव देश अमरसरसें आतीहै, जोहरडे सबसें छोटी होतीहै वो दस्तावर सारक है, जादा लेणेसें दो तीन दस्त लातीहै, घीमें तलकर रातकू उसकी फक्की लेणेसें या चावजाणेसे फजरमें दस्त साफ लातीहै, हरसवाले रोगीकू इसतरे हमेस लेणी चाहिये (हरीतकी अवलेह) पथ्यादिगुड) अभया मोदक अभयामलकी) अमृत हरीतकी) अभयादिक्वाथ) मधुपक्क हरडे) इत्यादि हरडेके नाम गुणवाली दवाइयां वहोत उत्तम होती है, वहोतसे भयकर रोगोंकू मिटाकर ताकत लातीहै, (१८९ हरताल) शोधक कुष्ठहर ज्वरघ्न दभक हरतालमे वहोतसे गुण सोमल जैसें है उसमे सोमल ओर गधकका तत्व मुख्य है, ज्वरहर तथा कुष्ठहर है लेकिन् जोखमकारी दवाहै, इसवास्ते सखतपरेज और पूरे चतुर वैद्यकी सल्लाविगर खाणी अछी नहीं है, (माणक्यरस शीतज्वरहर) शुद्धहरताल अभ्रकके पत्रेपर रखके ऊपरसें दुसरा पत्र देकर झग २ ते अगारोपर धरणा धूआं इसका लेणानही धूआ निकलकर जब लाल होजाय नीचै ऊतार लेणा (शुद्धकरणेकी विधि) कली चूनेका नितरे जलमें डोलायत्रसें चारपहर आंचदेणा एसे चारपहर तिलोंके तेलमें वाफदेणा चारपहर सुपेद पेठेके रसमें पोटली वांध लटकाकर (हरतालका लेप) हरताल २ भाग मनशिल १ भाग वावची १ भाग पवाडके बीज २ भाग नीलाथोथा १ भाग टकण १ भाग गधक २ भाग कपूर १ भाग वारीक चूर्णकर नींबूके रसमें लेप करणा करोलिया चित्रीकोढ वाल उडजावे सो उदरी रोग शिरका खोरा दाद वगेरेमें ये लेप वहोत अछा है (२९० हींग) उष्ण वातहर तथा कृमिघ्न है दालशागके वघारमें दीजातीहै, हिंगोडा दरखतका रस है, कावलमे होताहै, असल रसमें भेल करदिया करते हैं सोनकली है, दाममे फरक पडता है, व्यजनस्वाद होताहै, पेटमें वायु नहीं होणे देती पेटका दरद चूक गोला अफरा शूल इसकू मिटातीहै, घीमें तलकर गुडमें डाल निगलाणेसें पेटका दरद कृमिकू वायु गोलेकू तुरत मिटातीहै, दातोमे रखणेसें पीडा शूल दातोंकी मिटजातीहै, हिस्टीरीया वगेरेकी वदनकी खेंचा ताणमें उन्माद शूल श्वास दमवायु वगेरेमें अछा फायदा करती है, मात्रा दो दो घटेसें चार २ वाल हींग छ छ घटेसे देणा (हिंगाष्टक) तलीभई हींग सूठ मिरच पीपर जीरा स्याहजीरा अजमाण सींधा निमक ये सम वजन लेकर चूर्ण करणा इससे अपचा मदाग्नि आफरा चूकगोले वगेरे सब मिटते है, हींगाष्टकमें १ रत्ती अफीम मिलाकर रातकू लेणेसें मरोडेका सखत दरद वांइंटे बेठ जाते हैं दस्त बध होजाताहै, नींद आती है, (शिवाक्षार पाचन) हरडे हींगाष्टक तथा साजीखार मम भाग चूर्णकरणा फाकीलेणेमें अजीर्ण

दस्तकी कबजीयत आफरा चूंक अजीर्णका दस्त और हैजा मिटता है, चाहे केसाही सखत अजीर्ण और हैजा होय तो सरू होतेही जोये चूर्ण ऊपरा ऊपरी लेणेमें आवे तो दस्त उलटी बंध होतीहै पेट आफरता नहीं और कच्चे मलकूं पकाकर दस्त उलटीके कारणकू बंध करताहै, (१९१ हींगलू) पौष्टिक शोधक हिंगलू है, सो पाराहै, तब पारे जैसा गुण धारण करता है, शुद्धका उपयोग बहोत दवामें काम देता है फायदा करता हे पारा रसकपूर हिंगलू बरतणेवाला पूरा विद्वानहोणा हींगलूयों पकाये जाताहै, ४ तोला हिंगलूकू पात्रमें धरकर २ सेर नींबूका रस बूद २ डालते जाणा नीचे आंचमद२ देते जाणी बाद ५ सेर कांदेका रस इसीतरे सुसाणा फेर पांचसेर कांदेकूं कूट हांडीमें भर बीचमें हींगलू देकर मू बदकर मद आंचसें पकाणा बाद सेर राई सेर मालकांगणी सेर कांदे सेर घी सेर सहत सेर कुचीला फेर मटकीभर बीचमे देकर ८ पहरमंद आंचसें पकाणा ये हींगलू बहोत गुण करता वादी कफके सब रोगोकू मिटाता है हमारा अजमाया है, अनुपान जुदे २ है हींगलू १ भाग कथा ४ भाग पीसकर दवाणेसें चांदी घाव मिट जाता है (१९२ हीराकशी) पौष्टिक तथा स्तभन है, हीराकसी लोहेका क्षार है, इस वास्ते उसमें लोह जैसा गुण है अग्रेजीमें (सलफेट ओफ आयर्न) हीराकसीकू कहते हैं, कलेजेका रोग तापतिल्ली पांडू कष्ट साध्यतक विषमज्वर अतिसार सग्रहणी तथा रक्त पित्त वगैरे रोगोंमें फायदा करती है हीराकसीका पाणी छांटणेसें कांच अंदर चली जाती है उस जलसें धोणेसें जखम तथा व्रण जलदी भर जाताहै, कासी साद्य तेल— हीराकसी आसगंध लोद तथा गजपीपर हरेक ४ चार २ तोला तेल ६४ तोला जल २५६ तोला सर्वकू उकाल तेलवणाणा इस तेलके मालिससें स्तन तथा गुह्य अवयव कठण होजाते है, १०४ हीरा दखण) स्तभन तथा शीतल है चमडीके रोग जैसें फटणा खुजली वगैरे ऊपर फायदा करती है, भूकी हीरादखण कत्था इलायची सम वजन तीनों कपूर थोडा मिलाकर चांदी घाव गरमी मूका पकणा दांतका सडणा दांतकी शूल वगेरेमें बहोत फायदा देतीहै, घी अथवा सहतके सग मिलाकर लगाणा (१९४ हीरा बोल—) कफघ्न उष्ण ऋतुलाणेवाली रक्तस्तभक तथा रोपण है औरतोंके ऋतु दोषमें बहोत फायदा देती है, हीराबोल हीराकसी और एलिया इनोंकों सामल करके बाल २ भरकी गोलियें बणाणी देणेसें ऋतु कम होय बध होय अथवा दरद करके आता होय वो सब ऋतुदोषकूं मिटातीहै, हीरा बोल दांतके मजनमें तेसें भगदर नासुर तथा घाव वगेरेके मलमोंमें वो गिरतीहै, खूनकू थांभती है जब कोइभी जखमका खून बध नहीं होयतो हीराबोलका भूका दबाणेसे बंध जरूर होताहै

गुणमुजब औषधोका वर्ग.

(१अम्ल खट्टी दवायें—) इस दवायो में खट्टी दवायों आती है, बहोतसी खट्टी दवायें

शीतल अर्थात् ठंढी तेसें कितनीक दीपन पाचन होती है, पित्तकी शांति करेहै, लेकिन् कफकू पैदा करती है,

(१) दीपन पाचन खट्टी) अंबली कनीठ चणेका खार नारंगी बीजोरा नींबु

(२) दुसरी खट्टी दवाइयें) आंवले आंब जामुन अनार दाख (सामान्य उपयोग) इस तरेकी दवा पीणेसें या चूसणसें या शरबतकर पीणेसे पित्तकी उलटी दाह दांतमेंसें गिरता भया खून तथा मू उसला होय सो सब मिटताहै, दीपन पाचन खट्टी दवाइयें जठराग्निकूं तेज करनेवाली होणेसें दाल शाग तथा मसालोंमे गिरती है इस वर्गकी सब दवा कफकारक है, इसवास्ते लेते सोवखत तासीर शरीरकी स्थिति तथा टेवका विचार करणा

(१ अम्लविरुद्ध औषधें) इस वर्गकी दवायोंमें जादा करकें खारका समावेश होता है, जैसेके साजीखार जवखार सेंधव सेचल सादानिमक टकण नोसादर आधीझाडेका खार पापडखार शखभस्म वगेरे सब खटाईके शत्रू है, (सामान्य उपयोग) होजरीमें खटासका जोर वढ गया होय खट्टीडकार यागुचलके आते होय दांत अवीजगये होय और पेटमे पाचन क्रिया भये पीछे (वहोत करके जीमे बाद चार घटेसें पाचन क्रिया पूर्ण होतीहै) पेटमे पवनका जोर पैदा होता होयतो और परिणामशूल जैसा अजीर्णका रोग रहता होय उसमें खार सेवन अच्छाहै, खायेवाद तुरत खारा पदार्थ कभी खाणा नहीं क्योंके जो खट्टारस खुराककू पचाणेवाला है, उस रसका खार विरोधी है इसवास्ते जीमेवाद नारगी अनार सतरे द्राक्ष वगेरे गीलामेवा खाणेकी रिवाज है वो वहोत फायदा करता है, लोक समझते हैं जैसा खार कुछ खुराककू पचाणेवाला नहीं है लेकिन् पाचन-क्रियामे कोई विकार भया होयतो उसकू सुधारणेवाला है क्षारपदार्थ खूनकू तेसे शरीरके दुसरे रसोंकों गलाता है और पतला करताहै और हद उपरांत खाणेमे आजायतो बहुत नुकशांन करता हैं कफका चिकणास मिटाणेकू उसमेंके कितनेक खार दवातरीके फाय-देवद हे सांधा पकडे जाताहै जकड जाताहै येरोग खट्टारस खूनमे वढणेसें होताहै और क्षार ये अम्लरसकू तोडता है

(२ शीतल दवाये) खाणेसें या शरीरपर लगाणेसें ठढक देकर अदरकी तैसें बाह-रकी दाहकू मिटावे सो शीतल दवायोंमें ठढताके सग दुसरी जुदे २ स्वभाववाली तासी-रकू गिणतीमें लेंतो उसके वहोत वर्ग होसके शीतल पौष्टिक शीतल रोपण शीतल पित्त-शामक शीतल मूत्रल शीतल स्तभन शीतल शारक शीतल दाहशामक

(१) शीतल पौष्टिक—) आवला गोखरू मोलेठी चिरमी विदाम वबूल वश-लोचन शतावर

(२) शीतल रोपण—) कथा खैरसार गेरु मेंहदी हीरादखण

(३) शीतल पित्तशामक) आंवला कूडाछाल गायजबां गिलोय गोखरू चंदन चंदलिया त्रिफला दारुहलदी धमासा नारगी मजीठ रगतचंनण नीबू.

(४) शीतल मूत्रल) सोरा अलशी गाजवां कबावचीणी चावल.

(५) शीतल स्तभन) ईसबगुल कूडाछाल कत्था केशर जामुन बबूल मोचरस.

(६) शीतल सारक) आंवले गुलाबकाफूल हरडे

(७) शीतल दाहशामक) इलायची केशर चदन तुकमवालिगा त्रिफला बहेडा सरेस.

(सामान्य उपयोग) ये दवायां दाह शमनवास्ते हिम शरबत लेप पोता घी तथा प्रक्षालन (धोणा) उसके रूपमे वापरते है गरमवायु प्रमेहकी जलण तथा होजरीमें दाह होताहै, और उलटी होतीहै तब इस वर्गकी दवाका हिम पानक अथवा शरबतकर पिये जाता है वातरक्त गरमीकी चांदी आंखके झमाले वगेरे दाहमें इस दवायोंका पाणी धोणेके काममें लेप तथा घी चुपडणेके काममें आता है (४ पित्तशामक दवायें) जो दवा बदनके अदर कोपेभये पित्तकू शातकरे अथवा दस्तके रस्ते निकाल डाले वो पित्तशामक कहलातीहै बहोतसी दाहशामक दवाइये पित्तशामक होतीहै इस वर्गकी दवायोंका कितनेक विभाग होसकतेहैं कितनीक खास पित्तशामक है और कितनेक स्तभक पित्तशामकहै.

(१) खास पित्तशामक) कोलापेठा पित्तपापडा गाजबां गिलोय चदन धाणा नारंगी बहेडा भागरा मजीठ रगतचंनण नीब नीबू वाला घी मखण वगेरे

(२) सारक पित्तशामक–) नवसादर आंबली आंवला खारातूबा कुवारपाठा चंदलिया त्रिफला दाख वगेरे

(३) स्तभक पित्तशामक) बील दारूहलदी अनार कूडाछाल आंब (सामान्य उपयोग) पित्तके विगाडमें तथा पित्त प्रकृतिवालेकू इस वर्गकी वस्तु जादा माफगत आती है बुखारकी प्यास उलटी दाह धूपकी लू खूनके विगाडमे भी पित्तशामक दवाओं फायदेबद है, पित्तके वडे कोपमें पित्तकू निकालणेकू सारक पित्तशामक दवाये कामकी है, पित्त कोपणेसे जठरमें तथा आंतरेमें नहीं जाकर खूनमे मिलके कामला पैदा करता है, तब पित्तसारक दवायें पित्ताशयमे वधे पित्तकू आतरेमेसें दस्तके रस्ते खेंचकर निकाल देती है ॥

(५) उष्ण दवाये) शरीरमे जागृति चेतन तथा गरमी देणेवाली दवायोंको उष्ण दवायें कहनेमे आती है; इस दवायोंका मुख्य दो भाग हो सकता है ॥

(१) सब वदनमें गरमी लाणेवालीदवा– अजवाण अदरक संठ लोंग अमर कस्तूरी कांदा पीपर भिलावा दशमूल आक वगेर

(शरीरके किसी भागमें गरमी लावे) हींग लसण मालकांकणी अकलकरा समुद्रफल हीरावोल जावत्री तुलशी कायफल जवखार आंधीझाडा पीपरामूल कपूर रास्ना वगेरे (सामान्य उपयोग) उष्ण दवाये प्रथम मगजकूं असरकर ज्ञानततुओंकों जागृत करती है ये ज्ञानततुओं रिदयके ज्ञानततुओकों जागृत करतीहै, जिससें खून जलदी २ फिरता है और खून नहीं पोंहचणेसें भई वेशुद्धी इससे दूर होतीहै शक्तिक्षीण होगई होय मर्मस्थान मद पडगयें होय शरीर बहोत अशक्त और हुसियारी करके बिलकुल रहित होजाय इंद्रीयोंमे शून्यता आगई होय वदन ठंढा पडगया होय एसी स्थितिमें इसीवर्गकी दवा कांम देतीहै.

(६ दीपन पाचन–) जो दवा आमकू पचावै और जठराग्निकू प्रदीप्त करै वो दीपन और जिसकरके नहीं पचाभया खुराकका पाचन होय सो पाचन दवा कहलाती है, दीपनदवामें कच्चे खुराककू पचाणेका और अग्निप्रदीप्त करणेका गुण है, कितनीक दवा दीपन है, कितनीक पाचन है और कितनीक दोनो गुणवाली है

(१) दीपन वस्तुओ–) सूफ बीजोरा नारगी पीपलामूल धाणा तज जावत्री जवखार चणेका खार अजवाण लूण जीरा स्याहजीरा सोवा वगेरे

(२) पाचन वस्तुयें–) मीलामा कलमा कुटकी नागकेशर कुचीला वगेरे.

(३) दीपनपाचन–) अद्रक सूठ मिरच पींपर लोंग जावत्री इलायची चित्रकमूल कबाबचीणी इद्रजव साजीखार छाछ सामान्य उपयोग–अजीर्णमें पाचन अथवा पाचनके सग दीपन दवा दीजातीहै, पाचन दवा अनाजकू पचातीहैं, दीपन दवायें अजीर्णके विकार जैसेंके चूक पेटपीडा वायु आफरा वगेरेकू मिटातीहै,

(७) वादीहरता–) वायुकों मिटाणेवाली दवाइयें वायुहर वातहर वातघ्न एसें कहलातीहै लेकिन् उसमें भेदहै, पेटपर असर करणेवाली दवायें शरीरमें शूल चसका वगेरे दरदकू मिटाणेवाली दवायें और मगजका चित्तभ्रम वगेरे वायुकों मिटाणेवाली दवायें पहले प्रकारकीकू वायुहर दुसरे प्रकारकीकू वातहर तीसरे प्रकारकीकू वातघ्न एसी तीन संज्ञा दीगई है.

(१) वायुहर) पेटकी वायुपर असर करणेवाली लूण साजीखार अजमाण आदा चित्रकमूल कुचीला तज पींपर मेथी लोंग लसण वायविडग सूंठ सोवा हींग

(२) वातहर) शूल चसका अगके दरदपर अरणी आक एरड करज कायफल चिरमी कांदा दशमूल सभालू बच्छनाग लोंग सूठ अफीम कपूर वगैरे

(३) वातघ्न) मगजके सग सबध रखणेवाले वातव्याधिकू मिटाणेवाले गूगल भिलावा दशमूल लसण वच बच्छनाग रास्ना पीपलामूल कोंचबीज.

(८) कफघ्न दवा) कफकी चिकणाई तथा कफके जत्थेकू विखेरके पतलाकर बाहर

निकालणेवाली दवाकूं कफघ्न दवायें कहणेमें आती है, सो मुख्य २ लिखते हैं आंधीझाडा अरडूसा अरणी आक आंबाहलदी काकडासींगी शेशगूंद कायफल जवखार मोलेठी तुलसी देवदारू भूरींगणी बच हीराबोल वगेरे इसमेकी वहोतसी दवाई उष्ण वीर्य याने गरम स्वभावकी है, थोडी एक शीत वीर्यभी है, मोलेठी हीराबोल वगेरे.

(सामान्य उपयोग) छातीके अंदरके कफकूं निकालणेवास्ते कफघ्न दवायोंका उपयोग करणा चाहिये इसमें समझणेकी वात एसीहै, अफीम वगेरे दवा कफकूं दवातीहै, लेकिन् जिसवखत छातीमें कफ पूरे जोरका भरा होताहै, उसकूं अफीम वगेरे दवा उलटा नुकशान करताहै, कफघ्न दवा देकर कफकू वहोतसा निकाले पीछे अफीम जैसी कफशामक दवा देणी.

(९) कफशामक-) छातीमें थोडा कफ होय जिसकूं शमादेवे सो इसतरेकी दवा कासश्वास तथा हांफणी दमकू भी दवातीहै, खेरसार वंशलोचन अफीम सहत लोबान तमाखू मनशिल धतूरा वगेरे.

[१०] ग्राही दवायें) जो दवा वदनके प्रवाही पदार्थोंका शोषण करके उसकूं घट्टकरे उसकू ग्राही दवा कहते हैं जो दवापाणी जेसा दस्तकूं बांधे सो ग्राही कहलाती हैं, इस वर्गकी दवा इसमुजब है, अरडूसा आंब इंद्रजव ईसबगुल कूडाछाल कत्था केशर जामुन जायफल अनार दारूहलदी नागकेशर बील बंबूल फिटकडी मांजूफल मेंडल मोचरस नीलाथोथा राल लोद वड शखजीरा शतावर हीरादखण हीराबोल वगेरे.

(११) स्तंभन दवायें) जो दवा दस्तकूं पेसावकूं अथवा दुसरीभी वहणेवाली चीजोंकों थांभके रखे उसकू स्तंभन दवा कहते हैं, तमाम ग्राही दवायोंमें कुछ इक स्तंभन गुण है तोभी जिस दवायोमें जादा स्तंभन गुणहै, सो इसतरे अफीम मोचरस नीलाथोथा जायफल वगेरे.

(१२) रक्तस्तंभक दवाये) जो दवा खून गिरतेकू बंधकरे वो रक्तस्तंभक कहलातीहै, इन दवायोंमें नाडी संकोचाणेका गुण होणेसें जहांसें खून गिरता होय उसजगे रक्तस्तंभक दवा पहोंचतेही उन नाडीयोंका मू बंध होताहै, ग्राही और स्तंभक दवायें ऊपर लिखीहै. उनोंमें भी थोडा २ गुण खून थांभणेका है, खास रक्तस्तंभकमे अरडूसा हीराबोल तथा फिटकडी वगेरे मुख्य है, ग्राही तथा स्तभक दवायोंका सामान्य उपयोग ऊपर लिखाहै, ग्राही दवाये स्तभकहै तोभी उनोंसें पेट चढता नहीं और स्तभक दवायें दस्तकूं रोकती है, लेकिन् उनोंमें दीपन पाचन गुण नहीं होणेसें पेट आफरणेका डरहै, इसवास्ते स्तंभक दवायोके साथ वातहर गरम दवामिलाणी चाहिये मदर प्रमेह धातुका गिरणा कान तथा नाकका वहणा मूसें नाकसें दस्तसें पेसावसें खून तथा कफ गिरता है, उसकूं तथा घाव फोडेमेंसें पककर पीप वहता है, उसकू इस प्रकारकी दवा मिटाती है,

कोईमें तो खाणेसें कोईमें धोणेसें कोईमें पिचकारी मारणेसें ओर कोइमें लगाणेसे इन जुदे २ झरणेका अटकाव होताहै.

(१३ शोधक दवायें–) जो दवाइयां खूनके पित्तके वायुके तथा कफके विकारोंकों धीमे २ दबातीहै, वो शोधक कहलाती है, उसके विभाग वर्ग बहोत होसकता है

(१) जीर्ण पित्तकू शमन करणेवाली पौष्टिक शोधक) आसगध, गूगल, ब्राम्ही.

(२) खूनकूं पुष्टि देणेवाला खुराक पौष्टिक शोधक–) शिलाजीत लोह माक्षी.

(३) उष्णवीर्य पौष्टिक शोधक–) सोमल, हरताल, हींगलू, पारा, तांबा

(४) सारक शोधक–) गधक, सोनामुखी, हरडे, पारा, आबाहलदी, आंबला, आसोंदरा, एरडीकी जड, तेल एरडीका, अकोल, कुवार, चदलिया, त्रिफला, जमालगोटा, साटा, कोला

(५) खासरक्तशोधक–) अनतमूल (उसवेकीजड) लालरोईडा मजीठ.

(६) खास उपदंश शोधक–) रसकपूर, पारा, चोपचीनी.

(७) खासपित्तशोधक–) नवसादर

(स्वेदल दवायें–) पसीना लाणेवाली दवाकू स्वेदल कहतेहै सोरा अनंतमूल अफीम आक अकोल कपूर देवदारु मोथ मालकांगणी गरमपाणी ये पसीनां लाणेवाली चीजोंहै सामान्य उपयोग– बुखार मर्मस्थानके अदरका सोजा सधिवायु जलोदर चमडी सुकीभई लूखी रहाकरे एसे सबरोगोंमें पसीना लाणेवाली दवा अथवा पसीना आवै इसतरेया शेकया नास लेणेसें सब रोग मिटते हैं

(१५ शोथघ्नदवायें–) खाणेसें अथवा बाहर लगाणेसें जो दवा सोजेकू मिटावे सो शोथघ्न कहाती है, अरणी आंबला कडवीतोरी कालीपाट कीडामारी दशमूल साटा सहजणा वगेरे सामान्य उपयोग– सोजा दोतरे ऊतरता है, सोजा उतरणेवाली रेचक दवा खाणेसें तेसें वायूका सोजा होयतो वातहर दवाके लेपसें पित्तका होयतो पित्तहर दवाके लेपसें मिटता है निबलाईकी सोजन ताकतवर दवा खाणेसें मिटता है

(१६ मूत्रल दवा–) जो पदार्थ मूत्र पिंडऊपर असर करके पेसावकू जादा खुलासा लावे सो मूत्रल कहातीहै, मूत्रल वस्तुओका दो विभाग किया जाय तो एक तो खास मूत्रल और दुसरा पौष्टिक मूत्रलहै

(१) खासमूत्रल–) टकणखार सोरा आंधीझाडा ककडीके बीज कालीपाट पलासगरणी (गायजबा) देवदारू मोथ नालियेर सहजणा साटा अलशी आसोदरो कबाबचीणी जवखार बलबीज बहुफली दूधपाणी तिल चावल वगेरे

(२) पौष्टिक मूत्रल–) शीलाजीत तालमखाणा गोखरू विदारीकद शतावरी वगेरे.

(सामान्य उपयोग–) खास मूत्रल दवायें पेशाबकू खुलासा लातीहै और तीक्ष्ण-

रूप रोगमें जादा असर करतीहै, पौष्टिक मूत्रल दवायें पुराणे भये रोगपर जादा फायदा करती है वीर्यके दोषकूं सुधारतीहै वदनमें ताकत लातीहै, पेशाबके दाहमें तेसें बुखारमें मूत्रल दवा जादा काम देतीहै, पांडू कामलेमें ज्यों सारक दवाकी जरूरी है तैसें खास मूत्रल दवाकी भी जरूरी है और ये दोनोंतरे खूनमें बढे पित्तकू निकाल देतीहै.

(१७ रेचक दवायें–) जो दवाओं दस्तकू जादा खुलासा लातीहै. उसकू सामान्य तरे रेचक दवाओं कहणेमें आतीहै लेकिन् एसी दवा बहोत तरेकीहै कितनीक दवायें मलकूं पचाकर बधे भये मलकूं नीचै उतारती है, जैसे जोहरडे त्रिफला कितनीक कच्चे पक्के दोनुं मलकूं नीचे खेंचके लेजाके दस्त लाती है, जैसें करमाला कितनेक गंठेभये और सूकेभये मलकू उखेडकर न्यारा कर निकालतीहै, जैसें कुटकी जमालगोटा और कितनीक कचा पक्का दोनूं मलकू तथा पित्तकूं पाणी जैसा पतला दस्तकूं बाहर निकालती है, जैसें निशोत. कडवी तूबी, सोनासुखी एरंडीका तेल वगेरे निश्चै विचारके देखे तो ये चारों दवा रेचक गिणे जातीहै.

(१८ उलटीकी दवा–) मैंणफल निमक राई आक आरीठेका जल नीला थोथा कडवी तोरी बंदालफल जिसकू डूगर फलभी कहते हैं.

(सामान्य उपयोग–) खायेभये जहरी पदार्थकू निकालणेवास्ते तेसें कफपित्तकूं और जादा खाये भयेकूं निकालणा होय तब उलटी लेणेकी जरूरत पडतीहै; कितनीक दवा पेटमें पोहचतेही उलटी लातीहै, और कितनीक होजरीमें गये पीछै खूनमें मिलकर मोल लातीहै, फेर उलटी लातीहै,

(१९ कृमिनाशक दवायें–) कितनीक दवा आंतरोके अंदरकी कृमीकूं मार डालती है और कितनीक बाहरके जतुओंको कितनीक दवा एसी है सो जिसके सेवनसें पेटमे कृमि पडतीही नहीं इन सबोंकी तपशील.

(१) पेटकी कृमिनाशक–) कांकच कीडामारी अजमाण (खुरासाणी) पलास अनार वखमा वायविडग कालीजीरी वगैरे.

(२) कृमिघ्न तथा रेचक–) कडवातूबा कपीला रेवचीणीकाशीरा वगेरे

(३) कृमिपैदा नहीं होवै) इद्रजव चिरायता नींब वज डीकामाली अतीस

(४) घावके जीवोंकी दवा–) कपूर कील गधक नीब हींग पारा

(सामान्य उपयोग) जो दवा कृमिकू परास्त करती है वो पेदाभी नहीं होणेदेती फरक इतनाही है कृमिकूं परास्त करणेवाली दवा पेटमें जाकर तुरत कृमीपर असर करके कृमिकू परास्त करतीहै अथवा दवाती है कृमिका विशेष जोर होय तो कृमिघ्न दवाओंका कितनेक दिन सेवन करणेसें कृमि परास्त होती है, जो कृमिघ्न दवा रेचक नहीं है वो खाये पीछे दुसरे दिन एक जुलाब लेणा जिससें सब मलामत निकलपडे.

(२० ऋतुलाणेवाली दवा) वध ऋतूकू खोले टकण नवसादर एलिया हीरावोल वगैरे इनोंकी गर्भाशयपर असर होतीहै

(२१ छींकलाणेवाली दवा) नक छींकणी तमाखू नवसादर कलीचूना सामिल किया (आमोनिया) नाकके श्लेष्म पुडतपर जाके उसमेंसें रसकू टपकाता है, और पाणी झरणेसें शरदी वगैरे शिरका दरद कम पडता है

(२२०) स्नायुयोंकू ढीली करता) जो दवा शरीरके खिंचती नसोकू और सकोचाये भये अवयवोंकू ढीला करे वो दवा इस वर्गमे गिणे जातीहै, अफीम खुरासाणी अजवाण भांग ताम्रभस्म कपूर तमाखू धतूरा हींग कस्तूरी तथा दुसरीभी वातघ्न दवाये मिरगी दिवानापणा हिस्टीरीया हिचकी धनुर्वात दम तथा मगजके रोगोंमें ये दवाये दीजातीहै

(२३० नींद लाणेवाली दवा) अफीम भांग रोगीसें नहीं सहीजाय एसी पीडामेंसें रोगीकू आराम देणेवास्ते नींदलाणेवाली दवाकी जरूरत पडतीहै, अफीम ये अछा काम करताहै, अफीम नींद लाता है, दरदके ऊपरके ज्ञानततुओंकों वेशुद्ध वणाता है, भांगसे शांतिसें नींद नहीं आती वेमार मदमें पडा रहता है, इन दोनों दवाकी मगज पर असर रहती है, तहांतक वेमार नींदमें या मदमें पडा रहता है, उहांतक दरदकी खबर नहीं पडती

(२४ कटुपौष्टिक दवा) इस तरेकी दवा कडवी ओर पौष्टिक होतीहै, अतीस अरडूसा चिरायता कलभा क्रांकुच वखमा कालीपाठ सिंकोना वगेरे

(सामान्य उपयोग) शरीरमे मद २ बुखार रहता होय जीर्ण बुखार होय निवलाई होय उसमे ये दवायें काम देती है, साधारण बुखार तथा बुखारकी नाताकतीकू मिटाकर वदनमें ताकत लाती है, जठराग्निकू सतेज करती है

(२५ पौष्टिक दवाये) जो दवाये शरीरके धातुओंका पोपण कर शरीरकू पुष्ट ओर ताकतदार करती है वो पौष्टिक दवाये कहलातीहै, उसके कितनेक विभाग होते हैं कितनीक दवाये मगजकू पुष्टि देणेवाली है, कितनी एक दवा खूनकू पुष्टि देणेवाली है और कितनीक दवायें जठराग्निकू उत्तेजन देणेवाली है

(१) मगजकू पुष्टि देणेवाली) ब्राह्मी शखावली शतावर विदारीकद वशलोचन दूध वदाम वलवीज अशालिया कोंचवीज केशर सुपेदपेठा उडद सोमल सोना रूपा शिलाजीत नीलाथोथा मोती ताम्रभस्म वगभस्म जसतभस्म अभ्रकभस्म वगेरे.

(२) खूनकू पुष्टि देणेवाली) आंवले कचनार हीराकसी गिलोय लोहभस्म सुवर्णमाक्षिक भस्म वगैरे



(मनशिल) वारीक २ टुकडे कर पोटली वांध डोला यंत्रसें वकरीके मूत्रमें तीन दिन पकाणा नींबूके रसमें या गोमूत्रमें घोटणेसें मनशिल शुद्ध होता है शुद्ध किया भया दवामें काम देता है।

(नीलाथोथा) नीलेथोथेकूं घी तथा सहतमें मिलाकर एक कुलडीमें डाल अंगारमें जलाणा पीछे तीन दिन कांजीमें अथवा खट्टी छाछमें घोट धूपमें सुकाना.

(सोमल) छोटे २ टुकडे कर डोलायत्रसें चदलियेके रसमें एक १ पहर पचाणा.

उपयुक्त इलाजोंका संग्रह.

दवायोंके वणानेकी विधि आगे लिखते हैं, जो नुकसे मुख्य २ रोगोंपर चलता है, ओर मिटाता है उसका नाम ऊपरके तरफ लिखा है, इसके अलावा ओर भी जो जो रोग उन योगोसें मिटता है, जिनोंका नाम दवा वनावटीके नीचे लिखा है.

क्वाथ (उकाली) काढा.

सन्निपात ज्वरपर.

(१९५ अभयादि क्वाथ) जोहरडे नागरमोथ धाणा रगतचंनण पदमाक्ष अरडूसेके पत्ते इंद्रजव वाला गिलोय करमालेकी गिर कालीपाट सुंठ ओर कुटकी इन १३ वस्तुओंका पींपरका अनुपान त्रिदोष ज्वर दाह खासी प्रलाप दम तद्रा दस्तबध उलटी शोष अरुचि।

सन्निपात ज्वरपर.

(१९६ भारंग्यादि क्वाथ) भाडंगीकी जड चिरायता नींवकी छाल मोथ कुटकी वच सूंठ मिरच पीपर अरडूसा तूंवेकी जड रास्ना धमासा पटोल देवदारू हलदी काली पाट कुचीला व्राह्मी दारूहलदी गिलोय नशोत अतिविप एरडीकी जड त्रायमाण छोटी रींगणी वडी रींगणी इद्रजव हरडे वहेडा आंवला कचूर ये ३२ दवायें इस क्वाथकू शास्त्रमें द्वात्रिंशांग एसा नाम भी दिया है जिस सन्निपात ज्वरमें शूल दम कफ दस्त वगेरे भयकर उपद्रव होय उसमें ये क्वाथ देणेकी जरूरी है.

विपम ज्वरपर

(१९७ लघु भाडंग्यादि क्वाथ) भाडगकी जड नागरमोथा पित्तपापडा धमासा सूंठ चिरायता कूठ पीपर भोरींगणी गिलोय ये दश चीजें विपमज्वर त्रिदोपज्वर तथा उपद्रव.

सव साधारण ज्वरपर.

(१९८ गुडूच्यादि क्वाथ) गिलोय धाणा कडवे नींवकी अंतर छाल रगतचनण ओर पदमकाष्ट ये ५ चीजें जठराग्नि प्रदीप्त कर दाह प्यास उलटी तथा अरुचिकूं भी मिटाता है

सब साधारण ज्वरपर

(१९९ नागरादिकाथ) सूठ देवदारू धाणा छोटी भूरींगणी वडी भूरींगणी ये ५ चीजों बुखारकूं पकाकर तीनो दोषकू बुखारकू उतारे है.

वातज्वरपर

(२०० गडूच्यादि काथ) गिलोय पीपर सूठ तीन चीजो

पित्तज्वर

(२०१ पर्पटादिकाथ) पित्तपापडा गिलोय तथा हरडे तीन चीजों

कफज्वर.

(२०२ भूनिंबादि काथ) चिरायता नींबकी छाल पींपर कचूर सूठ शतावर गिलोय वडी भूरींगणी ८ वस्तु

खासीसग बुखार.

(२०३ कट्फलादि काथ) कायफल नागरमोथा भाडगी धाणा चिरायता पित्तपापडा वच हरडे काकडासींगी देवदारू सूठ११चीजों खासी बुखार श्वास कफ वगेरेमे अच्छाहे

जीर्णज्वर.

(२०४ गडूच्यादि काथ) गिलोयका काथ, अनुपान पीपरका चूर्ण.

सर्व शीतज्वर.

(२०५ क्षुद्रादि काथ) भूरींगणी धाणा सूठ गिलोय मोथ पद्माख रक्तचनण चिरायता कडवा परवल अरडूसा पोकरमूल (उसकी एवजीमें एरडकी जड) कुटकी इद्रजव नींबकी छाल भाडगी पित्तपापडा १६ चीजों.

हमेसका विषमज्वर.

(२०६ पटोलादि काथ) कडवे परवल हरडे वहेडा आंवला नींबकी छाल मुनक्का करमाळा अरडूसा ८ चीजों, अनुपान मिश्री सहत

सततादिक सब विषमज्वर.

(२०७ पटोलादि काथ) पटोल इद्रजव देवदारू हरडे वहेडा आंवला मोथ मुनका मोलेठी गिलोय अरडूसा ११ चीजों, अनुपान सहत सतत याने ७,१० या १२ दिनतक हमेस रहणेवाला अण उतार बुखार सतत याने रात दिनमें दो वखत आनेवाला बुखार चोथिया तेजरा तथा प्रथम दाहके सग आणेवाला इन सर्वोपर

ज्वरअतीसार

(२०८ नागरादि काथ) सूठ कूडा छाल नागर मोथा गिलोय अतीस ५ चीजों.

अतिसारसग्रहणी.

(२०९ हीबेरादि काथ) नेतरवाला धावडीके फूल लोद कालीपाट रेसा खतमी

कूडेकी छाल धाणा अतीस मोथ गिलोय बीलगिर सूंठ १२ वस्तु महोत दिनोंका अतिसार सग्रहणी अरुचि आम शूलज्वर.

(२१० त्रिफलादि क्वाथ) हरडे वहेडा आंवला देवदारु मोथ मूसाकर्णी सहजनेकी छाल ७ चीजों अनुपान पींपर तथा वायविडगका चूर्ण पेटकी कृमि तथा उसके सर्व विकार मिटे.

पांडूकामला.

(२११ त्रिफलादि क्वाथ) हरडे वहेडा आंवला गिलोय कुटकी नींबकी छाल चिरायता अरडूसेके पत्ते ८ चीजो, अनुपान सहत

रक्तपित्त

(२१२ वासादि क्वाथ) अरडूसेके पत्ते मुनका दाख जो हरडे तीन चीजों, अनुपान सहत मिश्री अथवा इकेला अरडूसेका काढाकर सहत मिलाकर पीणा, रक्तपित्तयाने मूंसें दस्त ओर पेसावसें नाक या कानमेसें खून गिरे सो रोग खासी श्वास.

श्वास कास

(२१३ क्षुद्रादि क्वाथ) भूरींगणी कुलथी अरडूसा सूंठ ४ वस्तुयें, अनुपान पोकर मूल वो नहीं मिले तो एरड जडका चूर्ण दम या श्वास चढे सो रोग मिटता है

वादी रोग.

(२१४ रास्नादि क्वाथ) (रास्नापचक) रास्ना गिलोय देवदारू सूंठ एरंडीकी जड ५ चीजों सब तरेकी बादीपर दीजाती है.

सब वादीपर

(२१५ रास्नादिक्वाथ) (महारास्नादि) रास्ना दूणी अथवा ज़ादा लेणी ४ मासा चिकणेकी जड एरंडकी जड देवदारू कचूर वच अरडूसा सूंठ हरडे चव्य मोथ साटेकी जड गिलोय वधायरा वरियाली गोखरू आसगध अतीस करमाला शतावर पींपर ऊठकटाला-धाणा छोटी रींगणी बडी रींगणी २६ चीजों अनुपान सूठका चूर्ण योगराज गूगल अजमोदादि चूर्ण अथवा एरडीका तेल इसमेंकी कोइ एक चीज अनुपांन रोग ओर प्रकृतीमुजब देणी सर्वांगवायु हिस्टीरीया आमवायु अन्त्रवृद्धि (जिसकू गोसा उतरणा कहते हैं) वांझडीपणा पेटकी वायु वगेरे.

सब प्रमेहपर.

(२१६ फलत्रिकादि क्वाथ) हरडे वहेडा आंवला मोथ दारूहलदी कडवा तूबा ६ चीजो अनुपान हलदीका चूर्ण

प्रदर शरीर धुपणा.

(२१७ दार्व्यादि क्वाथ) दारूहलदी रसोत मोथ मिलावा बीलगिर अरडूसा

चिरायता ७ चीजों अनुपान सहत,शूल चलकर गिरणेवाला लाल पीला सपेद ओरतोका प्रदर सब मिटता है

सूवा रोग.

(२१८ देवदार्व्यादि क्वाथ) देवदारू वच कूठ पीपर सूठ कायफल मोथ चिरायता कुटकी धाणा जो हरडे गजपीपर छोटी रींगणी गोखरू धमासा वडी रींगणी अतीस गिलोय काकडासींगी साहजीरा २० चीजों सूवा रोगवाली ओरतकी पेटकी शूल खासी बुखार श्वास मूर्च्छा कपवायु शिरकी शूल दस्त ये सब मिटता है.

सोजेपर.

(२१९ पुनर्नवादि क्वाथ) साटा दारूहलदी हलदी सूठ जो हरडे गिलोय चित्रक भाडंगी देवदारू ९ चीजों हाथ पैर पेट तथा मूके सोजेपर फायदा करती है

वृषणसोथ

(२२० त्रिफलादिकाथ-) हरडे वहेडा आंवला ३ वीलगिर अनुपान गोमूत्र आं-डोकी सूजन उतरती है

वातरक्त उपदसपर

(२२१ मजिष्ठादिकाथ-) मजीठ हरडे वहेडा आंवला कुटकी वच दारूहलदी गिलोय कडवेनींबकी छाल ९ चीजों

चूर्ण-फकी-

बचोंका बुखारदस्त

(२२२ कृष्णादिचूर्ण) पींपर अतीस नागरमोथ काकडासींगी ४ चीजों, अनुपान सहत बचोंका बुखार दस्त दम खासी उलटी

बचेकी खासी दस्त उलटी.

(२२३ शृंग्यादिचूर्ण) काकडासींगी अतीस पींपर ३ चीज, अनुपान सहत अथवा इकेला अतीसका चूर्ण सहतमे

अतिसार पतला झाडा

(२२४ लघुगगाधरचूर्ण) नागरमोथ इद्रजव वीलगिर लोद मोचरस धावडीके फूल ६ चीजों अनुपान छाछ तथा गुड रक्तातिसार पित्तातिसारका अनुपान चावलोका धोवण तथा सहत

अतीसार

(२२५ वृद्धगगाधरचूर्ण) नागरमोथा टेंट सूठ धावडीके फूल लोध वाला बील-गिर मोचरस कालीपाट इद्रजव कूडाछाल आंबकी गुठली अतीस लजालू १४ चीजों । अनुपान चावलोका धोवण तथा सहत

अतीसार.

(२२६ अजमोदादिचूर्ण) अजमोद मोचरस अदरख धावडीका फूल ४ चीजों अनुपान दहींमें मिलाकर पीजाणा

कास क्षय.

(२२७ सितोपलादिचूर्ण) मिश्री १६ भाग वशलोचन ८ भाग पींपर ४ भाग इलायची ४ भाग तज १ भाग ५ चीज अनुपान सहत तथा घी श्वास खासी क्षय हाथपांवका दाह मंदाग्नि अरुचि ज्वर रक्तपित्त.

उलटीपर

(२२८ एलादिचूर्ण) इलायची जटामांसी सूंठ मोथ पींपर सुपेद चंदण धाणा खारक तमालपत्र मोलेठी खस वाला नेतरवाला लौंग अनारका छिलका १४ चीज, अनुपान सहत.

(२२९ नींबपंचांगचूर्ण) बणाणेकी विधि नं० १५१ देखो, चमडीके सब रोगोंपर बहोत फायदेबंदहे

(२३० आकरकरभादिचूर्ण) अकलकरा सूंठ ककोल केशर पींपर जायफल जावंत्री चंदण सुपेद ये ८ एकेक भाग अफीम ४ भाग अनुपांन सहत मात्रा एक मासा रातकू चाटणा वीर्यका स्तंभन होय रतिसुखमें आनंद पावे.

(२३१ नारासिंह चूर्ण) भिलामा सूंठ मिरच पींपर हरडे बहेडा आंवला तिल मिश्री ९ चीज अनुपांन घी तथा मध मंदाग्नि वायु और जलदर वगैरे उदररोगमें भी फायदाबंद हे अनुपांन दूध पथ्य भी दूध.

उदररोग.

(२३२) पवित्र चूर्ण) पंचलूणतोला ५ त्रिकटु तोला २॥ त्रिफलातो २॥ अजवाण तो २॥ अजमोद तो २॥ चित्रककी जड तोला २॥ गंधक तो १० हरडे तो १० सेंधव तो २० सुठ तोला ४० पांचो निमककूं कडवे तूंबेमें भरणा उसके कपड मिट्टीकर भोभरमें पकाणा पीछे निमक अंदरसें निकाललेणा उसमें निमकके संग सब चीजे मिलाणी एकवखत नींबूके रसकी भावना देणी इससे तापतिल्ली जलंदर पेटका सोजा वगेरे सब तरेके उदररोगमे दीये जाताहै । मात्रा अढाइ मासेसें पांच मासा.

अतिसार.

(२३३ विल्वादीचूर्ण) पकी बीलगिर मोथ धावडीके फूल कालीपाट मोचरस पांच चीजों अनुपान गुड तथा छाछ

धातुवर्द्धक.

(२३४ रसायण चूर्ण) गिलोय आंवला गोखरू ३ चीज घी तथा मिश्रीका अनु-

पान सब तरेका धातु दोष नाताकती नपुसकपणा मगजकी बेमारी जेसेके मिरगी पागलपणा हिष्टिरीया

उपदश.

(२३५ चोपचीणी चूर्ण) चोपचीणी तो १० सक्कर तो ४ पीपर तो. १ पीपलामूल तो १ मिरच तो १ लोंग १ अकलकरा १ खुरासाणी अजवाण. तो १ सुंठ तो १ धायविडंग तो. १ तज तो. १। गरमजलमें लेणेसें प्रमेह उपदश, तांतो जेंसा धातूका गिरणा क्षीणता तथा गरमीकी गठिया

दाहपित्त मूत्रकृच्छ्र

(२३६ चदनादिचूर्ण) अगर तगर चदन वशलोचन तथा वाला ५ चीजों सम वजन मिश्री बराबर अनुपान दूध

पाचन.

(२३७ हिंगाष्टक चूर्ण) तली हींग सूठ मिरच पीपर अजवाण जीरा स्याहजीरा सींधानिमक ८ चीजों अनुपान घी

संग्रहणी अतिसार

(२३८ लाहीचूर्ण) गंधक टक २ पारा टक २ सूंठ मा २० मिरच टां १ पीपर मासा १० पांचखार मासा १० शेकी अजमोद टांक ५ शेकाजीरा टाक ५ शेकी हींग टांक ५ टकण फुलाया भया टंक ५ शेकी भांग तो ८ ये १५ चीजों पारेकी गधककी कजलीके सग मिलाकर दो दिन घोटणा मात्रा २ मासे सें ४ मासेतक अनुपान गउकी छाछ सग्रहणी मदाग्नि अतिसार हरस पेटकी कृमि

गुल्म उदर.

(२३९ वज्रक्षारचूर्ण) सादानिमक सींधानिमक कचनिमक जवखार संचल टकणखार साजीखार इन सबोंकों पीस एक दिन थोरके दूधमे भिगाणा धूपमे सुकाणा तीन दिन आकके दूधमें भिगाणा धूपमें सुकाणा पीछे आकके पानमें लपेट पालसियेमें सपुटकर गजपुटमें फूंके पीछे निकाल सूठ मिरच पीपर त्रिफला अजवाण जीरा चित्रकमूल ये सब खारके बराबर वजनसे मिलाणी मात्रा टांक २ अनुपान गरमपाणी अथवा गोमूत्र गोला शूल अजीर्ण सोजा उदरके रोग मदाग्नि आफरा मिटता है

(२४० शतावर्यादि चूर्ण) शतावर गोखरू कौंचबीज नागबला बलबीज तालमखाना ये ६ अथवा नागबला नहीं मिले तो पांचोंहीका चूर्ण अनुपान गायका दूध रातका खाणा

(२४२ मुसल्यादि चूर्ण) सुपेद मूसली गिलोयसत्त कोंच गोखरू शेमलकी जड मिश्री आंवला ७ चीजों सम भाग चूर्ण अनुपांन गउका घी

(२४२ नाराच चूर्ण) पीपर तो २ निशोत तोला ४ मिश्री तो ४ ये तीनोंका चूर्ण मात्रा २ तोला अनुपान सहत इस चूर्णसें पेटका चढणा मलबंध उदररोग कफ तथा पित्तकी शूल मिटती है.

(२४३ पाचक चूर्ण चित्रककी जड तो २ अजमोद०॥ भर साजीखार०॥ भर सींधा निमक एक तोला १ सादा निमक १ तोला सूंठ १ पींपर १ मिरच १ चव्य १ जवखार० ॥ सें चल० ॥ सांभरनिमक ॥ इन सर्वोंके चूर्णकूं पहले बीजोरेके रसकी वो नहीं मिले तो नींबूके रसकी भावना देणी पीछे अनारके रसकी भावना देणी.

(२४४ मलशुद्धिका चूर्ण) हरडे वडी २ तोला सोनामुखी २ तोला रेवचीणी०॥ मिरच० ॥ सूंठ १ तोला सेंचल० ॥ तोला सींधानिमक १ तोला इन सर्वोंका चूर्ण रातकूं गरम पाणीसें लेणा.

गुटिका-गोली मोदक.

(२४५ संजीवनी) वायविडंग सूंठ पींपर जो हरडे आंवले वहेडा वज गिलोय भिलावा शुद्ध वच्छनाग १० चीजों समवजन गोमूत्रमें घोट चिरमी २ जितनी गोलिये करणी अनुपांन आदेकारस अजीर्ण तथा गोलेमें १ गोली हेजेमें २ सांपके जहरपर ३ सन्निपातमें ४ हैजेमें तूटी नाडीकूं पीछी लाती है, एसा एक वैद्यने अनुभव करा है, हैजेमें २ गोली कही भई है लेकिन् जहांतक दस्त उलटी लगती होय उहांतक दो दो घंटेसे १ एक २ गोली देते रहणा.

प्रमेहवगेरे.

(२४६ चंद्रप्रभा) कचूर वच मोथ चिरायता गिलोय देवदारू हलदी अतीस दारु हलदी पींपला मूल चित्रकजड धाणा हरडे वहेडा आंवला चव्य वायविडंग गजपींपर सूंठ मिरच पीपर सुवर्णमाक्षिक भस्म जवखार साजीखार सींधा निमक सेंचल बीडलूण ये २७ चीजों अढाइ २ मासा सवा पांच तोला निशोत, दंतीमूल तमाल पत्र तज इलायची वशलोचन ये सब एकेक तोला लोहभस्म २ तोला मिश्री ४ तोला शिलाजीत आठ तोला गूगल ८ तोला सबकूं एकठी मिलाकर जलमें गोलियां बणाणी प्रमेह मूत्रकृच्छ मूत्रघात पथरी पांडू प्रमेह पिडिका (फुनसियां) कामला अंडवृद्धि दाह पित्त नेत्ररोग ओरतोका ऋतुदोष पुरुषोका धातुदोष ये दवा रसायनरूप है, युक्तिसें उपयोग करणेसें तीनों दोषोकू जीतती है

क्षय जीर्णज्वर.

(२४७ वसंतमालती) वणाणेकी विधि न० ५४ देखो क्षय जीर्णज्वर प्रदर मात्रा रत्तीसें मासेतक अनुपान घी सहत मिश्री

वच्चोंका दस्त उलटी अनिद्रा

(२४८ अजमोदादि गुटिका) अजवाण हरडे खारक केशर ये चार एकेक भाग

जायफल मोचरस अफीम ये तीन आधा २ भाग जावंत्री लौंग तथा सहत ये तीन दो दो भाग इन १० की गोलियां बाजरीके दाणे जितनी २ करणी

खासी.

(२४९ कस्तूर्यादि गुटिका) कस्तूरी तथा कपूर एकेक भाग लौंग दोयभाग मिरच पीपर बहेडा तथा कुलिंजन आधा २ भाग अनारकी छाल ४ भाग ये ८ चीजों काथेके रसमें या जलमें पीस मूग जितनी गोली

खासी

(२५० लवंगादि गुटिका) लौंग बहेडा काली मिरच खेरसार ४ चीजों समभाग बबूलके छालकी उकालीमें केई दिनोतक घोटणा चणेप्रमाण गोलियां करणी.

अतिसार

(२५१ अनारवटी) बनाणेकी विधि देखो अनारके गुणोंमें.

मलशुद्धी

(२५२ द्राक्षादि गुटिका) मुनका दाख सेर० ॥ सोनामुखी तो ४ हरडे वडी तो ४ मिश्री तो ४ जावत्रीमा ६ केशरमा २ इन सर्वोका चूर्णकर दाखमे एकेक तोलेकी गोली बांधणी मलकी सफाई मलके आसरे रही वादी आम्लपित्त पित्तवायु वगेरे रोग मिटताहै.

खासी.

(२५३ मरीचादि गुटिका) मिरच तो १ पीपर तो १ जवखार तो० ॥ अनारकी छाल तो ४–ये ४ चीजों चूर्णकर आठ तोले गुडमे गोलिये करणी मात्रा ३ मासा सब तरेकी खासीकू मिटाती है.

पीनस.

(२५४ व्योषादि गुटिका) सूठ मिरच पींपर अम्लवेतस चव्य तालीसपत्र चित्रक जीरा अबली ये सब एकेक तोला तज तमालपत्र इलायची ये तीन तीन २ मासा इन बारोंका चूर्ण और २० तोला गुड गोली .मात्रा पाच मासा या १ तोला आम पीनस दम खासी

(२५५ योगराज गुग्गल) बनानेकी विधि देखो न० ५८ में

२५६ किशोर गुग्गल–न० ५८ २५७ त्रिफला गुगल–नं० ५८

२५८ गोक्षुरादि-गुगल–न० ५८ २५९ काचनार गुगल–न० ५८

जीर्ण धातुगतज्वर.

(२६० अमृतामोदक) बणाणेकी विधि देखो न० ५७ में चाहे जेसा पुराणा विषम ज्वर जीर्णज्वर धातुगत ज्वर बहोत दिन सेवणेसें चलाजाताहै फेर ये बुखार पीछा उखडता नहीं. मात्रा तीन मासे सें १ तोला अनुपान दूध.

धातुपुष्टि.

(२६१ माषादि मोदक) छिलका विगर की उडद की दालका आटा, गहूंका रव छडेभये जवका आटा, चावलोंका आटा, पीपरका चूर्ण, ये पांच चीजे ४ चार २ तोल उसमें पावघी डालके, कडाहीमेसे कणा, पीछै सबके बराबर सक्करखांड, सक्करसें दूणा पाणी, उसकी मंद आंचसें चासणीकर, शेका आटाचासणीमें डाल चार २ तोलेका लड्डू बणाणा.

हरसमस्सा.

(२६२ बृहत्सूरणादि वटक) सूरण सुकाया भया भाग १६ वधायरा भाग १६ मूसली ८ भाग चित्रक ८ भाग हरडे बहेडा आंवला वायविडंग सूंठ पीपर मिलावा पींपला मूल तथा तालीसपत्र ये सब चार २ भाग इनके चूर्ण में दूणा गूड मिलाकर घडी गोली करणी मात्रा ५ मासे सें तोलेतक अग्नि प्रदीप्त होकर हरस तेसें वायु तथा कफसें भई सग्रहणी श्वास कास क्षय हाथी जेसे पांव सोजा हिचकी प्रमेह भगदर वगैरे रोग अछा होताहे ये रसायणरूप सर्व रोग हरदवा हे.

अवलेह—चाटण—पाक.

कास श्वास हिचकी.

(२६३ कंटकारी अवलेह—खडी भूरींगणीका पंचांगदशसेर सूका अधकिचराकूट २५ सेर जलमें उकालणा चतुर्थांस बाकी रहे तब छाणकर मिश्री सेर २ घी तोला ३२ तेल तोला ३२ गिलोय चव्य चित्रक मोथ काकडासींगी सूंठ मिरच पीपर धमासा भाडंगी की जड रासना कचूर ये १२ चीजोंका चार २ तोलेका चूर्ण डाल फेर उकालते चाटणे जेसा पाक जब होजाय तबी नीचै उतार ठरेबाद ३२ तोला सहत वशलोचन पींपरका चूर्ण १६ सोले तोला ये तीन चीजों मिलाकर मट्टीके चिकणे पात्रमें धर रखणा हिचकी दम खासी मिटतीहै.

हरसपर

(२६४ कुटजावलेह) कूडेकी छालसेर १० अधकिचरी कूट २५ सेर जलमे उकालकर चतुर्थांसरहे तब उतार छाण तीनसेर गुड डाल फेर चूलेपर चढाकर पाक चाटणे जेसाबणाणा पीछे ये कपडछाण चूर्ण डालणा रसोत मोचरस सूठ मिरच पींपर हरडे बहेडा आंवला लजालूकी जड चित्रक पहाडमूल बीलगिर इंद्रजव वच मिलावा अतीस वायविडंग तथा वाला ये अठारे चीज चार २ तोला घी ३२ तोला ठंढा पडे पीछे सहत ३२ तोला डालणा इससें हरसके सब रोग अतिसार अरोचक सग्रहणी पांडू रगतपित्त कामला अम्लपित्त सोजन दुबलापणा वगेरे रोगमें दिये जाताहे अनुपान छाछ दूध दहीं घी पाणी इसमेंसें रोगानुसार देणा

क्षय खास.

(२६५ हरीतकी अवलेह) २५६ तोला जव ८० तोला दशमूल १०० वडी हरडे चित्रकमूल पीपलामूल आंधीझाडा कचूर कोच शंखावली भाडगी गजपींपर चिकणामूल पोकरमूल ये एकेक आठ २ तोला इनोंकों सब दवाके वजनसे अठगुणे जलमें उकालणा तथा हरडे सो जब वाफीजजावे उनोंको जलमेसें निकाल कूट कर उसका कपड छाण सत सब निकाललेणा पीछे उकालेके पाणीकू फेर चूले चढाणा उसमें वो हरडेका सर्वस्वसत गुड सेर १० घी ३२ तोला तेल ३२ तोला डालकर पाक तइयार करणा ठढामये वाद तोला १६ सहत पींपरका चूर्ण १६ तोला डालणा अगस्तावलेह क्षय खासी बुखार दम हिचकी हरस अरुचि पीनसरोग सग्रहणी वगेरे रोगोंकूं मिटाताहे उत्तम रसायण है.

रक्तपित्त आम्लपित्त

(२६६ द्राक्षावलेह) कालीमुनका दाखकू दूधमें उकाल घीमे तलणी पीछे मिश्रीकी चासणीकर उसमें डालणी पीछे विदाम घीमे तलकर कूट कर चूर्ण करणा कीटी पक्की करणी जायफल लोंग जावत्री इलायची वशलोचन तज तमालपत्र नागकेशर कमलगटा इन सर्वोंका चूर्ण उस चासणीमें मिलादेणा पीछे आम्लपित्त रगतपित्त क्षय पांडू कामला तथा अशक्ति दूर होतीहै

दाहभ्रम

(२६७ कूष्मांडावलेह) पके सपेद पेठेका जलनिकाल गिरकू नीचो डकार घीमें तलणा पीछे द्राक्षावलेहकी सब चीजों अदर मिलाणी और सब चीजोंके वजन बराबर बूरेकी चासणीकर पाक तइयार करणा आम्लपित्त दाह भ्रम शोप क्षीणता मदाग्नि

कासश्वासपर

(२६८ आर्द्रखडावलेह) पाव आदेकू छीलकर उसका टुकडा करणा पीछे उसकू थोडे घीमें सेकणा पीछे सेरगुड या बूरेकी चासणी करके उसमे घीमें सेकाभया आदा ओर इस चीजोंका चूर्ण करडालणा तज तमालपत्र इलायची नागकेशर लोंग जो हरडे भाडगी अरडूसा नीमकी छाल देवदारू आसगध जावत्री जायफल अगर मुनका एकेक दो दो तोला कास श्वास क्षय मदाग्नि हृदयरोगवगेरोंकी शाति होती है

वीर्यस्तभन

(२६९ आकूती माजम) भाग तो २० कू खूब जलसें मसल २ कर धोणा जिसें हरा रगका पाणी निकल जाय पीछे उसकी पोटली बांध ४ सेर दूधमें डाल उस दूधकू अछीतरे उकालणा पीछे दही जमाणा उसका विलोयकर घी निकालणा फेर उस घीमें विदाम तो २० पिस्ता तो २० खोवेकी कीटी तो २० मुनका तो २० चिरोंजी तो

२० इनोकू तल लेणा पीछे एक सेर सक्करकी चासणीकर ये चीजें सब मिलाणी जायफल जावंत्री इलायची समुद्रशोषके बीज अफीम केशर रूमी मस्तंगी कंकोल ये एकेक तोला सालम सुपेदमूसली आसगंध सतावर कोंच गोखरू तालमखाना ये दरेक दो दो तोला तथा अकलकरा सूंठ मिरच पीपर ओर पीपलामूल ये चार एकेक तोला भांगका घी तलेवाद वचे सो पाकमें डाल देणा चाटणे जेसा पाक करणा मात्रा छ मासेसें तोला तक इससें वीर्यस्तंभन तथा वीर्यवृद्धि अच्छी तरे होती है, भांगमें नसाहै इसवास्ते जिसकू लेणेका मावरा नहीं होय उसकू विचारके लेणा भांग चढ जाय तो नींबू चूसणा अथवा छाछ ओर भात खाणा दस्तकी कबजीयतबालोंनें आकोती खाणी नहीं.

वीर्यवृद्धि पुष्टि.

(२७० विदामपाक) बदामकी कुली २० तोला कीटी १० तोला बेदाणा ४ तोला लवग जायफल जावत्री केशर वंशलोचन कमलगट्टा ये एकेक आधा २ तोला इलायची तज तमालपत्र नागकेशर ये दरेक एकेक तोला सक्कर अढाई सेर घी २० तोला चासणीकर सब चीजोंका चूर्ण मिलाणा तीन मासा अभ्रक भस्म मिलाणा तीन मासा वंग सुवर्णमाक्षिक भस्म पूण तोला प्रवाल भस्म ॥ तोला जो ये चीजों नहीं मिले तो एसा ही लेणा वीर्यवृद्धी पुष्टि तथा बुखारसें भई नाताकतीमें ये पाक बहोत फायदेबध है.

नामर्दाई

(२७१ कंदर्पपाक) सपेद कांदा तो २० दूध सेर २ घी सेर १ सहत तोला १० बूरा सेर २ तज तथा जायफल एकेक तोला लोंग केशर आधा २ तोला शुद्ध ताम्र भस्म मिले तो ॥ तोला कीटी १० तोला इन सबोका विधिसें पाक तइयार करणा ये नपुसकपणा दूर करता है.

प्रदर रक्तपित्त

(२७२ जीरापाक) जीरा सेर १ चूर्णकर चार सेर दूधमें पकाकर खोवावणा कर फेर घी डाल, कीटी वणाणी पीछे२सेर बूरेकी चासणीकर तज तमालपत्र इलायची नागकेशर पींपर सूंठजीरा नागमोथा वाला अनारकीछाल रसोत धाणा हलदी सालम वंशलोचन तवखीर ये दरेक दोदो तोला ये सब चीजे चासणीमें मिलाकर पाक वणाणा प्रदर रक्तपित्त मूंकारोग प्रमेह पथरी जीर्णज्वर दाह पीनस हरस ये सब रोग मिटजाता है.

आमवात सब वादी.

(२७३ मेथीपाक) मेथी दाणा तो१०सूठ तो १० इन दोनोंका चूर्णकर५सेर दूधमें राधणा खोवा भयेवाद उसमें घी डालते जाणा ओर कीटी करणी ठंढा भये वाद दो सेर बूरेकी चासणीकर सूंठ पींपर पीपलामूल चित्रककी जड अजमोद धाणा जीरा सूफ

जायफल कचूर तज तमालपत्र मोथ ये हरेक चार २ तोलेका चूर्ण डालना लड्डू वणाणा आमवात सब वादीके रोग ओरतोंका सूआरोग वायुरोगमें ये पाक बहोत अछा है.

धातुगतज्वर

(२७४ पीपरपाक) पीपरका चूर्ण ६४ तोला चो गुणे दूधमें उकालकर खोवा करणा उसमें घी रुपिया २५६ भर डालकर मद आंचसें कीटी करणी पीछे २५६ तोले बूरेकी चासणीकर पाक तयार होणेसें तज तमालपत्र नागकेशर इलायची हरेक चार २ तोलेका बारीक चूर्ण तेसें बिदाम ओर ऊपरसे घी दिल चाहे जितना डालणा मात्रा १ लड्डूसें २ गरमीमालम देतो अनुपान दूध धातुगत जीर्णज्वर उधरस दम पांडु धातुक्षय और मदाग्निपर फायदेवद है

खासी क्षय

(२७५ अरडूसेकी अवलेही) अरडूसेके पत्तोंकों वाफके वस्त्रमें रस निचोड लेणा पीछे उसमें मिश्री मिलाकर चाटणे जेसा पाक वणाणा पीछे उसमें बहेडा हलदीका चूर्ण डालणा खासी कफ श्वास क्षय तथा रक्तपित्त मिटता है

मदाग्नि.

(२७६ आदेकी अवलेह) आदेका रस १० तोला जल १० तोला मिश्री २० तोला अग्निपर पाक वणाणा पीछे केशर इलायची जायफल जावत्री लोंग हरेक एकेक तोलेका बारीक चूर्ण मिलाणा इससे मदाग्नि खासी श्वास अरुचि मिटती है

सूवारोग.

(२७७ सौभाग्य सूठीपाक) अच्छी सूठ तोला ३२ जिसकू ३२ तोला गऊके घीमें मकरोय आठ सेर गऊके दूधमें डाल खोवा करणा पीछे उसमें ओर घी डालते जाणा मद आचसे हिला कर कीटी करणी पीछे ८ सेर बूरेकी चासणी करके उसमें धाणा तीन मासा सूफ सवा तोला वायविडग सूठ नागकेशर मिरच पीपर ओर मोथ हरेक चार २ तोला मनमुजब बिदाम पिस्ता चिरोंजी ऊपरसें घी डालके पाक करणा.

पौष्टिक

(२७८ सालमपाक) सालम लसणकी कुलीजेसी तो २० ऊपरके पाक मुजब साढी चौदे सेर दूधमें उकाल खोवाकर घी डाल कीटीकर सवाई या डेढी वजनकी कीटीसें बूरेकी चासणी करणी उन मान मुजब केशर बिदाम पिस्ता चिरोंजी तज तमालपत्र नागकेशर इलायची वगैरे डालणा

वाजीकर वीर्यवृद्धि

(२७९ कामवर्द्धक मोदक) तालमखाना गोखरू बलबीज सुपेदमुसली कोंच बीज आसगध मोलेठी शतावर ये सम वजनसब मिलके २ सेर अठगुणे दूधमें उकाल की-

टी करणी घी डालकर कीटीमें दूणी सक्करकी चासणी कर नब २ टांकके लड्डू बणाणा इच्छा होय तो तज तमालपत्र इलायची नागकेशर विदाम चिरोंजी थोडी २ डालणी और दवा कोइभी डालणी नहीं

उपदंशसे भया चमडीरोग.

(२८० चोपचीणीपाक) चोपचीणीका चूर्ण) तो ४८ बहोत घीमें सेकणा ५६ तोला बूरेकी चासणी करणी उसमें पीपर पीपलामूल सूठ मिरच तज अकलकरा लोंग एकेक तोलेका चूर्ण कर सब मिलाणा विदाम चिरोंजीभी थोडी डालकर गोली बांधणी गरमी फूटे सांधोंमें गठिया होजाय उसमे ये फायदा करताहै.

आम्लपित्त

(२८१ कूष्मांड खंडपाक) सपेद पेठेका रस ४०० तोला गऊका दूध ४०० तोला आंवलेका चूर्ण ३२ तोला इन तीनोंको मदाग्निसे पकाकर पीछे उसमें ७२ तोला बूरा डालकर पाक तइयार करणा.

रक्तपित्त.

(२८२ खंड कुष्मांडपाक) ३२ तोला भूरे कोलेका गिर लेकर उसकू ६४ तोला जलमे उकालणा आधा पाणी जले जब कपडेसे नीचोकर पाणी छाण लेणा वो पाणी रहणे देणा ओर गिरिकूं २० रुपेभर घीमें सेकणा पीछे ६४ तोला बूरेकी कोलेके पाणीमें चासणी करणा उसमे सेकाभया पेठा डालणा पीछे इन चीजोंका चूर्ण डालणा मोथ आंवला वशलोचन भाडगी तज तमालपत्र इलायची ये तीनों एकेक तीन २ मासा सूठ धाणा काली मिरच ये हरेक एकेक तोला लींडीपीपर ४ तोला

आसव.

क्षतक्षयपर

(२८३ द्राक्षासव) काली दाख सेर ५ उसमें पका सवामण जल डालकर उकालणा आधा पाणी जले तब उतारकर उसमें गुड सेर २० तथा तज तमालपत्र इलायची नागकेशर पीपर मिरच ककोल दरेक ४ चार २ तोला कूटकर ओर धावडीका फूल तोला ५० सावत डालणा इन सबोको घीके चिकणे पात्रमे भर मू बधकर मटकीकूं एक महीनेतक धूपमें धरणा फेर उस आसवकू अनारज लोक काममें लेते हैं इससें छातीका क्षय क्षत खास श्वास मंदाग्नि पेटकी वायु चूक दस्तकी कबजी खून विगाड वगेरे रोगोंमे फायदा करता है

रक्तपित्त

(२८४ उसीरासव) वाला नेतरवाला लालकमल कालाकमल गहूंला (गहूमें पेदा होता है) पद्मकाष्ठ लोद मजीठ ४ मासा कालीपाट चिरायता कुटकी वडकी छाल

गूलरकी छाल कचूर पित्तपापडा सपेदकमल पटोल कचनारकी छाल जामुनकी छाल शेमलकी छाल ये सब चार २ तोला लेकर चूर्ण करणा दाख ८० तोला धावडीका फूल ६४ तोला पाणी २०४८ तोला बूरा सेर १० सहत सेर १० इन सबोंकू एक मटकीमें भरकर मूं घधकर एक महीना रखणा रक्तपित्त पांडु कोढ प्रमेह हरस कृमि शोप मिटता है.

पांडुरोग

(२८५ लोहासव) लोहभस्म सूठ मिरच पीपर हरडे बहेडा आंवला अजमोद वायविडग नागरमोथ चित्रकमूल ये एकेक चीज सोले २ तोला धावडीका फूल २० तोला तमाम चीजोंका चूर्णकर उसमें २५६ तोला सहत ४०० तोला गुड ओर २०४८ तोला पाणी सब ऊपर लिखे मुजब मटके आदिमे भरणा इससें जठराग्नि प्रदीप्त होती है, पांडु सोजा गोला उदररोग हरस कोढ चमडीके विकार तिल्ली खुजाल खासी दम भगदर अरुचि सग्रहणी उदररोग मिटता है

रक्तगोला

(२८६ कुमारिकासव) कवारपठेका रस याने गिर २०४८ तोला गुड ४०० तोला भांग १०० तोला पाणी १०२४ तोला इन सबोंका काथ करणा चोथा भागका जल बाकी रहणेसें छाण लेणा उसमें सहत २५६ तोला धावडीका फूल ६४ तोला जायफल मिरच ककोल कबाबचीणी जटामांसी चव्य चित्रक जावत्री काकडासींगी बहेडा पोकरमूल ये दरेक चार २ तोला ताम्र तथा लोहभस्म तो २ अगली तरे मटकेमें भरणा मू घधकर २० दिन जमीनमें अथवा अनाजके ढिगलेमें रखणेसें आसव होता है, लेणेसें औरतोंका रक्तगुल्म पाचतरेकी खासी श्वास क्षय उदररोग हरस वादीके रोग मिरगी वगेरे रोग मिटता है, जठराग्नि प्रबल होती है, ओर पेटकी शूल तथा गुल्म रोग मिटता है

घृत–घी.

कलेजारोग तिल्लीपर.

(२८७ क्षीरघृत) पीपर पीपलामूल चव्य चित्रक सूठ सेंधव ये सब चार २ तोला उसकू जलमें पीस चटणी करणी पीछे ६४ तोला गऊका घी घीसे चोगुणा गऊका दूध उसमें चटणी डाल घी बाकी रहे जहातक उकालणा पीछे घीकू कपडेसें छाण लेणा इस घीकू भोजनके संग खाणेसें पेटकी तिल्ली गलती है, विषमज्वर तथा मदाग्नि मिटती है.

वातरक्त कोढपर

(२८८ अमृताघृत) गिलोयकू कूट चोगुणे जलमें उकाल चतुर्थांस रखणा छाणकर उकालीके जलसे चतुर्थांस घी घीसें चतुर्थांस गिलोयकी जलमें पीसी भई चटणी

तीनोंकों मंद आंचसें पकाकर घी बाकी रहें तब उतार छाण लेणा वातरक्त कोढ चमडीके सब रोग मिटते हैं.

नेत्ररोगपर.

(२८९ त्रिफलाघृत) हरडे बहेडा आंवला इनोंका स्वरस सूका मिले तो अठगुणे जलमें उकाल चतुर्थांस रखणा बोदरेकका जल ६४ तोला अरडूसेका रस ६४ तोला भांगरेका रस ६४ तोला बकरीका दूध ६४ तोला गऊका घी ६४ तोला तयारकर पीछे हरडे बहेडा आंवला पीपर दाख सपेदचनण सींधानिमक चित्रकमूल आसगंध दूणी मोलेठी मिरच सूठ बूरा सफेदकमल नीलकमल साटा हलदी दारूहलदी फेर मोलेठी ये उगणीस चीजों तोला २ भर लेकर चटणी करणी इन सब चीजोंको एक पात्रमें डाल आंचपर घी तइयार करणा इस घीसें रातींधापणा आंखमें जल वहणा खुजली जाला मोतियाबिंद शिरका रोग वगेरे मिटता है

वंध्यादोष

(२९० फलघृत) हरडे बहेडा आंवला मोलेठी उपलेट हलदी दारूहलदी कुटकी वायविडग पीपर मोथ कडवा तूंबा कायफल वच मेदा महामेदाके बदले दूणी सतावर काकोली क्षीरकाकोलीकी एवजीमें दूणी आसगंध सपेद उपलसरी काली उपलसरी गहूंला सूंफ हिंग रास्ना सुपेद चंनण लाल चदण जाईके फूल वांस कपूर कमल बूरा अजमोद दांतीमूल ३० चीजोकी चटणी करणी पीछे वाछडेवाली इकरंगी गऊका घी ६४ तोला घीसे आधा गऊका दूध दूध जितना पाणी मिलाकर घी तइयार करणा ये घी पुरुष ओर औरत दोंनोंके लेणे लायक है मरदमी आती है, ओरतोंका बांझडीपणा दूर होकर पुत्र पैदा होता है जिसकी ओलाद जीवे नहीं वो इस घीसें केइयक दिन सेवन करणेसे पुत्र उसका अमर होताहै रोग रहता नहीं.

वध्यादोष.

(२९१ फलघृत दुसरा) घी चार सेर शतावरका रस १६ सेर गोमूत्र १६ सेर जीवनीयगणकी दवा एकेक तोला घी सिद्ध करणा ऊपर मुजब. फायदा ऊपर लिखे मुजब.

वध्यादोष

(२९२ लघुफलघृत) ऊठकंटाशला पीलेया काले फूलका हरडे बहेडा आंवला गिलोय साटा अरडूसा हलदी दारूहलदी रास्ना मेदा सतावर इनोंकी चटणी करणी घी तो ६४ गऊका दूध २५६ तोला पाणी २५६ तोला इन सबोंको उकालकर घी उतार लेणा औरतोंका गुह्यरोग शूल दरद योनीका रस्ता चोडा होजाणा अंग बाहिर निकलणा स्थानभ्रष्ट होणा गर्भ नहीं रहणा वगेरे सब योनिदोष गर्भाशयके दोष मिटता है.

अपस्मार उन्माद

(२९३ ब्राह्मीघृत) ब्राह्मीके पत्तोंकारस ३२ तोला घी १६ तोला सूंठ मिरच पीपर हलदी निशोत दतीमूल शखावली करमाला वायविडग ये दरेक पाव २ तोला इन सर्वोंकी चटणीकर इन तीनोंकों पकाकर घी वणाणा

तेल.

(२९४ अर्क तेल) तिलका तेल १ सेर आकका दूध चार तोला हलदी० ॥ सेर मनशिल० ॥ सेर आकके दूधमें हलदी तथा मनशिलको घोट थोडा पाणी डाल चटणी करणी पीछै चटणीकू तेलमें डाल तेल उकालणा पीछे छाण लेणा इस तेलसें खाज खुजली खाजका घाव मिटता है.

(२९५ बिल्वादि तेल) कच्चा बीलफल गोमूत्रमें पीस चटणी करणी उसमें चोगुणा तिलका तेल मिलाणा उसमें चोगुणा बकरीका दूध ओर दूध जितना पाणी इन सर्वोंकों उकाल तेल बाकी रहे उहांतक उकालणा ये तेल कानमें डालणेसें बहरापणा दूर होताहै.

(२९६ वज्रतेल) डडेवाली थोरका दूध आकका दूध धतूरेका रस चित्रकमूलका रस अथवा काढा भेंसके गोबरका रस ये सब समवजन पीछै पकाकर तेल वणाणा पीछे फेर उसमें तेलसें चोगुणा गोमूत्र डाल पकाणा छाणलेका ६४ तोला सिद्ध भये तेलमें इन चीजोंका वारीक चूर्ण मिलाणा गधक चित्रक मनशिल हरताल वायविडग अतिविप बछनाग कडवी डोडी उपलेट वच जटामासी सूठ मिरच पींपर दारूहलदी मोलेठी साजीखार जीरा देवदारू १९ चीजों ये तेल मसलणेसें चमडीके ऊपरके सब विकार मिटते हैं

विपमज्वर क्षय

(२९७ लाक्षादि तेल) बोरकी अथवा पीपलकी लाख २५६ तोला लाखसें चोगुणा पाणी उकालकर चोथाहिसारहे तब छाण लेणा उसमें ६४ तोला तेल गउका घोलिया दही २५६ तोला सूफ आसगध हलदी देवदारू कुटकी सभालूके बीज मरोडफली कूठ मोलेठी सुपेदचदण नागरमोथा रास्ना इन सर्वोंका चूर्ण डाल तेल तइयार करणा इसकी मालिससें सब तरेका विपमज्वर श्वास कास कमर तथा पीठकी शूल वादी पित्त मिरगी उन्माद क्षय खुजाल दुर्गंधि चमडीका फटणा इन सब रोगोंमें ये तेल बहोत फायदा करता है.

हरस मस्सा

(२९८ कासीसादि तेल) हीराकसी लागली कूठ सूठ पींपर सींधानिमक मनशिल कणेरकी जड वायविडग चित्रकमूल अरडूसा दतीमूल कडवी तुराइके बीज दारूहलदी हरताल १५ चीजोंकी चटणी करणी उसमें तेल ६४ तोला थोरका दूध ८ तोला

आकका दूध ८ तोला तेलसें चोगुना गोमूत्र उकालकर तेल वणाणा हरसके मस्सेवार ये अच्छा इलाज है.

व्रण.

२९९ जात्यादि तेल) जाईके पत्ते तो ५ कडवानींब करंज कडवा परवल इन दरे कके पत्ते दो दो तोला करंजके बीज मोलेठी मेण कोष्ट हलदी दारूहलदी कुटकी मजी पद्मकाष्ठ लोद हरडे कमल नीलाथोथा उपलसिरी ये दरेक दो दो तोला इनोंकी चटण करणी चटणीसें चोगुणा तेल तेलसें चोगुणा पाणी डाल तेल सिद्ध करणा ये तेल का नमें या नाकमें डालणेसें पीप बंध होय घाव भर जाता है.

कोढ चमडीके रोग.

(३०० मरिचादि तेल) मिरच हरताल नसोत रगतचंदण नागरमोथ मनशिल जटांमासी हलदी देवदारू दारूहलदी कडवे तूंबेकी जड कणेरकी जड कूठ आकका दूध गऊके गोबरकारस ये सब एकेक तोला शुद्ध वछनाग २ तोला चटणीकर इसमें सर सूका तेल ६४ तोला तेलसें दूणा गोमूत्र गोमूत्र जितना जल तेल तयार करणा इसके मालिससें चमडीके वहोतसे रोग चमडी फटणी खुजली चित्रोंकोढ लालकोढ चेल फुटणा वगेरे मिटता है.

शिरकी टाट.

(३०१ करजादि तेल) करंजकी छाल चित्रकमूल जाईके पत्ते कणेरकी जड इनोंकी चटणी करणी चटणीसें चोगुणा तिलका तेल तेलसें चोगुणा पाणी तेल आंच पर तइयार करणा इससें शिरमें टाट जो पडती है, सो मिटकर फेर बाल ऊग जाताहै.

पीनस

(३०२ पाठादि तेल) कालीपाट हलदी दारूहलदी मरोडफली अथवा तज पींपर जाईके पत्ते दंतीमूल इनोंकी चटणी करणी इनोंसे चोगुणा तेल तेलसें चोगुणा पाणी उकालकर तेल तयार करणा नाकमें बूदे डालणेसे दुष्ट पीनस मिटता है.

मल्हम लेप उबेरा.

व्रण.

(३०३ जात्यादिघृत) (घृत मलम) जाईके पत्ते नींब कडवेके पत्ते पटोल दारू हलदी हलदी कुटकी मजीठ मोलेठी मेण करजके बीज वाला उपलसिरि नीलाथोथा ये दरेक एकेक तोला लेकर चटणी करणी इसके वजनसें चोगुणा घी डालकर पकाणा ओषधियोंसें तिरके जुदारहे तब पकाभया समझ उतारके घी छाणलेणा नासूर पीप वहणेवाला वडे वडे घाव होय एसा गभीर ओर दुष्ट व्रण इस लेपसे अछा हो सकता है.

खाज खुजली

(३०४ कासीसादि घृत) (मलम) हीराकसी हलदी दारूहलदी मोथ हरताल मनशिल कपीला गधक वायविडग गुगल मोम मिरच कुटकी नीलाथोथा सरसूं रसोत सींदूर सुगधी वच रगतचदण खेरसार कडवे नीमके पत्ते करजबीज उपलसिरी वच मजीठ मोलेठी जटामांसी सिरेस लोद पदमाख जो हरडे पवाडके बीज ये ३२ दवा एकेक तोला इसका महीन चूर्ण घीसेर ३ इन सर्वोको तांबेके वरतनमें मिलाकर ७ दिन-तक धूपमें रखणा पीछे घी कांममे लेणा खाज खुजली दाद कोढ फोडा गडगूमड खुजली सबपर

खाज खुजली

(३०५ पारदादि मलम) पारागधक मनशिल सिंदूर मिरच हलदी दारूहलदी जीरा शखजीरा पहली कजली करणी बाकीका महीन चूर्ण मिलाणा पुराणे घीमें अथवा धोये घीमें मिलाणा इससे खुजली गडगूमड शिरके चिकते चीरे मिटता है.

हरसका मस्सा

(३०६ अफीम तथा मांजूका मलम) अफीम तो २ माजू फलका चूर्ण तोला ५ सादा मलम तो ५ तीनोंको मिलाके उसका लेप मस्सेपर करणेसें मस्सेकी जलण ओर खून बध होताहै, ओर मस्से सूक जाते हैं

घाव चांदी

(३०७ बोदारका मलम) बोदार तो २० राल तो २० कपूर तो १० मोम तो १० घी तो १० मोम घीकू मद आचसें गरमकर पीछे तीनोचीज मिलाणी ये मलम गरमी तथा खुजालवाला घाव चादीपर फायदा करता है

खुजली

(३०८ बोदारका मलम २) बोदार १ भाग अलशीका तेल ५ भाग एकठाकर मलम बणाणा.

चादी घाव

(३०९ बोदारका मलम ३) बोदार तो ५ राल तो ५ कपूर तो २॥ चहिये इतने घी तथा मोममे मलमकर पट्टी मारणी.

गरमीकी चांदी

(३१० हीरा दखणका मलम) हीरा दख्खण इलायची तथा काथा एकेक तोला कपूर ३ मासा महीन पीस घीमें मिलाय मलम करणा इस मलमसे पींप वहणेवाला गर-मीका घाव अच्छा होता है

व्याउफटे.

(३११ रालका मल्म) राल सीधानिमक गुड मोम सहत गुगल गेरू घी ये सब सम भाग मेण घी सहत गुड गूगल इन तीन चीजोको अनुक्रमसें मिलाणा अंगारपर पिघलेवाद वारीक चूर्णका मलमकर मिलाणा पाददारी व्याउ पांवोंमें फटती है ओर गरमीपर फायदा करता है, गडगूमड मिटाता है.

गांठ

(३१२ दोपघ्न लेप) सहजणेके जडकी छाल सूंठ सरसूं साटेकी जड देवदारू इनको छांछमे पीस लेप करणा इससें तमाम गांठों तथा सोजा उतरता है,

गरमी.

(३१३ दशांग लेप) सरेसकी छाल मोलेठी तगर रगतचंनण जटामांसी लोद दारूहलदी कूठ वालो इलायची वारीक पीसणा समवजन पाणीमे लेप करणा इस लेपसें गरमीके घावका सोजा विस्फोटक जहरी जानवरके डककी जलण जलणकी गांठो तथा सोजा मिटता है.

कोढ

(३१४ अवलगूं जादिलेप) कालीजीरी पवाडिया हलदीसैंचल निमक समचीजों सम वजन पीसके लेप करणा चमडीके सब विकार मिटता है, सपेद कोढ झांखा पडताहै

वातरक्त

(३१५ गेरूका लेप) गेरू रसोत मजीठ मोलेठी वाला रगतचंनण पद्मकाष्ठ कपड छाण चूर्णकरणा पाणीमे पीस लेप करणा इस लेपसे रगतवायु कारवोलाई गरमीका सोजा तथा दाह शांत होता है

गरमीकी चांदी

(३१६ शंखजीरेका लेप) शखजीरा ५ भाग कत्थो १ भाग दोनोंकों वारीक पीस घीमें लेप करणेसें गरमीका घाव भर जाता है.

चमडीका रोग.

(३१७ हरतालका लेप) हरताल गधक तथा पवाडके बीज दो दो भाग मनशिल वावची नीला थोथा टकण तथा कपूर ये एकेक भाग वारीक चूर्ण नींबूके रसमे लेप करणा इस लेपसे गज चीतरी फुनसियां शिरका खोरा कीड वगेरे मिटते है.

कोढपर

(३१८ काली जीरीका लेप) कालीजीरी ४ भाग हरताल १ भाग त्रिफला १ भाग गोमूत्रमे पीस लेप करणेसे चित्री कोढ जलदी मिटता है, सपेद कोढ झांखा पडता है.

गुप्त चोट हाड सांधणेपर'

(३१९ अस्थि सधानक लेप) गुजर ९ भाग जदवार १ भाग एलिया १६ भागफट-कडी ८ भाग मेदालकडी ४ भाग डामर ४ भाग ईसस (कोतरूगूद) ७ भाग आंबाहलदी ७ भाग रेवचीनीका शीरा १२ भाग इनोंकों पाणीसे खूब पीस लेपकर ऊपर रुई दबाणेसें गुप्तचोट गिरणेकी चोट वगेरेसे खूनका जमाव भया होय वो विखर जाता है, हड्डी तूटी होय किचर गया होय उसपर कितनेक दिन ये लेपकरणेसें तूटे अवयवकू टेका साहरा देकर स्थिर रखणेसे लेप चूसकर हाड पीछा मजबूत होता है, उसपर सोजन दरद दूर होताहै

कलेजेकी गांठ.

(३२० कलेजा यकृतकी गांठका लेप) तिल पवाडके बीज उपलेट हलदी तथा राई ये सब सम वजन सरसूके तेलमें पीस कलेजेपर लेप करणेसें खूनका जमाव वि-खर जाता है

सपेद कोढ.

(३२१ सुपेद कोढका लेप) पीले फूलोकी कणेर हीराकमी वायविडग मनसिल गोरोचन सींधा निमक गोमूत्रमें पीसके लेप करणा

गजपर वाल पैदा होय

(३२२ इद्रलुप्त [टाटका] लेप) (१) पटोलकारस निकाल लेप करणा (२) वडी भोरींगणीकारस निकाल सहत मिलाय लेप करणा (३) चिरमीकी जड तथा फल सहत मिलाकर लेप करणा (४) भिलावेकी दरखतके छालकारस निकाल सहत मिलाय लेप करणा ये चारों लेपवाल नहीं आतें होय उगे जिस जगे वाल पैदा करते हैं.

आंखका रोग

(३२३ नेत्र रोगका लेप) (विलाडक लेप) हरडे सींधानिमक गेरू रसोत इनोंको जलमें पीस लेप करणेसें आंखके आस पास तब नेत्रके कितनेक रोगोंमे फायदा करता है.

३२४ आंजणीका लेप--रसोत सूठ मिरच पीपर जलमें पीसगोली करणी वोगोलीकू जलमे घस कोयेमें अजन करणा

खाज खुजली

(३२५ खसका लेप) पीले फूलकी दारूडी वायविडग हींगलू गधक पवाडिये उपलेट सिदूर समवजन लेकर चूर्णकर धतूरेके पत्तोके रसमें नींवके पत्तोके रसमे नागर वेलके पत्तोके रसमें एकेक दिन मर्दनकर लेप तइयार करणा इससे खाज खुजली दाद पांवोकी व्याउ फटणी वगेरे चमडीके रोग जलदी मिटते हैं

शीत पित्त

(३१६ पित्तीका लेप) सपेद सरसू हलदी उपलेट पवाडिये तिल ये पाच वस्तु

सम वजन लेकर चूर्ण करणा सरसूंके तेलमें लेप करणेसें शीत पित्तके चठे निकलते है, सो मिटते है.

घावके कीडे

(३२७ कृमिघ्न लेप) करंज कडवे नींव नगोड (संभालू) इन तीनोंके पत्ते पीस जिस घावमें कीडे पडे होय उसमे भरणेसें कीडे मिटते हैं २ अथवा लसण पीसके लेप करणा ३ अथवा हींग नीमके पत्तोंका लेप करणा पीस करके.

राग सिरका.

रक्त वृद्धिकू

(३२८ नालियरका सिरका) ५० नालेरके अदरका जल लेणा उसकूं मद आंचसें कढाहीमे जाडा पडे जहांतक ऊकालणा पीछे उसमें केशर ६ मासा लोंगका चूर्ण १ तोला मिला देणा.

पित्त खासी.

(३२९ अनारका सिरका) पकी २० अनारकारस उसकूं उकाल सेर बूरा डालणा जाडा होणेपर नीचे उतार छ मासा केशर तोला १ इलायचीका चूर्ण डाल सीसेमे भर रख छोडणा.

पित्त रक्तपित्त.

(३३० नीबूका सिरका) ऊपर मुजब.

श्वास खास मदाग्निपर

(३३१ आदेका सिरका) आदेकारस निकाल उसमें आधा जल मिलाणा बूरा डालकर पाक करणा पीछे केशर इलायची जायफल जावंत्री लोंग रस मुजब मिलाणा शीसीभर राखणी श्वास खास मंदाग्नि अरुचि वगेरेमे ये शिरका अछा है,

रस.

दस्त अजीर्ण.

(३३२ आनद भैरवरस) हिंगलू वछनाग सूठ मिरच पींपर गधक टकण समवजन नींबूके रसमें १२ घटा खरलकर मटर २ जितनी गोलिया करणी मात्रा १ रत्तीसे २ रत्तीतक (अनुपांन) रोग मुजब जुदा २ अनुपांनसें वहोत रोगोंपर चलताहे, खास श्वास दस्त अजीर्ण सर्पकाडक विछूके डकपर.

वादीपर.

(३३३ वातारिरस) साफ अफीम कुचीला तथा मिरच जलमें पीस गोलियां वणाणी कितनेक तरेकी वादी सोजा हिस्टीरीया मिरगी वगेरेमें फायदा करती है

वादीपर.

[३३४ वातगजांकुश) पारा ८ भाग कुचीला ८ भाग गधक ८ भाग सूठ मिरच पींपर १२ भाग सबकू मिलाणा मात्रा १ रत्ती सब वादीके रोगोंपर चलती है

(३३५ लघु मृगांकरस) पारा १ भाग सोनेका वरक २ भाग मोती १ भाग गंधक १ भाग टकण पाव भाग इन सबोंकू कांजीमें या छाछमें या नींबूके रसमे एकदिन खरल करणी पीछे वडे सरावेमें सपुटकर लूणके पात्रमें उपर नीचे निमक देकर अग्नि देणी ठढा भयेवाद खरलकर शीशीमें भरणा मात्रा १ वाल अनुपान सहत पीपर अथवा घी पीपर.

श्वास.

(३३६ श्वास कुठार) पारा वछनाग मिरच टकणखार मनशिल गधक ये एकेक-तोला त्रिकटु छव तोला सबकू खरलकर छोटा गजपुट देणा निकाल पीस शीसीमें रख छोडणा मात्रा १ से २ रत्ती अनुपान पान घी वगेरे श्वासकाश मदाग्नि कफकोप सन्निपात मिरगी वगेरेमें देणा

क्षय जीर्णज्वर नाताकती

(३३७ सुवर्णमालिनी वसंत) सोनेका वर्क तो १ मोती तो २ हिंगलू तो ३ सपेद मिरच तो ४ खापरिया तो ८ सबोकों मिलाकर महीन खरलकर उसमे गऊका मख्खण तो २॥ इन सबोंकों मिलाकर एक दिन खरल करणी पीछे ४२ दिन नींबूके रसमें खरल करणी पीछे टिकिया बांधणी मात्रा १ सें तीन चिरमीभर (अनुपांन) सहत तथा लींडी पींपर अथवा रोग और प्रकृती मुजब अनुपान देणा चाहिये इससें पुष्टि होती है, क्षय जीर्णज्वर खास श्वास शीतवायु गोला धातु गतज्वर रक्त विकार दुबलापणा बालरोग वृद्धरोग गर्भणीरोग सूतिकारोग अच्छे होते हैं, पथ्य दूध भातका.

सग्रहणी

(३३८ गृहणीकपाटरस) सूठ मिरच पींपर गधक टकणखार पारा कोडीकी भस्म वछनाग ए सम भाग नींबूके रसमें खरलकर गोलिया बणाणी मात्रा १ से २ रत्ती (अनुपांन) घी मिरच मिश्री तीनो मिलाकर देणा

अजीर्ण अग्निमद.

(३३९ अग्निकुमाररस) पारा १ गधक १ टकण १ वछनाग २ कोडीभस्म २ शखभस्म ८ भाग मिरच ८ भाग नींबूके रसमें घोटणा रती २ की गोलियां करणी अजीर्ण अग्निमद शूल शीत अनुपान आदेका रस अथवा सहत अथवा नागरवेलके पान

कामवर्द्धक.

(३४० मदन कामेश्वर रस) पारा १ गधक १ अफीम १ इन तीनोंकों नागर-

वेलके पत्तोंके रसमें वाल २ की गोलियां करणी १ गोली सांझकूं साकरके संग लेणी गोली लिये पीछै रातकू जीमणा नही लेकिन् भेंसका दूध पीणा.

जुलाव.

(३४१ इछाभेदीरस) पारा १ टंकण १ मिरच १ गंधक १ सूठ १ जमालगोटा १ सबकूं नींबूके रसमें खरल करणा मात्रा १ वाल इच्छा मुजब जितनी बखत सरवत चूरेका गुटका पीवै इतना दस्त होय ज्वर वगेरेमें ये जुलाब बहोत फायदे बंद है सुजाक गरमीकी चांदी ७ दिनमें मिटती है.

पेटकीकृमि.

(३४२ कृमिकुठाररस•) कपूर तो ८ कूडाछाल इद्रजव त्रायमाण अजवाण वायविडंग हींगलू केशर वछनाग पलास पापडा एकेक तोला सबका चूर्णकर ब्राह्मी तथा भांगरेके रसकी भावना देणी मात्रा १ वाल अनुपांन सहत

अजीर्ण हेजा.

(३४३ लघुक्रव्याद रस) शुद्ध गधक तो २ शुद्ध पारा तो १ लोहभस्म तीन-मासा सेंचल तो १ टकण तो १ मिरच तो १ पीपर तो २ पीपलामूल तो २ चित्रक मूल तो. २ सूंठ तो. २ लोंग तो. २ नींबुके रसकी ७ भावना देणी मात्रा १ से ४ वाल अनुपांन पाणी छाछ अथवा छाछ सींधानिमक शेकाभया जीरा हींग इससे सखत हेजा अजीर्ण अतिसार मदाग्नि अरुचि पेटके वायु वगेरे उदर रोगमें अछा फायदा देता है,

कासश्वास

(३४४ अग्निरस) शुद्ध पारा तो १ गधक तो २ गजवेल तो ३ इन तीनोंकों खरलमें खूब घोटकर कजली करणी पीछे उसमें कुवारपठेका रस डाल खरलकर गोला करणा उस गोलेकूं एरडियेके पत्तोंमें लपेट आठदिन रख छोडणा पीछे उसमें पींपर तो. २ हरडे तो. ४ बहेडा तो ५ अरडूसेके पत्ते तो ६ इनोंका चूर्ण मिलाणा पीछे इन सबोंकू बंबूलके छालके काढेकी २१ भावना देणी इससें खासीक्षय श्वास वगेरे कफरोगमें बहोत फायदे बद है

वखतपर ठढ बुखारपर.

(३४५ स्वल्पज्वरांकुश—) पारा वछनाग गधक सूठ मिरच पीपर छ तोला छउंकूं [illegible]लाकर धतूरेके बीज तो. २ चूर्णकर नींबुके रसमें खरलकर दोदो रत्तीकी गोली बांध [illegible]मात्रा गोली १ अथवा २ अनुपांन आदेका रस तथा सूठका पाणी एकांतरा दिनरातमें [illegible] वखत आनेवाला तेजरा चोथीया वगेरे जो बुखार ठढ लगकर टेमोटेम आता है, उसके [illegible]ले दो घटा पहली [illegible] देता है, वदनमे बिलकुल बुखार नहीं होय ठढ लगणेके [illegible]ली.

किरण ३ री.

अंग्रेजी दवायें.

(३४६ एरगाट–) गर्भकू बाहिर लाणेवाला रक्त थांबनेवाला स्नायुओंकों सकुडानेवाला गर्भाशयके नसोकु सकुडाता है, इसवास्ते बालक अदरसे जलदी निकल जाता है, औरतोंके रक्तगिरणेकू बंध करता है, आमलकू बाहर निकालता है ऋतु ओरतोके दोषपर बहोत फायदा करता है, दवामें इसका अर्क तथा एक स्ट्राक्ट वापरते हैं, मात्रा अर्ककी १० सें ६० बूद लिकिड एक स्ट्रक्टकी १० से ६० बूद मात्रा बढती है, तब जहरका असर करती है.

(३४७ आयर्न हीराकसी) इसका मुख्य उपयोग शरीरमें फीकासकेसग जब नाताकती होती है, मुख्यपणे ओरतोकुं और जवान छोकरियोंकू ये बेमारी होती है, तब बदनमेंसें लाल रजकण खूनमेंसे कम होता है, तब आयर्न देणा चाहिये ओरतोंके ऋतुधर्मके रोगमें महीनेके महीने गिरनेमें ज्यादा या कम होय तब लोहका उपयोग होता है, किनाइनके सग आयर्न ज्यादे फायदा करता है, आयर्न याने लोह देनेके पहली रोगीका पेट दस्त देके साफ करणेकी हमेसां जरूरी है, आयर्नकी बहोतसी बनावटी दवा बणती है, उसमेंकी थोडी एक इहा लिखते हैं

(१) सल्फेट ओफ आयर्न–रक्तशोधक पौष्टीग्राहिक पांडू तिल्ली ज्वर अतिसार तथा प्रदर ऊपर उसका उपयोग होता है, पिचकारी तथा लोशनऊपर उसका उपयोग होता है, खानेकी मात्रा १ सें ५ ग्रेन

(२) शिरप फेरी फोसफेटिस एट किनिन कमस्टिकन्या देखो इस्टन्ससीरप.

(३) फोसफेट ओफ आयर्न–मात्रा ३ सें १० ग्रेन उसके साइरपकी मात्रा १ ड्राम नाताकती मगजका रोग आखोंकी नाताकतीमें दिये जाती है

(४) केमिकलफुड–अथवा कम्पाउन्ड साइरप पौष्टिक स्कोफयुला जीर्णज्वर तथा नाताकतीमें दीये जाती है, मात्रा १ सें २ ड्राम बालककू ५ से २० बूद

(५) टिंकचर ओफ परक्लोराइड ओफ आयर्न–पौष्टिक रक्तशोधक रक्तस्तमक ग्राही मुत्राशयके रोग जलोदर प्रदर नष्टार्त्तव रक्तपित्त दस्तपेसाब मूकेरस्ते खून गिरता होय उसपर फायदेबद है, क्षय रक्तबात रक्ताशयका रोग हिस्टीरीया पांडु तिल्ली दस्त नाताकती वगेरोपर बहुत दिये जाता है, मात्रा १० सें ३० बूंद.

(६) कम्पाउन्ड मिक्स्चर ओफ आयर्न–हीराकसी २५ ग्रेन कारबोनेट ओफ पोटाश ३० ग्रेन हीराबोल ६० ग्रेन बूरा ६० ग्रेन जायफलका सिरिट ४ ड्राम गुजाबजल

९½ औंस सबकूं मिलाणा ओरतोकी नाताकती नष्टार्त्तव प्रदर क्षय पांडु वगेरेमें गुण करता है, मात्रा १ सें २ औंस

(७) साइरप फेरी आयोडाईड–क्षय पांडू कठवेल नष्टार्त्तव यकृत् प्लीह उपदंश वगेरेमें दिये जाता है, मात्रा० ॥ सें १ ड्राम.

(८) रिड्युस्ड आयर्न–(लोहभस्म) पौष्टिक पांडु क्षय क्षीणता मात्रा २ सें ६ ग्रेन

(९) परओक्षाईड ओफ आयर्न–गुण लोहभस्म मुजब मात्रा ५ सें १० ग्रेन

(१०) टार्टरेटेड ओफ आयर्न–पौष्टिक उपदंश क्षय पांडुरोगमे दिये जाता है, मात्रा ५ सें १० ग्रेन.

(३४८ आयोडो फार्म–रोपण उग्र तथा दुर्गंध नाशक है, सडा वदवो घावकू मिटानेकू ये दवा निहायत ऊमदा है, खराब चांदी जखम पीली भुरकी चिलकती भरे जाती है उसकूं तिलके तेलमें अथवा ग्रिसरीनमें और ब्रांडीमें मिलाय घोटनेसें मल्लम होता है, १ भाग आयोडोफोर्म ३ भाग कोकमका तेल गरमकर उसमें मिला देना पीछे उसकी वट्टी बणा लेनी.

३५० आर्सेनिक–(शोमल) पौष्टिक ज्वरघ्न रक्तशोधक उग्रविष ठंढके बुखारमें उपयोग होता है, पुराणे चमडीके रोग जैसें शीतपित्तके ददोडे कोढ विस्फोटक खुजली तैसें नामर्दाईमें सोमलका उपयोग होता है, $\frac{1}{60}$ मात्रासें $\frac{1}{12}$ ग्रेन सोमलका सोल्युशन और हाइड्रोकलोरिक सोल्युशन होता है, दोनोंकी मात्रा २ से ८ बूंद.

(३५० ईथर) स्पिरिट ओफ नाइट्रीक–मूत्रल स्वेदल कफघ्न खासी बुखार श्वास वगेरे रोगोंमे दिये जाता है, पसीना तथा पेसावकू बढाता है, शरदी बुखार दाह वगेरेमें चमडी सूकी रहती होय तथा पेसाव कम आता होय उसमें ईथर फायदा करता है, मात्रा २० सें ६० बूद एक वर्षके बच्चेकू ६ सें ८ बूद.

(३५१ ईपीकाक्युआन्हापाउडर–(ईपीकाक्युआन्हा नामके दरखतकी जडका चूर्ण उलटी लानेवाला है स्वेदल शोधक तथा कफघ्न है, इस चूर्णका रग जरा भूरा होता है, उवाकी लावे एसी उसकी खसबो होती है, जादा मात्रा लेनेसें उलटी लाती है बुखार तथा खासीमें उलटी लाणेवास्ते दीये जाता है जादे मात्रा मरोडेपर दिये जाता है थोडी मात्रामें कफ श्वास नली और फेफसेके सोजनपर दिये जाता है, मात्रा–उलटीकेवास्ते १५ सें ३० ग्रेन वडी ऊमरवालेकूं और २ सें ३ ग्रेन एकवरसके बच्चेकू कफ निकालनेकू १ ग्रेण वडी ऊमरमें ओर $\frac{२}{२१}$ ग्रेण बच्चेकू मरोडेमें इस दवाकू देनेसें फेर उलटी नहीं होसके इसवास्ते इसकेसग लाडेनम मिलाते है, पेटपरराईका पलासटर मारते है, और दवा पिलाये पीछे थोडी देरतक कोइभी पतला पदार्थ पीनेकी मनाई करते है, नहीं तो उलटी हो जाती है

(३५२ ईपीकाक्यु आन्हावाईन–शेरीवाईनमें ईपीकाक्युआन्हाकी जडकू मिलानेंसे ये दवा तइयार होती है, देखणेमे उसका रग शेरीवाईन जैसा होता है, गुणपाउडर मुजब वाईन प्रवाही होनेसें बच्चोकू देनेंमें सुगम पडता हैं, मात्रा उलटी वास्ते बडी ऊमरमे ६ सें ८ द्राम ४ औंस गरम पाणीमें मिलाकर देते हैं, एक वरसके बच्चेकू १ द्राम कफ निकालने तथा पसीना लानेकू बडी ऊमरमें १० सें ६० बूद.

(३५३ इसटन्ससीरप–(साइरप फेरी फोसफेटीस कम किना इन एटस्ट्रिकनीआ) इसटन्ससीरपमें फोसफेट ओफ आयर्न, फोसफेट ओफ किनाईन, और फोसफेट ओफ स्ट्रिकन्या मिलती है, १ द्राम जितनी दवामे पहली दवाका वजन दोनोंका दो ग्रेन है, तीसरीका वजन ३ ग्रेन है, नाताकती पांडु तथा जीर्णज्वरमें ये दवा देते हैं, मात्रा १ द्राम.

(३५४ एकोनाईट–देशी नाम वछनाग वातहर तथा ज्वरहर है, उसका टिंकचर बुखारमें तैसें सधिवायमे शूल वगेरेमे दिये जाता है, मात्रा २ से १० बुद अर्क बनानेकी रीत २॥ औंस वच्छनागके चूर्णकू २० औंस रेकटीफाईड स्पिरिटमे दो दिन भिगाये रखणा फेर छाण लेणा (वछनागका तेल) वच्छनागका चूर्ण २० औंस कपूर १ औंस रेक्टिफाईड स्पिरिट ३० औंस वच्छनागकू स्पिरिटमे ७ दिनतक भिगाकर पीछे छाणकर कपूर मिलाणा

(३५५ एन्टिपाइरीन–ज्वरहर है बुखार उतारणेमें बहुत उपयोगी मालम दी है, मात्रा ५ सें २० ग्रेण बुखार तीक्ष्णसधिवात कलेजेका सोजा फेफसेका सोजा टाइफोइड फीवर वगेरे रोगोंमें बुखारकी गरमी बढ जाती है उसकू कम करणेमे ये दवा दुसरी दवायोंसे जादा नामी निकली है देनेकी विधि–बुखार आवे और झट उसी वखत ५ ग्रेन देते है, और पीछेभी दोदो घटासे दोतीन वखत ये मात्रा देनी एक वेर बुखारको उतार देती हैं, और ६ से २४ घटेतक उतरा रहता है, ये इस दवाका मुख्य गुण है, लेकिन् इस दवासे नाताकती आणेका पूरा डर है, इसवास्ते बहोत हुसियारीसें देणा एसी दवा विद्वान् डाकटरकी सलाविगर लेनी नहीं अच्छे नामी डाकटर विशेषकर ये दवा एका एक देते नहीं क्योंके जो दवा एक तरेका फायदा दिखाकर दुसरीतरे शरीरकू नुकशान पहुचावे एसी दवा बिलकुल देनेलायक नहीं देशी इलाजोंमें रत्नगिरि नामकी दवा बुखार उतारणे वास्ते बहोतही अकशीर है, और उस दवासें नाताकती नहीं आकर उलटी ताकत लाती है, अच्छीतरे पसीना लाकर बुखारकू रगोरगमेंसें निकाल देती है

(३५६ एन्टिफेब्रिन–ज्वरहर है, ये दवाभी एन्टिपाइरीनकी तरे बुखारकू निकालणेकू नई निकली है, मात्रा ४ सें १० ग्रेण अज्ञान लोकोंकू चमत्कार बताणेकू ये दवा

अकसीर है, अनाडी वैद्योका अजड उपायों जेसा ये इलाज है, और लेभागु डाकटर भी इस चीजकूं देते हैं, सरकारी होस्पिटलोमें एमी दवा भाग्ययोगही देते हैं.

(३५७ एन्टीमनी-(१) टार्टरेट ओफ एन्टीमनी अथवा टार्टरएमेटिक-पसीना लानेवाली कफघ्न पित्तवर्द्धक उलटी तथा दस्त लानेवाली है, ये दवा जादा वजनमें सोमल जेसी जहरी असर करती है, प्रमाणमुजब दीजाय तो बुखारमें पसीना लाती है, उधरस तथा दमकू मिटाती है, (मात्रा) पसीना लानेकू $\frac{1}{16}$ सें $\frac{1}{6}$ ग्रेन उलटी करानेकूं १ से ३ ग्रेन (२) एन्टिमोनियल पाउडर अथवा जेम्स पाउडर (बणावट) ओकसाइड ओफ एन्टीमनी १ औंस फोसफेट-ओफलाइम २ औंस दोनोंकों एक जगे करणा कफघ्न स्वेदल मात्रा ३ सें ६ ग्रेन (३) एन्टीमोनियल वाइन-बनावट-टार्टर एमेटिक ४० ग्रेन शेरी-वाइन २० औंस दोनों मिलाणा बुखार कलेजा फेफसेका दरद सन्निपातज्वर दम हांफणी वगेरे रोगोंमें, रोगी ताकतवर होय तो ये दवा दी जाती है २ ग्रेन टार्टर एमेटिक और थोडी वूंदें गरम पाणी दोनों सग मिलाकर उसमें १ औंस शेरी मिलाणा बच्चोंकी कुकडिया बडी खासी तथा छातीके रोगोंमें सावचेती रखकर उपयोग करणेसें ये मिलावट अछी कामदेती है, मात्रा २ सें ५ बूंद.

(३५८ ओनीसी-ओइल ओफ यानिसी) वातहर पेटकीवायु चूंक मिटाती है, मात्रा १ सें ५ बूद.

(३५९ एप्सम सोल्ट-(विलायती निमक) सल्फेट ओफमेग्निशिया एसा नांमसेंभी प्रसिद्ध है, मूत्रल तथा रेचक है, बुखारकी सरुआतमें इलाज करते किनाइनके थोडे एक डोझमे इस निमकका मिलाणा फायदेवन्द है, पित्तप्रकृतीवाले अदमीका मू फजरमें कडवा रहता होय और पेटमें दरद रहता होय वो थोडेदिनतक फजर २ मे एक २ ड्राम निमक ले तो बुखारके हुमलेसे बचता है, स्वाद उसका अच्छा करणा होय तो पीपर-मेन्ट अथवा डाइल्युट सल्फ्युरीक एसिडकी थोडी बूदे मिलाते हैं, निमक पिये पीछे चा पीते है, बुखार अजीर्ण पित्तकी रुकावटसे भई दस्तकी कबजी जलोदर वगेरे रोगोमें इसका साधारण जुलाब दिया जाता है, कलेजेके रोगमें अच्छा फायदा करता है, मात्रा १ ड्रामसे १ औंस

(३६० एप्सम सोल्ट-साइट्रेट ओफ मेगनीशिया, बनावट-कारबोनेट ओफ मेग्नि-शिया-बाइ कारबोनेट ओफ पोटाश, नींबूका शरबत और सीट्रीकएसिड इन सबोकी मिलावट. (मात्रा-(१) २ से ४ ड्राम) अथवा जादा मेग्नीशिया एक प्याले जलमें मिलाकर पीनेसें एक अच्छा हलका जुलाब लगता है

(२) २ औंस पाणीमें १ ड्राम मेग्नीशिया पीनेसे खटासकू दूरकर ठडक करता है.

(३) ०॥ ड्राम मेग्नीशिया तथा २० बूंद स्पिरिट ओफ नाइट्रीक इथरका १॥ औंस पाणीमें डाल पीनेसें बुखारकी गरमीमें ठढक तथा पसीना लाता है

(३६१ एमोनिया-(लायकर) अम्लविरोधी (खटासकू दूर करता) उलटी करानेवाला स्वेदल उष्ण वादीहर उत्तेजक कफघ्न (कफकू निकालनेवाला) और चमडीपर फफोला उठानेवाला आमोनिया वदनमें गरमी और प्रकाश देता है, हिस्टीरीया शिरका दर्द मज्जातंतुओंकी नाताकती मूर्च्छा अतिक्षीणता अजीर्ण आम्लपित्त छातीका धडका ओर ओरतोंके गर्भाशयके रोगोंमे दिये जाता है, (मात्रा-ड्राम ॥ सें १ इससें जादा लेनेसें शिरमे दर्द तथा सुस्ती आती है, उलटी होती है अधिकमात्रासे जहरी असर करती है, मुख्य बनावट-(१) एरोमेटिक स्पिरिट ओफ आमोनिया-अथवा साल वोले-टाईल, गुण) उष्ण वातहर हिस्टीरीया मूर्च्छा निबलाई अजीर्ण पेट चूक वगैरे रोगोमें दिये जाता है, मात्रा २ से १० बूंद (२) कलोराईड ओफ एमोनिया अथवा साल एमोन्याक (देशी नाम नोसादर) गुण) यकृतशोधक वातहर ग्रथीशामक तथा कफघ्न है, कलेजा तथा तिल्लीका शिरका चमका सधिवात पुराणी खासी तथा कामलेके रोगमे वापरते हैं, औरतोके स्तन पकते हैं वो तथा दुसरे सोजेपर और बद वगैरे गाठोपर उसके पाणी लोसनमे कपडा भिगाके धरा जाता है, पीणेकी मात्रा ५ सें ३० ग्रेन (३) कारबोनेट ओफ आमोनिया-उष्ण स्वेदल कफघ्न वामक उग्र नवसादर और चूना मिलाकर फूल उडानेसें ये दवा बणती है, शिरका दर्द हिस्टीरीया मूर्च्छा वगैरे रोगोंमें सुघाणेसें जाग्रती आती है, आम्लपित्त श्वास खासी क्षय वगेरेमें दिया जाता है, मात्रा २ सें १० ग्रेन (४) *लायकर आमोनिया एसेटेटिस-स्वेदल मूत्रल तथा शीतल* है, कारबोनेट ओफ आमोनिया ३॥। औंस और एसेटिक एसिड १० औंस पाणी ५० औंस पहली दवाके भूकेपर दुसरी दवा धीमे २ डालनेसे ऊफण आती है, पीछे उसपर पाणी डालणा फुलप्रवाही ६० औंस होय इतना पाणी डालणा बुखारमें पसीना लाने-वास्ते डाया फोरेटिक मिक्श्चरमें इस दवाका उपयोग करनेमें आता है, (मात्रा १ से २ ड्राम) डायाफोरेटिक मिक्श्चर-लाईकर अमोनिया एसेटेटीस २ ड्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रीक इथर २० बुंद और एकवा क्याफर (कपूरका पाणी) १ औंस तीनोकों मिलाकर मिक्श्चर करणा (५) लिनिमेन्ट ओफ आमोनिया-लायकर आमोनिया (स्ट्रॉंग सोल्युशन ओफ आमोनिया २० औंस अच्छा पाणी ४० औंस) १ औंस अलशीका तेल २ औंस येदवा दोनो एकजगे मिलाणा अलशीके तेल बदले तिलका तेलभी काम देता है, उष्ण है, सधिवात तथा जकड गया अवयवोंपर मसलनेसें फायदा करता है

(३६२ एलम-फिटकडी) स्तमक सारक वामक तथा जतुनाशक है, रसवाहिनी नसोकू सकोच रसका शोषण करणा ये यालमका खास गुण है, घडी मात्रामें वो दस्त

तथा उलटी लाती है, खाणेकी मात्रा ५ सें १० ग्रेन है, फोडा तथा सोजेपर उसके जलका भीगा वस्त्र धरा जाता है, दुखती आंखोंमें उसकी बुदे डालणीमे आती है, घाव तथा स्तन पाक धोनेवास्ते यालमकी जलकी पिचकारी मारते हैं, और मूंमे छाले होजाते हैं, तव इसके पानीसें कुरला कराते हैं, पोता तथा पिचकारीका लोसन–पाणी १ रतल और यालम तीनमासेसे ॥ तोला कुरला–पाणी १ औंस यालम ८ ग्रेन आंखकी बूंदे पाणी १ औंस यालम ५ ग्रेन एक ग्यालन गुडले जलमें थोडे ग्रेन एलम डालणेसें जल साफ होजाता है.

(३६३ एलोझ–देशी नाम एलिया) रेचक ऋतुदोपहर गर्भवंती औरतकू तथा मस्सेवालेकूं देना नहीं एकस्ट्राकट टिंकचर और जुदी २ जातकी पिल्स वापरते हैं, जैसेंके पिल ओफ यालोझ एट यासाफीटीडा पिल ओफ यालोझ एन्ड आयर्न पिल ओफ यालोझ एटमहर वगेरे एकस्ट्राक्टकी मात्रा २ सें ६ ग्रेन टिंकचरकी मात्रा १ सें २ ड्राम और गोलीकी मात्रा ५ से १० ग्रेन.

(३६४ एसिड–(अम्ल) एसिड बहोत तरेका होता है, थोडोका नाम इहां लिखताहुं (१) एसेटिक एसिड (२) कारबोलिक एसिड (३) टार्टरिक एसिड (४) टेनिक एसिड (५) गेलिक एसिड (६) बोरेसिक एसिड (७) नाइट्रिक एसिड (८) फोसफोरीक एसिड (९) ल्याकटीक एसिड (१०) सल्फ्युरिक एसिड (११) साइट्रीक एसिड (१०) हाइड्रोक्लोरिक एसिड (१३) हाइडोस्यानिक एसिड (१४) क्राइसोफेनिक एसिड (१५) बेनझोइकि एसिड इस हरेकका वर्णन उस २ तरेके एसिडमें करनेमें आया है.

(३६५ एसेटिक एसिड–शीतल अम्ल टाटगज दाद मस्सा वगेरे ऊपर लगाणेमें काम देता है, उससें लाल दाद जलदी अच्छा होता है, दाद वगेरे पर लगाणा होय तो उससें चोगुणा जल मिलाणा

(३६६ आइन्टमेंट–(मलम) अग्रेजी इलाजोंका मुख्य २ मलम लिखते हैं.

(१) सादा मलम–२ औंस सपेद मोम ३ औंस चरबी या घी तीन औंस विदामका तेल गरम पाणी ऊपर डाल छाणके मिलाना

(२) टरपेन्टाइनका मलम–टरपेन्टाईन १ औंस रालका भूका ५४ ग्रेन लार्ड ॥ औंस मोम ॥ औंस गरमकर मिलाना

(३) क्यान्थारीडीसका मलम–क्यानथारीडीस १ औंस अलशीका तेल ६ औंस पीला मोम १ औंस पहली दो चीज १२ कलाकतक सांमल रखकर पावकलाक गरम पाणीपर गरमकर महीन कपडेसें निचोयकर गरम करेमये मोमकेसग मिला देना.

(४) क्रियासोटका मलम–क्रियासोट १ ड्राम सादा मलम १ औंस अफीम ३२ ग्रेन मिलाना.

(५) मांजूफल अफीमका मलम–मांजूका मलम १ औंस अफीम बत्तीस ग्रेन मिलाना.

(६) मांजूका मलम–माजूफलका चूर्ण ८० ग्रेन बन्झो येटलार्ड १ औंस मिलाना.

(७) श्युगर लेडका मलम–श्युगरलेड १२ ग्रेन सादा मलम १ औंस मिलाना.

(८) रालका मलम–रालका चूर्ण ८ औंस पीलामोम ४ औंस बिदामका तेल २ औंस सादा मलम १६ औंस.

(९) गधकका मलम–गधक १ औंस बेन्झो एटेड लार्ड ४ औंस दोनोंकों मिलाना.

(१०) पारेका मलम–पारा रतल १ लार्ड १ रतल स्वेट १ औंस मिलाकर पारा दिखता बध होजाय उहातक घोटणा.

(११) (कम्पाउन्ड) पारेका मलम ६ औंस पीलामोम ३ औंस ओलीवतेल ३ औंस कपूरकाचूर्ण १॥ औंस मोमकूं गरमकर उसमें डालणा बोठरे तब उसमें भूका तथा पारेका मलम मिला देणा.

(१२) रेडआयोडाइड ओफ मर्क्युरीका मलम–१६ ग्रेन उसकू १ औंस सादा मलममें मिला देणा

(३६७ ओपीयम–अफीम) उष्ण पीडाशामक शूलहर वातहर ग्राही मूत्रल स्वेदल खूनके वेगकू दबानेवाला नींद तथा नसा लानेवाला और मरदमी देनेवाला है, दवा मुजब अफीमका उपयोग बहोत होता है, बहोततरे वरते जाता है, मगजके बहोतसे रोगोंमें सराप पीनेसें भये उन्मादमें सूवा रोगके उन्मादमे धनुरवादी हिचका चसका खास श्वास कफ दम मरोडा अतिसार हैजा चूक उलटी होजरीका घाव मर्मस्थानसें खूनका गिरणा सूवा रोग सधिवात दरद अनिद्रा वगेरे असख्य रोगोंमें अफीम चमत्कारी काम करता है, मधुप्रमेहपर अफीम बहोतही फायदे बद देखणेमें आया है, इपीका क्युआना, केलोमेल वगेरे कितने एक अग्रेजी दवायोकेसग अफीम बहोतही अकसीर है, अग्रेजी दवायोंमें अफीमकी बहुतही दवाइया बणती है, टिंकचर ओपीयम (लाडेनम) एकस्ट्राकट ओफ ओपियम हाइड्रोकलोरेट ओफ मोर्फिन (और अफीमका लेप) अफीमका तेल वगेरे) केम्फोरेटेड टिंकचर ओफ ओपीयम अथवा जिसकू प्यारे गारीकभी कहते है, वो कफ हाफणी खुलखुलिया बच्चेकी खासी और छातीके दरदोमें बहुत उपयोगी है, इस अर्कमें एक ओंसमें २ ग्रेन अफीम आता है, (मात्रा २० सें ६० बूद) एकस्ट्राकट(सत्व)की ॥ सें० २ ग्रेन मोरफिनकी $\frac{1}{8}$ सें $\frac{1}{2}$ ग्रेन अफीम जहरी होनेसें बहोत सभालकर देणा चहिये फेफसेके रोगमे श्वास रुकके आता होय तो उसमें अफीम कमी देना नहीं

(३६८ ओरेन्ज) (नारंगी) दीपन रुचिकर इन्फ्युझन टिंकचर तथा सीरपके रूपमें दवातरीके वापरते हैं, (मात्रा–चाकी १ से २ औंस टिंकचरकी १ सें २ ड्राम और शरबतकी १ ड्राम

(३६९ ओलाइव–ओलीव्हओइल वोस्पालड ओईल एसे नामसें पहचाणे जाती है, चमडीके खुजालवाला दरद अगारसें जलेपर लगाये जाता है, उसमे अलसीके तेल जैसा गुण है.

(३७० ओलियम–(तेल) अग्रेजी चलते इलाजोमें तेलरूपसें वपराती मुख्य २ दवायोंके नाम.

(१) ओलियम एनिसी–(अलशीका तेल) गुण–वातहर पेटकी वायु तथा चूंकपर दीजाती है, मात्रा १ सें ४ बुंद.

(२) ओलियम ओलीव–(स्पालड ओईल) ये तेल बहोतसे मलम तथा चुपडणेका तेल (लीनीमेन्ट) बनानेमे वापरते हैं, जलगयेपर जलण खुजालपर लगाये जाता है, इस तेलकी एवजीमें अलसीका तेलभी काम आता है.

(३) ओलियम क्याजुपुटी–इसके तेलका गुण वादी हरता उष्ण मात्रा १ सें ४ बुंद

(४) क्रोटन ओइल–जमाल गोटेका तेल नेपालेके बीजोंमेंसें निकलता है, घाणीद्वारा, देशी वैद्य शुद्धकर दवा बणाते हैं, डाकटरलोक तेल वापरते है, ये तेल बहोत तेज होता है, जलोदर वगेरे सखत कबजियतमें दिये जाता है, मात्रा १ सें २ बुंद.

(५) ओलियमजूनीयर–इसकाभी तेल गुण वातहर तथा मूत्रल है, मात्रा १ से ४ बुंद पेटकी वायु चूक सोजा जलोदर वगेरेमे दिये जाता है.

(६) टरपेनटाइन तेल–गुण) मूत्रल ग्राही रक्तस्थंभक कृमिघ्न रेचक वातहर तथा रोपण है, मात्रा १० बुदोसें ४ ड्रामतक दीजाती है मूत्रल तथा ग्राहीगुण है इसवास्ते ५ सें ३०टीपा कृमिघ्न और रेचक गुण है इसवास्ते १ सें ४ ड्राम टाइफस और टाईफोइड नामके बुखारमे उसकू आफरा चढता है, ऐसे रोगोंमें दिया जाता है, रक्तपित्तका जाता भया खून इससे बंध होता है, कृमि चूक जलोदर और दस्तकी कबजियतमेंभी फायदा करता है, छाती तथा पेटके सोजेपर उसका सेक करनेसें फायदा करता है,अंगारके जलणेसें भये घाव चांदीपर तिलके तेलमें इतनाही टरपेन्टाइन लगानेसें अच्छा होता है.

(७) ओलियमथियोब्रोमी–कोकमका तेल कोकमके बीजोंकू पीलके ये तेल निकाले जाता है, इस तेलकू जमाकर गुजरात वगेरेमें बजारमें, गोला, तईयार विकता है, ये तेलके लगानेसें हाथ पांवोकी व्याऊफटी मिटती हैं.

(८) ओलियम फोसफोरेटम–[फासफोरसवाला तेल] बिदामके तेलकू तीनसें डिग्री जितनी आंच देकर पीछे उसकू छाण लेना ठंढाभयेबाद ४ औंस बिदामके तेलमें

१२ ग्रेन फासफोरस मिलाना पीछे एक सो असी डिग्री गरम पाणीमें उसकी शीशी धर देनी और हिलाणी जब फासफोरस गलके मिल जाय गुण पौष्टिक मात्रा ५ से १० बुद.

(९) पीपरमींटका तेल-(ओल्यम मेन्थी पीपरीटी) उष्ण वातहर मात्रा १ से ४ बूंद पेटकी वायुमें तथा योगवाही दवामुजब दुसरी दवायोंके संग वापरते हैं

(१०) कोडलिवर ओइल-क्षय कठवेल नाताकती तैसे चमडीके रोगमे फायदा करता है, जादा वर्णन कोडलिवर ओईलमें करनेमे आया है, गुण-पौष्टिक मात्रा १ सें ८ ड्राम आर्य लोकोंके नही खानेयोग्य है.

(११) केस्टरओइल-एरडीका तेल रेचक मात्रा १ ड्रामसें १ औंस

(३७१ कलबा-कलभाका टिंकचर २½ औंस कलभा २० औंस प्रुफस्पिरिट पहली १५ औंस स्पिरिटमें कलभेके चूर्णकू चोवीस घटे रखकर हिलाना पीछे छाणकर बाकीका ५ औंस स्पिरिट डालणा मात्रा ½ से २ ड्राम दीपन पाचन मदाग्नि नाताकती उलटी अजीर्ण वगेरे रोगोंमें वापरते हैं मद जठराग्निसें जिसका वदन फीका पडगया होय वेर २ दस्त होता होय और अजीर्णके दुसरे चिन्ह मालुम पडतें होय तब कलभा तथा टींकचर फेरीका उपयोग बहोत फायदेचद है, कलभेके टिकचर सिवाय इन्फयुझन (चा) एक-स्ट्राकट (घन) और चूर्णभी इसका वापरते है.

(३७२ क्राइसोफेनिक एसिड-ये एसिड दादकेवास्ते उत्तम इलाज है, उसका ओइटमेंट (मलम) होता है, क्राइसोफेनिक एसिड५ ग्रेन एसेटिक एसिड १ बूद टींकचर आयोडीन १ बूद ओइटमेंट ओफ आयोडिड ओफ मर्क्युरी एक ग्रेन और वैसे लाइन १ औंस तमाम दादोकू ये मलम मिटाता है

(३७३ क्याटेकू-कत्था) टिंकचर तथा चूर्णभी काम देता है टींकचरकी बनावट २½ औंस कत्थेका भूका २० औंस प्रुफस्पिरिट १ औंस तजका चूर्ण सातदिन भीगे रखणा छाण लेना मात्रा ३ सें २ ड्राम गुण ग्राही स्तभक शीतल अतिसार रक्तातिसार वगेरेमे वापरते हैं

(३७४ क्यालोमेल-(हाइड्रारजीरी सब कलोरीडम्) रेचक तथा शोधक हैं, थोडी मात्रामें वो पित्त वगेरे रसका शोधनकर शरीरकी बिगडी दशाकू धीमे २ सुधारता है, मात्रा) शोधक गुण है, इसवास्ते २ सें १ ग्रेन रेचकगुण है, इसवास्ते २ से ६ ग्रेन रेचकतरीके इकेला क्यालोमेलका उपयोग करणा अच्छा नहीं है, शोधक गुणवास्तेभी बहोत दिनोंतक जारी रखणा नहीं क्योंके इससें मू आजाता है, बच्चोंका बुखार कृमि मगज तथा छातीके रोगोंमें वापरते हैं, बुढ्ढे अदमीके बुखारमें किनाइन वगेरे दवा सरू करते केलोमेल और एन्टीमोनियल पाउडरएकेक तीनग्रेन २ देनेसें फायदा होता है, (ब्ल्याकवास) चूनेका पाणी १० औंस क्यालोमेल ३० ग्रेण दोनोंके मिलाणेसे कालापाणी होता है उसका पोता गरमीका जखम मिटता है और सोजा होता है, सोभी उतरता है (वफारा) अगारपर चार पांच ग्रेन क्यालोमेल डालकर उसका

धूआ लेना धूआं लेते वखत गलेसें ऊपरका भाग खुल्ला रखकर बाकी सब बदन कपडेसें ढक लेना बहोत दिन इसका बफारा लिये जाय तो मू आजाता है, इससें विस्फोटक वगेरे फूटकर बदनकूं सडानेवाली गरमी अच्छी होती है, लेकिन् पारे की कोईभी दवा खाकर अथवा धूंआ लेकर जादा मुंआणा इससें फायदेके बदले नुकशांन बहोत है, जरासा मू आवै थोडा मसूडे फुले तब तुरत दवा बंधकर देनी

(३७५ क्युबेब—कबाबचीणी—मूत्रल तथा शीतल है, प्रमेह तथा हरसमें उसका बहोत फायदा देखा है, खास गुण पुराणा प्रमेहपर बहोत अच्छा है, चूर्ण तेल अथवा इसका अर्क फायदेबंद है, चूर्णकी मात्रा २० ग्रेनसें २ ड्राम दूध अथवा जलसे देणा तेलकी मात्रा ५ सें २ बुंद टींकचरकी मात्रा ½ सें २ ड्राम ७ कबाबचीणीका चूर्ण ॥ भर फिटकडी २ वाल और कत्था २ रतीभर दिनमें तीन वखत दोतीन दिन हमेस लेनेसें प्रमेह तथा प्रदर गिरता बंद होता है, कबाबचीणी मस्सेके खूनकू बध करता है, हरस रोगमें माखण मिश्रीकेसग इसका चूर्ण लेना.

(३७६ कलोरल—(क्लोरलहाईड्रेट) उसके सुपेद चिलकते पासें अथवा छोटे २ टुकडे होते है, पाणीमे डालणेसे पिगल जाता है, नींद लाणेकू खासतरीके दिये जाता है. क्लोरल अफीमकीतरे नींद लाता है, लेकिन् दस्त कबज नहीं करता ज़ुस्सा नहीं लाता चसका सधिवाय आंकसी धनुर्वात सन्निपात हिचका चित्तभ्रम और बेचेनी तथा अनिद्रा वाले रोगोंमें ये दवा बहोत फायदा करती है, धनकिया वादी कुचीलेका जहर चढनेसें अदमीका बदन खेंचीज जाता है, उसकू एकदम आराम करता है, अफीमकीतरे बहोत दिनोतक लेनेसें उसकी टेव (मावरा) पड जाता है, जादा मात्रा लेनेसे जहरी चीज है, मात्रा—खेचा तान हिचका वगेरे मिटाणेकू ५ से १० ग्रेन नींद लानेकू १५ से ४० ग्रेन लेकिन वीस ग्रेणसें जादा देते बहोत हुसियारी रखणी चहिये मिश्रीके जल में गालकर क्लोरल देना जादे अच्छा है; केमीष्टके उहां इसका शरबत (सीरप ओफ क्लोरल) तयार मिलता है, उसमें १ ड्राम शरबतमें १० ग्रेन क्लोरल होता है, वो वापरणा सुगम पडता है

(३७७ क्लोराडाइन—ग्राही पीडाशामक दीपन पाचन और आंकसी तथा शूलकूं मिटानेवाला है, क्लोरोडाइन कालेरगका जाडा प्रवाही होता है, वो मोरफीया कलोरोफोर्म इन्डियन हेम्पहाइड्रो स्पानिक एसीड पेपरमिन्ट और स्पिरिटका बणता है, स्वादमे अच्छा होता है, पेटकी आंकसी अतिसार खासी दम वगेरे रोगोंमें वापरनेमें बहोत लोक घरमें रखते हैं, इसकू देती वखत ऊमर तथा रोगका बराबर विचार करणा चाहिये मात्रा स्वेदल तथा पीडा शामकतरीके ५ से १० बूद कफ शरदी ईन्फल्युएन्झा तथा एग्यु जातके बुखारमें दिये जाता है, आंकसी मिटाणेकू १० सें २५ बूद दम खासी वगेरेमें

इतनी मात्रा दी जाती है, ग्राहीपणेकू १५ से ३० वूंद हैजा अतिसार मरोडेमें ये मात्रा देणा चहिये वचोंकू एकाएक देना नहीं जो कभी देना पडे तो वहुत सावचेतीसें उमरका विचार करके देणा चहियें एक वर्षके बचेकू १ वूंद १–३ वरसके बचेकू २ सें ४ वूद इस क्रमसें ८–१६ वर्षवालेकू ८ सें २० वूद देणा, अनुपान–पाणी शरबत अलशीकी चा अथवा खांडमें वूदे मिलाकर देणा क्लोरोडाइनकी वाटलीकू मजबूत बंध रखणी और हिलायकर लेनी.

(३७८ क्लोरोफोर्म–वातहर मादक शामक खेचाताणकू वध करता वेहोस करनेवाला है, जरूरपणे इसका उपयोग शरीरकू काटणे वाढणेकी वखत वेशुद्ध करनेका है, लेकिन् वो उपयोग अनुभवी डाकतरोका है, इसके अलावा हैजा अतीसार चूक वगेरे रोगोंमे वो दिये जाता है, मात्रा–१ सें ५ वूद बचोंकों ये दवा पीनेकू देना नहीं, १ सें ५ वूद खांडमे मिलाकर देनेसें उलटी एकदम वद होजाती है, दम तथा हैजेमें गुदके पाणीमे ३ से ५ वूद मिलाकर देना, बनावट (१) कमपाउन्ड टिंकचर ओफ क्लोरोफोर्म–क्लोरोफोर्म २ औंस रेकटीफाइड स्पिरिट ८ औंस इलायचीका अर्क १० औंस तीनोंको मिलाणा मात्रा–२० से ६० वूद (२) स्पिरिट ओफ क्लोरोफोर्म–क्लोरोफोर्म १ औंस रक्टिफाइड स्पिरिट १९ औंस दोनोंको मिलाणा मात्रा २० से ६० वूद (३) लिनिमेन्ट ओफ क्लोरोफोर्म–क्लोरोफोर्म २ औंस लिनिमेन्ट केम्फर २ औंस दोनोंको मिलानेसें लिनिमेंट याने तेल वणता है, वो वदनके किसीभी जगेका दरद जलण तथा खुजालपर लगाणेसें मिट जाता है

(३७९ काश्या–दीपन पाचन ज्वरघ्न बुखार मदाग्नि तथा कृमिपर चा घन तैसे अर्क दिये जाता है, तांतू जैसें कृमियोको विलकुल मिटाता है, पीछै जुलाब देकर निकाल देते है

३८० किनाईन–(सलफेट ओफ किनाइन) ज्वरहर पौष्टिक पाणीमें वरावर मिलता नहीं सल्फ्युरिक एसिड १० वूद और किनाइन १० ग्रेन इय मिल जाता है, (अच्छे किनाइनकी परिक्षा)–एक चकूके पाणपर किनाइन धरकर उस चकूकू स्पिरिट लेम्पर धरणा चकूका पाना लाल जब होगा तो किनाइन तो उड जायगा उस चकूपर फकत काला दाग रह जायगा अगर पिछाडी चकूपर कुछ पडा रह जाय तो समझणा के किनाइनमे किसी चीजका मेल है, किनाइन शरीरमें क्या क्रिया करता है, वो डाकटरोके अभीतक पूरा समझमें नहीं आया है, लेकिन निरोगी खूनमें किनाइके मिलता कोइ पदार्थ देखनेमे आया है, एसा रसायणी विद्वानोका कहणा है, उसकू इसवास्ते किनाइन खूनमेके उसपदार्थकू पुष्टि देता है बुखारमें खूनमेका इसतरेका पदार्थ कम होजाता है किनाइन पीछा घणा देता है, इसवास्तेही किनाइन सब बुखारमें अकसीर उपाय ठहरा है, जादातर मेलेरियल

फीवरमें और विषम ज्वरमें जादाही अकसीर है, वदनकी गरमीकूं कम करता है, उसके संग ज्ञानतंतुओकोंभी मद करता है, मेलेरिया बुखारमें खून मे सपेद रजकण वढते हैं, किनाइन उसकों रोकता है, किनाइन जहरी कीडोंको मिटाता है, उससें वदनके सडते भागकूं रोकता है, चसका तैसें संधिवाय जैसे रोग सो वहोतसी वखत दिखाइ देता है, और पीछै मिट जाता है, उसमेंभी किनाइन अच्छा फायदा करता है, इसका उपयोग करते एक दो वात ध्यानमें रखनेकी है, बुखारमे किनाइन सरू करती वखत एक दोय दस्त आवै पेट साफ होय एसा परगेटिवले लेना चहिये दुसरी वात इय हैके वदनमें ठढ अथवा बुखार (गरमीका) जोर होय तब किनाइन नहीं लेणा दस्तका खुलासा होय पसीना आनेलगे तब किनाइन लेना डाकटरकी सलाह नहीं होय तब किनाइन लेना होय तब बुखार नरम पडे और पसीना आये पीछै अथवा चमडी भीजीसी होजावे तब लेना पडे बुखारमें जब शिर दुखता होय नाडी जोरमे होय और चमडी सूकी होय तब किनाइन विना डाकतरके हुकम विगर कभी लेना नहीं कितनी वेर एसाभी बणता है, शरीरमें क्षारकी व्याप्ति भये पीछेही किनाइनका पूरा असर होता है, इसवास्ते किनाइनकेसग क्षार गुणकी दवाइयें जरूर मिलाकर देणा चहिये किनाइन जुदे २ शरीरमें जुदी २ असर करती है, कोईकूंवडी मात्रामेंभी चहिये एसा असर नहीं करता और कोईकू थोडी मात्रामें शिरमें तथा कानमें अवाज तथा बहिरापणा लाता है, चमडीपर दाग उठ जाता है, मात्र एक ग्रेन किनाइनसे एसा अहवाल वणनेका किसी २ जगे दाखला बण आता है, जब एसा अहवाल बने तब मात्रा कम करणी अथवा बधकर देणा किनाइनका बडा डोझ शिरमे अवाज कानोंमें बहरापणा आंखोमें अधेरा लाता है, चहरा और आंखे लाल चोल होजाती है, ये असर थोडी २ कम होकर बंध होती है, लेकिन किसी २ वखत कानकी अवाज वगेरे निशानि या हमेसांकेवास्ते रह जाती है (मात्रा ३ से १० ग्रेन) अथवा वेर २ नहीं देना होय तो इससेभी जादा मात्रा दी जाती है, अनुपान—सामान्यतरे पाणीकेसग लिये जाता है, लेकिन अच्छा अनुपान नींबुका रस है, अथवा सल्फ्युरिक एसिड है, कडवा वहोत होता है, अगर लिया नहीं जाय तो गूदके पाणीमें अथवा ग्लिसेराइनसें गोलियां बांध लेनी बुखार सिवाय पाचन क्रियापरभी अच्छी असर करती है, और उससे डिस्पेपस्या नामके अजीर्णमें फायदा करती है, नाताकती दूर करनेवास्ते किनाइन ऊपर लिखी मात्रासें आधे वजनमे लेना मेलेरियावाली हवामें हमेस एकाध ग्रेन किनाइन लेणेसें मेलेरियाकी जहरी असरसे वचता है

(३८१ काजुपुटी ओईल—पेटकी चूकपर दीजाती है, मात्रा १ सें २ बूद अथवा ऊपर चुपडें जाती है.

(३८२ कायनो—हीरादक्खन-ग्राही रक्तस्तभक शीतल-अर्क तथा चूर्ण वापरते हैं,

टिंकचर-हीरादखनका चूर्ण २ औंस रेकिट फाइड स्पिरिट २० औंस ७ दिन भिगाकर छान लेना और स्पिरिट २० औंसमेंसे कम होय इतना फेर डालकर २० औंस पूरा करना मात्रा १ सें २ ड्राम-कम्पाउन्डपल्वीस-३॥। औंस हीरादक्खण । औंस अफीम १ औंस तजका चूर्ण इन तीनोंका महीन चूर्ण मात्रा ५ से १० ग्रेन दस्त खून गिरणा तथा उलटीमे देते है.

(३८३ कार्डेमम-इलायची दीपन पाचन रुचिकर टिंकचर कोर्डेमम दुसरी दवायोंके संग दिये जाती हे मात्रा $\frac{1}{2}$ सें २ ड्राम

(३८४ कारबोलिक एसिड-दाहक रोपण जतु तथा दुर्गंध नाशक बुखारकूभी मिटाता है, उलटी ज्वर रक्तदोपमें खाणेमें देते हैं, गिलसेराइन ४ औंस कारबोलिक एसिड १ औंस मिलाणा मात्रा ५ सें १० बूद मुख्य उपयोग जखम घाव भरणेमें काम देता है, कारबोलिकका प्रवाही-१ भाग कारबोलिक एसिड और ४० भाग पाणी सांमल करणा जखम उपदशकी चांदी दुर्गंधी घाव हाड गंभीर नासूर भगदर वगेरे रोगोमें धोनेवास्ते तथा पिचकारीवास्ते बहोत उपयोगी है, कारबोलिक तेल-१ भाग एसिड २० भाग मीठातेल मिलाना ऊपर लिखे तमाम चमडीके रोगोंमें इस तेलकी पट्टी मारणेसें बहोत जलदी भराव लाता है, जो घाव चिक २ तें होय ऐसे घावपर पहली आयोडोफोर्म भुरकाकर पीछे कारबोलिक तेलका कपडा भिगाके धरणा साबूमें तथा बहुतसे मल्ममोंमें कारबोलिक एसिड मिलानेसें चमडीके रोगोंमे बहुत फायदाबध होता है, खानेमें उसकी मात्रा $\frac{1}{2}$ से २ ग्रेन है, जादा लेनेमें आवे तो जहरके चिन्ह बताता है, मरभी जाता हे

(३८५ क्रियासोट-उलटी तथा दस्तकू रोकता है, दुर्गंधका नाश करता है, दांतके दुखणेकू बध करता है, उसका मल्म दाद खुजली खाजपर काम आता है, मात्रा १ सें ३ बूद क्रियासोट मिश्चर १ सें २ औंस

(३८६ क्रीम ओफ टार्टर-दुसरा नाम एसिड टार्टरेट ओफ पोटास-बाईटार्टरेट ओफ पोटाश सारक शीतल मूत्राशयपर उसकी असर अच्छी होती है, बुखार हरस जलोदर तथा दस्तकी कबजीमें दिये जाता है, मात्रा २० से ६० ग्रेन (रेचक) मात्रा १ से ४ ड्राम गधकके सग मिलाकर हरसमें दिये जाता हे, गधक ३ ड्राम और क्रीम ओफ टार्टर १ ड्राम दोनों मिलेभये मात्रा १ ड्राम अनुपान सहत अथवा शरबत

(३८७ केम्फर-कपूर जतुनाशक निद्रानाशक ज्वरघ्न स्वेदल कफघ्न मूत्रल चमडीकी क्रिया और पसीनेकू बधाता हे, जादा मात्रा देनेसें वो खूनके वेगकू नरमकर आंकडी तथा शूलकू मिटाता है, हिस्टीरिया दम सधिवाय खुलखुलिया खासी छातीका धडका वगेरे रोगोंमें देते हैं, जलणकू मिटाता है, नींदकू उत्तेजन देता है, शिरके दरदकू कम-

करता है, और शरदीमें फायदा करता है, मात्रा–२ सें ४ ग्रेन (बनावट) १ केम्फरवाटर डिस्टील्ड वोटरसें भरी शीशीमें थोडा कपूर डाल थोडे घंटाओं तक केम्फरका जल खुसबोदार होता है, येजल इकेला दवातरीके दिये नहीं जाता लेकिन डाया फोरेटिक मिकश्चर जैसी बनावटोंमें उसका सादे जलके ठिकाने उपयोग होता है, (२) स्पिरिट क्याम्फर–१ औंस और १ ड्राम रेक्टीफाइड स्पिरिटमें १ ड्राम कपूर डालनेसें स्पिरिट क्याम्फर बणता है, शरीरके अंदर गरमी लानेवास्ते हिस्टीरीया वगेरे ऊपर लिखे रोगोपर पीनेमें तैसें बाहर जलके सग (३) कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ क्याम्फर अथवा पेरी गोरिक एलीक्सीर अफीम ४० ग्रेन लोबानका फूल ४० ग्रेन कपूर ३० ग्रेन एनिसी ओइल । ड्राम प्रुफस्पिरिट २० औंस ये पांच चीजोकों एक बाटलीमें ७ दिन रख छोडनी और बाटलीकू बखतो बखत हिलाना पीछे छाण लेना इस दवासें हैजा अतिसार वगेरे रोगोमें दिये जाता है, मात्रा १५ सें ६० बूंद अर्थात १ ड्राम बचेकूं ३।५ बूद थोडी मिश्री ऊपर भुरकाकर देणेसें कफकूं बहोत फायदा करता है, खुलखुलिये खासीमें बुखार होय तो उसकू इपीकाक्यु आन्हावाइन अथवा ओन्टीमोनियल वाइनकेसंग दिये जाता है

(३८८ केशकारासे ग्रेडा–रेचक तैसें पौष्टिक है, बधकुष्ट तथा उससें भये हरस रोगमें ये दवा देनेसे दस्तका खुलासाकर सफरेकू साफ करता है, लिकिड एकस्ट्राकट ओफकास्कारासे ग्रेडा दवामें दिये जाता है, उसकी मात्रा १ ड्रामकी है.

(३८९ केस्टर ओइल–एरडीका तेल ताजा पेटमें चूंक जलण पैदा करता नहीं और दस्त अच्छीतरे लाता है, इसवास्ते नाजुक मिजाजवालेकू ये जुलाब अच्छा है, साधारण कबजियतमेंभी दस्त साफ लानेकूं ये दिया जाता है, वेर २ देनेमे आवे तो मात्रा कम करणी चाहिये दुसरी वखत जुलाव देनेसें कम असर करता है, इसवास्ते मात्रा वधाणा पडता है, लेकिन ये बात एरडीके तेलमे नहीं है, इसकू तो बलके कमही देना चहिये एरडीके तेलमे फकत बकवो आया करती है, ये एक एब है, इसवास्ते मूमें पहली नीं ूके रसकी बूदे डाल पीछे इसकू पीवै अथवा पेपरमींटके पाणीमें डालकर पीणा अथवा तेल जितनाहीं ग्लीसराइन मिलाकर तजके अर्कसें बूदोंसे सुवासित करणेसें उसकी खराब गध मिट जाती है, जो क्यास्टर ओइल ताजा और अच्छा नहीं होय तो पेटमें गरमी आंकडी और मरोडा पैदा करता है

(३९० क्रोटन ओइल–जमाल गोटेका तेल अतिरेचक तथा दाहक है, इससे पेटमें जलण होती है, जादावध कुष्टमे तथा जलोदरमें मिश्रीमे गोली बांधकर देते है

(३९१ कोडलीवर ओइल–कोड नामकी मछलीके कलेजेका ये तेल बणता है, डाक्तरलोक इसकु पौष्टिक कहते हैं, क्षय नाताकती छातीके दरदमें बहोत देते हैं,

मात्रा १ से ८ ड्राम ये तेल पचनेमें भारी है, और कितनोंको अजीर्ण होकर दस्त होने लगता है, दूधकेसग अथवा चिरायतेके चासग अथवा पेपरमेटके जल सग देते है, जीमे बाद तुरत पीनेसे खुराककेसग वो पच जाता है, बुखारमें तथा दस्तकी बेमारीमें देनेसें नुकशांन करता है, कोडलीवर ओइल विथ मालटाइन नामकी दुसरी बनावट इसकी होती है, वो स्वाद और गुणमें जादा वो लोक कहते है, इस वखत माल टाइन जादा वापरते है

(३९२ कोपर) (सल्फेट ओफ कोपर) नीलाथोथा वामक ग्राही दाहक विप आसमानी रगका टुकडा पासदार मिलता है, मात्रा ग्राही गुणवास्ते ¼ से २ ग्रेन वमन-वास्ते ५ से १० ग्रेण पेटमे कोइ २ जगे सग्रहणी तथा अतीसार में दिये जाता है, लेकिन उसका मुख्य उपयोग बाहर लगाणेमें आता है, आखका लोसन—१ औंस पाणी १-२ ग्रेन नीलाथोथा जलमें डालनेसें आसमानी रगका पाणी होजाता है, आंखकी खीलपर दुसरे २ दिन नीलेथो थेका कटका फेरणा ऊपरसे लोसनकी चूदे डालणी प्रमेह सुजाकमें इसकी पिचकारी दिये जाती है, झींक जब हाजर नहीं होय तब जहर खायेको नीलेथोथेकी उलटी देणेमे आती है

(३९३ कोपेवा—इस नामका दरखत होता है, उसमेंसे तेल जैसा निकलता है, उसकू बालसम कहते है, ये रस मूत्रल तथा वस्तिशोधक है, प्रमेह सुजाकपर मुख्य चलता है, प्रमेहकी जलण कम होय तब सरू करणा प्रमेह प्रदरके पुराने मरजपर बडा फायदेवद है, मात्रा ५ से २० बूद

(३९४ कोलशीकम—वातहर तथा रेचक है, मात्रा २ सें ८ ग्रेन गाउट तथा सधिवायपर उसका उपयोग साधारण है, यकृत् तथा मलकी कबजी और अजीर्णपरभी वापरते हैं, उसका एक स्ट्राकटभी वापरते है, मात्रा ½ सें २ ग्रेन

(३९५ कोलोसिथ—देशी नाम कडवा तूबा गुण रेचक है, जलोदर मलावरोध तथा अजीर्णमें जुलाब दिये जाता है, उसके एकस्ट्राकटकी मात्रा ३ से १० ग्रेन

(३९६ गम—देशी नाम गूद मूत्राशयका वरम अथवा दाहमें तैसें बचोंके धातु गिरणेमें दिये जाता है, कफकेवास्ते मूमे रखकर चूसकर रस ऊतारणा अच्छा है २० औंस जवका पाणी और १ औंस गम मात्रा ६ औंस

(३९७ ग्लिसराइन—चमडीका रोग ऊपर लगानेमें विशेषकरके वापरते हैं, ग्लिसराइन पेटकी खुजालपरभी कुछ इक असर करता है, चमडीका दाह स्तनपाक जीभ तथा मूका जखम गलेका पकणा वगेरे रोगोंपर ग्लिसराइन अकेला अथवा टेनिक एसिड टकण फिटकडी कारबोलिक एसिड वगेरे दवायोमें कोइभी एकाधकेसग मिलाकर लगाये जाता है, जिससें चमडीकी जलण मिटती है, इस मिलावटमें ग्लिसराइन ४ भाग और

मिलानेकी दवा १ भाग लेणी साबू बणानेमें उसका उपयोग होता है, चमडीका दाह तथा स्तनपाक कपडे भिगाकर धरनेसें १ औंस ग्लिसराइन १ द्राम टंकण और २० औंस पाणी तीनोकों मिलाना

(३९८ गोआपाउडर–(क्रिसारोबीन) दाद विचर्चिका वगेरे मसलणेसें मिटता है, आंखमे जानेसें नुकशान करता है.

(३९९ गोल्स–देशी नाम मांजूफल गेलिक एसिड टिकचर ओफ गोल्स तथा मलम काम देता है, ग्राही है, लोशन तथा कुरलेवास्ते २० औंस पाणी २ द्राम मांजुका भूका अतिसार तथा खून गिरते बंद करनेकू मात्रा ५ से १५ ग्रेन गरमपाणीकेसग मस्सेमें तथा सुपेद प्रदरमेभी दिये जाता है, मात्रा १ द्राम अनुपान सहत १ औंस मांजुलोसन तरीके टकण जैसा काम करता है.

(४०० चिरेटा–देशी नाम चिरायता पौष्टिक तथा पाचन मदाग्नि तथा नाताकती वास्ते तैसे लीवर यकृत् मद पड गया होय उसमे ये चिरायता बहुतही फायदा करता है, मात्रा–चिरायतेका भूका ½ औंस और २० औंस पाणी उनोकों वीस मिनटतक उकालना उसमेंसें १ वाइनग्लास फुल याने दोदो औंस उकाली सवेर सांझ भोजनके आधी घटा पहले बच्चेकू १ द्राम

(४०१ चोक–(क्रीटाप्रिपेरेटा) देशी नाम चूक ग्राही तथा आम्लविरोधी उसका चूर्ण तथा मिकश्चर दिये जाता है, एरोमेटिक पाउडर ओफचोक–४ औंस तज ३ औंस जायफल ३ औंस केशर १॥ औंस लोंग १ औंस इलायची २५ औंस मिश्री ११ औंस चोकका चूर्ण करणा मात्रा १० से ६० ग्रेन एरोमेटिक पाउडर ओफ चोक एन्ड ओपियम १० औंस चोक ¾ औंस अफीम मात्रा १० से ४० ग्रेन.

(४०२ जनइयन–ज्वरघ्न पाचक रुचिकर पौष्टिक कम्पाउन्ड इन्फयुझन (चा) मात्रा ½ से द्राम.

(४०३ जालप–रेचक है, मात्रा १० से ३० ग्रेन

(४०४ जींजर–सूठ उष्ण दीपन पाचन तथा वातहर दवामें उसका टिंकचर (स्ट्रोंना।टिंकचर ओफ जींजर) वापरते हैं, होजरीमें गरमी लाणेवास्ते तथा अतिसार और पेटके चूंकमे दीजाती है, खट्टी दवायोकेसगभी दीजाती है. मात्रा ५ से २० चूंद

(४०५ झीक–(जसत) ग्राही रोपण तथा पौष्टिक है, विशेपकरके जखम खुजाल लुखास विस्फोटक वगेरे चमडीके रोगोपर उसकी भुकनी दवाते हैं, अथवा मलम लगाये जाता है, (१) सल्फेट ओफझिंक (जसतका फूल) सुपेद पासादार महीं २ भूका होता है, वो प्रमेह प्रदर ऊपर पिचकारी मारणेवास्ते तथा आखोंमें बूदे डालने वास्ते बहुत उपयोगी है, झिंकलोशन आंखमे आंजणेवास्ते अथवा भीगा वस्त्र धरनेवास्ते

१ औंस पाणी अथवा गुलाब जल और १ से ४ ग्रेन सल्फेट ओफझिंक जहर खायेपर तुरत उलटी कराणी होय तो काम देता है, उलटी कराने मात्रा १५ ग्रेणसे ॥ ड्राम अनुपान गरम पाणी.

(४०६ टरपेन्टाइन—मूत्रल ग्राही रक्तस्तमक कृमिघ्न रेचक तथा वातहर है, टरपेन्टाइनका तेल कोइ २ वखत पीनेकी दवामे वापरते हैं, पेटका तथा छातीका तथा नसोंके दुखनेमें टरपेन्टाइन लगानेमे काम देता है, छातीकी शूल पेटकी आंकसी तथा आफरा और हैजाके पेटके आफरनेपर वांइटोपर मसलते है, अथवा गरम पाणीमे फुलालीनका टुकडा भिगाकर निचोडकर उसपर ये तेल छिडककर दुखती जगोंपर धरनेसें तुरत दरद मिट जाता है, मात्रा—मूत्रल तथा ग्राही गुण है, इसवास्ते ५ से ३० बूद कृमिघ्न तथा रेचक तरीके १ से ४ ड्राम टरपेनटाइनका मलम तथा लिनिमेन्टभी बणता है.

(४०७ टार—देशीनाम तार-कील-टारका मलम कील ५ औंस पीलामोम २ औंस दोनोकू गरमकर मिलाणा खुजली जखम विस्फोटकमें वापरते हैं

(४०८ टारटरिक एसिड—शीतल सोडावाटर बणानेमे काम आता है, $\frac{1}{2}$ ड्राम सोडा और एसिड २५ ग्रेन टारटकि एसिड २ ड्राम बुरा १$\frac{1}{2}$ आंस और नींबूका रस आधा चमचा अथवा ३० बूद पाणींकेसग मिलाकर वो पाणी बुखारकू मिटाता है.

(४०९ टेनिक एसिड—ग्यालिक एसिडकी तरे ये एसिडभी माजुसें बणता है, बाहार लगानेमें काम देता है, प्रदर रोगमें इसकी पिचकारीसे फायदा होता है, गलेमे अथवा गालके अदर, सोजा होता है, उसपर सहतसे टेनिक एसिड अगलीसें अथवा पीछीसे चुपडणेसें तुरत आराम होता है, दुखती आंख तथा खीलमेंभी टेनिक एसिडकू भरनेसें अथवा एकेक औंस जल तथा ग्लिसेरीनमें १० ग्रेन टेनिक एसिड टाल बूदोसे फायदा होता है, टेनिक एसिड टिंकचर ओपियम और ग्लिसेरी इनकी मिलावट कानमें बूदे डाले जाती है, उससें कानका पीप तथा शूल मिटती है, दातके लगाणेसें दात साफ होता है.

(४१० डीजीटेलिस—गुण मूत्रल तथा रिदयकू उत्तेजक है, पत्तोके चूर्णकी मात्रा ॥ से १॥ ग्रेन चाकी मात्रा—२ से ४ ड्राम अर्ककी मात्रा ३० बूद ज्वररक्ताशयका दरद जलोदर तथा पेशाबकू छूटसे लानेवास्ते वापरते हैं

(४११ डोवर्स पाउडर—ओपियम (अफीम) और इपीकाक्युन्हाकी मिलावटकू डोवर्स पाउडर कहते हैं, दुसरा नाम कम्पाउन्ड इपीकास्युन्हापाउडर है, बनावट ॥ औंस इपीकाक्युआन्हा ॥ औंस अफीम ४ औंस सल्फेट ओफ पोटास तीनोका चूर्ण करणा मात्रा ५ से १५ ग्रेन बुखार दस्त खामी सन्निपात वगेरे रोगोंमें फायदा करता है, मेलेरियाकी हवामें जब आतरोंकू इजा पहुचती है, और बुखार आता

(४२९ बेलाडोना)–बेलाडोणाके पत्ते जड उसमेंसे बहोतसी दवायें बणती है, तैसें बाहर लगानेमेभी काम देती है.

(१) टींकचर ओफ बेलाडोना मात्रा ५ से २० बूंद.
(२) एकस्ट्रकट ओफ बेलाडोना मात्रा $\frac{1}{2}$ से १ ग्रेन.
(३) बेलाडोनापलास्टर–बेलाडोनेका लेप.
(४) लीनीमेन्ट ओफ बेलाडोना.
(५) आट्रोपीन–बेलाडोनेका खास सत्व है, मलम वट्टी वगेरेभी होती है.
(६) सल्फेट ओफ आट्रोपिया.

(गुण) पीडा शामक उष्ण स्वेदल स्नायुशैथिल्यकृत् दूध तथा थूक शुद्धकरता आंखकी कीकीकू चोडी करनेवाला खासी धनुर्वात चस्का शिरकी आंखकी तथा कानकी शूल वगेरे रोगोमे पीनेमें तथा ऊपर लगाणेमें काम देता है, आंखकी कीकी चोडी करनेकू आट्रोपीन अथवा उसकी कोइभी बणी दवा आंखमें आंजते हैं, आंखकी कनीनीका सोजा फूला मोतियाविंद वगेरेभी उससे अच्छा होता है, आट्रोपीन १ ग्रेन पाणी १ औंस पेसाबकी गांठ मलकी कबजी पेसाबके अतीसारके रोगमे अंदर लेनेवास्ते तैसे औरतोके ऋतुधर्म संबंधी तथा गर्भस्थानके रोगमें उसकी सोगठी बणाकर गुह्य अवयवमें धरते हैं, वदनमें रसकी वढोतरी होती भईकू रोककर पसीनेकू तथा स्तनके जादा दूधकू तथा जादा थूक आता होय तो बंध करता है

(४३० बोर्यांकस–(देशी नाम टंकण) मूत्रल तथा शीतल पेसाबकी वृद्धि करता है, उसमें खटासकू दूर करनेका थोडा खार गुण है, ऋतु लानेवाला है, जादा मात्रासें गर्भ गिरा देता है, मों तथा जुबानका जखम मूं आणा वगेरेमें कुरला कराते हैं, और बच्चोंकों सहतमें मिलाकर मूमे लगाये जाता है, खानेकी मात्रा ५ से ४० ग्रेन कुरला १ औंस बोर्यांकस ८ औंस पाणी दुसरी बनावटे (१) मेलबोर्यासीस टंकण ६० ग्रेन ग्लीसेरिन ॥ ड्राम और सहत १ औंस (२) ग्लीसेरीन ओफ बोर्यांकस–टंकण १ औंस ग्लीसेरीन ४ आसें पाणी २ औंस तीनोंकों घोटकर मिलाना ये दोनों मिलावटी दवा मुखपाक शिरका खोरा और मैलऊपर लगानेसे बहोत फायदा करता है, गरम पाणीमें टंकण डालके न्हाणेसें चमडी की खाजपर मसलणेसे फायदा करती है

(४३१ मरक्युरी पारा) पारेका बहोतसा खानेकू तथा लगानेकू दवामें उपयोग होता है, पारेका अच्छीतरे सोधन तथा परेज कियेविगर पारेकू खाणा अच्छा नहीं अंग्रेजी इलाजोमें पारेकी कितनी बनाइ भई चीज खानेवास्ते धुयेवास्ते लेपवास्ते वापरते है, उसकी मुख्य असर शोधक है, इसीवास्ते उपदंसपर इसका मुख्य उपयोग होता है, लेकिन ये दवा देनेके पहली रोगीकी शक्ति प्रकृतीका बहोत बारीक विचार

करणा चाहिये क्युके पारा तासीरकू नमाने अथवा वजनसें जादा खानेमें आवे तो वदनकू विगाड देता है, उसके विगाडके ऐसे लक्षण होते है, मू आजाता हैं, जीभ गीली होकर घाव पडे दांत ढीले पडे चमडीपर फूट निकले और गति ततुओमें पारेकी खराब असर पोहचतेही हाथ पांवोंकी गतिमे विगाड होकर धूजणे लगता है, इसवास्ते पारेसवधी कोइभी दवा खाते वहुत सावधान रहना चतुर वैद्य डाकदरोकी सलासेंही लेना अच्छा है

(४३२ मसटर्ड–देसी नाम राई) मुख्यपणे उलटी कराणा तथा पलास्टरके काममें आता है, उलटीकी मात्रा १ से ४ द्राम राईका पलास्टर (पोल्टीस) २½ औंस राई २½ औंस अलशी ८ औंस ऊकलता पाणी २ औंस ठढा पाणी २ औंसमें राईकू मिला देना और अलशीके चूर्णको ऊकलते जलमें मिलाना पीछे दोनोंकों एकठा करणा मसटर्डकूं ठढे पाणीमे पीसकरके पलाष्टर मारणेमे आता है

(४३३ मेनथोल–पेपरमिनटके तेलमेसे निकलता है, (गुण) पीडा शामक मात्रा ½ से २ ग्रेन मेनथोल घसणेसे तथा पीलानेसें शिरकी शूल तथा चसक मिटती है

(४३४ मेलफर्न)–लिक्विड एकट्राकट ओफ मेलफर्न-कृमिघ्न है, पेटके अदरकी लवा चिपटा कृमियोंपर ये दवा फायदा करती है, रोगीकू एक दस्त देकर कितनीक देरतक भूखा रखणा पीछे दवा देनी और फेर १ जुलाव देणा इसतरे करणेसें कृमि वाहर निकल जाती है, मात्रा ३० से ६० वूद.

(४३५ रुबार्ब)–दीपन रेचक ग्राही अजीर्ण कवजियत चूक दस्त वगेरे रोगोमें दिये जाता है, अच्छा हलका जुलाव होजाता है, इसवास्ते बच्चोकू अच्छा समझ दिये जाता है, उसके जडका चूर्ण हलदी जैसा पीला भूका होता है, मात्रा ५ से २० ग्रेन चायकी मात्रा १ सें २ औंस एकस्ट्राकट याने घनकी मात्रा ५ से २० ग्रेन अर्ककी मात्रा १ से २ द्राम जुलाब वास्ते ४ सें ८ द्राम ग्रेगरी पाउडर रुवार्बका चूर्ण २ औंस हलका मेगनिस्या ६ औंस सूठ १ औंस इन तीनोंका वारीक चूर्ण मात्रा १० से ६० ग्रेन उसके गोलीकी मात्रा ५ से १० ग्रेन

(४३६ रेज़ीन)–देशी नाम राल ग्राही रोपण तथा उत्तेजक है, इसका मुख्य उपयोग मलमतरीके होता है, रालका मलम ८ औंस राल ४ औंस पीलामोंम १६ औंस सादा मलम दो औंस विदामका तेल गरमकर मिलाके मलम करना घाव फोडेपर पट्टी मारे जाती है

(४३७ लाइम)–देशी नाम कलीचूना अम्लविरोधी ग्राही तथा दाहक है, दवाके वास्ते १ रत्तल चूनेके पत्थरपर आसरे १० औंस पाणी धीमें २ डालना जन वराल वाफ निकल चूके ठंढाभये वाद छाणकर हवा न लागे इसतरे सीसीमें रखणा दवामें

(४४८ साइट्रीक एसिड) ये एसिड नींबूके रससें बणता है, गुण शीतल अम बुखार उलटी तृषा पित्त और उष्ण वायुपर दिये जाता है, क्षारके योगमें वापरते है साइट्रीक एसिडके एवजीमें नींबू काम दे सकता है

(४४९ सालसापरिला) एकतरेके दरख्तकी जडकी छाल है, वो अमेरिकामें आती है. अपणे देशमें अनत मूल अथवा सारिवा उसवे नामकी दवामें जो गुण है, व गुण इसमे हैं गुणमें शोधक स्वेदल पाचक पौष्टिक है उपदंश खून बिगाड संधिवा तथा नाताकतीमे वापरते हैं. उसका एकस्ट्राकट तथा डिकोकशन (काथ) दवा तरी उपयोगमें लेते हैं, मात्रा २ से १० औंस

(४५० साल एमोन्याक) (क्लोराइड ओफ एमोनिया) देशी नाम नो साद देखो अेमोनिया.

(४५१ साल वोलेटाईल) (एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनियां) देखो एमोनिया.

(४५२ सिंकोना) सिंकोना पहली अमेरिकासे आताथा अब इहां पैदा होणेलगा इसवास्ते देशी दवामें लिखा है, पीछाडी देखो चाकाथ पतला घन टिंकचर वगेरे रूपसें वापरते हैं, मात्रा–टिंकचर की०॥ से २ ड्राम प्रवाही घनकी १ से २ औंस.

(४५३ सिडलिज पाउडर) सोडा तथा दुसरी कितनीक मिलावटसे ये चूर्ण बणता है, टार्ट रेटेड सोडा २ ड्राम और सोडा बाइ कार्बोनस ४० ग्रेन दोनोंको मिलाणा और टार्टरिक एसिड ३० ग्रेणकी पुडी जुदी रखणी दोनोंको जुदे २ जलमें गालकर पीछे दोनोको एक जगे मिलाणेसे उफाण आवे सो झट पी जाणा

(४५४ सीला) (स्कवील) एक तरेका कद हे कफघ्न मूत्रल चूर्ण टिंकचर तथा शरबत रूपसें बापरते है, मात्रा चूर्णकी १ से ३ ग्रेन टिंकचरकी १० से ३० बूद शरबत की० ॥ से २ ड्राम.

(४५५ सेन्टोनीन) एक तरेके दरख्तके फूलमेसें रुसियामें बणती है, मुख्य गुण कृमिघ्न है, मात्रा २ से ६ ग्रेण बूरेके संग मिलाकर देतेहैं अथवा उसकी जुदी २ टिकडिया वणकर आती है सो खिलातेहैं सेन्टो नाइनसें पेटमें कृमी नहीं रहती लेकिन् उनोंकों पेटसें बाहर निकालणेकू दुसरे दिन दस्तकी दवा देणी गोल चूरणियोंका पूरा इलाज है, सेन्टोनाइन लोझेन्जीस नामकी टिकडिया बजारमें विकती है उमर मुजब १ से ६ दिये जाती है, इसमें केलोमेलकी मिली भईमी टिकडिया आती है उससे दूसरे जुलाबकी जरूरी नहीं रहती इस दवासें कृमिया मिट तो जाती हे लेकिन् आइदेसे पैदा होती बध नही होती कृमिका काथ वगेरे कितनीक देशी कृमिहर दवायों ये काम करती है उसका फायदा बहुत है, लेकिन् वो लेती वखत मुस्किलहे ओर ये टिकडियां बूरेकी बनावट होणेसें बचे सहजमें खा सकते हैं.

(४५७ सेना) देशीनाम सोनामुखी) सोनामुखी रेचक है, इसका जुलाब सादा और निडर होणेंसें बच्चे बुढ्ढे गर्भणी स्त्री और नाजुक प्रकृतिवालेकू अच्छा है सोनामुखी-की चा–१ औंस सोनामुखीके पत्ते और ३० ग्रेन सूठ दोनोंको १० औंस ऊकलते जलमें डाल एक घटाभर भिगाकर छाणकर लेणा मात्रा–१ से २ औंस इस चामे दूध मिलाकर पीणेसें सोनामुखीकी मकचो नहीं आती बच्चेकू देणेवास्ते एक छोटा चमचा अथवा १ ड्राम सोनायके पत्ते ऊकलता पाणी ४ औंस दस मिनट ऊकालकर एक प्यालेमें निकाल जरा बूरा मिलाकर बच्चेकू भूखे पेट फजरमे देणा ये जुलाब तीन वर्षकी ऊमर बाद देणा

(४५७ सोडा) सोडेकी बहुत बनावट है सो थोडी नीचे लिखते हैं

(१) कारबोनेट ओफ सोडा) (साजीखार) अम्लविरोधी शोधक अस्मरीघ्न आम्लपित्त अजीर्ण गोला पैसाबकी पथरी चूक उलटी सविवाय तथा चमडीके रोगोंमें फायदा करता है, मात्रा १० से ३० ग्रेण.

(२) बाई कारबोनेट ओफ सोडा) गुण ऊपर मुजब मात्रा १० से ६० ग्रेण.

(३) सोल्युशन ओफ सोडा) गुण उपर मु० मात्रा० ॥ से १ ड्राम

(४) सोडावाटर) शीतल मूत्रल पाचक सारऊ सोडा तथा ॲसिड टार्टरिककी मि-लावटसे बणती है प्रमाण $\frac{१}{२}$ ड्राम और २५ ग्रेण अनुक्रमे देते हैं

(५) सल्फेट ओफ सोडा) रेचक आम्ल विरोधी और थोडा मूत्रल मात्रा १ से ८ ड्राम ७ एपसम सोल्टके जैसा उसका फायदा है जादातर जुलाबवास्ते देते है, लेकिन् एपसम सोल्टसे ये दवा मद रेचक होनेसें नाताकत मिजाजवालोंकों जादा माफगत आता है

(६) फासफेट ओफ सोडा) रेचक मात्रा । से १ औंस

(७) हाइपो फोसफेट ओफ सोडा) पौष्टिक तथा शोधक क्षय अशक्ति बादी मिरगी हाफणी दम श्वास वगैरेमें मात्रा ५ से १० ग्रेन

(८) क्लोराइड ओफ सोडा) (निमक) रेचक तथा कृमिघ्न है दुसरी दवायें बणाणेमे काम देती हैं

(४५८) हाइड्रोक्लोरिक एसिड) म्युरीयाटिक एसिड) निमकका तेजाब निमकसे बणता है दाहक तथा बहोत जहरी है उसमे तिगुणा पानी मिलानेसें म्युरियाटिक एसिड डिल्युट होता है ये प्रवाही पौष्टिक तथा खून शोधक है अजीर्ण नाताकतीपर देते है, मात्रा १० से ३० बूंद

(४५९ हाइड्रोस्पानिक ॲसिड (डिल्युट) हालाहल जहर है एक मिन्टमें मारताहै अजीर्ण उलटी आम्लपित्त खासी वगैरेपर देते हैं मात्रा १० से ३० बूंद

(४६० हाइपो फोसफेट ओफ लाईम) शोधक तथा पौष्टक है, खासी क्षय और नाताकती वगैरे दरदोंपर ये दवा वहोत अछी निकली है और शरबतके जेसा स्व होणेसें पीणास० मात्रा ५ से १० ग्रेण.

रेचक तथा सारक.

४६१ पोडोफाइलम $\frac{1}{2}$ ग्रेण कम्पाउन्डरुबार्बपिल २॥ ग्रेण हायोस्यामसका अेकस्ट्र कट १॥ ग्रेण अछीतरे मिलाकर १ गोली करणी रातकू लेणी जो साफ दस्त नहीं तो फजरमें लेणी अथवा दस्तके खुलासा वास्ते न० ४६३ की दवा अथवा साइ ओफ मेगनीशीया या सिडलीक पाउडर लेते हैं.

जुलाबकी एसी एकभी दवा अभीतक नहीं निकली है सो सब अदम्योंकें उपयोग होय ऊपर लिखी गोली अछा जुलाव है सबकू अछी है एसा नही है लेकिन् दस्त खुलासा वास्ते ये गोली अछीहै एसा कह सकते हैं

(४६२) सल्फेट ओफ सोडा ६ ड्राम टिंकचर ओफ जींजर २० बूंद डिस्टील वोटर २ औंस मिलाकर एक वखत पीणा इससे दस्त साफ आता है, रातकू लेकर फजरमें फेर लेणेसें मदत करती है जलदी दस्त लाणा होय तो ४ घटेसे फेर लेणा सल्फे ओफ सोडेकू कमवेशी कर सकते हैं.

(४६३) सल्फेट ओफ सोडा ६ ड्राम किनाइन २० ग्रेण सल्फेट ओफ आयर्न १५ ग्रेण पाणी ८ ओस मिलाकर तइयार करणा मात्रा १ औंस दर ४ चार घंटे वदनमें ताकत रखकर दस्त लाती है तिली तथा ऋतु बधके रोगवाली स्त्रीकू अछी है.

(४६३) सल्फेट ओफ सोडा ६ ड्राम डिल्युट सल्फ्युरिक अेसिड १ ड्राम गुलाबके फूलकी चा ८ औंस मिलाकर मात्रा १ औंस दर ४ घटे ग्राही शीतल शारक गर्भ गिरणा ऋतूका जादा खून गिरणा बहोत खून गिरणेके रोगोमें फायदेवंद हैं

(४६५) सल्फेट ओफ मेग्निस्या ६ ड्राम टिंकचर ओफ डिजी टेलिस ८ बूद केम्फोर मिकश्चर २ औंस मिलाकर एक वखतमें पीणा दस्त साफ लाताहै खून गिरणेकू बघ करता है दस्तकी कबजीका दम भगजपर खून चढणेके रोगमें अछा है.

(४६६) बाइ कारबोनेट ओफ मेग्निस्या १० ग्रेण बाइ कारबोनेट ओफ सोडा ८ ग्रेण केम्पाउन्ड सेनामिकश्चर १ औंस एक वखत पीणा अम्लविरोधी सारक है अजीर्ण लिवरके रोगमें फायदेवद है.

(४६७) पोडो फाइलम पाउडर ४ ग्रेण डिल्युटना इट्रिक अेसिड २ ड्राम पाणी ३॥ औंस मिलाकर मिकश्चर वणाणा मात्रा १ वाइन ग्लास पाणीमें १ ड्राम मिकश्चर दिनमें तीन वेर लेणा लीवरमें फायदेवद है.

(४६८) ल्युपील ५ ग्रेन केलोमेल ५ ग्रेन मिलाकर २ गोलियां करणी सख्त दस्त लाता है.

(४६९) ल्युपील ५ ग्रेन कम्पाउन्ड अेकस्ट्राक ट ओफ कोलोसिन्थ ५ ग्रेण मिलाकर दो गोलियां करणी मध्यम जुलाव लगाता है

(४७०) कम्पाउन्ड अेकस्ट्राकट ओफ कोलोसिन्थ ५ ग्रेण कम्पाउन्डरुवार्बपिल ५ ग्रेण मिलाकर दो गोलियां करणी हलका जुलाव होता है

(४७१) केलोमेल ५ ग्रेण कम्पाउन्ड जालप पाउडर १ ड्राम मिलाकर फाकी करणी सख्त जुलाव पाणी जेसा दस्त लाता है.

(४७२) पोडो फाइलम चूर्ण ३ ग्रेण कम्पाउन्ड एकस्ट्राकट कोलोसिन्थ ३० ग्रेण आइ पीकाक्यू आन्हा पाउडर ४ ग्रेण गूदके जलमे घोट १२ गोलियां करणी एकेक गोली दिनमें दो वेर कलेजेके रोगमें कबजियतमें दस्त खुलास लाता है

(४७३) पिलएलोझ अेन्ड मई ३ ग्रेण ल्युपील १ ग्रेण अेकस्ट्राकट टाराक साकम २ ग्रेण अेकस्ट्राकट ट्रेमोनियम (धतूरा) ½ ग्रेण अछीतरे मिलाकर दो गोली करणी ये गोलिया दमके रोगमें फायदेमंद है

(४७४) सल्फेट ओफ आयर्न १ स्कुपल अेलियेका सत्व १५ ग्रेण रुनाबंका चूर्ण १ स्कुपल अछीतरे मिलाकर १२ गोलियें करणी मात्रा २ दो गोली नाताकत और कबजियतमें दस्त साफ लाणेवाली है.

(४७५) रुबार्ब चूर्ण १ औंस सूठका चूर्ण ½ औंस कारबोनेट ओफमेग्निस्या ३ औंस अछीतरे मिलाकर फकी करणी इसकू ग्रेगरी पाउडर कहते हैं, मात्रा ½ ड्रामसे २ ड्राम पेपरमिंटके पाणीसें देणा

अजीर्ण और होजरीके खटासमें होजरीके खुलासावास्ते ये चूर्ण अछा है, दो तीन वरसके बचोकोंभी १० से १२ ग्रेन देनेसें हलका जुलाव

वदनमे ताकत देनेवाली.

जो दवा वदनमें कौवत तथा जोर लावै उसकू टोनिक कहते हैं इसतरेकी मिलावटी दवायें वदनमें क्षीणता लाणेवाले रोगोंमे और कमजोरीमें दिये जाती है स्टिम्युलट दवाये जिसमें इथर और आल्को होलका मुख्यतत्व होता है उससे टोनिक दवायें जुदीही समझणी

(४७६) किनाइन २४ ग्रेन शेरीवाइन २ औंस डिस्टीलड वोटर ८ औंस मिकश्चर करणा मात्रा—दिनमें तीन वखत लेना एकेक औंस

(४७७) किनाइन २४ ग्रेन नींबूकारस २ ड्राम डिस्टीलड वोटर ८ औंस मिलाकर मिकश्चर तैयार करणा मात्रा दर वखत एकेक औंस दिनमें तीन वखत

(४७८) आइसींग्लास २ ड्राम मिश्री ब्रांडी १ औंस शेरी २ औंस जायफल चिपटी ऊकलता जल ४ औंस मिलाकर एक वखत पीजाणा अतिसारके दस्तों फायदा देता है.

(४७९) किनाइन २० ग्रेन डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड १ ड्राम टिंकचर ओफ जींजर $\frac{1}{2}$ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस मिकश्चर वणाणा मात्रा दर तीन २ चार २ कलाकसें एकेक औंस

(४८०) साइट्रेट ओफ आर्यर्न एन्ड किनाइन रस्कुपल डिस्टीलड वोटर ८ औंस दर तीन २ चार २ घटेसें एकेक औंस दवा पीणी फेर मू धोकर साफ करना.

(४८१) टिंकचर ओफ आयर्न [स्टीलवाइन] २ ड्राम डिस्टील्डवोटर ८ औंस पांडु तथा नाताकतीवास्ते मात्रा दर तीन घटेसें एकेक औंस दवा पीकर मू धोणा

टिंकचर ओफ आयर्नका स्वाद नहिं अछा लगे तो उसकी एवजीमें कारबोनेट ओफ आयर्न लेना मात्रा ५ से १० ग्रेन पाणीमें पीये अथवा बूरेकेसग फकीभी लीजाती है.

(४८२) डाइल्युट नाइट्रिक एसिड २ ड्राम आदेका अर्क १ ड्राम पाणी अथवा नारंगीकी छालकी चा ८ औंस मिकश्चर करणा दिनमें तीनवेर एकेक औंस लेणा मरोडा बुखारके पीछेकी नाताकतीमे टोनिक तरीके वापरणा

(४८३) सल्फेट ओफ आयर्न ९ ग्रेन सल्फेट ओफ किनाइन १२ ग्रेन डाइल्युट-सल्फ्युरिक एसिड १ ड्राम सल्फेट ओफ सोडा १ औंस मिश्री २ ड्राम डिस्टील्ड वोटर १२ औंस मिकश्चर करणा दिनमें दो तीनवेर एकेक औंस पीणा कलेजा तथा स्पलीन (तिली) के रोगमें दस्त साफ लाकर ताकत वढाता है.

(४८४) सीरप आयोडाइड ओफ आयर्न १ औंस २ औंस जलमें त्रीस बूद डालकर हमेस तीन वखत पीणा

कफकूं तोडणेवाली श्वासनलीकूं फायदेवंद.

जो दवायों फेफसेमें जानेवाली श्वासनलीके अंदरके अस्तरपर तैसें कितनेक दरजे बदनके सामान्य बधेजपर असर करके कफ श्लेषम खासी हाफणी और दमके रोगोमें फेफसेमें जाणेवाली नलियो और फेफसेमें जानेवाला रसका रस्ता खुला करता है, उसकू एक्सपेक्टोरन्ट कहते है, वो दो जातकी है, स्टिम्युलेटींग और डिप्रेसींग अर्थात् जुस्सेकू बधाने वाली, जुस्सेकू कम करनेवाली पहिले प्रकारकी दवामें एमोनिया ईथर स्किवल्स ओपीयम वगेरे है, और दुसरी दवामे टारटर एमेटिक और आइपिकाक्युआन्हा है, पहिले प्रकारकी दवाये मुख्यपणे करके वडी ऊमरके रोगीयोंके श्वासनलीके रोगोपर और दुसरे प्रकारकी दवाये छोटी ऊमरके रोगियोंकू दी जाती है

(४८५) एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया २ ड्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रिक

इथर ४ ड्राम टिंक्चर ओफ जींजर १ ड्राम पाणी ५॥ औंस मिकश्चर करणा उसमेंसे दर दो तीन घटेसें एकेक औंस पीणा दमके जोरमें पुराणी हांफणीमें

(४८६) पेरेगोरिक ३ ड्राम आइपीकाक्यु आन्हा वाईन २ ड्राम स्पिरिट नाइट्रिक इथर ३ ड्राम पाणी ७ औंस मात्रा १ औंस दर तीन या चार घटेके फासलेसें कफ श्वास-नली और फेफसेमें फायदा करता है बच्चोंका कफ खास हांपणी फेफसेका वरम वायु नलीकें सोजेके सरुआतमें वो थोडी मात्रा देते हैं, एक वर्षके बच्चेकू १ ड्राम दो वर्षकू १॥ ड्राम देते हैं.

(४८७) केम्फोर (कपूर) १ ग्रेण आइपीकाक्यु आन्हा चूर्ण ३ ग्रेन जरा गूदके पाणीसें छोटी १ गोली करणी दमके रोगमें दर दो दो घटेसे लेणा

(४८८) टार्टर एमेटिक १ ग्रेण पेरोगोरिक २ ड्राम डिस्टीलकरा ऊकलता पाणी १२ औंस मिलाकर ठरणे देणा दर दो या तीन घटेसे एकेक औंस पीणा हाफणी फेफ-सेका सोजा फेफसेके पुडका सोजा कठ नलीके सोजेमें फायदा करता है

(४८९) पेरोगोरिक ३ ड्राम आइपीकाक्युआन्हावाइन २ ड्राम टिकचर शीला बाइकारबोनेट ओफ सोडा २ स्कुपल पाणी ८ औंस इन सबोंकू मिलाकर दर दो या तीन घटेसे एकेक औंस पीणा श्लेपम हांफणी और खासकरके उसकेसग जब अजीर्ण और होजरीमें खट्टापणा बढे तब ये बहोत फायदा करती है, बचोकों भी ये फायदा करती है.

(४९०) कारबोनेट ओफ मेगनिस्या २५ ग्रेन पेपरमिटका तेल २ बूंद डिस्टील्ड वोटर १ औंस मात्रा १ ड्राम दिनमें तीन या चार वखत खुलखुलिया खासीमे १ से २ वर्षके बच्चेकू दवा निकालती वखत सीसी हलानी.

(४९१) सल्फेट ओफ झींक २ ग्रेन पेरेगोरिक ६० बूंद पाणी १॥ औंस मात्रा एकसे दो वरसके बच्चेकू खुलखुलिये खासीमें १ ड्राम दर चार २ घटेसे

(४९२) एकस्ट्राकट ओफ कोनायम ३ ग्रेन डिस्टील्ड वोटर १॥ औंस ऊपर मुजब देना

धीरे २ फायदा करनेवाली

जो दवायें खूनकी स्थितिमे फेरफार करनेवास्ते अथवा कलेजा और आतरडोके रसोकी स्थिती बदलनेवास्ते जादा या कम मात्रामें बहोत मुदततक देनेमे आती है, वो ओल्टरेटिव्स कहाती है, नीचे लिखते हैं

(४९३) डोवर्स पाउडर १० ग्रेन किनाइन ३ ग्रेन आइपीकाक्यु आन्हापाउडर १ ग्रेन फक्की बनानी सोते वखत लेनी दस्त मरोडा कलेजेके रोगोमे दिये जाता है, जो उलटी अथवा बेचेनी होय तो तीसरी दवा निकाल फकत दोयही देनी

(४९४) डोवर्स पाउडर ४ ग्रेन किनाइन ३ ग्रेन ये चूर्ण तीन बखत दिनमें देना गुण ऊपर मुजब.

(४९५) आइपीकाक्युआन्हा १ ग्रेन डोवर्स पाउडर २ ग्रेन कीनाइन १ ग्रेण दो वर्षके बच्चेकों फजर सांझ लिखे मुजब मात्रा देनी एक वर्षके बच्चेकू आधी मात्रा ६ महीने वालेकूं चोथा हिस्सा बुखार दस्तमें

(४९६) लाइमवोटर २ कोटर्स पाणीमें एक औंस कली चूना धरना थोडे घटे रखकर ऊपर नीतरा साफ जल होय उसकू लाइम वाटर कहते हैं, मात्रा १ से ३ औंस बच्चेके दांत आते अतीसार मरोडा अपचा हेजेमे देते हैं. बच्चेकू हमेस खुराकके संग बहोत वेर देते हैं.

(४९७) बाइकारबोनेट ओफमेगनिस्या १५ ग्रेन एनीसिड ओइल २ बूंद डिस्टी-ल्डबोटर १॥ औंस चरवी अथवा वादीवाले बच्चेकुं ६ से १२ महीनेकी ऊमरतक १ ड्राम ६ महीनेसें छोटे बच्चोंकूं ॥ ड्राम गर्भनीके बेमारीमे एक वखत सब देनी

(४९८) केलोमेल २ ग्रेण अफीमका सत्व ¼ ग्रेण दोनो मिलाकर एक गोली क-रणी मात्रा तीन चार घटेके फासलेसें एकेक गोली सखत सोजेका रोग होय जब वदनमें पारेकी जरूरत पडे तब थे गोली देते है, इससें मू आता है

(४९९) ब्ल्यु पिल्स २ ग्रेण एक स्ट्राकट ओपियम आइपीकाक्यु आन्हा पाउडर ¾ ग्रेण मिलाकर इसकी गोली वणाणी एसी १ गोली दर तीन ३ घंटेसे देणी मरोडेमें तथा सख्त अतिसारमें फायदे बंद है

(५००) आयोडाइट ओफ पोटाशीयम १ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस उपदंशके रोगमे दिनकों तीन वखत हर वखत १ औंस

(५०१) ब्रोमाइड ओफ पोटाश्यम १ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस हिचकी तथा वाइमे दी जाती है मात्रा १ औंस दिनमें तीनवेर ऊपरकी दो यादीमें दो पोटाश आयो-डाईड और ब्रोमाइड लिखाहै, दोनोकू कैइयकदिन कितनेक अठवाडियेतक बहोतसा पेटमें लेणेंसें शिरमें शरदी पैदा होती है गला आजाता है. और वदनपर छोटी २ फुन-सिये फूटकर निकलती है एसी हालत वणे तब दवा बधकर देणी.

(५०२) रुबार्वका चूर्ण १ स्कुपल सल्फेट ओफ सोडा १ स्कुपल एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया ½ ड्राम पेपरमेंट ओइल १ वूद पाणी २ औंस इन सबोंकों मिलाकर एकही वखत ले लेणा होजरीमें खटास भया होय अथवा गर्भावस्थामे उलटी होयतो देतेहैं.

(५०३) सोल्युशन ओफ पोटाश १ ड्राम टिंकचर हायोस्पामस २ ड्राम टिंकचर सींकोना २ ड्राम इन्फयुझन बुकु ६ औंस मूत्राशयके पुराणे मरजमें देते है मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत.

(५०४) टार्टरिक (साइट्रिक) एसिड २ ड्राम एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया २ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस मिलाकर उफाण आवे उसकू बैठणे देणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीनवेर रक्तपित्तके रोगमें देणा

(५०५) वाइकारबोनेट ओफ सोडा २ ड्राम कोलचीकमबाईन २ ड्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर २ ड्राम डिस्टील्डवोटर ६ औंस मिकश्चर तइयार करणा एकेक औंस दिनमे तीन वखत पीणा नजला तथा संधिवायुमे देते हैं

(५०६) वाईकारवोनेट ओफ सोडा २ ड्राम टींकचर रुबार्ब ०॥ औंस टिंकचर जींजर १ ड्राम स्पिरिट क्लोरो फोर्म १ ड्राम डिस्टील्डवोटर ६ औंस मिकश्चर तइयार करणा मात्रा दिनमें तीन वखत एकेक औंस कामला रोगमें देणा

(५०७) एकस्ट्राकट ओफ टारकसाकम २ ड्राम डाइल्युट म्युरी आटि एसिड १ ड्राम ईन्फयुझन ओफ जनश्यन ८ औंस तीनोंकों मिलाणा मात्रा एकेक औंस दिनमे तीन वखत सीसी हिलाकर दवा निकालणी पाडू तथा लीवरके दुसरे विकारमें उपयोगी है.

(५०८) डाईल्युट नाइट्रिक एसिड १ ड्राम डाईल्युटम्युरी एटिक एसिड १ ड्राम टिंकचर ओफ जींजर १ ड्राम डिस्टील्डयोटर ८ औंस मिलाकर तइयार करणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत कलेजेके रोगमें उपयोगी है ये दवा पीकर मू धोडालणा

(५०९) वाईकारवोनेट ओफ पोटाश १ ड्राम नाइट्रेट ओफ पोटास ०॥ ड्राम टिंकर ओफ जींजर १ ड्राम डिस्टील्डबोटर ८ औंस एकेक औंस दिनमें तीन वखत ये मिलावट चमडीके रोगमे बाहर लोशन तरीके लगाणेमें वापरते हैं

(५१०) वाइकारबोनेट ओफ पोटास १ ड्राम नाइटेट ओफ पोटाश ०॥ ड्राम टिंकचर ओफ जींजर १ ड्राम डिस्टील्डबोटर ८ औंस मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत अपचा तथा संधिवायुमें जब पैसाव बहोत थोडा उतरे तथा बहोत लाल उतरे तब ये उपयोगी है

(५११) वाइकारबोनेट ओफ पोटाश २० ग्रेण साइट्रीक एसिड १४ ग्रेण पाणी २ औंस पाणींमे पहली दवाकू मिलाकर पीछे पीते वखत दुसरी दवा मिलाकर पीजाणा होजरीका खटास मिटाती है

(५१२) वाईकारबोनेट ओफ सोडा १७ ग्रेण साइट्रिक एसिड १४ ग्रेण पाणी २ औंस सोडावाटर उपयोग ऊपर मुजब

(५१३) वाईकारवोनेट ओफ सोडा २ ड्राम टार्टरिक एसिड १ ड्राम पाणी ८ औंस जलमे २ ड्राम सोडेकूं पिघलाकर शीशीमें भरके रखणा ४ औंस जलमें १ ड्राम एसिड मिलाकर दुसरी शीशीमे भरडालणा मात्रा एक औंस सोडा मिकश्चर और ०॥ औंस एसिड मिकश्चर दोनोंकों मिलाकर पीणा बुखार तथा गर्भणीके उलटी वगेरे रोगोमे फायदेमंद है.

(५१४) सोडामिकश्चर १ औंस क्लोरो फोर्म २० बूद ऊपर लिखे मुजब तइयार किया भया सोडा मिकश्चरमें क्लोरा फोर्म मिलाणा इसकूं पीते वखत हिलाणा गर्भणीके रोगमें बदहजमीमें और दरियावकी मुसाफरीमें उलटी होती है उसमें बहुत उपयोगी है

स्तंभनदवायें.

जो दवाये शरीरके जुदे २ भागोपर असर करके रसोत्पादक क्रियाकूं कम करती है तथा खून वहणेवाली नसोके मूकू संकोच खूनके प्रवाहकू बंध करती है वोजातकी एस्ट्रीन्जन्टस कहते हैं आयर्न एलम लेड गेलिक एसिड चोक ओपीयम ये सब इस वर्गकी दवायों है.

(५१५) एलम (फिटकडी) का भूका १ ड्राम डिस्टीलडवोटर ८ औंस पाणीमे फिटकडीकूं मिलाकर उसमेंसें दर ४ घटेसें एकेक औंस पीणा गर्भगिरता और फेफसेके रक्त गिरणेमें उपयोगी है रक्त प्रदर पुराणे मरोडेमें फायदेवंद है.

(५१६) डाइल्युटसल्फ्युरिक एसिड १॥ ड्राम टिंकचर ओफ जींजर १ ड्राम पाणी ८ औंस मिलाकर दर चार २ घंटेसे एकेक औंस पीणा गर्भश्राव फेफसेका खून गिरणा में फायदेवद है पीकर मू साफ धोडालणा.

(५१७) एसटेड ओफ लेड ३ ग्रेण टिंकचर ओपियम ५ बूद डिस्टीलडवोटर १॥ औंस मिलाकर एक वखत पीणा इतने प्रमाण तीन २ घंटेसें लेणा फेफसेमेंसे खून गिरे उसमें देते हैं

(५१८) डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड २५ बूद टिंकचर ओपियम ८ बूंद पाणी १ औंस हरवखत इस वजनसें दिनमें तीन वेर पीणा फेफसेमेंसें तथा होजरीमेसें खून गिरता होय मरोडेके खून गिरणेमें देते हैं १ वर्षके बच्चेकूं इस मिलावटमेंसे १ ड्राम देणा.

(५१९) गलिक ऑसिड ५ ग्रेण पाणी २ औंस दरवखत इस वजन मुजब दिनमे तीनवखत लेणा फेफसेका खून गिरणा होजरीका खून गिरणा रक्तपित्त अतिसार और मरोडेमे फायदेवद है.

(५२०) एसेटेट ओफ लेड ३ ग्रेण एकस्ट्राकट ओपियम $\frac{1}{2}$ ग्रेण मिलाकर एक गोली करणी एसी एकेक गोली दिनमें तीन वखत लेणी कोईभी तरेसें खून गिरणेमें अतिसार तथा मरोडेमें फायदेवंद है

(५२१) पल्वीसक्रीटा एरोमेटिककम ओपियम ५ ग्रेण बाइकारबोनेट ओफ सोडा १ ग्रेण एलम (फिटकडी) का भूका $\frac{2}{3}$ ग्रेण तीनोकी १ पुडी करणी बच्चोके अतिसार तथा मरोडेमें फायदेवद है मात्रा १॥ सें २ वरसके बच्चेकू ७ ग्रेण १ व रसवालेकू ३॥ ग्रेण ६ महीनेकू १॥ ग्रेण.

(५२२) अफीमका सत्व ॥ ग्रेण चोक २४ ग्रेण- मिश्री २४ ग्रेण और ६ महीने- तक ½ पुडी दर एक पुडी अठीतरे मिलाकर १२ पुडी करणी मात्रा १ वरसके बचेकूं एक २ पुडी चार २ घटेसे एक वरसके अदर ½ पुडीमे 1/24 ग्रेण अफीम आता है बच्चोंका मरोडा तथा अतीसारमे फायदेबद है

उत्तेजक तथा शांत दवायोंका योग.

जिस दवायोके योगसें शरीरमें जाग्रती होकर रोग शांतपडे एसी दवायोंका ऊपर लिखासो नाम है, जिस रोगके शरीरकी पीडाके सग मूर्छांके अथवा नाताकती मालमपडे उस रोगमें ये दवायें दी जाती है, एसे रोगोंमे अतिसार हैजा आंकसी दरदके सग ऋतु धर्म आणा और अजीर्ण (डिस्पेपस्पा) के कितनेकोंका समावेश होता है.

(५२३) क्लोरोफोर्म १ ड्राम एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया १ ड्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रीक इथर १ ड्राम ब्रांडी १ औंस चारोंकों मिलाणा मात्रा १ प्याले जलमे १ ड्राम मिली दवा लेकर पीणी छ महीनेके वच्चोकू ३ से ४ बूद १ वरस वालेकू ६ से ७ बूद २ वर्षके वचेकूं १० से १२ बूद थोडे जलके सग अतिसार तथा मरोडा इस दवाकू मजबूत बुचकी शीशीमें भरके रखणी और लेती वखत शीशीकू हिलाणी

(५२४ क्लोरोफोर्म १ ड्राम एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया १ ड्राम क्लोरोडाइन २ ड्राम ब्राडी १ औंस मात्रा एकेक चिमचाभर दवा चहिये जितने पाणीमें पीते बहोत सखतपणा नहीं मालम पडे इतना पाणी डालणा उपयोग ऊपरकी मिलावटमुजब

(५२५) चोक १ ड्राम एरोमेटिक् स्पिरिट ओफ एमोनिया २ ड्राम टिंकचर ओपि- यम ४० बूद केम्फर मिकश्चर ८ औंस मिलाकर मिकश्चर तइयार करणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत अजीर्ण तथा अतिसारमें उपयोगी है

(५२६) बेन्झोइक एसिड १ ड्राम कारबोनेट ओफ एमोनिया १ ड्राम पाणी ८ औंस मात्रा एकेक औंस दिनमे तीन वखत कितनीक तरेके सधिवात मूत्राशयके कित- नेक विकारोंमें उपयोगी है

(५२७) एकस्ट्राकट कोनायम ३ ग्रेण एकस्ट्राकट हेम्प (गाजा) ½ ग्रेण कें- म्फर (कपूर) १ ग्रेण इन तीनोंकी गोली करणी एकेक गोली दिनमें तीन वखत लेणी दम तथा आकसीके सग हांफणीमे देते हैं.

पिसाव लाणेवाली मिलावटी दवा.

जो मिलावटी दवायें मूत्राशय और मूत्रके रस्तेपर असर करके पैसावके जत्थेकू व- ढाती है, वो डायुरेटिक्स कहाती है, जुदे २ जलोदरमें ये दवायें बहुत उपयोगी है, बुखार सधिवाय नजला और अजीर्ण जिसमें पेशाव थोडा और लाल ऊतरता है, एसे

रोगोंमेंभी फायदेवंद है, इस किसमकी दवायोंमें नाइट्रेट ओफ पोटाश स्पिरिट औ
नाइट्रिक इथर कोलशीकम वगेरे मुख्य है.

(५२८) नाइट्रेट ओफ पोटाश १ ड्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर २ ड्र
वाईन ओफ कोलशीका २ ड्राम पाणी ८ औंस चारोंकों मिलाणा मात्रा–एकेक औं
दिनमें तीन वखत दे, सधिवायुमें उपयोगी हे.

(५२९) नाइट्रेट ओफ पोटाश १० ग्रेण बाइकारबोनेट ओफ पोटाश १ स्कु
मिश्री २ ड्राम इनोंकी १ पुडी करणी एसी एकेक पुडी दिनमें तीन वेर जवके पाणी
संग लेणा.

(५३०) नाइट्रेट ओफ पोटाश २ स्कुपल स्पिरिट ओफ नाइट्रेक इथर २ ड्र
टिकचर ओफ केन्थारीडीस २ ड्राम पाणी ८ औंस चारोंकों मिलाणा मात्रा एकेक औं
दवा दिनमें तीन वखत हेजेमें जव पेसाव वध होय तव ये दवा देणी

नींद लाणेवाली दवा.

जो दवायें रोगकी पीडाकू कम करके नींद लाती है, उसकूं हीपनोटिकस कहते हैं
एसी दवायोंमें मुख्य ओपियम मोफर्या क्लोरल वगेरे है जादा मात्रामें ये सब दवाये ज
रहै इसवास्ते सावचेतीसें वरतणा.

(५३१) क्लोरल २० ग्रेण पाणी १॥ औंस इस वजनमुजब एक अथवा जा
वखत देणी.

कितनेक रोगोंमें अफीमके एवजीमें क्लोरल दिये जाता है, जो क्लोरलके २० ग्रे
नींद लाणेकू पूरी नहीं होय तो दरेक वखतमें पांच २ ग्रेणकु वढा २ कर आखर ४
ग्रेणतक मात्रा वढ शकती है, ५।१० ग्रेन जितनी मात्रामे क्लोरल नशोकों शांत करताहै
वो मिश्री तथा पाणीके सग दिये जाता है

(५३२) हाइड्रोक्लोरेट ओफ मोफर्या ½ ग्रेण रेक्टीफाइड स्पिरिट ओफ वाइन १
वूद पाणी १ औंस तीनोंकों मिलाकर एक वखत पीणा नींद लाणेकों सख्त, दवाकी
जरूरत पडे तव ये दवा देणी जव आंतरेमें कोइ हरकत होय अथवा धनुप वायके जोरमें.

उलटी कराणेवाली.

होजरीकू सकुडाकर उछाला तथा उलटीकू पेदाकर होजरीमेंकी चीजकू गलेसें वा-
हिर निकाले एसी दवाकू इमेटिक्स कहते हैं, साधारण वरतणेमें उलटीकी दवा आइ
पीकाक्युआन्हा टार्टर इमेटिक और सल्फेट ओफ झिंकहै उलटीकी क्रियाका जोर वढा-
णेकू गरम पाणी दिये जाता है, उलटीकी दवा लियेवाद उलटी खुलास नहीं होयतो
गलेमें पीछी फेरणी तव जोरसे कै होती है, राइ और और निमकसें भी उलटी हो
जाती है. वेर २ देणेसें दूसरी दवा नहीं मिले तव इसमेंकी जो चीज हाजर होय

उसकू उलटी लाणे वास्तै उपयोग करणा एक क्वोर्ट गरम जलमे अदाजन १॥ औंस निमक मिलाकर पीजाणा उलटीकी दवा मुख्य करके जहर खायेकू और गलेके रोगमे दी जातीहै किसी २ वखत बुखारमें पित्तकू निकालणेवास्तेभी उलटी दी जाती है टार्टरइमेटिककी उलटी लेंणेसे रोगी गभराज जाता है और मूर्छा आ जाती है इस वास्ते वहुत छोटी उमरमें वहुत वृद्धावस्थामें और वहुत ना ताकतमे इसका उपयोग बिलकुल नही करणा.

(५३३) राइका आटा टेवलस्पून फुलयाने ॥ औंस सादा निमक १ टीस्पूनफुलयाने १ ड्राम गरम पाणी १० सें १२ औंस एक वखतमे पीजाणेसें पाच मिनटमे उलटी होगी.

स्थानिक इलाज

स्थानिक इलाजोमे गरम पाणीकी वाफ पोल्टास ठंढे जलका भीगा कपडा दरद दबाणेका उपचार उत्तेजक उपचारस्तभक उपचार फफोला उठाणेवाला इलाज पिचकारीका समावेश हो सकता है

गरम उपचार.

(५३४ थूलीकी पोल्टीस)—शण अथवा फुलालीनकी कोथली वणाणी और आधी थूलीसे भरणी पीछे थूली भीज जाय इतना उकलता पाणी कोथलीपर डालणा थेलीका भीगासवाला भाग चूस लेणेकू उसकू जाडे कपडेके रुमालपर वरणी पीछे दुखती जगेपर उसकी पोटली गरम २ धर देणी उसपर सूका रुमाल लपेटना

(५३५) रोटकी पोरटीस—एक वासणमें १० औंस गरमकल २ ता पाणी डालणा पाणीमें मिले इतना रोटीका टुकडा डालणा और पांच मिनट भिगाये रखणा पीछे पाणीकू छाण लेणा भीगे टुकडोको शणके टुकडोपर धरके दरदकी जगेपर धरणा वहोतसे लोक इसके वदले गेहूके आटेकू वाफ करके उसकी पोल्टीस करते है वोभी एसाही गुण करती है

(५३६ अलशीकी पोल्टीस)—कूटीभई अलशी अथवा उसके आटेकू उकलते जलमें वाफकर उसकू गरमपाणीमे निकालकर कपडेके बीचमे देकर गरमागरम दुखते भागपर बांध देणा

(५३७ भीगाशेक—फुलालीनको एक कपडेका दो चार घडी कर उसकू गरम पाणीमे भिगाकर बाहिर निकाल न चोडकर वो कपडा रोगीसे सहाजाय एसा गरमागरम दुखती जगेपर धरणा और उसपर रुमाल लपेटणा दुसरा फुलालीनका टुकडा गरम पाणीका भिजाया तइयार रखणा अगला ठंडा पडाके तुरत निकालकर दुसरा कपडा उसपर गरम अगली तरे लगा देणा इसतेर शेक करते जाणा दरद जादा होयतो सादे पाणी[illegible] अफीमके डोडोंकू उकाल उसके पाणीमें भिगाकर शेक करणा.

(५३८ सूका शेक)–भीगे सेकके बदले कितनीक जगे सूका शेक करणेकी जरूरत पडती है फलालेणमें रेती इट थूली इसमेकी कोइभी एक चीज बांधकर उसकी दो कोथली अंगारेपर उंची धरकर गरम करके दरदकी जगे वारे फिरती शेक किया जाता है गरम करी भई इंट अथवा गरम पाणीसें भरी शीशी फलालेनके कपडेमे लपेट उसकाभी शेक किये जाता है इन्डिया रबर ब्याग याने रबरकी थेलीमें गरम पाणी भरके उसका शेक करणें-में आता है ये थेली तइयार मिलती है भीगाया सूका गरम शेक नुकशान करता नहीं शे-कसें शरीरका कोइभी भागमें खून कफ पित्तया वायुका जमाव भया होय तो वो बिखर जाता है.

ठंढा इलाज.

ठिकाणेके दरदमें पीप होणा सरू होय उसके पहली ठंढा इलाज फायदा करता है क्योंके वो पीप होणे नही देता लेकिन चोकस रोगमें पीप होणा सरू भयाया नहीं इस बातकूं नक्की करणा चाहिये लेकिन इस बातका नक्की करणा मुस्कल है ठढा भीगा वस्त्र धरणेसें जो रोगीकू ठंढकी कंपाणके संग बेचेनी मालम पडे तो समझणा के ठडा उप-चार नुकसान करेगा तब ठढा पोता नही धरणा ठढा उपचार नीचैमुजब करणा.

(५३९) सोराखार (नाइट्रेट ओफ पोटाश ½ औंस नवसार हाइड्रोक्लोरेट ओफ आमोनिया ½ औंस सादा निमक ½ औंस पाणी १२ औंस ठढे उपचारकी जरूर पडे तब इस मिलावटका उपयोग करणायाने शणका कपडा भिगाकर धरणा जो जादा ठंडककी जरूरत पडे तो पाणी वहोत थोडा लेणा लोशन कोरा पडे तब चोफेर जलमें भिगाकर धरणा अथवा ऊपरसें पाणी सींचणा.

एसेटेट ओफ लेड १ ड्राम रेक्टिफाइड स्पिरिट ओफ वाइन १ औंस पाणी १२ औंस प्रवाहीवणाणा और ऊपर लिखे प्रमाणे भीगा कपडा धरणा.

शांतिकारक इलाज.

(५४० पाणीका इलाज) शण अथवा लींटके कपडेकू दोलडाकर पाणीमें डूबाकर उसकू वोटरड्रेसिंग कहते है उसपर पाणी प्रवेश नहीं करे एसा तेलवाला रेशमी कपडा (गटापरचावाला) कपडा बांधना इस ड्रेसिंगकू दिनमें दो वखत बदलाणा दाह करणे वाला भरता भया घावपर ए इलाज बहुत अछा है पाणीमें कितनीक दवा डालकेभी ड्रे-सिंग करणेमें आता है ड्रेसिंग गरम तेसें ठढा दोनु तरेके पाणीका हो सकता हे

(५४१ सादा मलम) चरवी २ भाग आलिव्ह ओइल १ भाग पीला मोम ½ भाग एक तवेपर सब चीजोको पिघलाकर एकत्र करणा मलम ठढा पडे तहांतक हिलाणा ए मलम बहोत तरेसे वापरणेसे ओर पीछेसें उसमें दुसरीभी कीतनीक दवायें मिलाकर लगा-णेसे घावकू भरता है.

(५४२) अलशीका तेल और लोइम वाटर (चूणेका पाणी) समभाग मिलाकर

खूब हलाणा (एक गेलन पाणीमें ॥ सेर कलीचूना डालनेसें लाइमवोटर वणता है ए तेल जले भागकू अच्छा करणेमें वहुत फायदेवद है

(५४३ क्यालोमेल ३० ग्रेण व्याकाश–लाइमवोटर १० औंस शीशीमें भरकर हलाणेसें मिलकर लोशन वणता है गुप्त इन्द्रियका क्षत घावपर वहुत उपयोगी है उसका भीगा कपडा धरणा

(५४४) टिंकचर ओपियम १ द्राम टिंकचरएकोनाइट १ द्राम क्लोरोफोर्म १ द्राम सोपलीनीमेन्ट १॥ औंस इनोकों मिलाकर तेल लिनिमेन्ट वणाणा और उसपर झहर एसा नाम लिखणा चसकेके दरदपर ए लिनिमेन्ट लींट अथवा वादलीके टुकडेसे रगडणेसे दरदशांत होता है चमडीपर कोइ घाव या इजा होय तो मूमे अथवा बच्चोंके दरदमे इसका उपयोग करणा नहीं

एक छोटी शीशीके दो भागमें कपूरका भूका भरणा और खाली रखा भया भागमें रेक्टिफाइड स्पिरिट ओफ वाइन अथवा सल्फ्युरिकइथरसेभर देणा एक लकडीके नाके लींट अथवा वादलीका टुकडा बांध उससे इस प्रवाहीकु दुखते भागपर रगडणा एक मिंटमे दरद बध होता है ए जादा देर असर रहता नहीं

भेदक असर करणेवाला इलाज

मल्लम

(५४५) गधकका चूरा १ औंस नाइट्रेट ओफ पोटाश ॥ द्राम साबू अथवा ग्रिसराइन १ द्राम चरवी ४ औंस अगारपर चरबीकू पिघलाकर एक खरलमे बराबर मिलाणा ए मलम खुजलीका पक्का इलाज है

(५४६) टिंकचर ओपियम २ द्राम कारबोलिक एसिड २० ग्रेन चरवी १ औंस आलिव्ह ओइल १ औंस अगारपर पिघलाकर सब एकत्र करणा और ठंढा पडे जहांतक हिलाणा जखम (अल्सर्स) के वास्ते अछा इलाज है

(५४७) रेडआयोडाइड ओफ मर्क्युरी १६ ग्रेन चरवी ॥ औंस आलीव्ह ओइल ॥ औंस चरबी तथा तेलकू पिघलाकर एकत्र करणा पीछे आयोडाइड ओफ मर्क्युरी डाल खरलमें घोट मिलाणा वधी भइ तापतिल्ली रसकी गांठ (गल्याड) पर रगडणेसें अछा फायदा करती है

(५४८) मांजूफलका भूका ८० ग्रेन एकस्ट्राकट ओपियम ३० ग्रेन सादा मलम १ औंस एक खरलमें बराबर घोट मिला देणा हरसका मस्सा तथा खून गिरणेका अछा इलाज है

(५४९) एसेटेट ओफ लेड ३० ग्रेन सादा मलम १ औंस खरलमें बराबर मिलाणा रक्त पित्तके अलसरके वास्ते अछा मलम है

शरीरके स्नायुओ ढीले पडते हैं, रिदय (हार्ट) की वधी भई क्रियाका जोर नरम पडता है, उससें वधी भई नाडीका वेग भी हलका पडता है, और उससें अशक्ति और मूर्छा आती है, इसवास्ते गरम पाणीमें बैठाये भये अदमीकी शरीरकी स्थितिपर निगे रखकर और उसका शिर छाती तरफ नहीं झुकणे देणा पीठके तरफ झुकाये भये रखणा गरम पाणीमें रोगीकूं कितनी एक देर रखणा उसका निर्णय उसपर गरम वाफकी असर होणेपर आधार रखता है, जो असर जलदी होय और रोगीकूं मूर्छा आणे लगे तो उसकूं जलदी बाहिर निकालणा पाणीमेंसें निकालकर रोगीकू पूछकर कोरा करणा बिछोणेमें सुलाणा जो मूर्छा आई होयतो एसीही हालतमें सुलाकर पोंछकर सूका वदन करणा बच्चोंकी चमडीपर बाहरकी गरमी या ठढी जादा जलदी असर करती है, वास्ते उनोकों गरम पाणीमें बिठलाते या गरम शेक करते बहोत संभाल रखणी बहोतसे बच्चे जादा गरम वाफसे जलकर मरणेके दाखले बणते हैं, बच्चोंके वास्ते गरम बाफकी गरमी ९६ से ९८ डिग्रीसें जादा नहीं होणी चहिये.

बडी ऊमरके अदम्योंके आंकसीके संग बहोत दरद पेसावमें रेतीका जाणा मूत्राघात साधारण गांठ आंतरोका रुकणा और सधिवायुमें गरम पाणीमें बैठाणेमें आता है, और बच्चोंकों मुख्य पणे करके खेंचाताण हिचकी वायु नलीका वरम आंतरेमें दरद दांत आते वखतकी बेचैनी और बदनपर चरबी अथवा मेद वायुका चढणा वगेरे दरदोंमें गरम पाणीमें बैठाणा बहोत फायदाकारक होजाता है.

वदनके चमडीकू गरमी देणेकी दुसरी निर्भय और सहजरीत एसी है के एक ऊनकी धाबली अथवा कबलीकू गरमपाणीमें डुबाकर निचोडकर वो गरम २ वदनके लपेट लेण और उसपर सूकी कामली लपेटणी इसतरे २० मिनटतक ढके रखणा पीछे कबली दूर कर गरम टुवालसें वदन पूछ बिछोणेमें सुला देणा.

(५६७) गरम पाणीमें दवायें डाल उसका वाफ लेणेमें आता है, जिससें दवाका असर चमडीके छेदोंके रस्ते अदर पहुचता है, इस किसमकी दवायोंमे सादा निमक एसीडस सोडा सल्फर वगेरे मुख्य है, नाइट्रो म्युरीयाटिक एसिड बाथ इसतरे लेते हैं, म्युरियाटिक एसिड ३ भाग नाइट्रिक एसिड २ भाग इय दोनों एसिडकु संभालकर धीमे २ एकत्र करणा पीछे डिस्टील्ट वोटर ५ भाग धीमे २ मिलाणा इसतरे मिलाणेसें उसमेंसें पेदाभई गरमीका ऊफाण बैठजाय तब उस प्रवाहीकों शीशीमें भरके रखणा दरएक बाथके वास्ते इस प्रवाहीमेंसे ६ औंस एसिड लेकर गरम पाणीमें डालणा इस बाथकी गरमी ९६ डिग्री होणी चहिये रोगीकू इस बाथमें १५ मिनटतक रखणा और पाणीकी गरमी कायम राखणेकू जेसें २ पाणी ठढा पडता जावै तेसें २ दुसरा गरमपाणी डालते जाणा, रोगीकू बाथमेंसें बाहर निकालकर जाडे टुवालसें पूछकर वदन सूका करणा इस बाथका

मुख्य उपयोग कलेजेके और तिल्लीके पुराणे रोगमे उपयोग करणेमें आता है, म्युरियाटिक अथवा हाइड्रोक्लोरिक एसिड और नाइट्रिक एसिड बहोत सख्त है, और कोइभी चीज इनके स्पर्श (कोन्टेकट) में आती है. उसकूं जला देती है, इसवास्ते इसका उपयोग करते हुसियारी रखणी

कपिंग (प्याला धरणेकी क्रिया).

(५६८) कपिंग धरणेकी पेटी विलायती तइयार आती है, उसमें कितनेक चढते उतरते कदके काचके प्याले कपिंग ग्लास होती हैं, फेर उस पेटीमें कितनेक धारवाले छुरी जैसे शस्त्र होते हैं, कपिंग दो तरे धरे जाते हैं, प्रथम चमडीपर चपका धरकर पीछे कपिंग ग्लाससे खुन खेचके निकालणेमें आता है, इसतरे मोइस्ट कपिंग कहाताहै, कमर पीठ बोची वगेरे जगोमेंसें इसतरे खून निकालणेमें आता है, कपिंगलगाणेकी ये रीत प्रचारमें नही है, चपका लगाये विगर लोक ग्लास लगाते है, बोट्राई कपिंग कहाती है, वो इसतरेसे है कपिंग ग्लासके अंदर स्पिरिट वाइन चुपडके उसकूं सिलगाई भई दिया सलाई दिखाणी जिससे वो जलणे लगेगी तब झट वो ग्लास चमडीपर उलटी धर देणी तब वो जलता भया स्पिरिट बुझ जायगा और जेसें २ उसके अंदरका बाफ नरम पडता जायगा तेसें २ चमडी अंदरसे खिचके उपस आवेगी और ग्लास मजबूत चपक जायगी थोडी देर इसतरे रहणे देणी पीछै ग्लासकू एक बाजूसें खेंचकर चमडीसे दूर करणा कपिंग ग्लासमें स्पिरिट जरासाही लगाणा जिससे उसकी फकत बाफ प्यालेमें पैदा होकर प्याला चमडीपर चिपट जावे स्पिरिट वाइन प्यालेमें छाटे विगर फकत स्पिरिट लेम्प थोडे मिनटतक रहणे देकर पीछै तुरत चमडीपर धर देणेसें भी वो चिपट मजबूत बैठती है, इसतरे एकके पीछे एक कितनेक ग्लास लगाये जातीहै, और इसतरे करणेसें चमडीके नीचेका खून उपसके ऊपर आता है, कपिंग्लास नहीं मिले तो सादे प्यालेसें काम निकल सकता है, प्यालेकूं एसा गरम करणा नहीं चाहिये के जिस्सें चमडी जल उठे प्यालेकू चमडीपरसें उतारणेका काम छुरीके बदले अगलीका नख कर सकता है,

गंदकी दूरकरणेवाली चीजो.

(५६९) कितनीक चीजोंमें एसा गुण होता है, सो उसकू बदबोकी जगेमें डालणेमे आवे तो बोखराबवोकू मारती है, एसी चीजोकू डिस इन्फेक्टटस कहते है, उडता रोग जेसेके हैजा शीतला ओरी ब्युबोनिक प्लेग वगेरे रोगमें एसी चीजों बहुत उपयोगी होती है, एसी वखतमे एसी चीजों वापरणेसें हवा साफ होती है, और हवामें फेलते भये रोगोंके परमाणू बहोत फेल नहीं सकते ये चीज चेपी ओर उडते रोगोका मरज चलता है, तभी ही वापरणा एसा नहीं है, हर किसीभी वखत जिस ठिकाणेसे

खराब बदबो आती होय उस जगेमें एसी चीजो छांटणी या डालणी वो इस मुजब चीजोंहै,

(कोन्डीस फलुइड) अथवा केन्डिस सोल्युशन इस नामका लालपाणी आता है, वो हर किसमकी गदकी तथा बदबोकू जलदी दूर करती है, ये चीज वापरती वखत उसके एक भागमें ३० से ५० भागतक सादा जल मिलाणा पीछे उपयोग करणा दस्त करणेके पात्रमें वाडेमें जाजरूके चूलोंमें मोरियोंमें और हरकोई खराब दुर्गंधवाली जगोमें ये पाणी छांटणा उडता रोगवाला वेमारका कपडा बदले पीछे अथवा हैजेमे दस्त उलटीसें बिगाडा होयतो वेसे कपडेकूं धोणा पहिले कोनडिस फलुइड थोडा डालकर पीछे सादे पाणीसें धोणा इसीतरे गदकीकी जगामें पहली ये पाणी डालकर पीछे (गदकी दूर करणी) (कली चूना) कोन्डिस फलुइड हाजर नहीं होयतो कली चूणा छिड-कणा जो आसपास हैजेका रोग चलता होय तो घरमें कली चूना पोताणा और जाजरू मौरी वगेरेमे दिनमें दो तीन वखत चूना तथा चूनेका पाणी डालते रहणा इससे आस-पासके चेपी हवाके तत्व कभी घरमे आता है, तो उसकू ये डिसइन फेक्टटस निकाल-कर साफ कर देता है

(कोयला) दुसरी चीज नहीं मिले तब गामठी कोयलेके भूकेका उपयोग करणा खराब बदबोकों कोयला मिटाता है.

(गधकका तेजाब) ०॥ सेर सादापाणी काचके वासणमे लेकर उसमें ०॥ रतल गंधकका तेजाब डालणा पीछे चीणाइ चौडी रकेबीमें अथवा मदीके चोडे वरतणमें । सेर सादा निमक डालणा उसपर ऊपर लिखासो तइयार किया भया गंधकके तेजाब वाले पाणीमेंसे ॥ रतल डालणा पीछे इस रकेबीकू ॥ से १ घटेतक कोठेमें धरदेणा इसयोगसें म्युरि क्याटिक एसिडगेस नामकी हवा निमकमेंसें निकलती है, वोहवाकी सब गधकीकू दूर करती है, जिस कमरेमें उडते चेपी रोगवालेका बिछाणा होय उस कमरेकी हवा बिगडणेका सभव है, इसवास्ते एसे रोगीके कमरेमें एक अथवा जादा रकेबीया ओटेमोटेम रखकर हवाकू साफ करणा चाहिये रखती वखत कमरेके जाली झरोखे दरवज्जे खोल देणा चहिये और रकेबीके बिलकुल पासमें कोइ मू नहीं रखणा चाहिये.

दुसरे उपयोगी मिक्श्चर.

सादा बुखार

(५७०) लाइकर एमोनी एसेटेटिस १॥ औंस सोराखार ३० ग्रेण स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर १॥ द्राम कपूरका पाणी ३ औंस टिंकचर एको नाइट १५ बूंद मात्रा १॥ औंस दिनमे ३ वेर बुखार भरा होय उहांतक पिलाणेसें इस मिक्श्चरसे पसीना आता है

(५७१) टार्टरइमेटिक १ ग्रेण एन्टीमोनियल पाउडर १२ ग्रेण दोनों दवाकू अछीतरे मिलाकर उसकी ६ पुडी करणी एकेक पुडी दर तीन २ घटेसें पाणी अथवा

चाके सग पिलाणा अथवा मिश्रीकी चासणीमें मिलाकर चटाणा ये दवाभी बुखार चढेमे दी जाती है,

ठढके बुखार

(५७२) बाइकारबोनेट ओफ सोडा ३० ग्रेण टार्टरिक एसिड २६ ग्रेण पाणी २ औंस मात्रा २ औंस दर तीन घटेसें

ठढका बुखार

(५७३) सालचोलेटाइल ३० बूद पाणी २ औंस १ वखत देणा.

(५७४) किनाइन २४ ग्रेण पाणी ८ औंस डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड ३० बूद मिलाकर मात्रा १ औंस

(५७५) किनाइन २४ ग्रेण कारबोलिक एसिड १८ बूद एकस्ट्राकट जनस्पन चहिये जितना पहिली ऊपर दुसरी दवा डाल उसकें सग जनस्यन बराबर मिलाकर २४ गोली बणाणी मात्रा ३ से ६ गोली हमेस

विषमज्वर

(५७६) डाइल्युट नाइट्रो म्युरियाटिक एसिड १५ बूद चिरायतेकी चा ४॥ औंस मिलाकर दिनमे तीन वखत पीणा

(५७७) एकस्ट्राकट सारसापरिला २ ड्राम टींकचर नक्षबोमिका १५ बूद टिकचरकालिंबा १॥ ड्राम चिरायतेकीचा ४॥ औंस मिलाकरके उसका तीन भाग करके दिनमें तीन वेर पीणा.

पित्त ज्वरमें उलटी

(५७८) क्रीम ओफ टार्टर १ औंस नीवूका रस १ औंस मीश्री २ औंस पाणी २० औंस मिलाकर उसमेंसें थोडी २ देणी उलटीकू मिटाती है

पित्तज्वर

(५७९) लाइकर एमोनीएसेटेट १२ ड्राम एन्टीमोनियल वाईन १ ड्राम टिंकचर एकोनाइट २० बूद साइट्रेट ओफ पोटाश १२० ग्रेण केम्फर वोटर ६ औंस एन्टीपाइरीन १ ड्राम मिलाकरके उसमेंसें चार घटेसें एकेक औंस दवा पिलाणी

पित्तज्वर

(५८०) एन्टिमोनियल पाउडर १२ ग्रेण कपूर मादा ३ ग्रेण इन दोनो दवाकी गुलकदमें ६ गोलीयें करणी दोदो गोली तीन २ घटेसे देणी

(५८१) किनाइन १५ ग्रेण पाणी ४॥ औंस क्लोरेट ओफ पोटाश ३० ग्रेण डाइल्युटसल्फ्युरिक एसिड २० बूद मिलाकर बुखार कम पडे पीछे उसका तीन हिस्साकर तीन २ घटेसे देणा.

(५८२) किनाइन १२ ग्रेण पाणी ६ औंस डाइल्युटसल्फ्युरिक एसिड १५ मिलाकर तीन २ घटेसे दोदो औंस दुसरा बुखार चढे जहांतक देणा

तीक्ष्ण संधिवायु.

(५८३) बाईकारबोनेट ओफ पोटाश १ ड्राम आयोडाइड ओफ पोटास्यम ग्रेण वाइन ओफ कोलचीकम ३० बूद पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत पिल

(५८४) गंधककाफूल २ ड्राम डोवर्स पाउडर १५ ग्रेण सोरा १ ड्राम चार करणी तीन २ घटेसें देणा

(५८५) नाइट्रेट ओफ पोटाश १५ ग्रेण डोवर्स पाउडर १५ ग्रेण उसकी पुडी करणी एकेक पुडी ठंढे पाणीके संग दर तीन घटेसे देणा.

(५८६) केलोमेल १२ ग्रेण टार्टर एमेटिक २ ग्रेण ग्वायाकमरेजीव २४ डोवर्स पाउडर २४ ग्रेण गूंदके पाणीमें १२ गोलियां करणी मात्रा १ गोली दिनमें ३या४

संधि वायु तीक्ष्ण नरम पडे पीछे इलाज.

(५८७) कारबोनेट ओफ आमोनिया १५ ग्रेण कम्पाउन्ड टिकचर ओफ व १॥ ड्राम पीरुवीयन बार्कका उकाला ६ औंस मिलाकर दिनमें ३ बेर मात्रा २ औं

सधि वायु पुराणा इलाज

(५८८) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम १५ ग्रेण टिंकचर ओफ हायोसाइम १ ड्राम चिरायतेकीचा ३ औंस मिलाकर दिनमें ३ बेर देणी.

(५८९) कोडलीवर ओइल ६ ड्राम लाइकर पोटासी ४५ बूंद आयोडाइड ओ पोटाश्यम ९ ग्रेण पाणी ६ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत मात्रा दो औंस.

नजला [गाउट] इलाज

(५९०) टिकचर ओफ हेनबेन १ ड्राम पाणी १ औंस दोनोंको मिलाकर सों वखत देणा वेदनाका रोग कम करणेकूं ये दवा देणी.

(५९१) एलोझ १ ग्रेण ब्ल्युपील १ ग्रेण एपीकाक्युआन्हा १ ग्रेण एकस्ट्राक्ट ओफ कोलचीकम १ ग्रेण मिलाकर १ गोली करणी एसी एकेक गोली दिनमे चार बेर देणी

(५९२) वाइन ओफ कोलचीकम ४५ बूद बाइकारबोनेट ओफ पोटाश २० ग्रेण पाणी ३ औस मिलाकर एकेक औंस दिनमें ३ वखत पिलाणी

पांडू इलाज

(५९३) लिकरफेरीपर क्लोरीड ४५ बूंद लिकरस्ट्रीकन्या १५ बूंद टिंकचर डिजीटेलिस २० बूंद कास्याकी चा ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत पिलाणा.

रक्तपित्त [स्कर्वी] इलाज

४ औंस मिश्री—२ औंस ब्रांडी २ औंस पाणी ४ औंस मिलाकर तीन चार वखत देणा मात्रा ॥ औंस

जलोदर (कलेजेका इलाज.

(५९५) क्विनाइन ५ ग्रेण टिंकचर ओफ स्टील ४० वूद नाइट्रोम्युरीयाटिक एसिड १५ वूद कलभाकीचा ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत देणी मात्रा १ औंस.

जलोदर (कलेजेका) इलाज

(५९६) फोसफेट ओफ आयर्न ६ ग्रेन एकस्ट्राकट नक्सवोमिका १ ग्रेण एकस्ट्राकट जनश्यन चहिये जितना मिलाकर उसकी दो गोली करणी फजर सांझ एकेक गोली देणी

जलोदर इलाज.

(५९७) एलिया ४ ग्रेण ब्ल्युपील ४ ग्रेण रेवचीनीका सीरा ४ ग्रेण ज्युनिपरका तेज ४ वूद मिलाकर ४ गोलियें करणी उसमेंसें २ गोली फजरमें देणी

जलोदर (गुरदेका) इलाज

(५९८) लाइकरएमोनी एसेटेटीस १ औंस एन्टीमोनियल वाईन ४० वूद एप्सम सोल्ट ३ ड्राम केम्फर वोटर ३० औंस

जलोदर (नाताकती)

(५९९) टिंकचरओफ स्टील ३० वूद डाइल्युट एसेटिक एसिड २० वूद एसेटेट ओफ पोटाश ४५ ग्रेण पाणी ६ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत देणा मात्रा २ औंस

मुखपाक इलाज

(६००) ओप्समसोल्ट ४ ड्राम क्लोरेट ओफ पोटाश ४० ग्रेण लिकरआमोनी एसेटेटीस १ औंस पाणी २ औंस मिलाकर तीन हिस्साकर दिनमें तीन वखत पिलाणा

अजीर्ण डेसेपस्या इलाज.

(६०१) रिड्युस्ड आयर्न २४ ग्रेण एकस्ट्राकटनक्स वोमिका ६ ग्रेण पेपसीन३६ ग्रेण एकस्ट्राकट जनश्यन चहिये जितनी मिलाकर २४ गोलियें करणी उसमेंसें एकेक गोली जीमते वखत लेणी

अजीर्ण इलाज.

(६०२) सालनोलै टाइल ९० वूद सवनाइट्रेट ओफ विसमथ ४५ ग्रेण हाइड्रोस्यानिक एसिड १५ वूद कारबोनेट ओफ मेगनीश्या ३० ग्रेण पेपरमींटका पाणी ३ औंस कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ कारडेमम २ ड्राम मिलाकर एकेक औंस दिनमें तीन वखत देणी.

अजीर्ण.

(६०३) लाइकर पोटासी ३० बूद चूनेका पाणी १ औंस मिलाकर उसके दो भाग फजर सांझ ताजे दूधमें मिलाकर देणा.

अजीर्ण तुरतका इलाज

(६०४) कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ कार्डामम ६० बुंद कारबोनेट ओफ सोडा २० ग्रेण पाणी २ औंस.

कबजीयत जीर्ण इलाज.

(६०५) रेसीन ओफ पोडो फाइल $\frac{1}{2}$ से १ ग्रेण क्यालोमेल २ ग्रेण एकस्ट्राकट ओफ हायोसाइम ४ ग्रेण मिलाकर १ गोली बणाणी रातकू सोते बखत लेणी जलोदर सोजा मगज तथा कलेजेके दरदमें उपयोगी है.

कबजीयत जीर्ण इलाज.

(६०६) कम्पाउन्डरुबार्बपील ४८ ग्रेण ब्ल्युपील २४ ग्रेण मिलाकर इसकी १२ गोली करणी एकेक गोली एक दिनके आंतरे रातकू लेणी.

कबजीयत

(६०७) पाउडर ओपीका क्युआन्हा ३ ग्रेण हाइड्राजीराईकमक्रीटा ६ ग्रेण दो पुडी करके फजर सांझ पाणीके संग पीणी-

कबजीयत.

(६०८) एकस्ट्राकटनक्सवोमिका ४ ग्रेण एलोझ २० ग्रेण कीनाइन ९ ग्रेण कम्पाउन्डवार्ब पील २४ ग्रेण चारोको मिलाकर १२ गोलिये करणी और रातकू सूती वखत एकेक लेणी

अतीसार मरोडा इलाज

(६०९) टिकचर ओफ केटेक्यु (कथा) १ ड्राम पेपरमिंटका तेल १ बूद एरोमेटिक सल्फ्युरिक असिड १५ बूद इन्फ्युझन ओफ केटेक्यु १ औंस मिलाकर दिनमें दो तीन बखत पीणा.

(६१०) टिंकचर ओफ केटेक्यु ।। ड्राम चीलका प्रवाही सत्व २ ड्राम स्पिरिट क्लोरोफोर्म १ ड्राम तजका पाणी १ ड्राम.

(६११) क्लोरोडाइन २० बूद पाणी १ औंस दर तीन घंटेसें दस्तबध होय जहांतक देणा.

अतिसार इलाज

(६१२) ग्यालिक एसिड १५ ग्रेण डोवर्स पाउडर ५ ग्रेन दोनोंकों मिलाकर एक पुडी करणी एसी एक पुडी दर चार घंटेसे देणा.

(६१३) रुबार्ब पाउडर १२ ग्रेण इपीकाक्यु आन्हा पाउडर ३ ग्रेण सूठका भूका ६ ग्रेण तीन भाग कर तीन वखत देणा

मरोडा इलाज.

(६१४) स्युगरलेड ८ ग्रेण अफीम १ ग्रेण सहतमें मिलाकर तीन गोली करणी दिनमे तीन वखत देणी स्युगरलेडके वदले नीला थोथा १ ग्रेण लेणा.

पुराणा मरोडा इलाज

(६१५) नीलाथोथा १ ग्रेण क्विनाइन ४ ग्रेण अफीम १ ग्रेण एकस्ट्राकट जनश्यन ४ ग्रेण मिलाकर इसकी ४ गोलियें करणी दिनमे तीन चार वखत एकेक लेणी

चूंक इलाज

(६१६) एरडीका तेल १ औंस लाडेनम १० वूद पींपरमिंनटका अर्क १० वूद पाणी २ औंस मिलाकर एक वेर पीजाणा.

चूक इलाज

(६१७) स्पिरिट ओफ इथर ४० वूद टिंकचर ओफ जींजर ३० वूद एप्समसोल्ट ३ ड्राम पीपरमेन्टका पाणी १ औंस मिलाकर एक वखतमें पिला देणा

उलटी इलाज

(६१८) सोडा बाइकार्ब १५ ग्रेण साइट्रिक एसिड १० ग्रेण अथवा सोडा वोटर

हिचकी इलाज.

(६१९) क्लोरोफोर्म २ वूद इथर सल्फ्युरिक १० वूद तजका तेल २ वूद क्रियासोट २ वूद हाइड्रोस्यानिक एसिड डिल्युट ५ वूद सालवोले टाइल ३० वूद ब्रांडी २ ड्राम टिंकचर ओफ वेलेरीयन ॥ ड्राम पाणी १ औंस सर्वोकों मिलाकर दर दोदो घटेसें पिलाणी.

हैजामरी

(६२०) सालवोले टाइल २० वूद पीपरमिन्टका अर्क १५ वूद लाडेनम (अफीमका अर्क) २० वूद ब्रांडी अथवा कादेका रस ॥ औंस मिलाकर उसमें बरावरका पाणी डाल दर दोदो तीन २ घटेसे इस प्रमाणसे देणा

हेजा कैदस्त इलाज

(६२१) सल्फ्युरिक एसिड डिल्युट १० वूद कार्बोलिक एसिड १ वूद टिंकचर ओफ आयोडीन २ वूद किनाइन ५ ग्रेन कपूरका पाणी १ औंस मिलाकर तीन वखत पीणा.

तीक्ष्ण कलेजेका दरद इलाज

(६२२) नवसादर ४० ग्रेण करमाला १ तोला सोराखार २० ग्रेण चिरायतेका काढा ३ औंस मिलाकर उसका दो भागकर फजर साम देणा.

कलेजेका दरद अमूंझणी मूंधोरा इलाज.

(६२३) नवसादर ३० ग्रेण सिपरिट नाइट्रिक इथर १॥ द्राम ६ औंस पाणीमें मिलाकर दोदो औंस दर तीन घटेसें पिलाणा.

पुराणा कलेजेका दरद इलाज.

(६२४) कारबोनेट ओफ एमोनिया १५ ग्रेन टिकचर ओफ शीला ३० वूंद टिंकचर केम्फरकम्पाउन्ड १॥ द्राम कपूरका पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर पिलाणा.

कलेजेका पकणा इलाज.

(६२५) किनाइन ६ ग्रेण पाणी ३ औंस डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड १५ वूंद एकेक औंस तीन वेर लेणी.

कामला इलाज.

(६२६) पोडोफाइलम ६ ग्रेण रुवार्व १८ ग्रेन एकस्ट्राकट हायोस्यामस ४० ग्रेन मिलाकर १२ गोली करणी फजर सांझ एकेक गोली लेणी.

कामला पांडू इलाज.

(६२७) एप्सम सोल्ट ४ द्राम एसेटेट ओफ पोटाश ३० ग्रेन सोराखार १५ ग्रेण नवसादर ३० ग्रेन ज्युस ओफ टाराक्षकम २ द्राम चिरायतेका काढा ३ औंस मिलाकर तीन वेर पीणा

कामला

(६२८) एप्समसोल्ट १ द्राम कारबोनेट ओफ मेगनिस्या १२ ग्रेण सालवोले टाइल ३० वूद पाणी ४ औंस मिलाकर दोदो औंस दिनमें दो वखत देणा.

तिल्लीइलाज

(६२९) पोटाश ब्रोमाइड ३० ग्रेन हीराकशी ६ ग्रेन एप्सम सोल्ट ३ द्राम कास्याकीचा ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत देणा

रिदयरोग [हार्टडीसीझ] इलाज

(६३०) सालवोले टाइल ३ द्राम कार्बोनेट ओफ एमोनिया ३० ग्रेन सिंकोनाका क्राथ ८ औंस मिलाकर दोदो रुपे भर दर तीन घटेसे

रिदय रोग

(६३१) टिकचर डिजीटेलिस १५ वूद टिंकचर ओफ स्टील ३० वूद एसेटेट ओफ पोटाश ६० ग्रेन पाणी ३ औंस

श्लेषम इलाज

(६३२) हाइड्रो क्लोरेट ओफ मोर्फया २ ग्रेन सबनाइट्रेट ओफ बिसमथ ६ द्राम गूदकी बारीक भुकणी २ द्राम मिलाकर तमाखूकी तेरे सूंघणी

श्वासकास हांफणी [ब्रोनकाइटीस]

(६३३) वाइन ओफ एन्टीमनी ४० बूद स्पिरिटनाइट्रिकइथर २ ड्राम टिंकचर ओफ डीजीटेलीस २० बूद टिकचर एकोनाइट २० बूद पाणी ४ औंस ४ भाग कर दिनमें ४ वेर पीणा.

श्वासकास हांफणी

(६३४) लाइकर एमोनी एसेटेटीस १ औंस ईपीकाक्यु आन्हावाईन १ ड्राम टिंकचर एकोनाईट २० बूद टिंकचर केम्फर कम्पाउन्ड २ ड्राम टिकचर शीला १ ड्राम पाणी ३ औंस मिलाकर उसके ४ भाग कर हरेक भाग दर तीन घटेसे देणा छोटे बचोंकों मात्रा १ सें ३ ड्राम ऊपरमुजब

पुराणा श्वासकास इलाज

(६३५) सीरपसीला ४ ड्राम डिल्युट नाइट्रिक एसिड ३० बूद टिंकचर हायोस्याम २ ड्राम टिकचर डिजीटेलिस २० बूद स्पिरिट ओफ क्लोरोफोर्म २ ड्राम सिंकोनाकी चा ६ औंस मिलाकर हमेस चोथे भागकी दवा फजर सांझ पिलाणी

श्वासकास.

(६३६) लिकिड एकस्ट्राकट ओफ सारसापरिला ४ ड्राम एपीकाक्यु आन्हा ६० बूंद टिंकचर सीला ४० बूद मोलेठीकी चा ६ औंस मिलाकर इसके ४ भाग कर एकेक भाग फजर सांझ देना

श्वासकास कफके संग

(६३७) एपीकाक्यु आन्हा पाउडर २० ग्रेण सालवोलेटाइल १ ड्राम एक औंस पाणीमे मिलाकर पिलानेसें कफ अलग होकर निकलता है

फेफसेका सोजा

(६३८) एन्टीमोनियलवाईन ५ बूद टिंकचर एकोनाइट २ बूद पाणी ४ ड्राम मिलाकर दिनमें ४ वेर पिलाणी

फेफसेका सोजा न्युमोन्या

(६३९) सालवोले टाइल ३ ड्राम स्पिरिट नाइटिक इथर ३ ड्राम एपीकाक्यु आन्हा वाईन १ ड्राम टिंकचर सीला १ ड्राम टिंकचर सेनीगा २ ड्राम केम्फर वोटर ४ औंस सर्गोको मिलाकर दिनमें ४ वेर पीना

दमका इलाज

(६४०) एपीकाक्यु आन्हा पाउडर ३ ग्रेण एन्टीमोनियल पाउडर ६ ग्रेण केम्फर (कपूर) ४ ग्रेण एकस्ट्राकट हायोस्यामस ९ ग्रेण मिलाकर इसकी ६ गोलिये चणाणी दो दो घटेसे दो दो गोली देणी

(६४१) सल्फेट ओफ किनाइन ९ ग्रेण सल्फेट ओफ आयर्न १२ ग्रेण एपीकाक्यु आन्हा पाउडर ६ ग्रेण अफीम १ ग्रेण मिलाकर गूंदके पाणीमें ६ गोलियें करणी, एकेक गोली दिनमें २ वखत.

(६४२) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम ५ ग्रेण टिंकचर बेलाडोना ५ बूंद पाणी १ औंस मिलाकरके दिनमें तीन वखत या दो वखत पीणा.

बडी खासी बच्चोंकी खुलखुलिया इलाज.

(६४३) सालवोलेटाइल ४० बूंद स्पिरीट ओफ क्लोरोफोर्म २० बूंद डील्युट हाइड्रोस्यानिक एसिड १० बूंद लीकरमोफर्या १२ बूंद कपूरका पाणी १६ ड्राम मिलाकर उसमेंसें ८ मा भाग तीन २ घंटेसें देणा.

खासी सूकी इलाज.

(६४४) एन्टीमोनियल वाइन ४० बूंद स्पिरिट नाइट्रिक इथर १ ड्राम म्युसीलेज ओफ गम एकेश्या ४ ड्राम कपूरका पाणी २॥ औंस मिलाकर उसमेंसें तीन भाग कर दिनमें तीन वखत देणा.

(६४५) एपीकाक्यु आन्हा पाउडर ६ ग्रेण एन्टीमोनियल पाउडर ९ ग्रेण मोलेठीका चूर्ण १२ ग्रेण मिलाकर तीन पुडी करणी चाटे जाय जितने सहतमें तीन वखत देणा.

खासी कफका इलाज

(६४६) एपीकाक्यु आन्हा वाइन ४५ बूद एलिक्झर पेरीगोरिक ३० बूंद एमोनाएक मिकश्चर ३ औंस तीन हिस्सा कर दिनमे तीन वेर देणा.

(६४७) कारबोनेट ओफ एमोनिया १० ग्रेण एपीकाक्यु आन्हा पाउडर १५ ग्रेण कम्पाउन्डस्पिरिट ओफ लवंडर २० बूद पाणी २ औंस मिलाकर सब दवा एक वेरमें पीणी थोडी देर पीछै ऊपरसे चा पीणी

क्षय इलाज.

(६४८) लिकर पोटाश ३० बूद टिंकचर सिंकोनाक पाउन्ड ९० बूंद कम्पाउन्ड केम्फर टिंकचर ९० बूद टिंकचर सीला ३० बूंद पाणी ३ औंस तीन भाग कर दिनमें तीन वेर देणा

(६४९) सिरप ओफ आयोडाईड ओफ आयर्न ३० बूंद डाइल्युटसल्फ्युरिक १० बूंद किनाइन ६ ग्रेण पाणी ३ औंस मिलाकर उसमेंसें तीन वेर दिनमें देणा.

शिरके रोगका इलाज.

(६५०) पोटाश आयोडाइड १० ग्रेण चिरायतेके चा संग दिनमें तीन वेर देणा.

शिरका रोग.

(६५१) पोटाश ब्रोमाइड १ ड्राम चिरायतेकी चा ३ औंस मिलाकर इसमेंसें एकेक औंस दिनमें तीन वेर देणी

शिरका रोग इलाज.

(६५२) नवसादर १ ड्राम चिरायतेकी चा ३ औंस मिलाकर एकेक औंस दवा दिनमें तीन वखत देणी.

पित्तसे शिर दुखनेका इलाज.

(६५३) एप्समसोल्ट ४ ड्राम सोडाबाइ कारबोनास ४० ग्रेण पाणी २ औंस मिश्री २ ड्राम टार्टरिक एसिड ½ ड्राम नींबूका शरबत ४ ड्राम पाणी ४ औंस न० १ की दवा तथा न० २ की दवा जुदी २ मिलाकर पीछे दोनु प्रवाही मिलानेसे सोडावाटरकी तरे उफाण आनेसे उसकू पी जाणा

रक्तपित्त होजरी तथा फेफसेका इलाज

(६५४) एरोमेटिक सल्फ्युरिक एसिड १॥ ड्राम एलिकझर पेरिगोरिक ४ ड्राम सीनेमनवोटर ५॥ औंस तीन भाग कर दिनमें तीन वेर देणा

रक्तपित्तका इलाज २.

(६५५) श्युगरलेड ८ ग्रेण अफीम १ ग्रेण गुलकंद ५ ग्रेण ४ गोलियें करणी तीन २ घटेसे एकेक देणी

(६५६) गेलिडएसिड ४० ग्रेण एरोमेटिक सल्फ्युरिक एसिड १ ड्राम टिंकचर ओफ सीनेमन ४ ड्राम डिस्टीलडवोटर ८ औंस मिलाकर दो दो औंस दवा चार २ घटेसें देणी.

मूर्मेसे रक्तपित्त खून गिरे इलाज

(६५७) सल्फेट ओफ झींक ३० ग्रेण सहत १॥ औंस गुलाब जल १२ औंस कुरले करना.

(६५८) फुलाइ भई फिटकडी २० ग्रेण टिंकचर ओफ मर्ह २ ड्राम आठ औंस पाणीमें मिलाकर उसका कुरला करना

इलाज मिरगीका

(६५९) पोटाश ब्रोमाइड ४५ ग्रेण टिंकचर ह्यायासाइम १ ड्राम सालवोलेटाइल १ ड्राम टिंकचर बेलाडोना २० बूंद पाणी ३ औंस मिलाकर तीन वखत देना बच्चेकी मात्रा १ चमचा

(६६०) पोटाश्यम ब्रोमाइड ओफ १ ड्राम आयोडाइड ओफ पोटाश्यम १२ ग्रेण कारबोनेट ओफ पोटास ४० ग्रेण टिंकचर ओफ ओरेन्ज ६ ड्राम पाणी ५॥ औंस दो दो औंस फजर सांझ.

खेंचाताणका इलाज.

(६६१) पोटाश ब्रोमाइड १२ ग्रेण क्लोरलहाइड्रेट ५ ग्रेण पाणी १ औंस शरबत २ ड्राम मिलाकर तीन २ वखत देनी तीन घंटेसें.

(६६२) क्यालोमेल ४ ग्रेण सांटोनीन २ ग्रेण मिश्री १० ग्रेण सहत तथा पाणीके संग ५ वर्षके बच्चेकुं देनेसें जुलाब होगा हिचकना मिटता है.

हिस्टीरीयेका इलाज.

(६६३) लाइकर मोफर्या १ ड्राम क्यालोरलहाइड्रेट ॥ ड्राम पोटाश ब्रोमाइड १ ड्राम शरबत ८ ड्राम दो औंस पाणीमें मिलाकर तीन भाग दिनमें तीन वेर देना.

(६६४) ब्रोमाइड ओफ पोटाश्यम ३० ग्रेण चिरायतेकी चा ६ औंस आमोनीएटेड टिंकचर ओफ वेलेरीयन १ ड्राम मिलाकर दिनमें तीन वेर दो औंस दवा पिलानी

(६६५) फलावर्स ओफ सलफर २ औंस क्रीम ओफ टार्टर ४ ड्राम नारंगीका शरबत अथवा सहत २ मात्रा १ ड्राम दिनमें २।३ वेर.

ववासीरका इलाज

(६६६) क्लोरलहाइड्रेट १० ग्रेण ब्रोमाइड पोटाश्यम १५ ग्रेण मिश्रीका पाणी १ औंस मिलाकर दर तीन या चार घटेसे देनी.

धनुर्वातका इलाज

(६६७) सिरप ओफ आयोडाइड ओफ आयर्न ६० बूंद आयोडाइड ओफ पोटाश्यम ६ ग्रेण पाणी ३ औंस मिलाकर एकेक औंस दिनमें तीन वेर पीना

(६६८) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम २ ग्रेण रस कपूरका प्रवाही ९ बूंद चिरायतेकी चा ३॥ औंस मिलाकर दिनमें ३ वेर देणी

सिफिलीस उपदसका इलाज.

(६६९) पोटाश आयोडाइड १ ड्राम लिकर हाइड्रापर क्लोरीड ६ ड्राम एकस्ट्राक्ट सारसापरीला १२ ड्राम टिंकचर चीरेटा ६ ड्राम पाणी १० औंस मिलाकर $\frac{1}{12}$ भाग दिनमें तीन वेर देना

(६७०) लीकर आर्सेनिक १ ड्राम पोटाश आयोडाइड १ ड्राम सीरप ओरेंस्पाई ८ ड्राम टिंकचर आयोडाइड१ड्राम पाणी ८ औंस मात्रा$\frac{1}{8}$ दिनमें दो वखत जीमके लेना.

(६७१) केलोमेल २४ ग्रेण अफीम ३ ग्रेण बारे गोली बणाकर दिनमें तीन वेर देनी जोरके वेमारकू देनी.

(६७२) ल्युपील १८ ग्रेण सल्फेट ओफ आयर्न ६ ग्रेण अफीम २ ग्रेण ६ गोली बणाकर फजर सांझ लेनी एकेक.

(६७३) हाइड्रार्जीरइ कमक्रीटा १८ ग्रेण सल्फेट ओफ किनाइन १२ ग्रेण अफीम २ ग्रेण ६ गोली बणाकर फजर सांझ एकेक

(६७४) लाईकर एमोनी एसेटेटीस २ औंस एसेटेट ओफ पोटाश ९० ग्रेण गूदका पाणी १ औंस कपूरका पाणी ३ औंस.

प्रमेह सुजाकका इलाज.

(६७५) लाइकर पोटाश ६० बूद टिंकचर हायोस्पामस २ ड्राम सोराखार १ ड्राम चूनेका पाणी ४ औंस मिलाकर इसका ४ भाग कर दिनमें ४ वखत पिलाणी

(६७६) बालसमकोपेवा ओफ ४५ बूद टिंकचर हायो साईम ९० बूद पाणी ३ औंस लाइकर पोटास ४५ बूद गूदका पाणी १ औंस तीन भाग कर दिनमें तीन वेर देणा.

(६७७) चदनकातेल ४० बूद कबाबचीनीका चूर्ण । तोला सोनागेरु । तोला गोखरूका चूर्ण । तोला मिलाकर इसके दोभाग करणा फजर सांझ सहतमें चाटणा.

(६७८) लाइकर पोटासी ४५ बूद लाडेनम १५ बूंद केम्फर वोटर ३ औंस मात्रा १ लीकर ग्लास तीन वेर

(६७९) सल्फेट ओफ झिंक १२ ग्रेन केम्फर ६ ग्रेन कम्पाउन्डकायनो पाउडर २० ग्रेन १२ गोलीकरके दोदो गोली दिनमें ३ वेर.

पुराणे प्रमेहका इलाज.

(६८०) आयोडाइड ओफ पोटास्यम ६ ग्रेन साइट्रेट ओफ आयर्न एन्डकवाइन्या १५ ग्रेन चिरायतेकी चा ३ औंस मात्रा १ लीकर ग्लास दिनमें तीन वेर पिलाणा.

(६८१) टिंकचर ओफ स्टील २० बूद टिंकचर ओफ केन्यारीडीस ५ बूद टर-पेन्टाईन १० बूद पाणी १ औस मिलाकर दिनमें तीन वेर पिलाना

(६८२) बाइकारबोनेट ओफ पोटाश ४० ग्रेन पाणी ४ औस मिलाकर इसके ४ भागकर दिनमें चार वखत देणा.

पेसाबमें पथरीका इलाज.

(६८३) बाइकारबोनेट ओफ पोटाश ३० ग्रेन सोराखार १० ग्रेन साइट्रिक एसि-ड १५ ग्रेन पाणी ४० तोला मिलाकर एक दिनमें सब दवा पीजाणी

(६८४) साइट्रेट ओफ पोटाश ४५ ग्रेन पाणी ३ औंस मिलाकर तीन हिस्साकर दिनमे तीन वेर पीणा

(६८५) एकस्ट्राकट जनश्यन १ ग्रेन मई २ ग्रेन एलिया १ ग्रेन केशर १ ग्रेन मिलाकर एक गोली करणी ऐसी एकेक गोली दिनमें तीन वेर लेणी.

नष्टार्त्तव [दस्तानका] इलाज.

(६८६) गेलिक एसिड ४५ ग्रेन लिकीड एकस्ट्राकट ओफ अर्गट १॥ ड्राम डिल्यु-टसल्फ्युरिक एसिड ४५ बूद तजका पाणी३औंस मिलाकर तीन भाग कर दिनमें ३ वेर देणा

लाल प्रदरका इलाज

(६८७) डिल्युटसल्फ्युरिक एसिड ३० बूंद फिटकडी ३० ग्रेन हीराकसी ६ ग्रेन तजका पाणी ४॥ औंस.

ऋतुधर्म बहोत खून गिरणा.

(६८८) गेलिक एसिड ४० ग्रेन एरोमेटिक सल्फ्युरिक एसिड १ ड्राम टिंकचर ओफ सीनेमम ४ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस.

(६८९) ओकसाइड ओफ झिंक २४ ग्रेन कम्पाउन्ड सीनेमन पाउडर १ ग्रेन वार्क पाउडर १ ड्राम १२ पुडीकर दिनमें तीन वेर देणा.

दरद करके ऋतू धर्म होणा इलाज.

(६९०) लिकर हाइड्रार्जीरीपर क्लोराइड १॥ ड्राम कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ सिकोन १॥ ड्राम कम्पाउन्ड डिकोकसन ओफ सारिसापरिला ३ औंस.

गर्भाशय प्रदर इलाज

(६९१) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम ६ ग्रेन कोडलिवर ओइल ६ ड्राम चिरायतेकी चा ३ औंस तीन भागकर दिनमें तीन वेर देणा.

हकीमी यूनानी नुसके.

हमेसका बुखार इलाज

(६९२) सूफ कासनी मोलेठी वनफसा ए दरेक तीन २ तोला पाणी २ रतल दवाको कूट पाणीमें उकाल आधा पाणी रहेतब छाण उसका तीन भागकर दिनमें तीन वेर देणा दवाके पिलाते दरवक्त एकेक तोला गुलकंद अथवा मिश्री मिलाणी.

आंतरेका बुखार इलाज.

(६९३) कासनी तोला १॥ कुलफेके बीज तोला ॥ पाणी रतल ।॥ इस दवायोंकों जो कूटकर पाणीमें तीन घटे भिगाणा पीछे छाण तोला २ मिश्री मिलाकर इसका तीन भाग करणा और एक भाग दर तीन २ घंटेसे पिलाणा दस्त साफ नहीं होय तो मिश्रीके मावजेमें खीरकिस्त अथवा मांजू तोला १ पहली वेरमें डालकर पीनेसें पेट साफ होजायगा.

तीक्ष्णसधि वायुका इलाज.

(६९४) सिपस्तान ६ दाणा उनाब १० दाणा कासणी तोला १ वनफसा।॥तोला ।॥ सेर पाणीमें दो घटे भिगाकर पीछे उसका नीतरा पाणी छाण कर तीनहिस्साकर दिनमें तीन वेर पिलाणा जो पेट कबज होय तो उसमें मांजू फल तोला १ तथा करमाला तोला १ डालणा.

(६९५) हरडेकी छाल तोला ।॥ निशोत तोला । विसफायज तोला ।॥ सातेरा तोला ।॥ सुरीजन तोला । कासणी तोला १ गुलाबका फूल तोला १ इन सबोंकू १॥

सेर पाणीमें उकाल आधा पाणी रहे तव छाण दिनमें तीन वखत पीणा दस्त वहोत होय तो पहली तीन दवा निकाल डालणी.

(६९६) केशर गहूभर अफीम १० गहूभर उसकू एक औंस पाणीमें मिलाकर सांधेके दरदपर लेप करणा पाणी गरम चाहिये.

(६९७) एकली लुलमुल्क चावूना गुलखेरु जब खुबाजी दरेक एकेक तोला पीस पाणीमें सांधोपर लेप करणा

तिल्लीका इलाज.

(६९८) छोटी जो हरडे सातरा करफसके बीज बेखेकेबर ए हरेक ॥ तोला सुंफ १ तोला अनीसुन १ तोला अजखर। तोला इन सब दवाकू जरा जो कूटकर १ सेर पाणीमे उकाल आधा रहे तव छाणकर उसमें १ तोला मिश्री मिलाकर पीणा कूचा रहे सो पाणीमें भिगा रखणा औंर सांझकू छाणकर उस पाणीमें मिश्री मिलाकर फेर पीणा दुसरे दिन ओ नुसका दुसरा तइयार करणा

तिल्ली इलाज

(६९९) उसक तोला १ गूगल तोला १ जायफल तोला १ ए तीन चीजोंकों पीस उसमें वाइन (दारू)का थोडा सिरका सहत जेसा जाडा लेप होजाय इतना डाल णा ए दवा ताप तिल्लीपर दिनमें दो वखत लगाणी

सन्निपातज्वर इलाज

(७००) कासणी तोला २ कुलफेके बीज खोपरे करे भये तोला २ आलुबुखारे २० इन दवायोंकों ।।। सेर जलमे दो कलाक भिगाणा पीछे पाणी छाण लेणा उसमे मिश्री २।३ तोला डालकर तीन वखत तीन २ घटेसे पीणी.

हेजाके दस्त इलाज

(७०१) अनीसुन तोला १ अगर तोला १ मस्तगी तोला ॥ साहजीरा तोला ॥ इन दवायोंकों जो कूटकर १ सेर पाणीमें उकाल आधारख छाण लेणा ठंढा भये वाद बडा चमचाभर एक घटेसे मिलाणा

मरोडा आम खूनका इलाज.

(७०२) ईसवगुल तुखमरेहान (तुलशीके बीज) तुखमें मरो तुखमें वारतग ए एकेक बीज एकेक तोला उसकी फकीकर उसमेंसें ॥ तोलाकी फकी दर ४ घटेसें पाणी सें लेणा इसकू चार तुखम कहते हैं.

पुराणा मरोडा इलाज

(७०३) अनारकी सूकी छाल १ तोला माजूफल ॥ तोला हब्बूल आस ५ तोला तथा सीपाकका सोडा १ तोला महीन चूर्ण कर उसमेंसें आना तोलेकी ३ पुडी करणी दिनमें तीन वेर गूदके पाणीमें पीणा

सर्वोंकूं फजर सांझ पोणसेर पाणीमे उकाल आधापाणी रखकर छाण थोडी मिश्री मिलाकर दिनमे दोवखत पीणा.

(७१९) शरबते जूफा तोला १ फजर सांझ अथवा मीठे विदामका तेल अथवा कद्दूके वीजोंका तेल छोटा चमचाभर दिनमें दोतीन वेर पीणेसें सूकी खासी मिटती है गलेमें खरखराट होय और गलासूका मालमदेतो तेल देते वखत रव्वेसूस तीनमासा पाणीमें घसकर तेलमें मिलादेणा और मूमें वी रव्वेसूस चूसणेकूं रखणा.

कफकी खासीका इलाज.

(७२०) कर फसकी जड तोला ३ सूफकी जड तोला ३ वेखेकेबर तोला ३ जूफा तोला ४ इनदवायोंको तीनसेर जलमें धीमी आंचसें उकाल आधा रहे तब छाणलेणा उसमें २० तोला मिश्री मिलाकर फेर उकालणा जब शरबत बणजावै उसकू रख छोडणा उसमेंसे २।३ तोला फजर सांझ पीणा.

श्वास हांफणी दम इलाज

(७२१) अंजीर सूकादाणा ५ उनावदाणा ७ सीपस्तानदाणा ७ वनफसा तोला ॥ गायजुबान तोला ॥ इण सर्वोंकों १ सेर पाणीमे उकाल० ॥ सेर पाणी वाकी रहे तब छाण उसमें जरा मिश्री मिलाकर दोहिस्से कर फजर सांझ पीणा

(७२२) अंजीर सूका तोला २ मेथी सूंफ ओसा [वजारमें तगर कहतें हैं] जूफा ये दरेक एकेक तोला इनसर्वोंकों रातकूं १॥ सेर पाणीमें भिगाकर फजरमें धीमी आंचसें उकाल आधा रहणेसें छाण उसमे १५ तोला सहत डाल फेर पीछै धीमी आंचसें उकालणा और पतला सरबत करणा पीछे उसमे इस्कीलकी भूकी अथवा जगली कांदेकी भूकी ३० ग्रेण तथा केशर ५ ग्रेण डालकर अछीतरे मिलाकर एक काच तथा चीणीके पात्रमें रख छोडणा फजर सांझ एकेक तोला देणा.

(७२३) अफ तीमून तोला ॥ उसकू ॥ सेर पाणीमें उकालणा आधा पाणी बाकी रहे उसमें जरामिश्री मिलाकर दिनमें दोवखत पीणा

(७२४) मोलेठी छीली भई तोला १० परेशीयावसान तोला ३॥ खस २ तोला ३॥तोला जूफा तुखमे खतमी सूफ अनीसुन येचार चीजो दरेक एकेक तोला उनावदाणा ५० सीपस्तानदाणा ५० तीनसेर पाणीमें रातकू भिगाकर पीछै धीमे आंचसे फजरमें उकाल आधा जल रहे तब छाण मिश्री १॥ सेर डाल फेर धीरे आंचसे उकाल पतले सहत जेसा शरबत बणाणा मात्रा १ तोलेसें ३ तोले दिनमे तीनवेर.

क्षयका इलाज.

(७२५) गुलाबके फूलकी सूकी कली डखली विगरकी १॥ तोला बांवलका गूंद तोला १॥ गेहूंका सत्व तोला ॥। रव्वेसूस तोला ॥। कडाया गूंद तोला ॥। काली

तथा सपेद खसखस एकेक तोला तवासीर सुफेद तोला १॥ केशर तीनमासा अलग २ कूट एकठी करणी और पाणीमें घोट ॥ तोलेकी टिकडियां या गोलीयो बाधकर सूकाणी मात्रा एकेक टिकडी फजर सांझ अथवा तीन वेर टिकडीका भूकाकर १ चमचा खस-खसके शरबतके सग पीणा

फेफसेमेंसें रक्तपित्तका खून गिरे सो इलाज

(७२६) फिटकडीकी भूकी ग्रेण ३० चांचलके गूदकी भूकी ग्रेण ४० मिश्रीकी भूकी ग्रेण ४० सर्वोकों मिलाकर ४ पुडी करणी एकेक पुडी ठढे पाणीके सग चार २ घटेसे देणा

(७२७) हीरादखन ॥ ड्राम (कमरकस) अफीम १ ग्रेण इसकी ४ पुडी करणी तीन २ घटेसे एकेक पुडी देणी

रिदयरोग (पाल्पीटेशन ऑफ धीहार्ट इलाज)

(७२८) गुलेगाय जवान तथा गिले अरमनी दरेक तोला ॥ तवाशीर धाणेका मगज गुलाबका फूलसूका मिश्री ये चार चीज एकेक तोला जुदी २ कूट छाणलेणा पीछे सब संग मिलाकर उसमेंसें फजर सांझ । से ॥ तोला फाकणा

कफकी खासी इलाज

(७२९) मोलेठीका चूरा २४ ग्रेण लींडीं पीपरका चूर्ण २४ ग्रेन वीजाबोल २४ ग्रेन कडवे विदाम छीले भये ग्रेन ३६ इन सर्वोकों पीस गूदके पाणीमें २४ गोली बांधणी उसमेंसें तीनचार गोली फजर इसी मुजब साझकूं देणी

(७३०) सेला रस ग्रेन १५ सहरी लोबान ग्रेन १५ बीजाबोल ग्रेन १२ अफीम ग्रेन २ इन दवाओंकु पीस गुदके पाणीमे १२ गोलिया बांधणी मात्रा गोली २ फजर २ सांझ

(७३१) उसके ग्रेन २४ इस्कील अथवा जगली कादेका भूका ग्रेन १२ बिरोजा अथवा खैर जव ग्रेन २४ उसकी १२ गोलियें करणी मात्रा गोली २

रिदय रोग (हार्टडिझ) इलाज

(७३२) दरुज्जे अकरबी नर्कचूर बमने सुपेद तथा बमने सुरख दरेक एकेक तोला लौंग कालीछड मस्तगी और तमाल पत्र ए दरेक । तोला इन एकेक चीजोंकों अलग २ कूट पीछे एकत्र करणी उसमेसे दोदो आनी भर सहतमें चाटणी.

मिरगी (वाइ फेफरा) इलाज

(७३३) एलिया ४ ग्रेण कालीछड १ ड्राम गारेकुन १ ड्राम मस्तगी २० ग्रेण तूंबेकी गिर ३० ग्रेण सकमोनिया ६ ग्रेण इनोंकों कूट २४ गोली चणाणी फजर साझ दोदो तीन २ गोली लेनी दस्त जादा होय तो अतकी दो चीजें निकाल डालणी.

(७३४) अनीसुन ॥ तोला सूंफ तोला ॥ बादरजबोया १ तोला सूका-

दाणा ४ इनदवायोंकू १ सेर पाणीमें ऊकाल आधापाणी बाकी रहे तब छाण दो हिस्साकर फजर सांझ १ तोला गुलकद दरवखत या मिश्री मिला पीणा

(७३५) उस्ते खुदुस अफतीमुन सूफ अनीसुन बनफसा बीसफायेज गुलाबके फूल हरडेदल बडीहरडाका दल ये दरेक आधा २ तोला निशोत। तोला एक बरतनमें रखकर ऊपरसे ऊकलता पाणी पून सेरडाल आधी घंटे भिगा रखणा फेर छाण दो हिस्साकर फजर सांझ थोडी मिश्री डालकर पीणा कित्तनेकदिन पीणेसें फायदा करता है जो दस्त बहोत होता होय तो आखरीकी चार दवा कम करणी अथवा निकाल डालणी.

लकवा (अर्धांग) का इलाज.

(७३६) कासणी तोला ॥ उनाबदाणा ७ ये दोय चीजोंकों खल २ ते अधसेर पाणीमे आधी घटे भिगा रखणा इसकी चा तइयार करणी तीन हिस्सेकर दिनमें तीनवेर पीणा

(७३७) कासनी तोला ॥ काली मुनक्का तोला ॥। बनफसा उनाब तथा गुलाबके फूल ये तीन एकेक आधा आधा तोला इनोपर ऊकलता॥ सेर पाणीडाल आधी घंटा भिगाकर जरा मिश्री डाल दिनमें दोवेर पीणा दस्त साफ लाणेकू किसी २ वखत सोनामुखी ॥ तोला किरमालेका गिर तथा खीरकिस्त १ तोला डालणा चाहिये.

(७३८) अनीसुन तोला ॥। सोआ अजवाण कीर्दमान तुखमेकरफस सूंफकी जड अजखर मोलेठी बेखेकेबर ये दरेक । तोला इनोंको १ सेर पाणीमे उकाल आधा रहे तब छान उसमें १ तोला गुलकद डाल सब पाणी फजरमें पीजाना इसतरे हमेस फजरमें ताजी दवा बणाकर पीणा

(७३९) एलिया १२ ग्रेन तूंबे कडवेकी गिर २४ ग्रेण फरफ्यून ६ ग्रेन गूगल २४ ग्रेन इनोंकों मिलाकर १२ गोलिये करणी और दिनमे दोवखत १ अथवा दो गोली खानी.

(७४०) सर कचूरो दरुज्जे अकरबी बहमनसुरख बहमनसुपेद कालीछड इलायची लोंग तमालपत्र दरेक ॥ तोला जुदबेदस्तर पीपर सूंठ कस्तूरी ये दरेक । तोला १५ तोला सहत सेर पाणीमें धीमी आचसें गरमकर इसका काथ याने शरबत तइयार करणा इसमें ऊपरकी चीजोंका महीन चूर्ण मिलाकर धीमे २ हिलाकर अवलेही तइयार करणा मात्रा १ सें १॥ द्राम दिनमे २ वेर

पुराने लकवेका इलाज.

(७४१) कुचीला तो २ गुलेगावजुबान सरकचूर उस्ते खुदुस कारियागूंदसकाकुल ये दरेक एकेक तोला, चदनका बुरादा । तोला लोंग । तोला सूके आंवले १॥। तोले खोपरा छीला भया तथा चलगुजेका मगज एकेक तोला ४० तोला सहत लेकर सेर

पाणीमें मिला धीमी आंचसे शरबतकर उसमें ऊपरकी तमाम चीजों युक्तिसे मिलादेणा चाटण तइयार करणा मात्रा ॥ द्रामसें १ द्रामतक.

दरदके सग ऋतुधर्म

(७४२) अजखर तुरामकरफस रास २ केडोडे ये तीनों आधा २ तोला अनीसुन १ तोला इनसबोंको १॥ सेर पानीमें धीमे आंचसे उकाल आधापानी बाकी रहे घोछा- नकर दिनमें तीनवेर थोडी मिश्री मिलाकर दरदके वखत पिलाना.

हिस्टीरीया.

(७४३) हींग ९ ग्रेन हीराबोल १२ ग्रेन गदावेरोजा १२ ग्रेन इनोंकी गूंदके या. गुडके पानीमें १२ गोलिया करनी माना एकेक गोली तीनवेर

हिस्टीरीया.

(७४४) कालीछड (जटामासी) तोला १ तथा जूदबे दस्तर तोला । इनोंकी बारीक भुकनीकर गूदके पानीमें २४ गोलिये बनानी मात्रा २ गोली दोवखत

बचेका कृमि रोग.

(७४५) वायविडगका मगज २१ ग्रेन छीली मइ निशोतकी भूकी ४ ग्रेन कपीला ५ ग्रेन इन सबोंकों २॥ रुपयेभर ऊकलते जलमें पाव घटे भिगाकर उसका नितराभया पाणी उपयोगमें लेना बचेकी मात्रा छोटे चमचेभर दिनमें ४ वेर

बुखारके सगकृमि रोग.

(७४६) कासणी १५ ग्रेन कुलफेकाबीज १० ग्रेन अनारके जडकी छाल अथवा अनारकीछाल ५ ग्रेन धानाका मगज १५ ग्रेन २॥ रुपेभर ठढे पाणीमें घोटकर इसके ऊपरका नितराभया पाणी छानलेना मात्रादोच मचा दर तीन घंटेसें.

पित्तसे शिर दूखना

(७४७) हरडेदल तोला ॥ बडी हरडकादल तोला ॥ आलुबुखारा दाना १० उनाबदाना १० सिपस्तानदाना ७ सवासेरपाणीमे मद आंचसें उकाल आधापाणी रहे तब छान फजर सांझ दोवखत मिश्री थोडीसी मिलाकर पीणा.

प्रमेह सुजाक.

(७४८) कबाबचीनी ३ तोला फटकडी पाव तोला कथा ॥। तोला महीन चूर्णकर तोला ॥ दिनमें तीनवेर पानीसे लेनी

खुजली.

(७४९) उनाबदाना ७ सीपस्तानदाना ७ सातेरा तोला ॥ परेशीयावसान तोला ॥ एकसेर पाणीमे उकाल उसका नितरा पाणी लेकर मिश्री मिलाकर फजर सांझ पीणा

दंत मंजन.

(७५०) मस्तगी अनारके सूके फूल जवाहरडे सूके आमले कत्था ये सब दोदो तोला और मोचरस कमरकस एकेक तोला

(७५१) मांजूफल कत्था बीजाबोल ये सब एकेक तोला सिकोनेकी छाल २ तोला.

(७५२) हीराबोल १ तोला कपूर आधा तोला चाक ५ तोला.

(७५३) तुखमेमरो अगर गिलेअरमनी बीजाबोल समुद्रके झाग (दरियाई फेन) ये सब एकेक तोला इनोंका मंजन तइयार करणा मसलना दांतोंके.

होमियोपथी तथा क्रोमोपथी.

अपने मुल्कमें इस वखत चार तरेकी दवायें चल रही है, देशी, यूनानी, इंग्रेजी तथा होमियैपैथिक इसके सिवाय इलेकट्रो होमियोपैथिक नामकी दवाये दुसरा सोध कितनेक दिनोसें जाहिर भया है, फेर इस वखतमे योगविद्या पचभौतिक याने इस शरीरमें पांच भूत पृथिव्यादिक जैसा रगकी सादृश्यता है, ततूसदृश भाव होता है, लेकिन् पंच भूत रूप ये शरीर नहीं है, पृथवीका काठिन्य धर्म है, हड्डी उसके जेसी कठिन है, इत्यादि पच भूतोंका सादृश धर्म इस वदनमे हैं, एसा समझना ओपमा सत्य जेसे नेत्र कमल जेसे लेकिन् कमल तो नहीं इसतरे पृथवीका पीलारग इसके देव आचार्य सो वदन में पित्तादिक वस्तुकेइयक पीले रगकी है, जलका श्वेतरग इसके देव अर्हंत परमेश्वर है, इसतरे इस वदनमें वीर्य कफादिक अनेक वस्तुओंका सुपेद रग है, अग्निका लाल रग देव इसके सिद्ध परमात्मा है, वदनमें खून आदि पदार्थोंका लाल रग है, वायूका हरारग देव इसके उपाध्याय है, इस वदनमें पित्तादिक अनेक वस्तुओका हरारग है, आकासका काला रग देव इसके सर्व साधू है, आंखोके कीकी वगेरे इस वदनमे अनेक जगे काला रंग है, इसवास्ते रगसें रोगोंके अच्छे करनेका प्रयोग उद्योत (याने उजालेमें) आया है, इस इलाजकू क्रोमोपथी कहते हैं, होमियोपथी तथा क्रोमोपथी के कितनेक प्रयोग बहोत लाभकारी गुणदायक है, इसतरेकी दवा सादे पाणीके रूपमें अथवा बूरा खांडके रूपमें सहेजसें अद्मी स्वाद समझके ले सकता है, क्रोमोपथीमें तो फकत सादा पाणीही होता है, इसवास्ते इस प्रयोगमें जादा वैद्यकू खरचभी नहीं लगता प्रजासें विना खरचवणसके ऐसा है, इसवास्ते इस पुस्तकमें थोडा ये प्रयोग लिखताहू इस प्रयोगका असर २ धीमे २ होता है, इसवास्ते धीरजसें सुधरणेवाले रोगोंपरही इसका प्रयोग विशेषपणे करना वाजिव है, श्रीसिद्ध चक्र यंत्राधिराजमें पूर्वोक्त पांचू देवोंका चित्र पांच रगसे इसीवास्ते दिया है, इसीवास्ते श्री श्रीपालराजा आदि सातसे कोढियोंका अठारे जातका कोढ यत्राधि राजके जलका स्नपन (शाते पाणीके)ऊपर लगानेसे चला गया पचम कालके महात्मसे मनुष्योंका धीरज पुन्य चित्त समाधि थोडी

होनेसें अब धीरे २ असरकर रोग निश्चै मिटाता है, इस सर्व रोगापहारी जलका महात्म विवेरवार श्रीपाल राजाके वडे चरित्रमें है, इसके आधारसें बुद्धिवानोनें प्रयोगके अतरसें क्रोमोपथी नाम धरके चलाया है, जैनियोंके इस जलका रिवाज चैत्रका महीना जोके कफ पैदा करनेवाला है, और पित्तादिक अनेक रोगोकू पैदा करनेवाला आसोज का महींना है, उसमें नव २ दिन दर वर्षमें होता रहता है, लेकिन् करने और करानेवाले दोनों अजाण होनेके सबब असर पूरा प्रयोगका नहीं कर जाणते केवल केइयक आस्तिक लोक श्रद्धा मुजब इस जलकु वदनमें लगाते हैं, मकानोंमें छांटते है, अब आशा है की इस अन्य विलायतवालोंका क्रोमोपथी प्रयोगकू देख विधि सयुक्त श्रीसिद्ध चक्र यत्राधिराजकू यथातथ्य समझ करके इस स्नपनका गुण समझेगे चरित्रकारने अनेक रोगोंका मिटानेवाला रोगोका नामादिक तक लिखे हैं, रोगादिकोपर स्नात्रके जलका प्रयोग कर हम प्रत्यक्षपणे रोग मिटा सकते हैं, किसीकू सका होय तो हाथ कगणको आरसी क्या यह विद्या जैनियोंके दशमें विद्याप्रवाद नामा पूर्वमे अर्हंत सर्वज्ञोने कथन करीथी उसका उद्धारही श्रीपाल चरित्रमें मुनिचद्र गुरुने प्रत्यक्ष कर दिखलाया है, लेकिन् इतना हम और लिखते हैं, यह प्रयोगमे कर्त्ताकी भक्ती द्रव्यसे और भावसें जरूर करना आप कर सके तो यथारुचि कारण सर्व ससारी जीवोंके पेट लगा है, इसबातकू समझदार तो समझतेही हैं, केइयक लोक स्वार्थ तत्परही होते हैं, कहते है, हम पिया हमारे वैल पिया अबकू आचा है, गिरपडे इस प्रयोगमें वैद्यादिक प्रयोगके कर्त्ताके हाथमें कुछभी डोरी नहीं है, औषधी आदि प्रयोगोंमें तो दवाईके वाहने द्रव्यादिक लेते हैं, इसमें वो वात है, नहीं, उपगारीका उपगारका वदला हर वाहणे उतारणा श्रेष्ठ पुरुषोंका धर्म है,वोकर्त्ता नहीं ले तो उसका उपगार कायम समझणा किंनहुना

होमियोपथी.

रोगियोंका रोग मिटानेकू ससारमें अनेक तरेकी युक्ति और उपचारचलता है होमियोपथी ये कुछ जुदा वैद्यकशास्त्र नही है लेकिन् रोग मिटानेकू एक नइतरेका चिकित्सा क्रम है "Like cures like" ये इस चिकित्सा क्रमका सिद्धान्त है होमियोपथीका शब्दार्थ स्थितीकी समानता एसा होता है जिसकरके रोग पैदा होता है उसही वस्तुसें रोगकू मिटाना एसी इस चिकित्साकी प्रनाली है हरेक रोगमे उसरोगकू मदत करनेवाली दवादेणी एसा होमियोपथीका केवल उलटाही क्रम है बुखारवालेकु बुखार पैदा करनेवाली दवा दस्त लगते होय जिसकू दस्त लगानेवाली दवादेनेमें आती है गरमीके रोग गरमदवासें ठढीका रोग ठढीदवासें मिटानेमें आता है होमिपयोपथी इलाजमें एकेक अलग २ दवाका उपयोग होता है याने अग्रेजी यूनानी तथा देशी इलाजोंमे एकेक अलग २ अथवा घहोतसीदवा मिलाकर देनेमें आती है और होमियोपथी इलाजमें हरेक

रोगमें हरकोई एकही दवा दिये जाती है, फेर होमियोपथी इलाजमें जुलाब उलटी खून निकलवाणा वगेरे बलाष्टर मारफफोला उठाणा वगेरे तकलीप देनेके इलाज और रोगीकू अशक्त करनेवाले इलाज बिलकुल भाग्य योगही स्यात् करते होयगें और तुरतही रोगपर असरकरे एसी दवा करनेकी चाल है, इत्यादि कारणोसें कितनेक रोगियोंकूं होमियोपथीक इलाज जादा अच्छा लगता है, रोग मिटाणेकी चिकित्सा पद्धतीमें एक तरफ एलोपथी ओर दुसरी तरफ होमियोपथी इसमेसें कोणसा इलाज अच्छा है, इसवास्ते अभिप्राय देना यह काम अभी तो मुस्किल है, रोगरूपी शत्रूओंका नाश करनेकूं ये सब युक्तियों विद्वानोने शास्त्र तथा बुद्धि बलसें सोधके निकाली है, और जहांपर जो युक्ति सहजसें जलदी हुक्म उठावे रोग मिटावे उसका आसरा लेना ये इस वखत चतुर बुद्धिवानोंका काम है, होमियोपथीक चिकित्सामें होमियोपथीक डाकटर तथा होमियोपथीक चिकित्सा पद्धतीकूं जाननेवाले रोगी जो दवा इस वखतमें वापरते है, उसमेके मुख्य २ दवायोंका उपयोग इस ग्रंथके छठे प्रकाशमें दाखिल किया है.

होमियोपथिक दवाये मुख्य करके दो तरेकी होती है, एक तो अर्क दुसरी गोलियांकी मात्रा सामान्य तोर २ बूदकी है, और वडी छोटी गोलीकी सामान्य मात्रा २ और ४ है, गोलियां अर्क करते जलदी विगडती है, अर्थात् गुण रहित हो जाती है, इसवास्ते जिसकू ये दवा वापरणी होय तो अर्कही दुरस्त वहोत दिनोतक विगडता नहीं

मूल दवाके प्रवाही अर्क (टिंकचर) के संग पाणी या स्पिरिट ओफ वाईन मिलाणेसें दवा जादा और कम जोरवाली होती है, मूल दवा Q निशाणीसें पहचाणे जाती है और दवाईके नामके संग वो निशाणी रखते हैं, मूल अर्कमें नव गुणा पाणी डालके जो प्रवाही वणानेमे आता है, उसके संग IXनिशाणी रखनेमें आती है,इसतरे IX सें उतरते आखरी 1000 X तक चढती घटतीकी शक्ति वाली दवा वण शकती है, और इस मुजब उसपर strength ऐसे चढते IX) 2x 3x एसे चढते २।००० X तक निशाणी रखनेमें आती है, वहोत करके रोग नया और तीक्ष्ण रूपमे ३०x की अंदरकी शक्तिवाली दवा जादे फायदे बंध होती है, और रोगके पुराणी हालतमें 30X पीछेके अंकवाली दवा फायदेबंध होती है, कितना स्ट्रेन्ग्थ वाली दवा देणी ये विशेष करके तो अनुभव और अभ्याससें समझ सकते हैं, लेकिन् इतना ध्यानमें रखणा के तीक्ष्ण रोगोमें 3x 6x वाली दवा जादा फायदा करती है, इपीकाक्यु आन्हा, चाइना, जेल्सीमीयम, और एसिड फोसफोरिकम ये दवाये IX रूपमें अच्छा फायदा करती है, हिपार सल्फ सीलीशीया एन्टीमनी कूड वगेरे 5x अथवा 6x के प्रमाणमे वापरते हैं, पुराणे रोगोमें ये दवायें 30x के प्रमाणमें दिये जाती है.

होमियोपथीक दवा दिनमें थोडी वखत अथवा जादा वखत देना इस बातका खुलाशा तो रोगकी जाति और उसके लक्षणोपरसें हो सकता है, बुखारमें ये दवा एकेक दो दो घटेसे दिये जाती है, और केदस्तकी वेमारीमें दश या पनरे मिन्टके फासलेसें देते हैं, नाडी तूट जाय तो पाच २ मिन्टसेभी दिये जाती है, पुराणे रोगोंमें दवा दिनमें मात्र एका ध वखतही देणी चाहिये और कितनेक रोग ऐसे भी है, सो एक दिनके फासलेसें अथवा दो तीन दिनके फासलेसें एक वेर ही दवा दिये जाती है, रोग ज्यू जादा भयंकर होय उसके चिन्हमें जूं जोखम दिखाइ देवे तब दवा जलदी २ बहोत वखत देना चहिये बाहरके इलाजवास्ते होमियपैथिक दवाये अपने मूल रूपमें वापरते हैं, और ० निशाणीसें पहचाने जाती है

देशी इलाजोंमें पथ्य पालनेकी वेर २ आज्ञा देनेमें आती है, तैसें होमियोपथिक दवाइमे भी पथ्य पालणेकी विशेप जरूरत है, होमियोपैथिक दवा लेनेवालेनें और रोगके चिन्ह सख्त होय ऐसे रोगीकू तो जरूरही पथ्य करना दुसरी कोईभी दवा दवाके गुणवाला पदार्थ नसेवाला मादक पदार्थ उत्तेजक पदार्थ जेसेके चा काफी दारू सख्त खसवो स्वादवाली कोइभी चीज जेसेके आदा आंवली राई कपूर हींग लेग जायफल अथवा जो चीजों गरम मसालेमें आती है, ऐसी सब चीजोंका त्याग करना.

वहोतसे कुटंबवाले लोक होमियोपथिक दवाकी सदूक रखते हैं, और पेटीके सग तथा दवाओंकी शीशीयोंपर छापी भई सूचनामुजब उस दवाइयोंका उपयोग करनेमें आता है, मतलब होमियोपेथिक दवाये वैद्यदीपक मुजब साधारण दवा मुजब बहोतसे कूटंबोमें इस वखत चलणे लगा है इसवास्ते ऊपर लिखी थोडी सूचनाके सग इस पुस्तकमें होमियोपैथिक दवाओंका किसी २ जगे उपयोग दीया है

क्रोमो पथी.

रंगसे रोग मिटाणा इस चिकित्साक्रमकू क्रोमोपथी एशा दुसरे विलायतवालोंने नाम धरा है, उसका सिद्धात एसा है के शरीरमेंसे चोकस रग कम होणेसें रोग होता है और वोरग फेर लाणेसें रोग कष्टसाध्य तक दूर हो जाता है, मुख्य रग लाल, आसमानी [ब्ल्यु] और पीला है बाकी हरा और सुपेद है रोग मिटाणेके पहले इस बातका निश्चय कर लेणा चाहियेकी बदनमेंसे कोणसा रग कम होगया है, और पीछे एसा विचार पूरा होणा चाहिये के किसतरे वोरग पूरा करणा बदनमें कोनसा रग कम पड गया इस बातकी परिक्षा करणेकू जोजो बात जाणणेकी जरूरी है उसमेंकी मुख्य २ नीचे मुजब इस परिक्षामें मूल चार जगे देखणेकी जरूरी है, आखके डोलोंका रग नखोंका रग पेशाबका रग और दस्तका रंग ४ लालरग जिसके बदनमे कम पड गया होगा उसके

आंख के डोले तथा नाखून स्वभाव करके आसमानी रंगका होता है, और उसका दस्त पैसाब सुपेद अथवा आसमानी रंगका होगा.

आसमानी रंग जिसके वदनमें कम पडा होगा उसकी आंख लाल रंगकी होगी उसके नख थोडे या जादा लाल होगा पेसाब ललाइ लिये पीलासपर होगा अथवा फक्त लाल होगा और दस्त पीलाया लाल होगा.

वदनमें असली रंगकी वधघट थोडे या जादा प्रमाणमें सब वदनमें फैली भई होती है तोभी कितनेक वखत वोवदनके चोकस भागपर एकठा भया मालम देता है, और उस रोगवाले भागकू अपणे जुदे २ रोगके नामसें कहते हैं, जेसेके फोडा आंख दुखणी शिरका दरद लकवा वगैरे चोकस अवयवपर दिखते भये सब रोग खास उस अवयवके संगही संबंध रखता है एसा नहीं मानना चाहिये इस रोगोपरसें अपणे चेतना चाहिये इस तरेके रोगकी अथवा रंगकी सब वदनमें वधघट भई है और जेसें उन रोगोंपर उपरका इलाज फायदेबंध है, तेसें अंदर पीणेके उपायभी जरूरीसें कामके हैं

रोगकी परिक्षा करणी वडी मुस्किल है, अदमी भूले विगर हरगज नहीं रह सकता तोभी रोगकी परिक्षा करणेकूं मुख्य साधन आंखका डोला है लेकिन किसी २ वखत एसा हालवणता है, के आंखपर ललाइ होती है तोभी वदनमे लाल रंग कम होता है कारण नाताकत अदमी जब मगजसंबंधी बहोत काम करता है, तब एसे अदमीका मगज दुसरे भागोंसे गरमी जादा दिखाती है, और वो शक्तिके ऊपर कर काम करणेका निशान है, तब तो एसी आंखकी ललाइ देख परिक्षा परसे भूल होना कोन वडी बात है, अब दुसरी तीन जगे [नाखून दस्त पैसाब] से एसी भूल नहीं हो सकती क्योंके इनोंके रंगपरसें जिस रंगकी वदनमें कमी होती है वोही रंगकी खबर हो जाती है बचोंका तेसें ठंढे मुल्कोंमें रहणेवालोंके आंखके डोलेका रंग जादा तर स्वभाव करके पीलाही होता है इसवास्ते एसे रोगियोंकी परिक्षा मुख्य करके नाखून दस्त तथा पैसाब परसें करणा चाहिये.

(सिद्धांती इलाज) रंगपरसे सनातन धर्मवाले प्रजा हितकारीयोका मताभिमान त्याग मध्यस्थ बुद्धिसे विचार लाभका कारण जाण सर्वोंकों करणेयोग्य है जिसमे इस लोक और पर ॱक दोनुमें फायदा बद होय द्रव्ये और भावेंसो लिखता हु.

.क .ह श्रीनाभिराजाके ध्नें यत्राधिराजके गद्देमें पांच

रंगका चित्र ।क। लिखा उसा.प . जापके

वास्ते सर्व प्रजाकू । सर्व प्रथम नमोर्हत्सिद्धा-

चार्योपाध्याय सर्व वर्णमा-

लाके द्वापंचाशत् अक्ष

ब्राह्मी पुत्रीकूं सिखलाई फेर पूर्वोक्त पंचपरमेष्ठीका आदि अक्षर एकेक लेकर जैनेंद्रव्याकरण बणाकर उसके सूत्रोंसें ॐ एसा प्रणव बीज सिद्धकू साधकर बतलाया वो सिद्धांत चंद्रिकाके सूत्रोंसें हम साधकर दिखलाते हैं अरिहतका अकार सिद्ध अशरीरीका अकार आचार्यका आकार उपाध्यायका उकार मुनिःका मकार अ अ आ उ म् सवर्णे दीर्घः सह यह सूत्रसे दोनो अकार मिटकर आउम् रहा उओ इस सूत्रसे आ और उ मिलके ओम् भया मोनुस्वार सूत्रसें ॐ भया फेर विद्वज्जन विचारके देखेगें जिसके बदनमें लाल रंग कम पडा होवे उसकू गट्टेमेंसें सिद्ध परमात्माकी मूर्त्ति जो लाल रगकी है, इसपर एकांतमें बैठकानोसे दुसरेका शब्द सुणाइ नहीं देवे एसी जगे मुखकी श्वासकूरोकनाकसें श्वास लेता ॐ ऱ्हीं णमो सिद्धाण मनमें जपता भया दोनु नेत्र सिद्धमूर्त्तिपर रख्के लाल रग बराबर होजायगा रोग निश्चे मिटेगा आसमानी रग कम पडा होयतो साधूपदकी मूर्त्ति जो गट्टेमे स्याम रगकी है, उसपर पूर्वोक्त विधिकरे मनके अदर ॐ ऱ्हीं नमो लोएसव्वसाहूण जपे पीला रग कम पडा होयतो आचार्य पदकी मूर्त्ति पीले रग सुनेरी है, उसपर पूर्वोक्त विधिकरे मनमें ॐ ऱ्हीं णमो आयरिआण एसा जाप जपे वीर्य रस कफ स्वेत रग कम पडा होयतो अर्हतकी मूर्त्तिपर पूर्वोक्त विधिकरे ॐ ऱ्हीं णमो अरिहताणं जाप जपे हरा रग कम होणेपर या वायुके विकारोमें उपाध्यायकी मूर्त्ति हरे रगपर एकाग्रता करे ओं ऱ्हीं णमो उवज्ञायाण एसा जाप करे इस विधिसें सर्व रोग मिटते हैं. इसकी विस्तार विधि बृहत्नमस्कार कल्पमे हैं, ये विधि सर्वज्ञ परमेश्वरकी बताई है, अब मनुष्यकृत इसका भेदांतर जो चला है सो लिखते हैं क्रोमोपथीका इलाज लेन्सीस याने काच करके बदनमे रग देकर करणेका है उसके वास्ते खास जुदे २ रगोंके काच चस्मे तथा दुरबीनके जेसा बाहरसें तेसें अदरसें उपसे भये तइयार आते हैं लेकिन् एसा काच हरकोई अदमीकू मिल सके एसा मुस्किल है, इसवास्ते क्रोमोपथीका इलाज हर कोइभी सहजसें करसके उसकेवास्ते एक सुलभ रीती सोधकर निकाले गई है, इस सुगम रीतके दो प्रकार है, १ जुदे २ रगकी सीसीयों २ जुदे २ रगके काच प्रथम शीशीयोंका इलाज जुदे रगकी शीशीयों खाली एकठीकर उसकू अछीतरे साफ करणा उसमें कूवेका पाणी अथवा बाफ रूप निकाला भया डिस्टील्ड पाणी अथवा बरसादका झेला भया पाणी भरणा और मजबूत बुचसे बध करणा पीछे उस सीसीयोंकू सूरजका सख्त धूपमें कमसे कम दो घटेतक रखणा दोघटेसे जादा धूपमे रखणेसें बाटलीका पाणी जादा गुणकारी होता है इसमुजब धूपमें रखा भया शीशीका पाणी दवा मुजब गुण करता है, और जुदे २ रगकी बाटलीमें तइयार किया भया पाणी जुदे २ रोगोंपर असर करता है, शीशीयोंको दर तीसरे दिन बहोत अछीतरे धोकर साफ पारदर्शक करणी चाहिये नहीं तो उसमें धूपका तइयार किया भया पाणी अछीतरे असर करेगा नहीं. इन शीशीयोंका

जल रोगोंपर बाहिर लगाणेमें तथा अंदर पीणेमें दोनोंतरे फायदा करता है, इस पाणीकी मात्रा बडी ऊमरवालेकू२॥ रुपिये भरकी है ऊमरके वधघटमुजब इस पाणीकी मात्रा कम वेसी करी जाती है, पुराणे रोगोंपर ये पाणी दिनमें कम देणा चाहिये और ऊपर लगाणेमें ये पाणी चाहे जितना लगाया जाता है कोइ किसमका डर नहीं है, खांड अथवा खांडकी गोलियां चोमासेमें काम देती है कारण चोमासेमें सख्त धूप गिरता नहीं. तब एसा पाणी तइयार होसकता नहीं और एक वखत शीशीमें तइयार किया भया पाणी एकाध दिनसे जादा गुणवाला रह सकता नहीं इसवास्ते एसी ऋतूकेवास्ते सिद्ध चक्रके गट्टेके रंगका अथवा यत्रके स्नानका जल अथवा क्रोमोपथीके रंगका इलाज करणेवास्ते शीशीयोंमें मिश्री अथवा होमियोपैथियोंकी बनाई भई खांडकी गोलियां जुदे २ रगकी शीशीयोंमें भरके एक पखवाडेतक हमेस सूर्यके धूपमें धरणा चाहिये पीछे इस मिश्रीका या गोलियों का रोगोंपर अनेक प्रमाणमें वरतावा करणा.

(काचका इलाज) जुदे २ रंगके काचका याने काचमेसें पसरी भई रोसणीका दवामुजब रातका तेसें दिनका उपयोग हो सकता है, दिनकू ओरेमें उजाला आणेका सब रस्ता बधकर रंगीन काचवाली बंध करी भई काचकी रोसनी रोगीके शरीरपर लेणेसें वो रोसनी दवाका काम करती है, और जिस तरेके रगकी जरूरी होय वोही रंगकी काचकी रोसनीका उपयोग करणा वदनके जिस जगे रोग होय उसही जगे उस रंगके काचकी छाया पडे एसा होणा चाहिये जो धूपकी सख्त रोसनी नहीं सही जाय एसा होय तो उजाला होय एसी धूप विगरकी याने छायावाली जगामें ये इलाज अजमाणा रातकूं काचके रंगका उपयोग करणेकूं लालटेन रंगीलका उपयोगकरणा चारोंतरफ चार रंगका काच लगवाणा लाल आसमानी हरा पीला पीछे जिसरगकी रोसणी रोगीके वदनपर अथवा रोगकी जगे देणा होय उस भागपर वेसे काचकी रोसणी अंदर धरी चराकसें गिरती है.

रंगोंकी वदनपर असर-१ ब्ल्यु (असमानी) गहरा काला लाल पीला वगेरे रग जुदे २ वदनपर कैसा असर करता है उसकी सामान्य समझ नीचेमुजब.

ब्ल्यु-आसमानीरंग-आसमानी लाल पीला इन मुख्य स्वाभाविक रगोंमें आसमानी रंग जादा. जरूरीका है सृष्टिका दरेक प्राणी आसमानीरंगके भानमे जीते हैं याने आकाश तथा सर्व साधुपदकी थापनाका आसमानी रग है. इसवास्ते दुनियां अबाद रहती है ये ब्ल्यु रग ठंढा शाति देणेवाला स्तंभक (दस्त तथा खूनके प्रवाहकू अटकाणेवाला) वदनकी गरमी तथा उष्णताकूं मिटाणेवाला है. एसाही शांतदांतके दातार अशुभ कर्मोकेवश अधोगतीमें जाणेवाले जीवोंके स्तभक क्रोधादि कषायकी उष्णताकू मिटाणेवाले षट्कायाके पालक आकाश जैसें सुपेत वद्दलोंकों धारणकर सर्व तरेका रस

पैदा करनेवाला मेघ वरसता है, तैसे जती साधु श्वेत वस्त्र धारणकर अनेक स्याद्वादनय. वादकी धाररूप झडीसें वाणी अमृतरूप मेघ वरसाते नव रसोंका स्वरूप प्रकट करते हैं, इस रगका पाणी अथवा प्रकाश इतने रोगोंमें जादा फायदे वद है.

(१) गरमीके रोग.	(२) चमडीके रोग.
(३) हैजामरी.	(४) व्युबोनिक प्लेग.
(५) हडकवायु	(६) मरोडा.

गहराब्ल्युरग–इस रंगमें नीलका रग अथवा जामूनी रगका समावेश होता है, इस रगमें लाल रंगका अश होता है, कितनेक रोगोंमें ब्ल्यु रगके संग लाल रगकी भी जरूरी पडती है, उस जगे ये रग फायदा करता है, जिनरोगोंमें खुल्ला आसमानी रग वापरणा कहा है, और जो रोग वुढे तथा नाताकत अदमीकू भया होय उहा खुल्ला आसमानी रगकी एवजीमें गहरा आसमानी रंग वापरणा–फेफसेका वरम (न्यूमोनिया) श्वास-नलीका सोजा खालीठसका और वचेकी कुकडिया खासी वगेरे रोगोंमें गहरे ब्ल्यु रगका पाणी पीणेकूं देणेमें आता है, वहोत दिनोंकी वदहजमी पेटका रसविकार जिसमे अगार सीजले तथा उलटी होय और दस्तमें गहरा ब्ल्यु रग फायदा करता है

पीलारग–शुद्ध पीले रगकी शीशियों मिलणी मुस्किल है, जो वजारमें पीले रंगकी शीशियों मिलती है, उसमें लाल रगका जरा अस होता है, इसकू फीका नारगीके रगके नामसें लोक कहते हैं, जिस रोगमें लाल रग फायदा करता है, उसरोगोंमें वीश वरसके अंदरके दरदियोंपर पीला रंग वापरणेसें जादा फायदा करता है पीले रगकी वाटलियोंके पाणीका उपयोग इनरोगोंमें करणा (१) पेटकी कबजी (२) वदहजमी (३) रक्तपित्त जिस रुजगारवालोंकू वहोत देरतक वैठे रहणा पडता होय जैसेंके दुकानदार वेपारी और कोटोंमें वैठके काम करणेवालोंकूं ये रग वहोत फायदा करता है

लाल रग–गरमी देता है, नसोंकू ढीलीकर श्रावकू वढाता है, और वदनकी सुस्तीकूं मिटाय वदनमें तेज लाता है, जादा आसमानी रंगसें वदनके जो भाग सुकड गये होय उसकू लाल रंग खुल्लाकर देता है, इस रगसे लकवा वगेरे वायुके रोग अच्छा होणा संभव है

इतिश्रीमज्जैनधर्माचार्यसग्रहीते उपाध्याय श्रीरामऋद्धि सारगणिः विरचिते वैद्यदीपक ग्रथे औषध्यादि निघटवर्णनो नाम पचमः प्रकाश. ॥

प्रकाश ६ छठा.

परिक्षा इलाज पथ्य.

इस छठेप्रकाशमें नीचे लिखे विषयोंकों किरणोंद्वारा प्रकट किया है.

किरण पहली १ बदनके सामान्य रोग,	किरण ८ मी–चमडीके रोग,
किरण दुसरी २ श्वासोश्वासकी क्रियाके रोग,	किरण ९ मी–छुटकर रोग,
किरण तीसरी ३ रक्ताशयसंबंधी रोग,	किरण १० मी–स्त्रीयोंके रोग,
किरण चौथी ४ पक्वाशयसंबंधी रोग,	किरण ११ मी–बच्चोंके रोग,
किरण पांचमी ५ मूत्राशयसंबधी रोग,	किरण १२ मी–पशुओंके रोग,
किरण छठी ६ मगजसंबंधी रोग,	किरण १३ मी- मरदमीकी दवा,
किरण सातमी ७ आंख कान नाकके रोग,	किरण १४ मी–छुटकर इलाज,

किरण पहली १

ज्वर–बुखार.

(बुखारका संक्षेपवर्णन)–बुखारका मरज जेसा सामान्य है, तैसे बडासख्त भी है, सब रोगोंमें वो मुख्य होणेसें वो रोगोंका राजा कहलाता है बुखारोके कितनेही भेद है, लेकिन् ये सब तरेका बुखार किस मूल कारणसें पैदा होता है, तथा किसतरे चढता है, और उतरता है, इन सब बातोंका संतोष करनेवाला समाधान करनेकूं विद्वान लोक अभीतक कोईभी शक्तिवान् नहीं भया है, किसीभी ग्रथमे ज्वरकी बाबत समाधान पूरा खुलासेके सग किया भया नहीं है, बुखारका विषय बहोत गहन है, इसवास्ते ऐसे ग्रथोंसें बुखारका फकत सामान्य स्वरूप और उसकी सामान्य चिकित्सा जाणनेमें आवै इतनाही बस है, एसा विचार कर इसजगे मुख्य २ बुखारका कारण लक्षण और उपाय बताणेमें आया है.

बदन गरम होकर तपना अथवा बदनमें जो स्वाभाविक उष्णता होणी चहिये उससें जादा गरम होना ये बुखारका चिन्ह है, लेकिन् इसतरे शरीर तपनेका क्या कारण है, और वो क्रिया किसतरे होती है, ये बाबत बहोत सूक्ष्म है, देशी वैद्यकशास्त्र बुखारका खुलासा इसतरे किया है, वात पित्त कफ ये तीनों दोष अयोग्य आहार विहारसें जठरमें जाकर रसकूं दूपितकर कोठेकी अग्निकी उष्णताकू बाहर निकाल ज्वरकू पैदा करता है, इस बाबतकूं विचारते एसा सिद्ध भया के वाय पित्त कफ इन तीनोंकी समानता यही आरोग्यताका चिन्ह है, और विषमता अथवा कम वेसीपणा येही रोगका चिन्ह है, ये समानता अथवा विषमता आहार विहारपर आधार रखता है, इस क्रमके देखणेसें यहभी

सिद्ध भयाके जैसें वदनमें वायुका वढणा और रोगोंकों पैदा करता है, तैसें वातज्वरकूभी पैदा करता है: इसीतरे पित्तकी अधिकता पित्तज्वरकू कफकी अधिकता कफज्वरकू पैदा करता है, इसमेंके दोदो दोषोंकी अधिकता दोदो दोषोंके लक्षणवाले ज्वरकू पैदा करता है, और तीनों दोष विगडता है, तव तीनों दोषोंके लक्षणवाला त्रिदोष सन्निपात ज्वरकू पैदा करता है.

(बुखारका भेद) बुखारके भेद किसतरे करणा ये तो वडी कठिन वात है, क्योंके बुखार वहोत कारणोंसे पैदा होता है, ये कारण दो प्रकारका है, आतर याने शरीरके अदरसे पैदा होनेवाला वाहिर याने वाहिरसे पैदा होनेवाला आंतर कारनोंका तीन भेद है, आहार विहारसें रश विगडकर बुखार आता है, उसमें सर्व साधारण बुखार जैसेंके तीन तो अलग २ दोषवाला दोदो दोषवाला तीनों दोषवाला विषमज्वर वगेरे ज्वरोंका समावेश होता है, और वदनके अदर सोजा तथा गांठके होनेसें बुखार आता है, और जिसकू अग्रेजी वैद्यकमें बुखारके प्रकरणमें गिणनेमें नहीं आया लेकिन देशी वैद्यकमें जिसकू बुखारके भेदोंमें गिणा है, वो अतर कारणसें आनेवाला बुखारका दुसरा भेद गिणा है, वाहिर कारणोंके ज्वरमें सर्व आगतुकज्वर (जिनोंकी वावत पीछै लिखणेमें आवेगा) तथा हवामें उडते चेपी बुखारोका समावेश होता है

देशी वैद्यकशास्त्रमुजव बुखारका भेद– नीचेमुजव

(१) वातज्वर,	(६) कफपित्तज्वर,
(२) पित्तज्वर,	(७) सन्निपातज्वर,
(३) कफज्वर,	(८) आगतुकज्वर,
(४) वातपित्तज्वर,	(९) विषमज्वर,
(५) कफवातज्वर,	(१०) जीर्णज्वर

अग्रेजी वैद्यकशास्त्रमुजव बुखारका भेद–नीचेमुजव

(१) जारी बुखार उसके भेद नीचे मुजव

(१) सादा तप (२) टाइफस (३) टाईफोइड (४) फिरफिर आनेवाला आंतरका भेद (१) हमेशका ठड देके आनेवाला

(२) एकातर देशी वैद्यकमुजव विषमज्वरके भेद

(३) तेजरा (४) चोथिया

(३) रिमिटट फीवर–देशी वैद्यकमुजव विषमज्वरका एक भेद सतत.

(४) फूटकर निकलनेवाला बुखारका भेद नीचेमुजव

देशी वैद्यकमें मसुरिका क्षुद्ररोग तथा मूधोरा नामसें लिखा है

(१) शीतला,	(७) हेजामरीका तप,

(२) ओरी, (८) इन्फल्युएनझा,
(३) अचपडा, (९) मोतीज्वरा,
(४) लालबुखार, (१०) पाणीज्वरा,
(५) रगीला बुखार, (११) थोथीज्वरा,
(६) रगतवायुविसर्प, (१२) काला मूंधोरा.

(बुखारके सामान्य कारण) अयोग्य आहार और अयोग्य विहार ये बुखारका सामान्य कारण है, इस कारणोंसे वदनका धातुविकार पाकर बुखारकूं पैदा करता है, अयोग्य आहार विहारमें बहोतसी बातोंका समावेश होता है, बहोत गरम तथा बहोत ठंढा खुराक बहोत भारी खुराक बिगडा भया और बासी खुराक तासीरके विरुद्ध खुराक ऋतु विरुद्ध खुराक बहोत महनत बहोत गरमी लेना अति ठंढ बहोत भूख बहोत विलाश खराब पाणी खराब हवा ये सब बुखारके तरे २ के कारण है

(बुखारके सामान्य लक्षण)— बुखार बहार दिखाणेके पहले थकेला चित्तकी बेचेनी मूसें विरसपणा आंखोंमे पाणी आणा जंभाई ठंढ हवा तथा धूपकी वेर २ इच्छा और भूखका अभाव अंगोंका टूटणा वदनमें भारीपणा रूंखडे होणा खुराककी अरुचि इत्यादिकलक्षण सरू होते हैं, ज्वरभरे पीछै चमडी गरम मालम देणा ये बुखारका प्रगट चिन्ह है, बुखारमें पित्त अथवा गरमीका मुख्य उपद्रव होता है, बुखार प्रगट भया पीछै वदनमें उष्णता भरणेके संगऊपर लिखे सब चिन्ह जारी रहते हैं.

वातज्वर.

(कारण) विरुद्ध आहार विहारसें कोपपाया भया वायु होजरीमें जाकर होजरीका रस (आम)कू दूषितकर ज्वरकी गरमीकूं बाहर निकालती है, उसकरके वातज्वर पैदा होता है

(लक्षण) जंभाई आणा ये वातज्वरका मुख्य चिन्ह है, सिवाय बुखारका वेग कमती वेसी होणा गला होठ तथा मूका सूकणा निद्राका नाश छीकका बंध होणा वदनमें लूखापणा अवयवोंका दूखणा दस्तकी कबजी इत्यादिक दुसरे भी चिन्ह मालम पडते हैं, ये बुखार जादातर वायुप्रकृतीवालेकू तथा वायु प्रकोपकी मोशमवर्षा ऋतुमें पैदा होता है.

इलाज (१) लंघन सब बुखारोंमें लघन हितकारक है, तोभी दोष तासीर बालक वृद्ध शरीरकी स्थितिका विचारकर लघन कराणा वातज्वर प्रबलमें तीन लघन कराणा लेकिन् शरीर ताकतवाला होय तो शक्ति मुजब १ से ६ तक लंघनकराणा लघणकरणा याने मुद्दल नहीं खाणा एसा लंघनका अर्थ नहीं है, थोडाखाणा हलकाद-लिया या भात या मूंगकी अरहडकी दालपीणा ये भी लंघनही कहलाता है, साधारण

वातज्वरमें एकाधटक लांघनकर पीछे तासीर तथा दोषके अनुसार हलका खुराक लेणा ऊपर लिखासो बुखारका उत्तम पथ्य है, पथ्य यथार्थकरणेसें दवा नहीं लेणी पडती (२) लघुसुदर्शन चूर्ण (न० ३२ मेंदिया भया है, उसकी फक्की अथवा फांटचा अथवा हिमकरके पीणा इसतरे लघन तथा सादे इलाजसें बुखार नहीं जायतो सब बुखारवा- लोकों तीनदिन बाद देवदारु तोला २ धाणा तोला २ सूठ तोला २ रिंगणी तोला २ वडी कटाली तोला० २ देवदारू तोला २ इन सबोकों कूट १ तोलेभरका काढा पाव पाणीका डेढ आना पाणी रखके देणा ज्वर पाचन होकर उतर जायगा अथवा सातमे दिन दोपकूं पकाणेकू न० २०० वाला (गुडुच्यादि क्काथ) गिलोय सूठ पीपरामूलका काढा शरू करणा उस करके बुखारका पाचन होकर ऊतर जायगा.

पित्तज्वर

(कारण) पित्तकू वधाणेवाले अहार विहारसें बिगडाभया पित्त होजरीमे जाकर होजरीके रसकूं दूपितकर जठरकी गरमीकू बाहर निकालता है, एक दोष कोपणेसें दुसरे दोषोको विगाडता है, एसानियम हे, इसवास्ते जठरमें गया दूपित पित्त जठरकी वायूकू कोपाता है, और कोपी भई वायु अपणे स्वभाव मुजब जठरकी गरमीकू बाहर निकालती है, उस करके पित्तज्वर पैदा होता है

(लक्षण)—आंखोमे दाह जलण होणी ये पित्तज्वरका मुख्य लक्षण है, बुखार वहोत जोरका दस्त उलटी पसीना वकणा दाह प्यास कठ होठ मूकापकणा मल मूत्र नेत्र पीला होणा और भ्रम ये पित्तज्वरके दुसरे लक्षण हे, जादातर पित्त प्रकृतीवालेकू तेसें पित्तके कोपकी शरद तथा ग्रीष्मऋतूमें इस बुखारका विशेष उपद्रव होता है

(इलाज) (१) लघन, दोपके जोर मुजब एकटक अथवा एकदिन अथवा भूख लगणेकी खबरपडे जहांतक लघण कराणा अथवा मूंगके दालका पाणी भात अथवा साबूदाणे पीणा डाकदर दूध पिलाते हे, पाचन देकर (२) पित्त पापडा अथवा घासिया पित्त पापडेका उकाला फाट अथवा हिम पीणा (३) पर्पटादि क्काथ (न० २०१) उसका फाट याहिम करके पीणा (४) दाख हरडे मोथ कुटकी किरमालेकी गिर और पित्तपापडा इनका काढा पीणेसें पित्तज्वर शोष दाह भ्रम मूर्छा वगेरे उपद्रव मिटकर दस्तसाफ आता हे, (५) पित्तपापडा रगतचनण सुपेद तथा काला दोनोंवाला इनोका उकाला फांट हिम पित्तज्वरकू मिटाता है, (६) रातकू ठढे पाणीमे भिजाया भया धाणोका हिम अथवा गिलोयका हिम पीणेसें पित्तज्वरका दाह शात होता है (७) पित्तज्वरके संग वहोत दाह होता होय तो कच्चे चावलोंके धोवणमें थोडा चदन तथा सूठकू घसकर चावलोके धोवणमें मिलाकर थोडा सहत तथा मिश्रीडालकर पिलाणा.

कफज्वर.

(कारण) कफ करणेवाले पदार्थ अहार विहारसें दूषितभया कफ जठरमें जाकर जठरके रसकों दूषितकर उसकी उष्णताकूं बाहर निकालता है, कफकोपपाकर वायूकों कोपाता है, कोपी भई वायु उष्णताकूं बाहर लाती है.

(लक्षण)–अन्नपर अरुचि ये कफज्वरका मुख्य लक्षण है, शिवाय अंगोमें भीगापणा बुखारका जोर मंद आलस मूमे मीठास मलमूत्र नेत्रका रग सुपेद अवयव अकड जाणा वदनमें भारीपणा ठंढ श्लेष्म बहोत नींद उबाकी छातीमे कफ मदाग्निवगेरे दुसरे चिन्हभी होते हैं, ये बुखार विशेष करके कफ प्रकृतीवालेकू तथा कफके कोपकी ऋतू वसतमें होता है

इलाज (१) लघन कफज्वरके रोगीकूं लंघन विशेष सहन होता है, और योग्य लंघनसें दूषित भया दोषका पाचन होता है, इसवास्ते रोगीकू जहांतक पक्की भूख नहीं लगे उहांतक खाना नहीं अथवा मूगकी दालका ओसामण पीणा (२) गिलोयका काथ फांट अथवा हिमसहत डालकर पीणा (३) भुनिंबादि काथ (नं० २०२) (४) लींडी पींपर हरडे बहेडा आंवलोंकू समभाग लेकर चूर्णकर उसमेंसे पाव २ तोला लेकर सहतमें चाटणेसें कफज्वर तथा उसके सगकी खासी श्वास कफ दूर होता है. (५) अरडूसेका पत्ता भूरीगणी तथा गिलोय इनोका उकाला सहत डालके पीना

दोदो दोष मिलातप.

दोदो दोष मिले तपमें दोदो दोषोंके लक्षण मिले होते हैं, और अनुभवी सूक्ष्म दृष्टि वाले वैद्यही पहचान सकते है, इस बुखारकू द्वंद्वज और मिश्र कहते है

(वातपित्तज्वर) (१) लंघन (२) किरातादि काथ) चिरायता गिलोय दाख आंवला और कचूर इसकी उकालींमें गुड तीनवर्षका डालके पीणा (३) पंचभद्र काथ गिलोय पित्तपापडा मोथ चिरायता तथा सूठका काढा

(कफवातज्वर) (१) लघन (२) लघुक्षुद्रादि काथ–पसरकंटाली सूठ गिलोय एरंडीकी जड़ इनोका काढा (३) आरग्वधादि काथ–किरमालेकी गिर पीपलामूल मोथ कुटकी जो हरडे इनोंकी उकाली (४) इकेली लींडी पीपरकी उकाली

कफपित्तज्वर (१) लघन पाचन (२) लोहितचंदनादि काथ–रगतचदन पदमाक्ष धाणा गिलोय और नींबकी अंतर छाल उकाली देनी (३) कुटकी आधा रुपियेभरकू जलमें पीस मिश्री मिलाकर पीणीया फाकणी इतनी गरम जलसें (४) अरडूसेके पत्तोंका रस (२ रु० भर) उसमे २॥ मासा मिश्री २॥ मासा सहत डालकर पीणा.

सादा जारी बुखार

(कारण तथा लक्षण) अनिमियत खानपांन अजीर्ण एकाएक अति ठंडीया गरमी

लगणी उजागरा और अतिश्रम विशेष करके एसा सादा बुखार ऋतूके बदलनेसें हो जाता है, और उसकी मुख्य ऋतु मार्च अप्रेल अथवा वसत तथा सप्टेंबर अक्टोबर अथवा शरद है, शरदमें पित्तका बुखार होता है, वसतमें कफका होता है, और जुलाइ महीनेमेंभी वरसादकी वातप्रकृतीवाली ऋतुमें वायुके उपद्रव समेत बुखार चढ आता है, ऊपर जो जुदे २ दोषका बुखार वर्णन किया है, उन सर्वोकी सादे जारी बुखारमें गिणती हो सकती है, ये बुखार अतरिया बुखारकीतरे चढा उतार नहीं रहता लेकिन एक दोदिन जारी बुखार आयकर तुरत उतर जाता है

(इलाज) सादा जारी बुखारके ऊपर तीनों न्यारे २ दोष वाले इलाज लिखे हैं, इसके सिवाय सामान्य इलाज लिखते हैं, वो सब जारी बुखारपर चल सकते हैं, जहा-तक बुखारमें किसी एक दोषका निश्चय नहीं होवे उहां इस इलाजोंकों चलाणा सादे जारी बुखारमें विशेष दवाकी जरूरी नहीं रहती एकाध टक लघन करनेसें आराम लेनेसें हलका खुराक खानेसे और दस्तकी कबजी होय तो उसका खुलासा करनेसें बुखार उतरजाता है, शरुआतमें गरम पाणीमे पांव डुबाणा उससे पसीना आके आराम होता है, बुखारमें गरम किया तीन उकालेका ठढा किया भया पाणी मांगे जब पीणेकू देणा आंखमें सूठ काली मिरच पीपरकू घस अजण कराणा बहोत हवा खुलेछत सोने नहीं देना खानेकू थलीदेशमें बाजरीका दलिया, पूरबवालेकू, भातकी काजी मांड, मध्यमारवा-डमें मूगका ओसामण भात, दक्षिणमें तूरकी दाल पतलीका पाणी अथवा भात मिलाकर, ये बुखार दोतीन दिन रहता है, लेकिन मिटकर वाजे बखत पीछा आजाता है, इसवास्ते बुखार गयेबादभी पथ्य रखना जहांतक ताकत नहिं आवे उहांतक भारी अनाज खाणा नहीं और महनतका काम करणा नहीं, (१) गडूच्यादि क्वाथ (न० १९८) (२) नागरादिपाचन) पिछाडी लिखा हे, पाच चीजोंका सो (३) क्षुद्रादि क्वाथ, भूरींगणी चिरायताकुटकी सूठ गिलोय एरडीकी जड (४) दाख धमासा अरडूसेका पत्ता, (५) चिरायता वाला कुटकी गिलोय और नागरमोथ इनोंमेका कोइभी काढा क्वाथकी विधि-मुजब तइयारकर थोडे दिन दोनु टक पीणा इससे बुखार पाचन शमन होकर उतरजाता है (६) लघुसुदर्शन चूर्ण (न०३२ उसकी फकी हिम अथवा चा करके पीनेसें सादा जारी तप उतर जाता है, जोरवाले सादे बुखारमेंभी ये चूर्ण बहोत फायदा करता है, इस चूर्णसे पसीना आता है, बुखारभी अटक जाता है बुखार उतरेबादभी किनाइनकीतरे ये चूर्ण थोडे दिन देनेसें बुखार उथलके नहीं आता और ताकत आजाती है.

(अग्रेजी इलाज) (७) प्रथम दस्त साफ लानेकू सिडलिझ पाउडर (न०४५३) का देणा उलटी होतीभी बध होगी प्यास कम पडेगी अथवा पसीना लानेकू पहली खुराक एप्सम सोल्ट रोगीके कोठेकी स्थितिमुजब २ से ४ ड्राम डालकर देना.

(८) नं० ५७०) वाला मिक्श्चर पहली खुराकमें पसीना लाणे वास्ते दिनमें तीनवखत देणा पसीना आके बुखार बंध होणेसें मिक्श्चर बंध करणा.

(९) पसीना लाणेकू इकेले गरम पाणीमें अथवा निमकया राईका आटा डाले भये पाणीमें थोडे मिनटतक रोगीके पांवड्डु बाणा पीछे पूछकर ओढायकर बिछोणेमें सुलाणेसें पसीना आता है.

(१० नं० ५७१) वाली मिलावटकी पुडी देणेसें भी पसीना आता है, और बुखार उतर जाता है, इसमें टार्टर एमेटिक उलटीकू लाणेवाली है, उससे उलटी जो जादा होय तो वो नहीं डालकर एन्टीमोनियल पाउडर फक्त

(११) बुखारके संग उलटी होती होय तो ऊपर (नं० १०) के नुसखेवाली दवा पेटमें नहीं टिके तो (न० ५७८) वाला मिक्श्चर देणा अथवा वो दवा हाजर नहीं होय तो साजीखार ३० ग्रेण खट्टे नींबूका रस ३ ड्राम और पाणी ६ औंस इन तीनोंकों मिलाकर पिलाणेसें उलटी बुखार प्यास नरम पडेगा.

(१२) बुखार उतरगये पीछे नाताकती मिटाणेकूं बुखार पीछा नही आवै इसवास्ते इकेला किनाइन रोगीकी शक्ति तथा प्रकृतीके अनुसार दर टकमें २ ग्रेनसें ५ तक देणा अथवा (१३) न० ५७४) वाला किनाइन मिक्श्चर देणा.

(१४ होमियोपथी इलाज)-(एकोनाईट) खूनमें जहरका असर नहीं होय तो ये दवा देणेसें नाडी धीरी पडकर पसीनेके संग बुखार उतर जाता है, मात्रा दर दोदो तीन २ घटेसें दोदो बूंद एक तोला पाणीके संग पीना सख्त बुखार होय तो आधे २ कलाकसें पीना.

(१५ जेलिसमियम) ऊपरकी दवासें बुखार नहीं उतरे और रोगी सुस्त होगया होय तो ये दवा ऊपरकी दवा मुजबही देना.

(१६) इसके सिवाय पाचनशक्तिकी गडबड होय तो बेप्टिसिया जो रोगी बेहोस होकर पडा होय तो आर्सेनिक और मींट तथा शिर बहोत दुखता होय तो बेलाडोना देणा चहिये.

सन्निपातज्वर

(समझ) तीनों दोषोंका कोपणा उसकू सन्निपात त्रिदोष कहते हैं, और एसे हाल सबरोगोंके आखरीदशामें भया करता है, बुखारमें एसा होय तब बुखारका सन्निपात समझणा शास्त्रोमें एक दोष प्रबल दो दोष कम कहां इदो दोष प्रबल एक दोष कम एसें एकोल्चणादि ५२ भेदभी दिखलाया है, तेरे दुसरे नाम धरकरके भी सन्निपात लिखे हैं, लेकिन् हम जो आगे चौदे सन्निपातका स्वरूप लिखते हे, इनोंमें प्राये सब आजाते हैं, सन्निपात बिगर मौत नहीं चाहे बोलता चलता खाता पीता क्यों नहो पूरा

निदान अनुभव और कालज्ञानवाला पहचान सकता है, वा जे मूर्ख अंत दशातक नहीं पिछान सकते

(सामान्य लक्षण)–जिस बुखारमे वाय पित्त कफ तीनों दोषोंका कोप भया होता है, वो सन्निपातज्वर क्षणमें दाह क्षणमें ठढ हड्डी और जोडोंमें दरद शिरमे दर्द आंखोंमें आंसू कानोंमे अवाज गलेमें कांटे नसा मोह मींट चक वाद खास श्वास अरुचि हांफणी जीभटेढी काली अंगढीला शिर हिलाना नींदका नाश दस्त पैशाबका वहोत देरसे थोडा उतरना गलेमें अवाज गूंगापना पेटका आफरना वदनपर चठे दाफड अथवा गोल चकते इनोंमेके थोडे लक्षण कष्ट साध्यमें, पूरे लक्षण असाध्य सन्निपातमें होते हैं

(सन्निपातके भेद)–सन्निपातमे जुदे २ दोष मुजब लक्षणों करके विद्वानोंने अनुभवकर सवोंके लक्षणपर उपाय ग्रथोंमें लिखे है, वडे भयकर सन्निपातोंमें फूकी भई रसमात्रा ओं वहोत कामदेती है, इस जगे तो सुलभ सामान्य इलाज लिखते हैं, इनोंसें भी फायदा होता है, सन्निपातज्वर १३ तथा १४ प्रकारका है, + सधिक १ अतक २ रुग्दाह ३ चित्तविभ्रम ४ शीतांग ५ तंद्रक ६ कठकुब्ज ७ कर्णक ८ भुग्ननेत्र ९ रक्तष्ठीवी १० प्रलापक ११ जिह्वक १२ अभिन्यास १३ हारिद्रक १४

(१ सधिकके लक्षण)–सांध २ मेदरद शूल प्यास चित्तकू संताप निद्राका नाश नाताकती कफ सबंधी पीडा और ज्वर पसलियोंमें दरद इसकी मुद्दत सातदिनोकी है, मारे चाहे जीये ७ वर्षभी है

(सधिकका इलाज)–रास्ना सूठ गिलोय कांटाशेलिया नागरमोथ शतावर हरडे देवदारू कुटकी कचूर अरडूसेके पत्ते एरडकी जड तथा दशमूल इनसबोंकी उकाली

(२ अंतकका लक्षण) दाहकरे सतापकू बढावे मोहरोणेलगे शिर हिलायाकरे हिचकी होय और खासी होय ये त्यागने योग्य असाध्य है, इसकी मुद्दत १० दिनोंकी है, बकवाद बेशुद्ध श्वास नसा येभी होता है

(अतकका इलाज)–हरडे अरडूसा करमाला देवदारू कुटकी रास्ना गिलोय कुलिंजन.

(३ रुग्दाहका लक्षण)–बकवादकरें सताप अतिमोह दाह बेहोसी वहोत प्यास श्वास काश हिचकी शिथलपणा चक्कर भ्रांति गलाहिडकी ठोडी गरदनमें दरद इसकी मुद्दत २० दिनकी है येभी असाध्य है

+ सन्निपातका १३ भेद ग्रथकारोने लिखे ह आयुर्वेदार्णवम हेमाचार्यने १४ माहारिद्रक सन्निपातलिखा है, सो हमने वेङ्कटराज मनुष्योंके देखभी लिया है, इसम आयेवाद वचणा मुसकिल है, योगचिंतामणीमें जैनाचार्यने इसके इलाज भी लिखे हैं, इनचोदेमें मलपाकी होय तो वचना है, धातुपाकी निश्चे मरता है, इन दोनोंके होणेम आयुकर्म परमुदार है, सधिक १ तद्रिक २ चित्तभ्रम ३ कर्णक ४ जिह्वक ५ कठकुब्जये छह कष्टसाध्य है, बाकी ८ असाध्य है, लेकिन् इलाज लिखा है, कैस्यात् कोइ एसाभी बचजावे कंठगत प्राणतक दवा देणा ये चिकित्साकी प्रणाली है, बाकी बचना मुश्किल है, कष्ट साध्यनो हमने सइकडों बचाये हैं

(रुग्दाहका इलाज) वाला रगतचनण नेतरवाला, दाख आंवला पित्तपापडा उकालीकर पिलाना.

(४) चित्तविभ्रम लक्षण) चित्तभ्रमित बने धतूराखाने जैसी अवस्था हो संताप व्याकुलपणा आंखोंमें विकलपणा रोनेलगे हसनेलगे गावे नाचे और बकवाद करे इसकी मुदत २४ दिनकी है बाजेकू वर्षोंतक रहता है.

(चित्तविभ्रमका इलाज) मोलेठी नखला शेमल पीपर अर्जुन वृक्ष (सादड) हरडे जटामासी रगतचनणका काढा.

(५) शीतांगका लक्षण वदन बरफ जैसा ठंडा पड जाणा कांपणा श्वास हिचकी सब अग शिथिल शोप मनकू संताप खासी दस्त उलटी अवाज खोखरी इसकी मुदत १५ दिनोकी है असाध्य है.

(शीतांगका इलाज) आककी जड जीरा सूठ मिरच । पींपर भारगी भूरींगणी काकडासींगी पोकर मूल नहीं तो एरंडीकी जड गोमूत्रमे उकाली करणी

(६) तद्रिकका लक्षण—मींटरहै. आंख कम खोले बुखार कफ प्यास जुवान काली जाडी और कांटोसें व्याप्त दस्त श्वास दाह कानोमें बहरास गलेमे सोजा सो जाड़ाबोले निद्रा वगेरे मुदत २५ दिनोंकी कष्ट साध्य है.

(तद्रिकका इलाज) भारंगमूल गिलोय मोथ भूरींगणी हरडे पोकरमूल इसकी उकाली.

(७) कंठकुब्जका लक्षण—शिरमे दर्द गलेमें कांटे दाह बेशुद्धि कप बुखार बकवाद वातरक्तकी पीडा मूर्छा मुदत १३ दिनकी कष्टसाध्य है.

(कंठकुब्जका इलाज) काकडाशींगी चित्रक हरडे अरडूसा कचूर चिरयता भाडगी भूरींगणी पोकरमूल नागरमोथ कूडा छाल कुटकी हलदी आमले देवदारू बहेडा चव्य सूठ पींपर कायफल इसकी उकाली.

(८) कर्णकके लक्षण—कानकी जडमें सोजा बहोत वेदना बहरापण हाफणी बकवाद संताप ज्वरवगेरे ज्वर आतेही उठे तो असाध्य, ज्वरके मध्यमें उठे तो कष्टसाध्य अतमे उठे तो साध्य मुदत तीन महेनेकी है कष्टसाध्य

(९) कर्णकका इलाज—बहोत मू सूजगया होय पका नहीं होय तब घी पिलाणा ४ दिन बादशक्ति मुजब कानके नीचे जोक लगाकर खून निकलवाणा अथवा ये लेप करणा रास्ना सूंठ बीजोरेकी जड चित्रक दारू हलदी अरणी इससें सूजन उतर जाती है साधारण कानके नीचे बचोंके सोजन आजाती है, जिसपर मुलतानी मट्टी राख निमकका लेप करणा रास्ना आसगध नागरमोथ दोनोजातकी भूरींगणी भाडगी काकडासींगी हरडे वच पोकरमूल कुटकीकी उकाली देनी

(९) भुग्ननेत्रका लक्षण–आंख टेढी श्वास खासी नसा वंकणा कंप वहेरापणा मोह सोजा वगेरे मुद्दत ८ दिनकी है असाध्य है.

(भुग्न नेत्रका इलाज) दारू हलदी पटोल नागरमोथ भूरींगणी कुटकी हलदी नींबकी छाल त्रिफला इनोंकी उकाली.

(१०) रक्तष्ठीवीके लक्षण–मूमेसें खून आणा बुखार उलटी प्यास मूर्छा शूल दस्त यामरोडा हिचकी पेटपर आफरा भमल जीभकाली अथवा लाल होणी आंख लाल जीभ पर चकत्ते मुदत १० दिनकी बेहोस असाध्य है

(रक्तष्ठीवीके इलाज) मोथ पद्मकाष्ट पित्तपापडा रगतचनण मोलेठी वाला शतावर कृष्णागर कडवे नींबकी छाल इनोकी उकाली

(११) प्रलापकका लक्षण–वकवाद कप सताप शिरमे दर्द वडी २ बाते करणी स्वच्छतापर प्रीति दुसरेका फिकर बुद्धिकेनाशसे भई गभराट इसकी मुदत १४ दिनकी है असाध्य है

(प्रलापकका इलाज) नागरमोथ वाला सूठ पित्तपापडा रक्तचनण अरडूसा इनोंकी उकाली

(१२) जिव्हकका लक्षण–जुवानपर काटे गूगापणा वहरापणा ताकतका नाश खांसी सताप वगेरे मुदत १६ दिनकी हे कष्टसाध्य है

(जिव्हकका इलाज) वच भूरींगणी धमासा रास्ना गिलोय मोथ सूठ कुटकी काकडासींगी पोकरमूल ब्राह्मी भाडगी चिरायता अरडूसा कचूरकी उकाली.

(अभिन्यासका लक्षण) बोलचाल बंध होकर अचेत होजाणा वेचेनी बडे कष्टसे एकाध दफे बोलणा शक्ति जाते रहणी श्वास मूपर चिकणास तेजी नींद मुदत १६ दिनोंकी है असाध्य है

(अभिन्यासका इलाज–काकडासींगी लाल धमासा पोकरमूल भाडगी कचूर भूरीगणी इनोकी उकाली

(१४) हारिद्रकके लक्षण—अंग नख नेत्र हाथ पाव वगेरेका रग हलदी जैसा होजाय बुखार खांसी दस्त पेशाबभी हलदी जैसा ये सन्निपात कचित् २ देखणेमें आता है असाध्य है मुदत इक्कीस दिनोंकी है

(हारिद्रकका इलाज) विशेष असाध्य है तोभी बृहत् भारग्यादि काथ देणा.

सर्व सन्निपातज्वरका सामान्य इलाज

सन्निपात अथवा त्रिदोषके साधारण लक्षण विद्वान वैद्य और डाकदर सहजसें जाण-सकते हैं मुसलमीनी इलाजोंमें दोयही भेद सन्निपातोंके माने हैं, सरसाम १ बोहरान २ रातदिनके अभ्यासी, विगर पढे भी मृत्युके निशाण बहोतसी वखत बता देते हैं, मतलब

जोजामें निशदिन रहत, सोतामें परवीन, इसवास्ते लेकिन ये किस जातका सन्निपात है, एसानांम पूरा बतलाते तो, अछे २ चतुर वैद्योकों भी पूराविचार पडता है, इलाज जो सन्निपातका करके अदमीकूं बचाता है, उस पुन्यवंत वैद्यकी तारीफ लिखणेमें कलमकू ताकत नहीं रोगी तनमन धन सर्वस्व उस वैद्यकूं देतो भी उस वैद्यका बदला नहीं ऊतरता इसवास्ते सन्निपातके सामान्य इलाजोंका आश्रय लेणा सर्वोके लिये फायदा बंद है, सो लिखते हैं.

(१ अभयादि क्वाथ (न० १९५) पित्तकी अधिकतावाले सन्निपातमें बहोत अछा है जिस सन्निपातमें जादा दस्त होता होय कफका जोर होय श्वास शूलका उपद्रव होय उसमें इस क्वाथके बदले ये क्वाथ देणा.

(२) बृहत् भारंग्यादि क्वाथ (न० १९७) वात कफकी अधिकतावाले ज्वरमें तथा सन्निपातमें दस्त जादा होता होयतो तथा कफ शूल वगेरे उपद्रव होता होय उसमें ये क्वाथ जादा फायदा करता है.

(३) दशमूल (न० ९७) पींपरका चूर्ण डालके पीणा इसही क्वाथमें पीपरका चूर्ण तथा एरंडीकी जड मिला उकालीकर पिलाणेसे द्वादशांग कहाता है, इस दशमूलमें चिरायता मोथ गिलोय सूठ मिलाणेंसे चतुर्दशांग क्वाथ कहलाता है, और उसमें कचूर काकडासींगी एरडीकी जड धमासा भाडंगी इंद्रजव पटोल तथा कुटकी ये आठ मिलाणेसें अष्टादशांग क्वाथ होता है, ये सब क्वाथ सन्निपातज्वरमे फायदा बंद है

(४) दुसरा अष्टादशांग क्वाथ)—दशमूल चिरायता देवदार सूठ मोथ कुटकी इंद्रजव धाणा गजपीपर ये तीनो दोषोंके सन्निपातमें फायदे बंद है

(५ ग्रथ्यादि क्वाथ)—पीपरामूल इंद्रजव देवदारु गूगल वायविडग भारगी जल-भांगरा त्रिकटु चित्रक कायफल पोकरमूल रास्ना हरडे दोनो रींगनी अजवाण संभालू चिरायता वच चव्य.

(सूचना)—सन्निपात्तज्वरमें रोगीके दोषका पाचन होता है, तभी अराम मलपाकीमें होता है रोगी होसमें आता है, दोषका जोर कम होता है, तब आराम होणेकी मुद्दत ७।१०। या १२ दिनकी समझणी जो दोष अधिक होय तो मुद्दत १४।२०। या २४। दिनकी समझणा मतलब सन्निपातज्वरमे बहोत गडबडकर आप या मूरखसें इलाज नहीं कराणा बहोत धीर जसें या विचक्षण वैद्यसें परिक्षा कराकर षड्गुण गंधक हेमगर्भ, मकरध्वज, कालकूट, अमृतसंजीविनी, आदि बडे २ अछेरस पानके अद्रकके रसमें, या सूंठमें, या लोंगमे, तुलछीके पत्तोके रसमें, जुवान बध होय तो सहजणेकी छालके रसमें गरम करके या असल अंबर कस्तूरीके सग पेटमे मात्रा देकर ऊपरसें ऊपर लिखी ऊकाली देणा, राईका, लसणका पलाष्टर, पींडीपर, तालवेपर छातीपर मारणा तेजनस्य

देणी तेज अंजन आंखोंमें करणा, वगेरेके पत्तोंका रस कानमें डालणा तालवेके वाल, उस्तरेसे दूरकर सूचीभरण रस मसलणा गरमपाणीमें कमरतक पहले लिखे मुजब विठलाणा, साधरण रसोंमें ब्राह्मी मोहरा त्रिपुरभैरव आनदभैरव अमरसुदरी आदिभी सामान्य दोपमें काम देसकती है, + सन्निपात वडा आयेबाद एक महीनेतक हुसियारीके साथ पथ्य दवासें वरतणा सोलेसेर जलका १ सेर जल दस्त उलटी प्यासमें सन्निपातमें उकालाभया सोमात्राकी १ मात्रा है, लेकिन् और खाणेपीणेकू जहांतक मल शुद्ध होय नहीं होस आवै नहीं सब इद्रियें निर्मल होय नहीं उहांतक नहीं देणा इसपर उत्कृष्ट १२ लघन जरूर करवा देणा फकत ऊपर लिखें जल और दवाके आसरेपर, वाद मूगकी दालका, या तूरकी दालका पाणी, कडक भूख लगणेपर, भात मिलाय पचीसदिन बाद देशकी खुराक मुजब देणा रोटी और घी महीनेबाद देणा, कर्णक तीनमहीनेका होता है, उसका ख्याल उहांतक रखना, पहिली सन्निपातीकू खाणेकू देणा जहरतुल्य है, दूध दियातो निश्चै मरेगा सन्निपातका इलाज देशी पूर्णविद्वानटाल औरसें वचके रहणा, यूनानीमे जवाहरमोरा, भी अच्छा है, मगर जादा दाम माफक काम है, सन्निपात है, सो काल है, इसमें धीरज रखकर इलाज करवाणा शसस्मरणका पाठ, या चौदेस्मरणका, या दोषापहार स्तोत्रका पाठ पुन्यदान जिनेश्वरदेवकी शिवपूजा करणी.

आगतुकज्वर

(कारण)—शस्त्र लकडी आदिकी चोट काम भय क्रोध वगेरे बाहरके कारण वदनपर असरकर बुखारकू पैदाकरता है, वो आगतुकज्वर कहलाता है, अयोग्य आहार विहारसे बिगडी भई वायु होजरीमें जाकर अदरकी अग्निकू विगाड रस तथा खूनमें मिलके बुखारकू पैदा करता है, एसे अहवाल सब तरेके बुखारकू लागू नहीं पडते क्योंके बुखार दोतरेका है, शारीरिक स्वतत्र आगतुक परतंत्र उसमें ऊपर लिखे हाल पहले प्रकारके बुखारमें होते हैं, पहिले प्रकारमें पहली दोपका कोप होकर फेर ज्वर पैदा होता है, दुसरे प्रकारमें पहिली बुखार चढै पीछे दोषका कोप होता हैं, जैसेंके काम शोक तथा डरसें चढेज्वरमें पित्तका कोप होता है, और भूतादिकके प्रतिबिंबके बुखारमें आवेशसें तीनों दोषोंका कोप होता है

(प्रकार तथा लक्षण) (१) विषमज्वरके लक्षण—जहर खानेसें चढे बुखारमें रोगीका

+ ब्राह्मी २ रुपे तोला गोलियें कस्तूरी लोहसार अभ्रककी बनाइ असल हमारे दहा हरवखत तइयार मुल्कोंमे मशहूर है, दुयमदरजे १ की रुपेभर है, अमरसुदरी २ रुपे तोला है, आनदभैरव २ रुपे तोला मोहरेकी रु १ भर है, सर्व वादीपर समीर गजकेशरी २ रुपे १ भर है, स्वर्णवसत कुटज्जर २ रुपे मासाएकठी २० रुपे तोला लोहसार १२)८)४) तक १ भर है, स्वेश्वर १०।२०। दो चन्द्रोदय १०० तोला बाकी पत्र देणेसे लिख सकते हे ॥ बडे बडे रस तयार हैं

मू काला पडजाय सुइचुभाणे कैसी पीडा होय अन्नपर अरुचि प्यास मूर्छा होती है, स्थावर विषमें दस्त होता है, क्योंके जहर नीचेको गती करता है, उलटीभी होती है, सोमलादिकमें.

(२) औषधी गंधजन्यज्वर—किसी तेज खराब बदबोवाली वनस्पतीकी खसबोसें चढेज्वरमें मूर्छा शिरमे दर्द तथा कैहोती है.

(३) कामज्वर—इच्छित स्त्री अथवा पुरुषकी प्राप्ति नहीं होनेसें जो ज्वर पैदा होता है, उसकूं कामज्वर कहते हैं, इसमे चित्तविभ्रम मीट आलस छातीमें दरद अरुचि करडके मोडणे गलहत्था देकर फिकर करना किसीकी कही बात अछी नहीं लगणी और वदनका सूकणा मूपर पसीना निसासे डालने आदि चिन्ह होते हैं.

(४) भयज्वर—डरसें बुखार चढे उसमें बकवाद बहोत करता है.

(५) क्रोधज्वर—गुस्सा आणेसे चढे ज्वरमें कांपणी मू कडवा होता है.

(६) भूताभिषगज्वर—में उद्वेग हसे गावे नाचै कापे तथा अचिंत्यशक्ती इसके शिवाय (क्षतज्वर) वदनमें घाव पडनेसें चढे बुखार, दाहज्वर, थकेलेका ज्वर, वदनका कोइभाग कटणेसे चढे सो छेदज्वर, वगेरे आगतुकज्वरमें, बहोत कारणोंका समावेश होता है, नीचे मुजब इलाज करणा.

(१) जहरका, तथा औषधीगंधकेज्वरमे, पित्तशमन होय एसा इलाज करणा, तज तमालपत्र इलायची नागकेशर कबाबचीणी अगर केशर लौंग इत्यादि सब थोडे सुगंधी पदार्थ लेकर क्काथ करके देणा.

(२) कामसे भये ज्वरमे, वाला कमल, चंदन नेत्रवाला तज धाणा जटामासी वगेरे ठंढे पदार्थोंकी उकाली ठंढा लेप तथा इच्छित वस्तुकी प्राप्ती.

(३) क्रोध, भय, शोक, वगेरे मानसिक विकारोके बुखारोंमें, उसके कारण दूर करणा, दिलासा देना इच्छितवस्तु मिलणा, पित्तकू शमाणेवाले शांत उपचार, आहार, तेसें बाहर उपचार करनेसें मिटता है.

(४) चोट, श्रम, रस्ते चलनेका थकेला गिरजाणा वगेरेके बुखारमें पहली दूधभात खाने देना, रस्ते चलणेके ज्वरमें तेलका मालिस, और नींद लेने देना

(५) आगंतुकज्वरवालेकू लंघन करणा नहीं, चिकणा तरावटवाला पित्तशामक ठंढा भोजन कराणा मनकू शांतकरवाणा इन बातोंसे बुखार नरम पडता है.

विषमज्वर.

(कारण) एकवखत आयेभये बुखारके दोषोंका शास्त्रकी रीतविगरसें निवारण किये पीछे दवा जैसें क्विनाइन वगेरेसें बुखारकू दवा देणेसें उसकी लिंगस नहीं जाती तब बुखार धातुओंमें छिपकर रहता हैं तब अहित आहार विहारसें दोष कोप पाकर बुखारकू

पीछे प्रगट करता हैं, और वो विषमज्वर कहलाता है, खराब हवा वगेरे दुसरे कारणोंसें भी सरुआतमें विषमज्वरकी पैदास है.

(लक्षण) विषमज्वरका कोई मुकरर वखतनहीं है, उसमे ठंडी गरमीकाभी नियम नहीं है, उसके वेगकाभी तादाद नहीं है, किसी वखत थोडा किसी वखत जादा रहता है, उसमे ठड किसी वखत गरमी लगके चढता है, किसी वखत जादा जोरसें किसी वखत कमजोरसें इस बुखारमें जादा तर पित्तका कोप होता है.

(भेद) विषमज्वरका पांच भेद है, १ सतत २ सतत ३ अन्येद्युष्क एकांतर, तेजरा ४ चोथिया ५

(१) कितनेक दिनोंतक अणउतार एक सदृश रहणेवाला बुखारकू सतत कहते हैं, वात ७ दिन पित्त १० दिन कफ १२ दिन दोषके ताकत मुजब रहकर पीछै उतरकर फेर बहोत दिनोंतक आते रहता है, ये बुखार बदनके रस धातूमें रहता है, एसी शास्त्रकी आज्ञा है

(२) सतत–१२ घटेके अतरसे आणेवाला तैसें दिनमें और रातमें दोवखत बुखार आवे वो सतत कहलाता है, इस बुखारका दोष खून धातूमें रहता है.

(३) एकांतरा–(हमेसांका) २४ घटेके अतरसे आता है, दररोज एक वेर बुखार चढे और ऊतरे ये बुखार मांस धातूमें रहता है.

(४) तेजरा–४८ घटेके अतरसें आता है, बिचमें एकदिन नहीं आता इसकू तेजरा कहते हैं, केइ एकांतर कहते हैं, ये मेद धातूमें दोष रहता है

(५) चोथिया–७२ घटेसे ये बुखार आता है, बिचमे दो दिन नहीं आता पीछे तीसरे दिन आता है, पहिले दिनकी अपेक्षा चोथिया कहलाता है, इसका दोष हाड धातूमें रहता है, तथा मज्जा धातुमे रहता है, दोषजुदे २ धातूका आश्रय लेकर रहणेसें रसगत रक्तगत इत्यादि नामोंसे वैद्य कहते हैं, इस अनुक्रमसे हाड तथा मज्जामें गया भया चोथियाज्वर जादा भयकर है, अगर जो दोष वीर्यमें पोहचता है, तो जरूर प्राणी मर जाता है, अब विषमज्वरोंका सामान्य जुदे २ इलाज लिखते हैं

देशी इलाज

(१) सततज्वर–पटोल इद्रजव देवदारु गिलोय नींबकी छाल

(२) सततज्वर–त्रायमाण कुटकी धमासा उपलसिरी

(३) एकातर–दारु पटोल कडवानींब मोथ इद्रजव त्रिफला.

(४) तेजरा–वाला रगतचनण मोथगिलोय धाणा सूठ सहतमिश्री.

(५) चोथिया–अरडूसा आवला सालवण देवदारु जोहरड सूठ सहत और मिश्री मिलाकर.

सामान्यइलाज (६) दोजातकी रींगणी सूठ धाणा देवदारू ये क्वाथ पाचन है, इसवास्ते विषम तथा सवतरेके ज्वरोमें पहिली देणा चहिये.

(७) पटोलादि क्वाथ (नं० २०७) सवतरेकें विषमज्वर तेसें दाहज्वर तेसें नवीनज्वर वगेरे तमाममें अच्छा फायदा करता है.

(८) भारंग्यादि काथ (न० १९६) सवतरेके विपमज्वरकूं फायदा वंद है.

(९) मुस्तादि काथ–मोथ भुरींगणी गिलोय सूंठ आंवला इन पांचोंकी उकाली ठढीकर सहत पींपरका चूर्ण डालकर पिलाणा.

(१०) ज्वरांकुश–बुखार आतेकू रोकणे वास्ते तथा ठंढ लगतीकू मिटाणे वास्ते छोटा ज्वरांकुश (शुद्धपारा गंधक वछनाग सूंठ मिरच पीपर ये सव एकेक भाग शुद्ध किये धतूरेके बीज दोभाग इनोमे प्रथम पारे गंधकी कजलीकर बाकी ४ कूं कपडछांणकर सबोंकों मिलाकर नींबूके रसमें खूब खरलकर (२) दोरत्तीकी गोलियें वणाणी ये गोली १ तथा (२) पाणीमें या आदेके रशमें या सूठकें पाणीमें बुखार ठढ लगणेके पहिले देणी बुखार या ठढतो बिलकुल बध होजाता है, ठढके बुखारमें ये गोली किनाइनसें भी जादे फायदेबद है.

(११) अमृतामोदक (न० ६७) वेर २ उलटकर आणेवाले धातुगत जीर्णज्वर विषमज्वर जब कोई भी दवासें शरीरकू छोडता नहीं तब इस मोदकका सेवन वखतसर करणेसें निश्चै जाता है.

(१२) छुटकर इलाज–चोथिया तथा तेजरे बुखारमें अगस्तके पत्तोका रस अथवा सूकेपत्ते पीस कपड छाणकर सुघाणा अथवा पुराणे घीमें हींग पीसकर सुघाणा सब विपमज्वरोमें नीचे लिखे उपाय सब अच्छे हैं, खपाटकी जड तथा सूंठका काढा एक रुपेभर काला जीरीकूं जरा सेककर एक रुपियेभर गुडमिलाकर खाणा काली मिरच तुलशीकेपत्ते घोटकर पीणा कालीजीरी तथा गुडमें थोडी कालीमिरच डालकर खाना सूंठ जीरा तथा गुड गरमपाणीमें अथवा पुराणे सहतमें अथवा जाडी छाछमें पीणेसे ठंढका बुखार उतरजाता है, अथवा कांकचियाके बीज शेके भये दोभाग और मिरच एकभाग इसका चूर्णकर टकमें तीनमासा चूर्ण पाणीसें फाकणा, इकेली नींबकी अतरछाल, गिलोय, अथवा चिरायतेका पत्ता, रातकू भिगाकर फजरमें थोडी मिश्रीमिलाय, कालीमिरच डाल पीणेसें, ठंढके बुखारमें बहोत फायदा करता है, (न० ६९२) ६९३) वाले हकीमीनुसके ठढके बुखारपर बहोत फायदे मद है

(देशी इलाजोमें) वनस्पतीके क्वाथ देणेमें सवतरेका निडररस्ता है, तथा साधन और धर्मरक्षणता है क्योंके सवतरेके काढे बुखार होय चाहे नहींभी होय तोभी हरवखत देसकते हैं, फेर उसमें मलका पाचन होय दस्तभी आता है, इसवास्ते दस्तके खुलासा

वास्ते अलग जुलाब देणेकी जरूरी नहीं रहती धर्मरक्षा तो प्रगटही है, लिखणेकी जरूरी क्या है.

(अंग्रेजी इलाज)–विमज्वर ऊपर लिखे मुजबका होय अंग्रेजीदवा खाणेवालोनें अजमाणा चाहिये.

(१) बुखार चढा होय तब देणेका इलाज (न० ५७०) ५७१ की मिलावटकी योग्यलगे उसका उपयोग करणा.

(२) पसीना आयगये पीछै देणेके मिक्श्चरो न० ६७४–७५ मेंसें योग्य लगे सो.

(३) पित्तका जोर जादा होय उलटी होती होय तो न० ६७८ का मिक्श्चर देणा.

(४) बुखारकी वारी आणेके पहिली अटकाणेकू किनाइन सबसे उत्तम मानते है, लेकिन् जहांतक बणे इसकीमात्रा बहोत कमही देणी क्योके ये जादा मात्रासें बुखारकू तो उतारता है, लेकिन् दुसरी बहोत खराबिया करता है, दाह धातुजाणा पांडू भ्रमआदि अनेक रोगोंका कारण बणजाता है, बहोतसे डाकटरलोक हठमें आकर किनाइन धकेलते इजाते हैं, लेकिन् उसका परिणाम एकदर ठीक नही आता.

होमियोपथिक इलाज एकंतरादि ठढके बुखार ऊपर इस मुजब

(१) एकोनाइट–सख्त बुखारकी गरमी कम करणेकू इसके जैसी एकभी दवा नहीं है, दर दोदो घटेसे देणा.

(१) आर्सेनिक–जब ठंढविगर बुखार आवै अथवा पसीना आयेविगर ऊतर जावै तब ये दवा उपयोगी है, बुखार नहीं होय उसवखत तथा फेर बुखार नहीं आवै उसकूं रोकणेकू किनाइन सर्वोत्तम इलाज है, लेकिन बुखार जब पुराणा होय और किनाइन जब असर नहीं करे तब ये देणा मात्रा ०॥ घाल दिनमें चार वखत

(२) आईपीक्याक–बुखारकेसग मोल उलटी श्वास पाणी जैसे दस्त वगेरे उपद्रव होय तब ये दवा देणी मात्रा दोदो बूद पाणीमें डाल चारवेर देना.

(३) नकसनोमिका–दस्तकबज होय और किनाइन दिये पीछेभी फायदा नहीं होय तो ये दवा देनी मात्रा दो बूद थोडे पाणीकेसग दिनमे ४ वखत

सततज्वर-रिमिटट फीवर

(कारण) विपमज्वरका कारण ये सततज्वरही है, पहली सक्षेपसें उसके लक्षण तथा उपाय लिखा है, वो मेलेरियाकी जहरी हवामेंसे पैदा होता है, और विपमज्वर दुसरे भेदोंसे ये बुखार बहोत सख्त होता है

(लक्षण) ७।१० या १२ दिनोंतक एक सरीखा आया करता है, कोईभी वखत उतरता नहीं ये तीनों दोपोंके कोपणेसें आता है, इस बुखारकी शरुआतमें पाचनक्रियाकी

अव्यवस्था बेचेनी खिन्नता तथा शिरमे दर्द वगेरे लक्षण मालम देते हैं, ठढकी चमकारी इतनी तो थोडी आती है, सो ठंढ चढणेकी खबरतक नहीं पडती और एकदम गरमी भर जाती है, चमडीमें दाह उलटी शिरमे दर्द नींद नहीं आणा मींटभी होजाती है, अंतरिया बुखारमें बुखारका चढणा उतरणा प्रगट मालम देता और इसमें मालम नहीं देता क्योंके पहिले प्रकारका तप तो बिलकुल ऊतर जाता है, और इसमें उतरता नहीं लेकिन् कुछएक कम होय अथवा वहोत थोडा कम होणेसें इतनी खबर नहीं पडतीके कब जादाभया और कब कमभया वो समझ जाहिरमें थरमोमिटर ठीक देती है, इस बुखारकी स्थिती है, पहली स्थितिमें थोडे २ अतरसें ऊपरा ऊपरी बुखारकी चढ ऊतार होती है, और पीछे दुसरी स्थितीमें बुखारकी भरती आसरे आठ२घटेतक रहती है, उसवखत चमडी वहोत गरम रहती है, नाडी वहोत जलदी चलती है, श्वासोश्वास वहोत जोरसें चलता है, और मनकूं चैन नहीं होता बुखारकी गरमी (१०४) उससेभी आगे किसी वखत १०५, १०६ और १०७ तकभी वढ जाती है, आठदशघटे पीछे कुछ नरम पडता है, थोडा पसीना आता है, बुखारकी गरमी वहोत होणेसें इसकेसंग खासी लीवरका वरम पाचन क्रियाकी गडबड अतीसार मरोडा होजाता है, और वहोत करके ७ में १० में दिन मींट अथवा सन्निपातका लक्षण दिखणेलगता है, अच्छीतरे इलाज नहीं होणेके सबब २१ दिनतक ये बुखार चलता है.

(इलाज) संतत अथवा रिमिटंटफीवर वहोत भयकर बुखार होता है, इसवास्ते आप घरतरीके अच्छीतरे नहीं समझ सके तो कुशल वैद्य या डाकटरका इलाज करवाणा सख्त और भयकर बुखारमें रोगी ७ सें १२ दिनके अदर मरजाता है, और जादादिन ठहरता है, तो गभीर स्वरूप पकडता है, इस बुखारका मुख्य इलाज ये है, बुखारकी टेम्परेचर (गरमी) जैसें वणें तैसें कमती रखणी नहीं तो एकदम खूनका जोस चढके मगजमे सोजा आता है, तद्रा और त्रिदोष होजाता है, देशी इलाज तो पहिले लिखाहीहै.

(अगरेजी इलाज) (१) उलटीका उछाला होय तो इपीकाक्यु आन्हाचूर्ण ग्रेन (२०) एक औंस पाणीमें देणा पाव घटे पीछे गरम जल पिलाणा उससे उलटी होकर पित्त निकल जायगा बुखार कम पडेगा होजरीपर राईका पलाष्टर मारणेसेंभी कै होती है.

(२) बुखारमें प्यास इसमें वहोत लगती है, सोडावोटर लेमोनेड वगेरे देणा वरफ चूसाणा अथवा वरफ डालाभया पाणी या दूध देते है

(३) एन्टीपाईरीन एन्टीफीब्रीन और फीनासी टीन ये दवाये बुखारकू एकदम ऊतार देती है, लेकिन् वो देते वखत वहोत सावधान रहणा क्योंके शक्ति उपरांत दिये जाय तो रिदयका काम अटककर प्राणी मरजाता है, इसवास्ते एसी दवा पूरे अनुभव विगर वरतणेकी परवानगी नहीं दिये जाती इसकी एवजीमें रत्नगीरी नामकी देशी

उत्तम कीमती दवा है, उसमे कोइकिस्मका डर नही मिले तो इसका उपयोग करणा रत्नगिरी एकदम बुखारकूं उतारती है, पसीना लाती है.

(४) शिरपर (न० ३१२) वाले लेपमें कपडा भिगाकर कपालपर धरणा वरफ धरते हैं, अथवा एसा कोईभी ठंढा दुसरा इलाज करणा जिससें शिरमे गरमी चढे नहीं.

(५) बुखारकीगरमी जादा होय तो और पसीना नहीं आता होय तो गरम पाणीमें कपडा भिगाकर वदनपर लगाणा गरम जलमे पांव डुबाणा अथवा खूब गरम पाणीमें गरम ऊनकी धावली डुबाकर निचोड वदनपर लपेटना और रोगीकू सुला देणा और उसपर दुसरी धावली ओढाणी.

(६) पसीना लानेकू (न० ५७०) वालामिक्श्चर सरू रखणा इकेला टिकचर एकोनाईट दोदो बूद पाणीकेसग देणेसें बुखारकू नरम करता है.

(७) बुखार नरम पडे पीछे (न० ५७४ वाला) किनाइनमिक्श्चर देणा बुखार में किनाइन देणा अच्छा नहीं है, तोभी बुखार उतरे पीछे थोडी २ मात्रा किनाइन देनेसें नुकशान नहीं है

(९) इसबुखारमें जो कलेजेमें खूनका जमाव भया होय एसा मालम देतो क्यालोमेल ग्रेन ५ तथा कम्पाउन्ड जालप ग्रेन ४० देणेसें अच्छादस्त लगता है, दरदी शक्तिवान् होय तो जोकलगाणा कलेजेका तेसें फेफसेके वरममें राईका पलाष्टर तथा शेक फायदा करता है.

(होमियोपथीक इलाज)–विषमज्वरमे दिया है वोही इसमे जाणना

जीर्णज्वर

(कारण)–जीर्णज्वर ये कोई खास कारणका नया बुखार नहीं है, नया बुखार नरम पडे पीछे जो कितनेक दिनोंवाद अर्थात् २१ दिनोंवाद जो मदवेगसें बुखार वदनमें रहजाता है, उसकूं जीर्णज्वर कहते हैं, ये बुखार ज्योंज्यों पुराणा होता है, त्यों त्यों मदवेगवाला होता है, हाडज्वर भी इसे कहते हैं

(लक्षण) बुखारका वेग मद वदनमें लूखापणा चमडीपर सूजन थोथर अगोमें जकडपणा तथा कफ ये क्रम २ से लक्षण वढते २ जीर्णज्वर कष्टसाध्य होजाता है

(इलाज (१) गिलोयका काढाकर उसमें लींडींपींपरका चूर्ण अथवा सहत मिला कितनेकदिन पीनेसें जीर्णज्वर मिटता है

(२) खासी श्वास पीनसरोग तथा अरुचिके सग जीर्णज्वरमें गिलोयके सग भूरींगणी तथा सूठडाल इसका काढा पींपरका चूर्ण मिलाकर पीनेसें फायदा करता है

(३) अमृतामोदक (न० ५७) उसका वहोतदिन सेवनकरणेसें हाडतक पोहचा भया कष्टसाध्य और असाध्य जीर्णज्वरभी मिटजाता है

(४) हरीगिलोयकूं पाणीमें पीस उसका रस निचोडकर पींपर छोटी तथा सहत मिलाय पीनेसे जीर्णज्वर कफ खासी तिल्ली और अरुचि मिटती है.

(५) दोभाग गुड और एक भाग लींडीपीपरका चूर्ण मिलाकर इसकी गोलीकर खाणेसें अजीर्ण अरुचि अग्निमंदता खासी श्वास पांडु तथा शभीके सगका जीर्णज्वर मिटता है, इसीतरे लींडीपींपरकूं सहतमें चाटणेसे तथा २।३।५।७। शक्ति और तासीर मुजब रातकूं जलमें या दूधमें भिगाकर दूधमें उकालकर अथवा पीसकर गोलीपर गरमकर ठंढा दूध पीणेसे नित्त इस मुजब बढाकर पीणेसें वो जीर्णज्वरादि अनेक रोग मिटाता है.

(६) आमलक्यादि चूर्ण—आंवला चित्रक हरडे पींपर सींधानिमक इस चूर्णसें बुखार कफ अरुचि जाती है, दस्तसाफ आता है, अग्निदीप्त होती है.

(७) लाक्षादि तेल (नं० २९६) में लिखा है, इससें जीर्णज्वर मसलाणेसें मिटता है, इससिवाय नारायण तैल चदनादि तैल भी मसलानेसे बहोत फायदा है

(८) हमारी बनाई अमृतवटी दूधके और शितोपलादि चूर्णके संग लेणेसें जीर्णज्वर खासी अरुचि मंदाग्नि नाताकती धातुक्षीणता छाती दरद वगेरे सब मिटता है, या स्वर्ण-वशंतमालनी चोसठपहरी पींपरसग अथवा सादे पीपर सहतसग अथवा पींपर दूधसंग अथवा शितोपला दूधसग देणा.

बुखारमें दुसरे उपद्रवोंका इलाज

(कासज्वर)—कायफल मोथ भाडंगी धाणा चिरायता पित्तपापडा वच हरडे काकडासींगी देवदारु सूठ इन ११ चीजोंकी उकालीसे खासी कफसमेत बुखार जाता है, (२) पीपर पीपरामूल इद्रजव पित्तपापडा सूठ इनोंका चूर्ण सहतमें.

(ज्वरातिसार) —(१) लघन (२) सूठ कूडाछाल मोथ गिलोय अतीसकीकली इनोंकी उकाली (३) कालीपाठ गिलोय पित्तपापडा मोथ सूंठ चिरायता इंद्रजव इनोकी उकाली.

(दुर्जलज्वर)—खराब गदा शिखरगिरि बद्रीनाथ आसाम अडग वगेरेका पाणीके लगणेसें होय सो बुखार (१) हरडे नींबके पत्ते सूठ सींधानिमक तथाचित्रक इनोका चूर्णकर बहोतदिनोंतक सेवनकरणेसें ये बुखार मिटता है,(२) पटोल अथवा कडवीतुराई मोथ गिलोय अरडूसा सूठ धाणा चिरायता इनोका क्वाथ सहतडालकर पीणा(३) चिरायता निशोत खसवाला पींपर वायविडंग सूठ कुटकी इनसबोका चूर्णसहतमें चाटणा (४) सूठ जीरा तथा हरडे इनोकी चटणीकर भोजनके पहली चटणी खाणी (५) बछनाग दोभाग जलाइ कोडी पांच भाग और मिरच ९ भाग कूट आदे केरसमें घोट मूग जितनी गोलियोंकर फजर सांझ दोदो गोली पाणीसें लेनी आमज्वर खराब पाणीकाज्वर अजीर्ण आफरा मलबध शूल श्वास खास वगेरे सब उपद्रव ऊपर ये गोली देणेसें फायदा होता है.

(बुखारमें प्यास) चांदीकी गोली मूमें चूसाणी आलूबुखारा खजूरकी गुठली चुसाणी सहतपाणीके कुरले कराणा अथवा जहरी नारेलकी गिर रुद्राछ लोगसेकाभया सोना, मोती अवींध खरड, मूगिया, मिले तो फालसेकी जड, और सख, इनोंको घस सींपणीमें धररखणा जुवानके घंटा २ से लगाणा पहरभर वाद दुसरा घसणा इससे पाणी झरा मोती झरेकीप्यास त्रिदोषकी प्यास कांटे जीभकी स्याही उलटीतक कष्टसाध्यकी मिटजाती है खुराक जितना रोगीकू साहरा और ताकत देती है हमारी पतवाणी भई है.

(बुखारमें हिचकीका इलाज) मोरका चदवा चार जलाकर पींपर भूणी भई जीरा सेका भया नारेलकी जोटी जलाई भई रेसमका कूचा या कपडा या अव रेसम, रेसमके कीडोंका पिछला भाग रहासो जलाया भया, पोदीना, कमलगट्टेके अदरकी हरियाई इन सवोंको पीस सहतमें या अनारके शरवतमे नहीं तो मिश्रीकी चासणीमे उलटी होतेइ चटाणा चटाये वाद फेर घटा २ से चटाणा इससें उलटी छर्दि त्रिदोषकीभी बध हो जाती है (२) अथवा मखीका हगार सहतमें चटाणा ३ भुजाकी दोनो नस खेचके वाधणी ४ (धूम्रपान) नारेलकी चोटी हलदी काली मिरच उडद मोरके चदेका कराणा ५ नीलेथोथेकी भस्मी या ताम्रभस्म पींपरसग चटाणा

(बुखारमें श्वास) दोनों भूरींगणी धमासा कडवीतोरी, अथवा पटोल काकडासींगी भाडगी कुटकी कचूर इद्रजव इनोंकी उकाली (२) लीडी पीपर कायफल काकडासींगी इन तीनोका चूर्ण सहतमें चाटणा

(बुखारमें मूर्छा) (१) आदेका रस सुघाणा (२) सहत सींधानिमक मनशिल और काली मिरचकू महीन पीस उसका आंखमें अजन करणा (३ ठढा पाणी आसपर छांटणा (४) सुगध धूप देणा पखेकी हवा देणी

(बुखारमें अरुचि) (१) आदेका रस जरा गरमकर उसमें सींधानिमक डाल थोडा चाटणा (२) बीजोरेके फलके अदरकी कलिया सींधा निमक मिला मूमे रखणा

(बुखारमे उलटी) (१) गिलोयका क्वाथ ठढा कर मिश्री तथा सहत डालकर पीणा (२) पित्तपापडेका हिम मिश्री डालकर पीणा (३) आंवला दाख तथा मिश्रीका पाणी (४) दाख चदन वाला मोथ मोलेठी तथा धाणा ये सब चीजों अथवा इनमेंकी जो मिले उसकू भीगाकर पीसकर उसका पाणी पीणा (५) नींबकी अतर छालका पाणी मिश्रीडाल पीणा

(बुखारमें दाह) (१) उलटीके कितने एक इलाज दाहकू फायदा करणेवाला है अदर दाह होता होय तो (२) कच्चे चावलोंके धोवणमे चदन घसा भया एकवाल सूठ घसा भया १ रत्ती उसमें जरा सहत मिलाकर चाटणा अगर पाणीमें मिलाकर पीणा वाहर दाह होता होय तो (३) चदन सूठ वाला तथा निमक इसका लेप करणा

दशांग लेप (नं० ३१३) पाणीमे पीस लेप करणा अथवा इस लेपकू मट्टीमें मिलाकर उस मट्टीका खरड करणा तेसें मगजपर मुलतानी मट्टीका थर भरणा.

(क्षयका बुखार) क्षय तथा फेफसा और यकृत् (लीवर) के वरममें.

(सोजेका बुखार) जो बुखार आता है, उसका इलाज उन २ रोगोमें लिखणेमें आवेगा

बुखारवालेकूं हितकारी सूचना.

(१) महनतका काम लंघण (याने उपवास) और वायुसे चढे बुखारमें दूध उसके संग भात हितकारक है कफके बुखारमे मूगकी दालका पाणी तथा भात पथ्य है, ऐसाइ पित्तवालेकुं समझणा लेकिन् उसकूं ठढाकर जरा मिश्री मिलाकर देणा दो दो तीन २ दोप सामल होय तो उसमें फक्त मूंगकी दालका पाणी पथ्य है.

(२) मूंगका पाणी भात अथवा साबूदाणा ये सब सामान्य बुखारका निडर खुराक है, और जहां दूध पथ्य लिखा है, उस जगे साबूदाणा दूध देणा या जलमें सिजाकर दूध मिलाकर देणा

(३) लंघन ये वहोतसे बुखारोंमें प्रथम इलाज हितकारक है खास करके कफ तथा आमके बुखारमें पित्तके बुखारमें दो दो तीन २ दोप सामल होय उसमे लंघन अच्छा है, एक टंक हलका आहार करना अथवा फक्त मूगका पाणी पीणा ये सब लघन तुल्य है, फकत वादीका बुखार जीर्ण ज्वर आगतुक ज्वर क्षयका तथा यकृत्के वरमका ज्वर इतनोमें लघन करनेसे उलटा नुकशाण है

(४) दूध तथा घी तरुण ज्वर १२ वारे दिन तकमें जहर समान है, लेकिन् क्षय सोस राजरोग उरक्षतके बुखारमे यकृतके ज्वरमें जीर्ण ज्वरमें आगतुक ज्वरमें दूध हितकारक है, जिसमेंभी जीर्ण ज्वरमें कफ क्षीण भये पीछे २१ दिनों बाद दूध अमृत समान है.

(५) जो बुखारवाला रोगी वदनमें दुर्बल होय जिसके वदनका कफ कम पडगया होय जीर्णज्वरकी तकलीप होय दस्तका बध कुष्ट होय वदन लूखा होय पित्त या वायूका बुखार होय प्यास तथा दाहकी तकलीप होय उसकूभी दूध बुखारमें पथ्य है.

(६) बुखार सरू होते लघन, मध्यमें पाचन दवा, अतमें कडवी कपायली दवा, आखरी दोप निकालनेकू जुलाब, ये चिकित्साका उत्तम क्रम है.

(७) बुखारका दोप कम होय तो लघनसेंही जाते रहता है जो दोप मध्यम होयतो लघन पाचन दोनोंसें जाता है, वहोत चढे दोपका शोधन इलाज करणा.

(सात) दिनके लघनसे वायुका दोप पकता है, १० दिनसें पित्तका १२ दिनसें कफका और दोपोंका जादा कोप भया होयतो दुणी मुदततक देर लगे.

(८) जिस बुखारमें दोषोंके अशांशकी खबर न पडे तबतक सामान्य इलाज करणा

(९) बुखारके रोगीकू वायु विगरके मकानमें रखणा पखेकी हवा डालणी भारी तथा गरम कपडे पहराणा तेसें ओढाणा और मोसमके अनुसार पका भया पाणी पिलाणा.

(१०) बुखारवालेकु कच्चा पाणी पिलाना नहीं तेसे वेर २ बहोत पाणी पिलाणा नहीं लेकिन् बहोत गरमी तथा पित्तके बुखारमें प्यास तथा दाह होता होय उस वखत पाणी रोकणा नहीं याकीके बुखारमें खयालकर थोडा २ पाणी देणा क्योके बुखारकी प्यासमें जल प्राणरक्षक है.

(११) बुखारवालेकू खाणेकी रुचि नहीं होय तोभी उसकू हितकारक पथ्य दवा-तरीके थोडा जरूर खिलाणा.

(१२) बुखारवालेके तेसें बुखारमेंसें छूटे भयेकेवास्ते (नुकसान करनेवाला आहारविहार) स्नान लेप मालस चिकणा पदार्थ जुलाब दिनकी नींद रातका उजागरा मैथुन कसरत ठढे पाणीका बहोत पीणा बहोत हवाकी जगे अतिभोजन भारी आहार तासीरकू नहीं माने एसा भोजन क्रोध वहुत फिरणा तथा परिश्रम इन सब बातोंका त्याग करणा जो बुखारमें अथवा बुखार उतरे पीछे तुरत एसा कोइ विरुद्ध वर्त्तन कर-णेमे आँवे तब बुखार बढता है अथवा गया भया पीछा आता है

(पथ्य) साठी चावल लाल जाडे चावल मूग तथा तूरके दालका पाणी बदलि-येका सोवेका तथा मेथीका शाग घीयातोरी परवल तोरी वगेरेका शाग घीमे बघारा भया दाख अनार सफरजद

(कुपथ्य) दाह करणेवाला कठोल जेसेंके उडद चवले तेल दही और खट्टे पदार्थ बहोत पाणी, नागर वेलके पत्ते, घी दारू वगेरे

टाइफस, टाइफोईड, तथा उलटता बुखार, क्वचित् २ देखणेमें आता है, इसवास्ते इसतरेके बुखारकी निसबत जादा इस ग्रथमे लिखा नहीं पहिले दो तरेके बुखार गटर वगेरे दुरगधी हवामेंसें पैदा होता है और उलटता बुखार कैदशाली (दुष्काल) तथा भूख मरणेवाले स्नान नहीं करणेवाले मेले वस्त्र रखणेवाले भिक्षुकोंके सगसें पैदा होता है, तथा दुकालकी वखतमें पैदा होता है, इसीवास्ते वीतरागसजमी बाहिर जगलमें साफ हवामे सहरके बाहिर उतरा करतेथे जिससे हवामें परमाणूकोसों दूर उडजाते व्या-ख्यानादि सुणनेकू आणेवालोंकू कोइ तकलीप नहीं होतीथी बेठणेवाले नाति दूरे नाति सन्ने तिष्ठति, जबसे पचमकालमें मुनियोंने नगरमे वास किया तबसें सूत्रकारनें बकुस तथा कुशील ये दोयनि ग्रथही पचमकालमें रहेगें एसा लिखा हे, और बकुशके पाच भेदोमें वस्त्र तथा वदन सुदर साफ रखणेकी व्यवस्था भेद दिखलाया अपणे पथमें

झुकाणेकूं उपदेश देणा लावणी वगेरे रागगाणा चेला वगेरोंका समुदाय वणाणा इत्यादिक वर्त्तमान चलती व्यवस्थासें मुनियोंमें प्रायेसरागसंजमही देखणेमें आता है, ये श्रावग हमारा है, अथवा किसीतरे हो जावे उसकेवास्ते अनेक विवस्था करणी मनकल्पित मत चलाणा केवल मलमलीन गात्र और मेले वस्त्र रखणेसें रातकु पाणी नही रखणेसें रातकुं दिशा जंगल जाणा पडे तो पेसावसें गुदा धोणेसे, पात्रमेंही पेसाव करणेसे, वोही पात्रमें गृहस्थके घरसें आहार पाणीलाके खाणेसे, ऋतुवती स्त्रीकी छूत नहीं रखणेसे जन्ममरणका सूतकवाले घरका आहार पाणी खाणेसे, वासी रोटी खाणेसे, छाछ खीचडा सग खाणेसे, इत्यादिक धर्मविरुद्ध लोकविरुद्धता करणेसे वीतरागसंजमी जैनमुनि कभी नहीं हो सकते, इस मलीन अचरणासे आपकूं और परजीवोंकू रोगाग्रस्त करके सर्वज्ञकी आज्ञा खडन करणा रूप महा पाप है, और नही रंगणा, नहीं धोणा, वस्त्रोंकू ये सूत्र आचारांगका हुकम वज्र ऋषभ नाराच शरीरवाले चोथे अरेके वनवासी वीतरागी सजमियोंके वास्ते है, पांचमारेके सरागसजमी वस्तीमें रहणेवाले, छे वर्त्त सरीरवालोंकू भगवतीके २५ में शतकमे देह वकुश उपगरण व कुशकी जो मर्यादा वो मर्यादा समझणी, जूवस्त्रोमे पडे उनमुन्योनें कत्थेसें लोदसे या पद्मचूर्णसे वस्त्रकूं पास देणा एसा निशीत सूत्रमे हुक्म है, अपवाद मार्गमें, सूत्रोंकी शैली, यथाख्यात चारित्रवालोंकी पहली है, सो पंचमकालमें विच्छेद है, दुसरी कलम सामायक च्छेदोपस्थापनी चारित्रवालोंकी है, सो विद्यमान है वृथा कष्ट लोकोको दिखाणा अतर आत्मा शून्य इसमे क्या सिद्धि है, जो तुम लोकोंकी करणी पूरे त्यागकी है, तो पचमकालमें भरतक्षेत्रसें मुक्ति क्यों नही पधारते बस सब बकजाल है, उदरनिमित्तं बहुकृत भेषा इत्यल ॥

फूटकर निकलणेवाले बुखार.

इस बुखारकुं देशी वैद्यकशास्त्रवालोनें बुखारके प्रकारणमें नहीं लिखा है, मसूरिका तथा जैनयोगचिंतामणीकारने मू धोरा नाम करके पाणी झरेकू लिखा है, मरुस्थल देशमें निकाला, सोलापुर दक्षण देशके मराठे लोक भाव कहते है, इत्यादि देश प्रसिद्ध अनेक नाम है, संस्कृतमे इसका नाम मथरज्वर है, पित्तज्वरके लक्षण इसमें प्राये होते है, मारवाडमें मूर्खरडाओंको मूर्खलोकोने इसका अधिकार दे रखा है, वो लोक प्राये पित्तविरोधी इसका इलाज अत्यत गरम लोंग सूठ ब्राम्ही दिलाते हैं, इस इलाजसें सोमें नव्वे अदमी प्राये गरमीके दिनोमें मरते हैं हमने देखा है, दश वचते है, वोभी कष्ट पाय करके, इन रोगोमें मसूरके दाणे जेसे तथा मोती अथवा सरसूके दाणे जेसे वदनपर फुनसियां निकलती है, तथापि इसमें मुख्यपणे बुखारका उपद्रव होणेसें इहा बुखारके प्रकरणमें दाखिल करा है.

(प्रकार) फूटके निकलणेवाले बुखारके बहोत प्रकार है, उसमें शीतला ओरी

अच पडा वगेरे मुख्य है, इसके सिवाय रंगीला विसर्प, है जा, प्लेग मोती झरा वगेरे सर्व भयकर बुखारोंका समावेश होता है

(कारण) नाना प्रकारके बुखारोंका कारण सबध बदनके सग जितना रखता है, उससें विशेष बाहरकी हवासें रखता है एसे फूटकर नीकलते रोग कहांइ तो एकदम फूटकर निकलता है, एक तरेका जहर ये उसका (Poison) मुख्य कारण है, ये विपचेपी है, इसवास्ते फैलता है, बहोतसे अदम्योके बदनमें घुसके बडा नुकशान करता है, कितनेक अदमियोंके बदनकू ए रोग लगता है, कितनेको नहीं लगता उसके कारणोंका निर्णय पूरे दरजे अभी कुछ नहीं भया है, लेकिन् अनुमान एसा है के फलाणे २ शरीरोंका बधेज तथा आहारविहारसें प्राप्त भये स्थिति करके उनोके शरीरके दोप है सो एसाचेपी रोगोंके परमाणुओंकों तुरत ग्रहण करलेता है, और फलाणे शरीरके तत्त्वोपर एसे चेपी तत्व असर नहीं करसकता क्योंके एकही जगे एकही घरमें किसीकों ये रोग लग जाता है, और किसीकों लगता नहीं उसका येही कारण है, अनुमान होता है

(लक्षण) फूटकर निकालता बुखार ये विशेप करके शीतला आदि तो बचोंका रोग है, किसी २ बडेकू भी निकलता है, एसा देखणेमें आया है, दुसरी ये खुबी है, थोडे अपवाद शिवाय जिसके शरीरकू ये रोग एकवेर निकलजाता है, उसकू फेर ये रोग प्राये नहीं होता तीसरी खासियत इय हेकी जिस बचेकू शीतलाका चेप दाखल किया भया होय अर्थात् शीतला खोदाय डाली होय उसकू प्रायें ये रोग होता नहीं और होता है तो थोडा और बहोत नरम होता है, शीतला नहिं खोदाये भये बच्चोमेंसे इस रोगसें सोमें ४० मरते हैं, और खुदाये भयेमें सोमें ६ मरते हैं, इसतरेका जहर बदनमें प्रवेश किये पीछे चोकसदिन प्रथम बुखारके रूपमें दिखाई देता है, और पीछे बदनपर दाणा फूटकर निकलता है, ये विशेप उसका खातरीलायक चिन्ह है.

शील–शीतला–माता–स्मॉल पॉक्स.

(प्रकार) शीतला दो तरेकी है, एकतरेका दाणा थोडा और दूर २ और दुसरे प्रकारकी शीतला सब बदनपर फूटकर निकलती है दाणे आपसमें मिलजाते हैं तिलभर जगा खाली नहीं रैती ये दुसरी शीतला बहोत कष्टकारी भयंकर होती है

(लक्षण) शीतलाके विपका बदनमें प्रवेश भया पीछे १२, या १४ दिनमें शीतलाका बुखार सादे बुखारकी तरे ठढका लगणा गरमी शिरमें दर्द पीठमें दरद तथा उलटीके सग आता है, फेर उसके सग गलेमें सोजा थूकका जादापणा आखोंके पलकोंपर सोजा और श्वासमें खराब बदबो आती है किसी २ वखत जुवान छोकरोंकू शीतलाके बुखार सरु होते मींट और छोटे बचोंकू खेंचाताण हिचकी होती है, (दाणे) बुखार चढे पीछे तीसरे दिन पहली मू तथा गर्दनमें पीछे शिरमें कपाल छाती अखिर पावपर दिखाई

देता है दाणे दिखणेके पहली बुखार शीतलाका है या सादा है इसकी पूरीखातरी नहीं हो सकती लेकिन् अनुभव तथा चमडीका खासरंग ये बुखारकी तुरत पहिचाण दे देती है शीतलाके दाणे बाहिर दिखाई दिये पीछे बुखार नरम पडता है लेकिन् दाणे जब पकके भराव खाते है तब फेर बुखार जोर देता है, दाणा आसरे दशमें दिन फूट-कर खरूंट जमणा सरू होता है बहोत करके चौदमे दिन खरा पडता है दाणेके लाल चठे होजाते हैं उस बखत जाते अदृश्य होता है सख्त हमलेमें जब शीतलाका दाणा अंदरकी पक्की चमडीमें घुसता है तब शीतलाके, दागका निशान मिटता नहीं खड्डे रहते हैं और सख्त उपद्रवमें अच्छा इलाज नहीं बणे तो आंखकानकी इंद्री जाते रहती है.

(इलाज) पहले तो खोदाय डालणा ये तो सर्वोपरी इलाज है, और दुनियाके बालक लोक इस सोधके वास्ते इग्लंडके प्रसिद्ध डाकटर जे नरका तथा दयावत अग्रेज सरकारका हमेशोकेवास्ते पायबद आभारी भये हैं, डाकतर जे नर जो शोधकरके रेसा निकाल होकर बाद लाखोबच्चे इस रोगके भयंकर दरदमेंसे और मौतसे बचणे लगे हैं, कहांतक इस उपगारकी हम तारीफ करें धन्य २ महाराज तुमारे राज्य शाशनकी विद्वताका परोपकारपणा ये रोग प्रगट भये बाद उसकू रोकणेका या कम करणेका इलाज कीसीभी शास्त्रमें तो नही देखा लेकिन् हमने उपाध्याय श्रीदेवचद्रजी गणिकू बीकानेरमें पहले साल उगणीससै २७ में देखा सो अवीध मोती २१ दिनोंतक इस मंत्रसे मत्रके २१ खिलाया ओं ऋषभ अर्हत मादित्य वर्णतमसपुरस्तात् २१ घेर म-त्रकर पवित्रतापणेसे हमने प्रत्यक्ष उसकूं देखा है अभीतक ये रोग उसके नही भया है, महिमा मोतीकी है यामत्रकी सो पतवाणके देखणा और खान पांन वगेरेके साधनसे तथा शीतलाके भयकर बुखारकी बखत योग्य इलाज करणेसे रोग कम होता है, बहोतसी बखत मरणका डर होता है, इस देशमें बहोतसें आर्य लोकोमें और जादा करके अज्ञान स्त्री जातिमें एसा वेहम धस गया है, के ये रोग कोइ देवीके कोपसें प्रगट होता है, इसवास्ते इसकी दवा करणेसें वो देवी और जादे गुस्से होती है, इस-वास्ते शीतला ओरीमें कोइ दवा करणी नहीं करणी तो लौंग सूठ किसमिस वगेरे ॥ छमककर कुलि ये में देणा वोभी देवीके नामकी आस्ता रखकर एसे खोटे ओर झूठे वहमसें दवा नहीं करणेसे हजारों बचे दुखपाकरके सडके मरते हैं अज्ञान माबापोंकी मूर्खता और वहेम दूर होय तो विगर इलाज इस बखत जितने बच्चे मरते हैं, उम-मेसें सोमेसें ९० बालक निश्चे बच सकते हैं पाखडी उपदेशकोनें अपणे पेटभरणेवास्ते विचले जमानेमें लोकोमें अविद्या देख नाना प्रकारके वृथा देवी देवतोका ढोंग खडाकर दिया है जिसकू अभीतक लोक सच मानते चले जाते हैं, औषधी तो प्रत्यक्ष फल दि-

खाती है जो देवी जन्यदोष ये रोग होता तो प्राचीन आयुर्वेद याने (आयुज्ञान) के उत्पादक श्रीऋषभ परमात्मा आदि अनेक पूर्वऋषि तथा आचार्य इस रोगकेवास्ते इलाज क्यों लिखते इस अविद्यांध प्रसारमें स्वार्थ तत्परोंने शीतलाष्टकभी थोडा अरसा भया बना डाला है, हां अधिष्टायक तो सर्वरोग तथा औषधी आदि पदार्थोंके होंयगे एसा सर्वज्ञ वाक्य तथा अनुमान किसी २ जगे भया है, इस रोगकू लोकीकमें माता कहते हैं हमारा अनुमांन है के पुत्रगर्भमें पडणे बाद और तों का ऋतूधर्मबध हो जाता है वो रक्त परिपक्व होय स्तनोंमें दूध बणता है, वो प्रथम जन्मसेही बच्चा पीता है वोही गरमी कारण पाकर फूटकर निकलती है, क्योंके ऋतुधर्म आणेसे औरतकी गरमी वहोंतछट जाती है, उस ऋतूधर्मके समय कोइ मैथुन करे तो गरमी सुजाक शिरमे दर्द नामर्द आदि रोग प्राणीके होता है इसवास्ते वो गरमी माताके दूधकी होणेसे स्यात्‌लोक इसे माता कहते होंगे तब तो लोकोंके वाक्य सचे है परमार्थ नहीं जाणते हैं, (इलाज).

(१) नीनकी अतर छाल पित्तपापडा कालीपाठ पटोल चदन रगत चंनण खस-वाला कुटकी आंवला अरडूसा लालधमासा ये सब थोडे २ लेकर पीस उसमे मिश्री मिलाकर उसका पाणी करके रखणा उसमेंसें थोडा २ पिलाणा इससे दाह बुखार वगेरे शांत होता है, और मसूरिका मिटजाती है, (२) मजीठ वडकी छाल पीपरकी छाल सरेसकी छाल और गुलरकी छाल पीसकर दाणोंपर लेपकरणा (३) दाणा बाहर नीकलकर पीछा अंदर घुसते मालम देतो कचनारके दरखतकी छालका काथकर उसमें सोनामुखीका थोडा चूर्ण मिलाकर पिलाणेसें दाणा पीछा बाहर आता है, (४) मूमें तथा गलेमें व्रण जखम होयतो आंवला तथा मोलेठीका काथकर सहतडालकर कुरला कराणा (५) थेगी नामके दाणे होते हैं, वो तथा मोलेठीकू पीस उसका पाणीकर आखोंपर सींचणेसें आंखोंका बचाव होता है, (६) मोलेठी त्रिफला पीलूडी दारु-हलदी कमल वाला लोद तथा मजीठ इनोंको पीस आखोपर लेप करणेमे आवै या उसके पाणीकी बूदें आखमें डालणेमें आवे तो आखोंके व्रण मिटजाते हैं, और इजा नहीं होती गूदीकी छालकू पीस ऊपर जाडा लेप करणेमे आंखकू फायदा होता है, (७) दाणे फूट किचकिचाकर उसमेंसें पीप तथा दुर्गंध निकलती है, तब पचवल्क-लका कपडछाण चूर्णकर उसपर दबाणा देशमारवाडमें कायफलका चूर्ण दबाते हैं, रसीकू धोडालणेवास्ते भी पचवल्कलका उकाला भया पाणी अच्छा है, (८) कारेलीके पत्तोका काथकर उसमें हलदीका चूर्ण डाल पिलाणेसे चमडीमे घुसे भये अदर व्रण बुखार दाहकी शांति होती है, (९) दस्त होते होय तो बधकी दवा देणी दस्तबध होयतो हलका जुलाब देणा नाताकती मालम देतो खुराक उपरात द्राक्षा सब पोर्ट वाईन योग्य मात्रा प्रमाण डाकटर देते हैं, (१०) फफोले फूटे पीछे खरूट आये

पीछै उसमें खुजाल आती है तब नखसें कुचरणे देना नहीं उसपर मलाई चुपडणी अथवा केरन ओईल अथवा कारबोलिक ओइल लगाणा बदामका तेल ८ भाग और सोल्पुसन ओफ सब एसेटेट ओफलेड १ भाग ये दोनों मिलाकर लगाणा फफोलाफूट मुरझाणे लगे तब उसके ऊपर चावलोंका आटा अथवा सपेदा भुरकाणा जिस्सें चठे दाग नहीं पडते

(होमियोपथिक इलाज) बच्चोके रोगमें होमियोपथिक इलाज जादा असर करता है और सहज है, (१) एकोनाइट) पहलेके बुखारकूं शांत करणेकू ये दवा फायदेबंद है, मात्रा २ बूंद (२) एन्टीमनीटार्ट, शीतलाका ये बुखार है एसा खबर पडतेही ये दवा देणी जो पहले वखतपर दवा देणेमें आवेतो रोगकू बंध करदेता है मात्रा तीन २ घटेसें पाणीके सग देणा (३) बेलाडोना) बुखारके जोरसे नसा बकवाद शिरमे दर्द आंखे लाल होय तो ये दवा देणी मात्रा दो बूद थोडे पाणीमें मिलाकर ऊपरके चिन्ह शांतपडे उहांतक दोदो घटेसे देणा.

(४) काफिया) बेचेनीमें तथा अनिद्रामें उपयोग करणा दो बूंद थोडे पाणीमें मिलाकर दोदो घटेसें नींद नहीं आवै जहांतक देणा (५) कारबोव्हेज) सन्निपातमें तथा चमडी सडने लगे तब उपयोग करणा मात्रा १ गूज दर तीन घटेसे

(विशेप सूचना) ये रोग चेपी है, इस रोगीसें घरके अदम्पोने दूर रहणा अर्थात् (अवश्य) जरूरी जिसके पडे उसके सिवाय विशेष अदम्पोने इस रोगीके पास जाणा अच्छा नहीं है, जादा तर अदम्पोकी मारफतसे ये चेपी रोग फैलणे लगता है, अर्थात् नहीं निकले भयेकू उहांके जाणेवालेके स्पर्ससे गधसे दूसरे बच्चेकु निकल पडती है, शील ओरी वगेरे रोगीकू पडदेमें रखणेमें आता है, दुसरे अदमीकू नहीं आणे देणेमें आता है, ये तो अच्छी चाल है, लेकिन् इसका असली तत्वकूं छोड लोक वहमके रस्ते गिरगये है, रोगीके सोणेकी जगामें सफाई स्वच्छता रखणी साफ हवा आणे देणी अगरबत्ती वगेरे सुगध धूप खेवणा और न० ५६९ मे बताये भये गधकीकू दूर करणेवाला डिस इन फेक्ट नूसकाभी उपयोग करणा रोगी अच्छा भये पीछै उसके कपडे बिछोणे जला देणा नहीं तो डिसईन फेक्टकर उपयोगमें लेणा (बुखार) शीतलाके रोगी बच्चेकू तेसें बडे अदमीकूं खानपांनमें दूध चावल दलिया रोटी बूरेकी डाली राबडी मूंगकी तथा तूरकी दाल दाख नारगी अजीर जादा करके मीठे और ठढे पदार्थ लेकिन कफका जोर होगया होयतो मीठे पदार्थ तथा फल नहीं देणा, कोइभी गरम चीज खाणेकू नहीं देणा रोगकी पहली हालतमे तथा दुसरी स्थितिमे दूध भात देणा अच्छा है तीसरी स्थितिमे इकेला दूध अच्छा है, पीणेकू ठढा पाणी अथवा बरफका पाणी अच्छा है, रोग मिटे पीछे रोगी

नाताकत होय उहांतक धूप ताप वरसाद ठढमें जाणे देणा नहीं थोडा और पथ्य आहार कराणा रोग मिटे पीछेभी कितनेक दिनोंतक ठढे इलाज ठढे खानपान देते रहणा तेसें गुलकद अमृत वटी वगेरे दवा पदार्थ खुराकमें दूधके संग देणा बहोत फायदा करती है

(ओरी)

(माझल्स)

(लक्षण) ये रोग बहोत करके बचोकू होता है, एक बेरनि कले वाद फेर नीकलती नहीं बदनमें इसका जहर घुसेवाद १०।१५ दिनके अदर प्रगट होती है, और कफसें इसकी सरुआत होती है, आंख नाक झरणे लगते हैं कफ छींक बुखार प्यास और वेचेनी होती है, अवाज गहरा होता है, गला आजाता है, श्वास जलदी चलता है, बुखार सख्त आता है, शिर बहोत दुखता है, दस्त बहोत होता है, बफारा बहोत होता है, इस बुखारमें चमडीका रोग दुसरी तेरकाही वण जाता है, बुखार वगेरे चिन्ह देखाई दिये पीछे तीन चार दिन पीछे ओरी दिखाई देती है ओरीका फुनसी जेसा छोटा गोल दाणा होता है, पहली निलाड तथा मूपर दाणा निकलता है, और पीछे सब वदनपर फेलता है, शीतलामे जेसें दाणे दिखाई दिये पीछे बुखार नरम पडता है, तेसा ओरीमे होता नहीं शीतलाकीतरे दाणेके प्रमाण मुजब बुखारका जोरभी नहीं होता ओरी सातमें दिन मुरझाणे लगती है, बुखार कम होता है, चमडीकी ऊपरकी खोल उतरकर खुजाल बहोत आती है, शीतला जेसा ये रोग डरावणा नहीं तोभी बहोतसी वखत छोटे बचोंकों हांफणी तथा फेफसेका वरम होता है, तब भयंकर होजाती है, अर्थात् तद्रकादिक सन्निपात हो जाता है, उस वखत जरूर इलाज करणा चहिये नही तो जोखम पहोंचती है, सख्त ओरीके दाणे जरा गहरा जामुनी रगका होता है,

(देशी इलाज) बहोतसा तो शीतला मुजबही करणा ओरीका खास इलाज कुछभी नहीं है, रोगीकू हवामें ठढमें रखणा नहीं खुराक भात दाल दलिया अच्छा देणा दाख धाणाभिगाकर उसका पाणी पिलाणा सूठ मासाभर जलमें रगडके सात दिन विना गरम किये पिलाणा दोनो टक

(होमियोपथी) (१) एकोनाईट) बुखारकी गरमी कम करणेकू पहली दो दो बूद पाणीके सग देणा (२) पल्सेटिला ओरीकी खास दवा है, बलगम खासी तथा छातीमें कफ होय तब ये दवा बुखार हलका पडे पीछे देणी दो दो बूद थोडे पाणीके सग दो दो घटेसे (३) वेलाडोना गलेमे दरद सूकी खासी तथा वेचेनीका वकणा इसमें ये दवा जरूरीकी है, मात्रा दोदो बूद दर दोदो घंटेसें जलके सग (४) ब्रायोनिया ओरी बाहर देखाइ देकर मुरझाणे लगे तब छातीमें चसका श्वास लेते दरद

ठसका होणे लगे तब ये दवा देणी मात्रा दो बूंद थोडे जलसंग (५) एन्टीमनीटार्ट श्वास नलीके सोजेमें मात्रा १ रत्ती दर तीन घंटेसें (६) सल्फर, बचाओरीसें अच्छा भयां पीछे थोडा दिन ये दवा देणी अच्छी है, (मात्रा) अर्कका दो बूद थोडे पाणीके संग दिनमें तीनवेर (विशेष सूचना) तथा खुराक शीतलामे लिखे मुजब.

(अछ पडा)

(चीकन पॉक्स)

ये रोग छोटे बच्चोंको होता है, ये बहोत हलका मरज है, पहले दिन जरा २ बुखार आकर दुसरे दिन छाती पीठ तथा खंधेपर छोटे २ लाल २ दाणे होते हैं, दिनमें वो दाणे बडे होकर उसमें पाणी भरके मोतीके दाणे जेसा होता है, लगबग शीतलाके दाणे जितना होता है, लेकिन् बहोत थोडे और दूर २ होते हैं, बुखार थोडा होता है, दाणोंमें पीप नही होता इस रोगमें कुछ डर नहीं है, कितनेक वखत बच्चोंके खेलते २ निकलजाता हैं, इस रोगमें इलाजकी कुछ जरूरी नहीं है,

(रतवायु विसर्प)

(इरीसी पेलास)

(प्रकार) देशी वैद्यक शास्त्र मुजब जुदा २ तेसें मिश्रदोषके सबंधसें विसर्प याने रतवायू सात प्रकारका है, मुख्य दो प्रकारका है १ दोष जन्य विसर्प और २ आगतुक विसर्प विरुद्ध आहारसें शरीरका दोष तथा खून बिगडकर जो रतवायु होती है, वो दोषजन्य ओर जखम शस्त्र जहर अथवा जहरी जांनवरके, नख दांतसें भया जखम और जखमपर रतवायूके चेपका स्पर्श वगेरे कारणोसे जो रतवायू होता है, वो आगंतुक विसर्प कहाता है.

(कारण) प्रकृति विरुद्ध आहार चेप खराब जहरी हवा जखम मधुप्रमेह वगैरे रोग जहरी जानवर या उनोंकाडक इत्यादि रतवायुके बहोत कारण है, जैनियोके श्रावकाचार ग्रथोमे, ब्राह्मणोके बनाये चरक ग्रथमें एसा लिखा है के ये रोग कितनेक हरेशागके बहोत विनामोसम विनातपासे अथवा बहोत खाणेका मावरा रखणेसे ये रोग होता है, इन सब कारणोमेंसे कोईभी कारणसें बदनका रस तथा खूनमें जहरी जांनवर पैदा होते है और रतवायू फेलता है.

(लक्षण) रतवायु ये चमडीका वरम है, वो एक जगेसें दुसरी जगे फिरता है और फेलता है, इसवास्ते वायू ऐसा नाम धरा है, इस रोगमें बुखार आता है और चमडी लाल होकर सूज जाती है, हाथ लगाणेसें रतवायुकी जगे गरम मालम देती है, और अदर चिणक मारती है, प्रथम ठढसें कांपणी बुखारका जोर मदाग्नि प्यास और बुखार ये उसके पहले लक्षण है, पैसाब लाल उतरता है, नाडी जल्दचलती है, उसके

सग किसीजगे उलटी और भ्रम होता है, उससें रोगी बकता है, तोफानभी करता है, एसें चिन्ह भये पीछे दुसरे या तीसरे दिन शरीरके किसीभी भागमें रतवायू दिखाई देती है, दाह और लाल सूजन होती है, आगतुक रतवायू कुलथीके दाणे जेसा होकर फफोलेंसें सरू होता है, उसके सग कालाखून सोजा बुखार और दाह वहोत होता है, ऊपरकी चमडीमें भया होय तो ऊपरके इलाजसें थोडा दिनोमें शांत होता है, लेकिन् उसका विप जो गहरा चला गया होय तो विसर्प वहोत भयकर होता है, वोपकता है, फफोला होकर फूटता है, सोजा वहोत होता है, दरद वेहद होता है रोगीकी शक्ति कम होती है, एक जगे अथवा अनेक जगे मू करके फूटता है, उसमेसें मांसके टुकडे निकला करते हैं, अंदरका मांस सडते जाता है, आखर हाडोंतक पहुचता है, तब रोगी बचणा मुस्कल है, गलेमें भये विसर्पमें जादा डरहै.

(इलाज) (१) वदनमें दाह नहीं करे एसा जुलाब उलटी लेप और सींचणेके इलाज और जरूर पडे तो जोकलगाणी

(२) दशांगलेप (न० ३१२) ठढे पाणीमे या मखणमें या गुलाब जलमें पीस उसका गीलालेप वेर २ करणा (३) जात्यादि घृत (न० ३०२) रतवायू फूटे पीछे घाव भरणेकू ये मलम अच्छा है (४) रतवेलिया काला हसराज हैमकद कबावचीणी सोनागेरू वाला चदन वगेरे ठढे पदार्थोंका लेप करणेसें रतवायूकी दाह तथा शोजा शात पडता है, (५) पचवल्कल (न० १५७) अथवा चदन अथवा पद्मकाष्ट वाला मोलेठी इनोंकों पीस याउकालकर ठढाकर धारदेणेसें फूटे वादभी इस जलसें धोणा (६) चिरायता अरडूसा कुटकी पटोल त्रिफला रगतचदण नींवकी अतर छाल क्वाथ करके पीणा बुखार उलटी दाह सोजा खुजली विस्फोटक वगेरे सब मिटजाता है

(अग्रेजी इलाज) (१) रतवायु फैलणे नहीं पावे इसवास्ते रतवायू सोजेके आसपास नाइट्रेट ओफ सिल्वरकी लकीर खेंच देणी (२) वेलाडोना और ग्लिसराइन मिलाकर चुपडणा (३) ओकुसाईड ओफ झिंक भुरकाणा (४) टिंकचर ओफ स्टील (२०) (३०) बूद और पाणी १ औंस दोनोंको मिलाकर दर तीन २ घटेसे देते रहणा (५) अफीमके डोडेडाल उकालकर गरम पाणीका शेक करणा, सोजेपर चणख अथवा अगार जेसी जलण होय तो जोकलगाणी सोजा पककर पीपभये वाद नस्तर दिलाकर पीपका निकाशकर देणा (६) रोगी अशक्त मालम पडे तो कारवोनेट ओफ आमोनिया ५ ग्रेन लाडेनम ६ मिनिम सिंकोनाकी छालका उकाला १॥ औंस सब मिलाकर दिनमे तीन वरे देणा

होमियो पैथिक इलाज

१ बुखारकू शात करणे एकोनाइट (२) इस रोगवास्ते वेलाडोना अच्छा इलाज है,

ये रतवायूमें ललाई सोजा और दरद होय तब देणा (३) खराब भयंकर रतवायूमें न्हसटॉक्स नामकी दवा प्रबल मालम दीहे (४) रतवायूका जखम चकचके और सडे तब आर्सेनिक देणा अच्छा है, (५) सन्निपात और तद्रामें स्ट्रेमोनियम देणा

(विशेष सूचना) खुराक अच्छा देणा दूध तथा दूध डालकर पकाई भई कांजी चावलोंकी उत्तम पथ्य है, रोगी अशक्त मालम देतो द्राक्षा सव या पोर्टवाइन देतेहैं रोगीके आसपास जाणे देणा नहीं रतवायूके इलाज करणेवाले वैद्य या डाकतकी मारफत इस रोगका चेप दुसरे दरदियोंके खास करके जखमवाले रोगियोंके वदनमें प्रवेश करता है, इसवास्ते रतवायूवालेके स्पर्शमें आणेवाले डाक्टरोने बहोत सफाई रखणी चाहिये.

(गठिया बुखार) अग्निरोहिणी.
(ब्यवोनिक प्लेग).

ये विलक्षण तरेका मरज बहोत अरसा भया चल रहा है, अनादि है, तोभी ये रोग सुणते है, विक्रम संवत् सोलेसेमें अकब्बरके वखतमें भी, चलाथा जिसका फेर अब मुबइसें चला है, वर्ष दस होगया अब तो प्राये दक्षण पूरब उत्तरादि देशोंमें फेलगया है, लोकोंकों ये रोग नया मालम देता है, रोगकी उत्पत्तीका कारण तथा इसका इलाज सोधनेकू सरकार तथा प्रजा बहोत प्रयास कररही है, लेकिन् दिलकू पुरीत सल्ली होय एसा निर्णय अभी भया नही है, इस बाबतमें न्यारे २ अभिप्राय है, हमारे समझसेंतो विस्फोटक रोगकी आठ जातिमेंसे है, एक देशी वैद्य अग्निरोहणी जो क्षुद्र रोगमेका एक भेद है, सो बतलाते हैं, असाध्य विस्फोटक और अग्निरोहिणी एक सदशही है, ये तो मारही डालती है, लेकिन कोइ २ बच जाता है, इस अपेक्षा विस्फोटक एकदोषी द्विदोषी सिद्ध होता है, अग्निरोहिणीवाला कभी बचता नहीं (विदारीका) के भी लक्षण क्षुद्ररोगमेंका मिलता है, हरतरे हैजेकीतरे चेपी और भयंकर है, तोभी वखतपर इलाज हो जाय तो हैजेकीतरे कष्टसाध्यतक रोगी बच सकता है, इस बुखारका मुख्य चिन्ह यह हैकी रोगीके गलेमें काखमे या जांघकी जडमें बदके जेसी गांठ निकलती है, और जादा करके सन्निपातके चिन्होवाला बुखार आता है, एसे रोगोंका इलाज अनुभवी चतुर वैद्य शास्त्राधार बुद्धिकी तर्कसें इलाज और देखरेख और सला करता रहै वो निर्भय रस्ता समझणा इस ग्रथमें जो इलाज हम लिखते हैं, सो पतवाके देखणा यथार्थ है, (१) नीमका पचागका क्काथ सूंठ मासाभर भुरकाकर (२) अभयादि क्काथ (न० १९४) उसके सग चंद्रप्रभा (न० ३४५) नामकी गोली मिलाकर दिनमें तीन वखत पिलाणा बेमार अशक्त और लिबगीज गया होय तो थोडा २ द्राक्षासव देतेहैं इकेला अभयादि क्काथभी अच्छा है, (२) विसर्पमें बताये भये इलाजभी इस बेमारीपर चलता है,

(३) दशांगलेप (न० ३१२) अथवा दोषघ्नलेप (न० ३११) के सग नींमकेपत्ते छाछमें पीस उसका जाडाथर गांठ अथवा सोजेपर बाधणा (४) त्रिदोषज्वरका तथा त्रिदोष ग्रंथि विस्फोटकका इलाज करणा उसके सग उलटी दस्त वगेरे जोजो उपद्रव होय उसके दवाणेका प्रयत करणा (५) घहोत सफाई रखणी डिसइन्फेक्टटस (न० ५६९) का उपयोग करणा रोगीकू अलग रखणा इसके बिछोणेके आसपास खसबोईदार सुगध अगरवत्ती धूप उखेवणा उसके कपडोकोभी खसबोदार रखणा रोगीके श्वास तथा मलमूत्रसे जेसें बने तेसें दूर रहणा उसके सोणेके कमरेमें अलग जरूरीके अदमीटाल जादा अदमी जाणा नहीं उस कमरेमें हवा तथा उजाला रहे एसा खुलासा रखणा और विशेष खुलासावास्ते छपरेके कवेलु नलियेभी निकाल देणा लेकिन वरसात पडे तो नहीं निकालणा रोगी अच्छाभये पीछे अगर मरगये पीछे उसका बिछोना वगेरे सब चीजों जला देणी कमरेकू कितनेकदिन खुला रखणा और जहांतक उसकी हवा साफ नहीं होय उहांतक कोइभी उस कमरेमें जाणा नहीं आखर कमरेकू डिसइनफेक्ट करके तथा कलीचूनेसें पोताकर उपयोगमें लेणा

(विसूचिका हैजा कैदस्त कोलेरा)
(कॉलेरा)

(विवेचन) ऊपर लिखा जो फूटकर निकलणेवाले बुखार तथा हैजा वगेरे फाडकर निकलणेवाले मरजोंके सबधमें यूरोपी विद्वान अभीतककोई सतोषकारक निर्णय नहीं करसके हे, तो फेर इलाज का तो कहणा ही क्या फाडकर निकलते मरजोका मूलकारण जहरी हवा है, एसा अनुमान होता हे, लेकिन् वो जहरी हवा केसी हालतमे कैसे अदम्योके बदनमे असर करती है, उसका कुछ निर्णय नहीं भया है, अनुभवसे विद्वानोंने समझाहे के जिस करके शरीरका जीवन अथवा जीवनशक्ति घटती है, वो कारण एसे रोगोंकों रस्ता देता है, (जीवन शक्तिकू कम करणेवाला कारण इस मुजब है,) नसेवाले मादक पदार्थोंके बिसनसें मगजके तंतु नाताकत हो जाणे लबी और बहोत महनतवाली मुसाफरी उसके सबबसें बदन नाताकत हो जाणेसे बहोत अदम्योंके गरदीमे सोणेसें गीलासपणा गदीवाडा अपूर्ण आहार दुकालमें भूख मरणेसें ये सब कारण फाडकर निकलणेवाले रोगोकू बूलाता है, हरतरेकी महामारीमें इतनी वातें सिद्ध हो चूकी हे, के जो प्रदेश आरोग्यताकू नुकसान करणेवाले हे, उसमेंभी मुख्य करके जिसजगे खानपांनके पदार्थ बहोत खराब मिलते हैं, अथवा खुराककी तगीसें जो अदमी नाताकत और निरमायल भये होते हे, एसी जगे एसे अदम्योंको एसा मरज सहार करता हे

देशी सस्कृत शास्त्रमें इस रोगका नाम विसुचिका है बदनमें सुई चुभाणे कीसी वेदना होती है, इसवास्ते विसूचिका नाम धरा है, जिस २ रोगोंसें बहोत बहोत अदमी मरते हैं

उसकू प्राचीन लोकोंनें महामारी एसा नाम धरा है, अंग्रेजीमें कोलेरा यहभी एक महामारी है, देशी शास्त्रकारोंने इसकू जठराग्निके विकारोंमें एक तरेके अजीर्णके रोगोंमें गि है, निश्चयमें देखणेसें यही बात सची है, सर्वज्ञके वचनसें क्योंके इसके सब लक्ष और इलाज अजीर्णके संग मिलता भया चलता है, लेकिन् सामान्य कारणोंसे जो अजी होता है, उससें ये अजीर्ण विशेष और विलक्षण कारणोसे होता है, ये अजीर्णका रो साधारण अजीर्णसें नहीं होता लेकिन जहरी चेपी हवासें ये रोग एका एक फाडक नीकलता है, और इसीवास्ते इस रोगकू फाडकर निकलणेवाले रोगोंकी पंक्ति दाखल करा है.

(कारण) इस रोगका कारण बाहरकी कोइ जहरी वस्तु है, ये जहरी वस्तु हवाके सग तेसें पाणीकी मारफत बदनमें घुसकर अजीर्णकू पैदा करती है, और दुसरे फाड कर निकलणेवाले रोगोंकीतरे जिस अदमीका बदन इस जहरी और चेपी रोगके तत्वोंकू ग्रहण करणे लायक भया होता है, उसकू विशेषकर ये रोग लगता है, ये रोग जब चलता है, उस वखत जिसके जठरमें अजीर्णका विकार होता है, उसपर इस रोगका हमला होणा जादा संभव है

(लक्षण) दस्त तथा कै ये इसरोगका खास लक्षण है, दस्त पतला पाणी जेसा तथा चावलोके धोवण जेसा सुपेद होता है, दस्त उलटीके सग बदनमें बांइटे आतोमे आंकसी प्यास पेटमे दाह पेसाब थोडा ये विशेष लक्षण है, रोगका जोर जादा होता है, तब आखरकू पेसाब बध होता है, बदन ठढा पडता है, बदनका रग बदलकर झांखा पडता है, आंखोंमें खडा पडता है, नाडी क्षीण पडजाती है, अगर जो इलाज नहीं लगे तो रोगी मरजाता है, जब रोगी सुधारेपर आता है, तब पेसाब खुलाश आता है, प्यास और दाह कम होजाती है, उलटी दस्त बध होजाता है, दस्तका रग बदलता है, नाडीमें तेज आता है, और अवाज साफ होती है

(इलाज) कोईभी अदमीकू दस्त उलटी होणे लगे वो चाहे अजीर्ण होय चाहे हेजा लेकिन् उसकू बध करणेका इलाज सरू करणा उसके इलाज इसतरे करणा (सो इस मुजब) अफीम एक मासा लोग १ मासा जायफल १ मासा पुडिया ५ करणी बचेकेवास्ते थोडी मात्रा देणी तज इलायची सूंठ इनोको पीस करके फाकणेकू देणा सूंठ मिरच पींपर जीरा शाहजीरा तली हींग सीधानिमक लाल मिरच लसण कांदेका रस वगेरे चीजोंमेंसें जो मिले उसकू कपड छाणकर पाणीमें देणा कांदेका रस पिलाणा पो दीनेकू उकाल उसमे कांदेका रस तथा कोडियालोवान अथवा इलायची मिलाके पिलाणा दस्त उलटी सरू होणेके पहली तुरतमें कुछ खाया भया होय तो उसकू गरम जल पिलाकर उलटी करा देणी कोइ दवा हाजर नहीं होय तो १ रत्ती अफीमकी ८

गोलियांकर तीन २ घटेसे एकेक गोली देणी अथवा कत्था तनीवाल हिरादखण २ वाल और अफीमअध रत्ती इनोकू मिलाकर इसका ४ भाग कर दर भाग तीन कलाकसे पाणीमे देणा अफीम तथा अफीमवाली दवाओ देणेसें पेट नहीं आफर जाय, इसकी सभाल रखणी कपूरका अर्क अथवा कपूर पेपरमीन्ट टरपेन्टाईन तिलीका तेल लाल मिरच लसण कांदे अनार्योंकू डाकटर ब्राडी देते हैं, पेइनकिलर ये सब चीजो अजीर्ण तथा हेजेमें फायदा करणेवाली है, इसमेंकी एकाद जो हाजर होय उसका युक्तिसें उपयोग करणा (२) हिंगाष्टक चूर्ण (न० १९०) हरडेका चूर्ण तथा साजीखार ये तीन चीज समभाग मिलाकर देणा अजीर्ण तथा हैजेमें बहोत अकसीर दवा है, क्रम २ से दस्त उलटीकू बध करतीहै, अजीर्णकू पचाता है, पाचनशक्ति चढाता है, इसवास्ते दस्त उलटी बध होय जहांतक इसकी फकी एकेक दोदो घटेसे देते जाणा जो उलटीमे निकलजाय तो तुरतही फेर दे देणी मात्रा चार आनेभर अनुपान पाणी (३) गधकवटी (न० ६६ (गधकके पेटेमें लिखे मुजब तइयार करणा (४) क्रव्यादरश नामकी देशी दवा अजीर्ण तथा हैजेपर बहोत फायदा करती है, दस्तके वेगको एकदम थांभ देती है, किसी प्रसिद्ध वैद्यके पास मिले तो लेणी मात्रा १ से ३ वाल अनुपान दही अथवा छाछमे शेकाभया जीरा तलीभई हींग तथा सींधा निमक मिलाकर पिलाणा (५) सजीवनी (न०२४४) ये गोलिया हैजेकेवास्ते बहोत अच्छा इलाज है, हैजेकी भयकर हालतमें नाडी तूटजाती उसकू ये गोली देणेसें धीरे २ पीछे नाडी हाथ लगती है, रोगी बच जाता है

(अग्रेजी इलाज) दस्त बध करणेकू (१) एरोमेटिक पाउडर ओफ चोक (न० ४०१) देणा मात्रा १० ग्रेणका एक डोझ दिये पीछे दस्तबध नहीं होय तो दर दोदो घटेसें दश २ ग्रेण दवा पाणीके सग देणा सरू रखणा (२) अथवा नीचे लिखी ७ वस्तुओंका चूर्णकर १० १५ ग्रेणतक दर तीनघटेसे दस्तबध होय जहातक देणा

चोक ४४ ग्रेण. तज १६ ग्रेण जायफल १२ ग्रेण केशर १२ ग्रेण. लोंग ६ ग्रेण इलायची ६ ग्रेण

मिश्री २ ड्राम महीन चूर्ण करके उसमेसें दर २–३ घटेसे १० से १५ ग्रेण मात्रातक पाणीके सग देणा इससें दस्तबध नहीं होयतो उसके एक खुराकमें लाडेनमना १० बूद और अफीम० । ग्रेण मिलाकर देणा

(३) क्लोरोडाईन बूद २० एक ग्लास पाणीमे मिलाकर देणा और फेर दो घटे पीछे दुसरी वेर इसीतरे देणा (४) शुगरलेड ८ ग्रेण तथा अफीम १ ग्रेन इसकी ४ गोली गूदके पाणीमें बणाकर दस्तके जोर मुजब दर ३। ४। घटेसें एकेक गोली देणी नाताकती बढजायया अग ठढा पडे चहरा लिवरीज जायतो पीछे दस्तबध करणेकू अफीम या लाडेनम जेसी दवाओं देणी नहीं लेकिन नीचे मुजब शरीरमें गरमीलाणेवाला उपाय

करणा (५) सालवोलेटाइल बूंद ४० एक प्याले पाणीमें मिलाकर देणा और पीछै दर दो घंटेसें अथवा नाडी वहोत धीमे चलती होय तो दरघंटे देते रहणा (६) कस्तूरी ३ ग्रेण तथा कपूर ९ ग्रेण इन दोनोंकों १॥ चमचा ब्रांडी डाकतर मिलाकर उसके तीन हिस्सेकर हरेक भागमें एक चमचा पाणी मिलाकर घंटे घंटेमे देते हैं, अथवा इन दोनों दवाकी ३ गोलियाकर घंटे २ सें तीन वेर देणी ब्रांडी तथा आसवके त्यागीकूं आदेका अथवा कांदेका रस या सूठके जलमें देणा.

(७) कस्तूरीका अर्क ३० बूद	मिरच लालका अर्क २० बूंद
सालवोलेटाइल २० बूद	आदेका रस १ तोला
पाणी २ तोला	टरपेन्टाईन तेल १० बूद.

(८) नं० ५२४) ५२५) ६२०) तथा ६२२ के मिक्क्षर फायदेवद है.

(होमियोपथिक इलाज) (१) केम्फर (कपूर) वहोत अच्छा इलाज है, हैजेकी सरु आतमें वहोत अच्छा असर करती है, मात्रा ५ बूद अनुपान मिश्री रोगके जोर मुजब दससे तीस मिनटके फासलेसे देणा पांच छ वखत देणेसे दस्त उलटी बंध नहीं होय तो ये दवा बधकर दुसरा इलाज करणा (२) आर्सेनिक पेटमें वहोत दाह प्यास वेचेनी चीकणा ठढा पसीना नाडी वहोत धीमी जीभ सूकी काली और फटी इत्यादिक दस्त उलटी समेत लक्षण होय तब ये दवा देणी मात्रा २ बूद पाणीके सग दरएक या आधी घंटेसें (३) कारवो व्हेज रोगी जब ठढा गार होकर मरणेकी दशामें पडा होय तब ये दवा देणी इसके सिवायकोलोसिन्थ व्हिरेट्रम आल्व कुप्रम वगैरे दवायें भी कोलेरामें दिये जाती है

(हैजेकी उलटी) हैजेमें के वहोत होती होयतो सोडावोटर घंटे २ सें देणा नाडी तेज होय तो उसमें लाडेनमना १० बूद मिलाणा अगर जो नाडी विलकुल मद और क्षीण मालम देतो घंटे २ से एक वाइन ग्लास सेम्पेन नामका ब्रांडी दिलाते हैं, पेटपर राईका लेप करते हैं, अथवा लाडेनम और क्लोरोफोर्म पेटपर लगाणा लाडेनमना ६० बूंद पाव पतली कांजीमें मिलाकर उस कांजीकी गुदामें पिचकारी मारणा हिचकी वहोत होय तो दो कडवी विदामके मगजकूं पीस चमचे पाणीमे पिलाकर वो पिला देणा अथवा दुसरी पीणेकी दवा सग वो पाणी मिलाकर पिलाणा (हैजेमे प्यास) सोडावोटर तथा वरफ, चाः प्यासका इलाज करणा दस्त उलटीसे वदनमेंसें पाणीका प्रमाण वहोत कम होते जाता है, वो पूरा करणेवास्ते थोडा २ पाणी पिलाणा चाहिये पाणी बध करणेसें नुकशान है, (हैजेमे पेसाव बध होणा) पेसाव खोलणेकू वदनमें गरमी आवै तव गरम इलाज बधकर देणा मूत्राशयपर राईका लेप करणा केसूलेके फूल वाफ कर पेडूपर बाधणा रोगीकूं गरम जलमे कमर बूड वैठाणा पाणी तथा सोरा खार पिलाणा

इलायची शिलाजीत पाणीके संग पिलाणा सोडा तथा टार्टरिड एसिड पिलाणा (न० ५३०) मिकश्चर पिलाणा (हैजेमें पेट आफरणा) दस्तवध होकर पेट आफर जाय तो दस्त आणेका इलाज करणा हरडे साजीखार तथा हिंगाष्टकवाली फक्की देणी ब्लुपील ३ ग्रेण और कपूर १ ग्रेण इन दोनोको मिलाकर १ गोली बणाकर देणा २ घटेमें दस्त नहीं आवे तो फेर एसी ही गोली देणी.

(हैजेमें वदन ठढा पडणा) हैजेमे वदन ठढा पडे तो गरम किये कवेलू याने खपरेल अथवा ईंट अथवा निमककी तथा वेलूकी पोटली तथा गरम पाणी भरीं बोतल इसके अदर किसीकाभी सेक करणा धाबली वगेरे गरम कपडेसे वदन ढाककर रखणा शेक करते वदनकू उघाडा रखणा नहीं लेकिन् ओढे भये कपडेपर शेक करणा वदन बहोत ठढा पडे तो पगोकी पींडीपर राईका पलाष्टर मारणा वदनपर कादेका रस मसलणा सूठ तथा अजवाणका खरड करणा वाइटे आते हैं, जिसपरभी येही इलाज मसलणेमें फायदेबद है, (खुराक) इस रोगमें कुछभी खाणेकू देणा अच्छा नहीं है, जहांतक उसके भयानक चिन्ह शात नहीं होय, बाद मूगकी दालका पाणी रोगके सर्व लक्षण मिटे बादभी चावलोंकी कांजी याने दलिया मूगका ओसामणसिवाय भारी और करडा खुराक देणा नहीं जो खाणेकी समाल नहीं रखणेमे आयगी तो रोग उथला मारकर मौतकी निशाणीपर डालता है, अच्छीतरे आराम भये बाद रोटी वगेरे करडी खुराक देणा

(विशेष सूचना) हैजेके रोगमे इलाज करणेकी ढील करणी नही शरु होतेही जैसा इलाज लगता है, तैसा कुछ एक देर भये बाद लग नहीं सकता दुसरे आसपासकी हवाकू शुद्ध करणेकाभी उपाय करणा रोगीका हवासे बचाव करणा दिलासा और हिम्मत देणी इलाज जो डाकतर या वैद्य करे वोभी रोगीकू दिलासा देणा तू जलदी आराम हो जायगा घभरा मत इसबातसे उसकी हिम्मत बणी रहती हे, क्योंके इसरोगके होतेही धसका पडजाता है के मरजाउगा इसवास्ते दिलासाभी दवा है

(हैजेकू रोकणा) हैजेकी बेमारी चलती होय उसवखत जेसें घर कपडे वगेरे बाहरकी चीजों साफ रखणी तैसें पेटभी साफ अजीर्ण नहीं होय एसी तजवीज रखणी जराभी अजीर्ण मालम देतो तुरत उसका इलाज करणा जब इस मरजकी हवा चलती होय उहातक साजे निरोगी अदमीने नीचे लिखी दवामेंसें एक दवाका सेवन रखणा तो इस हमलेमेसे बचणेका सरस इलाज है, (१) सजीवनी (न० २४४) वाली गोलिया नित्य दो गोली फजर साझ पाणीके सग लेणा (२) सल्फ्युरिक एसिड ३० बूंद कार्बोलिक एसिड २ बूद पाणी २ औंस मिलाकर एकेक औंस फजर सांझ पीणा. (३) होमियोपैथिक केम्फर पिल्स अथवा रुबीनीका केम्फर १ बूद फजर साझ मि-

श्रीके संग लेणा (४) कपूर वगेरे सुगंधी पदार्थ धारण करणा तिलीका तेल वदनके लगाकर हमेसां स्नान फायदा करता है.

वातव्याधि.

(प्रकार) वातव्याधिका मुख्य दो प्रकार है. एकतरेकी वातव्याधिमें वदनकी नाडियोंमें वेहद जोर चपलता आकर खैचाताण होता है, जेसें हिचकी हिस्टीरीया वा ईंटे वगेरे दुसरी तरेकी वातव्याधिमें सांधोंकी गति बंध होती है, और सांधे झिल जाते हैं, जैसें संधिवात पक्षाघात (लकवा) गृध्रसी (नीचेका तग रह जाणा) इस वजे शरीरके जुदे २ अवयव झिलणेसें देशी शास्त्रमें उसके वहोत भेद आदि कारण नाम जैन शास्त्रमें लिखे है, एसें ८० या ८४ भेद मुख्य लिखे हैं, उसके नाम तथा संक्षेपसें पहिचाण इस ग्रथके पृष्ठ दोयसै सत्ताईस प्रकाश ४ में लिखा है, वायुके ८० प्रकारोमें वायुवात, वादी एसा नाम है, अर्थात् इन सव रोगोंमें वादीही मुख्य है, इनसवोंका जुदा २ इलाज तेसें सवोंका सामान्य इलाज लिखा है, अग्रेजी ग्रंथोंमें इन रोगोंका क्रम और ही है, जैसें वायुके कितनेक रोगोंकूं वदनके सामान्य रोगोंमें और कितने एकोंकूं मज्जा तंतुओंके रोगोंमें गिणा है, इस ग्रंथमें रोगोंका क्रम शरीरके अवयव प्रमाणमें लिखा गया है, इसवास्ते वायूके जो जो रोग है, सो शरीरके सामान्य स्थितीके संग संवध रखता है, उसका इस जगे वर्णन करते हैं, और दुसरे कितनेक वादीके रोग जो मगजके साथ संबंध रखते हैं, उसका विवरण आगे करेंगें.

कारण–सूकालूखा हलका थोडा और ठंढा एसा अन्न खाणेसें वहोत स्त्री सेवन करणेसें वहोत ओजागरा करणेसें विरुद्ध दवा खाणेसें वहोत मिहनत कूदणा जलमें तिरणा रस्ते चलणा वगेरे वहोत खेचल करणेसें खून मलमूत्र कफ पित्त वगेरे कोई भी धातू वदनमेसें जादा निकलकर वदन खाली पडणेसें वहोत फिकर करणेसें मलमूत्रकी हाजत रोकणेसें जड पदार्थोंका वदनपर चोट लगणेसें उपवासादिक वहोत लंघनकर शरीरके रसकूं सुकाय देणेंसें और रिदयके मर्म स्थानपर चोट लगणेसे इत्यादि वहोत कारणोंसें कोपा भया वायू वदनके गति ततुओकों तथा दुसरे अवयवोंकू जडकर देता है, अथवा जादा चपलगति वणाता है, इस करके वदनके सर्व अंगमें अथवा कोईभी एकाध अंगमे वादी आजाती है, अग्रेजी अभिप्राय मुजव खूनमें फेरफार होता है, अर्थात् एसिड (खटाश) वधणेसें और क्षार घटणेसें खून जादा घट्ट होता है, और सांधोकों पकडता है

लक्षण–पिछाडी ८० प्रकार वादीका विवरण पृष्ठ २२७ मे देखो

इलाज–वायूकू जीतणा इलाजका मुख्य मतलव इतनाही है, वादी वदनमें और नसोंमें लूखापणा लाती है, इसवास्ते उनोंकू चिकणा याने नरम करणेकी जरूरी

है, चिकणी और गरम तेसें पसीना लाणेवाली सारक जो जो चीजें है, वो वादीके वेमारीमें अच्छी है, जुदे २ वादीके रोगोके जेसे खास जुदे २ इलाज होते है, तेसें कोइ यक एसे भी इलाज हे के जो समस्त वादीके रोगोंमें सामान्यतरे उपयोगी है, सो लिखते हैं.

(१) वादीकू जीतणेवाली दवाये (पृष्ठ) ३१३ पसीना लाणेवाली दवायें (पृष्ठ) ३१५सारक दवायें (पृष्ट)३१५ मगजकू पुष्टी देणेवाली दवायें (पृष्ठ)३१७(२) गूगल– पुराणे वादीके रोगमें अर्थात् खेंचाताण वाइटे हिचकी विगरकी वादीमें गूगल वहोत उत्तम इलाज है, अनेक तरेसें गूगल घणता है, जिसमें योगराज सिंहनाद वगेरे गूगल वादीकी वेमारीमें वहोत फायदेवद है, योगराजका अनुपान घी अथवा घी और सहत (३) वच्छनाग–पुराणी वादीके रोगमे फायदावद है तीक्ष्ण और नयी वादीके रोगमे वच्छनागका उपयोग नुकशान करता है, वच्छनागका तेल पुराणी वादीमें मसलणेसे फायदावद है, (४) कुचीला–वाइटे और खेंचाताणवाले वादीके रोगमें अच्छा है, पुराणे वादीके रोगमे उलटा नुकशांन करता है

(५) हींग–खेचाताणवाली वादीमें हींग फायदेवद है, रगोंके खेचताणकू मिटाती है, (६) मालकांगणी–वादीका श्रेष्ठ इलाज है, वादीकू मिटाणेवाली दवाइया जेसेके अकलकरा मिरच लोग गूगल अथवा योगराज वगेरे गूगलके सग देणेसें वहोत फायदावद है, मालकांकणीका तेल मसलणेसें पेंटमें देणेसे फायदावद है, (७) लसण– वादीके हरणेमें मुख्य है, वो वहोत तरेसें खाये जाता है, १ लसणकी कलियोंकू पीस उसमें तिलका तेल मिलाकर सींधानिमक मिलाकर देते हैं, २ लसणका कल्क (चटणी) दूधके सग तेलके सग घीके सग भातके सग अथवा चिकणे गरम औरभी पदार्थ सग देते हैं, (२) सेंचल अजमाण सेकी हींग सींधानिमक सूठ मिरच पीपर इनोंके चूर्णमें इससें पाचगुणा लसण और लसणके चोथा भाग जितना तेल इन सर्वोको मिलाकर उसमेंसें फजरमें हमेश १ रुपेभर चाटणा उसपर एरडकी जडका क्राथ पीणा (८) उडद (माष) वादी हरता है, उडदकी दाल उडदके वडे वगेरे पदार्थ तेल घीमें चिकणे खाणा इसके सिवाय मापवलादि काथ, एरडकी जड कौंचबीज अहिंसर तालमखाणा रास्ना आसगध (मापतैल) उडद सींधानिमक कासकी दशमूल हिंग वज शतावर सूठ इस पदार्थोंमें तिलका तेल घणाणा और मसलणा (९) रास्ना अच्छा इलाज है, वजारमें जो रास्नाकी अगली जेसी लकडियां मिलती है, वो रास्ना अच्छी नहीं है, रास्नाकी जूडीयां मुवई भावनगर वगेरे वदरोंमें वजारमें विकती है, स्यात् हकीम लोक इसकू उसवा * कहते है, एसी रास्ना फायदेवद है, रास्नादि काथ वहोत तरेका होता है, उसमें महारास्नादि काथ (न० २१४) वहोतही फायदेवद है, ये

क्काथ और योगराज गूगल एरंड तेल लसण सूठ पीपर या अजवाण इनोंमेंकी कोईभी चीज मिलाकर देणी (१०) शतावर वातहर है, उसके रससें वणाया भया तेल नारायण तेल कहलाता है, वो वादीपर वहोत अच्छा है,— शतावरका रस अथवा क्काथ तेल दूध ये सव सम वजन लेकर उसमें वरणा अरडूसा देवदारू, मजीठ जटामांसी वगेरे चीजों चार २ तोलाभर लेकर पाणीमें पीस कल्ककर उसमें मिलाकर तेल वणाणा इसके सिवाय वडा नारायण तेल वणता है वो प्रतिष्ठित वैद्यके पास मिले तो लेकर मसलाणा या खिलाणा (११) एरड तेल वादी हरता है, इसवास्ते ग्रंथोंमें इसका नाम वातारि लिखा है, कोई भी चीज नहीं मिले तो एरडके जडके काढेमें एरडीका तेल डालकर पीणेसें कितनेक दिनोंसे वायूके सव विकार मिटते हैं, (१२) मेथीपाक (न०२७४) तथा लसणपाक लसणकी कलियें ६४ तोला दूध १०० तोला घी १६ तोला सबको सग पकाकर कीटी करणी पीछे १२८ तोला वूरेकी चासणी कर वाद सूठ मिरच पीपर तज इलायची तमालपत्र नाग केशर पीपला मूल वायविडग हलदी दारुहलदी एरंडकी जड अजवाण लोंग देवदारू साटेकी जड गोखरू कडवा नींवकी छाल रास्ना सोवा-शतावर कचूर आसगंध और कौंचवीज एकेक तोला कपड छाण ऊपर लिखी सव चीजें मिलाकर पाक करणा मात्रा शक्तिमुजव १ तोलेसें ४ तोलातक—वायूके वाहरके इलाज शेक लेप तेल वगेरे.

(१३) शेक—वादीके सोजेमें अथवा दरदमें घाम अथवा पसीना लाणेवाली दवाके वफारेसें फायदा होता है, इसवास्ते न० ५३५ ५३६ ५३७ मे लिखा भया शेक करणा आखर कोईभी नहीं मिले तो फक्त गरम पाणीका वाफ देणा (१४) लेप—दोषघ्न लेप (न० ३११ राईका लेप गूगलका लेप तथा अग्रेजी लेपोंमें न० ६१९ के पेटेमे लिखे लेपोका उपयोग करणा (१५) तेल नारायणतेल लाक्षादि तेल (नं० २९६) मापतेल तेसेंही फक्त तिलका तेल सादाभी फायदा करता है, अग्रेजी लीनी-मेन्टोमें न० ४४१ के पेटेमें लिखा भया लीनीमेन्ट (तेल) फायदा करता है,

संधिवायु.

र्‍युमेटिझम.

कारण—विरुद्ध खानपानसें खूनमें एक तरेका खट्टापणा (अग्रेजीमें लेक्टीक एसिड कहते हैं) ये वढता है, और क्षारका भाग घटता है, जिसकर के सांधोमें दरद और पकडे है, ठढी तथा शरदीसें सांधे झिल जाते हैं, खटाई खाणेसें भी सांधे झिल जाते हैं, याने गरमीके रोगमे खून विगडकर सांधे झिल जाते हैं, ये रोग जहरसें तेसें मावापके होय तो ओलादके भी होजाता है

लक्षण—वदनमें वादी दो तरेसें आती है, एक तीक्ष्ण दुसरी तेज अथवा जीर्ण—जो

वादी एकदम जोरसे हमलाकरे उसकेसंग बुखार वगेरे दुसरे उपद्रव हो जाय तो उसका तीक्ष्ण रूप जाणना और वो तीक्ष्ण वादी कुछ इक मुद्दत बीतनेसें जीर्ण होती है, अथवा पहलेहीसे धीरे २ सांधे झिलते हैं, तीक्ष्णसंधिवायु जो सुधरती है, तो जलदी आराम होता है, अगर जो नहीं सुधरी तो जीर्णरूप पकडती है, तब आराम होते देर लगता है, और मिटे बादभी फेर वेर २ दिखाई देती है, तीक्ष्ण संधिवायुमें पहलीएका ४ दिन थोडासा बुखार आकर पीछे बुखार फेर जादा जोर करता है, बदनपर पसीना नाडी जलद जीभपर सुपेद थर शिरमे दरद प्यास दस्तकी कबजी पेशाब थोडा तथा लाल इत्यादिक चिन्ह मालम देते हैं, वादीके रूपमें दोडणेवाला ये मरज एकाध सांधेमें आकर पीछे दुसरे सांधोंमें घुसता है, तीक्ष्णरूपमें हाथ पांवके सांधे सूज जाते हैं, और उसमें बेसुमार दरद होता है, किसी २ वखत बुखार बढकर १०५ से ११० डिग्रीतकभी पोंहच जाता है, ये दरद मात्र सांधोमे रहकरबंध नहीं होता किसी २ वखत वो स्नायु रक्ताशय वगेरे भागोंमें भी घुसता है, रक्ताशयमें जाणेसें महाभयकर हो जाता है इसवास्ते तीक्ष्ण संधिवायूमे रक्ताशयकी परीक्षा करणी क्योंके उस वखत रक्ताशय (हार्ट) ध मणकीतरे बहोत जोरसें चलता है, नाडी बेहद जोरसे चलती है, छाती दुखती है, तथा उछलती है, चेहरा दुखसे दीन बडा उदास हो जाता है, साधारण संधिवायु दो चार अठवाडेमें मिटता है, और तीक्ष्णरूपमें जो प्राणी मरता है, वो रक्ताशयके दरदसें मरता है

इलाज–खटाई खाणेसें अथवा एसाही दुसरा नजीकके कारणसें सांधा झिलता है, वो खट्टेका विरोधी गरम और क्षारवाले पदार्थ खाणेसें विगर महनत किये खुलकर मिट जाता है, साधारण वादी आती है, तब दस्त एक दोय साफ आवे एसी रेचक दवा लेणेसें तथा दुखते सांधेपर तेलका मालिस और शेक करणेसें मिटजाता है, संधिवायूके दरदका इलाज, वधे भये एसिडकू निकालणा क्षारकू वधाकर खूनकू जादा पतला करणा सांधोंके दरदकू कम करणा बुखार मिटाणा खून सुधारणा ये जरूरका इलाज है, दरद मिटे तहातक हमेस दस्त साफ आवे एसी दवा लेणी इसकेवास्ते एरडीका तेल बहोतही अच्छा है, (१) आगे वातव्याधिमें जो जो इलाज दिया है, वो सब संधिवायुमें फायदा करणेवाला है, (२) तीक्ष्णसंधिवायुमें रास्ना आसगंध एरडकी जड गूगळ फायदा करता है और पुराणे संधिवायुमें मेथी तथा लसण फायदेमंद है, (३) एरडीकी जड तथा सूठका काढा एरडका तेल डालकर थोडेदिन पीणा (४) लसणका रस १ तोला इसमे तली हींग जीरा सींधानिमक संचल त्रिकटु सब दवा एकेक वाल मिलाकर पीणा उसपर एरडकी जडका काढा पीणा (५) सूठ एरडीकी जड देवदारू गिलोय काटाशेला, इनोंका काढाकरके पीणा (६) रास्ना एरडीकी जड देवदारू वज

सूंठ धमासा हरडे अतीस नागरमोथा शतावर अरडूसेके पत्तोंका काढा पीणा (७) अजवाण पीपर सूंफ नागरमोथा मिरच सींधा ये सब एकेक भाग हरडे ६ भाग सूंठ १० भाग वधारा १० भाग भाडंगी २६ भाग इन सबोंका चूर्ण गुडकी चासणीकर मिलाकर गोली वणाणी गरम पाणीसें लेणी (८) सूंठ हरडे लींडीपीपर निशोत संचल इनोंका चूर्ण थोडा दिन खाणा (९) शुद्ध गंधक हमेश चार आणीभर दूधके संग पीणा (१०) हरडे सूठ देवदारू ये तीनों समभाग गूगल तीनोंसें दूणा इन चारोंको कूट एरडीके तेलमें घोटके बेर २ जितनी गोलियांकर एकेक लेणा (११) लसणपाक आगे लिखा है, वो तथा एरंडपाक, १६ तोला एरडीके बीज अठगुणे दूधमें उकालणा आधा दूध जले पीछे उसमें ८ तोला घी ३२ तोला मिश्री और लसणपाकमें लिखीभई सब दवाइयां प्रत्येक चार २ आनाभर महीन पीस डालकर पाक तइयार करणा ये दोनों पाक पुराणे सधिवायूमें बहोत फायदेवंद है, (१२) गरमी तथा सुजाक (फिरगसें) सधिवायू भई होय तो महारास्नादि क्वाथ अथवा महामजिष्ठादि क्वाथ (नं० २१५ २२१) योगराज गूगल अथवा किशोर गूगल (नं० २५५ ५६) मिलाकर कितनेक दिन पीणा चोपचीणीका चूर्ण तथा चोपचीणीका पाक (नं० २८०) उपदशके जीर्ण संधिवादीमें बहोत फायदा करता है—अग्रेजी इलाज—तीक्ष्ण तथा पुराणी संधिवादीमें इस मुजब करणा—तीक्ष्णसधिवादीमे (१३) साधारण सधिवादीमें रोगीकू आराम देणा और दुखते सांधेपर ये लोसन धरणा—कारबोनेट ओफ सोडा अथवा कारबोनेट ओफ पोटाश ½ पाउन्ड उसकूं १ क्वार्ट गरम पाणीमें मिलाकर उसमें कपडा भिगाकर सांधोंऊपर लपेटणा और उसपर तेलमें डुबाया भया रेसमी कपडा लपेटणा जो चलते हिलते बहोत दरद नहीं होता होय तो उसपर गरम बाफ हमेस देणा बाफ देते वखत गरम पाणीमें कारबोनेट ओफ सोडा एकाध सेर डालकर बाफ देणा (१४) जो दस्त खुलास नहीं आता होय तो उस वखत दस्तावर दवा नं० ४६१ ४६२ की मिलावट दवा देणी और नींद नहीं आवे तो डोवर्स पाउडरका १० से १५ ग्रेनका एक खुराक देणा रातकू (१५) तीक्ष्णसधि वायूमे अव्वलसें आखरतकके इलाजोंमें रोगीकू हलका खुराक देणा और उत्तेजक तथा मादक सराप वगेरे अत्यंतपणेकर त्याग देणा (१६) इसके सिवाय तीक्ष्ण सधिवायूमें नं० ५२८ ५८३ ५८५ ५८६ वाले अंग्रेजी मिक्श्चर तथा नं० ६९४ ६९५ ६९६ तथा ६९७ के हकीमी ऊसके उनोंका उपयोग करणा (१७) जो सधिवायूके चिन्ह रक्ताशय ऊपर मालम पडे तो दरदकी जगे विलिस्टर मारणा और नं० ४९८ वाला मिक्षचर तीन२ कलाकसे देणा सरु रखाणा और कलेजेका भागकोरसूजी भइ मालम दे तो तब दवा वधकर देणा (पुराणी सधिवायू— (१८) वदनमें उपदंश वगेरे गरमीका कारण होय तो उसकू दूर करणेका इलाज

करवाणा भी जी भई गीली सरदीकी जगे गीलीदिवाल पूरा कपडा नहीं पहरणा वगेरे सधिवायूकू मदत देणेवाली अडचलोंकों दूर करणा और पूरा पोपण कारक अच्छा खुराक खिलाणा गरम कपडे फुलालीन वगेरेके पहराणा गरम दवा गरम खुराक रातकू डोवर्स पाउडर और दरदकी जगे ग्रासन तेलका मालिस ये सब काम संधिवायूके वास्ते अच्छा है, (१९) न० ५०५ तथा ५२८ का मिक्श्चर अनुक्रमसे अजमाणा और न० ५९४ वाला लिनिमेन्ट उपयोगमे लेणा (२०) इसके सिवाय नीचेका मिक्श्चर जरूर पडे तो ऐकके पीछे एक अजमाके देखणा न० ५८७ ५८८ ५८९ वगेरे होमियोपैथिक इलाज—एकोनाइट तथा ब्रायोनिया ये दोनो चीजों तीक्ष्ण सधिवायूके वास्ते सर्वोत्तम इलाज है, सधिवायूके तीक्ष्णरूपमें रिदयमें विकार युमोनिया (फेफसेका वरम) तथा फेफसेके पुडका वरम वगेरे भयकर रोग वढ जाणेका भय रहता है, तीक्ष्णसधिवायूमें ये दो दवायें दो दो तीन २ घटेके अतरसे वारी फिरत देणा इससे बुखार तथा दरद नरम पडे इतनाही नहीं लेकिन इससे सधिवायूका दरदभी मिटता है, ब्रायोनिया लिनिमेन्ट करके तेल होता है, वो बाहर लगाणेके काममें लिये जाता है, ये दवा दोनोंसे फायदा नहीं होय तो हसटोक्स अर्निका बेलाडोना पल्सेटिला वगेरे दवायोका उपयोग करणा (पुराणे संधिवायूमे) नीचेकी दवा दी जाती है, ब्रायोनिया साधोंमे उष्णता और सोजन और चलते दरद होता है, तब ये दवा जादा उपयोगी हैं, होडे न्ड्रॉन सांधोंमे फटणे माफक दरद होय तथा गोडेमें सोजा तथा ललाई होय तो ये दवा अच्छी है, हसटोक्स साधे अकड जाय चलणेकी सरुआतमें वहोत दरद करे और कुछ थक चले पीछे दरद कम होय एसे दरदमे ये दवा फायदे घद है, पलसेटिला घुटणे गिरिये वगेरे साधोमें वादी आई होय और रातकू दरद बढता होय, औरतोके, ऋतुधर्मकामरज होय तब ये दवा उपयोगी है सधिवादीका उपचार बाहिरका (२१) समालू (निर्गुंडीके) पत्तोंको बाफकर साधेपर बाधणा (२२) दश मूलके उकालीमें तेल डालकर उसकू फेर उकाल तइयार किया भया तेल मसलणा (२३) मालकाकणी कडवी जी भी अजवाण मेथी तथा तिल इनोको पीलके तेल निकालणा (२४) नारायणतेल ऊपर लिखा है, वो वहोत अच्छा इलाज है (२५) बबूलकी तथा सहजणेकी छाल पीस उसका लेप करणा (२६) सहत तथा कली चूनेकू हथेलीमें मथकर दरदकी जगे लगाकर ऊपर रूई चपकाणी (२७) गूगल तथा गूजरका लेप (२८) सोवा देवदारू कूठ और सींधानिमककू पीस आकके दूधमें मिलाकर लेप करणा (२९) लीनीमेन्ट और टिंकचर आयोडीन पाससे लगाणा (३०) नं० ४४१ के पेटेमें लिखे भये लिनिमेन्ट वापरणा (३१)

नं० ३११ ३१८ का लेप संधिवायूपर फायदा करता है, एकही सांधोमे दरद होय तो (केन्थारीडीस पलास्टर मारणेसे तुरत फायदा होता है.

(विशेष सूचना) ये सब बाहरके इलाज दरदकूं कम करता है, लेकिन् दरदकी जड खून सुधारणेवाली दवापीये विगर जाती नहीं और एक वेर मिटे पीछै फेर होजाता है, इसवास्ते संधिवायू मिटाणेकू कितनेक दिनोतक खून सुधारणेकी दवाओंका सेवन करणा चाहिये तीक्ष्णसधिवायूवाले रोगीने बुखारके रोगी जितनी संभाल रखणी पवनमे तथा शरद हवामें फिरणा नहीं. ठंढे पाणीसे नाहणा नहीं. बहोत गरम बहोत ठंढा तथा लूखा पदार्थ खाणा नहीं. ठंढा यानेवासी अन्न खाणा नहीं सूकी और गरम हवावाले प्रदेशमें रहणा. खुराक पोषण कारक लेणा लेकिन हलका लेणा पथ्य–दूध घी तेल मधुररस तिल गहू उडद एकवर्षके पुराणे चावल कुलथी परवल सहजणा लसण अनार केरी और चिकणा तथा गरम पदार्थ फायदा करता है, अपथ्य–चिंता उजागरा दस्त पेशावकू रोकणा अथवा कबजी उलटी करणी महनत लंघन चणा मटर कांग चवला जामुन सुपारी बाल करेले पत्तोंका शाग ठंढा अनाज ठंढा पाणी बहोत क्षार तुरा (खट्टा) कडवा तथा तीखा पदार्थ गरम मशाला सराप वगेरे नसेके पदार्थ उत्तेजक पदार्थ और मैथुन तथा घोडे वगेरोकी असवारी इतनी बाते नुकशान करती है, पुराणे संधिवायुवालेने शक्तिमुजब खुली साफ हवामें चलणे फिरनेकी कसरत करणी. तीक्ष्ण सधिवायुमेंसे दुसरे रोग पैदा होते सो-रक्ताशयका घट्ट होणा तथा बध होणा फेफसेका रोग (न्युमोनिया) प्ल्युरीसी वगेरे (कोरीआ बच्चोकामरज जिसमें बच्चोंके हाथ पांवके तथा वदनके कितनेक स्नायु इच्छा विगर हमेश चलते रहता है, आंखके भांफणीका वरम याने पुडतपर सूजन आंडोका सोजा तथा गठियावायु वगेरे बहोतसे उपद्रव होजाता है, उसमेंभी जब रक्ताशय वगेरे मर्मके ठिकाने सधिवायूका विकार प्रवेश करजाता है, तब ये रोग बहोत भयानक होजाता है, फेर तो थोडेही बचते है

आमवात

वर्णन—जिन २ रोगोंमें वायूका प्रकोप होता है, अथवा वायू दुसरी धातूकू प्रेरणा करती है, उन सब रोगोंकू आर्य वैद्यक शास्त्र कारोनेवादीके रोगोंमें गिणा है, अथवा उसकेसाथ वात एसा शब्द लगाया है ये दुसरे प्रकारमे आमवात वातरक्त वगेरोंका समावेश होता है, अंग्रेजीमें आगे लिखे मुजब ज्ञान तथा गति ततुओंके और मगजके रोगोंमें जुदा गिणाया है, जिस रोगकूं आर्यवैद्यकशास्त्र आमवात लिखता है, उसका अंग्रेजीमें सधिवायू अथवा गठिया वायूमें समावेश होगया मालम देता है, क्योंके आमवातमेंभी साधोंमें सोजन आता है, और दुसरे कितनेक लक्षण तैसे इलाजभी सधिवायूके रोगमें ऊपर लिखा उस मुजब है.

कारण–प्रकृति विरुद्ध आहार विहार करनेवाले मंद अग्निवाले कसरत याने चहिये जितना मेहनत नहीं करणेवाले ऐसे अदम्योंका आम (जठरका कचारस) वायूसे चलाय मान होकर कफके ठिकाणोमें जाता है, उहां कफके सवधसें जादा विगडकर वदनमें आमकू फेलाणेवाली धोरी रगमें घुसता है, तब ये अन्नरस वायूपित्त तथा कफसें विगडके सबनसोंमें भरजाता है, ये आम अनेक रगका चीकणा और तेलिया होता है, इस आमयुक्त वायू तथा कफ एकही समय कुपित होकर कमरमें प्रवेश कर वदनकू जड बनाता है, भारी और चिकणापदार्थ खाकर तुरत महनत करणेसें भी ये रोग होता है

लक्षण–ये रोग बहोत दुखदायक तथा भयानक है, इस रोगमें सधिवायू तथा अजीर्णके मिले लक्षण होते हैं, हाथ पांव गिरिये कमर गोडे और जांघोंकी सांधोंमें दरद करता भया सोजन होता है, जठराग्नि मद पडती है, मूमेसें फेणवाला पाणी छूटता है, जिस २ जगे आम पोहचता है, उस जगे बिच्छूके डक जेसी वेदना होती है, अन्नपर अरुचि होती है, वदन भारी होता है, सोजनमें जलण होती है, पेशाब बहोत होता है, शूल चभका होता है, दिनकू नींद आती है, रातकू नहीं आती प्यास उलटी उकारी भ्रम मूर्च्छा छातीमे दरद शूल दस्तकी कबजी शरीर जड जकडा भया होता है, इत्यादिक आम वातके लक्षण है, तीनू दोषवाला और जिसमें सब वदनमें सोजन आई भई होती है, वो आमवात असाध्य है.

इलाज–ऊपर सधिवायूके इलाज लिखे हैं, वो बहोतसे आमवातकू मिटाते हैं, इसके सिवाय नीचेके इलाज अजमाणा

(१) सूठ तथा गिलोयका काढा पीणा कितनेक दिनोंतक (२) सूठ तथा गोखरूका क्काथ आमवात कमरकी शूल तथा पीठकी शूल मिटाता है, (३) रास्ना देवदारू भिलावा सूठ मिरच पीपर एरडीकी जड साटेकी जड गिलोय इसके उकालेमें सूठका कल्क अथवा सूठका चूर्ण अथवा एरडीका तेल डालकर पिलाणा (४) इकेली सूठका उकालाकर उसमे एरडी तेल डालकर देणा (५) दशमूलके उकालेमें एरडी तेल (६) एरडीके जडके रसमें सूठ मिलाकर उसके गोलेका पुटपाककर उसमें सहत डालकर पीणा (७) सूठ पींपर पींपलामूल चित्रक चव्यका क्काथ देणा (८) साटेकी जडके क्काथमें सूठ तथा कचूर मिलाकर पीणा (९) रास्ना गिलोय एरडीकी जड देवदारू और सूठका क्काथ (१०) लसण सूठ और निर्गुंडी (सभालूके बीज) इनोंका क्काथ (११) सूठ हरडे तथा अजमाण इनोंका चूर्ण खट्टी छाछमें अथवा गरम पाणीमें पीणा (१२) साटेकी जड मूरगणी एरडीकी जड मरवा जाल और सहजणा इन सबोंका पंचाग लेकर उसका क्काथ करके पिलाणा (१३) सरसूके तेलमें फिर

मालेके पत्ते सेककर सांझकू खाणा और पीछे व्यालु करणा (१४) हरडे १२ भाग सूंठ ४ भाग अजमोद ४ भाग खुरासाणी अजवाण दो भाग सींधानिमक २ भाग बारीक चूर्ण खट्टी छाछके संग या गरम पाणीके संग पिलाणा (१५) सूंठ २४ भर धाणा ८ भर इनोंका कल्ककर उसमें ६४ तोला घी तथा २५६ तोला पाणीमें डाल घी बाकी रहे उहांतक पकाणा इयघी आमवात मंदाग्नि वायू तथा कफकूं दूर करता है, (१६) सूठका कल्क ५ रुपेभर सूठका क्वाथ २५६ भर घी ६४ भर इन सर्वोकों उकाल घी तइयार करणा ये घी कफ वायू मदाग्नि तथा आमवातकू मिटाता है, (२७) सुंठका पुटपाक, अजमोदादि चूर्ण—अजमोद वायविडग सींधा निमक देवदारू चित्रक पींपलामूल पींपर सोवा मिरच ये दरेक एकेक तोला हरडे ५ तोला वरधारा दश तोला सुठ दश तोला इन सर्वोका चूर्ण गरम पाणीमें अथवा दूने गुडमें मिलाकर देणा (१८) रास्नादि क्वाथ (नं० २१४ १५ १९) योगराज गूगल (न० ५८) (२०) खंडशूठी—सूठ ३२ तोला घी ८० तोला दूध १२८ तोला खांड २०५ तोला इनोका पाक करके इसमें सूठ मिरच पींपर तज तमालपत्र और इलायची एकेक चार तोला ले चूर्णकर मिलाकर पाक खाणा (२१) गोमूत्रके संग गूगल पीणा (२२) सूठके संग हरडे चाटणी (२३) तिल तथा सूठ पीसकर उसकी चटणी खाणी (२४) सुठ हरडे तथा गिलोयके क्वाथमे गूगल डालकर गरम गरम पीणा (२५) लसणका रस तथा गउका घी एकेक तोला पीणा.

पथ्य—विशेप सूचना—लंघण शेक रेच बाफे भये जवका जल बाफे भये वेगण कडवे फल लसण मोरवेल साटेके पत्तोंका शाग परवल करेला, जव पुराणे, लाल चावल, कुलथीका मटरका तथा चणोका ओसामण सब लूखा अन्न छाछ लसण कडवा तथा तीखा पदार्थ—कुपथ्य—दही गुड खारवाले पदार्थ उडद मलमूत्रका अटकाव ओजागरा जड और कफकारक पदार्थ चिकणा और भारी पदार्थ जेसें घी मख्खण मलाई मेदेका पदार्थ पिसा अन्न.

वातरक्त—

ले प्रसी

लोक इस वेमारीकूं रक्तपित्त कहते हैं, सो नही वातरक्त और रक्तपित्त अलग रोग है, रक्तपित्तका स्वरूप आगे लिखेंगे

कारण—आरोग्यताके नियमसें विरुद्ध प्रकृति विरुद्ध तथा स्वभावसें विरुद्ध एसे खानपान सग खाणे पीणेसें ये रोग पैदा होता है, इस रोगके पैदा होणेका खास या पक्का कारण अभीतक डाकदरोंकों मिला नहीं है, अभीके सोधकोने एसा सिद्ध किया है, के ये रोग एक सूक्ष्मकीडेसें पैदा होता है, वातरक्तका भयकर रोगचेपी है, याने

उपदंशकी तरे स्पर्शसें ये फेलता है, फेर वो ओलादमेंभी ऊतरता है, इसवास्ते वातरक्तवाला रोगीका ससर्ग करणा नहीं एसे रोगीके सग व्याह करणा नहीं गरीब भिक्षारी लोक जो खराब विगडा भया अन्न खाणेवाले हैं, उनोमें ये रोग जादा देखणेमे आता है, खराब खानपानसें वायू तथा खून विगडता है, दूषित भये वायूकेसग खून मिला भया होता है, इसवास्ते इसका नाम वातरक्त है.

लक्षण—वातरक्तके पूर्वरूपमें प्रथम चिन्हतरीके वदनपर अत्यत पसीना आता है, अथवा बिलकुल आता नहीं स्पर्शका ज्ञान कम होता है, साधे ढीले होते हैं, अग जड होता है, वदनमें सुई चुभाणे जेसी वेदना होती है, मेद भारीपणा तथा ग्लानी होती है, खुजली तथा जलण होती है, और वदनपर चकर २ होते है, रोग वढे बाद इसके चिन्ह प्रगट मालम देते हैं, उदरिया वायूकी तरे वदनपर गाठे तथा चकते उठकर सब वदनपर विशेष करके कपाल वगेरे मूके अवयवोंपर सोजा चमडीपर तग तगाट और ललाई हाथ पांवोंकी अगलिया टेढी होणी नख खिर जाणा जलण चमडी फूटणी पाणी झरणा मांस गिरपडणा ये सब आखरीके चिन्ह हैं, इस रोगकी मुख्य दो खासियत है, गठिया वातरक्त तथा शून्य वातरक्त कितनेक आदमियोके वदनपर गांठे २ हो जाती है, और कितनोंके वदनपर चमडी शुन बहरी याने स्पर्शका ज्ञान विगरकी हो जाती है, और बहुतोंके दोनों रूपसें दिखाई देता है, कितनेएकोके अलग २ भी होजाता है, (गठिया वातरक्त—गठिया गलत कोढ दो तरे सरू होता है, बुखारके सग लाल चमडीपर चट्टे होजाते है, अथवा बुखार विनाभी सरू होजाता है, पहली चट्टे लाल भूरे रगके होते है, पीछे सुजकर उसमे गाठेवध जाती है, मू गाल नाक कान वगेरे अवयवोंकी चमडी जाडी सूजी भई तथा तगतगती दिखती है, और पीछै वदनकै दुसरे भागोमे भी एसा फेरफार होता है, इस रोगके सरु भये पीछै प्रगट चिन्ह देखाते २ किसी २ वखत वहोत मुद्दतवीत जाती है, चाठोंसे गाठे होती है, वो गाठे वढकर बडी होणेसें उसमेसें फूटकर पीप वहता है, नाककी हड्डी सडकर नाक चपटा होता है, वदनके ऊपरके छेडेपर एसा फेरफार होजाता है, तब दुसरी तरफसे नीचेके छेडेपर पावोंकी अगुलिया सूज जाती है, पाणी झरता है, तथा गलके गिर पडती है, हाथ पैर ठढा होता है,या हाथ पेरमे अगारसी जलती है, और पीछेसे शून्य होकर निकामी होती है, शून्य वातरक्त—हाथ पैर अथवा वदनका कोईभी भाग शूना पडता है, चमडीकी ये शून्यता अकस्मात रोगी नहीं समझसके इसतरे आती है, रोगीकू अचभा होकर शून्य बहरी पीछै मालम देती है, किसी २ वखत वदनपर फफोला उठता है पीछै ये फफोला फूटकर पीछा भरीजकर इस जगे सुपेद दाग पडता है, फेर दुसरी जगे फफोला उठता है, प्रथम सरु आत हाथ पैरसें होता है, वदनपर चट्टे होते है, उसकी चमडी सूकी

और शून्य वहरी होती है, ये चठे फेलते जाते हैं, इय इहांतक शून्य होते हैं, सो इस भागकूं जलावे या काटे तोभी रोगीकू मालम पडती नहीं इस गलत कोढ रोगमें अंगुलिया सडके नही पडती फक्त अंदर सकुडाकर ठूठा होजाती है,

इलाज--वातरक्तका अकसीर इलाज युरोपि लोकोंके अभीतक कुछ हाथ नही लगा है, तोभी ये रोग सरु होतेही जो दवाई देते हैं, सो लिखते हैं, (१) शोधक दवाये (पृष्ट ३१५) सारक शोधक दवायें (पृष्ट ३१५) तथा रोपण दवाये (पृष्ट३११) (२) गिलोय उत्तम इलाज है, इस वास्ते गिलोयके काथमें एरडीका तेल अथवा गूगल डालकर बहोत दिनोंतक सेवन करणा अथवा गिलोयका रस कल्क चूर्ण कर उसका सेवन करणा (३) गिलोय तथा गूगलकी त्रिफलाके काथमें गोलियां करके उसका सेवन करणा (४) अरडूसेका पत्ता गिलोय तथा अमल तास इनोकी उकालीकर एरडीका तेल डालकर पीणा (५) तीनसे पांच हरडेकी छालका चूर्णकर गुडमें मिलाकर हमेश खाणेमे आवै उसपर गिलोयका काढा पीणा इससे भयकर वातरक्त मिटता हे, (६) दूधके सग एरडीका तेल हमेश पीणा दस्त लगकर एरड तेल पच गये पीछे दूधभातका भोजन करणा इसतरे बहोत दिनोंतक सेवन करणेमें आवै तो बहोत दोपोका गलत कुष्ठ मिटता है, (७) गिलोयके काथमें गिलोयका काथ तथा कल्क डालकर चोगणा दूधमें सिद्ध करा भया घी खाणेसे बहोत फायदा होता है, अथवा गिलोयका काथ या स्वरसमें गिलोयके कल्कसे पकाया भया घी, सरु होता अथवा पुराणा भी वातरक्त मिटता है, (८) आकडेकी जडका बहोत दिनोंतक सेवन करणा (९) सोनामुखीका पवित्र चूर्ण (न० १८६) बहोत दिनोतक सेवन करता जाय तो वातरक्तकूं फायदा करती है, (१०) मोगरेकी छालका तेल १० से ३० बूद चूनेके नितरे भये जलमें हमेस दिनमें दो तीन वखत देणा (११) उंदर कर्णीका रस पीणा उसके पत्ते पीस लेप करणा (१२) असालियेकी जड तथा छालका काथ मिरचके दाणे डाल चार छ मासा फेर पीणा (१३) काली जीरी त्रिफलाके काथमें पीणा (१४) गलजी भी याने गाय जवां वातरक्तकी जलण मिटाती है, इसके सिवाय थडे इलाज वण सके तो नीचे मुजब करणा आचारांग सूत्रके टीकाकार श्रीशीलांगाचार्य लिखते है, की साधूके ये रोग होजाय और कोई भी दवासे शांत नहीं होय तो वैद्यके हुक्म मुजब मच्छीके मांससें या और विना हड्डीके गरम मांससे कइ दिनोतक इसके व्रणकूसेके तो आराम होय इसकू लूतिका विष रोग करके लिखा है, ये हुक्म महा कारण पडणेसें बाहरके इलाजके वास्ते साधुओंकों सूत्रकारनें हुक्म दिया है, उहा मोचा एसी क्रिया बाह्य परिभोगार्थे नतु असनार्थे इस लेखकों बुद्धिवानोंने सामान्य नहिं समझणा ग्रहस्थ तथा सामान्य साधुये कर्त्तव्य नहीं आचरे सूत्रका आशय गभीर है, गीतार्थो को गम्य है, तुच्छ बुद्धिये कलकारोपण करेंगे इति.

(१५) अमृताद्य घृत–गिलोय मोलेठी दाख त्रिफला सूंठ खपाट अरडूसा अमलतास सपेद साटेकी जड देवदारू गोखरू कुटकी मजीठ पींपर रास्ना एरंडीकी जड वरधारा मोथ कमल इनोका कल्क करणा ६४ तोला आंवलेका रस ६४ तोला घी और १९२ भर पाणी सबकू एकठा मिलाकर पकाकर तइयार करणा इस घीकू दवा तरीके तेसें भोजनमें लेणेसें इस रोगमे बहुत फायदा करता है, (१६) गडूची तेल–गिलो तोला ४०० भर उसकू १०२४ तोला पाणीमें उकाल चोथा भागका पाणी रखके छाण लेणा उसमे १०२४ तोला दूध तथा मोलेठी मजीठ जीवनीय गणके मिले इतनी दवा कूठ इलायची अगर दाख जटामांसी नखल्या सभालूका बीज गोरख मुडी सूठ मिरच पीपर सोवा काकडासींगी उपलसिरी तज तमालपत्र अरणी समेरवा भू अवली तगर नागकेशर वाला पद्मकाष्ट कमल रगतचनण इनोमेसें जितनी मिले इतनी दवाये एकेक तोला लेकर चटणी करणी तथा २५६ तोला तेल इन सबोंको धीमे तापसें पकाकर तेल सिद्ध करणा ये तेल वातरक्तके रोगीके पीणेकू देणा वदनपर मसलणा पिचकारी मारणी इससे वातरक्तके सर्व विकार मिटते है, (१७) मधुक तेल–चार तोले मोलेठी का कल्क करणा ६४ तोलाभर तेल २५६ तोला दूध तीनोको मिलाकर मद आचसें तेल तइयार करणा इसतरे तइयार किये तेलकू फेर इसीतरे १०० वेर अथवा १००० वेर पकाणा एसे तेलसें वातरक्त वगेरे बहोतसे रोग मिटकर धातू पुष्ट होता है, तथा ऊमर वढती है

(१८) मजीष्टादि क्वाथ–(न० २२०) त्रिफला गूगलके सग अथवा किशोर गूगलके संग बहोत दिनोंतक सेवन करणा (१९) चद्रप्रभा गुटिका– (न० २४६) अनुपान–पाणी दूध छाछ दरटक २॥ मासेसें १ तोलेतक गोलीका सेवन करणा (२०) किशोर गूगल त्रिफला गूगल तथा गोक्षुरादि गूगल न० ५८ अमृता क्वाथ (न०५७) वासादि क्वाथ न० २१२ अमृता घृत (न० २८८) जो गलत रोग अदर बहोत नहीं घुसा होय तो उसपर लेप मालिस सींचणा तथा ऊपर दवा बांधणी अगर जो दोष अदर घुस गया होय तो जुलाब पिचकारी तथा स्नेहपान घी तेल पिलाणा बाद योग्य दवायोंका सेवन करणा बाहारके इलाज इस मुजब (२१) बकरीके घीमें अथवा दूधमें गहूका आटा मिलाकर लेप करणा (२२) तिलकू शेककर पीसणा उसकी चटणी दूधमे उकाल उसका लेप करणा (२३) अलशीकू दूधमे पीस लेप करणा (२४) एरडीके बीजोंकों पाणीमें या दूधमे पीसकर लेप करणा (२५) भेंसका मक्खण गधक गोमूत्र दूध और सींवानिमक इन सबोंको एकठाकर धीमें तापमें अग्निपर गरमकर वदनपर मसलणेसें वदनका फटणा तथा चिणक मिटनी है, (२६) सो वेर अथवा हजार वेर पाणीसें धोया भया घी और राल मिलाकर लेप करणा तो

खूनके विगाडका वातरक्त मिटता है, (२७) दशांग लेप नं० ३१२ असालिया और तिलका लेप करणा (२८) सरसू नींवके पत्ते आक जटामासी जवखार और तिलकूं पीस लेप करणा (२९) मसूरकी दालकूं मखणमें पीस अथवा सहजणेके फलीके वीज पीस लेप करणा (३०) गरजनका तेल १ भाग और सालिड ओइल ४ भाग मिलाकर फजर सांझ वदनके मसलणा अथवा वावचीका तेल या चिरोंजीका तेल अथवा कारवोलिक तेल (१) भाग कारबोलिक एसिड और १०–१५ भाग तिलका तेल वदनके मसलणा अभयामोदक पतवाणी दवाहै.

विशेष सूचना–वातरक्तका रोग बहोत भयंकर है, इस वास्ते इस रोगमें दवाका साधन बहोत महीनोंतक करणेसे फायदा होता है, इस रोगीकू कुटंवसें अलग रखणा अदमीसें स्पर्शतक नहीं होणा चहिये अच्छा पथ्य खुराक स्वच्छ हवा सफाई रखणी चाहिये पथ्य–पुराणे जव पुराणे चावल पुराणे गहु साठी चावल तूर मूगकी दाल अथवा ओसावण कुलथी चवलाई (चदलिया) ये दवाका काम कर सकती हे, दूधी (कडूलवा) तोराई दूध घी सींधानिमक वगेरे–कुपथ्य–कसरत स्त्री सेवन क्रोध उष्ण पदार्थ खट्टा तथा खारा पदार्थ दिनकी नींद शरद तथा भारी पदार्थका त्याग करणा

रक्तपित्त.

स्कर्वि.

कारण–तीक्ष्ण क्षार उष्ण तथा लवण पदार्थका अति सेवन अतिताप बहोत कसरत बहोत रस्ते चलणा बहोत शोक बहोत मैथुन इत्यादिक आहार विहारसें पित्त बिगडकर खूनकू विगाडता है, और ये विगडा भया खून रक्तके बहणेवाली नसोसे निकलकर उचेके द्वारसें अथवा नीचेके द्वारसें पडता है, अभीके यूरोपी विद्वानोने एसा सिद्ध किया है, की ताजी वन्स्पति शाग तरकारी नही खाणेसे रक्तपित्तका रोग होता है, इस वास्ते ही आनदगाथा पतीने उपाशक दशा सूत्रमे सब वनस्पती छोडके एक खीराम्ल फल मोकला रक्खा है, के स्यात् रक्तपित्त न होजावे वाकीके सब साधन जो जो उसने मोकले रखे है, वो सब आरोग्यताके हेतुभूत है, तेसें और भी अयोग्य आहार विहारसें ये रोग होता है, एसा देखणेमें आता है, रक्त याने खून और पित्त दोनों अथवा रक्त याने लाल रगका पित्त होकर वहणे लगता है, इस वास्ते इस रोगका नाम रक्तपित्त एसा धरा है.

लक्षण–नाक कान आंख मू योनी तथा गुदा तेसें वदनके महीन छेदोमेंसं लाल रगका पित्त अथवा खून गिरता है, वदनमें दुर्वलपणा फीकापणा उदासीपणा श्वास कास ज्वर उलटी दाह शिरमें परिताप आलस मूमे खराव वो अरुचि मदाग्नि वगेरे इस रोगके उपद्रव है, इस रोगवालेके मसूढे सूजकर खून और पीप गिरता है, मसूढे काले होजातेहैं,

इसके सिवाय पांवपर और दुसरी जगे भी जामुनके रंग जेसें चट्ठे होते है, चांदी(घाव) गिरता है, उसमेंसें खून गिरता है, पांवपर सूजन होता है, जखम रुककर फेर फूट जाता है, भूख लगती नहीं दस्तकी कबजी होती है अथवा जादा दस्त मरोडा रक्तातिसार होजाता है.

प्रकार–देशी वैधकशास्त्र मुजब रक्तपित्तका मुख्य दोप्रकार है, १ उर्द्धगत तथा २ अधोगत, उर्द्धगत ऊपरके छेद नाक कान आंख मूके रस्ते वहणेवाला और अधोगत याने नीचेके छेदोमेंसे योनी गुदामेसें वहणेवाला ऊर्ध्वगत रक्तपित्त साध्य होता है, अधोगत कष्टसाध्य होता है, तथा दोनों संग होय और रोगी वृद्ध होय और अशक्त होय तो असाध्य होता है

इलाज–कमया जादा दोष मुजब छोटे बडे उपाय नीचे मुजब (१) अरडूसा अछा इलाज है, उसकी बनावट–वासास्वरस–वासा पुटपाक वासादिक्काथ–वासावलेह वासाखड पाक देखो (न० ६) अरडूसेका चाटण (न० २६८) (२) कोला उसकी बनावट–खड कुष्मांडपाक (न० २८२) कुष्माडावलेह (न० २६६) (३) दाख द्राक्षावलेह (न० २६५) (४) जीरा–जीरापाक (न० २७३) (५) वाला–उ-सीरा सव (न० २८३) (६) बकरीका दूध सहत मिश्रीमिलाकर पीणा (७) मोलेठी धाणा रगतचनण अरडूसा तथा वाला इनोका काथ सहत मिलाकर पीणा (८) शखजीरा घी मिश्री (९) दाख बेदाणा तथा धाणा इनोकी उकाली (१०) जब कूसेक आटा करके पाणी घी मिलाकर पीना (११) आमकी छाल जामुनकी छाल अर्जुन वृक्षकी छाल इनोंकों महीन पीस रातकू मट्टीके पात्रमें २४ तोला जलमे भिगाकर फजरमें छाणकर सहत डालकर पीणा (१२) धाणा आवले अरडूसेके पत्ते दाख पित्त-पापडा इनोका हिम करके पीणा (१३) कमलके ततु मजीठ कबाबचीणी बलबीज कपूर वाला मोथ रगतचनण और पद्माख ये दरेक एकेक तोला लेकर इनोंका कल्क करणा पीछे ६४ तोला चावलोका धोवण ६४ भर बकरीका दूध ६४ भर बकरीका घी उसमे वो कल्क मिलाकर पकाकर घी बनाना वैधकशास्त्रमें इस घीकू दुर्वाध घृत कहते है, मूंमेंसें खूनकी उलटी होती होय उसकूं ये घी पिलाणा नाकमेसें गिरता होयतो इसकी नासदेणी कानमेंसें वहता होयतो डालणा आखमेंसे जाता होयतो आखमें डालणा गुदा तथा पेशाबके रस्ते जाता होयतो इस घीकी पिचकारी मारणी रुखमेंसे निकलता होयतो मालिस करवाणा (१४) दाख चदन लोदगहूला ये चारोका चूर्णकर अरडूसेके पत्तोंके रसमें तथा सहतमें पीणेसें तमाम जगेका खून झरता बध होता है (१५) आंवलेके चूर्णकू घीमें सेक पीछे पाणी मिलाकर सिरपर लेप करणेसें नकीसीर बध होती है, (१६) नकसीरवालेकू मिश्रीका सरबत पीणा नाकसे दूध पीना दूधमें दाखका रस मिल[illegible] पीना अथवा मिश्रीके सग इक्षुका रस सुघानेसें नकसीर बध होती है (१८)

चद्रकला रस हमारे दवाखाणाकी दवाइ बहोत श्रेष्ठ इलाज है, (१९) नींबूका रस ४ औंस कलोरेट ओफ पोटास १ ड्राम टिकचर सीकोना कम्पाउन्डर ४ ड्राम मिश्री २ औंस ब्रांडी २ औंस पाणी ४ औंस मात्रा ½ औंस दिनमें तीनवेर पिलातेहैं (२०) टिंकचर फेरीपर क्लोराइड १ ड्राम कीनाइन ६ ग्रेन क्लोरेट आफ पोटाश ०॥ ड्राम पाणी ३ औंस तीन भागकर दिनमें तीनवेर पीणा (२१) न० ७२६–८२७ केहकीमीनुसखे (२२) नींबू अनार जामुन अवली आंवले वगेरेका शरवत पीणा तथा फल खाना.

विशेष सूचना–ताकतवर और खूनवाले अदमीका कोई भी जगेसें एकदम खून पडे तो विशेपकारन विगर उसकू रोकणेका इलाज नहीं करणा क्योंके बहोतसी वखत कुदरती आपहीसे वधे भये खूनकू इसतरे रस्ताकरके अदमीकू रोगमेंसें बचाय देता है, वुड्डा दुवला और कम खूनवाले आदमीके बदनमेंसें खूनगिरे तो जलदी रोकणेका इलाज करना–पथ्य–चावल, साठी चावल, जव, कांग, कोद्रव सामा मूग मोठ तूर मसूर चणा परवल मीठानींबू चदलिया वड तथा पींपलकी कूंपल दूध घी केला भूराकोला (पेठा) तरवूज इक्षु मिश्री अनार आंवले वगीचे तह खाना ठढी हवा इत्यादि पित्तशामक चीजे कुपथ्य–कसरत रस्ते चलना गरमी धूप मलमूत्रकू रोकना घोडेकी सवारी अग्नि धूम्रपान (हुक्का चिलम) स्त्रीसेवन कुलथी गुड तिल उडद दहीं खारापदार्थ पानसुपारी लसण बासी अनाज कडवा खट्टापदार्थ ये सब खराब है

कंठवेल–गंडमाल–ग्रंथी.

स्क्रोफ्युला–ट्युवरकल.

कारन–१ इसरोगमें वदनमें गलेमें गांठें होजाती है, तोभी वो एक शारीरक रोग है, खूनका विगडना ये इसरोगका मुख्य कारण है, खराब खुराक खानेवाले और शरदीवाली नीची जगोमें बसणेवाले लोकोके ये रोगविशेप देखणेमें आता है, अशुद्ध पारा खाया होय गरमी सूजाककी वेमारी भई होय तो भी खून विगडके ये रोग होता है, आहार विहार कसरत हवा पाणी वगेरेमे विपरीत याने प्रकृती विरुद्ध आचरणसें खून बिगडता है, उससें वदनका सब भागोंकू यथास्थित पोषण नहि देनेसे दोप गांठके रूपसें बाहर आता है, ये रोगभी ओलादमें ऊतरता है, इसीवास्ते ये रोग बच्चोंके जादा देखणेमें आता है, २ अभीके नये सोधकोंके प्रमाणसें इसकी पैदाशके दुसरे कारण कहनेमें आते है, एक मत एसा है, के ये रोग चेपी है, दुसरे एसा कहते हैं, (ट्युवरकल वेसीली–नामके जतुसे ए रोग हयातीमें आता है, (३) बापके ये रोग होय अथवा गर्भ रहती वखत माताके प्रदर रोग होय तोभी किसी २ कू ये रोग होता है

लक्षण–इसरोगके लक्षण अथवा चिन्ह शारीरक तेसें इस्थानिक इसतरे दो प्रकारसे मालम देता है, शारीरक चिन्ह–शरीर नाताकत नाजुक बहोत मदाग्नि नाडी जरा जल्द

बदन गरम और थोडा २ बुखार (स्थानिकचिन्ह—गलेमें काखोमें खंधेमें काछोंमें और जांघोंमे गाठे होती है, इतनाहीं नही लेकिन् चमडी पेट मगज फेफसा रसपिंड सांधे हाड और आंखके अंदरके भागके साथ इस रोगका संबध होता है, चमडीपर बडे दुरगध-वाले जखम सडे भये जखम होते हैं, जादा करके पैरोंपर तेसे हाथ छाती पीठ गरदन वगेरे भागोंपर होते हे, बहोत मुदत तक भरता नहीं फैलता है, औरको रखरखोदरी गांठे जेसी होती है, पेटमे ये दोप भरजाता है, तब बच्चेका पेट घडे जेसा होता है, दस्तकी कबजी रहती है. उससे जलदर भी होजाता है, इसीतरे मगजके बीच रस पुडमें इस दोपका जमाव होकर सोजा होता है, और सखत बुखार आता है, मगजका ये दोष पाच वर्षके अदरके बच्चेके होता है, बालक बेचैन बेहोस होजाता है, दांत पीसता है, चीस मारताहे आंख मुची रखता हे, उलटी होती है, दस्तकबूज शिर गरम और आंखकी कीकी सकुडाय जाती है, फेफसेमें इस दोपका जमाव होणेसे उहां सोजा होकर पकता है, और क्षयकी बेमारी होजाती है, रसपिडमें ये दोपका सचय होता है, और गरदन बगल और पेटके अदरका रस पिंड बडा होता है, गलेमें इम दोपका सचय होकर गाठ होती है, गलेके दोनो तरफ एसी गांठे होती है, और पीछेसे बंधकर हारके मुजब गांठोकी श्रेणी होती है, इसवास्ते इसकू कठमाल कहते है, इय गांठ छोटी नारगी जेसी होती है, किसी २ के बढकर नालियेर जितनी भी होती है, इस गाठोंमें बहोत दरद नहीं होता लेकिन् जो उसका इलाज नहीं होय तो दोप अदर घुस बढकर श्वासनली और अन्ननलीके ऊपर दबाव होणेसें जिंदगीकू जोखम पहुचती है, बहोत वखत हासकी हड्डी भी सड जाती है, और बदनके दुसरे भागमे भी ये दोष भरजाता है, जब हाडोतक पहुचता है, तब अस्थिव्रण होजाता है, आंखमें ये दोप आता है, तब आखोमें फूला पडता है, पाणी झरता है, सूर्यका प्रकाश सहा नहीं जाता स्क्रोफ्युलाका दोपवाले बच्चेके बद-नमें गांठे चांदी कान बहणा साधा और खाजखुजली जेसे चादी खासी आखर क्षय जेसी स्थिति होती है

इलाज (१) देशी वैद्यक शास्त्रमे कठवेल वगेरे ग्रथी गाठोंके रोगमे कचनार नाम वृक्षका बहोत गुण लिखा है, उसकी छालका उकाला चूर्ण अथवा न० ४० मे लिखा भया कचनार गुगलका सेवन करणा इसके सिवाय खूनकू शुद्ध करणेवाली सब दवाइयां जेसेंके चद्रप्रभा किशोर गुगल त्रिफला गूगल मजिष्ठादि क्वाथ वगेरे इस रोगमें फायदा करता है, (२) अग्रेजी दवाओंमें कोडलीवर लोह पोटास आयोडाईड सिर पफेरी आयोडाईड हाईपोफोस्फेट ओफ लाइम सोडा वगेरे असरकरता है

(३) होंमियापैथिक दवायोंमें आयोडाईन सीलीशिया हियारसल्फ बेलाडोना फोसफारस वगेरे—बाहरका इलाज—(१) सरसू सहजणे की फली सणके बीज अलसी

जव और मूलीका वीज इन सबोंकों खट्टी छाछमें पीस इसका जाडा लेप करणा (२) दोपघ्न लेप (न० ३११) (३) जलपर सेवाल होती है, उसकी भस्मीकर सरसूके तेलमें मिलाकर लेप करणा.

(४) नींबके रसमें बच्छनाग पीसकर लेप करणा (५) चित्रकजड मिलावा हीराकसी थोहरकी जड इनोकू कपासके रसमे अथवा चावलोके धोवणमें पीसकर लेप करणा (६) धतूरेके पत्ते पीस उसमें कलीका चूना मिलाकर लेप करणा (७) टिंकचर आयोडीन (८) पारेका मलम (९) गांठ फूटे पीछे न० ३०२ वगेरे दवाओका उपयोग करणा (१०) रेड आयोडाइड आफ मरक्युरी ओईन्टमेन्ट

विशेप सूचना—इस रोगमे खून साफ होय पाचनशक्ति वधे और शरीरकी आरोग्यतावणे एसी खुराक तथा दवाओंको सेवना चाहिये स्वच्छता शुद्ध और सूकी हवा पौष्टिक मी शुद्ध अच्छा और सादा खुराक ये इस रोगका मुख्य पथ्य है, तमाम गरम उत्तेजक पदार्थ सराप गरम मसाला वगेरेकूं त्याग देणा

ग्रथी (ट्यूमर) अर्बुद वगेरे सख्त ग्रंथी याने गांठोकेवास्तेभी ऊपर लिखेभये इलाजही अच्छे हैं, जो गांठे काटणे जेसी होय वो शस्त्रवैद्योंकी सलासे उणलोंकोंके पाससेही कटाणा रसोली वगेरे गांठे कुचरणेसें अथवा डांभ देणेसे वधती बंध होती है, मसा वगेरे छोटी गांठोंकूं कतरणीसें काटकर तेजावसें अथवा कास्टीकसें जला डालणा नाक तथा कानमें मसे जेसी गांठो होती है, वोभी शस्त्रवैद्यके पाससें काटडालणी कितनेक लोक रसोली वगेरे बडी गांठोंकूं खार लगाकर फोडते हैं, लेकिन् इस तरेसें फोडीभई गांठें जलदी भरती नहीं और जादा दरद पैदा करती है

पांडू—एनीमियां—

कारण—खूनमेंसें लाल रजकण कमहोणा अथवा वदनमेंसें खून कम होणा ये पांडूरोगका मुख्य कारण है, खून कम होणेका कारण अथवा फीका पडणेका कारण इस मुजब है—जखमसे अथवा औरतोंके रक्तप्रदरमें अथवा बच्चा होतेवखत बहोत खून जाता है, मस्सा तथा सग्रहणीमें भी खून जाता है, इसतरे वदन फीका पडता है, इसके सिवाय वहोत मुद्दततक बुखार आणेसे तिली चढणेसें यकृत कलेजेमे विकार होकर पित्त विगडणेसें अच्छा और पूरा खुराक नही मिलणेसें मूत्राशयके रोग होणेसे वहोत स्त्री सेवन करणेसें और वच्चोंको मट्टी खाणेसें औरतोको कोयले मट्टी चूना वगेरे खाणेसें पांडुरोग होजाता है आम्लपित्तसें भी होता है.

लक्षण—वदन फीका पडणा ये पांडूरोगका प्रगट चिन्ह है, आंख जीभ मू तथा होठ खून विगरका फीका या सुपेद दिखाई देता है, चहरें पर थोथर (जरा सूजन) मालम देता है, शरीरमे नाताकती श्वास मूर्च्छा चक्कर कानोमें अवाज शिरमे दर्द

उदासीनता भूखका नहीं लगणा अरुचि उलटी दस्तकी कबजी वगेरे दुसरे भी उपद्रव होते हैं.

इलाज-(१) लोहसार मडूर अथवा लोहके काटीका चूर्ण करके उसकू गऊके मूत्रमें एक दिन भिगाकर पीछे सहत या तीन वर्षके पुराणे गुडमें चटाणा (२) त्रिफलादि काथ-(न० २११) तथा वर्धमान पींपल (न० ११०) (शिलाजीत सहत वायविडंग हरडे मिश्री सम वजन मिलाकर देणा (४) वडी हरडे २१ दिन गोमूत्रमें भिगाकर पीछे देणी अथवा इसका चूर्ण सहत तथा घीमे खाणा (५) लोहासव (न० २८४) (६) द्राक्षासव (न० २८२) (७) कुमारिकासव (न० २८५) (८) चंद्रप्रभा (न० २४५) (९) त्रिफलाचूर्ण घी मिश्रीसग (१०) गिलोयसत्व (न० ५७) सहत तथा घीमे देणा (अग्रेजी इलाज-(११) न० ४८१ का मिक्श्चर (१२) न० ४८२ का मिक्श्चर कलेजा तथा तिल्लीके रोगसे जो पांडुरोग होता है, उसमे देणा चहिये अगर दस्तकी कबजी होय तो साईट्रेट आफमेग्निस्या अथवा एलियेकी मिलावटवाला हलका जुलाब लगे एसी दवा देणी (१३) जो यकृत् बराबर काम नहीं करता होय तो (न० ४५६ की गोलियां देणी (१४) सल्फेट ओफ आयर्न (हीराकसी) पांडुरोगकेवास्ते एक सहज सादा इलाज है, इसके सिवाय लोहकी दुसरी नीचेकी दवायें पांडुरोगमें फायदेमद है, टींक्चर ओफ-स्टील-साइट्रेट ओफ आयर्न एन्ड आमोनिया, आयर्न एन्ड कीनाइन, रिडयूस्ड आयर्न, पीलफेरी कम्पाउन्ड, टार्टरेट ओफआयर्न लोहके सग कपासिया अथवा कलमेकी चा देणी-होमियो पथिक इलाजोंमें लीकर फेरी डायलीसील, एन्ड चाईना दीजाती है

विशेष सूचना-खून निकल जाणेके कारणसे पांडुरोग भया होय तो उसकू रोकणे वास्ते रक्तपित्तमे लिखे जो इलाज सो करके रोकणा और खून वढे एसा इलाज करणा-पथ्य-पुराणे जव गहू चावल मूग तूर मसूर परवल, पुराणा पेठा, पुराणे केले, गिलोय काले ऊख, चवलाईका साग कादे लसण पकी केरी, आवले घी मखण दूध छाछ तेल और तुरा पदार्थ-कुपथ्य-हुका वीडी वगेरे पीणा उलटी करणी दस्त पेशाब रोकणा पसीना निकालणा स्त्रीसग फलीवाले शाग हिंग उडद नागरवेलका पान सरसू सराप, खट्टा पदार्थ, दाह करे एसा अन्नपान इत्यादिक कुपथ्य है, इनोंसे रोग वढता है.

जलंदर.

ड्रोप्सी

विवेचन-जलोदर शद्बका अर्थ जलसे भरा पेट एसा होता है, आठ उदररोगोंमें ये भी एक प्रकार है, अग्रेजीमें शरीरके कोईभी मर्मस्थानके जलसचयका समावेश

है, मगजमेंभी किसी वखत पाणी भरजाता है, और इस करके एसे रोगवाले बच्चोंका शिर वडा होता है, आंडोंकी गोलीमें पाणी भरजाता है, उसकूं अंडवृद्धि एसा रोग कहते हैं, त्वचाके नीचे पाणी भरजाता है, उसकूं लोक थोथर तथा सूजन कहतेहैं सूजन आती है, तब उसकू पक्का जलंदर गिणणेमें आता है.

कारण—मिथ्या आहार विहार ये इस रोगकू पैदा करणेका कारण है, मिथ्या आहार विहारसें वदनमें खून फिरणेमें एक तरेका अटकाव होता है, तैसें खून बिगडणेसें भी किसी २ जगे ये बेमारी होती है, जब खून बराबर फिरता नहीं तब साफ होता नहीं और जब एक जगे खूनके प्रवाहका अटकाव होता है, तब दुसरी जगे उसका जमाव होता है, और जमाव भये खूनमेंसे खूनके अंदरका पाणी महीन खूनकी नलियोंमेंसे जम २ के एकठ्ठा होता है, वदनके सर्व भागमें बारीक रक्त नलियोंमेसें हमेस प्रवाही रस झरते रहता है, उसकरके शरीरके भागोंका पोषण होता है, और बधा भया रस सूकजाता है, लेकिन् ऊपरके कारणसे जब कोईभी भागमें खूनमेंसें झरता ये रस जब बढजाता है, अथवा शोषणक्रिया कम होजाती है, तब वो रस अथवा पाणीका उस जगे संग्रह होता है, जलोदर ये फक्त जलका सग्रह है, रक्ताशय फेफसा मूत्राशय यकृत् तिल्ली इण अवयवोके विकारसें जलोदर पैदा होता है, पांडुरोगसें बहोत खून जाणेसें और बहोत नाताकतीसें भी जलदर पैदा होता है.

लक्षण—जलोदरका रोग स्वतत्र नहीं है दुसरे रोगका फक्त एक लक्षण है, जलोदर जैसें उदर रोगकी एक जात है, तेसें कितनेक विद्वानोंके मतमुजब जलोदर ये यकृतोदर ल्डीहोदर वगेरे उदर रोगका आगे बढा भया स्वरूप है, अर्थात् ये रोग जब बढता है, तब आखर उसके अंदरका दोष प्रवाही रूप बणता है, जुदे २ कारणमुजब उसके चिन्ह जुदे २ होते हैं, पांडु रोगसें अथवा नाताकतीसें जलदर होता है. तब पहली सूजन चढती है, पीछे जांघ इद्री और पेट इस क्रमसें सोजन चढती है, ऊपरके भागमें सूजन थोडा होता है, पांडुरोगके बहोत लक्षण होते हैं, रक्ताशय रोगसें जो जलदर होता है, उसमे रक्ताशयके लक्षण मालूम पडते है, पहली पांवके पोंचेपर अथवा आंखके पोपचेपर थोथर आती है, फेर पीछे पांव तथा पेटपर सोजन आती है, किसी २ वखत पेटका जलंदर नहीं होता कलेजेके रोगसें जो जलदर होता है, उसमें पहले पेट चढता है, और पीछे दुसरे भागपर किसी २ जगे सोजा आता है और किसी जगे नहीं आता कलेजेके दरदसें प्रथम रोगी दुबला बनकर पेट घडा तुबे जेसा होता है, वदन सूकाभया फीका कामला उलटी दस्तकी कबजी और कलेजेमें दरद होता है, ये रोग जादातर सराप पीणेवालेकू होता है—मूत्राशयके रोगसें जो जलदर होता है, उसकी जड मूत्रपिंडके रोगमे होती है, विशेप करके बहोतसे जलदरवालेकी जड गुरदेके

दरदमें होता है, मूत्राशयके रोगके चिन्होंके साथ पहली आंखके पोपचे सूजजाते है, पीछे चहरा तथा हाथ पांवपर सोजन आता है, आखर पेट चढता है, मूत्राशयके जलदरमें किसी २ वखत हाथ पांव चहरा तथा पेट बहुत सूज जाता है, जिस करके रोगी बडे मुस्किलसे बैठकर ऊठ सकता हे आंख मिच जाती है हाथ पांव तथा वृषण इतने सब तग होकर फूलता है किसी वखत फूटकर उसमेंसें पाणी झरता है

इलाज–बहोत करके उदररोगोंका तथा सोजेका इलाज जलदर रोगकू फायदा करता है उदर रोगके पेटेमें जलोदरका इलाज लिखेगें अथवा थोडे इलाज नीचे लिखते हैं

(१) दूध सब खुराक तथा पाणी बंध करके इकेले दूधपर रखणा तथा दूधके सग योग्य दवा देणी जेसे नारसिंह आरोग्यवर्द्धनी विजयवटी दुग्धवटी नारसिंह वगेरे साधारण वैद्योंकेपास दवा मिलेगी नहीं बण सकती है प्रख्यात वैद्योंकेपास मिलेगी हमारे दवाशालामें मिलसकती है. (२) गोमूत्र इकेला अथवा दुसरी दवाके सग पीणेसे फायदा होता है (३) त्रिकटु पाचो निमक चित्रक जवाखार टकणखार इनोका चूर्ण त्रिफलाके क्वाथमे लेणा (४) सूठ मिरच टकण साजीखार गधक– सम भाग शुद्ध किया भया जमालगोटा दो भाग इनोकी दो २ रत्तीकी गोलियो करणी मात्रा १ गोली (रोगीकी शक्ति देख बहोत हुसियारीसे देणी एसी जमालगोटेकी दवा दरहमेस नहीं देणी)

अंग्रेजी इलाज– पांडू नाताकती तथा तिल्लीका जलदर भया होयतो (४) लोह भस्म मडूर भस्म क्वीनाइन और एसी दुसरीभी पौष्टिक दवायें तथा दूध वगेरे खुराक देणा (६) न०५९५–५९६ तथा न०६९९ वाली मेलवणिये उपयोगमें लेणा और दस्तकी कब्जी होयतो एरडी तेल एलिया सोनामुखी वगेरेका उपयोग करणा

रक्ताशयका जलदर–मुस्कलसे मिटसकाता है इसमें पेशाब तथा दस्त खुलासा लाणेवाली दवा देणी नीचेका मिक्श्चर इस कामकेवास्ते अच्छा है (७) क्रीम ओफ टार्टर १ ड्राम टिकचर ओफ स्कील २० बूंद स्पिरिट नाइट्रिकइथर १॥ ड्राम केम्फर वोटर ४ औंस मिलाकर उसके तीन हिस्से हमेस तीन वखत देणी इसके सिवाय पेशाब साफ लाणेवास्ते (८) सोरा अलसीकीचा तथा मूलेका रस पिलाणा और सोनामुखी तथा विलायती निमक देकर दस्त साफ लाणा न० ७१३ का उसका–कलेजेके जलदरमें– पेशाबवास्ते ऊपर लिखी दवा देणी इसके सिवाय (न० ७११ तथा ७१२ का हकीमी नुसके देणा मूत्राशयके जलदरमें तीक्ष्णरूपमें पेशाब बधाणेकी दवा देणी नहीं तीक्ष्ण सूजन होयतो गरम पाणीका शेक करणा राईका पलास्टर मारणा पोटिस बाधणी (१०) न० ५९८ की मिलावट देणी तथा बुखार नहीं होयतो और रोग पुराणा पडगया

होयतो जवकीचा सोराखार तथा एपीकाक्युआन्हा वाइन मिलाकर वेर २ देणा अथवा इकेला लीकर आमोनी एसेटेटीस २ औंसमें ४ औंस पाणी मिलाकर चार छ वखत देणा, (होमियोपथिक इलाज).

सब शरीरका जलंदर–एपोसाइनम, आर्सेनिकम. ब्रायोनिया वगेरे (मूत्राशयका जलंदर) केन्थेरीस टेरेविन्थ आर्सेनिक

(पेटका जलदर) एपोसाइनम आर्सेनिकम वगेरे.

(यकृतका जलदर) पोडोफाइलम पल्सेटीला चाईना आर्सेनिकम कालीकार्व वगेरे.

(रक्ताशयका जलदर) डीजीटेलीस आर्सेनिकम वगेरे.

(गर्भाशयका जलदर) आर्सेनिकम आयोडाइन सेनिसीया.

उदररोग.

(कारण) जठराग्नि मद पडणेसें जेसें दुसरे रोग होते हैं तेसें उदर रोगभी होता है अजीर्णसें अति दोष करणेवाला अन्नपानसें दोष तथा मलकी अत्यंत बढोतरीसें उदररोग होता है सचय भया दोष पसीना तथा जलकु वहणेवाले रस्तोंकू रोक जठराग्निकू प्राण-वायूकू तथा अपानवायूकू दूषितकर उदरके रोगोंकू पैदा करता है.

(प्रकार) उदररोग आठ प्रकारका है वायूसे १ वातोदर, पित्तसे (२) पित्तोदर-कफसें (३) कफोदर तीन दोषसे (४) सन्निपातोदर प्लीह तिल्ली बढणेसें प्लीहोदर गुदाका रस्ता रुकणेसे (६) बद्धगुदोदर आंतमें जखम पडणेसें (७) क्षतोदर और पेटमें पाणीका जमाव होणेसें (८) दकोदर याने जलोदर पैदा होता है, एसें उदरके आठ रोग होते है

लक्षण–पेट ढमढोल चलणेकी अशक्ति वदन दुबला जठराग्नि मंद सूजन ग्लानी अपान वायू (पाद) तथा दस्तका रुकना जलण आलस नींद वगेरे लक्षण सब उदररोगोंमें होता है

(१) वातोदर–हाथ पांव नाभि तथा पेटमें सोजा पेटके दोनो पांखोंमें मध्यमें कमरमें तथा पीठमें दरद साधाओंमे फूटणी सूकीखासी अंगमें भारीपणा मलका सचय चमडीपर कालापणा दरदका कमवेशीपणा पेटमें सुइ-चुभाणकेसीपीडा पेटपर वजानेसें धमन जेसा अवाज होना ये और भी केइयक वातोदरके लक्षण होते हैं, (२) पित्तोदर–बुखार मूर्छा प्यास चक्कर दस्त चमडी आंख तथा नाखूनमें पीलापना पेटके अंदर उष्णता बाहरदाह पसीना पेटपर हरापणा लाल पीलेरगकी रगे ऊपसआना आहारका पाचन जलदी होय और बहोत दुखे (३) कफोदर–सूजन भारीपणा ग्लानी नींद जादा जादा स्पर्शका ज्ञान नहीं रहे अरुची चमडीका रग फीका सुपेद पेट करडा और सुपेदरगें दिखाईदे बडा और बहोत मुदतसे बढणेवाला सजड स्पर्शमें ठढा बोझेवाला

और अवाज विगरका होता है (४) सन्निपातोदर–खराव दुष्ट पदार्थ खाणेसें जहर खाणेसें सडे जलके पीणेसें इत्यादि कारणसे रक्त तथा वातादिक दोष वहोतही दुष्ट होकर इस दुष्ट उदररोगकूं पैदा करता है, इसवास्ते कोइ २ ग्रथकार इसरोगकू दुष्योदर भी कहते है, वेर २ मूर्छा वदनका रग सुपेद अति दुवलापणा और शोष होता है, (५) प्लीहोदर–तिलीके वढणेसे जो चिन्ह होते हैं, वो सव प्लीहोदरका समझना सूक्ष्मवुखार मंदाग्नि रगसुपेद इसीतरे दहिने तरफ यकृत वढता है, उसकू यकृतोदर कहते है, (६) क्षतोदर–अन्नकेसंग अथवा दुसरीतरे पेटमे खाणेमें आयाभया कांटाककर वगेरोंसे आंतरेमें छिद्र पडके उसमेसें निकलता भया पाणी जेसागुदाके रस्ते निकले और सूटीके नीचेके भागमें पेट घधे सूइ चुभाणे जेसी तथा चीरणे जेसा दरद होय (७) बद्धगुदोदर–अन्न शागवगेरे चिपटके रहनेवाला पदार्थ रेती तथा और कचरेसे आतरेके नलमे मल जमा होजाय गुदाका मल रुकजाय और कष्टसें थोडा २ दस्त उतरे और रिदय तथा नाभिके बीचमे पेट बधे (८) जलोदर–घी तेल जेसा चिकणा पदार्थ पिये पीछै चिकणी दवा खाये पीछे उलटी भयां पीछे जुलावलियां पीछै जो तुरत ठढा जल पीनेमें आवे तो वो रस वाहनी नलियों तुरत बिगडकर वो नलियों तेल जेसे चिकणे पदार्थोसे लिपायजाकर जलोदर पैदा होता है, पेट घधणा सरू होता है, तव नाभीके आगेसे उपसा भया लगता है, औरतोंके वच्चे जणते वखत जेसी पीडा होती है, एसी पीडा होती है, और पाणीकी पखालकी तरे लचक २ और डब २ कर हलता है, तथा वजता है

(इलाज)–उदरके सबरोग कष्टसाध्य याने मुस्कलसें मिटे जेसा है, जब उदररोग मिटता नहीं तब आखर २ पाणी भरनेसें जलोदर होजाता है, और जलोदरके दशहज्जार रोगीयोंमेंसें एक रोगी बचता है, एसा वैद्यकशास्त्रमें परमात्मा ऋषभ अरिहतका वचन है, (श्लोक) शतेपु जीवते कुष्टी, सहस्रेपु जलोदरी, मेही शतसहस्रेपु, राजरोगी नजीवति १ तोभी परमात्माने एसा उत्तम प्रयोग लिखा है, सो उसका युक्तिसें आसरा लेणेसे वहोतसे उपद्रव् अच्छा होसकते है, उदरका और सोजेका इलाज मिलतेसे होते हैं,और इस इलाजोंमें दस्तकी दवा विरेच मुख्य है, लेकिन् वो जुलाव एसा होणा चाहीये रोगीकी ताकतकू कायम रखकर दोपकू दस्तके रस्ते या पेसावके रस्ते निकालदेवे उदररोगकी साधारण हालतमे नीचे लिखे सो साधारण इलाज करणा लेकिन् वध गये पीछे इन इलाजोका कोईभी असर होगा नहीं रोग वढगये पीछे चतुर वैद्य और डाक्तरोंका आश्रय लेना (१) एरडीका तेल दसमूल और गोमूत्र ये तीनों चीज गुणकरती हैं, (२) उपलेट जमालगोटा जवखार, दुगण सूठ, मिरच पीपर सींधानिमक सेंभरनिमक सेंचल वच जीरा अजवाण तली भई हींग सज्जीखार चव्यचित्रक इनोंका चूर्ण जलसे पीणा (३) तूनाखारा जिसमें अजवाण भरणा फेर धूपमें धरना वाद सुकाके कूटना उसमे सूठ काली-

मिरच पींपर चित्रक चव्य पींपलामूल वायविडंग हरडेकी छाल बहेडाकी छाल आवला तज तमालपत्र बडी इलायची छोटी इलायची नागकेशर दोनूं जीरा अजमोद सोरा नोसादर साजीखार जवखार पापडखार इत्यादिक जो जो खार मिले सो सब जेसें अमलीका आंधी झाडेका कुवारपठेका पलासका इत्यादि मिलादेना सोनामुखी निशोतकी छाल कपीला कुटकी चिरायता नीमके सूकेपत्ते दारूहलदी एरडीकी जड नागरमोथा इंद्रजव ये सब चीज एकेक तोला ले कूटकर मिलाणा बाद कवारपठेके रसकी सातभावना सात अमलीके रसकी सात तूंबेके रसकी देकर रख छोडना बच्चेकु २ मासातक देना बडेकुं पांच मासातक पथ्य दूधभात मिश्री इससे सर्व उदररोग जाय ये चीज हमने कई जगे पतवाई है, पाणी थोडा सोडा डालके पिलाना या तीन उकालेका ठारके पिलाना बाद खीचडी दालभात चंद लियेका साग देणा (४) मारवाडमे वूइ होती है, उसकी जड कूटकर २।३ मासा जलसें फक्की देना इससें दस्त लगकर साफ होता है, पथ्य दूधभात (५) लसन १०० तोला जल २५६ तोलाभर इसका काथ करना पीछे उसमे सूठ मिरच पींपर हरडे बहेडा आंवला जमालगोटा हींग सींधानिमक चित्रक देवदारू वच उपलेट सहजना साटेकी जड संचल वायविडग अजवान तथा गजपींपर ये हरेक ४ चार २ तोला और निसोतकी छाल २४ तोला इन सबोंकों पीस चटनी करनी और उसमें काथ बराबर तेल डाल तेलपकाना ये तेल उदरके सबरोग तथा वायुके सबरोग मिटाता है, (६) पींपर तथा सींधानिमक डाली भई खट्टी छाछ पीणी (७) त्रिफलेका चूर्ण गोमूत्रमें पीणा-(पित्तोदर)-निशोतकाकल्क एरंडकी जडका काथ और दूध इससें जुलाब लेना (२) मिश्री तथा मिरचका चूर्ण मिलाकर ताजी मीठी छाछपीणी (३) निशोत तथा त्रिफलाके उकालीमें सिद्ध किया भया घी पीणा-(कफोदर)-(१) निशोतका चूर्ण सांड (ऊठनीके) दूधमें पीणा (२) सोवासींधानिमक जीरा सूंठ मिरच पींपर इनोका चूर्ण मिलाके छाछ पीणा (३) गरम जलसें वेर २ पेटपर शेक करना (४) कुलथीके काथमें त्रिकटुका चूर्ण डाल पीना दूधमें एरडींतेल पीणा-सन्निपातोदर-(१) जो हरडे निर्गुंडीका रस गोमुत्रमें पीणा (२) त्रिकटु जवखार सींधालून छाछमें पीणा (३) चदलियेकी जड जलमें पीस इसमे चोगुणा घी और घीसे चोगुणा दूध डाल उकालकर घी तइयार करणा इस घीसे सब जहरोका नास होता है, (प्लीहोदर)-यकृतोदर-(१) निगोडकारस २ तोला और गोमूत्र २ तोला (२) लालरोहीडा और हरडेका कल्ककर गोमूत्रमे अथवा भैंसके मूत्रमें पीणा (३) लसण पीपलामूल हरडे जोहरडे पीस गोमूत्रमें पीणा (४) सहजणेकी छालके रशमें सींधानिमक चित्रक पींपर तथा खाखरेका जवका खार डालके पीणा (५) कवारपठेका रस हलदी डालकर पीणा (६) पींपर और सहत डालकर छाछ पीणी (७) जो हरडे तथा लालरोहीडेकी छालका काथकर उसमें जन

खार तथा छोटी पीपरका चूर्ण डालकर प्रभातसमें पीणा (८) कवारपठेके रसमें हलदी डालकर पीणेसे तापतिल्ली मिटती है (९) भिलावा ३ भाग जोहरडे तीन भाग वायविडग २ भाग स्याहजीरा १ भाग इनोकी गोलीकर सातदिन खाणी (१०) सहजणेकी छालके उकालेमे शखभस्म देणी (११) नींबूके रसमें शखभस्म देणी (सोथोदर)–पेट जब वढता है, तव अगपर सवमे सूजन आती है, उसकू सोफोदर कहते है (१) पुनर्नवादि क्काथ अछा है, साटेकीजड गिलोय देवदारू हरडे सूठ इसकू पुनर्नवादि क्काथ कहते हैं, इसमें गूगल तथा गोमूत्र डाल पीणेसे सोजेवाला पेट मिटता है, (२) पुनर्नवादि क्काथ दुसरा, साटेकीजड जोहरडे, कडवे नींवकी छाल, दारूहलदी कुटकी पटोल गिलोय सूठ इसका क्काथ गोमूत्रडाल पीणा (३) पीपर तथा सूठका चूर्ण गुडमे मिलाकर देणा (४) त्रिफला गोमूत्रमे पीकर दूधभात ३ घटेबाद पथ्य लेणा–(जलोदर)–(१) भिलावादेणा पथ्य दूधभात (२) त्रिकटु तथा निमक छाछमे पीणा (३) सहजणेका क्काथ देणा (४) ऊठनीका दूध पीणा (५) अर्कादि क्काथ–गजपीपर सूठ मिरच पीपर तथा सींधानिमक सम वजन और आककी छाल सवके वजनसे वीसमा भाग इसका क्काथ पीणा (६) जमालगोटा अथवा दतीमूल नेपालेकू सोध उसमे दुगणा कथा मिलाकर रती २ की गोलिया करणी दस्तलगे बाद पथ्य दूधभात (७) दतीमूल ५ सेर निशोत ५ सेर हरडे वडी नग २५ इन सबोकू २॥ मण पाणीमे उकाल अष्टमास वाकी रहे तब ऊतारकर पाणी छाणकर हरडोकू सावूत निकालकर तेलमे तलणी पीछे ५ सेर गुडकी चासनीकर उसमे हरडे तथा नीचे लिखी चीजोका चूर्णडाल पाक बणाना–निशोत छाल ३२ तोला छोटी पींपर सूठ आठ २ तोला सहत ३२ तोला तज तमालपत्र इलायची नागकेशर ये एकेक आठ २ तोला (८) पेशाब लानेवाली पसीना लानेवाली और दस्तावर दवा देनी (सब उदररोगोका सामान्य इलाज)–(१) रेचन, पाचन, फस्तखोलण,(२)दूध अथवा गोमूत्रमे, एरडी तेल वेर २ पीणा (३) पींपर वर्द्धमान खानी (४) चव्य चित्रक सूठ देवदारू इसका क्काथ निशोतका चूर्ण गोमूत्र मिलाकर पीणा(५)इच्छाभेदीरस (न० ३४१) (उदररोगका पथ्य)–रेच लघण मूग लालसाठी चावल, पुराणी कुलथी, काजी मध सींधानिमक उडद छाछ लसण, एरडी तेल, अद्रक परवल सहजणेकीफली इलायची नागरवेलके पान वकरी भेंस तथा गऊका दूध तथा मूत्र हलका तीखा और अग्निदीपक अनाज ये सब हितकारक है–(कुपथ्य)–घी वगेरे चिकणे पदार्थोका स्नेहपान धूम्रपान उलटी वहोत रस्ते चलना दिनकी नींद आटेमेंसें वनाया पदार्थ जडकरडा अनाज जलके जीवोंका मांस भाजीपाला तिल दाहकरनेवाला अन्न निमक फलीका अनाज खराब जल दस्त कवजकरे एसा अन्नपान ये सब उदररोगकू हानि करता है.

किरण दूसरी २.

श्वासोच्छ्वासकी क्रियाके रोग.

छातीके अंदर श्वासनली फेफसा रक्ताशय वगेरे बहोतसे जरूरीके मर्मस्थान आये भये है, ये मर्मोंके ठिकाणे आपसमें सबध रखे है, तेसें रक्ताशयके भी सबध है, तोभी श्वासोच्छ्वासकी क्रिया और खुन फिरनेकी क्रियाके स्थल अलग २ है, और उस २ मर्मस्थानोंके रोगभी जुदे २ है, इसवास्ते इस किरणमें श्वासनलीके रोगोंकी परिक्षा इलाज लिखते हैं, तीसरी किरणमें रक्ताशयके रोग लिखेगें श्वासोश्वासकी क्रियामें श्लेपम कंठनलीका सोजा हांफणी खासी फेफसेका वरम दम क्षय उरक्षत वगेरे रोगोंका समावेश होता है.

(श्लेष्म, सलेपम, शरदी, जुखाम)

(कोराईझा)

(कारण)–जादा करके हवाके फेरफारसे सलेपम होता है, एकही स्थलमें हवाके याने ऋतूकी फेरफारसें जेसें सलेपम होता है, तेसें अदमी एकजगेंसे मुसाफरीकर दुसरी जगें जय जाता है, उसकरके हवाका फेरफार होणेसें कफ बिगडजाता है, सलेपम शरदीसे होता है, और पालर पाणीसें नया अनाज खाणेसें बहोत शरदी हवामें रहणेसे भीजी जमीनपर चूनागचीके अंगणपर सोंनेसें इत्यादिकारणोसें सलेपम होजाता है, कितनेएकको ये रोग वेर २ होजाता है, और मिट जाता है, इसरोगमें ऊपर लिखे कारणोंसे नाकके अदरके पुडपर सूजन होता है.

(लक्षण)–एसे थोडेही अदमी होयगें सोजिनोंको सलेपमका अनुभव नही होयगा सरुहोते बलगमके बदनमें बेचेनी हाथपांवोंमे टूटणा शिरमे भारीपणा कमरमें दरद नाकमें सूकापणा छींक दमलेते अडचल और प्रगटलक्षणोमें गलेमें जलन दाह नाकमे जलन नाक आंखमेंसें पाणी झरे गला बेठजाय जीभपर सुपेद थर थोडासा बुखार भूख मंद दस्तक ब्ज होय

(इलाज)--जुखामके रोगमें वैद्य डाक्तरके पाश विरले जाते हैं, लेकिन् इतना या दरखणा चाहिये किसी २ वखत इस निकामे छोटे रोगसे बडे २ असाध्यरोग होणा सभव है, जेसेके पीनस नाककारोग कफकारोग खासी और क्षय जेसा भयकर रोग होजाता है, इसवास्ते छोटासा मरज जांणके छोडना नही चाहिये

(१) रोगीकू घरमें रहना कांजी दलिया दालभात चाह वगेरे हलका और गरमागरम खुराक लेना पावोंकू गरमपाणीसें झरना पीछे पोंछ मोजापहराना दूध और पाणी गरमकर या चा करके गरमागरम पिलाना और हलका जुलाब लेणा (१) बलगमका जोर जादा होय ऊपर लिखाइलाजसे शांत नही पडे तो अरडूसेका स्वरस सहत डालके पिलाना शितोपलादि चूर्ण (न० २२७) सहतमें चाटना अथवा कोरा फाकना सूठ उकाल

चाह डाल पीणा दूध पाणीका अथवा चाका बफारा या नासमे लेणा पोस्तके डोडेका भीग शेक करना तज लोंग सूठ वगेरे गरम दवाओंका ललाटपर लेप करना (नं० ६३२ वाली बुकनी अथवा त्रिकटुकी बुकणी सूघकर कफकू छुटाना रातकू एन्टिमोनियल पाउडर ।३।४। ग्रेन फाककर ऊपर चाह पीनी अथवा डोवर्सपाउडर दस ग्रेन, सो वखत लेकर फजरमें दस्त साफ लानेकु एक हलका जुलाब लेना हरडेकी फकी सिडली झपाउडर अथवा एप्समसोल्टका जुलाब लेना (नं० ८१५) तथा ८१६ काहकीम उसका देना (३) जुखाम शरदी पुरानी होकर झरे बाद दूध और पाणी सम वजन मिला कर उसमें सूंठके टुकडे आठ आनेभर मिश्री आठ आनेभर केशर १ रत्ती बिदामके गो ५ डालकर जलजले जहांतक उकाल दूध छानलेना और बिदाम चबाकर दूध पीजान और जल पियेबिगर सूजाना ये प्रयोग सोतेवखत करना अकलकरा पींपलामूल पींप सुपेद मिरच ये चारों सम वजन मिलाकर इनोंकी थोडी फकी पानमें धरकर चाबलेन (नं० ३६५, ३६८, ३६९, ३७०) में लिखे भये दवायोका बहोतदिनोतक सेवन करन

(कंठनलीका सोजा)

(लारीन्जाइटीस)

(कारण)–ठढ और शरदीसें कठकी नलीमें सोजन होजाता है, नुकशान करनेवाला धूआ अथवा धूडगलेमें जाणेसें अथवा गरमागरम पाणी पीजानेसें तैसें उपदससे भी ये रोग होता है

(लक्षण)–विशेषकरके ये रोग बचोंके होता है, श्वास तथा नाडी जलदी चलती है, श्वास लेते गलेमेंसें तीक्ष्ण अवाज निकलता है, छाती तथा वायुनली उछलती है, गला बैठ जाताहै, बेचेनी बहोत रहती है, और १ दिनसें ५ दिनके अदर गलेकी सूजनसें रोगी मरता है, अथवा अछा होजाता है

(इलाज)–तीक्ष्ण सोजा बहोत भयकर होता है रोगी तकदीरसेंही बचता है, देशी वैद्यकशास्त्र मुजब तो मुखरोगीकु दूध कुपथ्य है, मूगकी दाल वगेरे हलका सादा और पतला पदार्थ देणा चाहिये, दाक्तरलोक दूध चावलोका दलिया पतला पथ्य दिलाते इस रोगीकू गरम और तेज खुराक कभी देणा नहीं वायूनलीपर गरमपाणीका सेक करणा बिलस्टर अथवा जोक लगणा और सोजन नरम करणेकू रोगीका गूगाट और घभराट मिटाणेकू उलटीकी दवा देणी मेणफल अथवा इपीका क्युअनाकी भूकी पिलाकर उलटी कराणी अरडूसेका पुटपाक अथवा स्वरस सहत डालकर पीणा और छाती तथा गलेपर अरडूसेके पत्ते बाफकर बाधना नं० ६३३ का मिक्श्चर देणा अथवा इकेला इपीका क्यु अन्हावाइन उन मान मुजब जलमें मिलाकर पिलाणा

(कासश्वास, दम)
(ब्रोनकाईटिझ)

(कारण)–काशश्वास अथवा हांफणीका रोग होणेका वहोतसे कारण है, शरदी उसका मुख्य कारण है, शरदी करणेवाले आहार विहारसे हांफणीका रोग होजाता है, वायूनलीके दरदोमें काशश्वासका दरद होजाता है, जेसेके अर्बुद वगेरे गांठोके लिये तेसें वायूनलीमें धूल धातू तेसे हवामें उडते भये रजकण अदर जाणेसें वरम होकर दमका रोग होता है, फेफसेका दरद रक्ताशयका रोग बुखार नाताकती सधिवायू वगेरे रोगोसे भी दमका रोग होजाता है, नलीमे सोजन होणेसे अंदरका सलेपम पुडत सूजकर लाल होजाता है, पहली वो पुडकोराहोता है, और पीछे उसमेंसें कफ गिरता है, पहले झाग जेसा कफ गिरता है, पीछेसे पका भया पीला अथवा पीप जेसा कफ निकलता है, नलियोंके दोनों तरफका वरम पुडत आपसमें मिलाजाता है, इस सोजेके सवव अंदर कफ भरजाणेसे हवाकू आने जानेकू चहिये इतना रस्ता नही मिलणेसें खासीके सग श्वास चढता है.

(लक्षण)–दमके रोगमें जादा करके हमेसां बुखार आता है, तब नाडी जलद चलती है, पेशाब लाल उतरता है, छातीमे दरद होता है, श्वास रुकजाता है, कफ गिरता है, कितनेक रोगमें पहली सलेपम होकर पीछे ये रोग होता है, उसमें गला आजाता है, कंठमे घरघराट बोलता है, ठढ देके बुखार चढ आता है, भूख मद होती है, दस्त कब्ज होता है, जीभपर सुपेद थर जमती है, पीठ अथवा छातीकी हड्डीमें दरद होता है, खासी आती है, श्वास जलदी चलता है, छाती भीडाती है, हांफणी बोलती है, सोणेसे खासी जादा चलती है, जो वरम महीन नलियोंमें भया होता है, तो छातीमें दरद होता नहीं लेकिन् खासीसे पसलियां दुखती है, श्वास जोरसें चलता है, कफ बोलता है, दमके जोरसे सोणे नहीं पाता खासी बहोत जोरसें वेर २ आती है, चिकणा कफ बहोत मुस्किलसें निकलता है, बुखार जादा चढता है, और जो फायदा नहीं होय तो नाताकती चढकर कफ निकल नहीं सकता और वदन ठढा पडणे लगता है, इस रोगवालेकी छाती उपसीभई तथा चडी मालम देती है पासली तथा पेट उछलता है, और छाती ठोककर वजाणेसे पोकल आवाज आती है, और श्वासका अवाज मोटा और उचा सुणाई देता है, कफका जोर जादा होता है, तो छाती ठोकणेका अवाज भद्दा मालम देता है.

(इलाज)–(१) दमेके रोगमें श्वासनलीमें सोजा होतेजाता है इसवास्ते उस सोजेकू मिटाणेका इलाज करणा रोगीकू मकानके अदर विछोणेमें रखणा गरमकपडे पहराना तथा ओढाना शरदीके सग हांफणी भई होयतो खूबपसीना आवे एसा इलाज करणा

सो इसतरे, पाणीमें राई डालकर गरमकर पांवोंपर झारना छातीपर राई पीसकर धरणा पाणीमें छगदीकर तथा फुलालेण वगेरे गरम कपडा बांधणा श्वासके सग गरम पाणीका वफारा लेना छातीपर गरम पाणीका शेककरणा अथवा अलसीकी पोटिस वेर २ गरमागरम धरणा आखर जरूरी पडे तों डाक्टरके पास बिल्स्टरभी धरवाणा (२) सरुआतमें (न० २२३) का शृग्यादि चूर्ण सहतमें देणा अथवा डोवर्सपाउडर देणा (३) क्षुद्रादि क्काथ (न० ११३) अथवा इकेली भूरींगणीका चूर्ण अथवा उकाला सहत डालकर देणेसें भी श्वास नरम पडता है (४) सुदर्शन चूर्ण (न० ३२) मे अथवा महासुदर्शन चूर्ण नांमी वैद्योके पासही खरा मिलता है, उसकू अरड्सेके स्वरसमें सहत मिलाकर पिलाणा (५) बच्चोंके वास्ते पहली लिखा जो शृग्यादि चूर्ण सहतमें चटाणेसे बच्चोंकी हाफनी मिटाती है, सिताबके पत्तोंकू पीस एक दोय, कालीमिरचके सग पिलाना तेसें छातीपर गरमकर पीसे भया बांधणा (६) कफका जोर होयतो उलटीकी दवा देकर कफकू निकाल डालना उसकी विधि सलेपम प्रकरणमें लिखाही है, (७) श्वास कास अथवा हाफणीका रोग भये पीछे ये देशी इलाज देकरके पतवाना इन दवायोकू युक्ति मुजब बहोत दिनोंतक सेवनकरणेसें ताकत आकर रोग मिटजाता है

(१) शितोपलादि चूर्ण (न० २२७) अनुपान घी सहत मात्रा ३ मासा
(२) अग्निरश (न० ३४४) अनुपान घी सहत बुखार नहीं होयतो देणा
(३) आनदभैरव रस (न० ३३२) अनुपान नागरवेलके पान अथवा जल

(४) सुवर्णमालनी वशत (नं० ३३७) अनुपान सहत पींपर सहत अथवा शितोपलादि घी तथा सहत (५) लघुसृगांक रश (न० ३३५) अनुपानसहत (६) कटकारी अवलेह (न० २६२) श्वास हिचकीके संग हांफणी मिटावे (७) हरीतकी अवलेह (न० २६४) श्वासकाशका बहोत आछा इलाज है, ऊपरलिखी दवाइयां पुराणा श्वासकासके ऊपर अछी फायदेमद है, उसमें भी १, ४ और ७ के अकवाली दवायोंसे बहोत वरसका पुराणा श्वासकासयाने हाफनीका रोग अछे भये हमारे अनुभवी इलाज है, इसवास्ते पूर्णविद्वान वैद्यके पाससे एसी दवा मगाकरके वापरणा एसी हमारी शिक्षा है, (अग्रेजी इलाज)—(न० ४८४, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७) मिक्श्चर अवस्था तथा हाफणीकी बलाबल जाति विचारके उपयोगमें लेना (विशेप पथ्य सूचना)—रोगीकू अछा खुराक बकरीका दूध अथवा चावलोंके दलिये घाटमे बकरीका दूध मुख्य खुराकदेणा तेल मिरच खटाई वगेरे सर्व तेज और दाहक और मादक पदार्थोका त्याग करना बहोत बुखार होय तो ऊपर लिखे इलाजोंके सग ज्वरहरदवाई तथा किनाइन देणा नाताकती जादा होयतो अग्रेजीय

ब्रांडी देते है. देशी द्राक्षासव, आर्यलोंकोने कस्तूरी अंबर केशर दूधमे उकालकर गरीबने लोबानके फूलपानके रसमे या दूधमें गरमी कायम रखणी और ताकत.

खासी–उधरस–काश.

(शिक्षा)–श्वास तथा शरदीके सगकी खासी इनोका इलाज पहली लिखदिया है, ये सबमें फायदेमंद है, तोभी खासीका विशेष इलाज लिखते हैं, देशीशास्त्रमे खासी पांचप्रकारकी है, वायूकी १ पित्तकी २ कफकी ३ क्षत छातीमें जखम पडणेकी ४ और क्षयकी ५ इसमें पिछली दो असाध्य है, वृद्धअवस्था और मांसक्षीणकी भी खासी असाध्य है, आखरीका इलाज क्षत और क्षयका जाणलेना तीनों खासीका इलाज लिखते हैं

कारण तथा लक्षण पहली जो कासश्वासमे लिखा है, वोही है.

(बादीके कासका इलाज)–(१) सूंठ धमासा काकडासींगी मुनक्का कचूर मिश्री इनोका चूर्ण तेलमें चाटणा (२) सूंठ भाडगीजड पीपर कायफल कचूर इनोका चूर्ण तेलमें चाटणा मिश्रीभी मिलादेणी.

(पित्तकी खासी)–(३) अरडूसेके पत्ते गिलोय भूरींगणीका क्वाथ सहतडालकर पीणा (४) दाख आंवला खजूर पीपर मिरच चूर्ण सहत तथा घीमें चाटणा (५) कचूर वाला रींगणी सूंठ तथा मिश्रीका क्वाथकर पीणा (६) सूंठ दशमूल पींपर तथा दाखके काथमे उकाला भया दूध मिश्री डालकर पीणा (७) खजूर पींपर दाख मिश्री जव धाणीका चूर्ण घी तथा सहतमें चाटणा (८) भेंस बकरी तथा गऊके दूधमें इतनाहीं कच्चे आवलेका रश अथवा सूके आंवलेका उकाला मिलाकर उसमें घी पकाकर खाणा (९) दाख आंवला खजूर पींपर मिरच चूर्ण सहत तथा घीमें चाटना.

(कफजन्यखास) (१०) नागरमोथा तथा पींपरका चूर्ण सहत तथा घीमें चाटणा (११) बहेडेका चूर्ण घीमे मिलाय पत्तोसे लपेट पुटपाककर मूमें रखणा(१२) अरडूसेके पत्तेके रशमें सहत डालकर पीणा (१३) सूठ पीपर तथा कुलथीका क्वाथ (१४) कचूर अतीस मोथ काकडाशींगी हरडे सूठ इनोंका चूर्ण हींग तथा सींधा निमक मिलाकर छाछ पीणी.

(खासीका सामान्य इलाज) (१५) आदेका रस सहत गरमकर (१६) मिरच कालीका चूर्ण सहत मिश्रीमें (१७) त्रिकटूका चूर्ण सहत तथा घीमें (१८) पारा गधक जवखार सेंचल ४ मिरच ५ इस भाग मुजब एकत्रकर आदेके रशमें खरलकर गोली करके देणी (१९) बहेडेकी छाल २ पींपलामूल १ भाग सहतमें चाटणा (२०) पींपर पींपरामूल सूंठ और बहेडेकी छाल चूर्ण सहतमें देणा (२१) लोंग मिरच बहेडा सम भाग सबोंके बराबर खेरसार अथवा कत्था मिलाकर बबूलके छालके क्वाथमें गोली करके चूसाणी (२२) बकरीका मूत्रमें बहेडाकी छालकूं बाफकर सहतमें

चटाणा (२३) पारा १ गंधक २ पींपर ३ बहेडेकी छाल ५ हरडेकी छाल ४ काकडासींगी ६ पीसकर बबूलके छालमें कितनेक दिन घोटकर गोली करके देणी (२४) काली मिरच १ पींपर १ अनार विलायती छाल ५ जवखार ॥ इसके बराबर गुड मिलाकर गोली करणी (२५) लौंग १ पींपर १ जायफल १ काली मिरच २ भाग सूंठ ३२ भाग और सबोंकी बराबर मिश्री जलसें फक्की (२६) भीमसेनी कपूर १ भाग कसतूरी १ लौंग १ मिरच २ पींपर २ बहेडेकी छाल २ उपलेट २ दाडमकी छाल १ सबके बराबर खैर सार अथवा कत्था जलमे घोट गोलिये करणी (२७) रींगणी गिलोय सूंठ एरंडीकी जड अरडूसा इनोका काथ (२८) आकका फूल उसके सम वजन मिरच अथवा लौंग पीस गोली करके खाणी (२९) आदा सेर ५ गुडसेर ५ धाणेके पत्ते (कोथमरी) सूफ लोहचूर तज तमालपत्र इलायची मोथ इनसबोकी अवलेही बणाय चाटणी इससे अर्श खासी ज्वर पीनस शरदी गोली क्षय इन सबोपर ये अवलेही फायदेबंद है, (२८) बकरीका मूत्र १०० तोला उसकू मंद अग्निमे जाडाकर उसमें बहेडाकी चूर्ण ८ तोला डालणा तथा पींपर पींपलामूल लोहभस्म चार २ तोला भूरींगणीके फूलकी भूकी आठ तोला डालणी इसकू दो मासेसें तोलाभरतक सहतमें चाटणा अथवा गरम जलसे पीणा इससे असाध्यबी खासी मिटती है (३१) लोबान ४ कपूर १ भाग अफीम ॥ और नवसादर २ भाग सहतमें वाल २ की गोलिया करणी हमेस तीन टंक तीन गोली लेणी (३२) लोबानका फूल १ रत्ती अफीम पाव रत्ती कपूर पाव रती सहतमें एक गोली इस उनमानकी बणाणी हमेस दो तीन गोली खाणी

इसके सिवाय इस ग्रंथमें आगे हांफणीके रोगमे लिखे भये सबदेशी और अंग्रेजी इलाज खास रोगके प्रसिद्ध है, बडे रोगमे वो खासीके इलाज बहोत फायदेबंद है

(विशेष सूचना पथ्य) खासीका इलाज नहीं करणेसें क्षय होजाता है, इसवास्ते जलदी इलाज करणा ठंढी शरदी और भीजी जगासे दूर रहणा जमीनपर सोणा नहीं ठंढा तथा कफ करणेवाला पदार्थ खाणा नहीं दिनका सोणा नहीं तेल मिरच खटाईका त्याग करणा रातकू दही कभी खाणा नहीं पुराणे चावल घी सींधानिकम दरियावका निमक कुलथी तूरकी दाल मूंगकी दाल सोवा चंदलिया वगेरे पदार्थ खासीवालेको पथ्य है.

दम श्वास हांफणी

(कारण) श्वासोच्छासकी क्रिया चहिये जिससे जादा चले उसकू दमका रोग कहते है, श्वास जलदी चलणेका बहोतसे कारण है, दुसरे रोगकी निशानी तरीके ये रोग बहोतसे दरदोमें दिखाई देता है, जेसेके खासी फेफसेका सोजा क्षय रक्ताशयका रोग

वगेरे रोगोमें श्वासकी हयाती देखणेमें आती है, लेकिन् इसके अलावा दमके मरजका दूसरे स्वतंत्र कारणभी होता है, फेफसेमे हवा जाणेको छोटे छेदोमें खेंच होणेसें होता है, खेंचताणके लिये ये छेद सकोचाते हैं, उसकरके जितनी चहिये हवा फेफसेमे दाखल नहीं होसकती तब उसकी एवजी पूरी करणेकूं दम जलदी २ चलता है, दमका रोग होणेका मुख्य कारण इसतरेसे है, (१ फेफसेमें हवा जाणेकी रुकावट) स्वर नली अथवा वायु नलीका सकोच अथवा कुछ दरद २ फेफसेमें दरद जेसेके फेफसेका सोजा फेफसेका खाईज जाणा उसके पुडका सोजा वगेरे ३ रक्ताशयका रोग जिसकर फेफसेमें चहिये जिससें जादा या कम खून जावै तेसें खून जादा निकलजाणेसे फेफसेका पोषण कम होय जेसेके पांडू रोग रक्तपित्त वगेरे मगजकी नाताकती मनका विकार हिस्टीरीया सांकडी और नाताकती छाती एसे रोगवालोंको जरा ठंढीके हवाका फेरफार दमकूं पैदा करता है, ५ कितनीक खराब चीजोकी दुरगंधी बदपरेजी अजीर्ण वगेरे कारणभी श्वासकू पैदा करता है, ६ ये रोग ओलादमें भी उतरता है.

(लक्षण) श्वास जादा जोरसे चले ये श्वास रोगका प्रत्यक्ष चिन्ह है, पेटमें प्रथम वादी दस्तकी कबजी पेशाब जादा तेसें धीरे २ उतरता है, बहोत रोगोमे दम चढणेके दुसरे कोईभी चिन्ह अगाऊसे नहीं दिखता दमका जोर पिछली रातकू चढता है, बहोत घभराट होता है दम जोरसे चलता है, तब दूर तक सुणाई देता है, रोगीका स्वरूप भयंकर दिखता है, जिसने आगे कभी श्वासके रोगीकू नही देखा है, वो तो यही जाणता है की ये अभी थोडी देरमेही मरजायगा बदनपरसे पसीनेकी बूंदे गिरती है, नाडी जलदी चलती है, मूं खुला रहता है, सो नही सकता चैन नहीं पडता एसा दमका जोर दो चार घंटेसे वो एक दो दिनतक जारी रहकर पीछे कम पडता है, खासीके संग थोडा कफ गिरता है, श्वासबेठे पीछे थका भया रोगी नींदमे गिरता है, वायुनलीके सकुडाणेसे दम चढता है, और हवा अंदर जाती बखत तांती बोलती है, वो कानसें अथवा कर्ण नलीसे सुणाई देती है, दमके रोगमे अंदर श्वास ओछा होता है, बाहर श्वास लंबा चलता है, विना मुदत फेर दम उठ आता है, किसीकू हमेस चढ जाता है, किसीकू महीनेमे एक बखत किसीकू वर्षमे एक बखत और किसीकू बहोत वर्षोसें.

(इलाज) (१) बेहेडेकी छालकू बकरीके पेशाबमें पकाकर उसका चूर्ण सहतमें चाटणा (२) बडी दाख हरडेकी छाल नागरमोथा काकडासींगी तथा धमासा इनोका घी बणाकर सहतमें चाटणा (३) सरसूका तेल गुडके संग २१ दिनोतक चाटणा (४) सूंठ तथा भाडंगीका क्वाथ पीणा (५) भाडंगी तथा मोलेठीका चूर्ण घी तथा सहतमें चाटणा (६) सूंठ मिरच पींपर हरडेका चूर्ण फाकणा (७) हलदी मिरच

दाख पींपर रास्ना सूंठ गुड इनसबोको नीबोलीके तेलमें चाटणा (८) आदेके रशं भाडंगी तथा मांजूफल चाटणा (९) भूरींगणी हलदी अरडूसा गिलोय सूठ पींप भाडगी मोथ इनोका क्वाथ मिरच पीपरका चूर्ण डालकर पीणा (१०) मिश्री दाख पीपर इनोका चूर्ण नींबके तेलमें पकाकर खाणा (११) त्रिफला ३ भाग सोहार्ग १ भाग नागरवेलके रशमें घोट चिरमी जितनी २ गोलियां करके खाणी (१२) आककी जड लींडी पीपर सहतमे घोट झाड वेर २ जितनी गोलियां करणा (१३) गांजेकी राख सहतमे चाटणी (१४) आंधी झाडेका खार सहतमें (१५) अरडूसेका रश और पीपर (१६) कस्तूरी और मोलेठीका सीरा इसके सिवाय पीछे (नं० २६२) ४६६) २६७) ३३६) ३४४) ७२१) ७२२) ७२३) ७२४) का देशी तेसें हकीमी नुसके स्वासके रोगमें प्रसिद्ध है.

(अमृतवटी) हमारे विद्याशालाकी श्वासकासमें अकसीर दवा है

(अंग्रेजी इलाज) (१) इपीकाक्यु आन्हा टार्टर इमेटीक बेलाडोना धतूरा अफीम गांजा इथर कलोरल हाईड्रेट पोटास आयोडाईट वगेरे मुख्य है (२) नं० ४८४ ४८७ (६४०) ६४१ (६४२) वाली दवाइया दमके रोगमें प्रसिद्ध है, पिचकारीकेवास्ते एरंडी तेल अच्छा है, रोगीके पांव गरम जलमें रखणा छातीमे दरद होय तो टरपेन्टाइन तथा गरम पाणीका शेक करणा छातीपर राई मारणी(४)रोगी दमसे बहोत व्याकुल होय तो उसकू आराम देणेके वास्ते डाकटरके पास रखकर क्लोरोफोर्म इथर अथवा दोनोसग सुंघाकर बेहोसकरके सुवाणा (५) रोगीके कमरेकू बंधकर धतूरा बेलाडोना सोरा नवसादर गाजा वगेरे दवायें सलगाणा इनोंके धूएसे रोगीके श्वासमें जाणेसें फायदा होता है (६) बीडी अथवा चिलममे कितनीक दवाइयें पीणेसें दमेमें फायदा होता है, धतूरा बेलाडोना मोफर्या तमाखू गांजा सोराखार वगेरे लेकिन् इसमेंकी कितनीक दवाइया तेज और जहरी है, इस वास्ते थोडी २ पीणी कारण इसमें एक औरमी है, ये दवाइयां किसी २ कू फायदा और किसी २ कू नुकशांन करती है, किसी २ कु फक्त तमाखूकी बीडी पीणेसेंही फायदा होता है, और किसीकू काफी पीणेसेंही फायदा होता है, और किसीकू धतूरेके पत्ते सिलगाकर उसका धूआ श्वासमें लेणेसें फायदा होता है

होमियो पथिक इलाज (१) एकोनाइट) खक अथवा सूकी शरद हवासें उठे दममें फायदा करता है, (२) आइपीकाक्यु आन्हा—दमका कारण मिल सके नहीं और कफ तथा हाफणका जोर होय तब जादा उपयोगी है, (३) कुप्रम) मानसिक नाताकतीसें दम उठे तब अच्छा है, (४) आर्सेनिक) बहोत बेचेनी धमणके

जेसा अवाज कफ–तब छातीके बीचमें आर्सेनिक देणा (५) दमका जोर शांत पडे पीछै फेर दमकु अटकाणेकु नक्सवोमिका आर्सेनिकम आयोडाइन वगेरे.

(विशेष सूचना पथ्य) दमका रोग अजीर्ण और दस्तकी कबजीसें बेर २ उठजाता है, इसवास्ते खुराक खाणेकी वहोत सावचेती रखणी हजम नही होय एसा खुराक कभी खाणा नहीं हलका खुराक भी जादा पेटभर खाणा नहीं अच्छी हवा पाणीकी जगे फायदा करती है, इसवास्ते हवा वदल देणी चाहिये कुपथ्य–दालकी जात ठंढा पदार्थ दाहकरे एसा गरम पदार्थ लूखा पदार्थ वासी अन्न दही खांड खटाई वगेरे पदार्थोंकों त्यागणा–कितनेक मूर्ख लोक दम वेठाणेकू वहोत गरम दवाइयां तथा गरम मसाले खिलाते हैं, उसमें उलटा नुकशांन होता है, खास श्वासरोगका जो पथ्य वोही दमके रोगका पथ्य समझणा.

उरक्षत–छातीका जखम–

(कारण) वहोत महनत करणेसें वहोत भार उठाणेसें उची जगासें पडणेसें वहोत उंचे श्वरसे पढणेसें वोलणेसें वहोत दोडणेसें औरतोंमें वहोत आसकी रखणेसें और वहोत थोडा और लूखा खाणेसें छातीमें जखम पडता है (लक्षण) क्षयके वहोतसे लक्षण देखाई देते हैं, क्योंकी उरक्षत रोगभी क्षयरोगका एक भेद है, छातीमें दरद होता है, चीरीजती है, पसवाडे सूकते हैं, अदमी धूजता है, वीर्य ताकत रग क्रांतिका धीरे २ क्रमसे नाश होते जाता है, बुखार पीडा मनकी दीनता चिंता दस्त अग्निका नाश खासीमें खराव काला दुर्गंधवाला पीला गुंथा भया और वहोत खून मिला भया कफ वेर २ थूकता है.

(इलाज) खासी तथा क्षयका कितनाएक इलाज उरक्षतके भी कामिल है. जखमकूं भरे और खूनकूं रोके एसें स्तभक इलाज करणा (१) अरडूसा) रश पुटपाक वगेरे खून वधकर जखम मिटाता है, (२) अमृतवटी) इस रोगका सर्वोत्कृष्ट इलाज है, (३) इक्षुके रशमें घी उकालकर पीणा, (४) वेरकी अथवा पीपलकी लाख पुराणेके लेके रशमें पीस उसमेसें २ तोला कल्कमें चोगुणा कोलेका रस डाल पीणा, (५) कुष्मांडावलेह (न० २५६) तथा द्राक्षासव न० २८६,

(६) रक्तस्तमक दवाइयां पृष्ट २१४ देखो) स्तभन दवाइया (पृष्ट २१२ देखो) रक्तपित्त रोगमें लिखीभई दवाइयां उरक्षतमें फायदा करती है, पथ्यापथ्य–खासी तथा रक्तपित्तके रोगमें लिखे मुजब.

न्यूमोनिया–फेफसेका वरम–

विचार–छातीके फेफसेमें सूजन होणेसें भयकर बुखार कफका त्रिदोष अथवा सन्नि- पात ज्वर होता है, देशी वैद्यकशास्त्र मुजब ये एकतरेका त्रिदोष ज्वर है, लेकिन् मर्म-

स्थानके वरमके लियें इस ग्रंथमे जो रोगोका हिस्सा छांटा है, उसतरीकेपर इस रोगकूं छातीके दरदोंकी गिणतीमें धरा है

(कारण) कफज्वरका कारण और सलेषमका कारण वोही इस न्यूमोनियाका कारण है.

(लक्षण) फेफसेका थोडा अथवा बहोत भाग सूजकर अदर दाह होता है, सरूमे सलेपम होता है, अथवा थोडा बुखार आकर बेचनी होतीहै एकाध दिन रहकर ठढके सग जोरसे बुखार चढ आता है, इसकेसग थोडी खासी और कफ होता है, छातीमे दरद होता है, श्वास जलदी नाडी तेज अरुचि शिरदर्द पेसाब थोडा तथा लाल दस्तकी कबजी बहोत नाताकती भ्रम बकवाद किसी २ वखत छातीमें श्वासकेसग कफ बोलता है, पहली५।७दिन बुखार १०४ १०५ डिग्रीतक चढजाता है, पसीना नहीं आता दरदका जोर कम भये पीछे अथवा दरद लघाण पडे पीछे पसीना आणे लगता है, तोभी बुखार उतरता नही जीभपर सुपेद थर और रोगके जोर मुजब सूकी पडके फटती है, तथा काटा २ पडता है, भूख बिलकुल लगती नहीं इसवास्ते खुराक मुजब देणा पडता है, खासी किसीकू कम किसीकू जादा होती है, कफ पहली तो थोडा लेकिन् पीछेसें बढता है, वरमकी जगेपर दरद होता है, शूल होती है, सूनहीं सकता श्वासोच्छास ३० से ४० तक चलता है, नाडी १२० सें १४० तक चढ जाती है, पीछेसें कम जोर पडजाती है, बुखार पहली एक अठवाडे सख्त आकर नरम पडता है, लेकिन् रोगी नाताकत होजाताहै, जो बचणेका होता है, तो बेहोसीसें सावचेत होजाता है, बुखार उतार खाकर सब वदनमें पसीना आता है, दस्त पेशाब खुलाश आता है, जो रोग बढता है, तो त्रिदोषके सब लक्षण दिखाइ देता है, रोगी बेहोस गाफल होता है, नाडी क्षीण पडती है, गलेमें अवाज चलता है, मरजाता है

(मुद्दत) इस रोगकी अवधी १२ से ३० दिनकी है, जो रोग साधारण होय तो एक अठवाडेमें अछा होजाता है, मध्य होय तो २४ दिन जोर होय तो एक महीनेमें अच्छा होय या मरजाता है

इलाज–कफज्वरका तथा सन्निपात ज्वरका उपाय करणा भाडग्यादि (न०१९६) बृहत्भारग्यादि (१९७) अभयादि (१९५) वगेरे क्वाथकी योजना अच्छी है, न० ६३८ तथा ६३९ का मिक्चर देणा छाती अथवा पीठपर जहा सोजन भया होय उस जगे अथवा पसलीमे शूल निकलती होय उस जगे अलसीकी पोटिस बेर २ बाधणी अथवा टरपेनटाइन लगाकर गरम पाणीका सेक जारी रखणा दरदवाले भागपर राईका पलास्टर आधी घटे तक रखणा ताकत कायम रखणेकू खुराक हलका लेकिन् अच्छा रखणा आमोनिया वाली कोईभी दवासे वदनमें काटा आता है, नाताकती बहोत बढजाय तो अनार्य लोक तो ½ से १ औंस ब्रांडी वरतते है, द्राक्षासव अथवा

पोर्टवाइन दिनमें तीन चार वखत देते हैं-(होमियोपथिक इलाजोमें) एकोनाइट ठढ तथा बुखारके रोगमें देणा अच्छा है) ब्रायोनिया और फोसफॉरस इस रोगकी अकसीर दवा है, दोनों दवायें दो दो घटेके फासलेसें वारे फिरती देणी.

(विशेष सूचना) भयंकर बुखारकी जितनी सार सभाल रखणी इतनी ही न्यूमोनियाकी रखणी चाहिये.

फेफसेके पुडका वरम-प्ल्युरिसि) होता है, इसका इलाज फेफसेके वरमके लगभग जेसा ऊपर मुजब करणा.

क्षय-धातुक्षय-राजयक्ष्मा-खैण-
(कन्झपशन)

(कारण) मलमूत्रादि वेगोकोरोकणेसें अतिस्त्री सेवनसें वहोत भूखा रहणेसे वहोत इर्षा तथा फिकर वहोत महनत वहोत अथवा प्रमाणसे कम वेटेम खानपान वहोत अभ्यास छोटी ऊमरमे धातूका क्षय गरमी सुजाककी बेमारी छाती नाताकत होय और वहोत बोलणा शरदीकी जगेमें रहणा हांफणी फेफसेका सोजा ये सब क्षय रोगकूं पैदा करणेके कारण है, ये रोग ओलादमें भी ऊतरता है, और जादा करके १८ से ३० वर्षकी अवस्थामें जो क्षय होता है, वो पका और भयकर होता है, उसमें बचणा मुस्कल है

(लक्षण) पसवाडे तथा खवोंमें पीडा हाथपैरोमें जलण सब बदनमें ज्वर ये तीन क्षय रोगके मुख्य लक्षण है, (यदाहुनाभिमनु पौत्रात्रेय) अन्नपर द्वेप ज्वर श्वास खासी खासीमे खून गिरणा और स्वर विगडणा (आयु ज्ञानार्णवमे) क्षयरोगकी तीन स्थिति जिसमें पहली स्थिति इस मुजब-ये नाशकारक रोगकी शरुआत वहोतसी वखत एसी वे मालूम जडरुप जाती है, सो जहांतक साधारण हालतमे इन रोगवाला होता है, उस वखत सादे वैद्यभी देखे तो भी उसकू इस रोगकी खबर नहीं पडती सरूमें खासी होती है, वो जादा करके फजरमें होती है, और बिचमे खासी मिटकर पीछे वढती है, उसकेसग सुपेद झाग जेसा और चिकणा कफ गिरता है, किसी वखत गलेमे खरखराट अवाज खोखरा होता है, वहोत दिन खासी कायम रहकर रोगीका दम उठ जाता है, थोडी महनत करणेसे श्वास चढ जाता है, आगे खासी बढणेके साथ नाताकती बढती है, रोगी लिवरीज जाता है नाडी सब दिन तेज चले सांझकू और जीमेवाद जादा जलद चले सांझकू हाथपैरोमें दाह होकर बुखार चढ जाता है, फेफसेमे एक तरेका पदार्थ पैदा होता है, जिस करके फेफसेकी मूल पोलार स्थिती बदलकर नकर करडा होजाता है, ये पदार्थ पहली फेफसेके ऊपरके पिछले भागमें घर करता है, गलेके हांसके ऊपरके तथा नीचेके भागपर वजाणेसें पोले अवाजके वदले बोदा अवाज होता है, स्टेथोस्कोपसे

तपासणेंसे श्वास छोडणेका स्वाभाविक काल लंबा भया २ मालम देता है, श्वासकी ध्वनि स्वभावसें नरम होणेके वदले करडा मालम देता है, अथवा नलीमेसे हवा जारही है, एसा मालम देता है, वचनका अवाज उचा सुणीजता है

(दुसरी स्थिति) करडा भया २ फेफसेके आसपासका भाग सूज जाता है, करडा पडाभया भाग नरम पडकर उसमें पीप खासी कफ होकर बाहर गिरता है, इस सोजेकी हालतमें रोगीका बुखार प्रगट होता है, छातीकू तपासते अवाज बोदा होगा कान धरकर सुणणेसे अंदर पपोटे जेसा अवाज सुणाइ देगा किसी वखत ताती बोलेगा हांसके आसपासका भाग जरा बैठा भया मालम पडेगा

(तीसरी स्थिति) कितनीक मुदतसें कफ बाहर निकलकर छाती पोली होती है, और वो भाग जाहिर वैठा भया मालम देता है, पासलीके बीचकी जगेमें खड्डा मालम देता है, और दरदवाली छातीकी बाजू जादा वैठी तथा चिपटी मालम देती है' इस तरे फेफसा खवाते जाता है, उसके संग शरीरकाभी क्षय होते जाता है, फेफसा सडणेसें खुन साफ होता नहीं खुराक खाईजता नहीं कफ दस्त तथा बुखार रातकू वेहद पसीना वदनके सव धातुओंकू सुकाता है, आखर हड्डी और चमडी बाकी रहती है

(क्षय होतेकू अटकाणेका इलाज) जिसके मा बापकू क्षय रोग भया होय उस वीर्यसे पैदा भये बच्चेकी वहोत खानपानकी सभाल रखणी निज स्वजनमें लग्न करणा नहीं जैन (आर्य शास्त्रभी मना करता है,) गर्भ धारण करती वखत माकू एसा कोई रोग भया होय तो उसकू वहोत सभालसें रहणा अच्छा खुराक ताकतकी दवा देणा बच्चा भये पीछै बचेकू वहोत हिफाजतके साथ रखणा गरम कपडा पहिराणा और शरद हवासे बिलकुल बचाये रखणा खुली, हवामे फिरणा रोगी स्त्री गऊ बकरीका दूध पीलाणा नहीं बडा भये बाद कसरत कराणी बालपणेमें सादी करणा नहीं अति मैथुन अति महनत फिकर और वहोत अभ्यास इसका त्याग करणा जादा करके गरमी (उपदंश) और कठमाल जेसे खराब रोगोसें पीडित औरत मर्दसें जो बचा होता है, एसी औलादकू क्षय जेसा रोग लगणा जादा सभव है. (कठमाल रोग देखो) पिछाडी लिखा है, एसे रोगी बच्चोंके शरीरमेंसे एसे दुष्ट रोगका निकाश करणेवास्ते वहोत सावधानी रखणेकी जरूरी है, एसे बच्चेका खून सुधारे एसी दवा कोडलीवर अमृतवटी वसतमालनी वगेरेका वहोत मुदततक सेवन कराणा और इसमेभी जादा जरूरीकी वात ये ध्यानमें रखणेकी है, के खुली हवामें फिराणा हमेश जेसे बणे तेसें सादा और अच्छा खुराक देणा क्योंके देशी खुराक रोगकी वृद्धिका हेतु है, इसवास्ते वहोतसी बेमारिया वहोतसी वखत अपणे खानपानसें होती है, एसा देखते हैं, विरोधी अन्नपान बाबत इस ग्रंथका पथ्यापथ्य पदार्थोंका वर्णन पृष्ठ १७८ देखो.

(क्षयरोग भये पीछेका इलाज) (देशी इलाज)

(१) अरडूसा–खासी तथा क्षयरोगकेवास्ते वहोतही उत्तम इलाज है, (पृष्ठ २४१) लिखा भया वासा स्वरस वासा पुटपाक वासादि क्वाथ वसावलेह वगेरे सब बनावटे क्षय क्षत तथा खासीका अकसीर इलाज है. (२) सीतोपलादि चूर्ण (नं० २२७) घी तथा सहतमे अथवा इस चूर्णमें सोनेका वर्क घोट घी अथवा सहतमें चाटणा (३) सुवर्ण मालनी वसत-(नं०३२७)सहत तथा पींपरमें अथवा सितोपलादि चूर्ण मिलाकर घी सहतमें(४)वसत मालती(नं० ५४) सीतोपलादि तथा मोलेठीके चूर्णसग घी तथा सहतमें चाट थोडा बकरीका दूध पीणा (५)(अमृतवटी)दूधके पथ्यमें वहोत अच्छा फायदा करती है, बदनके सब धातुओंको बढाती है, और फेफसेमें नया खून प्रासकर जखम भी भरदेती है, (६) इसग्रंथके (नं० २६५, २८२, ३३५) वाला इलाज फायदावंद है, (अंग्रेजी इलाज)–(१) कोडलिवर क्षयका मुख्य इलाज है, लेकिन् आर्यलोक इससे बचणा अनार्यलोक सरुआतमें आधे रुपेभरसे रुपेभरतक दोनों वखत जीमे बाद लेते हैं, और जब पचणे लगता है, तो ४ रुपेभर बढाते २ लेते है, साफ कोडलीवर ओडल स्वादसें वहोत नफरण लानेवाला है, इसवास्ते (२) माल्टाइन जीमे बाद दूधके सग लेते हैं, कोडलीवर और माल्टाइनके सग कीनाइन लोह फोसफरस वगेरे दवाओं मिलाकर भी देते हैं, बुखार तथा दस्त लगता होयतो कोडलीवर देणा नही (३) हाइपो फोस्फेट ओफलाइम–मात्रा ॥ से एक औंस हमेस दोतीन वखत दूधके संग और कोड लीवरके सग भी देते हैं, (४) पेपसीन लॅक्टो पेपसीन पांक्रीयाटिक ईमल्सन बिसमथ नक्षवोमिका तथा कीनाइन और चिरायता इसमेंकी कोइभी एकाधदवा सरू रखनी पाचन क्रियाकू मदत देणी (५) लोहवाली दवाये जेसेंके सिरप ओफ आयोडाईड ओफ आयर्न आमोन्या साइट्रेट ओफ आयर्न टिंकचर ओफ स्टील फोस्फेट ओफ आयर्न वगेरे अच्छा फायदा करती है.

(विशेष सूचना)–क्षयुका रोग असाध्य है, पकाक्षय कभी मिटता नहीं खासीमेंसे क्षयकी पकी पहिचान करणी ये पूरे अनुभवका काम है, इसकी निश्चय होगये पीछे इलाजभी वहोत निगे दास्तीसे करणा तभी चतुरपणा सिद्ध होता है, असाध्य जांण निरास होणा नहीं अछे योग्य इलाजोसें रोगीकू आराम मिलता है, जींदगी बढती है- क्षयवाले रोगी सेंवणसकेतो वस्ती छोडकर जगलकी उची और खुली हवामें जाके रहे, सूकी खुली और अछी हवा क्षय रोगका सर्वोत्तम इलाज है, सब तरेके गरम उत्तेजक तथा नसेवाले खानपानका त्याग करना सादा अछा और पोषणकारक खुराक खिलाना जीवनीयगणकी दवायें और दूधसे जादा पोषण करना खुराक रुचिप्रमाने खाना चावल दाल गहू चंदलाई ताजे और उत्तम पके फल दूध मलाई घी परवल उत्तम शाग तरकारी

ये सब पथ्य है. लेकिन् बहोत चीजों मिलाकर सग खाना ये नुकशांन करता है बक-रीका दूध बकरियोमे रहना बकरेके बालका बिछोना बकरेकी लींडीका तप बहोत प्रशसनीक है.

किरण ३ री.

रक्ताशयसंबंधी रोग

रिदय रोग हार्टडिझीझ

देशी वैद्यकशास्त्रमें रिदयरोग इसनामकी व्याधि नीचे रक्ताशयके रोगोंका वर्णन किया है उसमे रक्ताशयका रोग छ प्रकारका लिखा है १ उरोग्रह २ वायूका ३ पित्तका ४ कफका ५ तीनों दोपका ६ कृमिजन्य याने चूरनिये पडनेसें.

(कारण) बहोतगरम भारी खट्टा तुरा और कडवे पदार्थोका सेवन करणेसें बहोत खेचलसें चोट लगनेसें भोजनपर भोजन करनेसें डरसें दस्त पेशाबके वेगकू रोकनेसें इत्यादि कारणोंसें रिदयरोग होता है, इसके सिवाय शरदी ठढ मूत्राशयका रोग और सधिवायू होय तोभी रिदयरोग होजाता है

(लक्षण)–(१) उरोग्रह–खून मास तिल्ली और यकृत् बढता है, और रिदय विस्तार पाता है, (२) वायूका–रक्ताशय पीडासें जाणे फैलता है, सूयोंसे चुभाते होय एसा दरद होता है, (३) पित्ताशय सबधी–प्यास सताप बदनमें जाणे अगार लगायदी है, कोइ चूसे एसी पीडा गभराट कंठमेंसे धूआ निकलणा मूर्छा दुरगधवाला पसीना और मूका सूकना (४) कफसबधी–रक्ताशयमें भारीपना कफका गिरना अरुचि मूमे गीलासपना और जठराग्नि जाणे जलसे भीजाभया एसा मालम देता है, (५) तीनोदोप सबधी तीनोंदोपोंके लक्षण मिले भये होते हैं (६) रिदयमें कृमि उत्पन्न होती हे, तब उलटी मोल होती है, बेर २ थूकना पडता है, सुई चुभाने जेसा दरद शूल आंखमें अधेरी अरुचि आखोंमें कालास पडता है, उससे क्षयरोग भी होजाता है रिदयरोगका इलाज–(१) गऊका दूध १६ तोला मद आंचसे आधाजले तब ठढाकर उसमें मिश्री घी तथा सहत दोदो तोला और तीन मासा पीपरका चूर्ण मिलाकर रोगीकी शक्ति मुजब देना (२) पोकर मूल अथवा एरडीके जडका चूर्ण सहतमें चाटना (३) कुटकी तथा मोलेठीका चूर्ण गरम पाणीमें पीणा (४) बकुलवृक्षके पुष्पोंका हार पहरना (५) पारा गंधक अभ्रक इनोकी भस्मी सम वजन लेकर इसकू असालियेके छालके रसकी अथवा कांदेके रसकी २१ भावना देनी पीछे वो चूर्ण सहतमें चाटना मात्रा १ मासा (६) कृमिजन्य रिदयरोगमें प्रथम लघन तथा दस्त कराकर पीछे कृमिरोगमें लिखे इलाजकरणा (७) वायविडग उपलेट इनका चूर्ण गोमूत्रमें देना

(८) असालियेका स्वरस तथा कल्कसे पका या घी (९) असालियेकी छालका उकाला तथा दूध (१०) असालियेकी छालका चूर्ण घीके सग दूधके संग अथवा गुडके पाणीके संग (११) हिरणके सींगकी भस्म करके गायके घीमे चाटनी (१२) दशमूलका क्वाथ (नं० ९७)-(१३)-(नं० ७३२) तथा (नं० ६३०)६३१) का इलाज (१४) अमृतवटी रिदयरोगपर सर्वोपरी इलाज है, दूध चावलका पथ्य रिदयरोग मिटाकर वदनमें अमृत जेसा गुण दिखाती है, (१५) द्राक्षासव (नं० २८३)

रिदयरोगके दुसरे शारीरकचिन्ह–रोग.

(रक्ताशयका सोजा)–(कारण)–शरदीसें मूत्राशयके रोगसें अथवा जखमसें छातीमें सूजन आती है, (लक्षण) बुखार छातीका धडका, श्वास जलद, चहरा फिकरवद गभराट वांइकर वटसो नहीं सकता–(इलाज)–गरमपाणीका छातीपर शेक करना अलसीकी पोटिस बांधनी अथवा दोपघ्न लेप बांधना दस्तके खुलशा वास्ते हरडेका चूर्ण अथवा एप्समसॉल्ट देना.

(रक्ताशयका फेलाव)–रक्ताशय जब बढता है, तब उसके पडदे जाडे पडते हैं, अथवा थेली विस्तार खाती है, (कारण)–खूनके फिरणेमे अडचल होणेसें खून बढजाणेसें जादा महनत करणेसें सखत धूपसे और फेफसा मूत्र पिंड वगेरे दुसरे रोगोंमें जब रक्ताशयकूं जादा जोर पडता है, तब उसका कद बढता है, (लक्षण) रक्ताशयमें जादा खून रहणेसें वो जादा धडकता है, महनतसें दम चढता है, नींद नहीं आती नाडी बे प्रमाण और छातीमें दरद होता है,) (मूर्च्छा) (कारण) किसीभी दुसरे कारणसे रिदयमें खून जाता अटके कम हो जाय अथवा खराब खून जावे तब मूर्च्छा आती है, मरणा त्रास तमाखू वछनाग जादा नाताकती और कितनेक रोगोमें भी मूर्च्छा आती है–(लक्षण बेहोसी आखमे अधेरी चक्कर जी मचलाणा उलटी चहरा फीका कांपणी ठंढ शीतांग नाडी धीरी और बे प्रमाण श्वास जलद गभराट वै चैनी बिलकुल फेम नहीं आंखकी की की फैल जाती है, नाडी नाताकत धीरी थोडी नसोकी खेंच ताणभी होजाती है,–(इलाज) अमोनिया नाकमें सुंघाणी मूपर पाणी छांटणा हवा डालणी.

(धडका) (फडकणा) रक्ताशयके ऊपर हाथ धरणेसे छाती जादा जोरसें धड २ करती है, उसको (पाल्पिटेशन) कहते हैं. कारण–खुनहीके फीरणेकी चालमे कुछ अडचल होती है, तब उसके बदलेमें चाल बढती है, पेटमे हवा अथवा पाणीका भराव जादा खुराक रक्ताशयपर कुछ दबाव मनका चंचलपणा वहोत स्त्री सेवन मगजकी नाताकती तमाखू अथवा दारूका विशन तथा औरभी पांडू वगेरे केइयक रोग छातीका धडका पैदा करता है.

(लक्षण) धडका ये रक्ताशयके एक वडे रोगका लक्षण है, भोजन पैदा होता है, तो वडी धैसत वताता है, ये रोग वेर २ उठता है, वेर २ वेठता है, छातीमें कुछ उछलता है, गलेमे गोला चढता होय एसा रोगीकू मालम देता है गभराट मूर्छा श्वास कानमें अवाज शिरमे दर्द चक्कर आंखमे अंधेरी पसीना जादा वगेरे--(इलाज) रोगीकू शांत पडे रहणे देणा कस्तूरी हींग अफीम डिजीटेलिस ब्रांडी पोटास ब्रोमाइड वगेरे दवा देकर देखणी हाथ पैर सेकणा तथा छातीपर राई धरणी अथवा सेक करणा

(हृदयशूल) कारण--पुख्त ऊमरके अदमीके ये रोग होता है, श्रम शरदी ठंढी अजीर्ण भारी खुराक वहोत दारुके खाणेसे इत्यादि कारणसे हृदयशूल पैदा होती है, लक्षण--वांये तरफ अकस्मात् शूल होती है, वायुके हृदय रोगके लक्षण होते है, छाती जाणे वांधली होय और श्वास वध भया होय एसा घाहरसे मालम देता है, लेकिन् पकायतमें अंदर श्वास चलते रहता है, दरदी दिखणेमे भयंकर चहरा फीका नाडी ना ताकत पसीना और मरणेका डर रोगीसे वोला नहीं जाता तोभी अदरसे सावचेत रहता है, वहोत देरतक शूल चलता है, तो किसी वखत आंचकीयाने वांइटे चलणे लगते है, इलाज--जल्दीके इलाज तरीके छातीपर राईका पलाष्टर मारणा अथवा टरपेन्टाइन लगाकर शेक करणा कस्तूरी हींग क्लोरलहाइड्रेट सालवोलेटाइल डिजीटेलीस वेलाडोना ब्रांडी वगेरे दवाओंमेंसें जो हाजर होय वो पिलाकर और आमोन्या इथर वगेरे दवा सुघाणी

(विशेष सूचना)--हृदय रोगमे ये शारीरक चिन्होंका तात्कालिक इलाज उपरात जादा इलाज पहली लिखा है, सो करणा रक्ताशयका रोग वहोत विचारवाला जादा करके असाध्य अथवा कष्ट साध्य होता है, इसवास्ते पूरे इल्मीसे परिक्षा कराके इलाज कराणा ये सीख है ।

किरण ४ थी.

पक्काशयसंबंधी रोग.

इस रोगमे होजरी तथा आंतरोंके तमाम रोग तथा उस अवयवोकी निकृतीके सग सवध रखणेवाले दुसरे भी कितनेक रोगोंका समावेश इसमें किया है, पाचन कियाके रोगसें जो जो रोग होता है, उन सवोंका इस किरणमे वयान है, दाखला जेसेके मसेका दरद (हरस) जाहरमें तो गुदाके सग सबध रखता है, लेकिन् उसकी असली वुन्यादसोचेतो पाचन क्रियाके विकारमेंसेहीं हरसका जन्म है, इसीतरे आम्लपित्त और मूका दरद भी पाचन शक्तिका विकार है ।

मूंका रोग.

मूके वहोतसे रोग जादा करके अजीर्ण और विगडी भई होजरीसे होता है, (जीमका

चनपसाका अथवा नीलोफरका सरवत तोला १ उसमें आना भर पाणी डाल कर पीणा (४) कासणीकानित राजल पीणा (५) ईसव गुल अथवा बेदाणे कालुआब दो दो घंटेंसें चमचा २ भर पिलाणा (६) प्यास बहोत लगेतो अनारका रस चमचा भरके पिलाणा आंवलेका शरवत भी फायदा करता है (७) दस्त कवज होय तो एरडीयेंकी पिचकारी गुदामें मारणी अथवा सीडलीझ पाउडर कालुआव देणा (खुराक) चावलोंकी कांजी अथवा फकत दूध सिवाय कुछ देणा नहीं उलटीमें वहोत कम खुराक देणेसे पेटमें ठहरता है इसवास्ते उलटीका वहोत जोर होय तो रोगीकूं सुलाकर कांजीया दूध चमचेसें पिलाणा.

(होजरीका पुराणा सोजा)-होजरीका तेजसोजा नरम पडे पीछे वहोतसी वखत थोडा दरद रह जाता है, और वहोतसी वखत तीक्ष्ण दरद भये विगरभी ये दरदधीमें २ पैदा होता है, इस रोगमें खाये पीछे बेचेनी किसी वखत उलटी क्षुधा मद शिरमे दर्द हाथ पांवोंमें कलतर और पीछे छातीनीचे कोडी ऊपर दरद होता है, ये दरद हाथसे दावकर देखणेसें याजीमें चाद वढता है, खट्टीडकार पेटका फूलणा छातीमें दाह वगेरे पुराणे अजीर्णका चिन्ह मालम देता है, (इलाज)-कोडीकी जगे पलाष्टर मारणा और फफोला उठे उसकु न० ५६३, मे लिखे मुजब ड्रेसिंग करणा अथवा न० ५६२ मे लिखा भया पलाष्टर मारणा (२) पेटकब्ज होय तो हरडे सूठ और बूरेकी फकी देणी अथवा सीडलीझ पाउडर याकम्पाउन्डस वार्वेका जुलाव देणा एरड तेलकी पिचकारी मारणी (३) नं० २२७,२२८,२३६, का चूर्ण (४) अमृतवटी दूध चावलोंका पथ्य (खुराक)-इसमें खुराक सादा लेणा गरम मसाले तेज नसेवाला खानपानका त्याग करणा दाल भात शाग तरकारी गरिष्ट पदार्थका परेज रखणा खाना फक्त दूध या चावलोंकी घाट दूध मिलाकर अथवा सावूदाणे दूध देणा

(होजरीका घाव)-जेसें वाहर चमडीपर जखम पडता है, तेसें होजरीमें भी सूजन भयां पीछे जखम पडता है, ये जखम मटरके दाणेसें ले करके अठन्नी जितनाकद होता है, जिस कारणसें होजरीमें वरम होता है, उसी कारणसें जखम पडता है, (लक्षण)-होजरीके वरममें इस रोगके विशेष लक्षण ऐसेहें कोडीकी जगे दुखते भागका सामनेके भागके पीठके हड्डीमें दरद होता है, खाये पीछे तुरत उलटी हो जाणा खाया भया सव निकल जाता है, किसी वखत उलटीमें खून आता है, रोगी दिन २ दुवला होते जाता हे, इय सव निसाणीयां होजरीके जखमकी है, (इलाज)-(१) रोगीके शरीरकू तेसे होजरीकूं आराम देणा विछोणेमें पडे रहणे देणा करडा और जड खुराक खाना नहीं, हलका और पतला खुराक भी थोडा २ देणा उलटीमे खुराक टिके नहीं तो दोय भाग दूधमें एक भाग चूनेका नितरा भया जल डालकर पिलाणा (२) कोडीपर अलसीकी

पोटिस बांधते जाणा अथवा राई मारणी (३) दरद वहोत होता होय तो होजरीपर टरपेन्टाइन लगाकर फुलेनलका शेक करना दरद मिटे पीछेभी कितनीक मुदततक सराप गरम मसाला वगेरे कोइभी गरम चीज खाणी नहीं होजरीके पुराणे सोजेका सब इलाज करना (४) फक्त अमृतवटी और दूधका सेवन करनेसें होजरीकी सब फग्यिाद मिटती है (५) खूनकी उलटी होती होय तो रोगीकू सुलाये रखणा पेटपर बरफ धरणा बरफ चूसाणा दर घटेसे ग्यालिक एसिड १५ ग्रेण पाणीमे डालके देणा अथवा टिकचर ओफ स्टील देणा.

पाचनक्रियाके लगते दुसरे दर्द.

अजीर्ण-इन्डाइजेश्वन

अजीर्णका रोग जेसें वहोत साधारण है, तेसे इस रोगसे शरीरमें दुसरे वहोतसे रोगोकी जडभीरुप जाती है, इसवास्ते ये रोग वहोत लक्ष देणे लायक है, और शरीरमें जरा भी अजीर्ण मालम दे तो उसका तुरत इलाज कर मिटाणा वदनका वधेज खुराकपर है, लेकिन् वो खुराक जव अछीतरे पचता नहीं तव वोही खुराक मजबूती करनेके वदले उलटा वदन ढीला करता है ।

(कारण)—अजीर्ण होनेका कारण किसीसें छिपा नहीं है, अपणी पाचन शक्तिसे जादा और अयोग्य खुराक खानेसें अजीर्ण होता है, एक वखतमें जादा खाय लेणा कच्चा खाणा वेप्रमाण खाणा अगला पचे पहले खाणा वरावर चाबे विगर खाणा खान पानके पदार्थोंका मिथ्या योग करना ये सब अजीर्ण होनेका कारण है इसके सिवाय कितनेक व्यसन जेसेके दारू भग गाजा तमाखू आलस वीर्यका जादा खरच और क्षय जेसें तनकू और मनकु वहोत महनत चिंता वगेरे वहोत कारणोंसे अजीर्णकी जड रुप जाती है.

(लक्षण)—अजीर्ण छोटेमें छोटा और वडे २ में वडा रोग है, अजीर्ण पेटमें दो क्रिया करता है यातो दस्त लाता है या दस्त वध करता है दस्त होकर नहीं पचा भया भाग निकल जाता है जो नहीं निकले तो जादा खरावी करता है दस्त कब्ज होकर पेट फूलता है खट्टी डकार आती है जीमि चलाणा उछाला कै जीभपर सुपेदथर गलेमें छातीमें होजरीमे दाह शिरमें दर्द किसी वखत पेटमें चूक नींदमें स्वम वगेरे अजीर्णके अनेक चिन्ह मालम देते हैं ।

(सक्षा)—देशी वैयक शास्त्रमें अजीर्ण (याने जठराग्निके) विकारोंका वहोत सूक्ष्म विचार लिखा है इन सबोका विस्तार इस जगे ग्रथ वढनेके डरसे नहीं करते है तोभी सबोंका सारास सक्षेप करके लिखताहू जठराग्निके कमवेसी समविषम प्रभाव मुजब उसका चार प्रकार है, १ मदाग्नि २ तीक्ष्ण अग्नि ३ विषम अग्नि ४ समअग्नि ५ अति

तीक्ष्ण अग्नि जिसकूं भस्मक रोग कहते हैं मंद अग्निवाला थोडा पचा सकता है जरा जादा खाता है तो अपचा होता है तीक्ष्ण अग्निवाला जादा भी खाता है तो पचासकता है, विषम अग्निवाला कभी तो जादा पचाता है कोई वखत थोडा भी नहीं पचता है, और अग्निका बल अनिमित होनेसें वहोत रोगकूं पैदा करता है सम अग्निवालेकू बराबर पचता है और बदन निरोग रहता है भस्मक अग्निवाला जो खाता है सो भस्म हो जाता है, जो उस भूखकूं रोके तो बदनके धातूओकों खा जाती है अब अजीर्णकी जाति इस मुजब है (१) आमाजीर्ण कफसे होता है अंगमें भारीपणा औकारी आंखके पोपचो-परथेथर और खट्टी डकार आती है, २ (विदग्धाजीर्ण)–पित्तसें होता है भ्रम होणा, प्यास, मूर्छा, संताप, दाह, खट्टी डकार, पसीना वगेरे होता है, ३ (विष्टब्धाजीर्ण)–बादीसे होता है शूल, आफरा, चूक, मल, तथा अधोवायूका रुकणा अंगोका जकडणा और दरद होता है (४) रशशेषाजीर्ण) खाये पीछे पेटमें पके भये अनाज का साररूप जो रश (पतला) भाग होता है वो पतला भाग भी पकते २ कच्चा रह जाता है, उसका नाम रशशेषाजीर्ण छाती साफ नहीं होनेसें तथा वदनमें रसकी वढोतरीसे अन्नपर अरुचि होती है, (अजीर्णके दुसरे उपद्रव) अजीर्णमेंसे विसूचि (हेजा) अलशक तथा विलंबिका नामका रोग होता है हेजेका बयान पहली लिख दिया है, (अलसक) आहार नीचे जाय नहीं उंचाभी जाय नहीं पकताभी नहीं लेकिन् पेटमें एक जगे पडा रहता है आफरा तथा वहोत दरदवाले अजीर्णके भेदकु अलसक कहते हैं, (विलंबिका)–खराब भया पेटका अन्न कफ तथा वायूके लिये ऊपरके अथवा नीचेके द्वारसे निकले नहीं उसकू विलंबिका कहते हैं । (अजीर्णका सामान्य इलाज) (१) आमाजीर्ण होय तो गरम पाणी पीणा विदग्धा जीर्ण होय तो ठंडा पाणी पीणा तथा जुलाब लेना विष्टब्धाजीर्णमें पेटपर सेक करना और रश शेषाजीर्णमें सोजाणा । (२) लंघन अजीर्णका अच्छा और सस्ता इलाज है लेकिन् मारवाडी भाइ मरणा कबूल करते है लेकिन् लंघनके नामसें कोसों दूर भागते हैं जिसमे भी भाग्यवानोकी तो कहणीही क्या (३) सींधा निमक सूठ तथा मिरचकी फक्की छाछसें या जलसें (४) चित्रककी जडका चूर्ण गुडमें (५) जवा हरडे सूठ तथा सींधा निमककी फाकी जलमें या गुडमे (६) सूंठ लींडी पींपर तथा हरडेका चूर्ण गुडके संग लेणेसें आमाजीर्ण मिटे और हरस तथा कबजी मिटै (७) चित्रक थोडी अजमोद सेंधव सूठ मिरच खाटी छाछसें पीणा हरस तथा पांडुमें फायदा करता है (८) धाणा तथा सूंठका काथ पीणेसे आमाजीर्ण तथा शूल मिटती है (९) अजवाण तथा सूठकी फक्की अजीर्ण तथा आफरेकू मिटाती है (१०) कालीजीरी २ से ४ वाल निमकके संग चबाणी अथवा कीडा मारी (डीकामारी) चार आनी भर फाकणा (११) घीमे तले भये कुचीलेकी

फकी १ रत्तीसे १ वाल (१२) पीपला मूल २ से ४ वालतक खाणा (१३) लसण जीरा संचल सेधा हींग नींबु कुचीला कांकचके बीज वगेरे दवाओ अग्निकु प्रदीप्त करती है, इनोंमेसे जो मिले उसका उपयोग करणा (१४) न० २४३,२४५,२४०,२४२, की दवाये तथा नं० १६९ की शखवटी और १९०, का हिंगाष्टक अजीर्णका अछा इलाज है (१५) न० ६०२,६०३,६०४, के अग्रेजी मिकश्चर

(होमियोपाथीक इलाज)–एन्टीमनी क्रूड आर्सेनिक ब्रायोनिया कार्बोव्हेज चाईना ही पारसल्फ नक्सवोमिका वगेरे ।

(विशेष सूचना)–अजीर्णके रोगीने खाणेका सभाल रखणा एक बेरका भया अजीर्ण एक लघणकर हलका खुराक दुसरे दिन खाणा और ऊपर लिखी साधारण दवायोंसे भी जलदी मिट जाता है लेकिन् जो गफलत होती है तो इसका असर वहोत दिनोंतक रहता है तब अजीर्ण पुराण पडके वदनमे घर करता है और मिटणाभी मुस्कल होता है वहोत अदम्योंकू जथा घथ अजीर्ण रहता है लेकिन् ये वात उनोके समझमें नहीं आती तब तरे २ के रोगोकी फरियादी करते फाफा मारते मूर्खोंके पास फिरते हैं लेकिन् कारण समझे विगर इलाज नहीं होता इसवास्ते मदाग्निवालेनें और अजीर्णकी शकावालेने सादा और वहोत हलका खुराक खाणा चहिये चावल दलिया दालका पाणी वगेरे ।

पुराणे-अजीर्ण बद्हजमी.

(डिस्पेपस्या)

अजीर्णका रोग वडे सहरोंके सुधरे भये समाजमें हरेक घरका खास मरज वण गया है तरे २ के मन माने भोजन करनेके शोखमे पडे भये और गद्दी तकियोंमें पडे रहणे वाले मोतब्बर लोकोंके ऊपर ये रोग वेर २ हमला करता है जो लोक खाणे पीणेका स्वाद और मौज शोखसे वचकर और रातकू नाच तमासा और नाटिक देखणे की लतसे वचकर साधारण जिंदगी भोगते हैं वो अदमी प्राय इस रोगसे बचे भये हैं मुबइ हैदराबाद बीकानेर अहम्मदाबाद सूरत जेसे सोखीन सहरोंमें इस रोगका जादा फैलाव है बहोतसे दोलतवानोके पास सुखके सर्व साधन होकरके भी कुटंबमें हमेसवादी और बदहजमी शरीर और मनकी नाताकतीकी फरियादी ये सब कारण बदहजमीका है

(लक्षण)–भूख तथा रुचिका नाश छातीमे दाह खट्टीडकार उछाला उलटी होजरीमें दरद वायुकब्जी मरोडा धडक श्वासका रुकणा शिरमे दर्द मदज्वर अनिद्रा खमा उदासी और खोटे खयाल ये बदहजमीका लक्षण है, अन्न नजरोसे देखे नहीं सुहाता खाया पचता नहीं कभी तो जादा भूख लगी एसा मालमदे खाये बादमी भूख मालम दे अग गलता जाय रोगीकू एसा दुख मालमदे के आपघात करके मरजाय एसे बुरे खयाल किसी वख्त होणे लगे.



(कारण)-मशालादार घी तेलसें तरानतर पकान्न तथा तरकारी जादा मेवा अचार इसतरेकी तेज और खट्टी चीजें बहोत दिनोतक उपवास करके पशुकी तरे खाणेका अभ्यास बहोत चा बहोत जल पीकरके पेटकूं फूलाणा जीमकर तुरत बहोत पाणी पीणेका अभ्यास गरमागरम चाय काफीके पीणेकी टेव ये सब बादी और बदहजमीकूं बुलाणेके हलकारेहें सराप ताडी तमाखू, सुघणेकी तमाखुं, भांग अफीम जहरी चीजोंके व्यसनसे अदमीकी होजरी खराब होती है, वीर्यका जादा क्षय व्यभिचार गरमी प्रमेह वगेरे कारणोसे अदमीकी आंतरे नरम नाताकत पडजाती है, निरुद्यमी निर्धनपणा होकर फेर जातकी और दुनियाके रिवाजसे ओ सर, व्याह वगेरेमे फजूल खरचसें धनके नाश होणेसें फिकर मदीसेंभी अग्नि मंद अजीर्ण होता है ये सब अग्नि मंद होणेके कारण यादमें रखणा चहिये ।

(इलाज)-इसका जादा लंबा चोडा इलाज लिखना फजूल है फक्त उनमान मुजब सादा खुराक योग्य कसरत शरीरकी सामान्य आरोग्यताकू वढाणेवाली साधारण दवाइयां और कोई भी तरेकी चतुराई एसी नहीं है सो इस बेमारीपर चले (१) पचे नहीं एसी चीजो जेसें के तरकारी दाल जात मेवा बहोत घी मख्खण मिठाई खटाश वगेरेका त्याग करणा (२) दूध दलिया खमीरकी अथवा जादा मोण देकर गरम पाणीसे ओसण पतली थोडी रोटी बहोत नरम और थोडी चीज काफी दाल मूगका ओसामण वगेरे खुराक केइ दिनोतक लेणा (३) जीमणेकी टेमरखणी वेर २ वखत वदलणा नही वहोत देरीसे जीमणे नहीं रातका खाना नहीं क्योके रातकूं जठराग्निका कमल सूर्य अस्त होणेसे खुला नही रहता इसवास्ते मार्कंड ऋषीने अपणे पुराणमें रात्री भोजनमें मांस खाणे जितना दोष लिखा है रात्रीकूं भोजनके रशमें अनेक जानवर आकर गिरते हैं उनोंके खाणेसें अनेक किस्मके रोग हो जाते हैं ये वात दयानंदजीने भी सत्यार्थ प्रकाशमे कबूल करी है, जैन तो मुख्य दयाधर्मके पाया वद होनेसे इस रात्री भोजनमें रोगादिक प्रत्यक्ष दोष और जीवोकी अनेक रासी खाणेसें परोक्ष फल नर्क और जो मदिरापानी असुर लोक रात्रीकु खाते हैं उनोकी देखा देख रात्रि भोजन करनेमें लोक उनोका दाखला देते हें के अग्रेजोंके वेमारी नहीं होती अहो आर्य लोकों उनोंके वेमारी नहीं होती ये वात तुमने क्या समझके कही वेमारी तो रात्रि भोजनसे जरूर होती है लेकिन् थोडी ओर थोडीही मुद्दत ठहरती है क्योंके अवल तो उनोके मकानहीं केसे हे सो क्षुद्रजीव प्रथम तो प्रवेशही नहीं करते दुसरा टेमोटेम वहोत थोडा खाना ऊपरसे फेर विकार नहीं करे और हाजमा एसा पदार्थोका साधन इस उपरांत वेमारी होते ही विद्वान डाकतरोसें इलाज करणा दो पहरसें जादा लिखणा वगेरे वदनकू तस्ती नहीं देते तनदुरस्तीके सब साधन मोजद दुसरे स्ववसपणा इत्यादिक वातोसें तुम किसीभी तरे उनलोकोंके जेमें

तन दुरस्तीपर कभी चल नहीं सकोगे आर्यावर्त्तवालोंमें कोइ २ श्रीमंत अगरेजोकी तरे चाल चलणमें पाव धरते है, सो वे मोत आधी जिंदगानीमे मरते हैं, क्योके प्रथम तो पूरी पणहीं नही आती दुसरे ये देशकी तासीर और आब हवा अलग है, इसवास्ते चाहिये के हमारे प्रजापति भगवाननाभि कुलचद्रने जो दिनचर्या रात्रिचर्या ऋतुचर्या बतलाई वो मैने सक्षेपसें इस ग्रथके तीसरे चोथे प्रकाशमें या सपूर्ण ग्रथमे जगे २ लिखी है, उस मुजबही चलणा कल्याणकारी है, इस आर्यावर्त्त देशके अनुसारही पहर वेश खानपान और चालचलण रखणा (४) सराप पीणा नहीं (५) भोजन करते २ अथवा भोजन कियेबाद तुरत जादा जल पीणा नहीं बहोत सख्त चाय या काफी पीणी नहीं जो कोई पतला पदार्थ पीणेमे आवे तो वो बहोत गरम या बहोतही ठढा नहीं होणा (५) तमाखू सुघणी नहीं जो कभी नकसीरका रोग बद करणेकू या कफ निजलेके निकालणे वास्ते व्यसन लगा होय तो दुसरे दवाइसे बधकर छोडदेणा चहिये नहीं तो थोडी सूघणी जीमणेकी बखत पहली तो बिलकुलही नहीं सूघणी क्योंके इससे भूख बद होती है, और खाया भया पचता नहीं तमाखू सूघणेसे भूख बद होती है, ये बिसन छोडणेसें भूख खुलती है, ये बात बहोतसी जगे पतवाणे गई है, (७) खाणेकी तमाखू भी एसाही अपगुण करती है, तमाकू खाणेवाले समझते हैं, तमाकू खाणेसे खुराक हजम होता है लेकिन् ये बात तदन झूठ है, उलटा अजीर्ण रहता है, (८) बहोत महनत नहीं करणी खुली हवामें अछीतरे फिरना बहोत नींद लेनेकी आदत होय तो छोड देनी और फजरमे जलदी ऊठके खुली हवामे फिरणा (९) खाये पीछे तुरत बाचना लिखना और विचार करणे बेठना नहीं (१०) अन्न पचाणेवास्ते गरम दवाइयें गरम खुराक तथा दस्त साफ लाणेकी दवा जुलाब इत्यादि देना नहीं अजीर्णके फेलसे बचना होय तो ऊपर लिखे नियम मुजब चलना होजरीकू सुधारणेकू बहोत दिनोतक बच्चेकी तरे दूधसेंही गुजरान करना अमृतवटी जैसी आरोग्य बढाणेवाली दवा लेणी घोडेपर या पांवप्पादल साफ हवामें फजर साज फिरना.

मलावरोध-कब्जी-बंधकुष्ट.

कोन्स्टीपेशन

(दस्तका नहीं होणा)-साधारण तोरपर हर अदमीकूं २४ घटेमे एक दो दस्त आता है, किसीकू दिनमें दोवेर और किसीकू दो तीन दिनसे एक बखतकी टेम पडी भई होती है, किसी बख्त बदहजमीसे अथवा कोई तात्कालिक कारणसे दस्त बध होता है, सो विगरदवासे अथवा जुलाबसे वो खुलासा होगये पीछै टेमो टेम दस्त आते रहता है, इसकू तो लोक बधकुष्ट नहीं कहते लेकिन् दस्त उतरे नहीं जादा देरी लगे भूख

बराबर लगे नही पेटमें भार मालम दे पेट चढारहे और अजीर्णके लक्षण मालमदे उस्कू कब्जी कहते हैं.

(कारण)–वेर २ जुलाब लेनेकी टेमसे कब्जीका रोग होता है, कारण ये कुदरती नियम है, जादा महनत किये पीछे जादा मुदततक विश्राम लेना पडता है, इसवास्ते जादा जुलाबसे आंतरोकूं अपणी शक्तिके उपरांत काम करणा पडता है, तब वो जादा बखततक अपणा काम करणेमे पीछे सुस्त रहते हैं जुलाबसे एक वेर तो पेट साफ होकर बदन हलका पडता है, लेकिन् पीछे थोडेही मुद्दतमें कब्जी और भराव होजाता है, और दारूके व्यसन जेसा डोल बणता है, जेसें दारू पीणेवालेको दारूबिना चलता नहीं तेसें जुलाबकी टेव पडणेसें उलटी खराबी होती है. (२) दस्त तथा पेशाब तथा अपान वायूकूं रोकनेसे भी कब्जीका रोग होता है, बहोतसे अदमीकू एसी आदत पडजाती है, सो कामके लिये दस्तकूं रोकते हैं, लेकिन् वख्त बीते पीछे दस्त आता नहीं (३) आंतरोका कोईभी भाग संकुडाणेसें अथवा किसीभी गांठका उसपर दबाव होनेसे दस्त साफ नही आता जेसे तिल्लीके रोगसें औरतोके गर्भके भारसें इत्यादि. (४) वृद्ध अवस्थाके लिये अथवा दुसरे कारणसे नाताकती होणेसें पेटकी नसें नाताकती बणती है, इससे मलकूं नीचे उत्तरतेमें जो जोर मिलणा चहिये वो नहीं मिलता है, तब मल अदर भरे रहता है, इससे मलकी गांठे आंतरोमें भरे रहति है, और आफरा होजाता है (५) सफरा मंद पडजाणेसे उसमें मल भरके रहता है, (६) कलेजा पंक्रियाझ तथा तिल्ली जो पाचन क्रियाकू मदत करणेवाला है, उनोमें कोई विकार होता है, तब वो अवयव चहिये जितने प्रमाणमें आंतरोकी क्रियाकूं मदत नहीं देसकते उससे भी दस्तकी कब्जी होती है. (७) जो सुखी लोक खापीकर एकजगे बेठे रहते है, उनोके भी कब्जी होता है (८) बुखार हरस मगजके और दुसरे भी कितनेक रोग कब्जीका कारण होता है (९) नही पचे एसा खुराक खानेकी खराब आदत. (१०) सराप तथा तमाखू बहोत पीनेकी आदत

(लक्षण)–दस्तकी रुकावट पेटमें भार हवा आफरा बेचेनी आलस मंदाग्नि चूक (आंकसी) अपचा, कांच निकलनी, बवासीर शिरमे दर्द भमल चक्कर हिस्टीरीया थोडा बुखार श्वास लेते अडचल अनिद्रा मनकी खिन्नता

(इलाज)–जिसकारणसें दस्त कब्ज भया होय वो दूरकरनेका इलाज करणा वो कारण सब पहले लिखा है, दस्तकी कब्जी मिटाणेकू सख्त जुलाब कभी लेणा नही (१) एक दो दिनकी कब्जीमे हरडे जोहरडे सोनामुखी, विलायती नमक, एरडी तेल करमालेकी गिर, नसोतकी छाल, जुलाफा,रुवार्ब वगेरेका जुलाब ले लेणा, खीचडी वगेरे पतली खुराक देणा (२) बहोतदिनकी कब्जीके वास्ते हरडे १ भाग काली दाख २

भाग मिलाकर छ मासेसें एक तोलेभर प्रमाण गोली बणाकर प्रभात खाकर ऊपर पाव जल पीणा (३) ईस पूगल एकेकरुपियेभर दिनमें तीनवेर फाकणा (४) नीचे लिखे रोगोमें दस्तकी कब्जी होय तो रेचदेणा—जीर्णज्वर जहरका दोप वातरक्त भगदर ववासीर पांडू उदररोग ग्रंथी हृद्रोग अरुचि योनिरोग प्रमेह गोला तिली व्रण विद्रधी उलटी विस्फोटक हेजा कोठ कर्णरोग यकृत्कारोग सोजा नेत्ररोग कृमिरोग क्षारका विकार वायूका रोग शूल मूत्राघात वगेरे (५) इण नीचै लिखे रोगोमे जुलाव देणा नही बालक वृद्ध घी तेल वगेरे स्नेहपान करके वहोत स्निग्ध भया भया छातीके अदर जखमसें क्षीण पडाभया डराभया महनतसे थकाभया प्यासका रोगी शरीरका जाडा गर्भणी स्त्री नयाघुखार तुरत पसीना निकाला भया मदाग्निवाला सराप पीणेसे भया रोग घदनसे लूखानिस्तेज इतनोकों जुलाव देणा नहीं (६) दस्तकी कब्जी मिटाणे दस्त लाणेकी दवा देत कितना एक विचार रखणा चहिये पित्तके कोठेवालेकू हलका जुलाब कफ कोठेवालेकू मध्यम जुलाव वादीके कोठेवालेकु सख्त जुलाव देणा.

(नरम कोठेवालेकूं जुलाब)—मुनक्का दूध एरडीतेल सीडलीझपाउडर एप्सम सोल्ट (विलायती निमक) सोनामुखी गुलाबका फूल हरडे जोहरडे अमलतास (मध्यम कोठेवालेकु रेच)—निशोत कुटकी किरमाला (सख्त कोठावालेकू रेच)—जमालगोटासे शुद्ध बणा रस (७) पित्तके कोठेवालेकु जुलाव कोप पित्तका होय तो—कालीदाख तथा सूफकी उकालीकर उससे निसोतका चूर्णदेणा—कफके प्रकोपमे—त्रिफलाका क्राथ गोमूत्र तथा त्रिकटु मिलाकर—वायुके कोपमें—निसोत सूठ सींधानिमक इनोका चूर्ण नींबूका रस मिलाकर देणा (८) हमेसकी कब्जी वालोने हमेस सख्त जुलाब लेणा नहीं लेकिन् जब जरूरी पडे तब एप्सम सोल्ट खीरखेस्त और सोनामुखीकी चा तीनोकों मिलाकर अथवा एक तोला अमलतासमें १ तोला खीर किस्तमिलाकर पीणा एक दो दस्त आजाय तो दुसरेदिन फेर लेणा नहीं (९) घीमें सेकी भई जो हरडेकी भूकी आधे रुपेभर और सेंचल अढाई मासा इसकी फक्की देणेसे हलका जुलाव लगता है (१०) नाताकत आंतरोके लिये दस्तकी कब्जी रहती होयतो आतरोंकों मजबूती मिले ओर दस्त साफ आवे एसा इलाज करणा—कुचीलेका सत्व ४ ग्रेण एलिया २० ग्रेण कीनाइन १० ग्रेण कम्पाउन्डरुवार्चपील २४ ग्रेण इनोकी १२ गोलियांकर फजर साझ एकेक लेणा इसके सिवाय न० २, ४, २५३, तथा न० ४६१ से ४७५ तकका रेचक तथा सारक उपायोमेसे जो अनुकूल होय सो करणा (११) रातकू पेटपर ठढा पाणीमे भिगाया कपडा रखकर उसपर गरम फुलालीनका कपडा लपेटकर सूणा रातकू सोते सोवखत एकेक प्याला ठडा जल पीणा पेटकू यथाशक्ति दवाणा मसलाणा तथा हाथफिराना इन तीन क्रियासे भी दस्त साफ आता है (१२) पिचकारी बैठकमें देणेसें कब्जी मिटती है, परेज भी नहीं

रखणा होता और पेटमें दरदभी नहीं होता दस्त करडा गांठोंदार आता होय तब तो पिचकारी बहोतही फायदे वद है, जरा गरमकरे भये पाणीसे अथवा पाणीके सग एक दो औंस एरंडीका तेल मिलाकर पिचकारी भरके बैठकमें पिचकारीकी अगली टूटी देकर पिचकारी मारणी और आसरे आधे घंटेतक रखणा जलदी दस्त साफ आयगा पिचकारीकु देशीशास्त्रमे वस्तीकर्म कहते हैं, देसी चमडेकी तथा जस्तकी वण तीथी इसवखत विलायती पिचकारी यंत्रके साथ लेणेकी आती है, ये पिचकारी अपने हाथसे हरकोइ अदमी लेसक्ता है.

(विशेष याकबी)—कब्जीके रोगीने खानपानका यत्न रखणा दालोकी जात जेसी कब्जी करणेवाले पदार्थ खाणा नहीं बहोत चावल भी खाना नहीं मेदेकी तथा महीन आटेकी रोटी नहीं खाणी थूलीवाले आटेकी रोटी खाणी उससें भी हवाका जोर रहे तो वो भी नहीं खाणी दूध पचे जिस मुजब खाणा चा काफी बहोत सख्त बहोत गरम या बहोत जथावध पीणा नहीं हलका सादा खुराक लेणा टेमोटेम फरागत जाणा खुल्ली हवामें फिरणे जाणा दस्त लाणेवास्ते बहोत चिंता करणा नहीं.

उदावर्त्त–अनाह–आफरा–नलबंधवायु–

(टिम्पेनाइटिझ.)

(कारण) पाद दस्त पेसाब जंभाई आंसु छींक डकार उलटी वीर्य भूख प्यास श्वास ये सब स्वभाव (कुदरती) वेग है, इनोके रोकणेसें वायू उंची चढती है, इससे पेट फूल जाता है, ऊपरके हरेक वेगकू रोकणेसें जुदे २ उपद्रव होते है, वो सब उपद्रव दुसरेप्रकाशमें देखणा इहां उनोका मुख्य उपद्रव जो पेटके आफरणेका है, सोही लिखा है, पेट फूल जावै अदरसे जाणे जकड गया होय एसा मालमदे गडगडाट करे श्वासरुके डकार आवे और जिसमें बहोतसी बखत खराब स्वाद और गध आवै पेटमे दरद होय और वायुसरे तब थोडा चैन पडे ये सब आध्मान रोगके लक्षण है.

(इलाज)—अजीर्ण तथा चूंकमें लिखे इलाज करणा पेटपर राई मारणी गरमपाणीका शेक करणा पेटपर हींग अथवा टरपेन्टाइन चोपडणा हिंगकापाणी टरपेन्टाइन तथा गरमपाणीकी वस्तिलेणी गुदामे वाट रखणी मैणफल पीपर कूठ वज और सुपेद सरसू इन सबोंको गुडमें पीस तथा दूधमें पीस इनोकी वत्तीकर गुदामे रखणी चार तोला चूराखांड एक तोला निशोत एक तोला पीपर इकठाकर इसमेंसे १ तोला चूर्ण सहतके सग मिलाकर जीमणेके पहली चाटणा सूठ मिरच पीपर पीपरामूल चित्रक जमालगोटा तथा निशोत इन सबोका समभाग चूर्ण गुडमे मिलाकर शक्ति मुजब लेणेसें आफरामिटता है, २ [illegible] निशोत ४ भाग पीपर और ५ भाग हरडे सबकी बराबर गुड २

तेज आफरेका रोग भी मिटजाता है, पींपरमिटके दसेक बूद जलमें डालकर पीणा युरोपियन ब्रांडी देते है, कब्जी होय तो एरडी तेलका जुलाब देणा अथवा इसकी पिचकारी.

चूंक–आंकसी–शूल–

कोलिक.

ऊपर लिखा सब बयान लगवग एकही अर्थ और एकही रोगकूं पहचाणणे वाला है, पेटमें चूक आवै शूलमारे आंकसी अथवा वांइटे होकर पेटमें दरद होय उसरोगके पहली लिखे सोनाम है.

(कारण)–(१) बहोत वायुकारी अथवा कचा खुराक नहीं पचणेसे पेटमे वायु जोर करती है (२) दस्त बहोतदिनोंतक कब्ज रहणेसे मलके भरावसे पेटमें दरद पैदा करता है (३) ठढीहवा लगणेसें ठढी चीज खाणेसें अथवा ठढे पाणीमें बहोत देर भीजणेसें भी दरद होता है (४) नरम मिजाजवाले अदमी और जादा करके हिस्टीरीया वाली औरतोंके ये रोग होता है (५) सीसेके रजकण सपेदा और भी कइतरेके दुसरी जहरी रगके रजकण पेटमे जाणेसे दरद उठता है

(लक्षण)–सूटीके आगे अथवा सब पेटमे पीड चूक शूल दस्तकी कब्जी बहोतसी बखत उलटी होय रोगी दरदसे पछाडा मारे गभरा उठै पेटपर दाबणेसें या मसलणेसें अछा लगे आंतमें सूजन होणेसें तथा पेटके दुसरे दरदोके लिये भी पेटमे दरद होता है लेकिन् वो इस पेट पीडासे जुदा होता है, उसकी पहचाण एसी है, के उसपर दबाणेसें अथवा मसलणेसे जादा दरद बढता है, और बुखार होता है, नाडी जलद् चलती, है

(इलाज)–(१) शेक–साधारणचूक अथवा शूल शेक करनेसे मिटजाती है, गरम पाणी डाल शीशीया टरपेनटाइनका शेक करणा (२) दस्त बध होय तो वादीहर रेचक दवायें देणी एरडीतेल तथा उसमें लाडेनमना १० बूद देणेसे तुरत खुलासा होता है, सूठका क्वाथ एरडी तेल सेकीभई हींग तथा सेंचल डालकर पिलाणा इलायची हींग जवखार तथा सींधानिमक इनोंके क्वाथमें एरडी तेल देणेसें पेट नाभि पीठ शिर कान आख इन सब जगेकी शूलकू मिटाता है (३) हींग १ बहेडा २ सूठ ३ का कचिया ४ भाग इनोका चूर्ण पाणीमे पिलाणा (४) जोहरडे त्रिकटु कुचीला शुद्ध गधक हींग शुद्ध सींधानिमक इनोकों नींबूके रशमें देणा (५) घीके सग तलीभई हींग निगलादेणी अथवा लसणकी कुली निगलादेणी जिससें वादी निकलकर पेट पीडा मिटेगा (६) पेट ठसाठस भरा होयतो उलटी करणेके इलाजोंसे उलटी करणी (७) हींग काकचिया अजवाण तथा निमकका टुकडा लेणा (८) टरपेन्टाइन हींग तथा पाणीकी गुदाद्वारसे पिचकारी देणी उससे वायूका जोर मिटता है. (९) पाच निमक अद्रकके रशमे (१०) त्रिफला कुटकी तथा अमलतासका काढा (११) अरोमेटिक पाउडर ग्रेन ५,

से १० सहतमें चटाणा. (१२) सूंठ सेंचल जोहरडे पीपर तथा निशोत सम वजन फक्की तोला। इसके सिवाय नं० ६१६ ५१७ का अंग्रेजी मिक्श्चर तथा नं० ७०४ ७०५ केहकी मीनुसके इस रोगके प्रसिद्ध इलाज है.

देशी वैद्यकशास्त्र चूंक शूल रोगके दोष मुजब बहोत प्रकार बतलाता है, लेकिन् इसमें समझणेकी बात इतनीही है, के शूल दो तरेकी है, एकतो खास पेटके साथ संबध रखती है, जिसका मुख्य आधार आहार विहार और पाचन क्रिया ऊपर रहा भया है, और दुसरी शूल यानेचसका ज्ञानततुओंके साथ संबध रखता है, ये दुसरी तरेकी शूलका छठी किरणमें खुलासा लिखेंगें वैद्यकशास्त्र मुजब शूलरोगका भेद इस मुजब है, वातशूल २ पित्तशूल ३ कफशूल ४ सन्निपातशूल ५ आमशूल ६ द्वंद्वजशूल ७ परिणाम-शूल ८ अन्नद्रवशूल.

(वायुशूल)–मुख्य दोषवायु नाभि पसवाडे पीठ पेडू इनोमे वेर २ शूल होय और मिटजावै दस्त पेशाब रुके सुईचुभाणे जेसी और फाटणे जेशी शूल शेकसे दबाणेसे तथा चिकणे और गरम अन्नपानसे शांति होय (इलाज)–एरंडके जडका क्वाथ हींग तथा सेंचल डालकर पीणा (२) जोहरडे अतीस हींग सेचलवज तथा इंद्रजव इनोका चूर्ण पाणीमें (पित्तशूल)–मुख्यठिकाणा नाभि तृषा मोह दाह दरद पसीना मूर्छा भ्रम होता है, आधीरातकू अन्नके विदाहकालमें और शरदऋतूमें वधे और शीतकालमे शमन होय इलाज–(१) पहली तो उलटी करणी पीछे जुलाब देणा (२) आंवलेका चूर्ण सहतमें चाटणा (३) जोहरडेका चूर्ण गुड तथा सहतमें घीमे खाणा (४) त्रिफला अमल-तासके गूदेका क्वाथ मिश्री तथा सहत डालकर पीणा (कफशूल)–मुख्य दोष कफ ठिकाणा होजरी खासी अरुचि ग्लानी मूमेसे लार गिरणी गलेमें भार कोठेमे भारीपणा इलाज–(१) लघन जरूर करणा (२) जोहरडे चित्रक कुटकी वज इनोका चूर्ण गोमूत्रमें (३) सेंधानिमक विडनिमक वगडखार हींग पींपर पींपरामूल चव्य चित्रक तथा सूंठका चूर्ण जरा गरम पाणीमें पीणा (सन्निपातशूल)–तीनों दोषका लक्षणवाला ये असाध्य है, इलाज नहीं है, (आमशूल)–पेटमें गुडगुड अवाज उलटी शरीरमें जड-पणा मदपणा पेटका फूलणा तथा कफके सर्व लक्षण होय–इलाज–(१) कफशूलका इलाज करना (२) अजवाण सींधानिमक जोहरडे तथा सूठका चूर्ण (द्वंद्वजशूल) दोदो दोष सामल होय ठिकाणा कफवादीमें पेडु हृदय कठ और पसवाडेमें शूल कफपित्त मिले दोषमें कूख रिदय नाभी तथा पसवाडेमे शूल वातपित्त मिलेमें दाह तथा सख्त बुखार आता है (इलाज)–(१) लसनका कल्क फजरमें सहतमें खाणेसें वायकफकी शूलमिटे (२) दाख तथा अरडूसेका क्वाथ पीणेसें कफपित्तकी शूलमिटै–(परिनाम-शूल)–खाया भया अन्न पचे पीछे उठे जो शूल उसका ठिकाना आंतरा–इलाज (१)

प्रथमलंघन पीछे उलटी रेच (२) सूठ तिल तथा गुलकू पीस गऊके दूधमें पीणा (३) शखभस्म पाणीमें पीणा (४) मैणफल तथा कुटकी कू जलमे पीस सूडीपर लेप करणा (५) सेके भये कांकचि ये सबतरेके शूलकू मिटाता है—अन्न द्रव शूल—खाया भया अन्न पचणेसें भी शूल मिटे नही तो जहांतक तीखा पीला खट्टा और पतला उलटीमे निकले नहीं उहांतक रोगीकू चैन पडै नहीं इसवास्ते पित्त पडे जहांतक वमन देना और कफ पडे जहांतक जुलाब देणा एसी मर्यादा है, इलाज (१) आंवलेमें अथवा मोलेठीमे लोहभस्म (सार) सहत मिलाकर देणा—बाहरका इलाज—अफीमका लेप गूगलका लेप राईका लेप लसनका तेल वछनागका तेल हीगका लेप बेलाडोणेका लेप इत्यादिक कितनेक लेप शूलको शांत करता है.

(विशेष सूचना)—पथ्य—उलटी पसीना शेक लघन नींद जुलाब पाचन पुराणी डांगर गरम किया भया दूध परवल खार सहजणेकी फली करेला निमक हींग लसण एरडी तेल गोमूत्र नींबु गधक त्रिकुटु वगेरे दीपन पाचन—कुपथ्य—विरुद्ध अन्नपान उजागरा लूखा तुरा ठढा जड महनत मैथुन मद्य सबतरेकी दाल चवला मटर तीखापदार्थ वेगोकों रोकना शोक क्रोध वगेरे त्याग करना

गुल्म—गोला.

अजीर्णके विकारोमें चूंक आंकसी शूल और गोलेका भी समावेश होसक्ता है, पहला तीन विकार तो ऊपर लिखा है, अब गोलेका विकार लिखते है, अंग्रेजी वैद्यक मुजब तो गुल्मका कोइ जुदा रोग नही है, लेकिन् अजीर्णका एक निशान है, देशी वैद्यकशास्त्रोंमें गुल्मका रोग खास जुदा निदानमे लिखा है, गोलेका रोग पांचप्रकारका है, वायुगुल्म पित्तगुल्म कफगुल्म त्रिदोषगुल्म रक्तगुल्म पांचोप्रकारोमें मुख्य देखे तो वायुप्रधान है.

(वातगोलेका कारण)—लूखा और विषम अन्नपान दस्त वगेरे वेगोकों रोकना शोकसें हृदयमें चोट लगना जुलाबोंसे मलका क्षय करना और उपवासादिकोंका करणा ये वात गुल्मका कारण है

(लक्षण)—जुदे २ ठिकाणे दरद दस्त पेसाबका तथा वायुका रुकणा गलेमें शोष वदनपर कालापणा तथा ललाई ठढ देके बुखार अन्नपचे पीछै दरदका शमन (इलाज) एरडीका तेल दूधके सग अथवा हरडे दूधके सग अथवा गूगल गोमूत्रके संग (पित्तगोलेका कारण)—तीखा खट्टा तीक्ष्ण उष्ण और दाह करणेवाले पदार्थ गुस्सा मदिरापीणा ताप विदग्धाजीर्ण तथा खून बिगाड (लक्षण)—बुखार प्यास ग्लानी वदनपर ललाई पाचनक्रियाकी वख्त भारी शूल पसीना तथा दाह होता है (इलाज)—जोहरडे गुड तथा मुनक्काके सग खाणा २ त्रिफला चूर्ण मिश्रीमें ३ आवलेके उकालीमें घी डालकर सिद्ध कियाभया घी चाटणा ४ कपीलेका चूर्ण सहतमें (कफगोलेका कारण

भारी चिकणा अन्नपान आलस दिनका नींद लेनी (लक्षण)–वदन भीजे जेसा ठढके संग बुखार ग्लानी मोल उधरस अरुचि शरीरमें भार अग्निमंद दरद थोडा (इलाज) १ अजवाण विडलूण छाछमें २ तिल एरडी तथा अलसीके बीज तथा सरसू पीस पेटपर लेप करणा और उसपर आकके पत्तोंका शेक करणा ३ वात गुल्मके इलाज करणा (रक्तगुल्म)–और तोका ये खास रोग होणेसें स्त्री चिकित्साप्रकरणमें लिखेंगे (गुल्मका सामान्य इलाज)–१ अढाई मासा चोवासाजी अढाइ मासा गुड २ पलास थोर आंधी-झाडा अंवली आक तिल सेरा जव ये आठ चीजोंका खार गोलेकू मिटाता है, ३ अढाई मासा सोराखार और अढाइ मासा आदा मिलाकर खिलाना ४ कुवारपठेकी गिरी छ मासा गऊका घी तथा सूठ मिरच पीपर हरडे सींवानिमक मिलाकर खाणा ५ सींपजला-ईभईका चूर्ण अढाइ मासा गुड अढाइ मासा इनोकी गोलीकर खाणी ६ तली भई हींग घीमे खाणी ७ शंखभस्म नींवूके सग खाणी

अतिसार–(दस्त)

डायरीया

(कारण)–दस्त होणेके वहोत कारण है, अजीर्ण और अतिसारके वहोतसे कारण एकसे हैं, अतिशय और योग्यखुराक कच्चा फल तेसे कच्चा अन्न वासी तथा भारी अनाज इत्यादि खाणेसे भी दस्त होता है, खराव पाणी खराव हवा मोसमका वदलना शरदी डर विगर विचारी आफत् ये सब वातोसे अतीसार पैदा होजाता है.

(लक्षण)–वेर २ पतला दस्त होणा ये मुख्य चिन्ह है, मोल अरुचि जीभपर सुपेद अथवा पीली छारी पेटमे वायु हवाका गडगडाट चूक वायु कै अथवा खट्टी डकार वगेरे ये अतीसारके लक्षण है, अतिसारके दस्तोमें तथा मरोडेमे वहोत फरक होता है, ये वात ध्यानमे रखनी अतिसारमे पतला दस्त छूटा चला जाता है, और मरोडेमें आंतरे कचरेसे भरे भये होते हैं, उससे खुलासा दस्त नहीं होकर आंकसी चल २ कर थोडा २ दस्त आकर ऊपरसे आतरोमेसे आंव जलमसपीप तथा खून गिरता है, अतीसारके दस्तमें खून गिरे सोया तो मसेके अदरसे कोईभी खूनकी रक्तनली फूटणेसें अथवा आंत-रोमें या होजरीमे जखम (घाव) गिरणेसे गिरता है

(अतिसारका भेद)–देशी वैद्यकशास्त्रमें अतिसारके वहोत भेद भेदांतर लिखे है जिस अतिसारमे जिस दोषकी अधिकता होती है, उस मुजब नांम देणेमे आया है, जेसेकि वातातिसार पित्तातिसार कफातिसार सन्निपातातिसार शोकातिसार आमातिसार रक्तातिसार वगेरे दस्तके रंगमे तेसे दुसरे लक्षणोमें तफावत होता है, वायुका दस्त झांखा धूधरग होता है, पित्तका पीला तथा ललाइ लिये होता है, कफका तथा आमका दस्त सुपेद तथा चिकणा होता है, रक्तातिसारमें खून गिरता है, दस्तोंका एसा सूक्ष्म

भेद समझकर जो इलाज करनेमें आवे तो दवाका बहोत जलदी असर होता है, पीछे कितनेक सामान्य इलाज भी एसा है, सो सबतरेके दस्तोपर फायदा पोहचाता है, तो भी वायूके दस्तका इलाज अगर पित्तके दस्तपर करे जो की गरम दवाये देनेमें आवे तो दस्त नहीं रुककर उलटा बढता है, और रक्तातिसार होजाता है, अजीर्णका दस्त झांखा और सुपेद होता है, और जोवो अजीर्ण सख्त होता है, तो हैजेके जेसे चिन्ह मालम पडते हैं, (इलाज)–दस्तका इलाज करनेके पहली दस्तकी परिक्षा करनी दस्तके दो विभाग करना आमातिसार अथवा कचा दस्त और पक्का अतिसार अथवा पक्का दस्त जलमें डालणेसे दस्त डूब जाय तो आमका अपक दस्त समझना और पाणी ऊपर तरे तो पक्का दस्त समझना दस्त कचा और आममिला होय तो उसकू एकदम बंध करनेकी दवा देनी नहीं क्योके कचे दस्तकूं एकदम बधकर देतो उससे और केइतरेके विकारोंकी उत्पत्ती होती है, जेसेके आफरा सग्रहणी मसा भगदर सोजा पांडू तिली गोला प्रमेह पेटका रोग तथा ज्वर लेकिन् उसके सग ये बात भी याद रखणी चाहिये जो रोगी बालक बुढा या नाताकत होकर जादा दस्तोकों नही सहसकता होय तो आमके दस्तको भी एकदम रोक देना चाहिये (१) दस्तका श्रेष्ठ इलाज लघन है, पित्तातिसार रक्तातिसारमे लघन नहीं कराणा चाहिये औरोमे अछा लघनकरनेसें रोगीकू प्यास बहोत लगती है, उसकू मिटाने धाणा तथा वालेकु उकाल वो पाणी ठढाकर पिलाना अथवा धाणा और सूठका मोथ और पित्तपापडेका और वालेका जल पिलाणा (२) अजीर्ण तथा आमका दस्त होय तो लघन कराकर पीछे उसकू अवाही हलका भोजन देना आर आमकू पचावै एसा दीपन पाचन और स्तभन इलाज करना (४)–(वायुकादस्त)–१ लाही चूर्ण (नं० २३७, २) वृद्ध गगाधर चूर्ण (न० २२४) अनुपान छाछ अथवा चावलोंका धोवण (३)–आनदभैरवरस (न० ३४३, ४) शेकी भई भांगका चूर्ण रात्रका सहतमें लेना (५) अफीम तथा केशर चावलभर सहतमे देना पथ्य दही चावल (पित्तका दस्त)–(१) बीलका गिर इद्रजव मोथवाला और अतिविष इनोकी उकाली पित्त तथा आमके दस्तकू मिटाता है, (२) अतीस कूडा छाल तथा इंद्रजवका चूर्ण चावलोंके धोवनमें सहत डालकर देणा (३)–बिल्वादि चूर्ण (न० २३२) (कफका दस्त)–(१) लघन तथा पाचनक्रिया (२)–हरडे दारुहलदी वज मोथ सूठ तथा अतीस इनोका काढा (३) हिंगाष्टक चूर्ण (न० २३७) मे हरडे तथा साजीखार मिलाकर फक्की लेणी (७) अमातिसार–(१) लघन मरोडेका इलाज करना (२) एरडीका तेल पीलाकर कचे आमकु निकाल डालना (३) गरम पाणीमें घी डालकर पीणा (४) सूठ सूंफ खसखस तथा मिश्रीका चूर्ण (५) सूठके चूर्णकु पुटपाककी तरे पकाकर मिश्री डालकर खिलाना (८) रक्तातिसार–(१) पित्तके अतीसारका

इलाज करना (२) चावलोके धोवणमें सुपेद चदनकु घस उसमें सहत मिश्री डालकर पिलाना (३)–आंबकी गुठली छाछमे अथवा चावलोके धोवणमें पीसकर देना (४) कच्चा बीलगिर गुडमे देना (५) जामुन आंब तथा अंबलीके कचे पत्ते पीस रस निकाल उसमें सहत घी तथा दूध मिलाकर पीणा (अतिसारका सामान्य इलाज)–१ आंबके गुठलीका मगज बीलकी गिर इनोके चूर्ण अथवा काथमें सहत तथा मिश्री डालकर देना (२)–अफीम तथा केशरकी आधीचिरमी जितनी गोली सहतमे लेणी (३)–जायफल अफीम तथा खारककू नागरवेलके पानके रसमें घोटकर वाल प्रमाणकी गोली छाछमें देनी (४) जीरा भांग बीलगिर तथा अफीम दहीमें घोट वाल एककी गोली देनी इसके अलावा इस ग्रंथमे दिये भये (न० २०९, २२४, २२५, २२६, २३३, २३८, २४५, ३३२, ३३९, ३४३, का इलाज सब अछे है)–(अंग्रेजी इलाज)–१ हलका दस्त भया होय तो मिरचकाली थोडी उकालकर पेपरमीन्ट तज इलायची कालीमिरच जावत्री इसमेंसे किसीभी दवाका अर्क या चूर्ण जलके संग लेणेसे दस्त बंध होकर पाचनक्रिया साफ होजायगी (२) लेकिन् जोवादी होकर दस्त थोडा २ आता होय तो एरंडी तेल पीणा अगर जो पेटमें दरद होता होय तो एरंडी तेलमें आठ दस बूंद लाडेनमनाके डालना (३) अथवा कम्पाउन्ड रुबार्ब पाउडर ग्रेन २० पाणीमे देणा (४) एरोमेटिकपाउडर ऑफ ऑक (न० ४०१,) (५) (नं० ४९३, ४९४, ४९९, ५१९, ५२०, ६०९, ६१०, ६११, ६१२) वगेरेमें बताये भये इलाज योग्य अयोग्यका विचारकर उपयोगमे लेना.

(होमियो पेथिक इलाज)–(१)–एलोझ–अटकने नही सके एसा पीलापाणी जेसा दस्त होय होजरीमें अवाज (२)–आर्सेनिक–दस्त झांखा अथवा पाणी जेसा प्यास बेचेनी होजरीमे दाह होय तब देणा (३)–ब्रायोनिया)–ग्रीष्मऋतूमें ठंढा शरबत पीणेसे भया जो दस्त–जो पतला फीण जेसा बादीका तथा दुरगंधिवाला उलटी और मुर्छा होय उसपर देना ४–कार्बोव्हेज–अंत अवस्था आखरी हालतमें हाथ पांव ठंढा तब देना ५–(कोलोसिन्थ)–पीले पाणी जेसा और आंकसी चले एसे दस्तमें देना.

(एरण–पेचोटी)–दस्त होता है, तब कितनेक लोक एसा मांनते है, के सूंठी नाभिके आगेकी कोइ गांठ खिसगई है, उससे दस्त होता हे एसा समझ बहोतसी मूर्ख औरतोंसे पेट मसलाते हैं, लेकिन् धरण अथवा पेचोटी एसा कोइनामका अवयव शरीरमें है, नहीं, और नहीं किसीभी पुस्तकमें एसा नाम मिलता है, इसवास्ते एसा झुठा खयाल राखना नहीं सिरपरगोमें, वायू अस्त, व्यस्त होती है.

(विशेष सूचना)–दस्तोंके रोगमें खानपानकी बहोत सावधानता रखनी एकाध दिनका पूरा लंघन करदेना रोग बहोतदिन चले तो पीछे दाह नहीं करे एसा खुराक

थोडा २ देणा जेसें चावल साबूदाणा इनोकी कूटी भई घाट दहीं चावल पथ्य उलटी लघन नींद पुराणे लाल चावल मसूर तूर सहत तिल बकरी तथा गऊका दूध दही छाछ गऊका घी ताजा बीलफल जामुन कवीठ बेर अनार सब तुरापदार्थ हलका भोजन कुपथ्य–स्नान मर्दन करडा तथा चिकणा अन्न कसरत शेक नया अनाज गरमचीज स्त्रीसग चिंता ओजागरा बीडीका पीणा गउ उडद केरी पूरणपोली कोला ऊख सरापगुड खराब-जल कस्तूरी सब पत्तोंके साग ककडी खट्टापदार्थ ये पदार्थ अतिसारमे नुकशान करते है.

मरोडा आमातिसार–संग्रहणी–

डिसेन्टरी

मरोडा आमातिसार और सग्रहणी ये तीनोनाम लगबग एकही रोगके अहवाल जताते हैं, वैद्यकशास्त्रमें जिसकु आमातिसार कहते हैं, उसकू लोक मरोडा कहते हैं, अतीसार और आमातिसार जब पुराणे होजाते है, तो उसकू सग्रहणी कहते है, वो इस जगे दाखल करते हैं, बहोत करके ये रोग सर्व वर्गके लोकोंकू लगता है, जिसतरे चोकस प्रकारकी जहरी हवासे चोकस जातके रोग फूटकर निकलते हैं, तेसें मरोडेकी भी चोकस हवा और ऋतू होती है, क्योंके मरोडाका रोग किसी २ कु विरलेकू होता है, लेकिन् किसी २ वख्त ये रोग बहोत फेलता है, वशत और वर्षाऋतूमें उसका बहोत जोर होता है, (कारण)–मरोडा होनेका मुख्यकारण दोय है, एक किस्मकी शरदी हवा तथा खुराक हवाका असर बहोत करके एक जगेके रहनेवाले सब लोकोपर एक जेसा करता है, तोभी नाताकत पडे भये और पाचनक्रियाके गडबडवाले अदमीपर उस हवाकी जलदी असर होती है, कच्चा और भारी अनाज मिरचां और गरम मसाले शाग तरकारी खानेसे बादी तथा मरोडा होता है, दस्त कब्ज रहनेसे मल आतरोमें भरकर रहता है, और आतरोंके अदरके पुडतकू घसता है, उससे मरोडा होता है, गरम खुराक खानेसे अथवा गरमीकी मोसममें सख्त जुलाब लेनेसे भी किसीवखत मरोडेका रोग होजाता है

(लक्षण)–मरोडेकी सरुआत दोतरेसे होती है, सख्त मरोडा होकर पहली अतिसार जेसा दस्त होता है, अथवा पेट कब्ज होकर सख्त दस्त टुकडा २ जेसा आता है, सरुआतके इस लक्षण विगर बाकी सब लक्षण दोनोप्रकारमे एकसरखा होता है, दस्तकी शका वेर २ होती है, और पेटमे आंकडी आयकर दम २में थोडा२दस्त आता है, हाजत वेर २ होती है, करांजके दस्त आता है, वेठाही रहू एसा मन होता है, खून और पीप गिरता है, थोडा बहोत किसी २ कु बुखार भी होता है, नाडी जलद चलती है, जीभ-पर सुपेद थर होती है, रोग बहोतदिन चलता है, तेसे खून पीप जादा २ गिरता है, और आकसीका दरद बढता है, मरोडेमें बडे आतरेके पुडमे सोजा होता है, उससे वो पुड लाल होता है, पीछे उसमें लबे और गोल जखम गिरता है, उसमेसें पहली खून

और पीछे पीप गिरता है, ये तीक्ष्ण मरोडा तीन चार अठवा डेतक जो जारी रहजाय तब पुराना गिणेजाता है, पुराणा मरोडा वरसोंतक चलता है, अछा योग्य इलाज मिले तोही आराम होता है, इसीकु संग्रहणी कहते हैं, पूरे पथ्य और दवा विगर हजारों अदमी मरते हैं, (इलाज) पहली तो पेट देखणा के आंतरोंमें सूजन है, के नहीं दबानेसें जिस जगे दुखणा मालम पडे उस जगे राईका पलाष्टर मारणा और रोगी सहसके एसा होय तो उसपर (१–२) डझन जोकलगवाणी और पीछे गरम पाणीसे सेक करना तथा अलसीकी पोटिस मारणी स्नान करना नहीं शरदीकी हवामे जाणा नहीं बिछोनेमे सोते रहणा आंतरोंमें मलका भराभया कचरा निकालणेकू छ मासा जोहरडे अथवा सूंठके उकालीमें एरडी तेलका जुलाब देणा चहोतसी वखत तो सरु होता मरोडा एसे जुलाबसे ही मिटजाता है, कचरा मल नीकलजाता है, दस्त साफ आता है, आंकसी तथा दस्तकी हाजत बंध होजाती है, मरोडेवालेने एरडी तेलविना दुसरा भारी जुलाब कभी लेणा नहीं एरंडीके तेलमे तली भई जोहरडे दोभर सूठ पांचमासा सूंफ १ भर सोनामुखी १ भर तथा मिश्री ५ भर लगवग एरंडीतेलका काम सारती है, मरोडावालेकू दूध चावल पतली घाट अथवा दालके सादे पाणी सिवाय दुसरा खुराक देना नहीं सरु होतेही इय इलाज करे बाद जरूरी होय तो नीचै लिखते हैं, सो इलाज करना (१ अफीम)–मरोडाका रामवाण इलाज है, लेकिन् युक्तिसें लेना चहिये हिंगाष्टक चूर्णके संग गऊभर अफीम मिलाकर रातकू सूतीवखत लेणा अथवा अफीमके संग आधे रुपेभर सोवेकु जरासेक कर पाणीके संग पीसकर पीणा मरोडा तथा दस्तकू रोकने वास्ते अफीम अछा है, लेकिन् एरंडी तेल लेकर पेटमेंसे कचरा निकाले विगर पेस्तर अफीम लेणा अछा नहीं है, क्योंके मल बिगडे भयेकु अदर रोकदेता है, दस्त बधकर देता है, (२) ईस पूगल अथवा सुपेद जीरा मरोडेमें अछा फायदा करता है, दहीके संग आधे २ रुपियेभर जीरा अथवा ईस पूगल दिनमें तीनवेर लेणा ये दवा दस्तकी कब्जी करे विगर मरोडेकू मिटाता है (३) एरडीतेल एक वेर देणेपर मरोडा नही मिटे तो एक दोदिन ठहरके फेर एरंडीतेलही देणा वो सूंठके उकालेमें पेपरमींटके पाणीमें आदेके रसमे अथवा लाडेनम याने अफीमके अर्कमें देणा जिस्सें पेटमेकी वायूकूं दूरकर दस्तकू रस्ताकरे (४) बील–मरोडेके मरजमें बील अकसीर इलाज है, बीलकी गिर गुड दहीमें मिलाकर देणेसे मरोडा मिटजाता है, (५) एपीकाक्युआन्हा–या अंग्रेजी भूकी भी मरोडेमें बहोत उपयोगी है, उसमें एक अवगुण है, के उलटी लाती है, और पेटमें टिकती नहीं पेटमें रहे तो बहोत जलदी असर करती है, पेटमें टिके एसा करनेवास्ते प्रथम पेटपर होजरी कीं वांईतरफ राईका पलाष्टर मारणा और १५–२० बूंद अफीमके अर्कका पिलाना इतना इलाजकर पीछे ईपीकाक्युआनेकी ३० ग्रेन भूकी सहतमें चटाय देना

इसपर जल पिलाणा नहीं और थोडी देरपडे रहने देणा एसा करणेसें उलटी होगी नहीं दोय तीन दिन एसे करनेसे अछा फायदा होगा और कभी उलटी होगी तो भी उसका असर जरूर होगा अब एपीकाक्युआन्हाकू पचानेकी दुसरी तरकीब लिखते हैं, ६ रत्ती या भूकी ३ रत्ती अफीम उसकी १२ गोली करणी और तीन २ घटेसे चार २ गोलिये लेणी (६) इतने इलाजोसें जो फायदा नहीं पडे तो दस्त पतला पाणी जेसा आता है, बुखार नब्ज जलद चलती है, और दुखणा जारी रहे तो समझणाके आतरोमे अभी सोजन है, और अदर जखम है, एसी हालतमें न० २०९ का क्वाथ पृष्ट २९२ की लिखी भई स्तभन दवाइये तथा न० ७०२, ७०३, ६१४, ७१५ की दवाइया अछी फायदेवद है

(संग्रहणी)–पुराणा मरोडा अथवा सग्रहणीका निदान आयुर्ज्ञानार्णव प्रसिद्ध ग्रथमें एसा लिखा है के कोठेमें अग्निके रहणेका जो ठिकाणा है, सो अन्नकू ग्रहण करता है, इसवास्ते इस जगेकु ग्रहणी कहते है, ये ग्रहणी आंत कचे अन्नकू ग्रहण करके रखती है, और पके अन्नकूं गुदाके रस्ते निकाल देती है, इस ग्रहणीमे अग्नि है, वो भी ग्रहणी कहलाती है, अग्नि खराब होकर मद पडती है, तब उसका ठिकाणा ग्रहणी आत भी खराब होती है, वैद्यकशास्त्रमें ग्रहणी और सग्रहणीमे कुछयक भेद लिखा है, आमवायूकू सग्रह करे सो सग्रहणी ये रोग ग्रहणीसे जादा डरानेवाला है, इस जगे दोनोकों मिटावे एसा सामान्य इलाज लिखेगे और दोनोंका भेदातर नहीं रखेगे

(कारण)–तेज मरोडा जिस कारणसे होता है, उसीकारणसे सग्रहणी होती है, अथवा तेज मरोडा मिटे पीछे शांतपडे पीछे मद अग्निवालेके तथा कुपथ्य आहार विहारके करनेवालेके पुराणा मरोडा अथवा संग्रहणी रोग होजाता है

(लक्षण)–सग्रहणी कचा अन्न ग्रहण करती है और पक्के अन्नकु निकालती है, तब पेट छूट कचादस्त होजाता है, दस्तकी तादाद नहीं रहती थोडे दिन दस्त बध रहता है, और पीछा होता है, किसीवखत एकाध दस्त होता है, और किसीवखत जादा दस्त होता है, मरोडेकी तरे पेटमें आटा आमवायु पेटका कटणा वेर २ दस्त होय और पीछा बध होय खायाभया अन्न पचाभया होय या पचता होय उस वखत आफरा होय और भोजन करणेसें शाति होती है, वादीके गोटेकी छातीके दरदकी और तिलीके रोगकी शकाभया करती है, बहोतसी वखत पतला सूका कचा और अवाज तथा झागोंवाला दस्त होता है, वदन सूकते जाता है, खून उडजाता है आखरकों सोजन आती है, आखिरकों बोलते २ अदमी मरजाता है, सग्रहणीके दस्तमे खून पीप रग २ का गिरता है, बहोतसी वखत

(इलाज)–पुराणी सग्रहणी बहोत कष्टसाध्य है और साधारण इलाजसें मिटभी



नहीं सकती * संग्रहणी रोगमें रोगीकी जठराग्नि एसी खराब होती है, सो उसकी होजरी कोइ किसीभी किस्मके खुराकक़ु लेकर पाचन नहीं करसकती होजरी छोटे बच्चे कीसेभी बडी नाताकत होजाती है, इसवास्ते उसके खिलाणेकुं हलकेसे हलका खुराक देणा (१) (छाछ)–सग्रहणी रोगकी सर्वोत्तम खुराक है, दूवा और पथ्य दोनोंका काम सारती है, दोषोंकी निगेदास्तीकर तली हींग तथा जीरा और सींधानिमक डालकर तक दहींमेंसे थर निकाल उसमें चोथाहिस्सा पाणी डाल विलोई भई जाडी छाछ इस रोगमे बहोत फायदावंद है, सग्रहणीवालेकू इकेली छाछ पोषणकर जठराग्नि प्रबलकरती है, किसी पूर्ण विद्वान वैद्यकी सलासे सबकां मकरणा अछा है, पीछै भात वगेरे हलका खुराक देणा सरू करणा मरणके मूपर पडेभये हाडमात्र रहेभये विद्वानोंकी सलाहसे अमृतरूप छाछ जिलाती है, लेकिन् धीरज रखकर महीनोके महीनोंतक इकेली छाछ पीकर रोगीकू रहणा चहिये इसके सिवाय साधन संग्रहणी रोग मिटणेका एसा ग्रथोंमे विरला होगा एसा तक्र गुणानुवाद जैनाचार्य रचितयोग चिंतामणी ग्रथ तथा हमारा प्रत्यक्ष अनुभव पथ्य और दवारूप हमने पतवाणा है, (२) अमृतवटी–गऊका दूध और योग्य अनुपानके सग सग्रहणीकू मिटाती है, हम जादा क्या लिखे के जो प्राणी अपणी कष्टसाध्य संग्रहणी मिटाये चाहे सो व्यर्थ औरोके पास गोते क्यों खाकर धन और तनकू बरबाद करते फिरे रामबाण लगतेही सग्रहणी प्रलय होतेही नजर आती है, रामबाण जभी नहीं चलता के जब उसकू फेर जन्म लेणा होता है, (३) षडूषण–मूगकी दालका पाणी धाणा जीरा सींधानिमक सूठ डालकर छाछ पीणा (४) लाही चूर्ण–न० २३८ छाछमें अथवा बीलकी गिर छाछके सग पीणी मात्रा अढाई मासा अनुपान और खुराक छाछ (५) दुग्धवटी–वछनाग शुद्ध अफीम चार २ वाल लोहभस्म ५ रत्ती अभ्रक मासा १ दूधमें पीस दोदो रत्तीकी गोलियें करणी संग्रहणी तथा सूजनका बहोत अछा इलाज है, ये दुग्धवटी खाणी जहांतक दूध सिवाय दुसरा खुराक खाणा नहीं (६ हीवेरादि क्वाथ न० २०९) अतिसार तेसें सग्रहणी दोनोमे फायदेवद है, इसपर भी दूध चावलसिवाय दुसरा खुराक खाणा नहीं तो दवा कुछभी फायदा नहीं करेगी (७) पचामृतपर्पटी–ये दवा पूर्ण वैद्य रसोके बणाणेवालों पास मिलती है, अनुपान छाछ जीरा हींग सींधा पथ्य और छाछ.

(विशेष सूचना)–पथ्यापथ्य अतीसारमे लिखेमुजब सग्रहणीके रोगीने जादा स्नान करणा नहीं जादा जल पीणा नहीं चिकणाईवाला जादा खानपान लेना नहीं ओ जागरा करणा नहीं महनत करणी नहीं हवा अछी बदलणी दरियावकी हवा दरियावकी मुसाफरी जादा फायदेवंद है.

---

१ हमारे विद्याशालामें हमारा बनाया ग्रहणीसिंह सार्दूलरश अथवा ग्रहणी जीवकरशसे मरणान कष्टकू पोहचे भये सईकडो अदमी सूजन तकात आराम भये और होते हैं

अरुचि–अन्नद्वेष–

एनोरेक्स्या

खाणेका दिल होय नहीं अथवा अन्न देखकर दिलकु रुचै नहीं वो रोग अरोचक कहलाता है

(कारण)–ये कोइ अलग रोग नहीं है, कितनेक रोगोमे खाणेमें अरुचि होजाया करती है, जादा करके अजीर्णमें बुखारमें तथा कलेजेके और मगजके रोगोमें अरुचि होती है, शोकसे डरसे दरदसे क्रोधसे मनकू आंखकू तथा नाककू अछा नहि लगे एसे पदार्थोंके देखणेसे अरुचि पैदा होती है, (इलाज)–१ जिस कारणसे अरुचि भई होयसो कारण दूर करणा दिलकु रुचे और तासीरकू माने एसा खानपान मिलणेसे खाणेपर रुचि पैदा होती है, तेज चमचमा मीठा और खट्टा और खारा पदार्थ खाणेमे रुचि पैदा करता है, इसवास्ते एसे चीजोका उपयोग करणा अरुचि वादीसे भई होय तो वादीकरणेवाली चीजें खाणी नहीं इसतरे पित्त कफका समझ लेणा क्योके एसी चीजोंपर स्वभावसे रुचि नहीं पैदा होती (२) बीजोरा नींबुकी पाखडिये घीमें सेक उसमें जरा सींधानिमक मिलाकर खाणेसें रुचि पैदा होती है, (३) शरबत–पक्की अंबलीकू ठंढे जलमे घोल उसमें चहिये जितना कंद या मिश्री तथा इलायची लोंग मिरच तथा कपूर भुरकाकर थोडा भोजनके वखत पीणा पित्तकी अरुचि इससे मिटती है, नींबु तेसें अनारका शरबत उपयोगी है, (४) द्राक्षवटी–दाख अनारका सार सींधानिमक पींपर जरासेकी हींग तज वगेरेकी नींबूके रसमें बनाई भई गोलियां मूमे रखणी (५) छाछ–रुचि करणेवाली है, राई जीरा हींग तथा सूठ ये चार सेके भये पाचमा सींधानिमक इन सबोके चूर्णकू गऊके दहीमें अछी तरे मिलाकर दहीकू कपडेमें छाण उसमें खट्टी छाछ डालणी ये छाछ रुचि पैदा करती है, (६) श्रीखंड–इलायची लोंग मिरच और थोडासा भीमसेनी कपूर डालकर किया भया सिखरण रुचिकारक है, (७) अद्रक–भोजनकी वखत पहली सींधानिमक लगाकर आदेके टुकडे खाणेसें रुचि बढाता है, आदेके रशमें सहत मिला चाटते हैं

छर्दि–उलटी–ओकारी–

वॉमिटिंग

उलटी दुसरे कितनेक रोगोका चिन्ह है, तोभी उसकू बंध करणेके जुदे २ इलाज है, इसवास्ते इस रोगकू जुदा गिणकर इसके इलाज लिखे हैं

(कारण)–अति पतला पदार्थ पीणेसे बहोत चिकणा पदार्थ खानेसे मनकु नहि रुचे एसे अन्नपानसे बहोत खाणेसे अहित खानपानसे आमसे अजीर्णसे कृमिसे गर्भसे बिगडे भये वातपित्त कफसे नफरत आवे एसे चींजोके देखणेसें सुघणेसें

खाणेसे इत्यादि बहोत कारणोसे उलटी होती है, जादा करके अजीर्ण और पित्तके प्रकोपसे वेर २ कै होती है, इसके सिवाय गोसा उतरना आंतरेका वरम होजरीका क्षत कलेजेका रोग हैजा पथरी वगेरे रोगभी उलटीका कारण है

(इलाज)—कारणकू पहचान उलटीका इलाज करणा कितनीक वखत उलटी होणी फायदेके वास्ते होती है, वो होणे देणी रोकणी नहीं बहोत खाणेसे बिगाड जो होता है, वो उलटीके रस्ते निकल जाता है, उससे फायदा है, जो एसा नहीं होय तो पेटका दुसरा रोग होणा ताजब नहीं.

(सामान्य इलाज)—१ नीबूका शरबत इकेला अथवा सोडावाटर सग पीणा २ लोबानके फूल अथवा लोबानका पाणी ३ नींबूका रस सहत बीस्मथ सोडा वगेरे देणा ४ सुपेद चनणकु घस उसके पाणीमें आंवलेका चूर्ण और सहत डालकर पिलाणा ५ पित्तपापडेके हिममें या क्वाथमें मिश्री और सहत डालकर पीणा ६ मोलेठी तथा सुपेद चनणकू दूधमे घसकर पीणेसे खूनकी उलटी भी बंध होती है ७ तुलछीके रशमें इलायचीका चूर्णडालकर पीणा८जाईके पत्तोके रसमें पीपर मिरचमिश्री तथा सहत डाल पीणेसे बहोत दिनोंकी भी उलटी बंध होती हैं, ९ हरडेका चूर्ण सहतमे चाटणा तब दोप दस्तके रस्ते निकालकर उलटी बध होती है, १० गिलोयके रसमें या हिममे या क्वाथमे सहत डालकर पीणेसे त्रिदोपकी उलटी बध होती है, ११ जामुन आब तथा बडके नरम कचे पत्तोंकी उकाली पीणेसें १२ रेसम और मोरपखकी भस्मीकर सहतमें चटाणा १३ दाख तथा आंवले जलमें थोरी देर भिगाकर मसलकर उसके जलमें मिश्री सहत मिलाकर बुखार तथा पित्तकी उलटी मिटजाती है, १४ सोडा १५ ग्रेन साइट्रिक एसिड १० ग्रेन मिलाकर पीणा १५ मोफर्या बिस्मथ तथा हाइड्रोस्यानिक एसिडका मिक्श्चर देणा १६ दूध तथा चूनेका नीतराभया जलसामिल पीणेसे उलटी बध होकर पेटमें टिकेगा १७ नं० २२८, ५०२, ५६९, तथा ६०९ की दवाये १८ गर्भणीकी उलटी—धाणा तथा दाखका पाणी नं० ५०२, ५१३ का मिक्श्चर (कलंमा) बाहरका इलाज—१९ पेटपर राईका पलाष्टर मारणा २० लाडेनम तथा कलोरो फॉर्म सम वजन एक रुमालपर छिडक वो रुमाल होजरीपर रखके उसपर दुसरा कपडा ढकणा (होमियोपथिक इलाज)—१ एन्टीमनीक्रूड)—बहोत खाणेसे या बहोत सराप पीणेसे होय जो उलटी उसमें देणा. २ आर्सेनिक कालापित्त पडे और बहोत बेचेनी होय उसमें देणा. ३ ईपिका क्युआन्हा खुराक कफपित्त और खट्टे पाणीवाली वेर २ उलटी उवाकीमें देणा ४ पल्सेटिला—शरदीके लिये होनेवाली उलटीमे देणा. ५ टार्टरइमेटिक—उलटीकेवास्ते बहोत उछाला और ताण आवे तब देणा अछा है.

अम्लपित्त-खट्टापित्त-

खुराक बराबर पचे नहीं उलटी होय या दस्त होय उसमे कडवा और हरे रगका पित्त पडे इस रोगकू आम्लपित्त कहते हैं

कारण-बदनमें पहली अपणे कारणसे एकठा भया पित्त विरुद्ध आहार विहारसे याने विगडा भया खट्टा दाह करणेवाला और पित्तकू वधाणेवाले पदार्थोंके सेवन करणेसें प्रकोप पाकर इस रोगकू पैदा करता है इस रोगका मूल कारण अजीर्ण है इस कारण जो अजीर्णका कारण है, उससे ये रोग पैदा होता है

लक्षण-पहली जरा शिर दूखे हाथ पांवोमें नाताकती मालम दे पीछे कलेजैकी जगैपर उस वखत दरद होजावे अजीर्णकी निशाणी मालम दे आखिर उलटी होय किसी २ वखत इस रोगसें बुखार और कामला पीलिया होजाता है, तब मृत्युभी होजाती है.

इलाज-आम्लपित्तका रस्ता दो तरफसें होता है, मुंसे या दस्तसे उलटीवालेकू उलटीकी दवा देणी दस्त होता होय तो जुलाब देणा २-चावलोंकी या जौ धाणी मिश्री तथा सहत मिलाकर खिलाणी ३ कडवा परवल अथवा पटोल कुटकी नीमकी छाल तथा मैणफल इनोके क्वाथमे सहत मिलाकर देणा जिससे उलटी होती है पथ्य मूगकी पतली दाल अलूणी मीश्री डालकर-४ त्रिफलाके क्वाथमें निशोतका चूर्ण तथा सहत डालकर पिलाणा दस्त होगा ५ वडी दाख तथा जो हरडे सम वजन इनके बराबर मिश्री इनोकी दोदो तीन २ तोलेकी गोलिया करके खिलाणी इससे आम्लपित्त रिदय तथा गलेकी जलण प्यास मूर्छा भ्रम मदाग्नि और आमवात इन सबोकू मिटाता है, ६ भूरींगणी गिलोय अरडूसेके पत्ते इनोकी उकाली सहत डालकर पिलाणा इससे दम खासी उलटी तथा बुखारके सग आम्लपित्त मिटता है, ७ आंवलेका चूर्ण केलेके कदके रशमें देणा ८ पटोल अरडूसेके पत्ते गिलोय पित्तपापडा तथा जल भागरा इनोका क्वाथ सहत डालकर पीणा ९-ब्ल्युपिल ६ ग्रेण इपीकाक्युआन्हा १ ग्रेण एकस्ट्राकट डान्डेलीयन ६ ग्रेण इनोकी ४ गोली कर रातकू सोते वखत दोदो गोली लेणी १० चूनेका नितरा भया जल एक औंस उसमें थोडा दूध मिलाकर पीणा १२ अमृतवटी दवा खाणेमें दूध और चावल इसका सेवन दो महीने तक करे तो असाध्य आम्लपित्त अजीर्ण उलटी वगेरे रोग मिटकर होजरी तथा आंतरोंकी पाचनक्रिया खूब सुधर रोगी बलवान होता है

(विशेषसूचना)-इस रोगमे उलटी और दस्तकू बध करणेवाली दवा नहीं देणी लेकिन् वढे भये पित्तकू और अजीर्णकू शांति करणेका इलाज करणा कोईभी गरम दाहक और तेज पदार्थ नुकशान करता है, इस रोगमे बहोत सादा हलका पित्त शामक खुराक देणा (पथ्य)-जब गहू मूग लाल चावल तीन उकाला देकर ठढा किया भया पाणी मिश्री वूरा सहत कवीठ अनार (कुपथ्य)-उलटीकू रोकणा तेल खट्टा खारा तीखा

कुलथी तिल उडद निमक दही नसा करडा अनाज ठंढी हवा रातकू जागणा दिनकू सोणा ये बात सब नुकशान करती है, करेले परवल पथ्य है.

यकृत्–कलेजेका रोग.

डिझीसीझ ओफ लिव्हर.

आगे उदररोगमें यकृतोदर इस नामका रोग संक्षेपसे लिखा है लेकिन् यकृत् याने कलेजेपर पाचन क्रियाका बडा आधार होणेसे उसके कितनेक विकारो विषे कुछइक जादा जाणणेकी जरूरी है, यकृत् ये शरीरमें बडा कामिल मर्म स्थान है. उसमें भया कोईभी तरेका विकार वो सब बदनकूं तकलीप देणेवाला होजाता है रोगके सबब कलेजा छोटा और बडाभी होजाता है, कलेजेका मुख्यकाम पित्त पैदा करणेका है उस पित्तपर आंतरोके पाचन क्रियाका बडा आधार है कलेजेमें विकार होणेसें इतने रोग होते हैं.

१ कलेजेमें खूनका जमाव होता है
२ कलेजेमें सोजा होजाता है.
३ कलेजा पकता है
४ कलेजेमें पित्तका जमाव होता है.
५ कलेजा सकुडा जाता है
६ पित्तकी पथरी अथवा कांकरी.
७ कामला पीलिया होजाता है.

(कारण)–कलेजेके रोगके सामान्य कारण इस तरसे हैं बहोत तेज मसालादार खुराक सराप गरमी और एस आराम पारा नवसादर वगेरोंमेंसे पित्त बढता है.

(कलेजेमें खूनका जमणा)–कलेजेके अदरसे खून फिरकर जिस नसोंके रस्ते बाहर आता है उस नसोमें कोई तरेकी खराबी और अटक होणेसें खून कलेजेमें भरकर रहता है, तब खूनका सग्रह होणेसे कलेजेका कद बढता है, रक्ताशय तथा फेफसेकाभी यही हाल होता है बहोत दिन बुखार आणेसे जेसें तिलीकी गांठ बढती है तेसे यकृत्भी बढता है भोजन कर दोडणेसे या मैथुनसे या बहोत कसरत करणेसे कलेजेमें शूल मारती हे वोभी खूनके भरावसेंही हाल होता है, गरमीमे रहणेसें तेज मसालोंसेंभी कलेजा बढ जाता है, लक्षण–कलेजा बढता है अगुली धरकर ठोककर देखणेसे उसका स्वाभाविक पोला अवाज बदलकर सघन अथवा मद्दा अवाज मालम देता है, अजीर्णके लक्षण मालम देते है, पेटभरा तथा चढा भया मालम देता है, दस्त कब्ज रहता है, उबाकी तथा उलटी होती है–(इलाज)–पतला दस्त लाणेकू निशोत अथवा एप्समसोलट देणा जुलाब लगणेसें कलेजेका जमाखून कम होजाता है, पीछे नं० ४६१–४६२ की रेचक दवाओ देणी और जरूर होयतो थोडे दिनोंतक देणा सरू रखणा कलेजेपर राइका पलाष्टर धरणा शेक करणा अलसीकी पोटिस मारणी कलीका चूना तथा सहतका लेपकर रुई दबाणा टिंकचर आयोडाइन हमेस लगाणा जरूर होय दरद नहीं मिटे तो जोके लगवाणी

(कलेजाका तेज सोजन)–बुखारके संग कलेजेके तेज वरमकू लोक मुझारेकी गांठ

कहते हैं, (कारण)- गरम देशमें जादा होता है, सराप पीणेवालोंकू इस रोगका जादा सभव है, वहोत गरमी वहोत ठढी सन्निपात ज्वर और चोट लगणेसेभी होता है, (लक्षण)-खूनके जमावका आगे बढा भया रूप सोजन है, कलेजा वढता है बुखार सख्त आता है दहणी तरफ शूल कलेजेके ऊपर तरफ दरद और श्वास कास तथा छींक लेते दरद वढता है, वांये तरफ सोये नहीं जाता बुखारके सग कपाल तथा शिर दूखे पेशाव थोडा और लाल आंख थोडी वहोत पीली सूकी खासी हिचकी तथा उलटी दहणे खभेमे दुखणा वगेरे (इलाज) रोगी मजबूत होयतो कलेजेपर जोक लगाणी दस्तकब्ज और जीभपर सुपेद छारी होय तो ब्ल्युपील ६ ग्रेण और ऐपीकाक्युआन्हा २ ग्रेण इनोकी गोली देणी और तीन चार घटे पीछै सोनामुखीके काथमें ऐप्समसाल्टका जुलाव देणा अथवा न० ४६१ वाली गोली लिये पीछै चार घटेसे न० ४६२ वाला मिक्चर लेणा जो दस्त कब्ज होय तो येही दवा हमेस या एकतरे लेणा जारी रखणा जो मरोडाका कोइभी लक्षण मालम दे तो न० ४९३ वाली दवा लेणी हमेस राई लगाणी गरम पाणीका सेक करणा पेटपर गरम कपडा लपेटे रखणा वेर २ गरमागरम पोल्टीस मारणी आटेकी अथवा अलसीकी नहीं, आराम होय तो न० ५६३ का विल्स्टर मारणा-(यकृत्का-पकणा)- यकृतके वरमसे यकृत पक जाता है, जब वरम मिटता नहीं तब जमा भया खून पकता है और फोडेकी तरे इलाजसे बैठभी जाता है या फूटता है, ये यकृत्का पकणा जेसें तेज सोजेसें होता है, तेसें धीरे २ भये सूजनसेंभी पकता है, ए रोग दारूपीणेवालेके बुखार तथा मरोडेके रोगसेभी ए मरज होता है,-(लक्षण)- वरमका बुखार होय या उतर गया होय तोभी कलेजेके पकणेपर एकाएक ठढ देके बुखार चढ आता है वधता है और पसीना होता है, इसतरे दम २ में होणे लगे तब समझणाके कलेजेमें पीप होणा सरू होगया है अजीर्णके चिन्ह मालम दे भूख लगे नही नाडी जलद चलती है और चहरा घभरा जावे दुसरे सब चिन्ह वरमके होते है, पसलीके नीचै तेसें छातीके तरफ दरद बढता है पीपके पडनेसे अदरसें चभका मारता है पीप वढते जाता तेसें कलेजा वढते जाता आखरके एक दिन या महीना या वरस पीछै मूहोकर पीप निकलता है ए जब फूटता है तब छातीपर दहने तरफ अथवा पीठपर पसलियोंके बीचमे पसलीके नीचै पेटपर या पीठपर मूकरके फूटता है जो अदर फूटता है तो छातीके अदर फेफसेमे अथवा पेटमें फूटता है आतरेमें या पित्ताशयमें मू करता है तो पीप दस्तमे निकलता है, होजरीमें फूटता है तो उलटीमें पीप निकलता है अगर जो पेटमें छूटा फूटकर पीप फैले और उसकू निकलणेकू रस्ता नहीं मिले अदमी मरजाता है, (इलाज)- जेसें बाहिरके फोडेकू पकाकर पीप निकाल घाव भरते हैं, तेसें इसकाभी इलाज करणा सख्त जुलाब या सख्त दवा देणी नहीं ताकत देवे एसा अच्छा खुराक देणा जिस जगे फोडेका जोर

होय और मू होना मालम पडे उसजगे पोल्टिस मार जलदी फूटे ऐसा इलाज करणा रोगीकी ताकत वने रखणी यही मुख्य इलाज है, पारेकी कोईभी दवा पेटमें लेणेकी या ऊपर लगाणेकी सर्वथा काममें लेना नहीं बुखारके जोर मुजब बुखारका इलाज करणा दस्तकी कब्जी होय तो सोते वखत कम्पाउन्डरुवार्ब पील ५ से ६ ग्रेनकी गोली देनी अथवा फजरमें सीडलीझ पाउडरका जुलाव देना (लोशन)– नाइट्रिक एसिड १ ड्राम म्युरियाटिक एसिड याने निमकका तेजाव १॥ ड्राम और पाणी १० से १२ औंस मिलाकर इसमें कपडा अथवा वदली डुबाकर कलेजेके दरदपर चुपडणा अथवा महीन कपडा वरकर केलेका पत्ता तथा कपडेका पट्टा बांधना (पित्तका उछाला)– कोईभी दाह करणेवाली चीज होजरीमें जाणेसें अथवा विचाररहीतपणेसे कितनेक मुदततक खाया भया कुपथ्यसे होजरी तथा यकृत व्यवस्थारहित होनेसे पित्तका उछाला आता है, उछाला और मूर्छा ए उसके लक्षण है, उलटी होती है, तव पहली होजरीमेंका पदार्थ निकलता है पीछे खट्टा पित्त निकलता है, और आंतरेमे दरद होता है, (इलाज)–उलटी रोगमे लिखे इलाज करणा राई तथा पाणी पिलाकर उलटी करानी उलटीकू पैदा करणेवाली वस्तू वाहिर निकाल देना पीछे जुलाव देना सोडावोटर पिलाना दरद वहोत होता होय तो कलेजेकी पीपडीपर राईकी पोल्टिस मारनी दस्त कब्ज होय तो उसका इलाज करना)–यकृत्का सकुडाणा–वहोतसी वखत यकृत् वढे पीछे सकोचाता है, इससे छोटा होता है इस रोगके सग जलदर जरूर होता है पांवपर सोजा पीलिया अजीर्ण अथवा दस्त आखर मोत)– जलदर होनेके पहली कलेजेपर आयोडाइनका टिंक्चर लगाना अथवा ऊपर यकृत्के पकनेपर लोशन लिखा है, उसका वरताव करणा देशी लोक कलेजेपर गुल देते है, वोभी फायदेबंद है जलदर भये वाद जलंदरका इलाज करणा (पित्तकी पथरी)– पित्तके रहनेके ठिकाणेकू पित्ताशय कहते हैं, इस पित्ताशयमें पित्त एकठा होकर आंतरोमे जाता है लेकिन् जब पित्त कुछ विगडता है तब उसमे क्षार वगेरे पदार्थ घट्ट होकर करडी पथरी जेसी वध जाती है ए पथरी एकया जादा गोल चिपटी खूनेया खड्डेवाली होती है, कदमें चिरमीसें इंडें जितनी वडी होती है ए कांकरी पित्ताशयमें पडी रहती है अथवा आंतरोके रस्ते दस्तमे निकल जाती है, पित्तकी नलीमेंसे निकलती वो वहोत दरद करती है, कलेजेमे शूल जेसी पीडा होती है, रोगी तडफडता और पुकारता है, १ ठहर२कर दरद उठता है, उलटी होती है, दस्तकब्ज रहता है, पथरी पीछे पित्ताशयमें जाय अथवा आंतरोंमें जाय तो दरद नरम पडता है अगर जो नलीमें अटककर रहे तो आखिर पित्ताशयमे पित्तका भराव होकर कामला होता है, और रोगी मरजाता है (इलाज)– गरम पाणीका सेक अलशीकी पोल्टिस अफीम तथा वेलाडोना मिलाकर लगाना दरद वहोत होय तो इथर अथवा क्लोरोफार्म सुंघाना गरम पिलाकर उलटी करानी आंतरोंमें गये पीछे जुलाव देकर दस्तके रस्ते निकालदेनी

(कामला) पित्ताशयका पित्त आंतरोंमें नही जाता है, पीछा खूनमें दाखल होता है तब कामला होता है, अथवा पित्त पैदा करनेकी क्रियाका अटकाव होनेसें खूनमें पित्त बढता हे कलेजाके आगे कहे रोगोमें कमला होता है पित्त जादा पैदा होनेसें और मलकी कब्जीसेंभी कामला होता है इसके सिवाय चिंता डर दिलगीरी फेफसा मगज तथा रक्ताशयके रोग अजीर्ण बुखार सापका डक तथा दुसरे जहर ए सब कामला (पीलिया)का कारणरूप है खूनमें पित्तका बढना उसका नाम पीलिया रोग है, (लक्षण)–बदनमें पीलापना ए कामलाका प्रगट लक्षण है ये पीलापणा पहली आंखमें पेशाबमें नखमें और पीछे चामडीमें दिखाई देता है सुस्ती आलस बेचेनी कलतर शिरका दुखणा दस्तकी कब्जी और खुजली ए उसके दुसरे चिन्ह हैं कमला बहोत बढ जाता है तो सब बदन हलदी जेसा हो जाता है रोगी स्त्रीका दूध तथा आंसूभी पीला होता है, कपडेके पीला दाग लगता है, पेशाब पीला केसर जेसा लाल कालाभी होता है दस्तसुपेद कब्ज वायू डकार अपचा अरुचि और किसी २ वख्त दस्त उलटीमें या नाकमेंसे खूनभी गिरता है

(इलाज)– १ दस्त खुलास आवै एसा इलाज करणा पहली दूध या घी पिलाकर दस्त देना २ त्रिफलाके उकालामें सहत डालकर पीना ३ गोमूत्रमे शिलाजीत अथवा सोराखार लेना ४ कडवे नींबकी छालका उकाला सहत डालकर पिलाना ५ त्रिफला दारुहलदी कडवानींब तथा गिलोय इसमेंके किसीभी दवाका अगरस सहत डालकर पीना ६ कुटकी सर्वोत्तम इलाज है, इसका क्वाथ नवसादर तथा विलायती निमक डाल पीना ७ नवसादरभी कामलेका सर्वोत्तम इलाज है, न० (६२६) (६२७) तथा ६२८ का मिक्श्चर कामल है, ९ तेसे न० (७०७) तथा ७०८ का हकीमीनुसके फायदेबद है १० त्रिफलादि क्वाथ न० २११ अच्छा फायदा करता है

(होमियोपथिक इलाज)–१ एकोनाइट–बुखारके सग पीलियेका अच्छा इलाज है, २ आर्सेनिकम आख पीली दस्त अपचा बेचेनी प्यास ३ केलकेरियाकार्ब (यकृत्की बढोतरी) उसमें दरद दस्त मट्टी जेसा पेशाब काला तथा पीलाईलियेझारा ४ आयोडाईन–चहरा पीला दस्त सुपेद पेशाब काला तथा पीलाईलिये पुराना कामलेमें ५ पोडोफाइलम) पित्तकी काकरी अटकी भई पीलियेका इलाज–(विशेष सूचना)–भारी छाछ टालऔर खटाई और चीकना खुराक घी तेल वगेरे चरबीवाला पदार्थ और नसैका परहेज रखणा पांडू रोगमुजब पथ्यापथ्य रखणा कामलामें लोक दूध खानेकी मनाइ करते हे लेकिन् उसका कोइ कारण नही पाया गया माफकसर थोडा दूध खानेमें कोइ तकलीप नहींहे (यकृत्के तमाम रोगोंका सामान्य इलाज) यकृत्के सब रोगोंमें दस्तकी कब्जी होती है, इसवास्ते दस्तका खुलासा रहे एसा इलाज सरू करणा दस्तकी कब्जी नहीं

होय तोभी आणेकी दवा देनी २ निसोतकूं उकाल उसमें एरंडीका तेल तथा दूध मिलाकर पिलाना अथवा इकेली निशोत पाणीमें पीस दूधमें पिलाना अथवा फकत एरंड तेल दूधमें पिलाना ३ करमालाके गिरमें दूध डाल उकालकर पिलाना ४ कुवारका रस हलदीका चूर्ण मिलाकर पिलाना ५ जौ हरडे तथा लाल रोहींडेका क्वाथ जवखार तथा पीपरका चूर्ण डालकर फजरमें पीना

कृमि–चूरणिये–गिंडोले–वर्मस.

(विवेचन) कृमियोंके गिरनेसे वदनमें जोजो विकार होते हैं, उसका बयान वडा भयंकर है, लेकिन् लोक इस बेमारीकू साधारन समझते हैं, देशी शास्त्रमे और डाकदरीमें इस रोगका वहोत निर्णय किया है सो वहोतसी सूक्ष्म वाते समझने जेसी है, लेकिन् इस जगे सक्षेपसे उसका बयान करते हैं (प्रकार) कृमिकी मुख्य दो जात है याने बाहरकी जू लीखचमजू वगेरे (और अभ्यंतर कृमि) याने वदनके अंदरकी तांतू जेसें गोल चपटे कृमि २० से ३० फीटतक लबी होती है, इसमें कितने तो कफमें कितनेक खूनमे और कितनेक मलमें पैदा होती है (कारण)–बहारकी कृमि वदन तथा कपडेके मैल गलीचपनेसें होती है और अदरकी कृमि अजीर्णमे खानेवालेकू मीठा तथा खट्टा पदार्थ खानेवालेकू पतला पदार्थ खानेवालेकू आटा गुड मीठा मिले पदार्थ खानेवालेकू दिनमे नींद लेनेवालेकू विरुद्ध अन्नपान वहोत वनस्पतीकी खुराक वहोत मेवा इत्यादिसें रोग प्रगट होता है वहोतसी वखत कृमियोंके इडे खुराकके सग पेटमें चले जाते हैं और आंतरोंमें उनका पोषन होनेसे उनोंकी वढोतरी होती है लक्षण–बाहरकी जूं तथा लीख प्रत्यक्ष दिखती है, और चमडीदरद दोडे फोडे खुजली फुनसी गडगूमड ए उसके प्रत्यक्ष चिन्ह है.

(कफसे) पैदा भये कृमिमे कितनेक तो चमडेकी वडी डोरी जेसें कितनेक अनाजके अकुर जेसे कितनेक वारीक और लबे कितनेक छोटे होते हैं, कितनेक सुपेद और लाल झांइवाले होते है, उसकी ७ जात है उससे मोल मूमेसे लाल अपचा अरुचि मूर्छा उलटी बुखार पेटपर आफरा खासी छींक श्लेष्म ए उसके लक्षण है, खूनसे होनेवाले ६ प्रकारकी कृमि खूनमें होती है, और सूक्ष्मदर्शक यंत्रसे देख सकते हैं, उनोंसे दुष्ट याने चमडीका दरद होता है, विष्ठामें यान दस्तमें होनेवाली कृमि गोल महीन तथा जाडी रंगमे सुपेद पीली काली तथा वहोत कालीभी होती है, उसकी पाच जात है वो कृमि जव होजरीके सन्मुख जाती है, तव दस्त गोटा मलका अटकाव वदनमे दुवलपणा खरसटपना वर्णफीका रूखडा होना मंदाग्नि तथा वैठकमें खुजाल होती है, कृमि विशेप करके वच्चोंके होती है, उनोंकी कृमिसे भूख जाती रहती है, अथवा सब दिन भूखही भूख वणी रहती है, पाणीकी प्यास नाकघसना पेटमें दरद मूमे खराव वदवो उलटी वे-

चैनी अनिद्रा गुदामें कांटे दस्त पतला आने उसमें कृमियें गिरे किसी वरात मूमेसे पडे थोडा बुखार वकना बच्चा नींदमें दांत पीसै झबक उठै और हिचकी खेंचातानभी होवे कृमि रोगके ऐसे २ लक्षण होते हैं, सो वाजे वखत वैद्यया डाक्तरभी निश्चै नहीं कर सक्ते हैजा मिरगी और दिवानापना इत्यादि रोगभी कृमिसें पैदा होजाते है–

(इलाज)– गोलकृमि–१ सेन्टोनाईन सादा और अच्छा इलाज है, ऊपर मुजव १ से ५ ग्रेन दवा मिश्रीके सग रातकू देनी और फजरमे थोडा एरडी तेल पिलाना तव द-स्तमें कृमियां निकल जायगे पेटमें जादा कृमियोकी शका रहे तो एक दो दिन वाद फे-रभी इसीतरे करनेसे सव कृमियें निकल जाते हैं, बच्चोंके दो तीन दिनमे ९० से १०० तक कृमियें निकल जाते हैं, कितनेक लोक एसा मानते हैं के कृमिकी कोथली निकल जाती है, तो बच्चा मरजाता है, लेकिन् ये वात वहमकी है, सेन्टोनाइनके वदले वजारमें लोझेन्जीस याने गोल चिपटी टिकडियें विकती है, उसमें सेन्टोनाइनके सग बूरा तेसें क्यालोमेलभी मिलाया भया होता है, उसकूं बच्चे मिठाइ समझ खा जाते हैं, वो देना (२ क्यालोमेल)–इकेला अथवा इसके सग सेन्टोनाइन तथा सोडा मिलाकर देना ३ स्केमनी–जालप रुवार्ब एरडी तेल निशोत–ए सव जुलाव आनेवाली चीजोके सग कृमि-कूंभी वाहिर निकालती है, पहली जालप वगेरे तीन दवा सामिलकरकेभी दीजाती है, ४ टरपेन्टाईन–कृमिकू गिराती है, मात्रा ४ ड्राम उसके सग एरडी तेल ४ ड्राम गूदका पाणी ४ ड्राम और सोवेका पाणी १ औंस मिलाणा ५ अनारके जडकी छाल १ तोला चूर्णकर आधा फजर आधा साझकूं वूरेके सग फाकना दुसरे दिन विलायती निमकका जुलाव लेना ६ वायविडग–कृमिका अछा इलाज है, वायविडग २ वाल निशोतके छालकी भूकी१वाल कपीला१वाल इनोको१औंस ऊकलते जलमे पाव घटे भिगाकर इसका नितरा भया पाणी दोदो चमचे तीन २ घटेसे दो तीन वखत देना इससे कृमि निकल जाती है, बुखारमें ए दवा नहीं देनी–चपटी कृमि–७पहली जुलाव देना पीछै क्यालोमेल देना फेर जुलाव देना ८ मेलफरका तेल आता है, उसकी ३० या ४० वूद सूठके जलमे देना और ४ घटे पीछै एरडी तेल अथवा जालपका जुलाव देना–तातूजेसी कृमि–९ क्यालो-मेल तथा सेन्टोनाइन देनेसे निकल जाती है, लेकिन् वेर २ होजाती है, इसवास्ते निम-कके पाणीकी कपासियोंके पाणीकी अथवा लोहेका अर्ककी और पाणी मिलाकर उसकी गुदामें पिचकारी मारणेसें कृमि धुपकर निकल जाती है, १० निमक ॥ से १ ड्राम मीठे जलमे ३।४ औंसमें गुदामे पिचकारी मारनी इससे कृमि सव निकल जाती है ११–पिचकारीकेवास्ते इसके सिवाय चूनेका पाणी टिंकचर ओफ स्टील अथवा इसके वदले सितावके पत्ते वाफकर या पीसकर किया भया पाणी इसकी पिचकारीभी फायदा करती है, हमेस पिचकारी मारनी और ३।४ दिनसे जुलाव देना–(दुसरे इलाज) १२ पला-सपापडेकी भूकी । तोला वायविडग । तोला छाछमे मिलाकर दुसरे दिन जुलाव देना

१३ कोच फलीके रूं दूधमें धोकर पिलाना और दुसरे दिन जुलाब देना १४ पलासपापडा तथा काली जीरी १५ डीकामाली (कीडामारी) पाणीमें पीसकर पिलानी १६ वायविडगके क्काथमें वायविडगका चूर्ण डालकर पिलाना अथवा सहतमें चटाना १७ पलासपापडेकू जलमे पीस सहत डालकर पिलाना १८ कपीला आधे रुपेभर तथा गुड १९ वायविडग इंद्रजव उसकूं शेकके किया भया चूर्ण २० नींबके पत्तोंकों वाफा भया रस सहत मिलाकर पिलाना २१ त्रिफलादि क्काथ न २१० कृमि तथा कृमिसे भये सब विकारोको मिटाता है, कृमिसें खून विगडकर वदनपर गडगूमड तथा पककर फूट जाता है और रोगी भयकर स्थितिमें आ जाता है, इस क्काथका वहोत दिनोंतक सेवन करनेसे रोग जडसे जाते रहता है, २२ कृमि निकल गये पीछे वच्चेकी तनदुरस्ती सुधारनेकू टिंकचर ओफ स्टील वूद १० एक ओंस जलमे कितनेक दिनोतक पीना.

(विशेष सूचना)-(पथ्य) तिलका तेल तीखा और कडवा पदार्थ निमक गोमूत्र सहत हींग अजवाण नींबू लसन कफनाशक तथा रक्त शोधक पदार्थ अछा है,-(कुपथ्य) दूध मांस घी दही पत्तोकाशाक खट्टा तथा मीठा रस और आटेका पदार्थ ए क्रमिकू वधारनेवाले हैं, क्रमिवाले बचेकू रोटी देना होय तो निमक डाल तेलसे तवेपर तलके देनी वहोत अछी है, क्योके तेल और करडा पदार्थ फायदेवद है, इसवास्ते कृमियोंके इडे जादा करके पत्तोके शाग तथा फलोपर लगे रहते है, इसीवास्ते पत्तोंका शाग विना तपासे खानेसे जैनाचार्य मांस खानेका दोप कहते है, मूल कारण यही है, और फलादिक वनस्पति खानेमेंभी दोष हिंसा और रोगकाही सिद्धप्रमान है, क्योंके देशीलोक वजारमेंसे शाग फल लाकर विगर धोये देखे विगर काममे लेते है, लेकिन् उसमें कितना नुकशान है सो नहीं जानते जीवोंके इंडे तथा जीव प्रथम तो पेटमें आंतरोंमें जाता हे, दुसरे ए जीव रातकू मुसाफरी करने निकलते हैं, तव एक वदनसे दुसरेके वदनमेंभी वाजे वखत घुस जाते है इस जातकी मादा वडी मुसाफरण होती है सो इडाभी दुसरेके वदनमे धर देती है इसीवास्ते सग सोना और सग भोजन करना उसमें एक तो सफाई दुसरी रोगादिकके अनेक जरूरी करतव्य आये भये हैं, जैनशास्त्रकार जू चमजूक् ते इद्री और पेटमें स्नमस्सेनारू वगेरेमे जतुओको दो इद्रीवाला जीव मानते हैं, इसवास्ते नपुसक है, नरमादा इनोंमें नहीं होता लेकिन् इन जीवोंका स्वभाव तो ऊपर लिखेमुजव जरूर है इनोकी उत्पत्तियाने जोनी इसीकिस्म है, विछोनेपर सोना ओर सगखाणा सग सोना वैद्यकशास्त्र इसींवास्ते वहोत फायदेके वास्ते मना करता है, इस अपेक्षाआश्री जैनके मुनि तथा जैनके पूरेधर्मी गृहस्थ अन्यका वस्त्रादिकका नियम छूने और वरतावके वास्ते धर्म पक्षमें मना करते हैं, ऊन वगेरेके वस्त्रोमे और पुरुषके दुर्गंधके परमाणू तथा ए जीव प्रायें कम असर करते हैं, और हवासे परमाणु उड जाते हैं, इस वातोको वहोतसे सुघडभी समझते सो मूर्ख तो समझे ही क्या.

अर्श हरस मस्सा ववासीर.

पाइल्स

(वैठक गुदा)के आसपास कोरपर अथवा सफरेके अंदर महींनशिराओंका जाल फूलकर वधणेसे जो मस्सा होता है, वो हरस ६ प्रकारका है न्यारे २ तीनों दोषोंका तीनो दोष सामलका खूनका और औलादमें उतरणेवाला हरसकी मुख्य जाति २ दोय है, वाह्यार्स याने वाहरका अर्स जिसके मस्से आंखोसे दिखाइ देते और हाथ लगाणेसे भी मालम दे और अतरार्स याने सफरेके अदरका मस्सा उसमेंसे खून गिरता है, वाहिरके मस्सेमेंसे खून नहीं गिरता किसी २ के अदरके मस्सेसेभी खून नहीं गिरता कफके मस्सेमेसें चिकणासा पाणी गिरता खून नहीं गिरता।

(कारण) सव दिन वैठे रहणा थोडी महनतकर वहोत खुराक खाणा वहोत मसाला वापरणा तेज दारू पीणा वहोत गरम या वहोत ठंढा पदार्थ खाणा हमेसकी कब्जी वेर २ सख्त जुलावका लेणा औरतोंके गर्भका दवाव कलेजा तिल्ली गाठ सग्रहणी वगेरे रोग ये सव मस्सेके कारण है थोडेमें समझणाके जठराग्नि मंद पड जाणेसें अथवा पाचन क्रिया विगडणेसे जो जो रोग होते हैं वो सव रोग मस्सेके कारण है।

(लक्षण) वाहरका हरस–मलद्वारकी कोरपर होता है पहली चमडी सामिल होकर फेर वढकर मस्से जेसे होते है, सिकलविलीके स्तन जैसा कदमें छोटे और वडे भी होते हैं छोटे होते हैं तव जादा दरद नहीं करते जरा खुजली तथा गरमी मालम देती है, वडे होणेपर दरद करते है वैठक सव दुखती है ये पकके फूटते हैं अथवा खून जमकर मस्से पक्के पडे वाद शांत पडते है–(अदरका हरस)–गुदामे खाज खुजली चटपटी लगे आगवले दरद होय दस्तजातेकरांजे दस्तकब्ज वधा भया आवै उस वखत पुकारे इतना दरद होय सफरा घसणेसे मस्सेमेंसे खून गिरे दस्तमें करांजणेसे सफरेका रस पुडतखें चीज कर वाहर आता है और किसी वखत सव रश पुडत याने कांच निकल आती है अथवा नसोंके न्यारे २ गुछे वाहर आते हैं सफरेके दरदसे कमरमें पेडूमें और जांघमे वेचेनी कलतर होती है, खून गिरे पीछे मस्से नरम होते हैं, और रोगीकू चैन पडता है अगर खून वेर २ और जादा पडे तो रोगी एकदम सिटा जाता है, चेहरा फीका पडता है, और चक्कर आता है, हरसका खून लाल किरमची रगका होता है, वूंद २ अथवा धारसीर छुटती है। (इलाज)–जिस कारणसे हरसकी उत्पत्ति भई होय वो कारण रोकणेका इलाज करणा और दुसरा इलाज हरसके मिटाणेका करणा दस्त नरम पतला तथा साफ आवे एसा इलाज करणा।

(२ छाछ)–मस्सैका वहोत अछा इलाज है, खट्टी छाछमे सींधा निमक मिलाकर वो खुराकके सग लेणा उससै वादी तथा मलकू रस्ते लाती है, ताकत रग और अग्नि

वढाती है (३ सूरण)–मस्सेका एसा ही पक्का इलाज सूरण कंद है सूरणकू युक्तिसे सेवन करे तो हरसकी जड जाते रहती है, सूरणका शाग सूरणकी पुडी सूरणके लड्डू शीरा वगेरे वणसकता है, लघु सूरण मोदक तथा वृहत्सूरण मोदकमें मुख्य भाग सूरणका आता है (४ नाग केशर)–खून गिरता होय तो उसकू रोकणेमें अछा है, नाग केशरका चूर्ण मिश्री मक्खनमें चटाणेसें खून बंध हो जाता है (५ भीलावा)–मस्सेके रोगमें वहोत फायदे वंद है लेकिन् प्रकृति मोशम और पथ्यापथ्यका विचार करके देणा चाहिये तिल भिलावा हरडे और गुड समवजन लेकर लाड्डू करणा शक्ति मुजब देणा (६ हरडे)–जौ हरडे और हरडेका सेवन वहोत फायदेवंद है दस्त साफ आता है, गुडके संग या छाछके संग देणा ७ (मस्सेके रोगपर करणे लायक शांत इलाज) रगतचंनण चिरायता लाल धमासा मोथ दारू हलदी तज वाला और नीमकी छाल इनोका काथ खूनकू बंध करता है ८ मक्खण और तिलखाणेका अभ्यास रखणा अथवा थर विगरका दही खाणा इससे भी खून बंध होता है, ९ छोटी इलायची दाणा तज तमालपत्र नाग केशर मिरच पीपर सूंठ ये वृद्धि भागसे लेणा जेसे इलायची एक भाग तज २ भाग इनोके सम वजन मिश्री खानेसे हरस मंदाग्नि गोला आफरा अरुचि श्वास गलेका और छातीका रोग मिटता है (१० गंधकके फूल २ औंस क्रिमओफटार्टर ४ ड्राम सहत और नारंगीका शरबत २ औंस मिलाकर उसमेंसे दरटंक १ ड्राम चाटणा) ११ कबाबचीणी २ तोला मिरच ।। तोला सहत २ तोला सोवा १ तोला मात्रा आधे रुपेभर १२ मिश्री तोला १५ सूरण ५ तोला सुपेद चिरमी तोला १ सोवा तोला १ इनोंका चूर्ण सहत अथवा मक्खणमें मात्रा १ ड्राम ।

(बाहरका इलाज) १४ ठंडा पाणी अथवा ठंडे पाणीका पोता रखणा १५ त्रिफलाके उकालीमें कपडा भिगाकर पोता धरणा १६ मांजू १ तोला अफीम ॥ तोला मक्खण और सादा मल्लम २॥ तोला इनोका मल्लम अंदर और बाहिर लगाणा १७ हीराकशी १२ रत्ती और ३ तोला पाणी उसकी रातकू पिचकारी मारणी १८ फिटकडी अथवा मांजूफल २ रत्ती पाणी १ औंस इसकी पिचकारी लगाणी १९ टिंकचर ओफस्टील २० बूंद पाणी २ तोला पिचकारी लगाणी इस इलाजोसे मस्सेका खून बंध होता है और सफरेमें मल भर गया होय तो वोभी निकल साफ हो जाता है २० नं० २९७ इसमें रुइ भिगाकर गुदेमें धरणा–होमियो पथिक इलाज–१ इस्क्युलसहीप–सूके मस्सेमें वहोत फायदेवंद है २ आर्सेनिकम–जलणेवाला और चटकवाला मस्सेमें उपयोगी है ३ बेलाडोना–खून गिरणेवाले मस्सेमें अछा है, इस्के सिवाय कोलिन्सोनिया टेमामेलीस ग्रेफाईटीस वगेरे दवायें मस्सेमें फायदेवंद है ।

(विशेपसूचना)–गरम तथा दाह करणेवाला खुराक खाणा नहीं दस्तकी कब्जी करे

एसा खुराक और दवा खाणा नहीं दस्त साफ आवे एसी दवा और अग्नि प्रदीप्त करणे वाला खुराक तथा दवा लेणी मस्से काटणेका इलाज अणघड ले भगगू फिरणेवालोंके फंदेमे आके खराब होणा नहीं क्योके मूरखोंके काटणेसें हमने वहोतोंके नुकशान भया देखा है।

(हितशिक्षा)-रोगोंकी सख्या और कारण वांचे पीछे समझमें आ जायगीके पाचन क्रियाके विकारसे जितना रोग होता है इतना दुसरे किसीभी कारणसें होता नहीं शरीरकी आरोग्यता पाचन क्रियाके आधीन है और पाचन क्रियामे केसे २ विकार होते है वो सब इस प्रकरणमे रोगोंका नाम तरे २ के कारण लिखा है सो वाचणेवाले अछी तरे समझेंगे कुदरती हवा और स्वभावसे मोशमका वदलणा इसपरभी कितनेक रोगोंका आधार है उसकू अलग याने वाद कीये जाय तो पाचन क्रियाकी जादा खराबी आहार विहार सबंधी इसमे पुरुषोंकी अज्ञानता मूर्खता और गफलतके लिये रोग होता है सो हमने इस ग्रथकी दुसरी किरणमें अछीतरे समझाया है और फेर इहांभी लिखते है के मनुष्यके शरीरमें मूसे गुदातक एक लवा नल है इस नलकू अपणे पाचन क्रियाका सचा कह सकते हैं क्योंके मूकी बारीमेसे खुराक दाखल होकर गुदाकी बारीमेसें बाहिर निकलता है लेकिन् बाहिर आणेके पहली उस खुराकपर वहोतसी क्रियायें गुजरती है इन सब क्रियायोका आखरी नतीजा खून और शरीरका पोषण है जब पाचन क्रिया बरावर होती है तब खून वरावर साफ पैदा होकर वदनकू अछा पोषण करता है जो उसमें कुछ विकार होता है तो खूनमेंभी विकार होता है खून कम या जादा नाताकत या ताकतवर विगडणा या शुद्ध होणा ये सब काम पाचन क्रियाके ताल्लुक है लेकिन् आहार विहारके वावत जो आगे नियम लिखा है उस मुजब नहीं चलणेसे पाचन क्रियाका ये सचा विगडता है तब उस सचेमे पैदा होणेवाला शरीरका जीवनरूप खून कम होता है अथवा विगडता है खान पान विपरीत होणेसें पित्त विगडता है पित्तका काम पाचन करणेका है इसवास्ते पाचन दुरस्त होता नहीं तब वायु जोर करती है अजीर्ण होता है दस्तकी कब्जी होती है और आंतरोमें मलका भराव होकर सचा ठसोठस भर जाता है अज्ञान लोक इस वातोंसे नावाकिफ खुराक तो हमेस धके लेइ जाते है वहोतसे लोक येही कहते हैं जहातक खाता पीता है कभी नहीं मरेगा जो जी माने सो खाणा लेकिन् ये खुराकका आगे क्या हाल होता है इस वातकू वो लोक कुछ नही जाणते पाचनक्रियाका संचा मलसे भर जाणेसे और अग्नि वुझ जाणेसे खुराक वरावर नहीं पचणेसे जब नीचेके वडे आतरेमें भर जाणेसे उसका सग्रह होता है तब एसा हाल होता है छोटे आतरोमें जोके खून चढणेकी क्रिया होती है उसमेंसे मल अथवा वेका मल कूचोकू वडे आतरोमें उतरणेकी जगा चहिये इतनी जगा नहीं मिलणेसें छोटे

आंतरेमेंभी मल भर जाता है जो निरुपयोगी पदार्थ शरीरके बाहर निकल जाणा चहिये एसे विकारी पदार्थभी अंदरही भरके रहता है तब उसमेंसे सडणा सरू होता है तब उस सडेमें कीडे और कृमियोंकी पैदास होती है उसमेंसे कृमिजन्य अनेक रोग पेट और सब बदनमे हो जाते हैं आंतरे मलसे पूरे भर जाणेसें उसमेंसे सूजन होती है पीछे सडते हैं और उसमें जखम पडता है होजरी सह नही सके एसा भारी खुराक अथवा दाह कर-णेवाला खान पान उसमें पडणेसे वोभी विकारकूं प्राप्त होते हैं और विकार पाया भया होजरीका रस छोटे आंतरोमें गये पीछे उसका जो खून होता है वो भी विकारवालाही होता है होजरीमें खटास अथवा पित्त वढता है तो उस जगेभी वरम होता है जखम गिरता है उलटी होती है इसतरे पाचनक्रियाका सब सचा विगडता है तब सुधार-णेके वास्ते विचारा अज्ञान लोक वैद्य डाकतर और उनोंकी दवा पर भरोसा रखते हैं, लेकिन् जहांतक वो लोक इस सचेकी क्रियाके अजाण है तहांतक वैद्य या डाकतरोंकी दवा कभीभी उस रोगकू मिटा नहीं सकती इसवास्ते जिस कारणसे संचा विगडता है उस कारणोंकों पहली रोकणा चाहिये जितना कुपथ्य संबधी इंद्रियोंने मजा और स्वाद लिया होय उतनाही निग्रह (याने तप) ज्ञानसे किया जाय सो तो सकाम निर्जरा और अज्ञानपणे पांचो इंद्रियोंके स्वादसे बचणा जेसें वैद्यके कहे मुजब घरवाले खाणे पीणे कुपथ्य नहिं देवे सो परवशतापणे कर निग्रह याने अकामनिर्जरा, कर्मपूर्व बद्धकू जीव दो तरे खपाता है जिसमे अकाम निर्जरासे कर्म खपाणेसें अज्ञानपणेकर फेर जीव समय २ कर्म बांध लेता है और ज्ञान तपसे नहीं बांधता है इसवास्ते कर्मोंके कडवे फल समझके पूर्वकृत दुष्कर्म वेदनाकू मिटाणे ज्ञान सयुक्त पथ्य याने तप आचरे इछाकू रोकणा उसका नाम तप है वस्तु हाजर रहते उसका उपभोग नहीं करणा उसका नाम तप कहो पर्याय नामसे पथ्य भी हो सकता है रोग जरूर मिटता है वीर प्रभूने तपके (पथ्य) के अनेक भेद दिखलाये हैं इस तपसे याने इंद्रियोंके विषयोंकों रोकणेसे निश्चै प्रदेशबंध रोग मिटता है ।

किरण ५ मी.

मूत्राशयसंबंधी रोग.

मूत्राशयमें फक्त गुरदा और वस्ति आया भया है इस किरणमें मूत्राशयके तमाम रोगोंका समावेश किया भया है विशेष करके मूत्राशयका रोग शारीरक है और मूत्र मार्गका रोग आगंतुक याने कोईभी बाहरके दुष्ट स्पर्शके चेपसें प्राप्त भये होते हैं ।

धातुश्राव.

स्पर्मेटोरीआ.

पेशाबमें धातु जाता है ये वात आजकल जादा देखणेमें आता है दुसरी येभी वात

है धातु और वीर्य शिवाय दुसरी चीजोंभी पेशावमें जाती है उनोंकों भी लोक धातु और वीर्यही कहते हैं पेशावमें जाते जुदे २ पदार्थोंके नाम इस मुजब है १ प्रमेहके पदार्थोंमें जो सुपेद पदार्थ जाता है वो धातु नहीं लेकिन् पीप है अदर जखम पडणेसें पीप वहकर बाहिर आता है इसवास्ते धातुस्रावसे जुदा रोग गिणना २ पथरीके रोगमे मूत्राशयके अदरका श्लेष्म पदार्थ मूत्रके सग बाहिर जाता है वो पथरीके रोगके साथ सबध रखता है लेकिन् धातु नहीं होता ३ पेशावमें चरबी जाती है वोभी प्रमेहकी एक जाति है जिसकू वसामेह कहते हैं लेकिन् वोभी धातूका जाणा नहीं, ४ डाकतरोंने रसायणिक प्रयोगसे निश्चै किया है के इसके अलावा पेशावमें एक सुपेद पदार्थ और भी जाता है वो फोस्फेट नामका एक क्षार पदार्थ है ५ धातू जो वीर्य गिरता है पेशावके आगे या पीछे या स्वप्नेमें और भीके इतरे धातू जाया करता है ऊपर लिखे पाचो पदार्थ पेशावमें जाता है उसकू लोक धातू जाणा कहते हैं लेकिन् वो जुदे २ पदार्थ है और उनोका इलाजभी लोक प्रायें धातूस्रावकाही करते हैं जो कभी अछी तरे परीक्षा कर इलाज करणेमें आवै तो तुरत इलाज हो सके लेकिन् इसमें कितनीक सूक्ष्म बातोंकी परिक्षा करणी होती है, जो इतनी बारीकीका विचार नहीं बण सके तो इन सब विकारोंपर सामान्य इलाज कितनेक दरजे चलसकते हैं

(कारण) विपयमें बहोत चित्त रखणेसे वाचणेसे या सुणनेसे बहोत गरम खानपानसे और बीस वर्षकी ऊमर बाद वीर्यका स्वभाविक वेगकू रस्ता नहिं मिलणेसे धातू पेशावके आगे पीछे स्वप्नेमें दस्त पेशावकी वखत कराजणेसे हथ रस बगेरेके कुटेवसे वीर्यकी नसों ढीली हो जाणेसें कितने एकोंके धातू झरणे लगजाता है

(लक्षण) पेशावमे अथवा स्वप्नेमे जब धातू जाता है, तब नाताकती आती है, मन फिकर बद रहता है, हाथपावोंमें कलतर (फूटणी) होती है यादशक्ति कम पडती है छातीमे धडका चलता है, भूक मद पडती है शिर दुखता है चक्कर आता है शरीर गलते जाता है, क्षय मिरगी वाईंटे अथवा दिवानापणा बगेरे डरावणे रोग धातूके जाणेसे बहोतसी वखत पैदा होते हैं नामरदी सतानका अभाव भी होता है

(इलाज) १ जिस कारणोसे धातू जाणा सरु भया होय वो कारणोंको बध करणा २ दस्तका खुलासा धातू गिरणेकू बध करता है इसवास्ते हरडेका चूर्ण अपनी तासीर तथा दोपोंके जोर मुजब हमेस लेणा तेसें सोनामुखी त्रिफला कोलोसिंथ रुबार्ब बगेरे दवा भी दस्तके खुलासा वास्ते लिये जा सकता है ३ ठढे जलसे सिनान अथवा कमरतक ठढे पाणीमे थोडे मिंटोतक बैठणा शिरपर ठढा जल जरूर डालणा छेया सात घटेसे रातकू जादा नींद लेणी नहीं सादी किये मरदकू अपणी औरतके पास रहणा इससेभी वीर्यका गिरणे बद होता है, ४ फोस फारस लोह और कुचीलेकी बनावटी गोलीमेंसे किसीभी

ताकतवर दवाका सेवन करणा ५ आंवले आसगध शतावर मुशली कौंचबीज तालमखाणा मोलेठी गोखरू ये सब अथवा इनोंमेसें एक दो दवाका पौष्टिक चूर्ण दूध मिश्रीके संग पीणा अथवा पाक बणाकर खाणा खट्टा खारा वगेरे खानपान त्यागणा आंवले गोखरू गिलोय इन तीन चीजोंका चूर्ण घी तथा सक्करके संग चाटणा ७ शिलाजीत दूध डालकर पीणा ८ गऊका दूध उकाल उसमें गऊका दधि तथा बूरा डालकर पीणा ९ अफीम केशर आयफल वगेरे स्तभन दवाये धातु जातेकूं बध करता है, लेकिन् नसे वाली और मलस्तभक होणेसें इसवास्ते हमेश लेणा अच्छा नहीं १० बहु फली अथवा गोखरू चमघस इनोकालुआब बूरा डालकर अथवा उटीगणोके बीजोंको कूटकर दूधमे सिजाकर मिश्री डाल चाटणा ११ आकारकरभादि चूर्ण (न० ४२९) १२ मूसल्यादि चूर्ण (न० २४१) आकोती (न० २८१) १४ सालम पाक (न० २७७) १५ ईसपूगल तथा गूदभी वीर्यके गिरणेकू बध करता है, (१६ अमृतवटी) धातुका गिरणा क्षीणता तथा नाताकती सर्वोका श्रेष्ट इलाज है, दूधके संग.

(अंग्रेजी इलाज)

(१७) डाइल्युटेड फोसफोरिक एसिड ४५ बूद टिकचर ओफनक्सवोमिका ३० बूद
कम्पाउन्डटिंकचर ओफ सिंकोना १॥ ड्राम पेपरमिंटवाटर ३ औंस
एक लिकर ग्लास भरके दिनमें तीन वेर पिलाणा

(१८) फासफेट आपझिंक २० ग्रेण डाइल्युटेड फोसफोरिक एसिड १॥ ड्राम
टिंकचर ओफ स्टील १॥ ड्राम पेपरमिन्टवाटर ६ औंस
एक लिकरग्लास दिनमें तीन वेर अछीतरे मिलाकरके देणा.

(१९) सल्फेट आफझिंक २० ग्रेण एकस्ट्राकटनक्सवोमिका ६ ग्रेण
हीराकसी २४ ग्रेण पीलरुवार्ब कम्पाउन्ड ६० ग्रेण
मिलाकर गोलियेकर एकेक गोली हमेस दोतीन वेर भोजनकर उपरसे देणी

(२०) पीलफासफारस ३० ग्रेण एकस्टाकटनक्सवोमिका ३ ग्रेण
रिड्युस्टआयर्न ३० ग्रेण क्वीनाइन ६ ग्रेण
मिलाकर १२ गोलियेंकर दर टक भोजनकर एकेक दो दो देणी.

(होमियोपथिक इलाज) २१ पेशाबमें आलब्युमेन जाता होय तो एकोनाइट, आर्सेनिक, लाईकोपोडियम और एपोसाइनम वगेरे दवायें अजमाणी २२ जो पेसावमें का इल याने चरबी जाती होय तो एसिड फोसफोरिकम अच्छा इलाज है, उससे फायदा नहीं होय तो केलकेरियाकार्ब और आर्सेनिकका इलाज करणा.

(विशेप सूचना) धातुके जाणेमें कितनेक लोक अफीम भांग माजम धतूरा सोमल हरताल वगेरे कितनीक नुकशान करती दवायोंका साधन करते हैं जादा करके फकीर

जोगी सामी भगवें कपडे वाले एसी दवाओ देते है, और विचारे अज्ञान भोले लोक एसे धूर्त्तोंके जोगी, फक्क डोके, फदेमे फसकर तन और धनसे वरवाद होकर बुरे हवालोसे मरते हैं, वहोत लोकोंकी खराबी एसे लोकोंकी दवासे देखणेमे आई है और वावाजी आधीरातकू ते ती सामनाते है, इसवास्ते विगर जाण पहचाण पैठ प्रतीति विगर भटकणेवाले वेवकूवोंका कभी विश्वास करणा नहीं फाफा मारकर अणघड लोकोंकी दवा तथा सल्ला लेणी नहीं किसी २ के उनोकी दवासे फायदा भी हो जाता है, लेकिन् एसा देखकरके भी मूर्खोंकी दवा और सल्ला नहीं लेणी कारण वो आयुज्ञानके अजाण होणेसें फक्त दवा मात्रही जाणते हैं, निदान शारीर निघट पथ्यापथ्य नही जाणणेसे अधेका तीर समझणा किसी २ के भाग्य योगसे लग जाता है, इसवास्ते निर्दोष और साधारण दवा और अपणा वर्ताव खानपान खूबही साफ निर्दोप रखणा अपणी समझसें, इस ग्रथ मुजब, पूर्ण वैद्य या डाकतरोंकी सल्ला और दवा जो कुछकहे, सो सब करणा.

गुरदेका वरम

गुडदा याने किडणीमें सोजन हो जाता है, ये वरम दो तरेका है. (१ तीक्ष्ण वरम) २ जीर्ण वरम) शरदी ठढी दारूका व्यशन गुप्त चोट बुखार हैजा वगेरे उसके कारण है, जलदर तथा आल्ब्युमीनका सवध गुरदेके वरमके सग है, ये रोग अग्रेजीमे पहले डाकतर ब्राइटने निश्चय किया है, इसवास्ते अवी भी उसी डाकतरके नामसे अग्रेजीमें प्रसिद्ध है, लोकीकवाले नलोंका भरणा कहते हैं, लेकिन् ये रोग कमरके पास हड्डीके दोनों पसवाडे होता है, हमारा अनुमान है, सुजाक या गरमीका रोग जिस अदमीके होगया हो दस्त साफ नहीं लगे मैथुनकर तुरत जल पीलेवे दस्त पेसावकी सका रहते मैथुन करै चार घडी पिछली रात पीछे मैथुन करै कमरपर वोझा बाधे पाव उचा नीचा गिरे इत्यादि औरभी केइयक कारणोंसे इद्री चेतन भये वाद वीर्य रोकणेसें ये रोग प्राये होणा सभव हैं, देशी शास्त्रमें इस रोगकू अडवृद्धिके अतर्गत लिखा है, औरतोंके प्राये ये रोग जादा होता है, प्रदर (स्वेत प्रवाहसे वहोत मैथुनसें)

(तीक्ष्ण (तेज) गुरदेका वरम) (लक्षण) कमरमें दरद इस करके रोगी टेढा नहीं हो सके ठढ लगकर बुखार चढ आवै जीमिचलाणा उलटी वेचेनी पसवाडोमें तथा गुडदेके पीछे पीठपर दरद वृषण (अडकोषोमें दरद) प्यास दस्तकी कब्जी पेशावकी हाजत वहोत लेकिन् वहोत थोडा और लाल रगका और पेडू फटणे लगे बुखारसे वदन गरम नाडी जलद शिरमे दरद जीभपर वहोत सुपेद थर चहरा फिक्रमद भूख लगे नहीं डकारेंवेतरे आवै रसायणिक प्रयोगसे निश्चेकर देखा जाय तो पेशावमें (अल्व्युमीन) (राजा) मालम देगा सोजन तथा जलदर ये भी गुरदेके वरमका एक चिन्ह

है, ये दरद अच्छा होता है, लेकिन जो दोनों गुरदा वरमसें भर गये होय तो पेशाव बहोतही थोडा ऊतरता है, इससे पेशाबके संग जो नुकशानकारक पदार्थ बाहर निकल जाणा चहिये वो शरीरमें रहणेसें जहरके जैसा नुकशान करता है, इस जहरी पदार्थमें मुख्य युरिया है, युरिया खूनमें मिलणेसे बहोत नुकशाणी करता हे, सूजन जलोदर वांइटे वहोसी ये उसके आखरी दरजे हैं, (इलाज) इस रोगमें पेशाव लाणेवाली वहुत दवा देणी नहीं लेकिन पेशाबका दुसरे रस्ते निकाश होय एसी दस्तावर तथा पसीना लाणेवाली दवा देणी गुडदेपर थोडी जो के लगाणी जो रोगी नाताकत होय तो अलसीकी पोटिस मारणी अथवा राईका पलाष्टर मारणा अथवा अफीमके डोडाका या गरम पाणी शीशीमे डाल शेक करणा दरद बहोत होता होय तो कमरतक जलमें पाव घटेसे आधी घंटेतक बैठाणा दस्त लाणेवास्ते गरम पाणीमें एरंडीका तेल या चामें देणा अथवा कम्पाउन्ड जाल १ ग्रेण ४० पाणीमें देणा सोनामुखीकी चाय २ औंसमें करमालाका गिर १ तोला देणा हवावाली या भीजी जगेमें रोगीकू रखणा नहीं खुराकमें दूध तथा साबूदाणा देणा अफीमका लेपकर एरंडीके पत्ते बाधणा अथवा काली जीरी बीजाबोल फिटकडी अफीम साबरका सींग सूठ इनोका लेप घसकर करणा फेर गोवरीकी अग्निकी वाफसे सुका देणा पाणीकी एवजी पीणेकू अलशी डालकर उकाला भया पाणी ठढाकर पिलाणा, ठढीचा, जवका या धमासेका जल (हिम) पीणेकू देणा, बुखार होय जहांतक पसीना लाणेवाली दवा देणी डाया फोरेटिक्स देणी (नं० ५७०) ५७१ लाइकर एमोनी एसेटीस साइट्रेट ओफ पोटाश वाईन आफ एपीकाक्यु आन्हा एन्टीमनी वगेरे दवायें पसीना लाती है, (न० ७०९) ७१० के हकीमी नुसके भी इस बेमारीपर देणा

(गुरदेका जीर्ण वरम) गुरदेमें पहलीसें धीमें २ वरम होता है, अथवा तीक्ष्ण वरम नरम पडे पीछे उसके बाकी रहे चिन्ह जारी रहते हैं, उसकू जीर्ण वरम कहते हैं, कारण तो ऊपर लिखाही है, तीक्ष्ण वरममें तेज लक्षण होता है. जीर्ण वरममे दीर्घ वरम जारी रहै पीछे रोगीका आराम होणा मुस्कल है, अदरसे रोग वढते जाता है, तेसें २ खून बिगडते जाता है, पेशाबमें आल्ब्युमीन सूजन ये उसकी मुख्य निशाणियां हैं, किसी वखत एकाएक मरजाता है, (इलाज) अच्छा पुष्टिदार खुराक लोह किनाइन चद्रप्रभा वगेरे दवाइयां दस्तावर पसीना लाणेवाली दवाइयां पारे सिवाय दस्तकी कोइ भी दवा देणी.

१ एसिड नाइट्रिक डिल्युट २० वूद टिकचर ओफकवास्या ६० बूंद
टिंकचर ओफस्टील ३० बूद जल २ औंस
एकठेकर दिनमें तीन बेर पिलाणा.

२ एसेटेट ओफ पोटाश ६० बूद कीनाइन ३ ग्रेण
टिंकचर ओफ स्पील २० बूद पाणी ३ औंस
दिनमें तीन वेर पिलाणा.
३ लाइकर आमोनीएसेटेटीस १ औंस लाडेनम १५ बूद
एन्टीमोनियल वाइन ३० बूद कपूरका पाणी २ औंस
मिलाकर इसकू १ लिकर गिलास दिनमें तीन वेर देणा

गुरदेका तेज तथा पुराणे वरमका थोडासा बयान थोडे इलाज ऊपर लिखा है, लेकिन् इस रोगका निदान तथा चिकित्सा करणेमें बहोत अनुभव और चतुराईकी जरूर है, वैद्य डाकटरोंकी देखरेखसें इलाज करणा अच्छा है, देशी निदानमें अन्नवृद्धि अडवृद्धिके अतर्गत ये रोग है.

मधुप्रमेह–मीठा पेशाव–

डायाबीटीस मेलीटस.

पेशाब बहोत होता है, और उसमे सक्कर जाता है, और मधुप्रमेह कहाता है, प्रमेहके रोगसे ये रोग अलग है, खूनमें सक्करका भाग होता है, वो प्रमाणसर होता है, जहातक तो पेशाबमे निकलता नहीं लेकिन् बहोत सक्कर अथवा सक्कर जेसा गुणवाला पदार्थ तथा मगजके कितनेक रोग होणेसे पेशाबमें सक्कर जाता है

कारण–ठढी शरदी सराप सक्कर मिठाईका बहोत खाणा मगज तथा करोडरज्जू (पीठकी हड्डी) इनोंके रोगसे मधुप्रमेहका भयकर रोग होता है

(लक्षण) इस रोगकी पहली खबर नहीं पडती कितनेक रोगियोंके मधुप्रमेहके सख्त चिन्ह जलदी मालम देते हैं और शरीर सूककर रोगी हैरान होता है, और कितनोंकों वरसोंतक ये रोग चलता है, तोभी शरीर टूटता नहीं पेशाब जादा और बहोत वखत २४ घटेमें १० सेरसे ३० सेरतक पेशाब होता है और उसमें सक्कर १ औंससे २ रतल जितना जाता है, पेशाबमें कमी २ जलण और पीपभी जाता है, प्यास बहोत लगणेसें जल जादा पीता है, तब पेशाब भी जादा ऊतरता है, पेशाबका रग फीका पाणी जेसा स्वादमें मीठा बदबोभी मीठी सडी होती है, पेशाबकू थोडी देर पडा रहणे देणेसें उसमें झाग होणे लगता है पेशाबपर चिमटी वगेरे जानवर आते हैं, वो इस रोगकी सामान्य परीक्षा है, मू जीभ गला सूकता है, जेसें प्यास बहोत लगती है, तेसें भूख भी बहोत लगती है, किसी २ वखत भूख बिलकुल नहीं रहती जीभ लाल होतीहै दातोंके मसूडेमेंसे खून गिरता है दांत गिर जाता है, दस्तकी कब्जी रहती है, थूकमें सक्कर मूमे मीठापणा अजीर्ण वायू चमडी सूकी भूर उडे चहरा फिकरबद नाताकती बढती जाय स्वभाव बदल जाय मरदमी घट जाय आगे जातां नींद नहीं आणा मद

बुखार नाडी पतली और वदन धुप २ के हाड पिंजर रहजाता है, इस रोगसें क्षय चमडीका रोग पांडू और किसी वखत आंखोंमें मोतिया विंदू सोजन हिचकी वेहोसी आखर मृत्यु-(इलाज) इय रोग बडा और वहोतदरजे असाध्य है, आहारविहाररूप पथ्य चलणेवाले रोगीकी ऊमर ऊंची होती है, नहीं तो जलदी मरता है, इसका इलाज चतुरोंसे कराणा चाहिये अफीम वगभस्म लोह सोमल भांग किनाइन वेलाडोना अरगट आयोडाइन पोटासब्रोमाइड वगेरे दवाइयां इस रोगमें फायदावंद है

(पथ्य) दूध मलाइ मखण घी तूरकी दाल चणा मूंग पत्तोंका साग मूलेके बीज कडू गरम कपडे फजर सांझ डोलणा फिरणा (कुपथ्य) गुड सक्कर मिश्री सहत वगेरे मिठास लिये चीज आलू, सक्कर टेटी, सक्कर कद, चावल साबूदाणे गऊका मदा आटेकी सत्ववाली चीजे बिलकुल वापरणी नहीं जो पेशाबमें सक्कर नहीं जाय तो वरता व करणा.

मूत्रकृच्छ्र-मूत्रगांठ,

इस रोगमें मूत्राशय और मूत्रनलीके कितनेक विकारोंका समावेश हो सकता है, पेशाब अटक २ वडी मुस्कलसे आवै उसकू मूत्रकृच्छ्र कहते हैं-(कारण) पेसाबके बाहिर आणेका रस्ता है, उसका कोइभी भाग सकुडा जाता है उसका कारण वहोत है, मूत्रमार्गका स्नायु सकुडाणेसे रशपुड सूज जाणेसे वरमसे तथा जखमसे रस्ता सकडा हो जाता है, और पेशावकू वध करता है गरम खाणा पीणा ठढ शरदी सडे पदार्थ गरमीमे फिरणा ये उसके मूल कारण है, पथरी आडी आणेसे भी पेशाब अटकता है

(इलाज) १ एलायची पाषाणभेद शिलाजीत गोखरु ककडीके बीज सींधानिमक तथा केशर इनोका चूर्ण चावलोके धोवणमें देणा २ ककडीके बीज मोलेठी दारूहलदी इसमुजब चूर्ण ऊपरमुजब देणा ३ गोमूत्र सहत केलेका रश इनोंमेंसे हर कोई एक रशके सग इलायचीका चूर्ण देणा ४ जवखार ५ मासा मिश्रीके सग ५ गुड मिलाकर जरा गरम दूध पीणा ६ गोखरूके काथमें जवाखार ७ आंवलाके काथमें गुड १ तोला डालकर पीणा ८ कुलथीका काथ सींधानिमक डालकर पीणा ९ शिलाजीत तथा सहत अथवा शिलाजीत दूध मिश्री १० दूध सक्कर घी ११ हरडे गोखरू पाखाणभेद अमलतास धमासा इनोंका काथ सहत डालकर पीणा १२ डाभ कांस डांगर (दूब) तिल तथा ऊखके मूलका काथ अथवा खार १३ भूरींगणीका रश तोला १६ सहत डालकर पिलाणा १४ खपाटके जडका काथ १५ मुनका तथा दही सक्कर चाटणा १६ सोडा अथवा पोटाश जलमें पीणेसे दस्त साफ रखणा (१७ मूत्रशलाका) हुसियार डाकटरके पास डालकर पेशाव साफ करवाणा देशी वैद्य इस क्रियाकू कम जाणते है, दवासे आराम नहीं होय तो आखरी दरजेका इलाज सलाका है १८ पेडूपर सेक तथा गरम पाणीमें विठलाणा

मूत्राघात मूत्रका रुकणा

(कारण) मूत्रकी गांठ पडजाणेसे अथवा पथरी आडी आणेसे पेशाब बध होता है, मूत्रका रुकणा दो तरे होता है, एक तो पेशावकी उत्पत्ति होती अटकती है, जेसेकै हैजेमें और दुसरी रीत यह है, कै मूत्राशय चैतना रहित होणेसे पेडू भर जाता है, लेकिन् पेशाव अटकता है, जेसेकै ऊरुस्तभरोगमें पेशाब बध होजाता है, मूत्रकृच्छ्र मूत्राघातरोगमें इतना फरक है, मूत्रकृच्छ्रमे तो मूत्रमार्ग सकडा हो जाता है, और मूत्राघातमें मूत्राशय चैतन्यरहित झठा पड जाता है, अथवा पेशावकी उत्पत्ति बध हो जाती है

(इलाज) १ ऊरुस्तभ और हैजेसें पेशाब बंध होगया होय तो उण रोगोंका इलाज करणा २ गरम पाणीमें अफीमका डोडा उकाल पेडूपर शेक करणा तथा डोवर्स पाउडर ग्रेण १० पाणीमे पिलाणा ४ लाडेनमना ६० बूद चावलोके आटेमें मिलाकर गोली बणाकर गुदामे रखणा ५ सोडा कारबोनेट ओफ पोटाश सोराखार जवका पाणी इसके अदरका कोइभी पेशाब लाणेवाला पदार्थ पाणीके सग पिलाणा ६ सहा जाय एसे गरम पाणीमें रोगीकू कमरतक आधे घटे बैठाणा मूत्रकृच्छ्रके इलाजसब मूत्राघातमें भी चलता है–(पथ्य) सालि चावल गऊका छाछ गऊका दूध मूगका ओसावण मिश्री पुराणा कोला परवल आदा गोखरू ककडी खजूर नालियर चदलिया छोटी इलायची तथा ठढा अन्नपान ये सब हितकारक है–(कुपथ्य) सराप महनत मैथुन घोडेकी सवारी विरुद्ध अन्नपान नागरवेलके पान उडद निमक हींग तिल मूत्रके वेगको रोकणा खटाई गरम तीखा दाहकारक तथा लूखा पदार्थ

अश्मरी–पथरी–ककरी

(कारण) पेशावमे स्वभाविक खार होता है, वो बढजाणेसे अथवा दुसरा खार पैदा होकर उसकी धीरे २ पथरी बध जाती है, और पीछे वडी होती जाती है, लीवरकी अव्यवस्थित क्रियाके सबब किसी किस्मका पदार्थ गुरदेमें पडता है, और उस जगे पथरी बध जाती है,

(लक्षण) पथरी जब बधणी सरू होती है, तब मूत्राशय फूल जाता है, तथा अदर बहोत दरद होता है, पेशाबमें बकरें जेसी बदबो आती है, पेशाव बध होता है, बुखार आता है, बडे कष्टके सग बूद २ पेशाब आता है, रोगी धूजता है, दात पीसता है, सूटीकू दबाता हैं, इद्रीकू मसलता है कणते रहता है ये पथरी गुरदेमेंसें पेडूमें याने मूत्राशयमे जाते और पेडूमेंसे पेशावकी नलीके रस्ते बाहर आते दरद करता है इस पथरीका कद रेतीके कणसे मटर जितना होता है, और पीछे बढकर बहोत बडी हो जाती है, रेती बहोत करके तो पेशावके रस्ते बाहर निकल पडती है, लेकिन बडी ककरी या

पथरी मूत्राशयमें अटकके रहती है, और उसजगे कदमें बढजाती है, तब काटके निकालणेसिवाय इलाज नहीं

(इलाज) मूत्रकृच्छ्र तथा मूत्राघातका सर्व पेशाव लाणेवाले इलाज पथरीमेंभीकाम है, क्योंकी मूत्रल दवासे रेतीकूं पेशाबमे निकालणा अथवा वडी पथरीकू तोड फोडकर अथवा घोय धोकर पेशावके रस्ते वाहर निकालणा इस दवायोंका ये मूल काम है.

(१ सूठ वरणा गोखरू पाषाणभेद ब्राह्मी इनोके काथमें गुड तथा जवखार डालकर पीणा २ गोखरूका चूर्ण सहतमें मिलाकर सात दिन बकरीके दूधमें पीणा ३ सहजणेकी जडका क्वाथ जरा गरम २ पीणा ४ अद्रक जवखार हरडे तथा दारूहलदीका चूर्ण दहीके मठेमें पीणा ५ वरणेके छालकी राख ३२ तोला जवखार १६ तोला और गुड ८ तोला मिलाकर एक तोला खिलाकर ऊपरसे गरम पाणी पिलाणा ६ वरणेके छालके उकालेमें कुलथी सींधानिमक वायविडग मिश्री जवखार कोलेके बीज गोखरू पद्मकाष्ठ वगेरे जो मिले उनोंकी चटणी पीस उसमें घी पकाणा इस घीके खाणेसे पथरी मिटती है, ७ वीर्यकी पथरी बंध जाती है, उसकूं शुक्राश्मरी कहते हैं, इसके इलाजभी ऊपरमुजवही करणा ८ दरदकूं कम करणा ये प्रथम इलाज है, गरम जलमें बैठणा और २५ ग्रेण क्लोरल देणा दरद फेरभी रहे तो ८ घटे वाद फेरभी देणा ९ ड्राइक पिंग (नं० ५६८ कमरपर धरणा दस्त कब्ज होय तो जुलाव देणा, जवका पाणी, अलशीका पाणी, अथवा हलदीकी चा, खूब पिलाणा, १० बाइकारबोनेट ओफ पोटाश, तथा पाणी, ११ अथवा इसी दवाके संग सोराखार और साइट्रिक् एसिड डालकर सेर पाणीमें मिलाकर दिनमें पिला देणा

(विशेष सूचना) पीछे लिखे दोनों रोगोंमुजव पथ्य पालणा बाहरकी हवा तथा हलका खुराक इस रोगकू मिटाणेमें मदतकार है खाणे पीणेके पदार्थोंमें पथर कंकर रेती नहीं आसके इस बातका खयाल रखवाणा

प्रमेह–सुजाक–फिरंग–

गोनोरीया.

(मूत्राशय) याने गुरदा और वस्तिके रोग कलेजेके अवयवोंके विकारके संग सबंध रखता है, तब मूत्र मार्गके रोग बहोत करके बाहरकी आचरणाके संग सबंध रखता है, उसमें सुजाक और गरमी (टाकी) ये दोय मुख्य रोगमें लिंग योनिका समावेश है.

(कारण) दुष्ट रोगीली योनि रोगवाली और रजस्वला इनोसे भोग करणेसे सुजाक प्रमेह होता है

(लक्षण) पेशावके रस्तेसे पीप निकलणा ये प्रमेहका प्रत्यक्ष लक्षण. है, लेकिन् किसी २ वखत हथ रससें गरम गुड हींग मिरच वगेरे खानपानसे ओर वचोके कृमिरोगसे पेशाबके रस्ते पीप गिरता है, लेकिन् एसे रोगकू नये वैद्य (डाकटर लोक) प्रमेह नहीं कहते, क्योके सुजाकका पीप तो चेपी होता है, वो तो फक्त दुष्ट रोगीली स्त्रीके संबंधसेही होता है, परमा सरू होणेके पहले कितनेक चिन्ह पहली दिखाइ देते है, पीछै दुसरे दिन अथवा पांच चार दिन पीछै निशानिया मालम देती है, और सुजाककी ४ चार जाति मुकरर करी जावे तो १ पहली जातिमें पेशाबका पदार्थ सुपेद दूध या छाछ जैसा निकलता है, २ दुसरी हालतमें पीप जादा बहोतही जाता है, उसका रग पीला पणा, लिये, हरास लिये किसी २ वखत उसके सग खून जाता है मूत्र नलीमें दरद होता है, उसमें सूजन आजाती है, ३ तिसरी हालतमें सोजा और जलण कम पडता है, पीप कम आता है, दरद भी कम लेकिन् तीसरी हालतमे सूजाक जब मिटता नहीं तो पेशाब करते थोडीसी जलण और सलसलाट होता है, ४ चोथी हालतमें पीप पाणी जेसा और बूद २ आता है, इस हालतकू अग्रेजीमे ग्लीट कहते है, प्रमेह होता है, तब इद्रीके किसीभी ठिकाणे सोजा होता है, ये सोजा इद्रीके अगले भाग तरफ होय तो पीप थोडा आता है, और ज्यों ज्यों अदरके तरफ सोजन होय त्यो त्यो पीप जादा आता है, पहली अग्रभागपर खुजाल आती है, पेशाब नलीका मू सूजकर लाल होजाता है, और चौडा कुछ जादा होजाता है, उसकू दबाणेसे अदरसे पीप निकलता है, पेशाबकी हाजत बेर २ होती है, और उसकी धार पतली होतीहै, जलण बहोत होती है, चणख मारती है, दरद जादा होय तो बुखारभी आजाता है, पेशाब नलीभरी भई करडी डोरी जेसी होजाती है, और जब जोरमें आती है, तब वांकी तिरछी करते उसमें जादा दरद होता है, एकाध अठवाडिये पीछै प्रमेह शात पडता है, तब जलण कम पडती है, रसी सुपेद रगकी आती है, अथवा बध होती है, तो किसीके पोतेमें दरद किसीके बद होजाती है, और पीछै प्रमेह पुराणा गिणे जाता है, पुराणा भये बाद बेर २ जोर करता है, अगर जो रोगी मनोमती होकर बे परवा रहे तो उससे मूत्रकृच्छ्र तथा मस्सेका रोग और इद्री तथा वदनपर छोटी २ फुनसियें होती है, जिसकू प्रमेह पीडिका कहते हैं,–(इलाज) सोजन तथा दरद होय तो गरम पाणीका सेक करणा अथवा कमरतक गरम जलमें बिठलाणा जुलाबकी दवा देणी पेशाबमें दाह होय तो पेशाबकी खटासकू तोडे एसा खार तथा पोटाश सोडा वगेरे पीणा अलशीकी चा पीणी जवकू उकाल उसका पाणी पीणा दूध पाणी मिलाकर पीणा सोडावोटर गोखरू ईसवगुल तुकमरीया बहुफली बेदाणा ये पेशाब लाणेवाली दवायोंका लुआब पीणा पेशाब खुलाश आवे एसा इलाज करणा (२) फलनिकादि क्वाथ (नं० २१६ हलदीका चूर्ण डालकर पीणा (३)

भेद धाणा धमासा गोखरू करमाला आधा २ तोला सेर पाणीमें रातकू भिगाकर दुसरे दिन २।४ वखतमें निराहार सब पाणी पी जाणा (४ चद्रप्रभा) (नं० २४५) सर्वोत्तम इलाज है, पाणीके संग लेणा (५) बहुफलीका लुआब सोडा डालकर पीणा, गोखरूका मिश्री डालकर पीणा, (त्रिफलाका क्वाथ सहत डालकर अथवा त्रिफला के सूला, मुनका काली, चावलोकें धोवणमें तीन घटा भिगाकर वो जल पीणा ७ आंवले तथा गिलोयका पाणी सहत तथा हलदी डालकर पीणा ८ गोखरू कोनरूगूद तथा सोडा डालकर पीणा दरेक ॥ तोला १ सेर जलमें भिगाकर वो जल तीन वेर पीणा नं० ६७४ तथा ७४८ वाली दवायें एसी दवायोंसे जब प्रमेहके सख्त लक्षण दब जाय तब नीचे लिखी दवाइयें तथा पिचकारीका उपयोग करणा-(९ न० ६७५) (६७६) ६७७ के मिक्ष्चरोमेंसे कोई भी देणा एकसे फायदा नहीं होय तो दूसरा अजमाणा १० दवा पिचकारीकी पाणीका वजन २॥ रुपेभर १ त्रिफला अथवा पच वल्कका क्वाथ न० १५७ का करके उसकी पिचकारी देणी २ लेडवोटर ३० से ४० बूंद १ औंस पाणीमें मिलाकर पिचकारी लेणी ३ शुगरलेड १ से ४ ग्रेण जसतके फूल १ से ४ ग्रेण ५ फिटकडी १ से ४ ग्रेण ६ नीला थोथा १ से ३ ग्रेण नाइट्रेट ओफ सिल्वर ॥ से १ ग्रेण ये दवायें अनुक्रमसे एक दुसरे सख्त है, इसवास्ते पहलीसे फायदा नहीं होय तो पीछै जादा सक्तकी पिचकारी लेणी पुराणे सोजनमें ये पिचकारी कामकी है, ११ बहोत जलणके सग पेशाबकी नलीमें दरद होता है, तब कपूर तथा अफीमकी गोली खाणेसे फायदा होता है, कपूर ६ ग्रेण अफीम १ ग्रेण और मिल सके तो उसमें बेला-डोना ॥ ग्रेण मिलाकर दो गोली कर फजर सांझ लेणी १२ औरतोंको सुजाक प्रमेह होता है, लेकिन् मूत्र मार्ग जादा चोडा होणेके सबब पुरुष जितना दरद नही होता फक्त पिचकारीके दवासे फायदा होता है, १३ पुराणे भये प्रमेहमें (न० ६७९, ६८०, ६८१) की मिलावटे अच्छी है, (१४ मूत्राश्मरी भई होय तो) (६८२, ६८३, तथा ६८४) इस नंबरका इलाज करणा.

(विशेष सूचना) प्रमेहके रोगीने खाणेका जितना परेज रखणा उससे जादा वि-हारमें सावधानता रखणी प्रमेह होणा ये खोटे कर्ममे प्रवीण अदमियोकेवास्ते एक वख्तकी सजा है, जो मूर्ख नादान अदमी स्त्रीके विषयमें मग्न बुद्धिकूं रोक नहीं सकता तो फिर जितनी खराबी सुजाकवाले रोगीकी होती है, एसी किसी विरले रोगमे होती होगी इससे औरत मर्द दोनोकी जिंदगानी बिगड जाती है, बाद जो संतान पैदा होता है, तो उसकेभी ये रोग चेपी पैदा होता है, एक वेर ये रोग लगे पीछे पथ्य परे जमें चलणवाले सफाई और सदाचारी थोडेही अदमी इस रोगसे सर्वांशकर मुक्त

होते है, एसा ये दुष्ट रोग अनेक रोगोंकी जड है–(प्रमेहके दुसरे उपद्रव) संक्षेपसे लिखते है.

(मूत्रकृच्छ्र) इद्रीमें सूजन होणेसे पेशाब अटक २ बूद २ आता है

(२ खूनका गिरणा) किसी २ वखत पेशाबसे गिरता है

(३ वदका होणा) गरमीसे जेसे वद होती है तेसे प्रमेहसे भी होती है

(४ आंडोंका वढणा) गोलीका सूजणा ५ आंख दुखणी ६ संधिवायु ७ नासूर ८ भगदर ९ इत्यादि खून वीर्य और मल तीनोंको बिगाडता है,

(देशी वैद्यक शास्त्रमुजब प्रमेहके नाम और इलाज) अंग्रेजीवाले कहते हैं, खाणे पीणेसें ये रोग नहीं होता ये दुष्ट मर्द दुष्ट स्त्रीके ससर्गसे होता है, टाकीभी इसीतरे होती है, एसा कहते है, लेकिन देशी वैद्यक शास्त्र एसा कहता है, बैठे रहणेसे वहोत नींदसे दही मांस खाणेवालोंकूं दूध नया अन्न नया पाणी गुड याने सब कफकारी वहोत पदार्थोंके जादा सेवनसे प्रमेह पैदा होता है, इस जगे जो कारण लिखे हैं, उसमें कफ दोषकू प्रधानता दी है, याने कफका कोप होणेसे वदनमेंका रश खून मज्जा मेद वसा (चरवी) जल वगेरे प्रवाही पदार्थोंको विगाड बाहर निकालता है, इसीतरे कफके क्षय होणेसे पित्त और वायुकू विगाड प्रमेहकू पैदा करता है, इस अभिप्रायसे तो एसा मालम देता है, के शरीरमेंसे रस खून जल चरवी मेद वगेरे धातुओं विगडकर पैशाबके रस्ते झरता है, और झरणा एसा अर्थ मेह शब्दका होता है प्रका अर्थ वहोत करके, मेह याने झरणा चेपसे जो प्रमेह होता है, उसमें अदरका एसा कोईकारण होता नहीं चेपके सबब मूत्र नलीमें सोजा होता है, पीछे उसमें जखम पडके पीप निकलता है, देशी शास्त्र इसतरे प्रमेहकी २० जाति गिणाता है,

(१ उदकप्रमेह) अच्छा वहोत ठढा पाणी जेसा कुछ मैला चिकणा पेशाब उतरे.

(२ इक्षुप्रमेह)–गन्नेके रस जेसा मीठा और वहोत पेशाब आता है ।

(३ साद्रप्रमेह)–पेशाब रातवासी रखणेसे फजरमें जाडा पडजाय ।

(४ सुरामेह)–सराप जैसा और रातवाशी रखणेसे ऊपर पतला नीचे जाडा ।

(५ पिष्टमेह)–आटेके धोवण जेसा वहोत सुपेद पेशाब करते रूंखडे हो ।

(६ शुक्रमेह)–वीर्य जैसा अथवा वीर्य मिला पेशाब उतरे ।

(७ सिक्तामेह)–रेती जैसी महीन ओर अलग २ कणे पेशाबमें पडे ।

(८ शीतमेह)–वेर २ ठढा मीठा पेशाब उतरे ।

(९ शनेमेह)–धीरे २ मद वेगसे पेशाब उतरे ।

(१० लालामेह)–ततू जैसे और चीकणा पेशाब उतरे ।

(११ क्षारमेह)–खारे जल जैसा रग रासवो स्वाद और स्पर्शवाला ।

(१२ नीलमेह)–नीलके जैसा पेशाब उतरे ।
(१३ कालमेह)–सुरमे जैसा काला पेशाब ऊतरता है ।
(१४ हारिद्रमेह)–हलदी जैसा जलता भया और तेज पेशाब उतरे ।
(१५ मांजिष्ठमेह)–कच्चे पदार्थका गंधवाला मजीठ जैसा लाल पेशाब ।
(१६ रक्तमेह)–कच्चे पदार्थ जैसा गंधवाला गरम खारा खून जैसा पेशाब ।
(१७ वसामेह)–चरबी जैसा रग चरबी मिला पेशाब उतरे ।
(१८ मज्जामेह)–मज्जा मिला वैसाही रग पेशाब उतरे ।
(१९ हस्तिमेह)–हाथीके मद जैसा विना वेगका पेशाब उतरे ।
(२० क्षौद्रमेह)–तुरा मीठा रूखा पेशाब उतरे सो (मधुमेह) ।

इण वीसोंमेंसें पहिले लिखे १० तरेके प्रमेह कफसे पैदा भये होते हैं उसके बाद ६ छव पित्तसे पैदा भये आ खिरके ४ वादीका है, (कफ प्रमेह साध्य) पित्तजन्य कष्ट-साध्य (मुस्किलसे) मिटणेवाला वादीका असाध्य है ।

(इलाज)–सामान्य इलाज इहां लिखते हैं–(१ कफ प्रमेहमें)–हरडे कायफल मोथ लोद इनोंका क्वाथ सहत डालकर २ हलदी दारूहलदी तगर वायविडग सहत डालकर ३ देवदारू कूठ अगर चंदन सहत डालकर ४ दारू हलदी इरणी हरडे बहेडा आवला वच सहत डालकर ५ वच खसवाला नेत्रवाला हरडे गिलोय क्वाथ सहत डाल-कर (६ पित्त प्रमेहका इलाज)–वाला लोद आसोंदरो तथा चंदनका क्वाथ सहत डालकर ७ वाला मोथ हरडे आंवले सहत डालकर ८ पटोल नींब गिलोय आंवले सहत डालकर ९ लोद, आंबेकी छाल, दारूहलदी, धावडीके फूल, क्वाथ सहत डालकर १० पीपल वडे दरख्तकी छाल काली पाट बांवल नेतरवालेका क्वाथ सहत डालकर ११ सरेस धाणा आसोंदरा क्वाथ सहत डाल (सर्व प्रमेहोंपर)–आंवले तथा गिलोय अ-थवा उकालीमें सहत डालकर और हलदीका चूर्ण डालकर पिलाणा १२ त्रिफलाके क्वाथमें सहत डालकर शिलाजीत वो नहीं होय तो सोरा डालकर पीणा १३ फक्त गि-लोयका रस सहत डालकर पीणा १४ आंवलेका रस हलदीका चूर्ण सहत डालकर १५ रातकू भिगाये भये गेहूं फजरमें पीस इसमें थोडी मिश्री डालकर पीणा १६ केसू फूलो-के क्वाथमे मिश्री डालकर पीणा १७ वायविडग हलदी मोलेठी सूठ गोखरूका क्वाथ सहत डाल १८ शुद्ध गधक गुड मिलाकर खिलाणा उसपर दूध पीणा १९ नींबोली चावलोंके धोवणमें पीस घी डालकर पीणा २० निर्मलीके बीज छाछमें पीस सहत डाल-कर पीणा–(पथ्य) पहली लघन वमन जुलाब डांगर जव साठी चावल मोठ गेहू पुराणी कुलथी मूग तूर चणा इन सबोंका ओसामण पुराणा सहत परवल ककडी लसण पाका केला जामुन खजूर तरबूज कडवा तथा तुरा पदार्थ वगेरे पथ्य है–(कुपथ्य)

पेशाबकूं रोकणा बीडी पीणी पसीना निकालणा दिनकी नींद नया अन्न दही बरसातका पाणी मिष्टान्न मैथुन नयासराप तेल दूध घी गुड ऊख पुष्ट पदार्थ सडे खारा खट्टा ये सब पदार्थ कुपथ्य है।

गरमी टाकी उपदंश.

(सेन्कर-सीफीलीस)

टाकी येभी प्रमेहकी एक बडी बहिन है और पापकृत्यकी बलाय और बुरे कर्मकी प्रत्यक्ष सजा है, ये बडा दुखदाई नाश करणेवाला दुनियामें इज्जत खोणेवाला महादुष्ट रोग है, इस रोगके मूत्राशयसे कुछ तालूक नहीं है, तोभी मूत्र मार्गके ऊपर सबध रखणेवाला होणेसे इस किरणमें ये रोग दाखल किया है, निश्चै करके देखा जाय तो जैसे ये रोग चमडीका है तेसे ये रोग शरीरके सब सधोंपर उसका असर पहोंचता है, इस वास्ते शरीरके सामान्य रोगोंके साथ जादा संबध रखता है, ये रोग चेपी है, इसका जहर एसा खराब है, सो एक छोटीसी टाकीसे फैलाव करके सब बदनमें फेलाव करता है, एक वेर खूनमें प्रवेश करे पीछे जड जाणी बहोतही मुस्कल है।

(कारण)–दुष्ट औरत मर्दोंके संबंधसे आपसमे लगा भया चेप ये गरमीके रोगका मुख्य कारण है, मरदकी औरतकू औरतकी मरदकू गरमी लगती है (शिक्षाचारकल्पशास्त्र जैन) स्त्री पुरुषोंकी पवित्रता और सदाचारमें बहोतसी तारीफ कर उसका बहोत अछा फल दोनों भव आश्री लिखा है, और कुशील सेवणेपर बडा भारी दोष और अपवाद लिखा है, सो सब सच है, इसीवास्ते अनादि व्यवहारभी एसाही चलता आया सो युगलिक लोकोंका स्त्री मर्दका जोडा उसीसें मैथुन सेवणा और देखतेभी हैं, एक औरत मर्द सतोषवृत्तिसें जो ससर्ग करते हैं, उनोंके ये दुष्ट रोग कभी नही होता फेर एसाभी है पती एक और स्त्री अनेक है लेकिन् वो जब स्त्रियां एक पती टालके अन्य पुरुषसे गमन नहीं करती उनोका पती उन औरतोकेटाल अन्यसे गमन नहीं करता तोभी रोग नहीं होता राजा लोकोंकीतरे, इसीवास्ते जैन शास्त्रोमे जगे २ ग्रहस्थीकू स्वदारा सतोषी लिखा है, लेकिन् बहोत स्त्रियों रखणेवाले कृष्ण माहाराजकीतरे बेपरवा होते है, वेसा अनुराग और प्रेमशृंगार सुखकू कम साधणेवाला और कदाग्रहरूप फास होता है, एक स्त्रीका प्रेम और सुख मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम रघुवर जेसा होता है बुद्धिवान समझेंगे, अब जो स्वच्छंदी लोक धर्मशास्त्रका हुकम और नीति मर्यादामें नहीं रहते उनोकों तो पहली इहापर एसी सजा मिलती है, सो इहांतकके, मावापोंके गरमी होती है, तो उनके वचेभी गरमी रोगका असर लेके जन्म लेते हैं, बहोतमे तो मरही जाते हैं, अगर वचेकू दूध पिलाणेवाली धायके ये रोग होता है तो वचेके गरमीका असर लग जाता है, कहातक लिखे योनिलिग गुदा इनोंमे मैल जमणेसेभी टाकी जखम हो जाताहै।

(लक्षण) पुरुष तथा औरतोंका योनिलिंग छिल जाणेसें और चेप लग जाणेसें इस जगे फुनसियें होती है, और वो फूटकर जखम गिरता है, ये फुनसियें संयोग भये पीछे जलदी अथवा केइदिनोंबाद दिखाई देती है, जखमका जहर बदनमें फैलता हैं, तब उपदंशका रूप जाहिर होता है, तब लोक गरमी फूट निकली एसा कहते हैं, उससे अनेक विकार होता है, विस्फोटक वद जखम चीरे २ गांठे संधिवाय फिरंगवाय हिस्टीरिआ उन्माद वगेरे) इस टाकीकी वोतजात है, सो लिखते हैं।

(१ नरम चांदी)–छिल जाणेसें तथा चेप लगणेसे होती है, ये जखम जादा करके इंद्रीके पिछले तरफ अथवा ऊपरके तरफ अथवा घुगटेकी चमडीमें पडती है, टाकी दालके दाणे जेसी गोल होती है, और दाबकर देखणेसे उसकी कोर नरम मालम होती है, एक टाकीके चेपसे दुसरी टाकी पडती है, किसी वखत नलीके अंदर जखम पडता है, जिसका गुंघटा सुपारीपर चढा रहता है, और जखम पडके सोजन आती है तो गूघटा ऊपर नहीं चढ सकता अर्थात् नीचै नहीं उतरता तब अंदर रोज साफ नहीं होणेसे जखम बढते जाता है, वदभी हो जाती है, (२ करडी चांदी) ये जखम खराब चेप लगे पीछे लगबग तीन अठवाडे पीछे सरू होता है, पहली फुनसी अथवा चमडीपर छोटा चीरा पडता है, वो बढकर गोल जखम होता है, उसमेंसे पतला पीप झरता है, पीछै थोडी मुदतसे टाकीके नीचै सक्त ककर जमता है, और दो अंगलीसे दबा कर देखणेसें नरम हड्डी जेसी करडी मालम देती है, टांकीकी कोर उपसी भई सख्त और जाडी हो जाती है, जिससे चांदी दिखणेमें छोटे प्याले जैसी होती है, जांघकी जडमें वद होती है, वो वद दबाणेसे दुखती नहीं और आपसे पकतीभी नहीं इस जातकी चादीमें वहोत करके एकही होती है, और उसका पीप किसीसाजे अदमीके चमडीमे दाखिल होय तो उसके भी ये रोग हो जाता है, इसकू चेपी जखम कहते हैं, (फैलती भई चांदी) जखमकी कोर एकसदृश गोल नहीं होती लेकिन् खरखोदरी खाई भई वांकी टेढी होती है, वदवोवाला पतला पीप आसपासकी चमडी घिराते जाय वद होय वो पककर फूटे दुख दरद बुखार नींद नहीं आवै नाताकती बढती जाय वद जलदी पकती है, अदर गहरा खड्डा पडता है।

(सडेवाला जखम)–पहली चमडी सूजकर लाल होती है, वद वो लाल पतला पाणी झरता है, पीछै चमडीका भाग मुरदार होकर अलग गिरता है, रोगीकी हालत विगडती है बुखार नाडी जलद वैचेनी अनिद्रा इस जखममें वद नहीं होती ये चार तरेकी स्थानिक जखमकू गरमीकी पहली हालत नाम स्थापन करें और इस जखमका जहर वदनमे फैलते गरमीके जो विकार होते हैं वो दुसरी हालत अथवा शारीरक उपदंश एसा नाम दे सकते हैं।

(स्थानिक चांदीका बाहरका इलाज इसमुजब करणा)

(१ प्रक्षालन)–धोणेका इलाज १ पंच वल्कल (न० १५७) का उकाला कर उस पाणीसे जखम वेर २ धोणा २ त्रिफलेका क्वाथ कर उससे या जल भांगरेके रससे टाकीकूं धोणा ३ रस कपूरका पाणी करके धोणा, (लेप) मलम–१ गोपीचदन नीलाथोथा जलमे पीस कपडेपर लगाकर पट्टी लगाणी २ रस कपूर, सुपेद कथा, मुरदारसीग शखजीरा मांजूफल तथा सोपारीकी राख अथवा त्रिफलाकी राखकू घीमे खरलकर वो मलम चांदीपर चुपडणा ३ वावची १ गधा विरोजा १ गूगल १ राल १ नीलाथोथा १ हींगलू १ पारा १ घी ९ और तिलका तेल ९ इन सबोंको खरलमे डाल कडवे नीमके जाडे लक्कडसे बारे घटेतक घोटणा ये मलमका अच्छा इलाज है, ४ फिटकडी सोनागेरू नीलाथोथा हीराकसी, सींधा निमक, लोद रशोत हरताल मनसिल तथा इलायची इनोका चूर्ण सहतमें मिलाकर लेप करणा ५ हरडे वहेडा आंवलाकी राख करके सींधानिमक सहतमें मिलाकर लेप करणा ६ रशोत इकेली अथवा हरडेका चूर्ण सहतमे मिलाकर लेप करणा ७ कणेरकी जड पीस लेप करणा ८ दशाग लेप पाणीमे अथवा घीमें मिलाकर लेप करणा हींगलू नीलाथोथा गूगल एकेक तोला वावची मस्तगी गूद दो दो तोला राल ४ तोला तेल ७ तोला मलम करणा, भुकणी १ नीलेथोथेका चूर्ण अथवा इसके सग कथा मिलाकर दावणा २ कत्था तथा शखजीरेकी भुकणी दबाणी ३ पच वल्कलकी महींन भुकणी दबाणी ४ त्रिफलेकी राख नीलाथोथा मिलाकर दबाणा, (अग्रेजी इलाज) टांकी मिटाणे अग्रेजी क्रम वहोत अछा है, चादीकू जलाणेवास्ते पहली १ नाइट्रिक एसिडके दो वूद सिरप चादीपरही लगाणा अथवा एसिडमे काडीसे रूईलपेट भिगाकर लगाणा ये एसिड सादी चमडीपर नहीं लगणे पावे उसकी सभाल रखणी जलण होय तो उस पर पाणीकी धार देणी जादा एसिड धुप जाता है, एसिड नहीं होय तो कास्टिक लगाणा उससे टाकी जव जल जाय तो उसपर पोल्टिस मारकर मुरदार मांश निकाल डालणा तव चादी साफ होती है, लाल जमीन जव दिखणे लगे तव टेनिक एसिड अथवा झींक्सल्फास कम्पाउन्ड टीकचर लवडर तथा पाणी उनमान मुजव मिलाकर पोता धरणा २ दुसरा इलाज, दो तीन दिन नीलाथोथा दावणा पीछे चादीकू साफ कर सादे मलमकी चत्ती लगाणी, अथवा व्लेकवोश न० ५४३ मे लींट अथवा नरम कपडा भिगाकर चादीपर पोता धरणा, ३ चादीके ऊपरका पीप जैसा, सुपेद थर निकले विगर जखम भरी जता नहीं (४ आयडोफोर्म)–चादीका सडा निकालकर चादीकू भर देती है, ऊपरकी चमडीके नीचै टाकी ढक गई होय तो व्लेकलोशनकी पिचकारी लगाणी नीला थोया और झिककी पिचकारी मारणी ।

शारीरक उपदंश गरमीकी दुसरी हालत ।

टांकीकी ऊपर जुदी २ जात लिखी है, इलाजभी लिखे हैं, ये टांकी तथा जादा करके करडी टांकी शरीरमें एकतरेका जहर करदेती है, वो कितनेक दिनोंसे पुराणे रूपसे दिखाई देती है, जखमकी पहली हालत शरीरके एकही ठिकाणेसे सबंध रखती है, ओर दुसरी हालत सब शरीरसे सबध रखती है, पहली पडी भई चांदी जादा तर भरीज जाती है, और रोगी जाणता है में आराम होगया लेकिन एसा नहीं जाणताके दुस्मन रोग गुप्तपणे अदर घर करके रहाभया है, जब रोगी गाफल होकर खाणा पीणे आदि इंद्रियोंके स्वादमें लयलीन होता है, तो अकस्मात् सब शरीरमें ये दुस्मन दिखाई देता है, गलेमें सांधोमे नाकमे और हड्डियोमे किसीकू एकतरेसे किसीकु दुसरीतरेसे एसे तरे २ के चैन करता है, पहली टांकीके जोर मुजब ये पिछली गरमी कमती या जादा जोर करती है, शरीरके सुआले भागोमे जादा करके गलेकी बारी तथा नाककूं जलदी पकडती है, गलेमें सोजा मूमे गरमी तालवेमे छेद पडे नाककी हड्डी सडे और वो चपटा होकर बैठ जाय अथवा टेढा होजाय नाकके अदर छोडे तथा पीप गिरें सब वदनमें फोडे फुटकर निकले सांधे पकडे जाय मांसमें गांठे पडजाय ये गाठे फूटकर उसमे छेद तथा चीरे २ पडे भगदरका भारी रोग होजाय किसी २ कू वातरक्तका भीं रोग होजाय

(उपदंशकी दुसरी हालतका सामान्य इलाज लिखते हैं)

(१ पारा शुद्ध ये गरमीका सर्वोपर इलाज है,) क्योके अनत गुण पारेमें शास्त्रकार कहते हैं, लेकिन ये पारा अनुभवी विद्वान विचक्षण और निर्लोभी वैद्यके हाथ विगर दुसरे लेभग्गू मूर्खोके हाथसे खाणेसे वहोतही नुकशान करता है, क्योके पारेकू शोधनके आठ संस्कार दवामे वरतणे बाबत है, उसमें वहोत युक्ति हुसियारी और अनुभव और धन खरचणा पडता है, तब वो निडरपणे वरते जासकता है, रसकपूर हीगलू पारेकी मुख्य चीजों है, और चद्रोदय रससिंदूर पर्पटी वगेरे अनेक उत्तम दवाये पारेसे वणती है, जो के बुढापेका और मृत्युका दावा नही लगणे देती अग्रेजीमेभी थरमोमिटर वगेरे अनेक यत्र पारेकी कुदरतसे वणाये गये है. क्यालोमेल वगेरे पारेकी दवाभी देते है, लेकिन कितनेक डाकतर विद्वान् इससे डरते है क्योके ये दवा बिलकुल निडर नहीं है, इसवास्ते २ अग्रेजीमें दुसरे नबरकी दवा पोटाश आयोडाइड है वो गरमीकूं शात करती है, अग्रेजीमे गरमीकेवास्ते ये एकही दवा अछी है,) ३ बृहन्मजिष्ठादि क्वाथ (न० २२१) उसमें गूगल अथवा गूगलकी बनावटी केई किसमकी दवा गरमीके रोगमें सर्व बिगाडोमें सुधारा करती है, (४ चोपचीणी) गरमीकी पुराणी हालतमें फिरग रोगमे प्रसिद्ध है, वो चूर्ण न० २३५ तथा पाक न० २७९ मे दिया

जाता है, (५ गिलोय) शोधक है, इसवास्ते गरमीमें बहोत फायदेवंद है, उकाली गिलोयकी करके एरंडी तेल मिलाकर देणेसे दोषका शोधन होजाता है, (६ गूगल) शोधक दवा है, इसकी सर्व बनावटै खूनकू शुद्ध करती है, त्रिफला, गूगल, किशोर, सिंहनाद गूगल, मजिष्ठादि क्राथ संग या गिलोयके क्राथ संग लेणेसे ७ (नं० ६६७ से ६७३ तकका अंग्रेजी इलाजभी अच्छा है.

(वदका इलाज) १ नीबके पत्ते थोडे पाणीमे पीस उसमे हलदी तथा घी डाल गरम करके पोटिस बाधणी २ दोषघ्न लेप (नं० ३११) बांधणा ३ गूलरका दूध कपडेके लगाकर पट्टी चपकाणा या सीसेकी वट्टी बांधणेसे अदरकी अदर बिखर जाती है, ४ पुराणे गुडका पाणीकर अगारपर चढाणा उसमे भगकू पीस बुरका तेजाणा जब गाढा होजाय तो बाध देणा ५ लसण भिलावा सहजणेकी छाल जलमे पीस वट्टी धरणी ६ पारेका मलम उसकी पट्टी मारणी ७ जोका लगाणी ८ गरम पाणीका शेक करणा ९ टिंकचर आयोडाइन हमेस दो वखत चोपडणा

(विशेष सूचना) गरमीके रोगमे आहार विहारकी सावधानीपर रोग मिटणेपर आधार है, गरमीका रोग बेर २ उथला मारता है, खाणेपीणेकी जरा गफलत होणेसे फोरन दिखाई देता है, ये रोगका एसा दुष्ट जहर है, सो जड जाणाही मुस्कल है, लेकिन् परेजमें चलणेवाला इस रोगकू कितनेक दरजे जडसे निकाल सकता है, ऊपर लिखी सब दवाये तुरत फायदा नहीं करसकती बहोत दिनोतक सेवन करणेसे धीरज रखणेसें परेजके साथ एकवर्ष भरके साधनसे आराम होता है, अंग्रेजी विद्वानोंके मतसें अनतमूलका अर्क (परेलासालसा) उसवा दो महीना दूधके साथ गेहू चावल बूरा सीरा खाणेसे आराम होता है, निमक मिरच खट्टे खारेसे बचणा यूनानीवाले उसबेका अर्क इसी परेजसे दिलाते है, एक वर्ष लेणेसे सब रोग मिटकर बदन लाल बूद होजाता है, देशीमे चोपचीणी या गूगलका साधन करणेसे ये रोग निर्मूल होजाता है, वसत शरदमें जुलाब लेणा ठढ कालेमे सतावर सुपेद मूसली सालम वगेरेका पाक खाणा निरोगी एक स्त्रीसे सबध रखणा) इस ग्रथका पथ्यापथ्य आहारविहारके प्रकरणमें दिया भया हितकारक आहारविहार पथ्य है, बाकी सब कुपथ्य है

किरण ६ ठी.

मगजके साथ संबंध रखणेके रोग.

एपोप्लेक्षी

मगजके ततुओके साथ सबध रखणेवाले रोगोका इस किरणमें समावेश किया भया है, लकवा पक्षाघात ऊरुस्तभ धनुर्वात आक्षेपवायु ये प्रगट रोग है, और आर्यवैद्यक

ग्रंथोमें इन रोगोकूं वातव्याधिमें समावेश किया है, लेकिन ये सब रोग मगजके साथ संबध धराते है इसवास्ते इस किरणमें दाखिल किया है, वादीके संग नहीं रखा गया

(कारण) मगजपर एकाएक खून चढ जाणेसे ये रोग होता है. खून चढणेके वहोत कारण है,) जादा सराप पीणा बहुत कफ वहोत आलस वहोत पुष्टिदार खुराक वहोत गरमी वहोत ठढ जादा गुस्सा रिदय तथा गुरदेका दरद.

(लक्षण) ये रोग तीन तरेसे होता है, १ एकाएक जाणे कोइ घाव लगा होय एसा बेमालम रोगी नीचे गिरजाता है, २ पहली शिरमे दर्द बेचेनी मूर्छा आकर रोगी गिरपडता है, ३ एकाएक शरीरका एक अग अथवा एक पाव रह जाणेसे रोगी बेहोस होजाता है, दुसरे एसे लक्षण होते हैं, मूमें झाग चहरेपर तेज आंखोंकी कीकीचोडी भई भई एक चोडी अथवा एक सकडी मूं एक तरफसे टेढा करडा पडा भया दस्त पेशाब इच्छा-विना जाय हाथ पाव ठढा चमडीपर पसीना और बडे श्वासके सग मृत्यु किसी वखत एकाएक होजाती है, लकवा भया होय तो जिधरका अग झिलगया होय वो अगखेंचीजे जीभके लोचे पडै सरु होता ये रोग चाहे किसी भीतरे होय लेकिन पीछे बेहोसीके सग धीमा या जोरका या फूफाडा मारता भया श्वास ये उसकी खास निशाणी है, किसीकू होसभी रहता है, लेकिन जुबान बध होजाती है) दारू तथा नसेवाला जहरी चीजोंके खाणे पीणेसें जो बेहोसी आती है, तो उसबातकी पहली पहचाण कर लेणी चाहिये उनोंकी परिक्षा इसतरे करणी १ हकीगत ऊपरले लोकोंसे पूछणी २ मूकी खसबो लेणी दारूपीया भया होगा तो मूमें बदबो आयगी आंखे देखणी दारू वगेरे पदार्थोंसे आं-खोकी कीकी बराबर होती है, और मगजमें खून चढा होयगा तो एक कीकी चोडी और एक सकडी होयगी ४ सराप पिया भया अदमी जागता है, या बड २ करता है, और मगजपर खून चढणेवाला जागता नहीं ५ सरापके नसेवाला अदमीके दोनों पस-वाडेमे खून वगेरेकी क्रिया होती नजर आती है, और एपोप्लेक्सीमें एकही तरफ) मिरगी (एपोलेप्सी) और लकवा (एपोप्लेकसी) मे इतना फरक है के मिरगीमें फू फाडा मारता श्वास नही होता और लकवेमे एसा श्वास होता है, मिरगीवाला तडफडता है, आंख नीचे झुक जाणेसे सुपेद डोला फक्त दिखता है, और रोगी जादा पुकार करके नीचे गिरता है, लकवेमें एसा हाल नहीं होता .

(इलाज) छातीकी जगे खुली करके हवा डालणी निलाडपर ठढा पाणी छांटणा अथवा पोता धरणा और पांव गरम पाणीमे डुबाणा पीडीयोपर राईकी पोल्टिस लगाणी और एक घटेतक रहणे देणा रोगीपर वहोत चादणा अदमियोकी भीड गुलसोर होणे नही देणा इन इलाजोसे रोगीका मू खुले तब एक औंस सल्फेट ऑफ सोडा ३ औंस

पाणीमें डालकर पिलाणा उससे दस्त होगा जवरन पिलाणा नहीं दुसरी वेर वहोत खाये पीछै तुरत ये रोग होजाय तो उलटी होय उसकू रोकणेकी एवजीमे मूमे अंगलीया पांख (पींछ) डालकर जादा उलटी कराणी (न० ५५० मे लिखे भये पिचकारी वहोत फायदा करती है, इसवास्ते वो जलदी देणा जुलावकी दवा रोगीके गलेमें नहीं उतरसके तो जीभपर (क्रोटन ऑइल) जमाल गोटेका तेल दो तीन बूद लगाणा और जलदी दस्त आवे एसा करणा गरदनपर बिलाष्टर मारणा ये रोग वडा डरावणा है, इसवास्ते पूरे वैद्य या डाकदरकी राहसे इलाज होणा चाहिये कभी इसरोगसे रोगी बचभी जाता है, तोभी सावचेती आये वादभी उनका एक हाथ एक पाव अथवा एक पसवाडा झठा सून्य भया होता है, जुवान बध चेहरैकी नसें विकार पाये मालम देते हैं,

पक्षाघात–हेमिप्लीज्या–

मगजके साथ सबध रखणेवाली ज्ञानततु तथा गतिततुओकी क्रियाओं बध पडणेसे जो रोग होता है, उसकू मुसलमीनीमें लकवा अग्रेजीमें पेरेसीस अथवा पाल्सी कहते है, इस वादीमें एकतरफका अग रहजाता है, याने शून्य होजाता है, उसकू देशीमें अर्द्धांग या पक्षाघात कहते हैं, कमरके नीचेका भाग सुन्न पडता है, उसकु उरुस्तभ कहते हैं, और जीभ तथा मूके टेढा होणेवाले लकवेकू अर्दित कहते हैं,

(कारण) मगजपर खून चढणेसें एकाएक लकवा होता है, और मगजके दुसरे बिगाडसे धीमे २ होता है, गिरजाणेसे अथवा दुसरे कारणसे मगजकी खोपरीकु नुकशान पहोंचता है, उससेभी ये रोग होजाता है, इसकेसिवाय मिरगी हिस्टीरीया वांइटे और आंतरे तथा मूत्रपिंडके रोगसे भी लकवा होजाता है, वृद्ध ऊमरमे मगजकू बराबर पोषण नहीं मिलणेसे इस ऊमरमें ये रोग जादा होजाता है, इसवास्ते बुढ्ढके और बचेके ये रोगभये पीछे मिटणा मुस्कल है

(इलाज) ये रोग तकदीरसेही अच्छा होता है, अग्रेजी इलाजसे इस रोगमें देशी इलाज जादा फायदा करता हैं, जेसें वडा योगराज गूगल रास्नादि क्वाथ माल काकणी इमका तेल नारायण तेल प्रशारणी तेल मगजकु पुष्टी देणेवाली दवायें देणा मसलणा फायदेवद है,

(पथ्य) तेलका मालिस स्नेहपान पसीने निकालणा गरम जलका स्नान घी तेल मीठा खट्टा तथा खारा पदार्थ गऊ उडद कुलथी परवल सहजणेकी फली लसण अनार बेर दाख नारगी गोखरू एरडी तेल गोमूत्र खाड पान आवले चिकणा घी तेलका गरमागरम भोजन उडद सबसे जादा पथ्य है, (कुपथ्य) चिंता ओजागरा मलमूत्रकू रोकणा उलटी महनत उपवास वटाणा चवला वाल मूग गुड तलाव तथा नदी काजल जामुन

सुपारी ठंढा जल क्षार खट्टा तीखा तथा कडवा पदार्थ स्त्री संग घोडेपर चढणा फिरणा दिनमें नीद खराब जलसे स्नान करणा इत्यादि कुपथ्य है.

ऊरुस्तंभ.

पाराप्लीज्या.

जेसे पक्षाघातमें वदनका, वांया दहना एक आधा अंग शून्य पडता है, तेसे ऊरुस्तभमें, कम्मरके नीचेका आधा अग रहजाता है, पांवकू हिला नहीं सकता जादा करके उसमें फरसका ज्ञानभी नहीं रहता और दस्त तथा पेशाब बे खबर बिछोणेमें होजाताहै, पसवाडाभी दुसरा अदमी फिराता है.

(कारण) करोडरज्जूके नीचले भागमें रोग होणेसे याने करोड रज्जुमें सोजन होणेसे अथवा वो जादा नरम या जादा करडा पडजाणेसे अथवा वो किसी चीजके भारसे दब जाणेसे जाघ झिल जाणेका रोग होता है पीठपर मार पडणेसे गिर पडणेसे किसी भीतरे पीठकी हड्डीकू इजा पोहचणेसें भी रोग होजाता है–

(इलाज) पीठकी हड्डीपर जरब पहोचणेसें कोइ दरद भया होय तो उस जगे जोक लगाणा जो उसजगे सोजन होय तो ठढी दवा लगाणी लेकिन दवा गरम लगेगी गिरजाणेसे अथवा चोट लगणेसे ऊरुस्तंभ भया होय तो रोगीकू पूरा आराम देणा जो कलगाणी तथा विलाष्टर मारणा दरदकी जगेपर बेलाडोना तथा अफीमका लेप करणा अथवा दोपघ्न लेप वांधणा पेशाब बध होय जिसकू सलाइ डालकर बाहिर निकालणा जादा देर पेशाब बध रहे तो मूत्राशय पेडूमें वरम आजाता हैं, (इरंडी तेल देणा २ (रास्नापचक (ल० २१४) ३ महारास्नादि क्काथ न० २१५) रास्ना गोखरू एरडीकी जड देवदारू साटेकी जड गिलोय किरमालेकी गिर इनोकी उकाली सूठका चूर्ण डालकर पीणा ४ योगराज (गूगल नं० २५४) भिलावेका चतुर्थांश क्काथ मिश्री घी सहत काली मिरच डालकर देणा (६ किनाइन २० ग्रेण लाईकर स्ट्रिक्निया १५ बूद टींकचर आफ स्टील १० बूद और पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमे तीन वेर पिलाणा ७ दरियावके पाणीका स्नान उत्तम है.

अर्दित–फेशियलपाल्सी–

(कारण) ये दरदभी मगजके रोगोमेसे जन्म लेता है, किसी २ वखत पक्षाघात और अर्दित सग होता है, अर्दित वायुसे जोखम नही है, ठढी हवा कान तथा दातका दरद कानकी गांठ बादी तथा गरमीका रोगभी इस रोगका कारण है

(लक्षण) एक तरफा चहरा रहजाय मूके दरवज्जोका एक तरफका खूणा नीचै झुकजाता है, गाल ढीला पडता है, बोलते २ थूक या लाल गिरजाती है, पाणी पीणेसे पाणी निकल जाता है, फूक सीधी नहीं आती–(इलाज) कारण जांणकर उसका इलाज

करणा पहली एक जुलाब देणा एरडी तेलका अच्छा है, पीछे योगराज गूगल अथवा पोटाश आयोडाइड देणा उडदके वडे तेलमें तले बहोत फायदेबद है, रास्नादि क्काथ अच्छा है. *शिलाजीत गूगलके सग देणा*

धनुपवात–टिटेनस–

ये बहोत जुलमगार आक्षेप वायू है, जिसमें सब सरीर कबाणकी तरे वांका होता है, पहली जबाडे सख्त होते हैं, वो थोडे घटोसे या थोडे दिनोंपीछे बध होता है, रोग जब जोर करता है, तब अदमी कबाणकी तरे होजाता है, ये होणा कभी पीठसे और किसी २ वखत पसवाडोसे भी कबाण करदेता है, सब बदनकू बेसुमार जोर देता है, और ये दोरा थोडी २ मिन्टोसे होता है, दरम्यान नसें सखत रहती है, अगर जो रोगीकू नींद नहीं आवे तो श्वास बध होकर मरजाता है

(लक्षण) सब ऊपर लिखे हैं, कबाणकी तरे बदन होता है, इसवास्ते इस रोगका नाम धनुप लिखा है, कारण इस रोगका अभीतक पूरा ध्यानमें नहीं आया है, लेकिन् किसी वखतकी शरदी या जखम वगेरे कारणसे ये रोग होता है, हडक वायु और धनुर्वायुके लक्षण आपसमे लग भग मिलतेसे हैं, लेकिन् जरा २ फरक है, सोनीचे लिखते हैं, जिससे अलग २ परख सकते है

(हडक वायु) पाणीकू देखतेही ये रोग जोर करता है, रोगी कुत्तेकी तरे पुकारता है, तथा थूकता है, आक्षेपका जोर कम पडे पीछे नसें ढीली होकर पूरा शात होता है, हडक वायुमें कुत्तेके काटणेकी निशाणियां होती है

(धनुर) धनुप वायुमें इस लक्षणोमेंका एकभी होता नही

(इलाज) स्नायु शैथिल्य कृत दवायें (अफीम) अच्छा इलाज है, खुरासाणी अजवाण तथा क्लोरोफोर्म और क्लोरोडाइन अथवा इकेला क्लोरलभी अच्छा है, बरफकी कोथली भरके पीठके हड्डीपर धरणा जादा सख्त धनुरवातमें क्लोरोफार्मका ५ बूद और टिंकचर ओपियमका २० बूद एक औंस जलमें देणा आखर न० ५२२ वाला मोर्फ्याका मिकश्चर देणा और चार २ घटेसे देणा जारी रखणा

शिरोरोग–हेड एक–

(कारण) तथा लक्षण) शिरमे दरद होणेका अनेक कारण होता है, और वो हरेक कारण समझे विगर पहचाणे विगर शिरके दरदका पूरा इलाज फायदेबद होसकता नहीं शिरके दरदका सबध इतनी जगसे होता है, अन्नाशय (होजरी) यकृत् (लीवर) पक्काशय (आतरे) मज्जाततु या भवारे अथवा आवा सीसी मगज (ब्रेन) और सधिवायु

(होजरी सबधी शिरमे दर्द) बहोत करके कपालमें अथवा एक आंखपर या आं-

खके आसपास दरद होता है, उससे प्यास तपत और उवाकी होती है, ये दरद थोडी मिन्ट या थोडा कलाक रहता है, और बहोत करके भोजन किये बाद अथवा प्रभात समें चढता है, इस दरदमे अजीर्ण मिटणेका इलाज करणा चाहिये सो लोक भूलसे मेलेरियाका इलाज करते हैं, ये दरद हमेस बैठे रहणेवाले जुवान अदमियोके बहोत होता है, खाणे पीणेके अति योगसे और खराब सराप नही हजम होय एसा खुराक खाणेसें ये दरद होता है

(इलाज) भोजन किये बाद शिर चढता होय तो राई और गरम पाणी पीकर उलटी कराडालणी सालवोलेटाइल २० बूद साइट्रेट आफमेगनिस्या और तेज चा काफी पीणा आराम और नींदभी पथ्य है.

(यकृत् संबधी शिरका दर्द) कपालके आरपार खेंचै जैसा दरद मालम दे और घभरावे एसा दरद होय एक तरफ दरद जादा एक तरफ कम और पेटकी कोडीपर टकोरा मारणेसे एकदम शिरका दर्द जाता रहे.

(इलाज) सोडावोटर जादा पीणा ३ बूद क्लोरोफोर्म और साइट्रेट आफ-मेगनिस्या मिलाकर पीणा जादा दिन जारी दरद रहे तो (नं० ४६१ तथा ४६२ की रेचक दवाये देणी)

(आंतरेसे भया शिरका दर्द) पेटमें अजीर्ण बधणेसे अथवा कब्जीयतसे दरद होता है, बहोत करके इस कारणका दर्द सब शिरमें होता है, और कारण दूर हो-णेसे मिटता है.

(मज्जा तांतुओंसे भया शिरका दर्द) मनके विकारसे या गुस्सेसें नाताकत अद-मियोंके ये दरद होता है, हिस्टीरियावाली औरतें इस रोगके आधीन होती है, ये रोगमेंभी जादा करके होजरी तथा कलेजेमें किसी किस्मका विकार होता है, लेकिन् रोगी इस अव्यवस्थाकू नहीं जाणता इससे परेज नहीं रखता जो लोक सराप नसेकी चीजे गरम पदार्थ नही आचरे लेकिन् वो लोक जो कभी चा काफी जादा पीवे तो उनोके शिरका दर्द होता है, टेम मुजब और उनमान मुजब नहीं खाणेवालेके बाहरकी खुली हवा खाणी चहिये सो नहीं खावे बंध कमरेमे पडारहे तमाखूका बहोत वरताव करणा (ये भी नरवस हेड एकका कारण है) (इलाज) आराम तथा नींद—कपूरके पाणीमें सालवोलेटाइल पीणा ऊपर लिखी जो आदते उसका सुधारा करणा चा काफी पीणेवालोने दूध और पाणी पीणा ऐस आराम अथवा अति उद्यम नहीं करणा बैठे रहणे वालेने हमेस खुली हवामें थोडा फिरणा तमाखूके व्यसनका त्याग करणा अथवा कम करणा और मसालादार तेज खुराकका त्याग करणा सादा और पथ्य भोजन करणा.

(आधाशीशी) भमारेका दरद मेलेरियाकी जहरी हवासे शिरमे ढढके बुखारकी

तरे टेमोटेम दरद सुरू होता है सब दिन अथवा थोडी देरसे अच्छा होता है, किसी २ वखत दरद जादा होता है, अजीर्णसेभी आधासीसीका रोग होता है, वेर २ गर्भ रहणेसे वहोत दिनों तक बच्चेकू चुघाणेसें वहोत ऋतु धर्ममें खून जाणेसे नाताकत औरतोंकूभी ये रोग होजाता है, इस रोगमें औरभी कष्ट देणेवाले अहवाल होते हैं, रोगी फजरसे ही शिरका दर्द लेकर उठता है, खाये जाता नहीं शिर धडकता है, बोलणा चालणा अच्छा नहीं लगता चहरा फीका आंखकी कीकी सुकुडाती है शिर गरम होता है, ठंढा उपचार सें शांति होति है रोगीकू दुसरी गडबड अच्छी नहीं लगती.

(इलाज) इस रोगका मुख्य कारण मेलेरिया याने जहरी हवा है, इसवास्ते किनाइन अच्छी है,तीन २ घटेसे ५ ग्रेण देणा और दस्तकब्जी होय तो जरूरीपर जुलाब लेणा होजरी लीवर तथा आंतरोंका विकार होय तो दस्तकू साफ कर पौष्टिक दवा देणी औरतोंके रोगमें मुख्य करके प्रदर रोग होता है, वो मिटाणा लिंटके टुकडेपर क्लोरो-फार्म छांटकर दरदकी जगेपर धरणा उसपर घडियालका काच धरणा अथवा कनपट्टीपर छोटी सी राईकी पट्टी मारणी गरम सेकसेंभी फायदा होता है, लेकिन् जादा करके ठंढा इलाज वहोत फायदा करता है, बरफ धरणा दशांग लेपका शिरपर मालिस करणा लवेंडर अथवा कोलनवोटरमें दोभाग पाणी मिलाकर उसमें कपडा भिगाकर शिरपर धरणा गुलाबजल अथवा गुलाबजलके संग चंदण घसकर अथवा सांभरका सींग घस कर लगाणा नवसादर चूना अमोनिया सूंघणा पांवोंकू गरम जलमें रखणा शिर दबाणा घीके संग १ ग्रेण ओफर्या मिलाकर सुंघणा भमारे पर दो जोकलगाणी नकछींकणी सूंघणी सूरज उगणेसे पहली तुलछी तथा धतूरेके पत्तोंका रस सुंघणा ताजी जलेबी या ताजा खोवा खाणा नींबगिलोयका हिम पीणा अमृतवटी दूधके संग सुबे पीणी ए सब इलाजभी करणेमें आवे अगर जो दस्तकी कब्जी होयगी अथवा पाचन क्रियामें कुछ विगाड होगा तो दरद मिटणेका नहीं इसवास्ते दुसरे सब इलाजोंके संग दस्त साफ आणेकी दवा देते रहणा

(मगज संबधी शिरका दर्द) आगे लिखे शिरके दरदके प्रकारोंसे ये प्रकार बिलकुल जुदा है, जादावडी ऊमरके आदमियोंके शिरमें खूनका जोस चढणेसे होता है, सख्त दुखणेमें शिरमें सटके चलते है, आखें लाल होती है चहरा तेजी भरा होता है, शिरके आरपार खिंचता होय एसा मालम देता है, वेर २ श्वास तथा बुखारभी आजाता है—इलाज—जुलाब गरम खानपानसे बचणा पथ्य और उन मानमुजब खाणा सूरजकी धूपसे दूर रहणा थोडी कसरत मगजकू महनत नहीं देणा ये सब जरूरका इलाज है, सख्त दरद होय तो शिरपर ठंढा इलाज करणा (नं० ५२९ का लोशन) कानके पिछली तरफ आठदश जोकलगाणी देशी वैद्यक शास्त्रमें शिरके रोगका वहोत भेद किया

है–वायु, पित्त, कफ, सन्निपात, खूनका, रशक्षयका, कृमियोंका, सूर्यावर्त्त, (सूर्य चढणेके साथ शिर दूखेसो) अनतवात, (त्रिदोषका शिरोरोग) (शखक कनफटीका भयंकर शिरोरोग) अर्धाव भेदक, (आधा शिर पकडेसो)

(शिरके दर्दका इलाज) कितनेक तो पीछे लिखे हैं अब औरभी लिखते हैं, सोभी फायदे वद है, सोवेरका धोया घी शिरपर भरणेसे अथवा केशर मिश्री वकरीके दूधके साथ चंदन घस नास देणेसे पित्तका शिर मिटता है, २ सूंठ मिरच पींपर करंज और सहजणेकी छाल उसकू वकरीके मूतमें पीस नाकसे सूघणा अथवा नींवोलीका तेल सुघणा उससे कृमि पडणेसे भया शिरोरोग मिटता है, ३ भांगरेका रस और वकरीका दूध सम वजन मिलाकर धूपमें गरम कर नाकमें सुंघणेसें सूर्यावर्त्त रोग मिटता है, ४ आधाशीशीके रोगमें पहली घी पीणा वाफ पाणीकी अथवा नास लेकर पसीना लाना पीछे जुलाव लेणा सुगंध धूप लेणा और घीका गरमा गरम पदार्थ खाणा वायविडग और काला तिल सम वजन दूधमे पीस लेप करणा उसहीकी नास देणी ५ दारू हलदी हलदी मजीठ नीमकी छाल वाला और पदमाखका लेप करणा ठंढे पाणीसे ठंढे दूधसे सींचणेसे और वड वगेरे दूधवाला झाडके छाल वगेरेका लेप करणेसे कनपटीका शिरोरोग शांत पडता है, ६–४ वाल जेठी मध और १ वाल वछनाग इनोका महींन चूर्ण कर राईके दाणे जितना सुघाणेसे सब शिरका दर्द मिटता है, ७ आकके पत्ते कपालपर बांधणा आकके फूलोका लेप, वालेका लेप, चदनका लेप, लोंगका लेप, सूठका लेप नवसादरका पोत्ता दशांग लेप, जायफलका लेप, गुलाब जलका पोता अगरका लेप करणा नकछींकणी तमाखू कायफल आदेका रस अगस्तियाका रस इत्यादिकोंकी नास लेणी (८ न० ६५०) ६५१) ६५२ तथा ६५३ का इलाज करणा (९ दांत तथा कानका रोगसे शिरका दर्द होय तो उसका इलाज करणा) १० धातूका गिरणा तथा प्रदरसे शिरमें दर्द होय तो वो रोग मिटाणेसे शिरका दर्द मिटेगा

शूल–चभका–चसक.

न्युरेल्जिकपेन.

शूलका रोग मज्जाततुओंके साथ सबध रखता है, वोवदनमें हरकिसी जगे होजाती है, जादा करके ये रोग कपालमे शिरमें दातमें और पसलियोमे होता है, रोग वहोत है, पेटकी शूल अथवा आंकसीसे इस शूलकू अलग गिणना

(कारण)–दांतके सडणेमेंसे इस रोगकी पैदाश होती है, खाणे पीणेकी गफलत और अपचेसे इस रोगकी पैदास होती है, औरतोके ऋतुधर्मका वे प्रमाण जाणेसेभी ये रोग होता है, मेलेरियाकी जहरी हवासेभी ये चसकेका रोग होता है

(लक्षण) शूल अथवा चभके चलते हैं,

(इलाज) कारणकू पहचाण इलाज करणा, शिरके दर्दका कारण या तो जहरी हवा या बदहजमी अथवा दांतका दरद अथवा औरतोके गर्भका विकार इत्यादिकही होता है, इसवास्ते कोणसा कारण है, सो निश्चय करणा, जो दांत सडा हो यतो निकलवा डालणा, अथवा अछा करणा, जो अजीर्णसे चसके चलते होय तो जुलाब लेकर खाणेपीणेसें पाचन क्रियाकू सुधारणी, जो ओरतोंके ऋतुधर्मके रोगसे शूल होय तो स्त्रियोंके प्रकरणमें लिखा सो इलाज करणा, जो मेलेरियासे होय तो क्विनाइन और लोहकीं दवाइ कर मिटाणा, गरम शेक करणा, राईका पलाष्टर मारणा (क्लोरोफार्ममें लींटका कपडा भिगाकर दरदकी जगेपर धरणा) (होमियोपथिकइलाज)–(चहरेकै अलग २ जगेके शूलपर) एकोनाइट आर्सेनिकम बेलाडोना कोस्टीकम कोलोसीन्थ ह्रायोसवामस लाईकोपोडियम नक्सवोमिका फोसफरस जांघ तथा पगके चसकेमे–एकोनाइट कोलोसिन्थ नक्सवोमिका पलशेटिला वगेरे वांसा तथा कमरके चभकेमे ब्रायोनिया कोस्टीकम लाइकोपोडियम नक्सवोमिका सल्फर छाती तथा पशलीके चसकेमे आर्निका ब्रायोनिया पल्सेटिला आर्सोनिक वगेरे

अपस्मार–मिरगी–फेफरा

एपीलेप्सी

कारण ये रोग औलादमे ऊतरता है, २ बहोत दारू नसेकी चीजें, ३ बहोत विषयाशक्तपणा उससे भया धातूका क्षय, ४ हथरश (मास्टर बेशन) से वीर्य पटकणेसे, ५ मगजकी व्याधि कृमिरोग गर्भाशयका रोग पेशाब पथरीका रोग बच्चोंके दांत फूटणेसें होता रोग धास्ती गुस्सा वगेरे कितनेक औरभी रोग इस रोगकू मदतगार है

(लक्षण) साधारण मृगीमे थोडी देर वे शुद्धी (बेहोसी) आकर रोगी जिस हालत में बैठा होय उसही हालतमें स्थिर हो जाता है, वो थोडीसी देरमें सावचेत होता है, किसी २ वखत बेहोसीके संग मू तथा हाथ पांवोकी नसें थोडी खैंची जती है, सावचेतीमें आये बादभी रोगी जरा मुरझा कर पीछे सुस्थ होता है, और पहले जो हालबीते हें उसका उसकू खयाल बिलकुल नही होता सख्त मिरगीमें रोगी जोरसे चीस मारकर बेहोस होकर जमीनपर गिरजाता है, हाथ पाव खिंचते हें, तणीजणेके सबब हाथपाव तथा सब बदन जोरसे तडफडता है, हाथकी अंगलिया टेढी होजाय श्वास घरड २ करता चले चहरा लाल होजाय बहोतसी वखत मू टेढा होजाय मूमेंसे झाग आवे आखके डोले चढजाय आख लाल होय दात खीली जोरसे बैठ जाय बीचमें जीभ आणेसे कट जाय, दस्त पेशाबभी किसी वखत अंदर होजाय किसीकू थोडी देरसे किसीकू कइ घटोसे पडे रहे बाद हाथ पावका तणाव नरम पडे तब रोगी भर नींदकी तरे

शांत और सुस्त होकर पडा रहै और उठे तब जाणे साधारण नींदमेंसे उठा होय एसा तनदुरस्ती दीखे किसीकू पूरी और किसीकूं अधूरी बेहोसी आती है, कोइ नीचे नहीं गिरता थोडी देर चक्कर आकर बैठे रहता है टग २ देखे करता है, आधा होस आधा बेहोस और खेंचताण वगेरे दुसरे निशांन नहीं दिखाइ देते, अपस्मारका हुमला बहुत करके अचिंता आता है, लेकिन किसी २ वखत इस रोगके पहलीसे कितनेक चिन्ह मालम देते हैं चहरा फिरा भया भूख कम खट्टीबो बुरी २ अवाज सुणाइदे तेरे २ के मनमें संकल्प उठे झुठे २ जजाल दीखे शिर दुखै आंखोंमें तरवाले उलटी हाथपर चिमटी अथवा मकडी चले एसा सलसलाट इत्यादि चिन्ह मालम देता है.

(इलाज) मिरगी आये पीछे रोगीकूं हर किस्मकी तकलीपसे बचाणे वास्ते उसका हाथपांव वगेरे पकडके रखणा शिरका तथा छातीका कपडा दूर करणा बदनपर कोइ तंग कपडा होय तो ढीला करना जीभ कटै नहीं इसवास्ते मूंमे नरम लकडी या सणके कपडेका डूचा देणा निलाडपर ठढे पाणीकी धीमे २ धार देणी आंखोपर पाणी छांटणा जो रोगीकू नींद नहीं आवै और बहुत लिवराइज जाता है, तब देशी वैद्य तो द्राक्षासव देते हैं डाक्टर ब्रांडी हमतो आंखोंमे कस्तूरी पेटमें अंबर कस्तूरी देते हैं. मालकागणीका तेल २ बूद दम २ में दूधमें डालकर पिलाते हैं. किसी तरे तेजीमें लाणा चाहिये २ मिरगीमें इतनी सभाल रखणी माफकसर थोडा भोजन योग्य कसरत उद्यम, नसेका त्याग, कबजी, कृमि तेसें रशखून, या कफका, वदनमे बहोत वढणा, इसका योग्य इलाज करणा स्त्रीके ये रोग होय तो ऋतुधर्म प्रमाणसर आवै एसा इलाज करणा जो रोगी नाताकत और चिडोकडे मिजाजवाला होय तो पौष्टिक दवायें देणी दस्त साफ रखणा शिर ठडा रखना पांव गरम रखणा मनमें चिंता नही रखणी कपडे ढीले पहरणा सराप और नहीं पचे एसी चीजोंका बिलकुल त्याग करना पाणीसे अगारसे और विषम जगेसें बचाव करणा ब्राह्मी शखाहोलीबच वगेरे पथ्य है दूध वगेरे मगज और बुद्धिकूं साफ कर्त्ता चीजें पथ्य है ३ पोटाश ब्रोमाइड–१० ग्रेणके प्रमाणसे सरू करणा दो औंस साफ पाणी डालकर पीणा इस मुजब दिनमे तीन वखत दससे तीस ग्रेण तक वढाणा तीन २ दिनसें दो दो ग्रेण वधाणा ये दवा बहोतसे रोगीयोंकूं फायदा करता है, इससे फायदा नहीं होय तो ये दवायें लेणी ४ स्ट्रीकन्या–अथवा नाइट्रेट ओफ सिल्वर ये दवायें जहरी है, बहोत थोडी और बुद्धिवानोंकी सलासे लेणी (५ न० ६५९) ६६०) ७३३) ७३४) ७३५) २३४) २९३ वाली दवायोंमेंसें मुनासिब समझ इलाज करणा मगजकू पुष्टि देणेवाली दवा पृष्ट १८२) शीतल मिरच मालकांकणी और पहले लिखी जडीबूटी ब्राह्मी वगेरेका साधन पथ्यसें बहोत दिनोंतक किया जावेतो मिरगी जरूर जाते रहती है–(अमृतवटी)–पहले देहकू जुलाब वगेरेसे साफकर दूध भातके पथ्यसे हमारी

दवा अमृतवटीका सेवन करे तो कष्टसाध्यतक मिरगी मिट जाती है, (७ होमियोपथिक इलाज)–(तेज और नइ मिरगीमे)– इग्नेसिया हाइड्रोस्यानिक एसिड, पुराणी मिरगीमें वेलाडोना, कुप्रम केलकेरिया ओपियम)–(कृमिजन्य मिरगीमें)–सीक्युटां और सेन्टोनाइन देणा

आंचकी–खेंचाताण–वांइटे–

कनवल्शन्स

(कारण)–आंचकी ये कोइ स्वतत्र रोग नही है, मिरगी हिस्टरीया धनुर हडक वायु वगेरे रोगमे वदनकी नसोंमे खेचाताण होजाता है, वचोंके वेर२ खेंचाताणका रोग होजाता है, उसका मुख्य कारण कृमिरोग है, (वचोंके खेंचाताणका वर्णन किरण ११ मीमें किया है सो देखो) गर्भणी स्त्रीओके बचा जणणेके पहले और जादा करके लडका भये पीछै खेंचाताण होजाता है, जखमसे अथवा दुसरी तरे वहोत खून जाणेसे मगजकूं पूरा पोषण नहीं मिलनेसेभी खेंचाताण होता है, मगजमेंकी कोइ खूनकी नली वंध होनेसें मगजकू धका लगनेसे खोपरी फूटणेसे मगजमें खून झरणेसे खून विगडणेसे बुखारसे तथा जहर खाणेसे खेंचाताण होजाता है, नाताकती तथा बुखारमें कुपथ्य होणेसेभी वाइटे खेंचाताणका रोग होता है, ये सब कारण तंतुओंमें विगाड करता है उन ततुओंका सबंध मगज तथा करोडरज्जूके साथ है

(लक्षण)–सब शरीर या हाथपाव खिंचते है चहरा खराव होजाता है दांत जकड जाते हैं, यानें जुड जाते हैं जुवान बाहर निकल आती है, आखोंकी कीकी वडी होती है, श्वास कबूतरकी तरे घुटता है बेहोस हो जाता है, खेचाताण वध होनेसे रोगीकू नींद आजाती है किसी २ वखत खेंचाताण होकर वध होता है, और किसी २ वखत वेर २ होता है और वध होता है

(इलाज)–मिरगी रोगमें लिखे सब इलाज करना मूपर ठडा पाणी छाटणा आमोनिया सुघाणा जुलाव देणा दातखिली वध गई होय तो बैठकमें पिचकारी मारणी शिर गरम होय तो पाणीका पोता यावरफधरणा पोंचेपर पींडीपर राईकी पट्टी मारणी अथवा कनपट्टीपर विलाष्टर मारणा

(२)–पोटाश ब्रोमाइड हामोस्पामस अफीम क्लोरल वगेरे इस रोगमें फायदेवद है, ३ कृमिघ्न दवायें पृष्ट ३१६) तथा मगजकू पुष्टी देणेवाली दवायें पृष्ट ३१७) त्रिफलादि काथ न० २१० वायविडंग तथा पींपरका चूर्ण डालकर देणा ५ अफीम एलिया कर्पुर कस्तूरी वगेरे दवायें रोगीका बलाबल देखकै देणा तब खेंचाताणका दरद कम पडता है.

शांत और सुस्त होकर पडा रहै और उठे तब जाणे साधारण नींदमेंसे उठा होय एसा तनदुरस्ती दीखे किसीकू पूरी और किसीकू अधूरी वेहोसी आती है, कोइ नीचे नहीं गिरता थोडी देर चकर आकर वैठे रहता है टग २ देखे करता है, आधा होस आधा वेहोस और खेंचताण वगेरे दुसरे निशांन नहीं दिखाइ देते, अपस्मारका हुमला वहुत करके अचिंता आता है, लेकिन किसी २ वखत इस रोगके पहलीसे कितनेक चिन्ह मालम देते हैं चहरा फिरा भया भूख कम खट्टीवो बुरी २ अवाज सुणाइदे तरे २ के मनमें संकल्प उठे झुठे २ जजाल दीखे शिर दुखे आंखोंमें तरवाले उलटी हाथपर चिमटी अथवा मकडी चले एसा सलसलाट इत्यादि चिन्ह मालम देता है

(इलाज) मिरगी आये पीछे रोगीकू हर किस्मकी तकलीपसे वचाणे वास्ते उसका हाथपांव वगेरे पकडके रखणा शिरका तथा छातीका कपडा दूर करणा वदनपर कोइ तंग कपडा होय तो ढीला करना जीभ कटै नहीं इसवास्ते मूंमे नरम लकडी या सणके कपडेका डूचा देणा निलाडपर ठंढे पाणीकी धीमे २ धार देणी आंखोपर पाणी छांटणा जो रोगीकू नींद नहीं आवे और बहुत लिवराइज जाता है, तब देशी वैद्य तो द्राक्षासव देते हैं डाक्टर ब्रांडी हमतो आंखोंमे कस्तूरी पेटमें अंबर कस्तुरी देते हैं मालकागणीका तेल २ बूद दम २ में दूधमें डालकर पिलाते हैं किसी तरे तेजीमें लाणा चाहिये २ मिरगीमें इतनी सभाल रखणी माफकसर थोडा भोजन योग्य कसरत उधम, नसेका त्याग, कबजी, कृमि तेसें रशखून, या कफका, वदनमें बहोत वढणा, इसका योग्य इलाज करणा स्त्रीके ये रोग होय तो ऋतुधर्म प्रमाणसर आवे एसा इलाज करणा जो रोगी नाताकत और चिडोकडे मिजाजवाला होय तो पौष्टिक दवायें देणी दस्त साफ रखणा शिर ठडा रखना पांव गरम रखणा मनमें चिंता नही रखणी कपडे ढीले पहरणा सराप और नहीं पचे एसी चीजोंका बिलकुल त्याग करना पाणीसे अंगारसे और विपम जगेसें बचाव करणा ब्राह्मी शखाहोलीवच वगेरे पथ्य है दूध वगेरे मगज और बुद्धिकू साफ कर्त्ता चीजें पथ्य है ३ पोटाश ब्रोमाइड–१० ग्रेणके प्रमाणसे सरू करणा दो औंस साफ पाणी डालकर पीणा इस मुजब दिनमें तीन वखत दससे तीस ग्रेण तक वढाणा तीन २ दिनसें दो दो ग्रेण वधाणा ये दवा वहोतसे रोगीयोंकू फायदा करता है, इससे फायदा नहीं होय तो ये दवायें लेणी ४ स्ट्रीकन्या–अथवा नाइट्रेट ओफ सिल्वर ये दवायें जहरी है, वहोत थोडी और बुद्धिवानोंकी सलासे लेणी (५ न० ६५९) ६६०) ७३३) ७३४) ७३५) २३४) २९३ वाली दवायोंमेंसें मुनासिव समझ इलाज करणा मगजकू पुष्टि देणेवाली दवा पृष्ट १८३) शीतल मिरच मालकांकणी और पहले लिखी जडीबूटी ब्राह्मी वगेरेका साधन पथ्यसें वहोत दिनोंतक किया जावेतो मिरगी जरूर जाते रहती है–(अमृतवटी)–पहले देहकू जुलाब वगेरेसे साफकर दूध भातके पथ्यसे हमारी

दवा अमृतवटीका सेवन करे तो कष्टसाध्यतक मिरगी मिट जाती है, (७ होमियोपथिक इलाज)-(तेज और नइ मिरगीमें)- इग्नेसिया हाइड्रोस्यानिक एसिड, पुराणी मिरगीमें बेलाडोना, कुप्रम केलकेरिया ओपियम)-(कृमिजन्य मिरगीमें)-सीक्युटां और सेन्टोनाइन देणा.

आंचकी-खेंचाताण-चांइंटे-

कनवल्शन्स

(कारण)-आंचकी ये कोइ स्वतत्र रोग नहीं है, मिरगी हिस्टरीया धनुर हडक वायु वगेरे रोगमें वदनकी नसोंमे खेंचाताण होजाता है, बच्चोंके बेर२ खेंचाताणका रोग होजाता है, उसका मुख्य कारण कृमिरोग है, (बच्चोंके खेंचाताणका वर्णन किरण ११ मीमें किया है सो देखो) गर्भणी स्त्रीओंके बचा जणणेके पहले और जादा करके लडका भये पीछे खेंचाताण होजाता है, जखमसे अथवा दुसरी तरे बहोत खून जाणेसे मगजकू पूरा पोषण नहीं मिलनेसेभी खेंचाताण होता है, मगजमेंकी कोइ खूनकी नली बध होनेसें मगजकू धका लगनेसे खोपरी फूटणेसे मगजमे खून झरणेसे खून विगडणेसे बुखारसे तथा जहर खाणेसे खेंचाताण होजाता है, नाताकती तथा बुखारमे कुपथ्य होणेसेभी चाइटे खेंचाताणका रोग होता है, ये सब कारण ततुओंमें विगाड करता है उन ततुओंका सबध मगज तथा करोडरज्जूके साथ है

(लक्षण)-सब शरीर या हाथपाव खिंचते हैं चहरा खराव होजाता है दांत जकड जाते हैं, यानें जुड जाते हैं जुवान बाहर निकल आती है, आखोंकी कीकी वडी होती है, श्वास कवूतरकी तरे घुटता है बेहोस हो जाता है, खेचाताण बध होनेसे रोगीकू नींद आजाती है किसी २ वखत खेंचाताण होकर बध होता है, और किसी २ वखत बेर २ होता है और बध होता है

(इलाज)-मिरगी रोगमे लिखे सब इलाज करना मूपर ठडा पाणी छाटणा आमोनिया सुघाणा जुलाब देणा दातखिली बध गई होय तो बैठकमें पिचकारी मारणी शिर गरम होय तो पाणीका पोता यावरफधरणा पोचेपर पींडीपर राईकी पट्टी अ कनपट्टीपर बिलाष्टर मारणा

(२)-पोटाश ब्रोमाइड हामोस्पामस अफीम क्लोरल वगेरे इस है, ३ कृमिघ्न दवाये पृष्ट २१६) तथा मगजकू पुष्टी दे त्रिफलादि क्वाथ न० २१० वायविडग तथा पींपरका एलिया कर्पुर कस्तूरी वगेरे दवायें रोगीका कम पडता है.

उन्माद–पागल–दिवाना.

इन्सेनिटी–मेनिया.

मनका चंचलपणा बुद्धि अक्कल या ज्ञानका थोडा या वहोत नाश होना उसकू उन्माद कहते है जिसमें मनका भ्रम होता है, (प्रकार)–उन्माद रोगका मुख्य तीन प्रकार है (१ चित्त भ्रम)–इसतरेके उन्मादमें अदमीकी विलकुल अक्कल जाती रहती है मनमे तरगै उठती है वकता है तोफान करता है, जुदे२ सन्निपातमें रोगीका जैसा अहवाल होता है एसे हाल चित्त भ्रममे होते हैं, अथवा चित्तभ्रम है सो सन्निपात है, रोता है कोइ गाता है कोइ नाचता है कोइ मारणे दोडता है, नींद नहीं आती खाणेकी पीणेकी दस्त या पेशावका खयाल नहीं रहता (२ उदासीपणा)–इस उन्मादमें अदमी विलकुल पागल नहीं होता लेकिन् किसी कारणसे चित्त भ्रमित होता है, ससार परसे प्रीति उडजाती है, और वैराग आता है तव जोगी फक्कडसामी सरडेकी गप्पोसे मुक्ति पहुचे चाहता है लेकिन् अकलमे भ्रम होनेसे इतना विचार नहीं रहता के मुक्ति क्या नजीकही है अथवा इन वेवकूवोकी अज्ञान कष्ट क्रियासे दोनो भवविगाडणा है तव वे विचारसे उसकू जीणा व्यर्थ मालम देता है मनमें एसा विचार किसी २ वखत किया करता है के मेनै वडे २ अघोर पाप किये हैं इसवास्ते वो अपघात करनेका उद्यम् करता है कोइ धर्म दिवाना होता है कोइ आपअपणेकों राजा समझता है, कोइ वहोत दारूवाज जैसा कोइ हलालखोर होकर भटकता है कोइ वेफिकरा भटकता है कोई फिकरमें गरकाव होता है, कोइ वोलताही नहीं एसे अनेक लक्षण है.

(३ बुद्धिका नाश)–इस तरेके उन्मादमें वुद्धि नाताकत हो जाती है वो कभी निरात कर वैठता नहीं विनाकारण वकता है गाता है वहोत चलता है हरकोइ काम नहीं करणेका करलेता यादकुछ नही रहता सुख दु:ख हर्ष शोक प्रीति अप्रीतिका होस नहीं रहता बुढापेमेभी बुद्धिका नाश होता है ये एसा उन्माद नहीं मिटता

(कारण)–उन्माद रोग होणेके वहोतसे हे २ पागलकी ओलाद पागल होय २ अपणे गोत्रमें अथवा सवधियोसे विवाह करलेणा ३ वहोत सराप पीणेका व्यसन ४ अफीम तमाखू गांजा वगेरेसे ५ वहोत भोग करणेसे अथवा हथ रससे ६ वडा नुकशान होणा प्यारे [illegible] मरणा पैसाकी नुकशानी शोग फिकर डर वहोत एकाएक फायदा [illegible] मिलणा ७ मगजकू वहोत महनत या मगजमें कोई किस्मका रोग इत्यादि कारण उन्मादकें हैं.

(इलाज [illegible] उन्मादके रोगसे [illegible] एक पशूसेभी जादा खराव हालतमें जागिरता है देखणेसे दया [illegible] है [illegible] करता है इसवास्ते अग्रेज सरकार उनोंके [illegible] है उस जगे पागलोंको

रोककर रखते हैं सोतो अच्छा है लेकिन् जैसें इनोंका तोफान रोकते हैं, तैसें इनोका इलाज करके अच्छाभी करणा चाहिये लेकिन् अपसोसकी वात है के उस जगे वो के दियोंसेभी जादा बुरी हालतमें जिंदगी गुजारतेहैं उनोंके लायक इलाज करणेमें आता होय एसा मालम ,तो नहीं पडाके जिससे वो अच्छे होजाय वोविचारे)—मैड हाउसमें कगालों- कीतरे जिंदगी पूरी करते हैं सरकार कहेगी उनोकू अच्छे करणेकी कोइ दवा नहीं है सच है अग्रेजीमें एसी दवा नहीं होगी लेकिन् आयुर्ज्ञानार्णवमें उनोके वास्ते बहोत असरकारक इलाज मोजूद है, फक्त अग्रेजी वैद्यकका आधार रखके सरकार आयुर्ज्ञाना- र्णव जैसा उत्तम इलाजोंके सग्रहकू भूल नहीं जाणा चहिये बहोतसे डाकटर लोक देशी इलाजोंके तरफ अभाव नजर रखते है, लेकिन् एसे करणेसें वो लोक ज्ञानकी वढोतरी पर एक तरेका पडदा डालणे जैसा करते हैं,), उन्मादरोगका साधारण इलाजोमें नसोंको ढीली करे एसी दवा अच्छी है इस इलाजसे जोर कम पडता है और नींद आती है वो दवा अफीम भग क्लोरल हाइड्रेट पोटाश ब्रोमाइड कोनायम क्लोरोफार्म डिजीटे- लिस और सल्फोनलमुख हे) २ मिरगी तथा वांइटेके रोगमें लिखी दवाये उन्मादमें फायदेचद है) ३ मगजकू ताकत देणेवाली सब दवायें इस रोगकू अच्छी है एसी दवा देशी वैद्यक शास्त्रमें अनेक और बहोत अच्छी२ है, लेकिन् प्रतीति और युक्तिसे देणेकी कसर है, (४ सोना)—उन्मादकेवास्ते अच्छा है सोनेकी भस्मी, वर्क, सोनेका उकाला पाणी दवा है मगजकूं फायदा पोहचाता है सुवर्णवशतमालती जिसमें सोना होता है वो चित्त भ्रममें मगजकू शोधन पोषण करती है) ५ ब्राम्ही भूराकोला शखा- हुली, गूगल मोलेठी शतावर वच आवले ये सब मगजके रोगमें अच्छा फायदा करती है उनोकी अलग २ बनावटें प्रसिद्ध है वज एक साधारण चीज है मगर मगजकू अद्भुत ताकत देती है इय वातकू बहोत नहीं जाणते हैं. (६ अमृतवटी)—बुद्धि और मगजकू सुधारती है खिसेभये मगजकू ठिकाणे लाती है, ७ आहार विहार और उत्तम दवा इनोसें बिगडा भया चित्त ठिकाणे आता है जैसे गाजा सराप भग बुद्धिकू भ्रष्ट करती है तेसें उपर लिखी दवायें बुद्धिकू सुधारती है इसमें आश्चर्यही क्या है, इस उन्माद रोगका सपूर्ण व्याख्यान करे तो ससारके बहोतसे लोक उन्मादी है, बुद्धिका विषमपणा चचल- पणा अस्थिरपणा और बुद्धिका हीन मिथ्या या अतियोगसे होते भये सर्व नुकशान- कारक कार्योंमें बुद्धिका उन्माद प्रत्यक्ष मालम देता है, बुद्धिका सर्वांसमे शुद्धपणा और समानपणा थोडेही भाग्यवान आदमियोमे मालम पडेगा बाकी सब थोडे या बहोत असे उन्मादी है और अयोग्य खान पान बुद्धिकू भ्रष्ट करणेवाले व्यशन बुद्धिकू नाश करणे- वाली दवा एसे २ अनेक विरुद्ध आचरणसे उन्मादी बहोत बढ गये हैं जो लोक सादा- ईसे रहे सादा खानपान लेवे व्यसनोसे दूर रहे उत्तम और शात गुणीकी दवाई तेसे

शांत सत्तोगुणवाला आहार और विहारका सेवन करे तो बुद्धिसम और ठिकाणे रहे तब वो जगतमें न्याई सब काम अच्छाही करै तब जगतमें सुख संपत्तकी वृद्धि होय और क्लेश व्यग्रता बुद्धिका चचलपणा आपसेही वध होजाय जिस अदमीकी बुद्धिका प्रकाश बहुत देखणेमें आवे तो समझणाके अतियोग भया वो बुद्धिभी आखर उन्मादपणमें जाती है बुद्धि अथवा मनकी समानता उसहीका नाम ज्ञान अथवा स्याणापणा वो मुक्तिका साधक और संसारका साधक जाणना चाहिये.

पानात्यय–मदात्यय–सरापके रोग.

इस सराप पीणेकी पृथा अनादि और इंद्री सुखोंमे मग्न एसे विवेक शून्यपणसे लोक पीते चले आये युगलिये सब सराप पीते थे एसा जैनियोंके शास्त्रोंमें लिखा है, कल्पवृक्ष उने देताथा पाप पुन्यका स्वरूप वो कुछ नहीं जाणतेथे बाद ऋषभदेवजीने हित अहितका विचार कर सब युगलकोंकों मदिरा छुडाई इक्षुका रस पिलाया तबसे इक्ष्वाकु वंश जाहिर भयाबाद पचास लाखकोडि सागरोपम वर्ष बीतेबाद सराप पीणेका शिलशिला दवाके वरतावेमें ब्राम्हण ऋपियोंने फेर नई कला सरूकी उनोका नाम इस मुजब धरा प्रशन्ना, चद्रहास, माध्वी, सुरा, पिष्टा आदि वो इस वखत नाम प्रसिद्ध नहीं है फेर तो मजेमें पडके राजा लोकोने अनेक तरेके दारू वणवाये लेकिन् दारूके अतिशय व्यशनमे भ्रम और बुद्धिका नाश होता है, उसकूं मदात्यय कहते हैं, सरापके अगले नाम इस वखत प्रसिद्ध नहीं है लेकिन् इस वखत अंग्रेजीके प्रसिद्ध नाम लिखते हैं, वाइन लीकर स्पिरीट ब्रांडी रम जीन पोर्ट व्हिस्की शेम्पेन बीयर शेरी और देशी सराप ताडीका रस जिसकूं सस्कृतमें सीधू मद्य लिखा है इन सब सरापोंमे एक तरेका जहरी पदार्थ होता है, जिस्कू अग्रेजीमें आल्कोहोल कहते हैं जिस सरापमें ये पदार्थ जादा होगा वो जादा जहरी और नुकशान जादा करेगा दारू पीणेमें बावन खराबी है जैन तत्वादर्श ग्रथ देखो (लक्षण)–बेचेनी नींदका नाश चूआ साफ और भूतोंकी झुठी चित्तमें कल्पना करे झबककर उठे जीभ बाहर निकल जावे और धूजे दांत पीसे नाड धीरी चले और वहोत पसीना किसी वखत सुस्त पडा रहै किसी वखत बडबडाट करे किसी वखत झट मूठ वस्तु देखकर झबक उठे अच्छा होणेका होय तो नींद आकर तीसरे या चोथे दिन अच्छा होकर उठै नहींतो बिलकुल नींदका नाश बडबडाणा बेहोस और आखर मरणा ये वाममार्गियोंकी मुक्ति है क्योंके उनोके आगम प्रकाश ग्रंथमें लिखा हैं पीत्वा २ पुन.पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते इसवास्ते वो मतावलबी इसकूं अमृत मानते हैं देशी वैद्यक शास्त्रमें ये रोग मुख्य चार प्रकारका है. (१ मदात्यय) (२ परमद) (३ पानाजीर्ण) (४ और पानविभ्रम)–(१ मदात्ययके लक्षण)–प्रमेह रिदयमें दरद अरुचि प्यास ज्वर शिरमें पशवाडोंमें तथा साधोंमें खेंचणे जैसा दरद वहोत वगासी अंगोका फरकणा कंप

महनत छातीका जडपणा खासी हिचकी श्वास अनिद्रा उलटी दस्त उबाकी भ्रम चकणा भयकर दिखाव और खराब स्वप्न (२ परमद)—कफका क्षय अगोमे भार मूमे वे स्वाद दस्त पेशाबकी कब्जी मींट प्यास अरुचि शिरमें दर्द सांधोमें हड फूटणी (३ पाना-जीर्ण)—मद्यका अजीर्ण होय तब आफरा उलटी डकार दाह तथा पित्तके प्रकोपका सब लक्षण होय (४ पानविभ्रम)—रिदय तथा दुसरे अवयवोमे दरद कफ कठमे धूआं मूर्छा उलटी शिरमें दर्द मूमे कफ भूख नहीं लगे—(असाध्य लक्षण)—ऊपरका होठ छोटा होजाय बहोत ठढ बहोत दाह, जाडी तेल जैसी चकचकती जीभ, होठ और दात काला आंखे पीली तथा लाल रगकी होय हिचकी बुखार उलटी कापणी पशवाडोंमे शूल खासी और भ्रम

(इलाज)—किसी २ वखत जुलाब पहली देणा चहिये चहरा लाल रग होय जीभ मैली होय खराब, वदबोवाला, श्वास होय तो और बहोत खाया पीया भया होय उसकू जुलाब जरूर देणा जोये चिन्ह नहीं होय तो पोषणकारक और अच्छे पतले खानपानसे रोगीकू रखणेकी जरूरी हे इस मदिरासे भये रोगमें जैसा पथ्यसें फायदा होता है वेसा दवासे फायदा नही होता इसकू वेर २ थोडा २ खुराक देणा जो रोगी बहोत लिवरी-जगया होय नाडी बिलकुल नाताकत मालम दे तो उसकू थोडा द्राक्षासव अथवा डाक-तर लोक दूधमे ब्रांडी देते हैं मदिरासे भये रोगमें मदिरा कुछ फायदा और ताकत देती है सही लेकिन् असली फायदा नहीं देती इसवास्ते ताकत लाणेकू दूध विदाम गूदकीरई इत्यादिक अच्छी पुष्टीदार चीजें देणी २ तृप्तिकारकरस जैसें खजूर फालसा अनार वगेरे मीठे पदार्थोंका रस मिश्री तथा सहतडालकर पिलाणा अनार तथा आवलेके रशमें दूध मिलाकर पिलाणा मीठा डाल रांधे भये चावलोंमें दूध डाल खिलाणा मिश्री सहत वगेरे मीठे रश दूध मखण मलाई दूधपाक श्रीखड शरबत तथा सब शीतल और तृप्ति करणे-वाले इलाज करणा

किरण ७ मी.

आंख–कान–नाक–दांतके रोग.

आख कान तथा नाकके अवयव बहोत बारीक और अद्भुत नाम कर्मकी रचना-वाला होणेसे उसमें अनेक रोग होते हैं (आखके रोग)—आखके रक्षा करणेका प्रयत्न थोडा लिखते हैं (उजाला)—आखपर सीधी लकीरपर आणेवाला ये उजाला आखकू नुकशान करता है, जादा प्रकाशके तरफ ताककर देखणेसे आखोंकों ताण २ के वाचणेसे या लिखणा वगेरे काम करणेसे आखे नाताकत होती है, सूर्यके धूपमें कभी बेठणा नहीं मूके सामने चराक धरकर कभी वाचणा लिखणा नहीं, (चस्मा)—शोखसें चस्मा लगाणेका प्रचार बढ गया है इससे, नजर नाताकत होती है

और आंखके रोग होते हैं, आंखका कोइ रोग या कमनजर होय तब चस्मा लगाना चाहिये तोभी आंखके डाकटरकी सल्ला लेकर आंखकी शक्तिमुजब लगाना, (अंजन)- जेसे फ्रान्स देशमे शोभाके वास्ते आंखोंकी कीकीयें वडी करणेकू वेलाडोना वापरणेका कुचाला पडा है तैसें इस देशमें शोभाके वास्ते सुरमा तथा काजल डालणेका नुकशानी- कारक चास पडा भया है बचोंकेभी डालते है काजल सुरमेंसे आंख अच्छी तो दिखती है लेकिन् जादा फायदा होता नहीं दिखता जिसकू जुलाब देणेकी जरूरी नहीं उसकुं जुलाब देणेसें शरीरकु जितना नुकशान होता है इतना नुकशान साजी अच्छी आंखमे काजल सुरमा डालणेसें होता है वैद्यक शास्त्रके हुकम मुजब बनाये भये काजल सुरमे तथा अंजन आंखके दरदमे अच्छा फायदा करती है लेकिन् अच्छी आंखमे सिणगारके वास्ते अजन करणा बिलकुल अच्छा नहीं इस देशके अदम्योंकी चालीस वर्ष पीछे आंखे बिलकुल नाताकत हो जाती है इसके सब एसेही कारण है इसवास्ते कुटुंबमें जो वडेरे होय उनोकों चाहिये ऐसे खोटे रिवाजोंकों बंधकर देना नहींतो आखर अवस्थामें जरूर नुकशान होगा (मगजकी रक्षा)--आंखोंके सुधारेका वहोतसा आधार मगजपर है, मगजकू हमेशा ठढा रखणा जो मगजमें जराभी गरमी मालम दे तो उसकू ठढा करणा शिरपर गरम पाणी कभी डालणा नहीं स्नान करते तैसे फजर साझ शिरपर ठढा पाणी छांटणा डालणा (धातूकी रक्षा)--हथरस और वहोत विषय सेवणाये दोनों एब आंखोंकों वहोत नाताकत पटकणेवाले है लडकोंकी छोटी ऊमरमें आंखें नाताकत पडती है उसका असल मतलब ऊपर लिखी दो वाते हैं धातूका वचाव वीस वीर्षकी ऊमरतक होणा चहिये वाद सोले वर्षकी कन्यासें ऋतुचर्यामुजब दूध और पुष्ट पदार्थका हमेसा साधन करता भया शक्ति मुजब ससार साधे (आंखके रोगोंका इलाज)--(आंख दुखणी)- आंखमें थोडा या वहोत सोजन आती है तो उसकू आंख आई कहते हैं आंख बहोत जोरसे दुखे उसमेसे पीप निकले और उसका जलदी इलाज नही करे तो उसमें फूले पडते हैं और डोले फूट जाते है (पोता)--साधारण आंख दुखे तो आंखोंपर पोते धरणेसे आराम होजाता है, १ गुलाबजलमें भिगाया भया कपडा २ दूध अथवा दूध और पाणी ३ स्युगरलेड ८ ग्रेण पाणी २ औंस मिलाकर पोता धरणा (बूंद)--नीचे लिखी दवायोंकी बूंदे सोजेकू उतारती है ललाईकू मिटाती है, ५ त्रिफलाके उकालीकी बूंदे ६ औरतके दूधकी बूंदे ७ झिंक सल्फस ४ ग्रेण पाणी १ औंस ८ नीलाथोथा २ ग्रेण पाणी १ औंस ९ टेनिक एसिड २० ग्रेण ग्लिसेराइन् २ ड्राम पाणी ६ ड्राम १० फिट- कडी ३ ग्रेण पाणी १ औंस ११ स्युगर ओफ लेड ३ ग्रेण पाणी १ औंस १२ टेनिक एसिड ३ ग्रेण पाणी १ औंस हमेश दोचार वखत बूंदे डालणी मिलाणेके वास्ते पाणीके बदले गुलाबजल अथवा वरसादका झेला भया साफ पाणीका असर बहोत अच्छा होता है,

दरदके जोरमुजब ऊपर लिखी दवाइयोमें कमवेशी कर सकते हैं पाणीमें जादा दवा डालणेसे जादा असर करती है लेकिन् साधारण दुखणेमें सख्त दवा उलटी नुकशान करती है, शेक-१४ शेक जादा करके दिनकुं करणा दरद जादा होय तो रातकूभी करणा ताकतदारकू गुलाब जल वगेरे ठंढे पाणीका शेक करणा और नाताकतकू पोस्तकेडोडे उकाले भये पाणीका शेक करणा अथवा रोगीसे सहा जाय एसा सेक करणा १५ आंख वहोत दुखती होय और पीप निकलता होय और पोपचे सूज गये होय तो पोशकेडो-डेका शेक करके पीछे सील्वर नाइट्रेटके बूंदे डालणी सिल्वर नाइट्रेट १ से ३ ग्रेण और पाणी १ औंस १६ (पिचकारी) वहोत पीपके पडणेसे आंखके पोपचे मिलकर चिप गये होय तो गरम पाणीका या फिटकडीके पाणीकी अथवा जस्तके पाणीकी पिचकारी लगाणी अथवा रसकपूर १ ग्रेण नवसादर ६ ग्रेण पाणी ६ औंस इससें आंखोकों कपडेसें धोणी १७ (मलम) आंखकी भापणी चिप नहीं जाय वास्ते रातकू भाणीपके कोरपर घी अथवा सादा मलम अथवा सालिडका तेल वेसेलीन अथवा एरडीका तेल लगाणा (खील)-(टपोरिया) भांफणेके अंदर साबूदाणे जैसा छोटा २ सुपेद दाणा होता है उसकू खील कहते हैं भांफणेकू उथल कर देखणेसें वहोतसी वखत खील जैसे लाल दाणे दिखते है उनोकूं भूलसे टपोरिया कहते हैं भापणेकी खरदरीसे एसे दाणे दिखते हैं खील अथवा टपोरिया हमेस सुपेद होता है ये बात यादमें रखणी-(लक्षण) खील मेंभी आख आणेके कितने लक्षण होते है आख लाल होकर सूज जाती है पाणी झरता है उजाला सहा नहीं जाता आखमे ककर जैसा चुभता है और खटका होता है खील पुराणी होकर पीछे वेर २ आंख दुखणी आती है खील डोलेके सग वेर २ घसणेसे डोला झाका पडता है नजर मद पडती है भापण अदर झुक जाती है झांका वढजाता है और आख चूची होती है (इलाज) आंख दुखणेके सब इलाज खीलमेंभी फायदे-घद है, खीलके सख्त चिन्होमें (१ आट्रोपिन अच्छा है) वो १ से ४ ग्रेण और पाणी १ औंस इनोकी बूद थोडे दिन डालणी २-वेलाडोना १५ ग्रेण पाणी १ औंस ३ वाइट प्रेसीपीटेट ५ ग्रेण सादा मलम १ ड्राम इनोका मलम लगाणा ४ कास्टीकके बूंदे ५ नीलेथोथे कालीसा टुकडा खीलपर घसणा अच्छा इलाज है अथवा बूदे डालणी ६ टेनिक एसिडकी भूकी खीलपर दबाणी पुराणी खीलमे-७ धूमेंसे तथा उजालेसे वचणा आसमानी रगका चस्मा पहरणा-८ कास्टिककी बूदेडाल थोडे दिन बाद बध करणा पीछें मोरथोथा लगाकर उसपर एरडी तेल चोपडणा टपोरिये वडे और वहोत होय तो स्युगरलेड अथवा टेनिक एसिडकी महीन भुकणी ऊपरकी भाफणी उथलकर अजन करणा इसकू वहोत दिनोंतक आज सकते हैं ९ कासीके पात्रमें मथन याने रगडा भया घी वहोत फायदा अजन करणेसे करता है

(फूला) आंखके काले माणसियेमे सोजा होणेसे सुपेद या पीला दाग पड जाता है काले डोलेकी चांदी मिटे पीछै तैसे वो जखम पडे पीछै सुपेद दाग रह जाता है इन तीनोकों फूला कहते हैं लेकिन् चांदी मिटे पीछे जो सुपेद दाग रह जाता है उसकू खरा सच्चा फूला कहते हैं आंख दुखे पीछै अथवा शीतलामें फूला पडता है (इलाज), चांदी होय तो गरम पाणीका शेक करणा तथा आंखपर पट्टा बंधे रखणा २ दरद जादा होय तो आंखके आसपास बेलाडोना लगाणा ३ आट्रोपीन १ से ४ ग्रेण पाणी १ औंस बूंदे डालणी सोजेके लक्षण मिटे पीछे बेलाडोनेकी बूंदे डालणी ४ केलोमेल आयोडोफार्म बोरासिक एसिड (टंकण) इनोंमेसे एककी बुकणी डालणी अथवा, एक औंस वेसेलीन के सग ३० ग्रेण मिलाकर हरेकका मलमकर अजन करणा

(सच्चे फूलेका इलाज) नया होय तो मिटता है १ क्यालोमेल ३० ग्रेण वेसेलीन १ औंस इनोंका मलमकर अंजन करणा २ यलो आकसाइड आफ मर्क्युरी ५ ग्रेण वेसेलीन १ औंस इनोका मलम कर अजन करणा ३ पोटाश आयोडाईड ६ ग्रेण पोटाश वाइकार्बोनास ३ ग्रेण वेसेलीन १ ड्राम ४ नीलाथोथा २ ग्रेण पाणी १ औंस इनकी बूंदे डालणी ५ आयोडाइड ओफ पोटाश १० से ३० ग्रेण पाणी १ औंस ६ वडके दूधमें कपूर डालकर अजन करणा ७ पींपर समुद्रके झाग तथा समवजन सींधानिमक इसमे सहत मिलाकर कासीकी थालीमें कांसीकी कटोरीसे घोट मलम अजन करणा ८ सोनामखी अथवा बहेडा अथवा सींधानिमक इनमेंसे हरएक पाणीमे या औरतके दूधमें या सहतमें पीस अंजन करणा (वावला) काले डोलेकी कोरपर छोटी राई जैसी फुनसी सुपेद पीले रंगकी होती है उसकू वावला कहते हैं पहली आंख दुखणे जैसी लाल होती है आसू वहता है ये फुनसी सुपेद पीलेरगकी होती है और किसी २ के काले डोलेमेभी होती है, वावला थोडे दिनोमे फूटकर मिट जाता है और किसीके बेर २ होता है, दुवला और फोडेफुनसीके रोगवाला रोगी बच्चोके होता है (इलाज) आखोंको गरम पाणीसे धोना तथा शेक करणा आंपणेपर घी चुपडना दरद जादा होय तो (२ आट्रोपिन) अथवा एकस्ट्राकट बेलाडोणाका पिछाडी लिखेमुजब वरताव करणा ३ यलो ओकसाइड ओफ मर्क्युरी ग्रेण ५ से १० वेसेलीन १ औंस मलमकर अजन करना ४ क्यालोमेलकी बुकणी अजन करणी ५ तनदुरस्ती सुधारणेकू योग्य पौष्टिक दवायोंका सेवन करणा

(तिमररोग)–(झांखा अधेरी पडदा) डोलेमें पडदा है उसके अदर ये दोष जाणेसे रोग होता है उसकरके रोगी वाहरकी वस्तूओंका स्वरूप विपरीत देखता है, नजीक पडी चीजकू दूर, दूरकी नजीक, सुपेदकू काली, काली कू सुपेद, निजरके सामने कुंडाले दिखते हैं उचेकी चीज दीखे लेकिन् नीचेकी दीखे नहीं सुई वटी मुस्किलसें पोईजाय (इलाज)

१ आंवला रसोत तथा सहत घोटकर अजन करणा २ सहजणेके पत्तोंका रश सहत मिलाकर बूंदे डालणी ३ चिरमीकी जड बकरेके पेशावमें पीस अथवा मोथकू पाणीमे पीस अजन करणा ४ दारूहलदी त्रिफला तथा मोलेठी सम वजन दो तोला उसकूं अधसेर नालेरके जलमें उकाल आठमा हिस्सा जल रहै उसकू छाण फेर गरम कर जाडा करणा उसमें कपूर सींधा तथा सहत जरा २ मिलाकर अजन करना ५ खापरिया शख बीजाबोल तथा मोरथोथा सम भाग चूर्ण करना और नींबूके रशमें घोटवत्ती करणी वो अजन करना इस अजनसे झांखा मिटता है आंखकी खुजाल मांसवृद्धि मोतिया पटल फुला वगेरे दरदोमें फायदा बद है (आंखके दुसरे सामान्य इलाज) सब नेत्ररोगोमें फायदेबद है १ लोहके बरतणमें नींबूका रश डाल लोहके वत्तेसे घोट आंखपर लेप करणा २ मोलेठी गेरू सींधानिमक दारूहलदी और रसोत पाणीमें पीस आंखके आस-पास लेप करणा ३ सहत तथा घीमें सींधा तथा लोदकू गरम कर पीस इसका लेप तथा अजन करणा ४ कडवा नींब गूलरकी छाल एरडकी जड मोलेठी, रगतचनण,पाणीमेंपीस बट्टी आखपर बांधणी ५ तुलसी तथा बीलके पत्ते इनोंका रश दोनुरसोंके बराबर कांसीके पात्रमें औरतका दूध और गजपीपरका चूर्ण डाल कांसीकी कटोरीसे घोट डब्बी-में रखना अंजन करणा ६ निर्मलीके बीज सहतमें पीस उसमें थोडा कपूर डाल अजन करणा ७ ताजी गीलीगिलोयका रश १ तोलासहत सींधव हरेक १ मासा अजन करणा ८ नीलाथोथा सोनामखी सेंधव मिश्री शख मनशिल गेरु समुद्रका झाग मिरचकाली स-हतमें घोटकर अजन करना आंखके रोगोंके वास्ते शास्त्रोमें खानेकी दवायें लिखी है वोभी किसी २ वखत अच्छा फायदा दिखाती है सो थोडे इहां लिखते हैं ९ वाला ४ तोला पाणी २० तोला काथ कर उसमें पीपर २ मासा सींधा २ मासा सहत १० मासा घी १ तोलो मिलाकर वर्षात तथा ठंढी मोसममें खाना इससे झांखेका रोग मिटता है १० त्रिफला ४ तोला पाणी ४० तोला अष्टमांश काथ करना उसमें इत-नाही दूध तथा घी डाल मदाग्निसे घी बाकी रहै तहांतक उकाल रातकू ४ तोला वो घी पीणा तिमर रोग मिटे ११ भांगरेका रश ७४ तोला तेल १६ तोला मोलेठी १६ तोला दूध ६४ तोला तेल बाकी रहे तहातक उकाल ॥ तोला खाना इससे झाखा मिटता है, लोहके वासणमें त्रिफलेका काथ ५ तोला घी १ तोला रख देणा साझकू जीमेंबाद पीणा १३ त्रिफलेका काथ भागरेका रश अरडूशेके पत्तोंका रश सतावरका रश या काथ बकरीका दूध गिलोयका काथ और घी ये हरेक ६४ तोला पींपरमिश्री दाखत्रिफला नीलाकमल मोलेठी सुपेद तूवा भूरींगणी हरेक दश २ तोला लेकर उनोंकी चटणी करनी सबकू घी बाकी रहे तहांतक उकालना मात्रा २ तोला आंखके सब रोग मिटता है, १४ मोलेठी त्रिफला इनोंका चूर्ण तीन मासा लोहभस्म १ रत्ती सहत तथा घीमें चाट-

कर ऊपर दूध पीणा १५ त्रिफला तज लोहभस्म मोलेठी महुवेका फूल इनोंका चूर्ण मात्रा ३ मासा (अनुपान घी तथा सहत)–(शिरकी मगजकी शक्ति बधांणेका इलाज) इस करके मगज पुष्ट होता है, १६ विदामकी मींजी १ तोला रातकू भिगा फजरमें छिलके दूर कर उसमें छोटी इलायची दाणे ३ मासे और मिश्री १ तोला गऊका ताजा घी २ तोला इन सबोंकू कलाईके पात्रमें धर रातकू छतपर रख फजर तथा सांझकूं चाटणा दो हप्ते तक ताजा २ खाणेसे मगजकी गरमी दूर होकर आंखोंकी गरमी दूर होती है, १७ विदामकी मींजी तोला १० इलायची तोला ५ पीस्ता तोला ५ खस२ तोला ५ दाख तोला ५ सर्वकू पीस अथवा गऊके दूधमें उकाल उसका गोला करना उसमें गऊके दूधका खोवा १ सेर अच्छा बूरा १ सेर मिलाकर इसमेंसे फजर सांझतो ५ खाणा इससे मगज भरतर होकर आंखोंमें तेज आता है १८ गऊका मखण २ तोला मिश्री १ तोला इलायची दाणा १ मासा इस प्रमाणसे फजर सांझ १४ दिन चाटना आंखके सब रोगोंमें अच्छा है, १९ गऊका ताजा २ तोला घी खोवा १ तोला मिश्री विदाम दोनुं ॥ तोला शीतल मिरच सहत इलायची दाणा हरेक । तोला सब एकत्र कर सांझ और फजर खाणा ३ हप्ते खाणेसे हाथपावकी जलण और आंखके विकार मिटते हैं २० गऊका ताजा मखण २ तोला मिश्री १ तोला इलायची दाणा ६ मासा नागकेशर ४ मासा इसप्रमाण नित्य प्रातसमें खाना ३ अठवाडिये खानेसें आंखोंकी गरमी ललाई वगैरे सब विकार मिटते है.

कानके रोग–

कानके बहोत रोग होते है उसके मुख्य ३ भाग किये जाय तो १ कानका सोजा २ कानका पकणा ३ बहरापणा इनोंका इलाज नीचेंमुजब करना.

- (कानका सोजा) कानके बाहिरका भाग और बहोतसी वखत अंदरका भाग पडदा सूज जाता है तब दरद बुखार इत्यादि वरमके सब लक्षण होते है, शिरमें दरद कानमें चमके बुखार दस्तकब्ज नाडी जल्द ये उपद्रव होते हैं पकणेसे पीप होता है (कारण) ठंढी हवा जाणेसें गरम दवा डालणेसे कानकू कुचरणेसें सख्त मैल कानमें जमणेसे अथवा कानपर चोट लगणेसे सोजन आती है विगडे भये खूनके बच्चोंके ये रोग वेर-२ होता है एसा देखणेमें आता है, (इलाज) कानमें थोडाभी दरद होयके गरम पाणी अथवा पोस्तके डोडे उकाले भयें गरम पाणीका शेक करणा कानके अंदर ठंढी हवा नहीं जाणे पावे इसवास्ते रुई आडी रखणी (इसीवास्ते जैनके मुनि रातकू) यापोसहवत गृहस्थ (कानोंमें रुई देते हैं, एसा जैन ग्रंथोंकी वर्तमान आज्ञा है,) चाहिये सबोंकों हमेश एसा किया करे एसा करणेसे दोनोंभव आश्री फायदा है कानका मैल आपही निकल जाता, ठंढी या गरम हवा रेती या दुष्ट जीव घुस नहीं सकते, कानमें मैल होय

तो निकालणेका इलाज करणा, एक जुलाब लेना, हलका खुराक लेना, ठंढी हवामें फिरना नहीं बुखार होय तो पसीना लानेकी दवा दैणी, दरद वहोत होय तो वेर२ सेक करना जो क लगवाणी कानके पिछाडी पलाष्टर मारना, रोगीकूं एकांतमे शांतपणे गुपचुप सुलाये रखणा नाताकतकू ताकतकी दवा दैणी, (कानका मैल) वहोतसी वखत कानमें मैल घढ जाता है, तब कानमें वहोत दरद होता है, कानका रस्ताभर जाणेसे बराबर सुणी जता नहीं छमछमे वजै ऐसा कानमें सुणाई देता है, मू फाडकर देखणेंसे कानमे कट२ एसा अवाज होता है, कानकू उचाकर देखणेंसे मैलका डूचा मालम देता है, किसी२के कानमें मैल जमतेही रहता है (इलाज) मैल निकालनेकू रातकू सूतीदफे कानमें मीठा तेल बदामका तेल ग्रीसराईन अथवा सालीडके तेलकी बूंद नाखणी और फजरमें जरा गरम पाणीकी पिचकारी मारणी गरम पाणीमें साबूका फेण निकालकर उस पाणीकी पिचकारी ८।१० वखत मारणेसे मैल सब निकल जायगा कान कुचरणेसे वहोत नुकशान है, इसवास्ते कुचरकर मैल निकालणा नहीं कानमें कोइ चीज या जानवर जाणेसे दरद होय तो उसकू निकालनेकू सली या हथियार डाल कानकू छेडणा नही ऊपर लिखे मुजब पिचकारी मारणी या तेलकी बूंदे डालणी जीव गया होय तो तेल या कडवी बिदामका तेल कानमें डालना अथवा लाडेनमके ४।५ बूदे डालते हैं उससे अदरका जीव मर जाता है पीछे पिचकारी मारणेसे पाणीके सग बुपकर बाहिर निकलता है, ये डाकतरोंकी शिक्षा है

(कानका पकणा) कानका अगला हिस्सा अथवा आखिरीका अदरका पाक होता है उसमेंसे पीप निकलता है जाडा, किसी वखत कानके अदरकी नरम हड्डी सडती है, तो पीपके सग खूनभी निकलता है, सरू होते कानमे सोजन होता है और पीप सरू भये बाद दरद कम पडता है—कारण—ये रोगभी कानके सोजेमें लिखे कारणोंसेही होता है, नाताकत और फोडे फुनसीवाले बच्चोंके ये रोग वेर२ होता है और तनदुरस्त होणेसे मिटता है, कानकी नाडी पकती है उसकू नाडीव्रण कहते हैं ये वेर २ भरता है और वेर २ रुकता है (इलाज) १ फुलालीन पोस्तके डोडाका अथवा नींबका पत्ता बांधकर शेक करना २ सरुआतमें पीप बध करणेकू सख्त दवा डालणी नहीं नरम कपडेकी बत्तीकर कानकू साफ करना गरम पाणीकी पिचकारी देकर दिनमें दो तीन वखत कानकू धोना कानकू फेर सूका कर दैणा कानमें चुलबुलाट या खुजाल होय तो सालिड तेल ग्लीसेरीन या तिलके तेलकी बूंदे डालणी इतने इलाजोंसे पीप बध नहीं होय तो ३ लाल गुलाबके फूलके काथके पाणीकी पिचकारी मारणी ४ फिटकडीके पाणीकी पिचकारी मारणी ५ त्रिफलाके उकालीकी पिचकारी मारणी ६ पचवल्कलके उकालीकी पिचकारी वहोत फायदा करती है, ७ पिचकारी मारकर कानकू सुका टालणा पीछे जात्यादि तेल

(नं० २९९) वाला डालणा अथवा ७ नींबोलीका तेल डालणा ८ कोईभी तरेका तेल नहीं मिले तो तिलीका तेलभी अच्छा है ९ आंब जामुन महुआ वड इनोंके नरम पत्ते पीस उसमें चोगुणा तेल तेलसे चोगुणा पाणी डाल उकाला भया तेलकी बूंदे डालणी.

(बहरापणा)–कानमे सोजन होणेसे कान पकणेसें या मैल भरणेसें बहिरापणा आता है कान कुचरणा पाणीका जाणा ठंढी हवा लगणी भीजी जमीनपर सोणेसें कानमें सोजा होणेसेंभी ये रोग होता है, सुणणेकी ततुओ नाताकत पडणेसेंभी रोग होता है, (इलाज)–बहरापणाके वास्ते लोक कितनेक सख्त इलाज करके कानकुं उलटा नुकशान करते हैं, कानके अदरका पडदा एसा बारीक और पतला है, सो गरम और दाहकारक स्पर्शकू सह नहीं सकता बहरापणा समझके मात्र गरम दवायें डालते जाणा इसमें बडा नुकशान है, जो सोजा होय तो सोजेका इलाज करणा मैल होय तो निकालणेका इलाज करणा गलेके दरदसेभी कानमें बहिरापणा होजाता है, कानपका होय तो पीप निकालणेका इलाज करणा लसण कांदे दारू वगेरे गरमागरम पदार्थ डालणेका रिवाज बहोत नुकशांनकारी चल रहा है, बहिरापणेका कोई कारण मालम नहीं पडे तो तिलीका तेल सरसूंका तेल ग्लीसेरीन सालिड तेल वाइन ओफ ओपियम सल्फ्युरिकइथर वगेरे दवायोके पांचसात बूंद हमेश रातकूं सोते वखत डालणा २ आंधी झाडेकी राखका नीतरा पाणी तोला २० तेल तोला ५ और आंधी झाडेका खार तोला १। पीछे तेल बाकी रहै तहांतक उकाला तयार कर वो तेल कानमें डालणा.

नाकके रोग.

(लक्षण) नाकमेंभी अनेक रोग होते हैं, जैसे सुगंध दुर्गंध परखणेकी शक्तिका नाश खराब बदबो नाकका पकणा उसमेसे खूनमिला पीप वहणा वडी अजाबके संग छींकें जलण गरम धूआं नाक सूककर श्वासका रूकणा प्रतिश्याय याने श्लेषमपी नस नकसीर फूटणी नाडीव्रण नाकके मस्से वगेरे (इलाज)–नाकके बहोत रोगोंका मगजके साथ संबध है, जैसेके शिरका कफ नाकमें उतरता है, तेसें मगजका खून नकसीरहो कर नाकके रस्ते बाहर आता है, मगजका इलाज करणेसें ऐसे रोग मिटते है नाकमें मस्सा बंधता है, उसके इलाज या शस्त्रसे काटणेसे मिटता है, शरदी होणेसें शिरका कफ विगड नाक तथा गलेके रस्ते झरता है, बहोतसे लोक शरद गरमीकू साधारण रोग समझ इलाज नहीं करते तब नाकका पीनस वगेरे खराब रोग पैदा हो जाते है, (इलाज)–१ कायफल पोकर मूल (एरंडीकी जड) काकडा सींगी सूंठ मिरच पींपर धमासा अजवाण इनोके चूर्णमें अथबा कायमें आदेका रस मिलाकर पीनेसे कास श्वास कफ पीनस वगेरे सब मिटता है, २ भूरींगणी जमालगोटा जव सहजणेकी छाल तुलछीके पत्ते सूंठ मिरच पीपर तथा सींधेलूणकी चटणी कर उसमें पकाया तेल नाकमें डालना उससें नाकका दुर्गंधवाला श्वास सुधरता

है, २ मोम तथा गूगलकूं इकठेकर उसका युक्तिपूर्वक नाकमें धूआं लेणेसें वडी अवाजवाली छींके तथा विगडा भया कफ निकलता बध होता है, ४ मिरच दही गुड इन तीनोंको मिलाकर खाणेसे नाकके तमाम रोगमें,फायदा होता है,इसवास्ते शरदी या पीनस रोगमें दैणा (५ नस्य)–तुलशीके पत्ते नकछींकणी वगेरे छींक लाणेवाली पदार्थोंकी नाश लेणेसे पीनस तथा शरदीका कफ झरके निकल जाता है (६ नकसीर छूटणी)–(एपीस्टेकसीस) ठढा जल शिरपर तथा नाकपर वहोत डालणा अथवा कपडा भिगाकर शिरपर धरणा पीली मुलतानी मट्टी ठंढे जलमे मिला तालवेपर धरना ठढे पाणीकी पिचकारी मारणी नाकमें फटकडी या मांजू फलकी महीन भुकणी नाकमें दाबणी कांदेका रस या हरडे वडी जलमें घसकर या अनारके फूलका रश या दोयका रशकी नास दैणी या इस पूगलकू जरा जलमें मकरोय शिरपर लगाणा जल थोडा २ छांटणा जसतके फूलके पाणीमें रू भिगाकर उस रुईसे नाक बध करणा टिंकचर ओफ स्टीलमें रू भिगाकर नाकमें दाबणा जो कोइ दवा नहीं होय तो रुईकू ठंढे पाणीमे भिगाकर नाकमें दाबणा नीलेथोथेके पाणी की पिचकारीभी खूनकू बध करती है, (७ पीनस)–(ओझीना) सलेपममेंसे वेर२ ये रोग होता है, इस सिवाय नाकमे कोइ पदार्थ जाणेसें सोजा होकर पीप होता है, नाकमें मस्सा होकर पीप निकलता है, तैसे अदर हड्डी सडणेसे पीप निकलता है, गरमी सुजाकके रोगसेंभी पीनस होता है, और नाक सडके गिर जाता है मसेकू कटा डालणा पिचकारी लगाकर नाक हमेश धोडालणा एक औंस पाणीमें एक दो ग्रेण फिटकडी अथवा जसतके फूल अथवा क्लोराईड ऑफ झिंक डालणा जात्यादि तेलकी बूदे डालणी, १ ड्राम विस्मथ, और १ औंस मिश्री मिलाकर सुघाणा, कारबोलिक एसिड १ भाग ताजा घी ८ भाग मिलाकर सुघणा इसके शिवाय तनदुरस्ती सुधारणेवाली दवाइयां जैसेके मजिष्ठादि क्वाथ किशोर गूगल योगराज गूगल लोहके बनावटकी दुसरी दवाइयां सारसापरेला पोटाश आयोडाइड वगेरे दवाओंकू दैणा (नाकमें जीव)–जिसके नाकमें जीव पड जाता है,उसका नाक चपटा फीडा होजाता है उसमें नींबोलीका तेल नाकमें डालणा पांच रुपेभर पाणी गरममे टरपेन्टाइन २ ड्राम मिलाकर पिचकारी लगाणी सोल्युसन ओफस्टील ४ ड्राम पाणी ३ औंस टरपेन्टाइन १ ड्राम मिलाकर पिचकारी लगाणी टरपेन्टाइन तथा कपूर मिलाकर उसमें रु भिगाकर नाकमें सुघणा और रखणा ९ नाकका मस्सा (पोलीपस) नासार्श)टेनिक एसिडकी भूकी सुघणी धूएकी धूमस (मेश) पींपर देवदारू दूधकरज सींधानिमक और आधे झाडेके बीज इसमें पकाया भया तेल डालणा मस्सा वडा होय तो चिमटेसे पलटेकर खेंचकर निकालणा अथवा कतरणीसें काट डालणा.

दांतके रोग

दांतकी जडमें या मसूढोमें या दांतके ऊपरके भागमें सोजा या सडणेमें दातका

रोग होता है, (कारण)-पेटमें विगाड और दस्तकी कब्जी होणेसे ठढमें जवाडेमें वादी आणेसे पारेकी वहोत मू आणेकी दवा खाणेसें दांतमें सडणा लगणेसें दांतपर मैलका थर बंधणेसें इत्यादि कारणोसे दांतका रोग होता है.

(इलाज)-१ दांतमें सहज दरद होय तो दस्त साफ होय एसी दवा लेणी १दरद वहोत होय तो जवाडा तथा गाल सूज जावे तो गरम कपडेका तथा पोस्तका डोडा उकालकर उस गरम पाणीका वेर २ सेक करणा खुराक हलका तथा हजम होय ऐसी दवा देणी ३ मसूढा सूज जावे और बुखार आवे तो बुखार मिटाणेकी दवा देणी और दांतके मसूढोंपर जोकें लगाणी जोकै लगाणेकी काचकी नली आती है, ४ अगर जो दांतके पारेकी बाजूमें गांठ होजाय तो नस्तर लगाकर पीप निकलवाणा और हलका खुराक देणा, (सडणा दातोका)-दांत दोतरै सडते हैं, एक तो दांतके आसपास पापडा बंधकर वोस-डकर उसका सडणा दांतके जडसे सरू होता है, तव दांतके आसपासका भाग खाईज कर विचमेंका नाकेवाला भाग खुला होजाता है, दुसरी रीत यह है की दांत ऊपरसे सडणा सरू होता है और काला दाग पडता है, पीछे वो सडणा विचमें जड तक पहुचता है और दांत खाईजकर खोखा होजाता है इसमें दरद वहोत होता है दांतसें चावणा खाणा ठंढा पाणी पीणा वगेरे नहीं होता सब जवाडेमें दरद होता है, नींद नहीं आती रोगी मरणे चाहता है एसा बुरा दरद होता है (कारण) दांतकू साफ नहीं रखै इसी कारणसें दांत सडते हैं, भोजन कर बराबर दांत साफ नहीं करणेसे खुराककी कणिये दांतोमें रह जाती हैं, पीछे वो फूलती है तथा सडती हैं, इस करके मसूढे सूज जाते हैं, पेटकी वादी और विगाडभी दांतके सडणेका कारण है वहोत गले पदार्थ पेटमें वादी और थूकमें खटास पैदा करता है, और खट्टा थूक दांतोंकों विगाडता है, वहोत खटाई खानेसेभी दात विगडता है वहोत गरमागरम उष्ण स्वभाववाली वहोत ठंढी चीज खाणेसे भी ये रोग होता है पूरा ताजा खुराक नहीं खाणेसे जो रोग होता है, उसके सग दांतकाभी रोग होता है, (इलाज)-१ लौंग पीस उसका पाणी अथवा लौंगका तेल दांतपर चुपडणा २ अफीम तथा कपूरकी गोलीकर सडे भये दांतके खोतरमें भरके रखना ३ अफीमके अर्कमें रू भिगाकर दुखते दांतपर लगाणा ३ क्रियासोटका एकदो बूंद सडे भागपर डालणा ५ क्लोरोफार्म अथवा सल्फ्युरिक इथरमें रू भिगाकर दातमें धरणा ६ इससे दरद कम नहीं पडे तो कास्टीककी छोटी लकडी लेकर दांतके कोतरमें थोडे मिनट तक रखकर पीछे निकाल लेणी एसे इलाजोंसें एक वेर तो दांतका दरद हलका पडता है, लेकिन् इससें दांतका कोचरा भरी जता नहीं तब फेर ये दरद उठ जाता है, इसवास्ते बिलकुल दरद जाता रहै एसा इलाज करना चाहिये ये एसा इलाज दो तरेसे होता है, यातो कोचरकूं किसी पदार्थसे भर देणा अथवा दांत निकाल डालणा

(दांतके कोतर भरणेकी रीत)–पहली दांतकूं महीन हथियारसे कोरके साफ करणा और पीठें अदर भरनेकी दवा धरणी कितनीक चीजे थोडा दिन रहके निकल जाती है और कितनीक हमेश रह सकती है, सो लिखते हैं १ मस्तंगी अथवा चद्ररस जो मिले उसकू सल्फ्युरिकइथर आल्कोहोलमें पिघलाकर गुड जैसी गोली करणी वो लुगदी दांतका खड्डा भरीजै इतना रूमे लपेट दाब दैणा २ गटापरचा दांतका खड्डा भरणेकू तयार मिलता है, वो जादा टिकता है उसका एक छोटा टुकडा लेकर स्पीरीटलैंपसे अथवा दुसरी गरमी देकर पिघलाकर नरम करना पीछै दांतके खड्डेकू कपडेसें पूछकर गटापरचेकू थोडा २ तिणखेसे दातके कोचरेमें दाबणा ३ (ओकसाइड ओफझिंक)–इयभी जादा वखत दातमें टिकता है इसकू सोल्युसन ओफ झिंकमें मिलाकर गुड जैसा नरम कर दांतके खड्डेमें दाब दैणा ये दवा छसात महीनेतक अंदर रह सकती है, ४ वहोत मुदतके टिकाववास्ते)–पारा तथा चांदीकू अरगतीसे रगडकर भूकाकर उसकू पारेके सग हथेलीमें मसलणा जब लुगदी होय उसकू दबाणेसे जादा पारा होयगा सो निकल जायगा और मिली भई लुगदीकू कोचरेमें भर दैणा इकेले चादीकी एवजीमे १ भाग सोना २ भाग रूपा और २ भाग कलाई एक जगे गालकर उसकू अरगतीसे रगड अगली तरे पारा मिला दबाना ये बहोत अच्छा है, इस मुजब कोचर भरनेसें थोडी देर दातमे दरद होय तो स्पिरिटकेम्फर अथवा मस्तगी गुदका पाणी दांतपर लगाना

(दांतके मजन)–दांतके दरदमुजव मजनोमे दवा मिलाणी दांतके कलतरमें कपूर बीजाबोल मस्तगी वगेरे मिलाणी मसूढोंकी मजबूतीवास्ते कथा माजूफल सिंकोना बार्क वगेरे चीजें वापरणी मूकी बदबो दूर करणेकू कोयला मस्तगी गूद कपूरका उपयोग करना बलचिंग पाउडर वगेरे तयार मिलती दवायें वापरणी-(१ पृष्ट ४०६) नबर ७५० स ७५३ तकके सब मजन अच्छे है, धोया भया चाक तो ५ कपूर पाव तोला दांत कुलणेपर ये मजन अच्छा है, कपूर जादा डालना नहीं ३ हीराबीजाबोल तो १ कपूर छ मासा चाक ५ तोला दात साफ होते हैं, कुलते मिटते हैं, ४ हीराबोल कथा माजू एकेक भाग बार्क २ तोला दांत खाईजते होय तो मिटते हैं ५ मस्तगी मोचरश हीराकमी अनारके सूके फूल जो हरडे आवले कत्था सम वजन महीन चूर्ण मसलणा

(मूके खराब बदबोका इलाज)–जिस कारणसे दांत सडते हैं, उसी कारणसे मूमे बदबो आती है, भोजनबाद दोनों वखत दातकू कुरले कर २ साफ धोना दातमे रहे अन्नके कनोको निकालणेकू लोक दांत कुचरणी रखते हैं, या तिणखोंसे कुचरते हैं, इसमे और दात चोडे होकर अन्नके कणे भरी जते हैं, इससे जादा नुकशान है, दांतकूं साफ करणेका पूरा इलाज ब्रूश है, गरम पाणीके कुरलोंमेंभी साफ होजाता है, दातोपर नीलण पुडपुडे जमते है वो निकाल डलाणा चहिये वहोत वरसोंका जमाभया मेल दांतोका

डाकदर साफ कर देते है, और छोटे चकूके धारसें धीरे २ घसणेसेंभी लील निकल सकती है, ऊपर दांतोके मंजन लिखे हैं, उसमेसे नं० ३१४ वाला मजनमें कोयलेका भूका डालकर उससें दांतण करणा नं० ५६९ में लिखे भये कोनडिस सोल्युसन द्राम १ में अधसेर पाणी डाल कुरला करना

(दांत साफ रखणेके नियम)–१ दांतकूं वांवलके दांतणसे या ब्रूससे हमेश घसणा लेकिन् दांतोंकों जोरसे घसणा नहीं २ कोयलेका भूका लूण चाक और कपूर साधारण मंजन हमेस दांतोंकों रगडणा ३ दांतोंके छेकडोमें नाज भर जावे उसकूं कुरले या ब्रूससे निकाल डालना जो अंदर रहा तो वहोत नुकशान है, इसीवास्ते जैनके साधू भोजन कर दांतोंको साफ नहीं करे तो व्रतभगका दोषण मानते हैं, और दांत साफ करते हैं, दिगबर जैन दांत साफ करणेमें व्रतभग मानते हैं, श्वेतांवर साधूओंकी साफ करणेकी मर्यादा है, लेकिन् भोजन किये वाद पहले नहीं ४ रातकू विलकुल दांतोंमें अन्नका कणा नही रहणा चहिये ५ लील होय तो छीलके निकाल डालनी मंजन ऊपर लिखे सो रगडणा सो फेर लील वधेही नहीं ६ वहोत मीठे और खट्टे पदार्थ हमेस खाणा नहीं ७ सुपारी दांतोको विगाडती है सो खाणी नही सुपारीकी राख दातोंके मसलणी ८ तमाखू रगडणेसे दात तो साफ होता है, लेकिन् होजरीपर उसका असर बुरा होता है, इसवास्ते तमाखूका विलकुल वरताव करणा नहीं ९ दस्तकी कब्जी होणे देणी नहीं १० खुराक पचै एसा खाणा अजीर्ण होय तो फोरन् इलाज करना ११ पेटका खुलासा और पाचनशक्ति पर दांतके रोगोका सबध है.

चमडीके रोग–

किरण ८ मी.

चमडीपर अनेक तरेके रोग होते हैं, कितनेक तो रस विगडणेसे कितने एक खून विगडणेसे और कितने एक इनोसेभी अंदर घुसे भये दोपोंसे पैदा होते हैं, कितनेक रोग वाहरकी मलीनतासे होते हैं और कितनेक अदरके दोपसे होते हैं, अदरके दोपसे भये २ चमडीके वहोतसे रोग दुसरे रोगोंके विकार रूपसे फूटकर निकलते हैं, इसवास्ते उन रोगोंके इलाजोमें उण विकारोके इलाजोकाभी समावेश होजाता है, इसवास्ते अनेक रोगोंमेंसें चमडीके सामान्य रोगोका इलाज और लक्षण लिखते हैं

खुजली–(प्राइटस) सस्कृतमें कडू कहते हैं, खस खाज दाद चित्री शीतपित्त वगेरे दुसरे रोगोंमेंभी खुजली आती है, इनोके सिवायभी वहोतसी वखत चमडीका को इजाहिरा रोग विगरभी चमडीपर खुजली आती है, गरमी प्रमेह प्रदर मधुप्रमेह पीलिया अजीर्ण वगेरे रोगोंमें वहोतसी वखत खुजली आती है, इलाज–१ नींवके पत्ते २ आंवले ३ खैरकी छाल ४ पचवल्कल अथवा वेर ववूलकी छाल ५ वालेका पाणी इत्यादिकोंसें स्नान

करणा ६ गोमूत्र मसलके स्नान करणा ७ दाहशामक दवायोंका लेप पृष्ठ ३१२) ८ चंदनका लेप ९ गंधकका लेप १० सोहागीका जल मसलणा ११ चदनका तेल लगाणा १२ तिलका तेल मसलणा १३ लोशन कार्बोलिक एसिड १ ड्राम ग्लीसरीन १ औंस पाणी ३ औंस रेक्टिफाईड स्पिरिट २ औंस १४ लोशन–कपूर ॥ ड्राम क्लोरल हाइड्रेट ॥ ड्राम ग्लीसरीन १ ड्राम गुलाब जल ५ औंस १५ गधकका साबू (सल्फर सोप) वदनके मसलके नाहणा १६ कारबोलिक सोप १७ चदलाईके पत्ते उकालके पीणा १८ गिलोयका रस पीणा १९ गाजुवांका रश पीणा २० न० २९५ ३१३ ३१७ ३२४ ३२६ का इलाज है सो करणा

(फुनसी–लाईकेन) चमडीपर महीन २ फुणसियें होती है, गरमीकी मोसममें वहोत होती है, अदमीकु वहोत तकलीप देती है,–इलाज–१ चदनका लेप करणा २ वाला शखजीरा तथा कपूरकाचरीका लेप ३ गेरूका लेप करणा ४ हरडेका जुलाब देणा ५ मासा तथा पोस्तके डोडोंके जलसे नाहणा

(लूखापणा)–(प्रुराईगो) सब वदनपर वहोत खुजली आती है, तथा महीन २ फुनसियें होती है, अदमी खुजालते २ खूनतक निकाल लेता है तैसे २ जलण और खुजाल वढती है, चमडी लूखी और खरदरी होती है,–इलाज–ऊपर लिखे सब खुज-लीका इलाज करणा १४ मासेके जलसे स्नान कराणा २ चदनका लेप करणा ३ चीरों-जीका लेप करणा ४ गधक १ ड्राम ग्लिसरीन १ ड्राम धोयाभयाघी १ औंस इनोकों मथकर वदनके लगाणा ५ रस कापूरका पाणी लगाणा ६ गधक २ ड्राम ग्लीसरीन तथा वेसेलीन एकेक औंस मिलाकर मसलणा ७ चदलियेका रस नींबके पत्तोंका रस गाजुवानका रस इनोंमेंसें कोईभी दवा थोडा दिन पीणा ८ आंवला अथवा त्रिफलाका जल पीणा ९ गुलाबकलीका जुलाब अथवा सोनामुखीकी चायाफक्की लेणी १० आव-लेका मुरब्बा या कोला पाक अमृतवटी मजीष्टादिक्काथ वगैरेका वहोत दिनोंतक सेवन करणेसे लूखास मिटती है

(खस)–(ईच)–इसके रोगकू सब जाणते हैं, ये एक तरेका सडणा है, गधे छोकरोंके वहोत होता है, उसमें जीव छोटे कीडे होते हैं, उसका चेप फैलता है–(इलाज)–१ गधकका लेप अथवा मलम (न०५४५) २ कासीसादिघृत (न० ३०३) ३ पोरेका मलम (न० ३०४) ४ खसका लेप (न० ३२४) ५ (न० ५४९) वाला मलम ६ अर्कतेल (न० २९२) ७ लीले थोथेका तेज पाणी चुपडणा ८ नींबके पत्तोंको उकाल उससे स्नान करणा या गोमूत्रसे

(खरज)–(व्योंची)–(एकझीमा)–ये चमडीका वडा रोग है, ये जादा करके हाथ पांव शिरमें कानकी कोरपर वगैरे भागोंपर होती है, पहली चमडी लाल होकर खून

जाती है, पीछै उसपर फोडे फुनसियें होती है पीछै फूटकर जमता है, तथा जखम गिरता है, वो वेर २ सूकता है और हरा होता है, कितनेक सूके होते हैं, और कितनेक चिकते है-(इलाज)-१ (२९३, ३०३, ३०४, ३०७, ३६६, ५४५, ५४६, ५५२ नंवरका इलाज २ कील चुपडणा, ३ लसण पीसके लेप करणा, पीछै खरज वायु साफ होय, तव सादा मलमका लेप करणा, ४ नींवकें नींवोलीका तेल, ५ खुजली सूकी होय अथवा खरूट आया भया होय तो उसपर रातका घी चुपडणा, गऊके आटेकी पोल्टिस या अलसीकी मारणी, जब खरूंट नरम पडे तव गरम पाणीसे धो डालणा पीछे घाव भरणेकी ऊपर लिखी कोईभी दवा लगाणी)-जेसेके ६ ओलीव सालिड तेल ग्लीसरीन कासीसादिघृत (न० ३०३) अथवा अर्कतैल (न० २९३) लगाणा ७ टिंकचर आयोडीन हमेस लगाणा ८ कास्टिक अथवा नाइट्रिक एसिडसे खरज वाकूं जला देणा खून साफ करणेवाली दवा देणी

(दाद)-(रींगवर्म)-(गजकर्ण)-चमडी लाल होकर उपड जाती है सुपेद फोतरी उडती है उसमें खुजली आती है, चक्कर २ जेसी शिकल होती है, और फैलता है, पुराणा भये पीछै जमीन काली पडती है, बहुत खट्टा तथा गरम पदार्थ खाणेसे तथा मलीनतासें ये रोग होता है, मलेवार तथा मवई कलकत्ता वगैरोके पाय खाणेकी हवासे तथा जलसेभी ये रोग हो जाता है, जिसमें काछोके दाद असाध्य है-(इलाज)-दादका असख्य इलाज है, जादा करके कृमिहर कुष्ठहर इलाज दादका होता है, पवाडके बीज छाछमे पीसके लेप करणा, २ पलासपापडा पीसके जलमें लेप करणा, ३ हरतालका लेप या नींवूका रश, ४ फिटकडी टकण लीले थोथेका तेज पाणी चुपडणा, ५ सल्फ्युरिक-एसिड लगाणा, ६ कार्बोलिक एसिड, अथवा रसकपूरका लोशन प्रमाण दवा २ ग्रेण पाणी १ औंस ७ टरपेन्टाइन घसके चुपडणा पीछै उसकू सावूसे धोकर टिंकचर आयो-डिन लगाणा ८ कारबोलिक एसिड लगाणेसे पुराणा दादभी मिटता है, ९ रसकपूर ४ ग्रेण गधक तथा पोटाश कार्बोनास हरेक ॥- द्राम वेसेलीन २ औंस सब मिलाकर जोरसे रगडणा १० रसकपूर मुडदासिंग गधक नीला थोथा और टकण ये सब सम वजन मख्खणके सगमिलाकर लगणा, ११ गोआ पाउडर, १२ पारेका मलम सादा मलम सम वजन मिलाकर लगाणा, १३ केलोमेल ३ द्राम, क्रियासोट ४ द्राम, गधकका मलम १ औंस मिलाकर लगाणा

(उदरी)-(अथवा शिरकी चांय गिंज)-ये दादकी जात है और शिरपरही होती है, वालोंकी जडमें कीडे पडके महीन फुणसियें होकर फुटती है और पककर चिकती है तथा पपडी जमती है, (इलाज)-दाद तथा खाजके सव इलाज गींजपर चलते है, वालकतरा डालना या उस्तरेसे मुडा डालना सावूसे धोकर शिर दोनु

वखत साफ करवाणा पपडी उखडकर शिरकी जमीन साफ निकल आवै एसा इलाज करणा नीला थोथा १५ ग्रेण चार औस पाणीमें मिलाकर कपडा भिगाकर थोडे दिनोतक शिरपर लपेटणा पीछे एरडी तेलमें कपडा भिगाकर उसपर लपेटना इस तरे दो चार दिन करनेसें पपडे नरम पडते है, और अलग हो जाते हैं, वाद एरडीका तेल लगाणा अथवा घावभरी जै एसा रोपन मलम लगाना २ भूरींगनीके रशमे सहत डालकर लेप करना ३ चिरमीकी जड तथा फल पीसकर लेप करना ४ चिरमीकु जलमें पीस उसमैं भांगरेका रश तथा तेल डालके सिद्धकरा भया तेल चुपडना (ये अवल गुजादि तैल.)

(खोरा)–(स्कर्फ) शिरमें होता है उसमेंसे सुपेद फोंतरा ऊडता है, तथा वाल गिर पडता है खोरा एक तरेका जीवका विकार है–(इलाज)–१ गुजादितेल चिरमीका ऊपर लिखा सो २ नींबोलीका तेल ३ हरतालका लेप ४ टकन तोला -।- एकसेर जलमें मिलाकर उसजलसे हमेस शिर धोना अथवा सालिडका तेल चोपडना

(टाटका पडना)–(एलोपेश्या)–शिरके वाल उडजाते हैं उसकू टाट कहते है वहोतसी वखत मूछ तथा भवारेके वालभी उड जाते हैं, उदरी कीडा अथवा उपदंशकी गरमी ये वाल गिरनेका मुख्य कारन है, इसवास्ते खून सुधारनेका यत्न करना–(इलाज)–१ चिरमीका वूका पीस लेप करना भांगरेके रशमें सिद्धकरा भया तेल चुपडना ३ कडवे परवलके पत्तोका रश तीन दिन लेप करना ४ भूरींगनीका रश सहत मिला लेप करना

(खील)–(आक्नी)–चमडीके पिंडमे एक तरेका चिकना पदार्थ भर रहा है जब वो बाहर नहीं निकलता तव खील होकर वाहिर फुटती है जादा जुवानीमें चहरे पर फुटती है–(इलाज)–फजर साझ गरम जलसें धोना गरम जलका वफारा दैना २ रसोतका लेप करना ३ टकणखार गुलाव जलमें लगाणा ४ गधकका मलम (गधक १ भाग बेन्झोयेटेडलार्ड ४ भाग) ५ गूगल लोह काडलीवर वगेरे दवाओं दैणी ६ गोरोचन काली मिरचका लेप ७ लोद धाणा तथा वचका लेप ९ शेमलके काटाओंकू दूधमें पीस लेप करना

(करोलिया)–(सोरायासीस) चमडीपर सुपेद चट्टे होते हैं, ऊपरकी चमडी उतरती जाती है और नीचै सुपेद चट्टे निकलते जाते है, इसकू सिध्मा चभूती या श्वित्री कोढभी कहते हैं, ये रोग जादा करकै मू, छाती, पीठ कमी २ सब वदनपर होता है, (इलाज) १ कुष्टहर लेप (न० ३२१) गधकका तेल (न० ६६) ३ हरतालका लेप (न० १८९) ४ ठढे पाणीमे भिगाई भई चद्दर वदनपर लपेट उपर गरम धावला ओढाकर दो चार घटे सुला दैना और दोचार वखत खूब जल पिलाणा जिससे पसीना आकर फायदा होता है ५ टार, झींक, ओक्साइड और विदामका तेल सम वजन मिलाकर करोलियेपर घसकर लगाना, ६ पवाडके वीज तथा वावचीका लेप इसतरे दि-

नमें दो वखत दवा लगाणी, गरम पाणी और साबूसें धो डालना, कोरे रुमालसे साफ पोंछ डालना, फेर दवा मसलके लगाणा.

(कोढ)–(ल्युकोडर्मा) चमडीका कुदरती रंग बदलकर उसपर सुपेद काले लाल वगेरे वहोत तरेके चट्टे निकलते हैं, साधारण लोक सुपेद चठोंकों कोढ समझते हैं, लेकिन् वो १८ जातिमेंकी एक जाति है, दाद, चित्री, करोलिया, विचर्चिका, पांव वगेरेभी कोढ रोगका हलका विकार है, दुसरे दुष्ट कोढ रोगका दोष धातूमें प्रवेश कर अंदर ऊतरता है, विरुद्ध अन्नपानका सेवन ये कोढ रोगका कारण है, (इलाज)–(कुष्टहर लेप) तथा अवल गुंजादि लेप (नं० ४२) (न० ३१३) (वज्री तैल न० २९५) मरिचादि तैल (न० ३००) काली जीरीका लेप (न० ३१७)५ सुपेद कोढका लेप (न० ३२१) ६ अवल गुंजादि काथ (आंवला तथा खैर सारका काथ) उसमें वावचीका चूर्ण डालकर पीणा)–(खानेकी दवायें) मजीष्ठादि काथ (निंबपंचाग चूर्ण (न० २२९) अमृताघृत (न० २८७) १० किशोर गूगल(तथा योगराज गूगल)(पृष्ठ २५३) पथ्य आहारके संग एसी कुष्टहर दवा देणेमें आवे तो चमडीका रोग आराम होता है.

(शीतपित्त)–(उदर्द)–(कोठ)–(उत्कोठ)– (अर्टिकेरिया)–बदनपर चट्टे उठ जाते हैं, ये ददोडे छोटे वडे लाल तैसें सपेद रगके होते है, चमडी सूजी भई तथा, उपसीभई वहोत खुजली तथा दाह होता है, पित्ती एकदम अंदर घुस जाती है, किसीरकू ये रोग वेर२ होता है, अजीर्ण अथवा उसका विगाड खट्टा अथवा नारूकी वेमारी ये सव पित्ती अथवा पित्ती जैसा चट्टेका कारण है, कोइ जहरी जांनवर काटै (मकडी) मसलसणेसे या खानेमें आवै औरभी तो पित्ती निकल जाती है इलाज–सरसूके तेलका मालिस २ गरम पाणीका शरीरपर सींचना ३ सरसूका दाणा हलदी पमाडके वीज तथा तिल इनोंकू सरसूंके तेलमें मिलाकर लेप करना ४ लेडलोशन कारवोलिक लोशन कपूरका अर्क वगेरे लगाना ५ गरम कपडे पहराणा पुराणी वेमारीमें नींवके पत्तेका रस पीणा ६ सोनामुखी तथा दस्तावर दवा (दैणी पृष्ठ. ३१६) ७ कालीजीरीकी चाकरके पीणी ८ त्रिफला गूगल तथा पींपरका चूर्ण देना ९ अद्रकके रसमें पुराना गुड पिलाणा १० त्रिकटुका चूर्ण और मिश्री ११ त्रिकटु तथा अजमोद १२ जुलाब लेना किरमाला पंचक (कुटकि देवदारू मोथ अतीश किरमालेकी गिर अथवा विलायती निमक इसमेंका जुलाब देना) १३ काली मिरच घीमें मिलाकर चाटणा तैसें ऊपर लगाणा.

चकावा–इरीथीमा–चमडी लाल होजाती है, इलाज–ठढा इलाज करना १ कली चूनेका नितरा भया जल और तेल मथकर लगाना २ गुलाब जल तथा ग्लिसरीन ३ जात्यादि घृत ४ झिंक ओइन्टमेन्ट न० ३०२।५ ओक्साइड ओफ झिंक तवखीर

वगेरे घसणा ६ दशांग लेप न० ३१२।७ जुलाव एरंडीका तेल गुलाबका फूल अथवा सोनामुखी वगेरे देणा मजिष्ठादिकाथ अथवा चूर्ण.

कालादाग–चमडीपर काला दाग पडता है, किसी रोगसे या बुढापेसें या बिलास्टर मारे पीछे चमडीपर काले दाग रह जाते है, (इलाज) शरीरसबधी कोइ रोगका कारण होय तो उसका इलाज करणेसे दाग अदृश्य होगा जैसेके गरमीके रोगसे हथेलीमे भये दाग रसकपुरका पाणी मसलणा २ व्हाइट प्रेसीपीपटका मलम (सादा मलम १ औंस आयोनाटेट मर्क्युरी १ ड्राम मिलाकर मलम करना ४ आल्कोहोल १ औंस कपूरका पाणी उसमें रू भिगाकर दागवाले भागपर धरणेसें चमडी लाल होगी अथवा बिलाष्टर उठकर नई चमडी आयगी

(झामरा)-(पेमफीगस) चमडीपर एक वडा फफोला उठता हैं, उसमें पहले पाणी होता है पीछे पीप होता है सख्त दरद तथा जलण होती है, (इलाज) १ अफीमका लेप करना अथवा पोस्तके डोडेका सेक करना २ तुकमरिया पीसके बांधणा, ३ सुईसे फोडकर सादे मलमकी पट्टी मारणी ४ धोया भया घी अथवा मख्कण अथवा झिंक ओइन्टमेन्ट लगाना ५ चमडी अलग पडे पीछे घाव भरणेकू आइडोफोर्म कारबोलिक तेल अथवा बोरासिक एसिडका मलम लगाणा.

(कखवायु)-(ऊसरणी)-(हर्पिझ) काखके नीचे छातीकी बाजूमें चमडी लाल होकर उसपर मोतीका दाणा जेसा फुणसियें होती है, किसी२ वखत और जगेभी होती हे नाताकतीसे होता है, बुखार उतरे पीछे एसे दाणे होठपर होते हैं, उसकू लोक बूरामूत गया एसा कहते हैं, उसमें दाह होता है बुखारभी आजाता है, (इलाज) १ गेरूका लेप, (२ दशांग लेप न० ३१२), ३ स्युगरलेडका मलम, ४ झिंक लगाना, ५ लेड लोशन, ६ ग्लिसरीन मेटेनिक एसिड मिलाकर चोपडणा,

(निस्फोटक)-(एकथीमा)-(इम्पीटाइगो)–चमडीपर छोटे या वडे, पीलेपीपवाला पफोला होता है, उसकू विस्फोटक कहते है, ये फफोले उठकर जखम पडता है, खरूट जमते हैं, और अदरसे चिकता है, (इलाज) पचवल्कलका उकालकर उससें हमेश धोणा, २ धमासा अथवा पोस्तके छिलके उकाल पाणीसे दोतीन वेर स्नान करना ३ जाईके पत्तोंके हिमसे स्नान करना, ४ खरू टोपर पोटाश बाधकर अथवा तेल लगाकर उखेड उसपर सादा मलम अथवा जखम भरे एसी दवा लगाणी, ५ नींबोलीका तेल लगाणा, ६ पचवल्कलकू कूट उसका महीन चूर्ण दाबणा अथवा जलमें पीस लेप करना ७ कारबोलिक और बोरासिकका मलम लगाणा, ८ गिलोयके उकालीमें एरंडीका तेल डाल दोचार दिन पीणा, ९ मजीष्टादि काथ, गाजुवाका रस सालसापरीलाके छालका उकाला, तेसें काडलीवर कीनाइन, लोह वगेरे दवायोंका सेवन डाकतर करवाते हैं

(मस्सा)-(वार्ट) शिरपर तैसें शरीरपर किसीभी जगे छोटे वडे चमडीके अंकूरे फूटते हैं, वहुतोंके जीभ होठ नाक कान मलद्वार वगेरे गुप्त जगोंपरभी होते हैं, (इलाज) छोटे मस्से, कासटिक अथवा खारसे जलके गिरजाता है, वडे मस्सेकूं डाक्तर कतरणीसे काट कासटिकसे वो जगे जलाकर मलम लगाते हैं, २ आंधी झाडेका क्षार लगाणा, ३ अर्क तेल (न० २९३) ४ कलीचूना लगाना, ५ घोडेका वाल बांधकर हमेश जरा २ खेंचणेसें कितनेक दिनोंमें मस्सा गिर जाता है.

(कपासिये)-(कॉर्न) कपासियेकूं आंठणभी कहते हैं, वो हाथ पैरपर होता है, चमडी जाडी होती है, किसीके दरदभी होता है, किसीके सख्त पडणेसें दरद नहीं होता, (इलाज) कटाकर कानका मैल भरणा दुसरा इलाज देखणे सुणनेमें नहीं आया है, कांटा अदर रहजाकर पुराणी हालतमें कपासिये वंध जाते हैं

(जूं)-(लीख)-(लानुस) गलीच अदम्योंके कपडेमें तथा वालोंमें जूंलीख पडती है, कपडोंकी सुपेद और वालोंकी जूं काली होती है, (इलाज) स्नान और कपडे साफ रखणा, २ नींबूके रशमे कालीजीरी पीस वालोमें लगाना, ३ नींबोलीका तेल लगाना ४ धतूरोंके डोडोंकू तेलमे उकाल वालोमे वो तेल लगाणा, ५ पारेकू नीमके रसमें घोट या मूलीके पत्तोके रशमें घोट लगाणा, या पारेका मलम लगाणा, ६ रसकपूर दो ग्रेण एक औंस जलमें मिलाय वो पाणी शिरमें लगाणा, ७ कारबोलिक एसिड तथा तेल, ८ सिरका और नवसादर, ९ गंधक या गधक तेल, १० नींबूका रस और खांड.

(वाला)-(नारू)-(गीनीवर्म)-चमडीमेसे सुपेद रंगका सवा हाथ एक तार जैसा दो इद्रियवाला जीव निकलता है, जैनोके सूत्रमे, हरसमें, कंठमालामें और नारूमें दो इंद्रीवाला जीव कहते हैं, वोही वात इस वखत पश्चिमी विद्वानोने सिद्ध किया है, ब्राम्हणोके वनाये शास्त्रमें मांस सूककर नारू होता है, एसा लिखा है, लेकिन् प्रमाणसें सिद्ध नहीं होता, ऊपर जो लिखा है सो यथार्थ है, इससे महीन इडे पाणीमें रहते हैं, जो विगर छाणे पाणीसे स्नान पानादि करते हैं, उनोके ये रोग जरूर होता है, श्रीधरजी पडित अमृतसागरके नोटमें लिखा है एक अंगरेज गंधे जलमें पहरभर सिकारके वास्ते खडा रहा, सो मेरे सामने रामजी गणो डाकटरने दोनों पेरोमेंसे पचास नारू निकाले, इसीवास्ते जैन धर्मवालोका सिद्धांत हुकम है की पाणी दिनमें दो वखत छाणना और रातकू जल पीणा नहीं, इस हुकमकी तामील करणेवालोकों नारू कभी नहीं निकलता, वारीक इंडे चमडीमें प्रवेश कर अदर वढता है पीछे वाहर आता है, वाला निकलणेकी सरुआत दो तीन तरेसें होती है, किसी २ के तांतका गुचला चमडीमें जाहिरा मालम देता है, किसी२ के सोजा तथा दरद होकर पककर फूटता है, तांत वाहर आती है, किसी २ कू पित्ती निकलती है, वहोत तकलीप होती है, (इलाज) जो दिखता मालम

दे तो निकलवा डालणा शस्त्रसे चमडी काटके और, स्वतः तांत बाहिर आवे तो उस तांतकु बांध देणा क्योंकी जिससे अंदर पीछा नहीं जासके जो खेंचणेसें तूट जावे तो वहोत तकलीप होती है, (इलाज) एक नारू सहस दारू है, लेकिन् मुख्य पतवाणे भये इलाज लिखते हैं) मूकरे वाद छाणे भये पाणीके होदमें बेठणेसे निकल जाता है पहरभरमें) हींग अफीमका लेप वहोत दिनोतक करणेसे, मू करणेके पहली, अदर साफ होता देखा है, माह सुदि सत्तमीकू निराहार मिश्रीचावे तो नारू होताही नही, एसी वृद्ध सम्प्रदायसे सुणी है, लेकिन् सांझ पडे वाद घरसे बाहर उस रातकु न निकले तारे नहीं देखे, जो भूखा नहीं रहसके तो सांझकूं पाव मिश्री चावे कृत्य ऊपर मुजब)—२ नारू जब वहोत जोर करे या तूट जावे या तोडपड जावे तो पहले काले तिलोंकों एक कढाईमे एसा सेके सो जलणे जेसा हो जावे, वाद उनोंको पीस सव सूजनपर लेप कर देवे मू खुल्ला रहणे दे, वाद क वार पट्ठेकी गिरतो ४ उसकू एक मट्टी पात्रमें डाल उसमें तेल १ रुपेभर एक रुपेभर ईसपूगल मासाभर सिंदूर रत्ती सुहागा रत्ती अफीम रत्ती नोसादर डालके अगारपर सिजावे, वाद एक आक पत्ते पर लेके नारूके मूपर धरे और बाकी आकके पत्तोंपर तिलीका तेल लगाकर दो पत्ते आपसमे जोड अगारपर जरा गरम कर तिलोंका जहा २ लेप है, उसपर धरके कपडेसे बांध देवे तीसरे दिन पट्टा खोले, एसे तीन ४ पट्टे बाधणेसे सव दरद और नारू गलके निकल पडेगा, घाव भरणेकू गाभणिया फोहा बाधाकरे, या किसी मलमकी वत्ती लगावे, ४ नीलाथोथा जलमें उकाल नारू पर झारा करे, सुहावते जलका और गाभणिया फोआ बाधे आराम होता है, ५ आकके पत्ते एरडके पत्ते एरडी तेलका पोता अफीम धतूरेका पत्ता नींबके उबाले भये पत्ते, हींग कारबोलिक तेल, साबू, कांदे दोनो मिलाके,पकाये भयेका पट्टा इत्यादिसे नारू मिटता है, साफ नहीं होय जहांतक हलणा चलणा नहीं, नही तो तोड पडता है, प्रभातसमे बीकानेरकी मिश्री देसी खांडकी चाब पाणी नहीं पीवे तो नारू अदर साफ होजाता है.

(व्याउफटणी)—(विपादिका)—(चिल्बलेन)—हाथ पैरोमें जरा सोजन दाह खुजली आकर उसमे फटणा होता है, ये एक हलके तरेका कुष्ट रोग है, और वो भीगी जगा तथा शरदी हवाके कारण होता है, (इलाज) कोढमें लिखे सब इलाज करणा, कोकम जो गुजरातमें खटाई होती है उसका तेल महदीके पत्तोका लेप, रालका लेप, वडके दूधका लेप वगेरे फुलमा तथा मोम लगाकर जलती बत्तीसे सेकणेसे दरद फोरन मिटता है, शरदी और भीजी जगेसे वचके रहणा ठंढे जलसे धोणा नहीं पावोंमे मोजे रखणा

(विचर्चिका)—(लेप्रा)ये—एक कोढ और करोलियेकी जातका रोगहै करोलियेके रोगमें चक्कर वदनमें हर किसी जगे होकर फोतरे उडते हैं,जिसकू विभूती कहते हैं, और व्योंची

हाथ पैरो के तलेमें तेसें जांघ और गोडोंके तथा पैरोके ऊपर गिरियेके पास चीरे पडते हैं; खुजली आती है, और खरूट जमते हैं (इलाज) तनदुरुस्ती सुधरे एसी दवार्यो देणी कोढके सब इलाज इसपर चलते हैं बाहरके इलाजमें गधक तथा पारेकी मिलावटका मलम अच्छा है खस खुजलीका सब मलम अच्छा है २ रसोत कोकमका तेल मेंहदीके पत्तोंका लेप रालका मलम बडके दूधका लेप वगैरे फायदे वंद है, ३ दाहकू मिटाणेवाली दवायें जेसेंके आंवलेका चूर्ण त्रिफला चूर्ण गुलकंद आंवलेका मुरब्बा वगेरे, बद हजमी और बंध कुष्ट होणे देणा नहीं.

(चित्री)–(व्हाइटलेप्रा)–येभी करोलियेकी जातका चमडीका रोग है चमडीपर खुजली आती है और खुजालणेसें चमडी परकी फोतरी ऊतर जाती है सुपेद चठ्ठे पडते है चित्री मूपर और पीठपर जादा होती है–(इलाज)–काली जीरी खिलाणी कालीजीरीका लेप २ गधकका लेप ३ तिलका मालिस ४ बावची पाणीमे पीस उसका लेप करणा ५ हरतालका लेप गोमूत्रमें पीसकर करणा हरताल १ भाग त्रिफला १ भाग कालीजीरी ४ भाग ६ नीले थोथेके पाणीमें तेल मिलाकर मसलणेसें चित्री जल्दी आराम होता है.

किरण ९ मी.

छुटकर रोग. एकाएक होणेवाले.

बाकीरहे जो रोग तथा अकस्मात पैदा होणे वाले शरीर और मन संबंधी इजाओंका वर्णन इस किरणमें प्रकास करते हैं.

(आंगुलियोंकीवादी)–अगुलियोंमें वादी आणेसें लिखते आंगलियें धूजती है–(इलाज) सुद्ध कुचीलेका प्रमाण मुजब कितनेएक दिनो तक सेवन कराणा

(कमरका झिलणा)–(लम्बेगो)–कम्मरमे वादी आणेसे कमर झिल जाती है–(इलाज) कुचीलेकी फकी, वछनाग, वडी हरडेका सेवन, एरडीकी जडकाचूर्ण, योगराज गूगल, २ राईकी पट्टियें मारणी, वशीकी शिकलवाली, फलालीनकी कोथली करके, उसमे गधकका भूका भरके, वो कोथली कमरपर बंधी रखणी, टरपेन्टाइन, तथा सालिड तेल लगाणा, १ भाग आमोनिया, तीन भाग तेल मिलाकर, कमरपर मसलणा, आयोडाइन-पेइन्ट, ओपियमलीनीमेन्ट

(कमरका दुखणा)–औरतोंके वेर २ कमरमें दरद हो जाता है, रजोदर्शन याने ऋतुधर्मकी वखतमे, सहजसा दुखता है, लेकिन् जो ऋतुधर्म सबधी कोइ रोग होता है तो दरद वढता है, कुसुआवड (अधूराजाणा) प्रदर वगैरे, कमर दुखणेके कारण है–(इलाज)–जिस कारणसे दरद भया होय उसका इलाज करणा, स्त्रीयोके रोगके किरणमें आगे लिखा है, योगराज गूगल अथवा सादा गूगल, अछा इलाज है.

(पसीना)–(परस्पीरेशन)–हरेक अदमीके वदनके छेदोंमेंसे पसीना हमेस आया करता है, हवा और कपडोंके स्पर्शसे सूककर, दिखाई नहीं देता, लेकिन् किसी २ वखत वदनके प्रसिद्ध जगोंमें, अथवा दिनके चोकस वखतमें, पसीना आता है रातकूं पसीना आता है, तब बुखारकी शका पैदा होती है, नाताकती, तथा जीर्णज्वरमें, रातकू पसीना आता है, क्षयरोगमें तथा उरक्षतमें, जब मर्मस्थानमें जखम पडता है, तबभी रातकू पसीना आता है, इस बुखारकूं प्रलेपकज्वर कहते हैं, अग्रेजीमे हेक्टीक फीवर कहते हैं–(इलाज)–(वशंतमालती न० ५४) बुखार सिवाय दुसरे कारणोसे, शिर, कपाल, वगल वगेरे, अवयवोंमे, वहुत पसीना आया करता है, उसकेवास्ते गरम दवायें खाणी, कुलथीका आटा मसलणा

(थूक)–(वहोत थूकका आणा)–(सलावेशन)–(कारण)–दांतोंके मसूढे और मूके वरमसें ठढ नाताकती अजीर्ण दातोंका आणा और पारे सबधी दवाखाणेसे मूमें वहोत थूक आता है–(इलाज) १ फिटकडीके कुरले करणा ये सबसे अच्छा इलाज है, स्तभक दवायें, जैसेकै, कचनारकी छाल बेरकी छाल, खैरकी छाल, बाबूलकी छाल, पंचवल्कल तथा सुहागेका कुरला करणा, जिसकारणसे, थुक आता होय वो कारण बध करणा

(स्वरभग)–(सादवैठजाणा)–गलेके मर्मस्थानमें कोइ दरद होणेसे गरम चीजों खाणेसें तेसें शरदी लगणेसें साद वैठ जाता है–(इलाज)–१ आंवलेका चूर्ण सांझकू दूधके सग पीणा, कत्था, इलायची, खैरसार, कबाबचीणी वगैरे ठंढी दवायें कठकू खोलती है, बबूलके पत्ते वेहडेकी छाल, नागकेशर, चिरमीके पत्ते, मोलेठीका सत वगेरे अवाजकू सुधारती है, २ फिटकडीके कुरले करणा, अथवा पोर्ट वाइन, पाणी मिलाकर उसके कुरले करणा ३ वहुत बोलणेसें या वहोत गाणेसें अवाज वैठगई होय तब कठकू आराम देणा मौन रखणा या गरम दूध घी डाल पिलाणा हरडे वढियाकी छाल छमासा आने भरपाणीमें उकाल सुहावता हरडे–समेत पीणेसें स्वरभग मिटता है गाणेवालेकू इतनी चीजें अच्छी है (दुहा) सूठ कुलिंजन मिरमिरी राई पींपर पान इतना लेवे मिलायके कठकोकिला जाण (१) इतनी चीजें विद्या पढणे वालेकू और गाणेवालेकू त्यागणा चहिये (दुहा) खट्टा खारा खोपरा, सोपारी अरुतैल, जो विद्या गाना चहे, इतना दूरां मेल (१)

(हिचकी)–(हिक्कप)–करटा और लूखा और दस्तवध करणे वाले पदार्थ ठढापाणी ठंढाअन्न धूआ धूल नाकमें जाणा गरमी तथा हवा वहोत खाणी उपवाश ये सब हिचकीकू पैदा करणेवाले सामान्य कारण है–(इलाज)–मोर पखकी भस्म तथा लींडीपींपर सहत मिलाकर चेर २ चाटणा २ मोलेठीका चूर्ण सहतमें चाटणा ३ धमासेके काथमें

सहत मिलाकर दैणा ४ आंवला पींपर तथा सूंठका क्काथ मिलाकर पीणा ५ रढाभया दूध पीणा ६ उडद तथा हलदीके चूर्णकी बीडी पीणी ७ संभालूका क्काथ पीणा ८ लसण घीमें तलके खाणा.

(कफकाजाला)–वहोतसी वखत छातीमें कफका जाला जमता है, उसकुं मिटाणे कफकू नाश करणेवाली दवायोंका उपयोग करणा–(इलाज)–आंधी झाडेका खार २ अरडूसेका रस सहत मिलाकर पीणा ३ आकके जडका चूर्ण अथवा एपीका क्युआन्हा पाउडरसे, उलटी कराकर कफकू निकलवा दैणा ४ कोनरूगूंद टंकणखार नवसादर ये दरयेक चीज कफके चिकणे व लगमकू तोडता है.

(वाल निकालणेका इलाज)–हरताल ॥ ड्राम चूना ४ ड्राम गहूंका आटा १ ड्राम जलमें मिलाकर उसकी पोटिस लगाणी थोडी देर रखकर निकाल डालणी और तिलका तैल लगाणा इससे वाल गिर जाते हैं, २ हरताल ॥ तोला शंखका चूर्ण अथवा शख-भस्मी १॥ तोला पलासपापडेका खार ॥ तोला इनोंकों केलेके थडके रशमे अथवा आकके पत्तोंके रशमें घोट लेप करणा ३ हरताल १ भाग शखचूर्ण २ भाग मनशिल ॥ भाग साजीखार १ भाग इनोका लेप करणा पहली उस्तरेसे वाल निकाल डालणा पीछे सात दिन हमेस लेप करणेसे फेर वाल ऊगेगा नहीं

(वाल रंगणेका इलाज)–(कल्य) (खेजाब)–(केनाईटीस)–बुढापेमें वाल सुपेद हो जाते हैं, मगजकी नाताकती फिकर और मा बापके होय तो वच्चेके जुवानीमेंभी वाल सुपेद हो जाते हैं सुपेदी होणेसे लोक बुड्ढा कहा करते हैं चंद्रवदनियां बाबाजी कहकर हसती है इसवास्ते वहोतसे लोक काले वाल किये चाहते हैं १ मंहदीके पान पीस एक घटे वालोंके लगाये रखणा उससे वाल लाल होगा पीछे नीलके पत्ते पीस थोडे घटे बांध रखणेसें वाल काले होंगे २ त्रिफला नीलके पत्ते लोहका बुरादा भांगरा इनोकों वकरीके पेशाबमें पीस लेप करणा ३ आंवला ३ वहेडा १ हरडे २ आंवेकी गुठलीके अदरका मगज ५ भाग लोहका बुरादा १ भाग इस वजनसे लेकर महीनपीस लोहकी कढाहीमें धर रखणा दुसरेदिन लेप करणा ४ हाइपोसल्फेट ओफ सोडा १ ड्राम पाणी १ औंस संगमिलाकर दो चार दिन वालोंपर लगाणा ५ नाइट्रेट ओफ सिल्वर ३० ग्रेण पाणी १ औंस ये पाणी लगाणेसे वाल काले होयगें लेकिन् चमडीपर दाग गिरता है, ये दाग निमक अथवा साइनाईड ओफ पोटाशके पाणीसे निकल जाता है

(हडकवायू)–(हाईड्रोफोबीआ)–हिडकियाकुत्ता वरु स्याल वगैरे जानवरोंके काटणेसें अदमीकु हडक वायूका रोग होता है शरीर खिंचता है गलेमें अवाज होता है मूंमेंसे लाले झरती है पाणी पीणेसें, या देखणेसें, वायुका जोर उठता है पाणीसे ये रोगी डरता है हडकवायु उठेवाद रोगी दो तीन दिनमें मर जाता है–(इलाज)–जिस जगेका-

टा होय उस जगेकुं तुरत काट डालकर जला देणा ये हडकवायु उठे वाद फेर मिटाणेका इलाज फायदेवद अभीतक कोइ मिला नहीं है, पहलीके तो इलाज और मत्र करके अजमायाभी है सो हडकवायु विलकुल उठा नहीं आराम होगया रोगीकू अधारी कोठडीमें रखणा नशोंकों ढीली करे एसी दवा देणी जैसेके अफीम भग वेलाडोना वगेरे दवा देणी ३ कूकडवेल देणेसे सख्त उलटी होकर जहरी जानवर निकल जाते हैं, तेज उलटीकी दवासे रोगी वचता है योगचितामणीमें इस रोगकी दवा लिखी है सो देख लेणा.

(लू लगणी)-(सन्स्ट्रोक)-धूपमे फिरणेसे लूलगती है वचोंकों धूपका असर जल्दी मालम देता है, दाह प्यास शिरमें चक्र भ्रमण आखर वेहोश तक होणा ये उसके चिन्ह है, (इलाज) खट्टी तथा पित्त शामक दवाये देणी, २ वहुफली तेसें तुकमरियाका लुआव पिलाणा,३करमाला पिलाणा,४गेरू तैसें चदनका लेप करणा, ५ शिरपर तेसे छातीपर ठढा पाणी डालणा अथवा वरफ धरणा पोचीपर विलष्टर मारणा पैरोंकी पीडीयोंपर राईका लेप करणा, ६ वदन वहोत गरम होय तो साधारण गरम पाणीमें रोगीकू वैठाणा जुलाव देणा बुखार मिटाणेकी दवा देणी धूपमें फिरणेकी जरूर पडे तो शिरपर गीला कपडा रखणा शिरपर आकके पत्ते बांधणा दारू वगेरे जल्द पतला पदार्थ पीणा नही लेकिन् चा सोडावोटर और ठढा शरवत पीणा और पसीना होणे देणा एसा करणेसे फेरभी लूलगेतो छायामे जा सोणा और शिरपर ठढा पाणी डालणा

(अनिद्रा)-नींद नही आणा ये दिवाना होणेका पूर्वरूप है कितनेक रोगोंमे वहोत दरद होणेसे तैसें चिता डर वगेरे कारणसे निद्रा जाते रहती है-इलाज-जो कारण होय उसकू रोकणा मगजमे जादा गरमी होणेसें अनिद्राका रोग भया होय तो मगजकू शात करे एसा ठढा इलाज करणा जैसेंके पेठा पाक, दूधी (कडूका पाक) अथवा हलवा १ रातकू गरम पाणीसें स्नान करणा और रातकू शिरपर ठढा पाणी डालकर सोणा सोते वखत गरम किया दूध पीणा पग चपी कराणी पेरोंके तळवे घीसे मसलाणा २ गुडमें पींपला मूलका चूर्ण खाणा ४ पीलू (जालकी जडका क्वाथ) गुड डालकर पीणा ५दूध सहत दही तेलका मालिस शिरमे कानमें आखोंमे तेल डालणा ६ शाक दाल घी तैसें दूधमें कादेका रश देणा ६ अफीम तथा भांग फजूल नींद कृत्रिम लाती है, दुखकू भुलाणेके वास्ते ये कैफी चीजें कामकी है लेकिन् जहांतक साधारण इलाज नींदके वास्ते वण आवै तहातक एसे नसेका इलाज करणा नहीं

(मूर्च्छा)-(फेइन्टिंग)-ज्ञानेंद्रियों तथा कर्मेंद्रियोंमें दोप प्रवेश करता है तव मूर्च्छा आती है थोडी देर वाद वेहोस रह कर फेर होसमें आणा उसकू मूर्छा कहते हैं मूर्च्छा ये विशेप करके मन सवधी विकार और मनका धक्का लगणा है-(इलाज)-मूर्च्छावाले अदमीकू शिर नीचे करके वैठाणा मूपर ठढा पाणी छिडकणा ठढा पाणी तैसे

हवा डालणी सोणेके कमरेमें ठढी हवा आणे देणी खुली हवामें रोगीकूं लेजाणा २ साव-चेत करणेवाली दवाकी नाश सुघाणी हाथ पैर अच्छीतरे मसलणा.

(बेहोसी)–(कोमा)–खोपरीकू इजा मगजका रोग मूर्च्छा सापका डसणा अफीम तथा दारू वगेरेका जहर वहोत ठंडी वहोत गरमी भूख वाई (मिरगी) हिस्टीरीया वांइंटे वगेरे वेहोसीका कारण है, (इलाज)–१ जिस कारणसें बेहोसी आई होय वो दूर करणेका इलाज करणा आंखपर शिरपर ठंढा पाणी छिडकणा, २ तीखी नाश देणी जैसेके अकलकरा कपूर कांदेका रस तज नकछीकणी पींपर वगेरे ३ आमोनिया सुंघणा ४ छातीपर राई मारणी और वेहोसी जादा वखत रहे तो दस्त पेशावका कोईभी रस्तेसें खुलासा करणा

(तंद्रा)–(मींट)–ये सन्निपात ज्वरका अथवा भयकर किसीभी रोगका लक्षण है, इस रोगमें वायु प्रधान होणेसे रोगी आंख मूचकर पडे रहता है, (इलाज)–सन्निपातकी मींटमे सन्निपातका इलाज करणा और तेज अजन करणा (भारंग्यादि क्काथ न० १९६) १९७ अच्छा है २ जो रोगीके मर्मस्थानोमे कुछ चैतन्य होय तो शरीरमे जाग्रती लाणेवाली दवा देणेसे होंस आता है कस्तूरी अकलकरा तुलशी लींडी पींपर वच्छनाग सूठ ये हरेक वस्तु जागृती लाती है ३ मींट दूर करणेकूं तज पींपर त्रिकटु वगेरेका अजन किये जाता है

(चक्कर)–(भमल)–(गीडीनेस)–रोगी वाहरकी चीजोंकों फिरती देखता है अथवा अपणा वदन और शिर फिरता मालम देता है मगजकू कुछ तकलीप पहोचणेसें तमाखू सराप वगेरे नसेकी चीजोंसे किनाइन जैसी दवायोंसे पांडू नाताकती फिकर चिंता तथा महनतसे खराब वदवोसें बुखार तथा हीडोलेके हीडणेसे चक्कर आता है, वहोत उचा चढके नींचा देणखेसें पित्तका विगाड ये भमलका मुख्य कारण है, इस-वास्ते कारण जाणके इलाज करणा, (इलाज)–सोफ काली मिरच मुनक्का घोटकर पीणेसें पित्तका चक्कर मिटता हैं, नसेका चक्कर ठढा जल आंखोंपर छांटणेसे मिटता है, कागजी मीठे विदाम और मिश्री घोट पीणेसें मगज सवधी चक्कर मिटता है सूठ घीमें सेक बूरा मिलाय खाणेसे सवतरेका चक्कर मिटता है, धमासा रुपेभर उकाल घी डालके पीणा फेर दोपानुसार इलाज करणा.

(सोजा)–(ड्रोप्सी)–सोजा सव वदनमें होता है किसी एक ठिकाणेभी होता है उसकू अंग्रेजीमें (इन्फलेमेशन) सें जुदाही रोग गिणते हैं दुसरे कितनेक रोग सोजेका कारण होता है, तोभी वो रोग दवकर शोथ रोग मुख्य रोग होजाता है, इसवास्ते देशी वैद्यक शास्त्रमें उसकु जुदा रोग गिणा है, (इलाज)–(१ पुनर्नवादिक्काथ न० २१९) २ पवित्र चूर्ण (नं० २३२) ३ नारसिंह चूर्ण (न० २३१) ४ सूठके उका-

लमें दूध डालकर पीणा ५ त्रिफलाके काथमें भेंसका घी डालके पीणा ६ गुड, तीन घर्षका लींडीपीपर तथा सूंठका चूर्ण खाणा ७ त्रिफला दारूहलदी पटोलपत्र देवदारू नीमगिलोय नींमकी छाल मकोय इनोकुं सम वजन लेके काथकर ठढा होणेपर सहत डालकर पिलाणा पथ्यमें पुराणे चावल या मूगकी दाल निमक नहीं देणा ८ धतूरेके बीज शुद्ध तो. १ हींगूल शुद्ध तो. १ काली मिरच तो २ दूधमें खरलकर रत्ती २ दो नो वखत विना मीठे गउके दूध सग देणा, पथ्य खाली दूध या चावल मिलाकर ९ इसीतरे वसत मालतीभी इस अनुपानसे सोजा उतारती है १० सग्रहणी रोगमें दस्तके थामणेकी दवा देणेसें जो सूजन आई होय तो हमारी बनाई अमृतवटी या ग्रहणी जीप करश तक और जीरे सूठके सग देणा (११ बाहरका इलाज)–साटेकी जड सूठ तथा वछनागका लेप १२ कांकच आक तथा एरडीकी जड इन तीनोंकें पत्ते पीस गरम कर लेप करणा ९ दोपघ्न लेप न० ३११

(दाह)–जलण दोतरेसे होती है एक तो किसीभी जगे, दुसरी सब वदनमे, जखममें, भिलावा वगेरे दाहक चीजोंके स्पर्शवाले भागमें, और हाथ पैरोंमें दाह होती है, वो तो स्थानिक दाह कहलाती है बुखार वगेरे कितनेक रोगोमें सब वदनमे दाह होती है, (इलाज)–दाह मिटाणेकु ठढा इलाज करणा एक ठिकाणेके दाहमें लेप वगेरे बाहरका इलाज और सब वदनके दाहमें पेटमें दवा खाणेकू देणा २ दशांग लेप चदन तथा वाला मरखण अरीठेका जल नवसादरके जलमें भीगाया भया कपडा गुलाब जल लवडर तथा कोलनवोटर ३ शारीरक दाहमें पीणेकी दवा पित्त शामक दवाये (पृष्ठ २८०) गुलकद गाजुबांका रश गिलोयका रश तुकमरियाका लुआब बहुफली गोखरू त्रिफला अनार दारु धाणा पित्तपापडा बीलका शरवत चदलियेका शाग जवका पाणी कली चूनेका पाणी चदन तथा सूठकू वसा भया पाणी चावलोंका धोवण चदन मिश्री और सहत

(पकणा)–(सप्युरेशन)–किसीभी जगे या मर्मकी जगे पकणा तीक्ष्ण दाहसे जितना रोग हो जाता है उससे वदनमें किसीभी जगे पकणा होता है, फेफसा आंतरा यकृत् मगज ये उसकी मुख्य जगे है खूनका जमाव सोजा दाह तथा बुखार ये उसके मुख्य लक्षण है (इलाज)–पोस्तके डोडोंके जलका शेक २ अलशीकी पोटिस ३ नवसादरके जलका पोता.

(हड्डीका सोजा तथा सडणा)–इसका मुख्य कारण उपदश होता है गरमी सुजाकका आगे वढा भया दोप हड्डीमें दाखल होकर उसमें सोजा तथा सडा पैदा करता है, (इलाज) १ योगराज गूगल २ शुद्ध पारेसे वणा भया और पीछेभी सोधा भया

कपूर हिंगूल वगेरे दवाभी इस रोगमें फायदेचद है चतुर वैद्यकी राहसें लेणा जो दवासे नहीं सुधेर तो आखर शस्त्रसे सडा भया भाग निकलवा डालणा.

(ग्रथी)–(गांठे)–(ट्युमर्स)–रसोली अर्बुद विद्रधी गलगड कंठमाला वगेरे वहोत तरेकी गांठे होती है, ये गांठे शरीरकी विगडी हालतकू कहती है अर्थात् वदनमें खून वगेरे धातू विगडणेसें एसी गांठे निकलती है इसवास्ते वाहरका इलाजकरनेसे अदरका इलाजकीवहोत जरूरी है, (इलाज)–खून सुधारणेवाली दवा जैसें कोडलीवर आयर्न वगेरे डाकतर देते हैं (देशी दवा) कचनार ग्रथी रोगपर वहोत तारीफ करणे लायक लिखी है कचनार दरखतकी छालका क्वाथ अथवा (कचनार गूगल न० ४०) वाहरके इलाजोंमें ३ दोपघ्न लेप वहोत प्रसिद्ध है और उसका वहोत दिनोतक जाडा लेप हमेश ताजा ताजा बांधणेसें दोपकू खेंचता है ४ टिकचर आयोडाइन हमेस दो तीन वखत लगाणा इसके सिवाय पोल्टीस शेक वगेरे पकाणेका इलाज करणा.

(रसोली)–(मोल्स्कम)–एक तरेकी वहणेवाली गांठकू रसोली कहते हैं वो दाबणेंसें नरम गहुके कणक जैसी मालम देती है, चीरणेसें उसमे एक थेली मालम देती है उसमेसें चिकणा रस अथवा गहुके कणक जैसा डूचा निकलता है उसका पीप खराब वदवो मारता है (इलाज)–गुल देणेसे तथा विखरणेकी दवा लगाणेसें मिटती है, २ आयोडीनपेन्ट, जो भेदकी गांठ तकलीप नहीं देवे उसकू छेडणा नहीं अडचल देणेवाली रसोली जो उपर लिखे इलाजसें अच्छी नहीं होय तो शस्त्रसे निकलवा डालणी.

(तिल्ली)–(स्पलीन)–पेटके बांई तरफ पांसलीके नीचे तिल्ली विपम ज्वर और मेलेरियाके ठढ देके बुखारमें पैदा होती है जब ये वहोत वढती है तब सब पेटमें भर जाती है ठढके तपके हुमलेमें तिल्ली खूनमें भर जाती और उसमे खून जमजाता है, इसी सबबसें तिल्लीवालेका चहरा खून विगरका फीका लगता है, (इलाज)–१ तिल्ली-पर ऊमर मुजब २५ जोंके लगाणी २ जो इस रोगमें दस्त नही लगता होय तो दस्त लाणेकी दवा देणी जैसेके हरडे अथवा सल्फेट ओफ सोडा कीनाइन और आयर्न देणा जो स्वतः दस्त लगता होय तो सोडा नहीं देणा ३ बुखार सग होय तो बुखारकी दवा देणी ४ जो बुखार विगर तिल्ली कुछभी दरद करे विगर वढती होय तो कीनाइन और लोहकी वणी दवा देणी ५ ऊपरकी चमडी गीली होय तहांतक पौष्टिक दवाये तिल्लीपर हमेस टिंकचर आयोडीन लगाणा ६ आयोडाइड ओफ मर्क्युरीका मल्लम लगाणा ७ कुमारिकासव लोहासव, मडूर भस्म, चंद्रप्रभा सहजणा सरपखा इसकी छालका चूर्ण अथवा क्वाथ पीणा.

(काखविलाई)–(एबसेस)–काखके अदरका फोडा)–(इलाज)–इसपर ग्रथीका उपाय करणा २ अफीमके डोडोंका गरम पाणीका सेक करणा अलशीकी पोल्टिस

अथवा गहूंकी पोल्टिस वांधणी पके पीछै उसकू फोडणी दवा लगाकर या शस्त्रसें पीछै भरणेका इलाज करणा

(वद)-(व्यूवो)-वदकी गांठ आजकल वहुतोंके होती है वो वदफेली सुजाक और गरमीसे होती है, (इलाज)-दोषघ्न लेप अलशीकी पोल्टिस ३ नवसादरका पोता ४ वडके दूधकी या गूलरके दूधकी या कोनरू गूदका लेप करणा या पट्टी मारणी ५ पारेका मल्लम ६ सीसेकी वट्टी या गुड चूनेका लेप कर रुई चपकाणा ७ या गुडकू पाणीमें डाल उकालते जाणा और भग पीस झुरकाते जाणा जाडा भये वाद लुपरी वांधणी दुसरे दिन फेर इसीतरे वहोत दिन करणेसें वैठ जाती है, पकणेसें चीरा दिलाणा या दवा लगाके फोडणा पोल्टिस वांध पीप निकाल भरणेका इलाज करणा

(पाठा)-(कार्यकल)-(उसके लक्षण)-चमडी लाल तथा करडी जलण तथा दरद होता है, थोडे वखत पीछे सूजन दिखाई देती है, और काछवेकी पीठ जैसा उपसा भया गोल करडा फफोला उठता है सोजा वढणेके सग जलण तथा दरद वढे बुखारके लक्षण होय थोडे दिनोमे पाठेका रग काला पडता है और सूजनके चोतरफ छोटे२ दाणे जैसी फुणसियां होती है वो फूटणेसें पाठेमें छेद पड जाता हैं, उनोंमेंसें पीप झरता रहता है, तोभी पथर जैसा करडा होता है थोडेही दिनोंमें रोगी नाताकत होकर घभरा जाता है आगे वढणेसें सब छेदके आसपासकी चमडी सडकर निकल जाती है, और उस जगे वडा खड्डा पड जाता है, उसमेंसे वदवो मारता पीप तथा मांसका छींछडा निकलते रहता है, पाठा जादा करके एकही होता है, लेकिन् कितनी एक वखत एक मीटे पीछै पासहीमे दुसरा दुसरा मिट कर तीसरा अथवा सगही पाच सात पाठे होता है, पाठा वहोत करके पीठकी करोडपर गरदनपर खधेपर चूतडोंकी विचली हड्डीपर कभी २ हाथ पेर होठ छाती पेट वगेरे ठिकाणोमेंभी होता है, (इलाज)-१ जुलाव लेकर पेट साफ करे पीछै वुखारकी दवा लेणी २ जलण तथा दुख मिटाणेकू दशाग लेप गुलावजलका या कपूरके पाणीका या चदनके पाणीका कपडा धरणा ओपियम और वेलाडोणेका लेप अथवा निलाष्टर मारणा ३ सवसें अच्छा इलाज गहूके आटेकी या अलसीकी पोटिस है, इस पोटिससें पाठा फूटे तो चीरके निकलवाणा नहीं कारण पाठेके रोगसे भई नाताकतीसे रोगी शस्त्रसह नहीं सकता फूटे पीछे व्रणका इलाज करणा गरम पाणीसें हमेस धोणा छींछडे निकाल डालणा ४ टरपेन्टाइन तथा सालिडका तेल अथवा जात्यादि तेलमें रेसेवाला कपडा या लींटकू भिगाकर पाठेकी पोलारमें दवाकर ऊपरसे पोटिस मारणी ५ कारवोलिक एसिड १ ड्राम उसकू २ औंस पाणीमें मिलाकर उसका लोशन पाठेपर धरणा और पाठेकी जमीन जहातक दीखे तहातक सादे मलमकी पट्टी मारणी ६ जात्यादि घृत पाठेमें भरणेमें और उमपर दोषघ्न लेपका जाडा थर लगाणेसें

पाठा जलदी आराम होता है ७ पाठेके रोगमें खून साफ करणेवाली तथा दवा ताकत वर पेटमें जरूर लेणा चाहिये

(भगदर)-(नवासीर)-(फिस्युलाइनएनो)-गुदा चक्रके आसपास एक वडा-गभीर व्रण होता है उसकूं भगदर कहते हैं भगंदर पुराणा भये बाद वहोत वढता है तब बैठकमे दुसरा मू करता है उस करके भगंदरमेंसें पीपके संग दस्तभी आता है एसा भगंदर मिटता नहीं (इलाज)-गुदा चक्रके आसपास फुणसिये होय तव लघन जुलाब वगेरे करणा त्रिफला गूगलका सेवन करणा, पथ्य प्रमेह तथा हरस मुजब करणा रातका भिजाया भया अन्न कच्चा करडा ठढा अन्न गरम पदार्थ उठ घोडेकी सवारी मैथुन ऊकडु वैठणा दिनकूं सोणा तथा कृमि पैदा करणेवाले पदार्थ गुड तैल बैंगण हींग जादा मिरच भगंदरवाला आराम भये वादभी वर्षभर पीछे नहीं करे भगदर पाच किस्मका होता है, हर किस्ममें फुणसियें फोडे और जखम होते हैं इसके होणेका मूल कारण गरमी सूजाक या अशुद्ध पारेकी दवा खाणा वा जे वसत कृमिरोगसेभी ये हो-जाता है, इस रोगमे दस्तकी दवा लेते रहणा त्रिफला सनाय वगेरे २ फूटे पीछै इसकू चतुर डाकतरसें चीराणा अथवा आकका दूध इस घावमें भरणा अथवा कोइभी नीला-थोथेका सोरेका गंधकका तेजाब या साजीखार वगेरेसें घावकू जलाणा या गुल देणा पीछै आइडोफारम वगेरे भरके व्रण भरणेका इलाज करणा ३ निसोत तिल जमालगोटा मजीठ और सींधानिमक घी तथा सहत इन सर्वोकों पीस भगदरपर खूब मसलकर पीछै लेप कर देणा ४ हरडे बहेडा आंवला के रशमें बिल्लीकी हड्डी पीस इसीतरे लेप करणा ५ थोहर तथा आकके दूधमें दारूहलदीकूं पीस उसकी वत्ती भगंदरके छेदमें देणा ६ त्रिफला भैंसा गूगल तथा वायविडगका काढा पीणा ७ वायविडग त्रिफला और २ भाग पीपर इनोंका चूर्ण सहत तथा तेलमें चाटणा ८ त्रिफला १८ तोला शिलाजीत शुद्ध १८ तोला पींपर १८ तोला इलायची १८ तोला वशलोचन १८ तोला वायविडग १८ तोला गिलोयसत ९ तोला समवजन बीकानेरकी मिश्री मिलाय दूध तुरतका दुहा भया उसमे सहत डाल तोले दोयकी फक्की दोनों वखत लेणी और पूर्वोक्त पथ्य करे कसरत क्रोध करे नहीं भारी अन्न खाय नहीं भगंदर निश्चै मिटै.

(नासूर)-(नाडीव्रण)-जखम जब रगोमें प्रवेश करता है, तब नासूर होजाता है नासूरका मू सांकडा जखम गहरा होता है तथा उसमेंसें पाणी तथा पीप झरते रहता है, (इलाज)-१ त्रिफला गूगल आंवला योगराज गूगल हवा बदलणी (अच्छा पथ्य खुराक) तथा चोफूलिया चीरा दिलाणा सल्फेट ओफ झिंक ३ से ५ ग्रेण पाणी १ औंस पिचकारी लगाणी कास्टिक २ से ३ ग्रेण डिस्टील्ट वोटर १ औंस दोनोंको मिला पिचकारी देणी ५ टिकचर आयोडिन १ ड्राम पाणी १ औंस पिचकारी मारणी

५ नासूरका छेद वडा होय तो कास्टीककी अणी नासूरके मूंमे देणी ६ रूपेकी सली सोरेके तेजाबमें डबोकर नासूरके छेदमे फेरणेसे किसी वखत नासूर मिट जाता है.

(गूमडा)–(छोटीगाठे)–(बोइल्स)–जादा करके चहेरेपर थोडे दरदवाली गांठे सख्यावध होती है उसकू गुमडे कहते है वो करडी मटर जैसी जरा आसमानी रगकी तथा लाल रंगकी होती है, उसमें पीप धीरे २ होता है, और कितनीक जातके गुमडोमें पीप नहीं होकर धीमे २ वैठ जाता है, उसमेंसे जो पीप निकलता है वो विगडा भया होता है, वहोत पित्त प्रकृतिमें तथा पित्तकारक और अवगुणवाला खुराक खाणेसे खून गरम होकर विगड जाता है, तव एसा गडगूमड निकलता है, गरमीकी मोसममे ये जादा निकला करता है, (इलाज)–पित्तशामक दवाइयोसें खूनकी शाति करणी जैसेके मजीष्टादिक्काथ चद्रप्रभा आंवलोंकी वनावटे अमृतनटी वगेरे २ त्रिफला गूगल ३ कचनार गूगल ४ खैरसार तथा त्रिफलाका काथ ५ नींवकी छालका काथ घाहरका इलाज ६ वडी गांठोका इलाज इस छोटी गांठोपरभी चलता है जैसेंके शेक पोटिश नस्तर मलम पट्टी ७ कोनरूगुद रसोत रक्तचदन कपूरकाचरी खापरिया वगेरे रोपण दवायोंका लेप करणा

(खील)–(व्हिटलो)–अगलियोके पेरवेमें कांटे जैसी कोइ वारीक चीज रह जाणेसे वो पक जाती है और वहोत दरद करती है, (इलाज)–खारेतूवेका फल सिजाकर वाधणा ग्रथी तथा व्रणका इलाज करणा एक कपडेके मख्खण लगाकर उसपर नोसादर कपूर भुरका कर बांधणा और पाणीकी भीगी पट्टी हरदम रखणेसें फायदा करती है

(आंजणी)–(स्टाई)–ये दरद जाहिर है, गरम पाणीका शेक करणा सिंदूर लगाणा अथवा सिंदूरवाला लेप चोपडणा सुईकी अणीसे आजणीकू फोड डालणी आजणी का दरद खूनके विगाडसे होता है,वो वेर २ मिटता है, और फेर होजाता है, इसवास्ते खून सुधारणेकी दवा देणी मारवाडमें आखमे होती जिसकू गुरांजणी कहते हैं

(व्रण)–(चांदी)–(जखम)–(अलसर्स)–जखमसें अथवा दुसरे कारणसें कोईभी जगे पककर फूटता है उसमें जखम अथवा चीरे पडणेसे वो जगे गीली होजाती है उसमेंसें पाणी और पीप झरता है कुष्ट रोग गलत कोढ उपदश और खुजली वगेरे दरदोंमेंभी चीरे पडते हैं व्रणकी वहोत जाति है मुख्य २ इस मुजव (१ नाडीव्रण)- नाडीके सग सवध रखणेवाला व्रण

(२ सादाव्रण)–तनदुरस्त अदमीके भया २ जखम

(३ नाताकत जखम)–जखमका अंकूर वडा फीका और उचा होता है, कोर नीची होती है, पीप पतला पाणी जैसा और जखम धीरे २ रुकता है.

(४ दुष्ट जखम)–विगडा भया वदवो मारता पीप निकलता है सपाटीपर मराहुआ मांसका सडा भया भाग सुपेद या काले रगका होता है, ये जखम फैलता है.

(५ दाहक व्रण)–जखमके आसपास सूजन अदर दरद होता है.

(इलाज १)–पहली सोजेका इलाज करणा इसपर लेप पोल्टीस गरम पाणीकी वाफ वगैरे इलाज होता है, पित्तके जलणवाले जखममे दशांग लेप गीला या सूका लगाणा अथवा एसीही दुसरी ठढी चीजोंका लेप करणा वादी तथा कफके जखममे सोजेमें दोपघ्न लेप छाछमें पीसकर करणा अलशीकी गहूंकी थूली या आटेकी या कांदेकी गरम पोल्टिस बांधणी पोस्तके डोडोंके गरम पाणीका शेक करणा वेर २ इसतरे व्रणकू पकायां पीछे उसकू फोडणेका इलाज करणा शस्त्रका इलाज सवसे अच्छा है क्योंकी इससें विगडा भया दोष जल्दी निकलता है, जो पका व्रण जल्दी नही फूटे तो अंदरका पीप विकार करके खरावी करता है, शस्त्रका पूरा वैद्य नहीं मिले तो फोडणेकी दवा लगाणी जमाल गोटेकी जड चित्रककी जड थोर तथा आकका दुध गुड मिलावा हिराकशी सींधा निमक इनोकों पाणीमें पीस पके भये व्रणपर लेप करणेसे व्रण जल्दी फूट जाता है, हाथीदातके भूकेकू पीसके पके भये फोडेपर वृद डालणी साजीखार जवखार वगेरे खार लगाणेसेभी तैसे (जालका) दारूडीका लेप करणेसे फोडा फूट जाता है

३ पीछे उसकू शोधन करणेकी जरूरी है, इसवास्ते फेर फोडेपर शेक तथा पोल्टिस बांधकर पीपकू वाहर निकाल डालणा तिल मोलेठी नींवके पत्ते दारूहलदी हलदी निशोतकी छाल सींधानिमक पाणीमें पीस घी मिलाकर फूटे व्रणपर लेप करणा अथवा पहली लिखी चार चीजोका लेप करणा ४ दुष्ट व्रणकू सुधारणेवास्ते कडवे नींवके पत्ते तिल जमालगोटेकी जड निशोत तथा सींधानिमक इनोका चूर्ण सहतमे मिलाकर फोडेपर वांधणा उपलसिरीका लेप करणा फक्त नीवके पत्ते पीस चिकते फोडेपर वांधणेसें दोप का शोधन होता है, नीलेथोथेके पाणीसे फोडेकू धोणा अथवा नीलेथोथेकी डली फोडेपर दो चार दिन लगाणेसे उसकी दुष्टता दुर होती है, कोनरूगूंदकी गधे विरोजेकी वत्ती लगाणी ५ व्रणमें जीव पडे होय तो करज कडवा नींब तथा सभालूके पत्ते पीस लेप करणा इसमें जरा कपूर मिलाणा लसण पीसके लेप करणा कडवे नीवके पत्ते तथा हिग पीसके लेप करना कील चुपडणा इन दवायोंसेंफोडेके कीडे निकल जाते हैं, डीकामा लीसेंमी झड जाते है, (घावकू भरणेका इलाज) रसोत दवाणा गेरू दवाणा वोदार (मुरदासग) घीमे मिलाकर दावणा नीलाथोथा गोपीचंदन तथा गेरु दावणा कत्था तथा शखजीरा पीसकर दावणा कत्था ४ भाग हींग १ भाग पीसकर दावणा तिलकी चटणी पीस सहत मिलाकर फटे घाव पर लेप करणा सहत तथा सराप लेप करणा छोटी इलायचीके पत्तोंका लेप करणा काली तुलशीके पत्तोंका लेप करणा पंच वल्कलके

महीन चूर्णकू पाणीमें पीस लेप करणा जात्यादिघृत तथा जात्यादि तैल (न० २०२) (२९९) इसकी वत्ती वणाकर घावमे भरणेसें तथा पिचकारी मारणेसे गहरा अदर गयाभी व्रण भर जाता है, अथवा नाइट्रिक एसिड लगाकर पीछे पोटिस बांधणा जिससे विगडा भया मांस अलग होकर घाव अच्छा होकर जब ठहरता है, तब घाव भरणेकी दवा लगाणेसे भर जाता है आइडोफोर्म कारबोलिक तैल एसिडका मलम अथवा नाइट्रिक एसिड ४ बूद पाणी १ औंस २ क्लोरलहाइड्रेट १० ग्रेण पाणी १ औंस ३ सल्फेट ओफ झिंक २ ग्रेण पाणी १ औंस (७ व्रणकू धोणेकी दवा)—दारू हलदीका काथ४मासेका क्वाथ पचवल्कलका, उकाला नींबका पाणी, त्रिफलोंका पाणी, स्तभन दवायें, रोपण दवाये कारबोलिक लोशन (न० ५५०) ५५१ तथा ५५२ का लोशन कोन्डिसफलुइड (न० ५६९) ८ पेटमें खून साफ करणेकी दवा खाणी चहिये जब घाव नहीं भरे तब गूगल और गूगलकी सब घणावटें अकसीर इलाज है, गूगल व्रण शोधक है, त्रिफला गूगल किशोर गूगल तथा कचनार गूगल ये सब अच्छे है देखो गूगलका बयान.

(गभीर व्रण)—जो जखम बहोतही गहरा और हड्डीतक पहुचा होय और भरता नहीं होय उस व्रणमें हड्डी सडी भई आयें होती है, (१ इलाज)—गूगल इसपर सर्वोत्तम इलाज है, योगराज वगेरे वहोत दिनोतक साधन कराणा दुष्ट व्रणका एक एसाभी इलाज फायदेवद सुणा है, पुराणा सो वर्षका दिवालका चूना महीन पीस घीमे मिलाय गभीरव्रण में भरे तो घाव अच्छा होय २ खैरसारकी उकालीसें इस व्रणकू धोणा

(पथर)—(भाठा)—(बेडसोर्स)—बहोत दिन बेमारी रहणेसें रोगीकी पीठमे पत्थर जैसें होते हैं पहली लाल चादी गिरती है और पीछेसे वो भाग सडकर गलता है, (इलाज)—कोयलेके भूकेकी पोटिस मारकर भाठेका सडा भया भाग अलग करणा एरडीका तेल लगाणा अथवा इसका पोता धरणा २ वोटरड्रेसिंग (न० ५४०) ३ कारबोलिक लोशन १ भाग कारबोलिक एसिड और ४० भाग पाणीसे धोणा उस-पर आयडोफोर्म भुरका कर कारबोलिक तेल धरणा एक तरफ बिछोनेमें बहोत दिन पडे रहणेसें शरीरका जो जो भाग दबे रहता है, उसमेंसें स्पर्शज्ञान कम होता है, उस करके भाठा पडता है, उहांतक तो वेमारकू मालम नहीं पडता इसवास्ते एसे वेमारकी हर-वखत दरियाफ्त करणी फेर एसे दबे भये घसाते भये भागोकू हमेस दो वखत फिटक-डीके पाणीसे धोणा जिससें चमडी करडी होजावे.

(गुदभ्रंस)—(कांच)—(प्रोलेप्ससईनएनी)—गुदाके अदरका भाग बाहिर निक-लता है, नाताकत अदमियोंके नाताकत बच्चोंके कांच निकलती है, दस्तोंकी वेमारीमें वेर२ कराजणेसे आमण निकलती है, (इलाज)—काच बहोत करके आपहीसे अदर चली जाती है, अथवा वेमार आपही दाबकर अदर दाखल कर सकता है, काचपर

तेल लगाकर उसपर एक कपडेका टुकडा धरकर अंगुठेसे दवाकर अदर डाल देणी हरस पथरी मूत्रग्रंथी वगेरे जो कारण होय उसका इलाज करणा २ गऊका गोबर गरम कर उसका सेक करणा ३ खट्टी वस्तुओंसें सिद्ध करा भया घी चुपडणा ४ भंगकी लुगदी बांधणी ५ हीराकसी १ से २ रत्ती तीन तोला जलमें मिलाकर उसकी पिचकारी लेणी अथवा उससे कांच धोणी तब सुकड कर बैठ जाती है, ६ गहूंके आटेमें अच्छीतरे घीका मोण देकर उसका शेक करणा ७ जामुनकी छालकी उकाली छांटणा.

(कूब)-(हम्प)-करोडकी हड्डी वांकी होती है, उसकू कूब कहते हैं, ये तीन तरेकी है अगली १ पिछली २ बाजूकी ३, (इलाज)-योगराज गूगल.

(अंत्रवृद्धि)-(सारण)-(हर्निया)-पेटके पडदेके छेदोके रस्ते आंतरा जांघकी जडमें ऊतर आवे इसके सिवाय आंतरे वृषणकी कोथलीमें उतरता है, तैसेंइ नाभिके छेदके रस्ते पेटके ऊपर चढ आता है, उसकूभी कितनेक सारण कहते है, निश्चे देखणेसें वृषणके आंतरोकों अंतर्गल और नाभिपर चढे भये आंतरोंकों दूडा एसी जुदी२ संज्ञासे पहिचानते हैं, (इलाज)-आंतरे नीचे नहीं उतरे इसवास्ते कमर पट्टा आता हैं वो बांधणा २ आंत उतरे तो नवसादरका पोता धरणा तो सकुडा कर चढता है.

(अडवृद्धि)-(हाइड्रोसील)-(कारण)-सोजेसे जल भरणेसें खूनके भरणेसें गांठ होणेसें नस फूलणेसे कोथलीकी चमडी जाडी होणेसे आंतरा उतरणा वगेरे वहोतसे कारणोसे आंड वढकर वडे होते हैं देशी वैद्यकमे इन सब रोगोंकू वृद्धि कहते हैं अंग्रेजीमे इन सर्वोंका नाम जुदा२ है, सो लिखते हैं,

(आंडोंकावरम)-(ओरकाईटीस)-वृषणवडे उसमें वहोत दरद थोडा बुखार उलटी (इलाज)-१ कोथलीकू गद्दीके आसरेसें अथवा पट्टेसें अधर रखणी गरम पाणीका सेक और वेलाडोनाका लेप २ रेचक तथा पसीनेवाली दवा देणी दोपघ्न लेप जल्दी उतारता है,५ जीर्णवरममें पारेका मलम लगाणा ६ सेलारस तथा तमाखूका पत्ता बांधणा ७ रालके लेपकी आडी खडी पट्टी मार उसपर लगोटी मारणी

(जलवृद्धि)-(हाइड्रोसील)-वृषणकी कोथलीके आसपासके रस पुडतमें पाणी भर जाता है, इस तरे पाणी भरणेसे वढते हैं छोटे बच्चोंके जो नल वढते हैं, उसमेंभी यही कारण है (इलाज) एरांडी तेलके जुलाबसे साधारण नलवृद्धि मिटती है २ डाकतर लोक पाणी नस्तरसें निकालकर पिचकारी फेर एसीभी देते हैं सोफेर पाणी नहीं भरता ३ एसा सुणा है की पजेवाली थोरके कांटे छीलके उसकू गरम जलमें सीजा, कर बांधणेसें चमडीमेंसें पाणी झर२ निकल जाता है, फेर कपडेपर मखण लगाकर नोसादर भुरका कर पट्टी बांधणी फेर फिटकडी या मांजूफल हरडे इत्यादि भुरकाणा जिससे घाव सूक जाता है, काली तमाखूके पत्ते बांधणेसें उलटी होकर कम पडजाता है.

(रक्तजन्यवृद्धि)-(हिमोटोसील)-रस पुडतमें खून भर जाता है, वृषणमें कुछभी तकलीप पोहचणेसें एकाएक नल नारगी जितना होजाता है, अंदर खून झरणेसेंभी रक्तवृद्धि होती है, ये वृद्धि पाणीकी वृद्धिसेभी जादा कष्टदायक होती है, (इलाज)-१ ठंढे पाणीका या नवसादरका पोता धरणा २ जुलाबकी दवा देणी ३ खून जम जाय तो कोथली चीराकर निकलाणा.

(शिरावृद्धि)-(वेरीकोशील)-शिरा याने रगें फूलणेसें वृषणका कद वडा होता है-वृषणकी शिकल आंडोंकी तरफ तो वडा और पेटकी तरफ सकडा होता है-थेलीमें कृमियां भरी होय एसा मालम देता है, सूणेसें तथा दाबणेसें कदमेंकम होता है, और खडे रहणेसे फेर भर जाता है हवा भरणेसे ये रोग होता है लगोट या काछिया बांधणा.

(वृषणकी गांठ)-(सारकोसील)-गरमी सुजाक वगेरे शारीरक बेमारीसे नलोंकी गांठ वधकर नींबू जैसी करडी होती है, गरमी सुजाक भये पीछे बहोत दिन पीछे नलोंमें गाठ होती है इसवास्ते सुजाक गरमी मिटै एसा इलाज करणा राजलका लेप लगाणा दोषघ्न लेप लगाणा बहोत मुदत भये पीछे इलाज लगेगा नहीं

(कोथलीकी वृद्धि)-(एलीफन्टायासीस)-इस बेमारीमें गोलीकूं कुछ इजा नहीं होती लेकिन् कोथली जाडी होती है, और उसमें वरम होकर वधते २कितनीएक वखत इहांतक वढती है, सो खडे रहे अदमीकी कोथली जमीनतक पहुचती है, और वजनमे ५० से सो रतल तककी होती है, (वृद्धिका सामान्य इलाज)-१ एरंडीका तेल सबसे अच्छा इलाज है दूधमें मिलाकर एक महीनेतक पीणा २ एरंडी तेल गूगल गोमूत्रका सेवन करणेसें बहोत दिनोंतक, तो नल वढणा मिटता है, ३ ठंढा लेप और जोक लगाणेसें पित्त और खून भरणेका नल वढता मिटता है, तीखे तथा गरम लेपोंसें सेक तथा बांधणेसें रसवृद्धि तथा मेदवृद्धिका नल मिटता है, ४ रास्नादि क्काथ और योगराज गूगलका साधन अन्त्रवृद्धि तथा वायु संबधी नलका रोग मिटाता है,५कडवे तूबकी जडके क्कायमें एरंडी तेल तथा दूध डाल पीणेसें सब तरेका नलवृद्धिका रोग मिटता है, ६ वच तथा सरसूका लेप करणा अथवा सहजणेकी छाल और सरसूका लेप करणा, ७ दोषघ्न लेप सबमें फायदेवंद है.

(जलणा)-(बर्न्सएन्डस्कोल्डस)-(दाझणा)-दाझणेकी और जलणेकी वदनपर जखमकी तरे असर होती है, १ जलाणेवाली गरम चीजके थोडे स्पर्शसें चमडी लाल होती है, और जलती है, २ जादा जलणेसें फफोला उठता है, ३ और सखत जलणेसें ऊपरकी चमडी तैसें अंदरके पुडतकाभी नाश होजाता है चमडी बिलकुल स्याह होजाती है, (इलाज)-कपडे जलणे लगै तब दोडणेके वदले जमीनपर सोकरके शरीरकू जमीनके संग अथवा पासमें पडी चीजके संग घसणा जिससें भडका वध होगा जलेगा नहीं

अगर जो पास जल होय तो ऊपर डालणा, २ पीछे वेमारकूं बिछोणेमें सुलाणा और वहोत इजा भई होय तो उसकूं सतेज करणेवास्ते गरम काफी अथवा पाणी पिलाणा डाकतर लोक ब्रांडी पिलाते हैं, ३ जले भये भागके ऊपरका कपडा फाडकर निकाल डालणा लेकिन् जली भई चमडीकू अलग करणी नहीं ४ पीछे टरपेन्टाइन अथवा स्पीरिट वाइन अथवा केरोसीन (घासलेड) अथवा ब्रांडी और सम वजन पाणी अलशीका तेल घी अथवा तिलीका तेल और चूनेका नितरा भया पाणी इनोके अंदरका कोई भी पतला पदार्थमें महीन कपडा भिगाकर दाझे भये भागपर धरणा और कपटा तर रखणेकू वोही पतला पदार्थ सींचते जाणा ५ ये चीजों तुरत नहीं मिल सके तो जले भये भागपर चावलका या गहूका महीन आटा जखम ढक जाय तहांतक जाडा थर करके दाबणा इस आटेका पापडा जमकर आपही खरूट लेकर उतरता है, लेकिन् जो कभी पीप पड जाय तो पापडा उतार धीरेसे जखमकू धोकर सादे मलमकी पट्टी मारणी फफोले उठें होय तो सुईसें फोड पाणी निकाल डालणा लेकिन् चमडी उखेलणी नहीं इस जलणे या दाझणेपर इतना खयाल जरूर रखणा सो ठंढा पाणी या ठंढा इलाज कभी करणा नहीं नुकशान करता हे, इहांतककी बाहरकी हवाभी उसके अंदर नहीं घुसणे पावे उस जली भई जगाकू थोडी देरभी खुल्ला रखणा नहीं.

(जखम)-(वुन्ड)-तलवार छुरी वगेरे कोईभी हथियार लगणेसे चमडीका कोईभी भाग कट जाता है, (इलाज)-पहली तो वहते खूनकू बंध करणा इसकी जरूरी है, रक्त स्तभक दवा पृष्ठ (२९२) का पाणी डालणा अथवा उनोंका चूर्ण दाबणा ३ निमकके पाणीका पट्टा बांधणा, ४ इकेला पाणी डालणेसे खूनकी नली दाबणेसे अथवा बांधणेसें जखमका खून बंध होता है, वडे जखमोके शस्त्रवैद्य हैं सो टांके देकर सांधते हैं, वडे जखमकी दोनु कोरें जब एकठी मिलती है तभी उसमें भराव आता है, खेंचकर पट्टा बांधणेंसे जखम मिल जाता है, ५ रालके पलाष्टरकी पट्टी मारकर जखमके दोनो नाके एक जगे करणा एक वेर धोकर साफ करे पीछे जखमपर वेर२पाणी डालणा नहीं ६ भराव लाणेकूं तेलका पट्टा बांधणा और तेलही सीचते जाणा ७ कारबोलिक एसिडमें दशगुणा तिलीका तेल मिलाकर उसकी पट्टियें लगाणी दो दो दिनसें बदलणा ७ बोरासिक एसिड एक ड्राममें एक औंस सादा मलम मिलाकर पट्टी लगाणी जल्दी भरणेके वास्ते उसमें आयडोफोर्म मिलाणा (पका भया जखम)-९ पोटिस बांधणा हमेस एक दफे कारबोलिक लोशनसें धोणा एक भाग कारबोलिक एसिड वोणेवालेमें ४० गुणा जल मिलाणा.

(हड्डीका टूटणा)-(फ्रेक्चर)-हड्डी सांधणेका कुदरती काम जैसा अंदरकी शक्ति करती है एसा आदमी नहीं कर सकता हड्डी वैद्य जर्रे और डाकदर लेप

और मलम पट्टीकेवास्ते मगरूरी रखते होय तो वेलाशक रखै लेकिन् उसमें मुख्य कारीगरी निर्माण नाम कर्म कुदरतकी है, अदमीकी हाथ चलाकी और चतुराई फकत हड्डीकू ठिकाणेपर वैठा देणेमें काम देती है, और पीछै हड्डी सांघणेका काम कुदरतसे याने स्वभाव वगेरे सववायोंसें आपही होजाता है, इसमे पुरुपकृत उद्यम समवाय इतना काम जरूर देता है, हड्डीके टूटे भये दो टुकडे जोडे पीठै रोगीने इतनी सावधानी रखणीके जहांतक टूटा भया अवयव सधी जे उहातक जराभी हिलाणा नही इस टूटे भयेकू सांध मिलाणेमें पट्टा प्रमुख वांधणेसें इसवातका अनुभवी वैद्य डाकदरोकी सल्ला लेणी उनोसेही बधाणा, (इलाज)-(१ न० ३१८) वाला लेप २ सोवेरके धोये भये चीमें चावलोका आटा मिलाकर उसका लेप करणा ३ मैदा लकडीका चूर्ण या सादडकू दूधमें पीणा ४ लसण सहत और पीपलकी लाख घी सक्करसे चाटणा ५ गहूके आटेका घी गुड मिला हलवा हमेश खाणा

(लचक)-(किचरीजणा)-(स्फईन)-शरीरका कोईभी भागकू कुछ इजा होती है, तब उस जगे खून जमणेसें सोजन तथा दरद होता है, (इलाज)-अशालियेका लेप २ आंवा हलदी साजीखार तथा मैदा लकडीका लेप ३ वावूलके पत्ते वाफकर वांधणा ४ ब्रांडी स्पिरिट वगेरेका भीगा कपडा धरणा ५ ईस सयाने कोनरू गूदका लेप ६ डाकदर लोक मुरगीके इडोके छिलकोंका लेप कराया करते हैं, ७ गूगलका लेप ८ ओपियम लीनीमेन्ट लचकवाले साधेकू मजवूत पट्टेमें लपेटणा ९ लचक पुराणा भये पीछे उसपर तेल लगाकर अच्छीतरे सेक करणा १० टिंकचर आयोडीन लगाणा

(चोट)-(कन्टयुशन)-चमडीपर जखम पडे विगर शरीरका कोइभी भाग किचरीजै अथवा पछाडीजै अथवा मार पडै तब उसपर ठढा लोशन लगाणा १ भाग स्पिरिट ८ भाग पाणी उसका पोता धरणा २ सोजन तथा दरद होय तो सेक करणा लचकका सब इलाज इसपर करणा सूजी भई जगा पकती मालम दे तो पकाणेका इलाज कर फूटे वाद घाव भरणेका इलाज करणा

(धोरीरगका कटणा)-जखम होणेसें हर शस्रसें जब धोरीनस कट जाती है, तब उसमेंसें चिरमी जैसा लाल खूनकी धार शीर फूटती है इस धार अथवा शीरका जल्दी अटकणा नहीं होय तो रोगीका चेहरा फीका होते जाता है, नाडी नाताकत पडते जाती है, चक्कर आता है, और आखर वेहोस होकर मर जाता है, (इलाज)-छोटी नस होय तो फक्त ठंढा पाणी डालणेमें वध होजाती हैं अथवा ठढा पाणीमें भिगाया भया कपडा जखमपर धरणा जो पाणीसे वध नहीं होय तो फिटकडी अथवा माजू फलका पाणी या वुकणी जखमपर दवाणा ३ टिंकचर ओफ स्टीलमें कपडा भिगाकर कटीभई नमपर धरणा अथवा कास्टिककी अणी नसके मूंपर लगाणी खून तुरत वध होगा ४ नसपर दावणेसें

अथवा जहां कटा होय उसके ऊपरके भागमें कसके डोरी बांधणेसेंभी खून बंध होजाता है, ५ धोरीरग वडी होय और ऊपरके इलाजोसें खून बंध नहीं होता होय तो डाक-दर जहांतक आकर नहीं पहुचे तहांतक ऊपर लिखे इलाज करणा नसपर बांधणा और दबाणा इस वातोंकों भूलणा नहीं कटी भई नसपर सखत गद्दी धरकर जोरसें पट्टा बांध-णेसें जल्दीके वास्ते खून वध हो जायगा, ६ योग्य इलाज होणेके पहली खून वहोत निकल गया होय उस करके अदमी वहोत नाताकत होकर वेहोस होगया होय तथा नाडी हाथ नहीं लगती होय तव डाकतर लोक ब्रांडी पाणीमें मिलाकर देते हैं, अथवा पोर्टवाइन या द्राक्षासव देते हैं, साल वोलेटाल बूद ४० सें ६० तक थोडे जलमें मिलाकर पिलाणा इस करके नाडी अगर तेज नहीं होय तो फेर पिलाणा ७ शीरा दूध मिली चावलोंकी कांजी वगेरे अच्छा पौष्टिक खुराक और सूता रखणा.

(पाणीमे डूबणा)–(डाउनिंग)–पाणीमें डूबणेसें गलेमें फासी खाणेसें और प्राण-वायु विगरकी खराब हवा श्वासमे लेणेसे श्वास रुककर अदमी गुगलाकर मरता है, एसे अकस्मातोंमें कृत्रिम श्वासोश्वासकी क्रिया चलती करणेकू विलकुल देरी करणी नहीं पाणीमे डूबे भये अदमीके भीगे कपडे निकाल उसका शरीर पूंछणेका काम किसी दुसरे अदमीकू सोंप पासमें खडे भये चालाक अदमीनें डूबे भये अदमीका श्वासोश्वास चलता करणेकी क्रिया सरू कर देणी जलदी डाकतरकूं बोलाणा तथा कंवल और सूके कपडे मगाणे अदमियोको दोडाणा डूबे भये अदमीके इलाज करणेमें दो वातका खयाल जरूर रखणा. पहली तो श्वासोश्वास शरू कर देणा और श्वासोश्वास सरू भयाके बदनमें गरमी लाणी तथा खून फिरणेकी क्रिया सरू कर देणी

(श्वासोश्वासकी क्रिया चलती करणेकी विधि)–१ श्वास नलीमें हवा आणे देणेकूं मू तथा नसकोरे साफ करणा मू खुला करणा जीभकू बाहर खेचणा जीभ तथा हेड-कीके वीचमें चिंपिया अथवा चीकणी पट्टी लगाकर जीभकू बाहर रखणी छाती तथा डोकपरका तंग कपडा दूर करणा २ वेमारकू अच्छी तरे सुलाणेकेवास्ते सीधी जमीनपर चित्ता सुलाणा और छातीके तरफका जरा भाग उंचा रखणा शिर तथा खंभोंके नीचे कपडा या गूदडेका वींटा देणा ३ श्वासकी क्रिया चलाणेकू क्रिया करणेवालेनें शिरके आगे बैठके वेमारके हाथ कोणीके ऊपरसे पकडणा और धीमेसें लेकिन चालाकीसे उचककर शिरतक लाणा फक्त दो सेकडेतक गिणती होय तहांतक रखकर पीछा वो हाथ छातीकी तरफ लाकर वेमारके छातीके संग धीमेसे और मजबूतीसें दाबणा इस तरे डूबे भयेके हाथ छातीसे शिरके सग और शिरसे छातीके सग वेर२ लेणा वो एसा जल-दीसें के ये क्रिया १ मिंटमें १६ वखत होय और बेमार स्वाभाविक रीतसें श्वास लेता

मालम पडै तब ये कृत्रिम क्रिया छोड देकर उसके शरीरमे गरमी लाणेकी क्रिया नीचेमुजब करणी.

(गरमी लाणी तथा खूनका फिराणा)–बेमारकूं धानलेमें या कबलमें लपेटणा और उसका हाथ पैर नीचेसे दबाणा गरम फलालीन गरम पाणीकी शीशीका शेक गरम पाणीका कपडेका शेक गरम इटोंका शेक इनके अदरसे जो मिले उससे कोडीपर खधे जांघ और पेरोकै तलियोंपर शेक करणा श्वास सरू भये पीछे गरम जल और सराप ब्राडी तथा पाणी डाकदर लोक देते हैं, काफीका एक चमचा पिलाणा बेमारकू नींद आवै तो लेणे देणा श्वासोश्वास फेर बंध होता मालम दे तो छातीपर और बगलके नीचै राईका पलाष्टर मारणा

(मोतके निशाण)–पाणीमें डूबा भया आदमी मर गया होगा तो उसमें श्वास अथवा रक्ताशयकी क्रिया बंध मालम देगा आंखोके पडदे आधे मिच जाते हैं, आंखोंकी कीकी चोडी होती है, जबाडे करडे और टेढे होजाते हैं, अगलिये आधी परधी छोटी पड जाती है.

(रक्तश्राव)–(ब्लीडींग)–शरीरके जुदे२ भागमेंसे खून गिरता है, उसकू रक्त-पित्त देशी वैद्यकमें लिखा है, (देखो पृष्ठ ४५२) १ नाकमेंसें खून गिरणा देखो पृष्ट (६००) २ जोकके डकमेंसें खून गिरणा उसकू बध करणा चहिये, (इलाज)–ठढा जल अंगली धरकर दबाणा फिटकडीका बूका दबाणा स्पिरिट वाइनमें डुबा भया कपडा डकपर दबाके धरणा कास्टिकके अणीका डकपर स्पर्श करणा (३ दांतमेंसे खून गिरणा)–दांत निकलवाणेसेंगिरणेसे चोट लगणेसें बहुत खून गिरता हैं, (इलाज)–लींटका अथवा नरम कपडेका एक गोटा दांतमे रखकर दांत भीड देणा शिर तथा दाढीकू एक बधनसें जकड देणा जिस करके मू खुल नहीं सके इसतरे कितनेक घटोंतक दोनो दांतोके बीचमें वो कपडा दबा रहणेसे खून गिरते बध होजाता है, (४ अदरका खून गिरणा)–अदरके खून नलियोको इजा पहुचणेसें या दरद होणेसें शरीरके अदरके मर्म स्थानोंमेंसें खून झरता है, जैसें कफके सग खून पडे तब समझणाके फेफसेमे रक्तश्राव भया है, इसीतरे उलटीमें खून पडणेसें होजरीमें रक्तश्राव जाणना दस्तमें खून गिर तो आतरोंमें जाणना और पेशाबमें खून पडे तो मूत्राशयमें रक्तश्राव जाणना शिरकी खोप-रीमें और मगजमेंभी रक्तश्राव होता है, इस सब तरेके खूनके झरणेमें रक्त पित्त रोगमें लिखे इलाज करणा

(फफोला)–(बिलस्टर्स)–चमडीके ऊपरके नीचेके पुडतके बीचमें पाणी भरके फफोला उठता है, उसकू ब्लिस्टर कहते हैं,)–जोकोंके डकसे अथवा दाहकारक जहरी वस्तूका लेप मारणेसें बिलस्टर उठता है, बहोत छोटे फफोले इलाज करे बिगरभी सूक

जाते हैं, बडे फफोले हथियारकी अणीसें या सूईसे फोड जल निकाल डालणा लेकिन फफोलेकी सुपेद चमडीकूं निकालणी नहीं उसपर हमेस मलम पट्टी लगाणी और उसपर कोइ इजा या दबाव होणे नहीं देणा.

(बाहरका पदार्थ अंदर चले जाणा)—(फोरेलवोडीझ)—नाक आंख कान वगेरोमे किसी२ वखत बाहरकी केइएक वस्तु अकस्मात् भर जाती है, तब अदमी बहोंत दोडादोडी करते हैं विचारते हैं अब ये चीज डाक्टर विगर किसीतरे नहीं निकलेगी सो निकालणेकी तजवीज लिखते है—(१ नाकमें गई चीज)—छोटे बच्चे खेलते२ नाकमें बाल चिरमी चिणे स्लेट पेनका कपडा पत्थरका टुकडा चोअन्नी पाई वगेरे वस्तु नाकके नसकोरोंमें डाल देते हैं. अथवा उडता जीव घुस जाता है, (इलाज)—एक नसकोरेकू दबाकर दुसरे नसकोरेकू जोरसे सिणकणा २ छींक लाणेकूं तमाखू वगेरेकी नास देणी ३ गरम पाणीसे नाकमे पिचकारी लगाणी ४ इस इलाजोसें नहीं निकले तो राई तथा गरम पाणी पिलाकर उलटी कराणी और उलटी होते वखत मूकू हाथसे बंध करणा याने उलटीका वेग मूसे निकलणेवाला नाकसे निकालती वखत नाकमे गये चीजकों बाहिर निकाल डालती है, ५ ये सब इलाज निष्फल जाय तो आखर बालका नाका अकोडेकी तरे नाकमें गई चीजके ऊपर चढाकर खेंचणेसे निकल जाती है, अथवा छोटे चिमटेसें पकडकर निकाल डालणा लेकिन इस आखरीके इलाजसे अदरकी चीज ऊपर नहीं चढजाय इसकी निगे रखणी

(२ कानमें गई चीजका इलाज)—१ पिचकारी २ चींपिया ३ आंकोडा टेढा किया भया ४ तेल अथवा निमककू जलमें डाल वो कानमें डालणेसे अदर घुसा जीव निकल जाता है, अथवा अदमीकू तकलीप कुछ नहीं देगा २ महीन और नरम वालकूं दोलडा करके कानमें उतारणा पीछे धीमेसें उसकू बाहर निकालणा जिस करके अदरकी चीज वालके बीचमें होकर निकल जायगा इसतरे कानकी चीज निकाले पीछे रुईका फोआ दाबणा नहीं तो कानमें सोजा या पकणेका डर है.

(३ आखमे गई भई चीजका इलाज)—ऊपरकी भांपणी ऊंची करके नीचेकी भांपणीपर चढाणी पीछे दोनोंको अलग२ कर देणा २ नाक बहोत जोरसे सिणकणा ३ आंख उघाडके रुमालकी कोर अथवा महीन ब्रस आंखमे फेरणा ४ ऊपरकी भांफणी तिणखेसे या पेनशिलसे उथला कर अंदर रही चीजकों जीभसे उठा लेणा.

४ होजरीमें गई चीजका इलाज—पैसा पाई काच बटन वगेरे वस्तु किसी२ वखत गलेसे उतर होजरीमें चली जाती है, उसकू निकालणेका इलाज—पतला खुराक खाणा नहीं तब करडे दस्तके साथ होजरीमेंसे आंतरेमें उहांसें गुदारस्ते बाहर निकलती है,

गलणेवाली चीज पैसा वगेरे धातू होय तो खटाई बिलकुल खाणी नहीं नहींतो धातू उगटकर जहर पैदा करता है

५ चमडीमें घुसी भई चीज—कांटा फांस सुई वगेरे वारीक चीज चमडीमें घुस जाता है, इलाज—१ चिपियेमें आयसके तो खेंचके निकाल डालणा नहीं तो सुइयेसे कुचर कर निकालणा २ एक दो दिन उसपर पोटिस बाधणा पीछै चमडी नरम पडणेसे नखसे या चींपडीसे खेंचलेणा.

औरतोंका रोग.

किरण १० मी.

इस किरणमे औरतोंके खास रोगोंके इलाज लिखे हैं, वेहोस इलाज सरू करणेके पहली ससारमे बदफैली और कुचालाजो नाजुक औरत जातकी शरीरकू बिगाडता है, उस तरफ ध्यान वाचणेवालोंकों पहली देणा चाहिये सबसे वडा कुचाला तो छोटेपणमें जो व्याह करणा सोहे, सोले वर्ष पहले जो स्त्री मैथुनसे वेगी उसके प्रदरादिक अनेक रोग होणा सभव है, आगेभी ऋपियोंके वाक्य है की ऋतु दान किया मतलब ऋतु आये वादही पुरुपका गमन होणा शशार विधि सुधारक है योगशास्त्रमेंभी एसा लिखा है समान कुल होणा याने गोत्री न होणा और द्रव्यमें बलमे सम होणा कन्यासे डेढी ऊमरका वर समान गिणा जाता है, कन्यासे अवस्थामें त्रिगुण जादा होय याने शोलेकी कन्या अडतालीस वर्षका मरद विषम रति होणेसें देणा निषेध है ये तो सामान्य नयवाद है, विशेप नयवाद एसा हैकी निरोग होय द्रव्यवान होय पूर्णवैद्यके आज्ञानुसार वर्त्तणेवाला उदार चित्तसे वाजीकरणादिक ओपधीमे द्रव्य लगाकर खाणेवाला एसा पुरुप तिगुणेवर्षवाला पूर्वोक्त कन्याके योग्यवर माना जाता है, लडका वीस वर्ष पहिले मैथुन करेगा तो रोगी जन्मभर रहेगा किसी कवीने कहा है, (दुहा)—तिरिया जोवन ती सलग, वलध व ड्रे दश सारा, पुरसां जोवन सो लगे, सुखशपत खुराक १ सब लोकोको मेरा उपदेश है के बाललग्नमे वहोतर नुकशांन समझके लोकरूढीकों छोडणा अच्छा है किंवहुना

(गर्भाधान)–(कन्सेप्शन)

पुरुप जो औरतको ऋतुदान देता है, उसकू गर्भाधान कहते हैं, इसकी क्रिया वैद्यकशास्त्रमे तैसेंइ जैन सूत्रतदूल वेयालीमें लिखा है, योग्य स्त्रीसे योग्य पतीने अच्छा बालक पैदा करणा ये उसका हेतु है, इस विधिके लोक अजाण इसवास्ते शतान पैदा करणेमें पतित होरहे हैं, इसवातकू उपयोगी समझके पहले वडे२ ऋपियोंने तथा ऋपभ प्रभूनें आत्रेय पुनकू जो विधि सिखलाई सो इस जगे लिखताहू इस वातकू देखके हमारे

जैनाभास परमार्थ शून्य वैराग्यके आडंवरी लोकिक लौकोत्तर शास्त्रोंके अजाण उपहास्य करेंगे लेकिन् इतना जरूर विचारणा चहिये की प्रथम तो जैसा पूर्वोक्त आत्रेय तथा ज्ञानार्णवोंमें लिखा देखा दुसरे विषय सेवणेकी आज्ञा धर्मशास्त्र देता नहीं औरन सम्यक् ज्ञानवंत जीव विषयमें प्रवृत्ति कराता यह तो अनादिकालसें जीवके विषय सकर्मीपणेसें सहचारी है, इसकी जयणा करणा ये शास्त्रका उद्देश है, ये वात छोटी मनुस्मृति जो की भृगुजीने बनाई उसमेंभी लिखा है, (यतः) न मांसभक्षणे दोषो, न च मद्ये न मैथुने, प्रवृत्तिरेषा भूतानां, निवृत्तिस्तु महाफला. १ परमार्थ इसका एसा है के न मांस भक्षणमें दोष है, न मदिरामें न मैथुनमें क्योकी सब जीवोंकी ये प्रवृत्ति है, लेकिन् छोडणेमें फल है, १ अब इसके परमार्थमें हम सम्मती नहीं देते कारण जिसके करणेसे दोष नहीं उसके छोडणेसें फल कैसें हो सकता लेकिन् फक्त इसका तीसरा पद जो है सो यथार्थ दिखता है कारण अज्ञान कर्मोंके वश जीवोंकी प्रवृत्ति इस कामोमें है सो तो प्रत्यक्ष दीखमी रही है, मातापिता वा वो आप जो व्याह करते कराते हैं, उनका फल फकत शंतान उत्पत्तीका है अगर इस कर्त्तव्यकों छोडे तो अमरपद पावें ये चोथा पद अतीव श्रेष्ठ है किंबहुना.

शंसारी जीवोंका ये कर्त्तव्य है, दोनों पवित्र और प्रसन्नतासें वैद्यक शास्त्रके लिखे-मुजब सदाचारमुजब परदाराका त्यागी होकर पुत्र पैदा करे वो सुदर सुघड और ताकतवर मुक्ति मार्गका साधक एसे पैदा करणा मनुष्यके आधीनताकी वात है, लेकिन् दुराचारी जोडा अज्ञान कर्त्तव्यसें महादुष्ट प्रजाकू उपद्रव करणेवाला नरकादि गतीमें जाणेवाला शंतान पैदा करता है, इस अच्छी शंतान पैदा करणेमें लोक तदन अज्ञान है लेकिन् हम इस जगे संक्षेपसे लिखेगे, पहले ब्रह्मचर्यका पालणा, जादा विषय सेवणेवालेके शंतान अच्छा नहीं होता ये वात दोनोंकों चहिये दुसरे ताकतवर औषधी जो हम आगे सातमें प्रकाशमें लिखेंगें उसका साधन दूधका साधन थोडे पानबीडे भीमसेनी कपूर कस्तूरी अंबर डाला भया सुगध चदनादि तेलका मालिस कराकर सुखोष्ण गरम जलसें स्नान पुष्पमालाका धारन ऋतुमुजब अतरादिक लगाया भया ऋतूका सातमा दिन या नवमा इग्यारमा एसें एकीके दिन पुत्रीकेवास्ते, बेकीके पुत्रकेवास्ते, अच्छा मुहूर्त्त बलवान पुत्रकेवास्ते सूर्यस्वर, चद्रस्वर पुत्रीकेवास्ते विशेष विस्तार पूर्वोक्त ग्रथादिकसे देख लेणा.

(गर्भणी स्त्रीने इस मुजब नियम पालणा)–महनत पुरुषसमागम बोझा उठाणा दिनका सोणा रातका जागणा शोक करणा असवारी करणी डर डेढा झुकणा दस्त वगेरे वेगोंकों रोकणा इतनोंका त्याग करणा अच्छा सादा खुराक लेणा साफ हवामें रहणा आनंदमें रहणा अच्छी चाल चलणवाली औरतोंकों पास रखणा साफ सुंदर

बढिया कपडे और गहणे पहरणा अच्छे२ उत्तम पुरुषोंकी तसवीर मूर्तिके हमेश दर्शन करणा उत्तम पुरुषोंके चरित्र तथा दानशील तपभावना जिन२ पुरुषोने आचरण किया एसोंकी कथा वार्ता सुणनी और उसनेभी ये काम यथाशक्ति जरूर करणा मतलब गर्भावस्थामे जिस२ वस्तुका दर्शन स्त्री करती है, और जैसे२ पुरुषोंकी कथा सुणती है तैसा२ स्वभाव गर्भगत वच्चेका होता है, (प्रश्न)–तुम तो कर्मकू प्रधान मानते हो फेर इत्यादि क्रिया करणे क्यों लिखी (उत्तर)–कर्म तो प्रधान हैही क्योंकी गर्भगत जीवका जैसा कर्म होगा वेसी बुद्धि और वेसाही कर्त्तव्य सब मातापिताके वण आता है लेकिन् हमारा स्याद्वाद पक्ष है, हम सब कामोंमें पांच समवाय सबब मानते हैं, देखो दुसरा प्रकाश एकांत कर्मके भरोसे अगर रहे तो रोगादिकोंपर दवा अथवा और ससारिक कृत्य कुछभी करणा सिद्ध न होगा और होता प्रगट देखते हैं, क्रिया जाय सो कर्म, तब तो अच्छी रीत मुजब करणा तब तो अच्छा शतानादिक कृत्य होता अशुभ कर्मसें अशुभ शतानादिक कृत्य कर्मका पक्ष किसी तरे हट नहीं सकता उद्यमकर्म व्यवहार नयसें दो दिखता है,निश्चय नयसें विचारो तो एकही है पहले जो निकाचित बध जाते है वो शुभ वा अशुभ भोगणेसे छूटता है,प्रदेशादिक बध शुभ कर्मके योगसें टूट जाते हैं निकाचित-भी तप कर्मसें जल जाते हैं इसका जादा विस्तार नयवाद ग्रंथोमें है, इहां ग्रंथ वढजाय इसवास्ते नहीं लिखते अच्छा शंतान जब पैदा होता है, दोनोंकी पक्की उमर वदन दोनोंका निरोग योग्य मोसम योग्य दिन और बखत दोनोंकी खुस वखती जिस करके मन प्रशन्न रहे एसे मकान सेज वगेरे सब सामग्री–(गर्भधारणेलायक पुरुपका वीर्य) फटिक जैसा साफ पतला चिकणासवाला मीठा सहत जैसा खुसबोवाला वीर्य शुद्ध गिणा जाता है वीर्य दुरगधवाला गांठोवाला और पीप जैसा होय तो अशुद्ध जाणना (गर्भके धारणे योग्य स्त्रीका रज)–खरगोसके खूनमाफक लाल लाखके रग जेसा कपडेपर धोणेसे दाग नहीं रहे वो शुद्ध जाणना, मैलाफीका गाठोवाला और वदवो मारता एसे वीर्यसे गर्भधारण होय नहीं या रोगी पैदा होय या मर जाता है,)–(गर्भस्थानके वारीक नसों-मेसे दर महीने निकलणेवाले खूनकू ऋतु कहते हैं तनदुरस्त हालतमें ये खून पतला होता है, रोगी हालतमे वधकर टुकडा२ होजाता है और गिरता है, गर्भ रहता है तब ऋतु वध होजाता है, और वो ऋतुका खून गर्भाशयमें जाके गर्भकू पोपण करता है, जब पोषणकी जरूरी नहीं रहती तब स्वभावसे बाहिर गिरता है.

(गर्भ किसतरे रहता है)–पुरुप स्त्रीके समागममें स्त्रीके गर्भस्थानमें पतला खून पैदा होता है उसमें पुरुपका वीर्य जब मिलता है, तब कोइक जीव अपणे कृतकर्मानु-सार उहा आके आहार पर्याप्ति करके शरीर औदारिक बांध वढणा सरु करता है (प्रश्न)–तुमने जीवके पहली आहारपर्याप्ति लिखी बाद शरीर लिखा ये कैसें

होवे शरीर विगर आहार जीव करे तो सिद्ध ईश्वरकूंभी आहार करणा सिद्ध होगा, (उत्तर) सिद्ध परमात्माके कोइभी शरीर नहीं है वे तो फक्त जीवका निज स्वभाव ज्ञान दर्शन-चारित्र अनंत गुण विराजित है, और गर्भावासमें आणेवाले जीवके दो शरीर संग है, एक तो तेजस १ जो खाये पीयेकु हजम करे दुसरा कार्मण सूक्ष्म शरीर जिस शरीरसें दृष्टिमें आणेवाला शरीर रचा जाय इसवास्ते इस सूक्ष्म शरीरके होणेसे आहार पर्याप्ती पहली वीर्य और रजका आहार कर फेर स्थूल शरीर रचता है ये वात वेदांतीभी मानते है, कहते है परभव जाते जीवके सूक्ष्म शरीर रहता है.

(जोडेसे गर्भ पैदा होणेका कारण)–गर्भाशयमें पडा भया वीर्य वायुसें दो भाग होकर अलग२ होता है तब दो जीव पैदा होते है

(नपुसक होणेका कारण)–दोनोंका रज वीर्य सम वजन होय तो नपुसक पैदा होता है.

(स्वप्नेमें रह जाय सो गर्भ)–ऋतुस्नान करे पीछे किसी २ औरतकूं पुरुषके सग सोवत करणेका स्वप्न आता है, उसमे जो गर्भ रह जाता है, उसमे बापके वीर्यके गुण विगरका मांसका गोला जैसा गर्भ वढ जाता है, औरतें, आपसमें समागम करणेसेंभी यही हाल होता है, ये प्रत्यक्ष तथा जैन ग्रंथोमेंभी लिखा है,

(अगोपांगमें हीन गर्भका कारण)–वादीके कोपसे गर्भावस्थामें औरतकुं चेष्टा करणेसें और गर्भणीके मनके पैदा भये भाव मुजब खानपानादिक काम नहीं होणेसें जिसकू दोहद कहते है वो नहीं पूरा होणेसे जो बच्चा होता है, सो लूला पांगला काणा कूवडा होता है

(जुदे२ रगका कारण)–मा तथा बापके शुद्ध या अशुद्ध वीज और जादा करके माके आहारपर बच्चेके शरीरका रग होता है, (समदिन)–वेकीका उसमें पुरुषका वीर्य जादा होता है जिस करके लडका होता है, एकीके दिनमे औरतका रज जादा होता है जिससें लडकी पैदा होती है)–माताकी चेष्टा वोही गर्भकी चेष्टा वोही चेष्टा बच्चा जणे वादभी करता है, माताके श्वासके सग बच्चा श्वास लेता है, और बोलते चलते सूते रोते जो जो चेष्टा जो क्रिया मा करती है, वो सब बच्चाभी करता है उसमें एसेही भाव बंधते है इसवास्ते गर्भवंतीने खराब चेष्टा करणी [illegible] माताका पोषण वोही गर्भका पोषण)–गर्भकी सूटीकी नाडी [illegible] वाहनी [illegible] भई होती है, जिससें मा जो जो खाती पीती है, उसके [illegible] पोषणका तीन हिस्सा होता है एक हिस्सा बच्चेकू [illegible] माका शरीर पोषण होता है इसवा[illegible] पथ्य करणा चहिये ग[illegible] भगवान महावीरकी मा[illegible]

(गर्भ रहेकी पहचाण)–गर्भ रहे बाद तीन चार महीनेसें ये लक्षण मालम देते हैं स्तनपरकी वीटणीके आसपासकी जमीन काली पडती हैं, रू खडे होते हैं, आंखका टमकारना वेर२ बंध होणा कारण विगर उलटी सुगंधदार पदार्थ अच्छा नहीं लगणा मूमेंसे लार गिरैं और वदन कांपणे लगै,

(३ ओरतोंके सामान्य रोग)–

औरतोंके रोगके इहां तीन हिस्सा किया गया है, १ औरतोंके सामान्य रोग २गर्भावस्थाके रोग ३ जापेका सूतिका रोग और उसके रहे भये पुराणे विकार

(प्रदर)–(ल्युकोरीया)–स्त्रीके संबंध रस्तेके जुदे २ भागोंमेंसे कमलके और मूमेंसे पाणी जैसा जरा२ चूणा तो हमेश होते रहता है, जिससे वो जगा हमेश गीली रहा करती है, जब कितनेक कारणोंसें ये झरणा वढता है, और प्रवाहकी तरे बाहर गिरकर कपडोंको खराब करता है तब उसकू (प्रदर)–(वदनका धुपणा)–सुपेद गिरणा) इत्यादि नामसे कहा करते हैं,–(कारण) विषय भोगणेमें नियम नहीं रखणेसें वेर २ गर्भ रहणेसें ऋतूकू बंध करे एसी चीजें वापरणेसें वचोंको वहोत वखततक चुगाणेसे वहोत ऋतुधर्ममें खून जाणेसें गर्भ रहणेसें दुसरे रोगसें आई भई नाताकतीसें वहोत पुष्टिदार खुराक खाकर योग्य कसरत याने महनत नहीं करणेसें और सराप वगेरे गरमी पैदा करणेवाली वहोत चीजों वापरणेसें ये रोग पैदा होता है, (लक्षण)–पाणी जैसा अथवा जाडा और चिकणा सुपेद पीला या गूगला रसीका वहणा ये इस रोगकी प्रत्यक्ष पहचाण हैं, (धातु ये दोय रस्तेसें वहता है) संबंध मार्गमेंसें और गर्भस्थानमेंसें संबंध मार्गकी धातू पहिले तो पाणी जैसी होती है और बाहर आते उसका रंग दूध जैसा अथवा पीला शपर होता है वो खट्टी होती है, और तेज होणेसें किसी वखत उसके स्पर्शसे सुंआली जगोंमें ललाई अगार तथा खुजली आती है, इसतरेके धातु गिरणेमे अंदरके अवयवमें सोजन और दरद होता नहीं फकत कमर तथा पेडूमें जरा दरद और वहोत दिनोंबाद नाताकती मालम देती है, गर्भ स्थानकी धातु कमलके मूमेसें निकलती है, तब वो इंडेके अंदरके रस जैसी होती है, लेकिन् बाहर आते साबूके फेण जैसी और किसी २ वखत पीले रंगकी होती है, किसी २ वखत वहोत जाडी होती है, गर्भस्थान और कमलके मूके सोजनसें ये रोग पैदा होता है, उसके संग शिरमें दर्द मंदाग्नि अरुचि पेटमें वायु थकेला श्वास जीभपर मैल फीकापणा दस्तकी कब्जी छातीमें धडका चक्कर बेहोसी पीठमें तथा दहिणे पडखेमे दरद और किसी २ वखत हिस्टीरीयाके लक्षण होजाते हैं, (इलाज)–प्रदरके वहोत इलाज है, योनिमार्गमेंसे जल गिरता है, उसमें बाहरका इलाज जल्दी फायदा करता है, और गर्भाशयके धातू गिरणेमें पुष्ट दवाइया तथा योग्य प्रमाणोपेत आहारविहारके सेवनसें सुधारा हो सकता है, (बाहरका इलाज)–१ पच-

वल्कलके पाणीसें धोणा या पिचकारी (औरतोंके वास्ते खास अलग पिचकारी आती है) २ त्रिफलाके पाणीकी या उकालीकी पिचकारी देणी फुलाइ भई फटकडी १० से ४० ग्रेण और पाणी १० औंस ४ सल्फेट ओफ झिंक और पाणी १० औंस, (अंदर पहराणेकी दवा)–५ मुलतानी मट्टीकी गोलियों करके पहराणी ६ टेनिक एसिड कत्था तथा मैण तथा सालिडका तेल इन सबोंकों बराबर बजनमें मिलाकर इनोंकी गोली कर पहरणी (अदरका इलाज) -७ ऊपर लिखे जोजो कारण उसकू पहली मिटाणा आहार विहारका जावता रखणा अथवा सखत परेज रखणा बच्चा चूगता होय तो छुडा देणा थोडी उन्मानमुजब कसरत या महनत कराणा खुली हवामें फिराणा क्षय वगेरे रोग होय तो उसका इलाज करणा तनदुरस्ती बिगाडणेवाले सब कारणोकूं रोकणा सुधारणे वाले कारणोंका आश्रय लेणा ८ प्रमेहके बहोतसे इलाज प्रदरपरभी चलते हैं, ९ सुवर्ण मालनी वसंत (नं० ३३७) गिलोय सत्व (रसायण चूर्ण (न० २३४) जीरा-पाक (नं० २७४) चद्रप्रभा (न० २४४) कोला पेठेका मुरब्बा पक्केकेले खेरीगूद खापरिया शतावर आसगध मूसली तालमखाणा गोखरू गिलोय वगेरे सब दवाइयां प्रदर तथा धातू गिरणेकू बध करणेवाली हैं, (रक्तप्रदर)-खून गिरणा बहोतसी वखत औरतोके योनिमेंसें खून गिरता है, इस रोगका इलाज जादा तो रक्तपित्त मुजब तथा प्रदरमुजब करणा बहोतसी वखत जादा ऋतुधर्मका खून गिरणा वोभी रक्तप्रदर कहलाता है, श्वेत और रक्त ये दोनोंही गर्भाशयका रोग होणेसें इलाजभी एकही है, (मूत्रमार्गका वरम) मूत्रके रस्तेमें सोजन जलणके सग होती है, सुजाकके चेपसें अथवा गरम पदार्थ खाणेसें सराप पीणेसें मलीनतासे और भोग वेहद करणेसें एसा रोग होता है, (लक्षण)–तणख दाह खुजली कमर तथा जांघमें दरद दस्त उतरते दरद अदर पहली सोजन पीछे पीप झरणे लगे पुराणा पडे पीछै प्रदर होजाता है, (इलाज)–अफीमका डोडा तथा सोडा डाल उकाले भये गरम पाणीमें बिठलाणा २ गरम पाणीकी पिचकारी लगाणी ३ अफीम तथा स्युगरलेड दोदो वाल कोकमके तेलमें मिलाकर उसकी चार गोली कर एकेक फूलके अंदर चलाणी ४ झिंक आकसाइड ४० ग्रेण एक्स्ट्राक्ट वेलाडोना १२ ग्रेण उनोकू मिलाकर गूंदसे या सहतसे गोलिये कर पहराणी ५ प्रदररोगमें धोणेका तथा भीगा कपडा हमेस उपयोग करणा ६ ग्लीस-रीन तथा टेनिक एसिडके पाणीका कपडा भिगाकर अंदर डालणा ७ एक हलका जुलाब देणा दरद मिटे जहांतक सादा हलका खुराक लेणा गरम खानपान छोडणा (आर्तव याने ऋतुधर्म सबधी रोग)–(कारण)–जवान छोकरियोंकी पक्कीऊमर होणेके पहली अथवा तनदुरस्त नहीं होय उसवखत विषयवासनामें लगादेणा इत्यादिक कारणोंसे औरतोका वर्ग ऋतुधर्मसबधी रोगमें जा गिरती है, पहला ऋतुधर्म होणेके वखत जो बदोबस्त

होणा सो नहीं होता है, जैसे ठंढी हवा भीगी जमीन ठढे पाणीसे स्नान गीले कपडे वहोत वखततक खडे रहणा भारी मैदा वगेरेका खुराक वहोत महनत डर गुस्सा इन सब कामोंमें इसकू अलग रखणा चहिये लेकिन विद्यारहित महा अज्ञान अपणे हठसे चलणेवाली औरतें ऊपर लिखे नियम न रखती न रखाती है, ऋतुधर्मकू बधकरणेवाली दवाइयोंके लेणेसेंभी प्रदरका रोग होजाता है, औरतें खानगी रोगोंमें कोइ२ अज्ञान दाइयोके हाथसें इलाज कराया करती है, उससेंभी रक्तप्रदर रोग होजाता है, इस्के सबधी वात कची ऊमरमें सुणणेसें गर्भस्थान उस्कराकरभी प्रदर होता है, ऋतुधर्म जलदी आणेसेभी दस्तानका रोग होता है गर्भ रहे पीछे योग्य हुसियारी नहीं रखणेसें अथवा अधूरा जाणेसेभी दस्तानका रोग होता है, गर्भस्थानका कोईभी विगाड दस्तानका कारण होता है.

(प्रकार तथा लक्षण)--१ ऋतुका बध होणा २ ऋतुधर्म बहोत दरद होहो करके आणा३और वहोतही ऋतुधर्म चहिये जिस्से जादा गिरणा एसे ये तीन तरेसें दस्तानका रोग होता है, इन तीनोंका इलाज आगे लिखते हैं, (नष्टार्त्तव)-(एमेनोरीया)(कारण) स्वभावसे अवयवका कमीपणा स्त्रीअडका थोडापणा अथवा बिलकुल नहीं होणा योनिके रस्तेका सकोच अथवा बध कमलके मूका बध, होणा वगेरे कारणोंसे दस्तान पैदा होता नहीं अथवा पैदा होताहै,तो प्रतिबधके लिये वाहिर दिखाई नहीं देता बहोत एसआराम आलस वहोत नींद खराब हवा और गीलासवाला घर येभी आर्त्तव रोगके कारण है, (लक्षण) हर महीने ऋतूके समय दस्तान वाहर आणेका यत्न करे लेकिन् वाहर गिरे नहीं उसकरके पेडू कम्मर तथा जाघोंमें दरद वदनमे धूजणी गलेमें गाठों किसी वखत आंखे दुखणी आवे प्रदर तथा नाक और मूमेसे खून गिरे हिस्टीरीया छातीमें घभराट दम मंदाग्नि दस्तकी कब्जी येभी उसके लक्षण है, (इलाज)—कोइभी अवयवका विगाड होय तो उसकी दरियास करणी (इलाज करणा)-१ दस्तकी कब्जी होय तो दस्त खुलासकी दवा लेणी २ गरम पाणीकी पिचकारी लेणी ३ गरम पाणीमें वैठाणा अथवा पेडूपर गरम पाणीका शेक करणा ४ एलिया तथा बीजा बोलकी वडी गोली पहराणी ५ एलिया लोह कवार पठा गूगल वगेरे दवायें दस्तानके रोगकूं मिटाती है, इसवास्ते थोडकेली अथवा दुसरी दवायोंके सग लेणी ६ एलिया ४ तोला बीजाबोल २ तोला गुलकद ५ तोला इन सबोंकों मिलाकर दोदो वालकी गोली करके पाणीके सग पीणा एकेक गोली दर टंकमें ७ सुहागा १ वाल एलिया १ रत्ती मंडूर १ रत्ती गोली जलके संग ८ कुमारिकासव लोहासव लोह ऋतूका खुलासा करती है, ९ टिंकचर आफ स्टील १० से १५ बूद १ औंस पाणीमें मिलाकर दोनों टक पीणा १० सल्फेट आफ्आयर्न२४ ग्रेण कारबोनेट आफ पोटास १२ ग्रेण मर १२ ग्रेण एलिया ६ ग्रेण उसकी २४

चणाकर दोदो गोली दिनमें तीन वखत लेणी ११ टंकण ३० ग्रेण लिकीड एक्स्ट्राक्ट आफ अरगट १॥ ड्राम और कम्पाउन्ड डिकोक्सन आफ एलोझ ३ औंस उसका तीन भाग कर दिनमें तीन वेर पीणा.

(दरदसे ऋतुधर्म)–(डिसमेनोरीया)–(कारण)–शारीरक तथा मानसिक नाजुकपणा गर्भस्थानका वरम और ऋतूका झरणा बंध होणेका कोइभी मुख्य कारण ये सब इस रोगका कारण है, गर्भाशयमें खून जमणेसेभी ये रोग होता है, (लक्षण)-ऋतुधर्मके सरू होणेके पहले एक दो दिन दरद सरू होता है, कम्मरमें सख्त शूल शिरमें दरद पेडूमें गांठ जैसा जमाव तथा बोझा ऋतूका झरणा कम या जादा वध होय और फेर आवै उसके सग दरद वधे घटे हिस्टीरीया डकार तथा दस्तकी कब्जी ये सब इस रोगके लक्षण है, कमलका मूं चध पडणेसें अथवा अंदरका रस्ता संकडा होणेसेंभी ऋतु बंध होता है, (इलाज)–(दरद होय तब करणेका इलाज)–१ अफीम ४ ग्रेण कपूर ८ ग्रेण बारे गोलियें करके एकेक दो दो गोली तीन २ घटेसे देणी २ अफीम तथा सुहागा मिलाया भया गोलियें इसी वजनसें फायदा करती है, ३ बेलाडोणेकी सोगठी पहरणी बेलाडोणा १२ ग्रेण जसतके फूल ४८ ग्रेण सहतमें घोटकर उसकी ४ सोगठी करके हमेस रातका पहरणी ४ मोफर्याकी पिचकारी लेणी और गरम पाणीमें बैठाणा गर्भाशयमे सोजा गांठ और गर्भाशय फिर गया होय तो उसका इलाज करणा दरद मिटाणेका इलाज एसा करणा सो फेर जडसेंही मिट जाय ५ कुमार पट्टेका पाक कुमारिकासव अथवा उसका अवलेह ६ कोला पका केला मुरब्बा या अवलेही लोह कोडलीवर किनाइन ७ योगराज गूगल ओरतोंके गर्भाशयके तथा ऋतु दोषके वास्ते सर्वोपरी इलाज है.

(अत्यार्त्तव)–(बहोत खून गिरणा)–(मेनोहेज्या)–ऋतुधर्म हरमहीने आनेके बदले थोडी२ मुदतसे आवे या जादा आवे तीन चार दिन दर महीने होणा चहिये सो जादा दिन तक दिखाइ देवें.

(कारण) शरीरके दुसरे रोग जैसेके रक्ताशय यकृत् प्लीह तथा फेफसेका रोग तथा पांडू वगेरे रोगोमें ये रोग होता है, २ गरमी तथा गरम खुराक ३ गर्भाशयके अंदरकी गांठ अथवा मस्सा ४ गर्भाशयका खिसणा तथा गर्भ अंड और कमलके मूके वरमका दबाण ५ गर्भ धारण पीछे गर्भ सूकणेसें अथवा जापा भये पीछे पिछला भाग रह जाणेसें ६ संसार भोगका अतियोग अथवा हीन योग (लक्षण)–दस्तान थोडा२ आया करे अथवा एक समचेपूर चलकर फेर वध होजाय वदन खाली होजाय फीका पडे श्वास वदनपर थोथर उलटी मंदाग्नि मनकी व्याकुलता और दस्तकी कब्जी (इलाज)–(उस जगेका इलाज)–१ ठंढे पाणीका पोता रखणा अथवा बरफ धरणा २ टेनिक

एसिडकी पिचकारी मारणी ३ फूलाई भई फिटकडीकी पिचकारी लगाणी ४ पचवल्कल अथवा त्रिफलाके पाणीकी पिचकारी लगाणी या इससे धोणा (अदरका इलाज)—स्युगरलेड ८ ग्रेण अफीम १ ग्रेण गुलकद ५ ग्रेण मिलाकर ४ गोली कर एकेक गोली तीन तीन२ घंटेसे देणी ६ गेलिक एसिड १५ से २० ग्रेण इसकी तीन पुडी कर तीन२ घंटेसे देणी जलसे ७ ग्यालिक एसिड ४० ग्रेण लिक्वीड एकस्ट्राकट ओफ अर्गट ड्राम १॥ डिल्युट सल्फ्युरिक एसिड ४५ बूंद तजका पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर पीणा ८ एक ग्रेण अफीमकी २ गोलियें करके तीन२ घंटेसे खाणी ९ पाउडर आफ अर्गट १५ ग्रेण ग्यालिक एसिड २० ग्रेण उसकी ४ पुडी करके तीन२ घंटेसे देणी १० फिटकडी ३० ग्रेण डिल्युट सल्फ्युरिक एसिड ३० बूद नवसादर १० ग्रेण पाणी १२ औंस चार २ घंटेसें तीन वखतमें पिलाणा ११ देशी दवायोमें अफीम आंवले ईसब गुल सुहागी कोला गुदपाक बीजाबोल चंद्रप्रभा वगेरे खूनकूं बध करती है

(हिस्टीरीया)—इस रोगकू देशी वैद्यक शास्त्रवाले केइयक तो वादीके रोगोमें और केइयक उन्माद चित्तभ्रमके रोगोमें समावेश करते हैं, यूनानीवाले होलदिलमें और अंग्रेजीमें मानसिक याने मगजके रोगोमें गिणते है, और वेकूब लोक इस रोगकू सेतान लगा हुवा जाणके जत्रमत्र उतारा पलीता वगैरे इलाज भूत निकालणेका यत्न करते हैं, हमतो जन्त्रमन्त्र जो यथार्थ है, उसकू झुट नहीं कहते लेकिन् दुनियाका जब ठगाई भरा ढग देखते हैं, तब तो झूट कह सकते हैं, क्योंकी यन्त्रमंत्र उसी आदमीका सच्चा है, जो इन वातोंमें मजबूत हो अव्वल तो जिसका शील बिलकुल पूरा हो लेकिन् एसे मिलणे लखोंमें एकभी दुस्वार तोभी इसवातका जो प्रमाण मुजब नियम रखणेवाला हो पंचोंकी साक्षीसें धारण करी भई स्वदारा संतोपी हो धर्मके कायदे मुजब सदा सच्च बोलणेवाला हो परमेश्वरकी वदगीवाला हो पराया दुख देखके करुणावाला हो इस वातोंवाला मन वचन कायाका स्थिरता रखके दृष्टि या पासादिक मंत्राम्नाय साधकके कर्त्तव्यताकू धन्यवाद है, वाकी सब दुकानदारी है, वो दादा जिन दत्त जिन कुशल जिन चद्र सूरजीकी तरे सब कष्ट साध्य रोगीकू मिटाणे समर्थ होता है जो कभी असाध्य पर दृष्टिपास या हस्तपासादिक अलक्ष्य मत्रादिक क्रिया करे तो वो तो मरेही लेकिन् प्रतिकारके कर्त्ताकेभी तकलीप होय हिस्टीरीया मन सबधी रोग है, मनकी नाताकती शरीरकी नाताकतीसें होती है, तैसे मगजके विकारोंकी बदनपर वहोतत्तुरी असर होती है हिस्टीरीयेका रोग जादा करके औरतोंकेही होता है, और किसी२ नाताकत मनके अदमीकूभी होता है, (कारण)—गर्भाशयका रोग आर्त्तव दोप मगजकी नाताकती भय शोक महनतसें खेचल कामविकार दृथरस वहोत तमासबीनी इत्यादि कारणोंसें ये रोग पैदा होता है, नाताकतीमें उठती जवानीकी छोकरियोंका मन इस्क भरी प्यारकी और

विषयकी बातें सुणके या पढके तेर२के ख्यालोसे उमगता है, कामविकारसे वो विकार पूरा नहीं होणेसें पुरुषके सग अणवणतसें अप्रीतिसें और ऋतुधर्ममें कीडे पडणेसेभी ये रोग होजाता है, (लक्षण)–(इस रोगके अनेक लक्षण है)–वाइंटे खेंचाताण हसणा रोणा धुणना बूम मारणी गोला चढणा बिलकुल बोलणा नहीं उलटी ओहीयां ओहीयां एसे शब्द करणा लबी निसासे डालणा ये उसके सामान्य लक्षण है, हिस्टीरीयावाली औरतोंके सब लक्षण बहोत त्रासदायक होते हैं, और बहोतसी वखत जो बेमारी वो बतलाती है वो होती नहीं और बोम मारती है जैसेके जलण नहीं लेकिन् कहती है, जलती हू और पाणी मांगती है उसकू बदबो आती है जीभ बेस्वाद गोला चढता है, और वो जाणे गलेतक भर गया है, अभी ज्यांन निकलही जायगी एसा जोर करता है, वदनमें गोटा चढता है दांत जकड जाते हैं, अवाज बैठ जाती है पेट बडा होता है, और महीने चढें होय एसा लगता है

(इलाज)–इस रोगमें खास तोरपर एकभी दवा नहीं है, हिस्टीरीया होणेका जो मूल कारण होय उसका इलाज करणा इस कारणकूं निश्चै करणे वास्ते उसकी मिजाजका जाणकार पास रहणेवालेसें ससारकी सब स्थितीकी वाकबी होणी चहिये उसके व्यसन वगेरे सब निज खासितसे वाकब होणा चाहिये औरतोंके ये रोग जादा करके ऋतुधर्मके विगाडसें होता है, इसवास्ते ऋतुधर्मका जो विगाड होय सो पहली मिटाणा सुखी घरकी औरतोंने एसआराममें मसगूल होकर हरमद घरके अदरही नहीं पडे रहणा खुली हवामें फिरणा चहिये माफकसर महनतभी करणा हिस्टीरीयावाली औरतका मन किसी तरेभी विगडणे नहीं पावे इसवास्ते उसकू हमेस खुस रखकर उसपर दया और प्रीती बताणी हिस्टीयाका जब दोरा हो उस वखत करणेका इलाज १ मूंपर ठढा पाणी छांटणा और नाकके आगे आमोनिया दुसरा तेजनस्य धरणा जिससे होस आवे एसा इलाज करणा २ हाथ पैरोके तले अच्छीतरे मसलणा ३ बेहोस भये विगर गोला वगेरे बादीका होय तो धीमे तलकर हींग निगलाणी गुडमें लपेटकर दस्त खुलासा आवे एसी दवा देणी ४ (दुसरे सामान्य इलाज लिखते हैं)–योगराज गुगल ५ रास्नादि क्वाथ ६ त्रिफलादि क्वाथ नं० ५२३) ७ तथा ६६४ की अंग्रेजी दवाकी मिलावटें (८ नं० ७४३) तथा ७४४ हकीमी नुसके.

(गर्भाशय प्रदर)–(देखो प्रदरका वर्णन) पृष्ठ ६५५)

(गर्भाशयका वरम)–सुआवड (जापा) के विगाडमेंसें गर्भाशय सूजकर उसमें बहोत दरद बुखार तथा दस्तकी कब्जी ऋतू तथा प्रदर बहोत जाता है, इस दरदवाली औरतके गर्भ रहता नहीं वरम पुराणा होणेसें उसमें मस्सा रसोली वगेरे गाठे जमती है, और खून दस्तानमें बहोत गिरता है, (इलाज)–सोजनका सब इलाज

करणा जुलाब शेक पोल्टीस लेप २ गरम पाणीकी पिचकारी ३ पेडूपर अलशीकी पोटि मारना अथवा आखर कमलके मूपर थोडी जोंके लगाणी ४ ससार भोगसें दूर रह खुराक हलका तथा सादा लेणा पुराणा वरम मिटणा मुस्कल होता है, ५ गर्भकूं सुध रणेवाली दवा खाणेसें सुधारा होता है, (फलघृत न० २९०) वरम नीचेके भा तरफ होय तो कासटिक लगाणा अथवा टेनिक एसिड या जसतका फूल कोकमके तेल मिलाकर अदर चुपडणा इस वरमके सवब किसी२ वखत कमलका मू बध होजाता है उसके गर्भ नहीं रह सकता और ऋतुधर्म अदर भरा रहणेसें दरद होता है, (कमल जखम)—जखम होणेसें खून गिरता है, किसी वखत ऊपर छाला गिरता है, किसी वखत गहरा जखम पडता है, इस रोगसेभी वेटेमवे परमाण दस्तान आता है, कम रमे वहोत वेतरेका दरद होता है, धातू जाता है, खूनभी गिरता है, (इलाज)—व्रणक इलाज करणा पंचवल्कलकी अथवा त्रिफलेकी अथवा मांजूफलके पाणीकी पिचकारी लगाणी २ फिटकडी अथवा जसतके पाणीकी पिचकारी मारणी ३ टेनिक एसिडकी सोगठी पहरणी ४ कास्टिक लगाणा ५ ग्लीसरीन और टेनिक एसिडकी अथवा सुहाग और टेनिक एसिड लगाणा, (गर्भाशय ग्रंथी)—गर्भाशयमें गाठ होती है, ये गाठ छोटी सुपारीसे वढकर कभी२ गर्भमें वढते२ बालक जितनी होती है और उसके लिये गर्भस्थानभी वढता है, गाठ छोटी होय तहांतक बहुत इजा नहीं करती जब वडी होती है, तो गर्भाशयमेंसे प्रदर जैसा निकलता है, उसकू मिटाणका इलाज करणा गर्भाशयके अदरकी गाठ मिटणी मुस्किल है, क्योंके उस जगे शस्त्रका इलाज होणा मुस्किल है, जो मस्सा होय तोभी गर्भाशयमेंसें खून झरते रहता है, मस्सा बाहर होय तो डाक्तर लोक कतरणीसे काट डालते हैं, अथवा डोरा बाधणा घोडेका वाल बाधणा मस्सा गिरपडता है, दवा लगाणेकी हमारेपास अर्शउन्मूलनार्क है उसके लगाणेसे मस्से खिर पडते हैं, गर्भाशयके अदर मस्सा होय तो वादली धरकर कमलका मूचोडा करके पीछे आटा देकर या फासा देकर मस्सेकू तोड डालते हैं, लेकिन् ये कर्त्तव्य डाक्तरोंसें करवाणा, (गर्भाशय भ्रस)—जैसे गुदामेंसे काच बाहर निकलती है, ऐसें गर्भाशयभी नीचे उतर आता है, ये दरद वडी ऊमरकी औरतोंके होता है, वेर२ बच्चा जणणेसें वस्ति चोडी होणेसें गर्भाशय बाहर आता है, गर्भाशय सूज जाणेसें उसमें गाठ होणेसें कांजणेसे गर्भस्थान तथा योनिवधन ढीला होणेसें गर्भाशय नीचे उतरता है, तपासणेसे जो उसके सग कमलका मू होय तो जाणनाके गर्भाशय नीचे उतरा भया है, काचकी तरे उसकू दाबके उचा चढाणा रालके लेपकू करके खेंचकर पट्टा वधवाणा औरतोंने उस रोगमेंविलोणा छोड बाहर जाणा नहीं ठढे पाणीमें वैठणा अथवा स्तभक दवाकी पिचकारी मारणी अथवा सोगठियें पहरणी जिससे वधन सखत होकर गर्भाशय नीचे उतर

सकेगा नहीं ताकत आव एसी दवा लेणी, (स्त्री अंडका वरम)–जैसे पुरुषोंके वीर्य पैदा करणेवाली वृषणकी गोलियें होती है, तैसें औरतोंकेभी रज पैदा करणेवाले दो अंड पेडूके दोनोंतरफ होते हैं, अंग्रेजीमें उसकू (ओवरी) कहते हैं, उसमें वरम होता है, तो वाजूमें चमका होता है, पेसाव लाल होता है, ऊपरसे दवाणेसे गांठ जैसा लगता हैं, और दरद होता है, दस्त आते वखत दरद होता है, बुखार जीमित लाणा उलटी पेटमें हवा होती है, ये अड पकते हैं, तव फूटकर पीप निकलता है, जादा करके वांये तरफ वरम होता है, (इलाज)–वरमके सब इलाज करणा गरम पाणीमें वैठणा अफीम तथा वेलाडोणेकी सोगठी पहरणी शेक तथा पोल्टिस पेडूपर दरदकी जगे मारणा पुराणा वर्म भये पीछै दरद नरम पडता है ऋतुधर्म थोडा और वहोत कष्टसे उतरता है, वेर२पेशाव होता है, प्रदर होता है, हिस्टीरीयाकी कितनीक निशाणियें मालम देती है, (इलाज)–पेट तथा पेडूपर गरम कपडा हमेश लपेटे रखणा उस वखत गरम पाणीमें वैठणा ठंढे पाणीका स्नान पुरुष गमन सर्वथा नहीं करणा ताकत लाणेवाली दवायें देणी, (स्तन छातीका सोजा)–वहोतसी वखत स्त्रियोका स्तन पक जाता है दूध पैदा होणेकूं खूनका जोस चढ आता है उससें स्तन भर जाता है और बुखारके सग स्तनमें सोजन चढ आता है, एक या दोनोंमें होता है, तब स्तन भरा हुवा लगता है उसमें गांठे वंधती है, सखत वरम होकर चमडी लाल होती है, ठंढ देके बुखार आता है वेचैनी अनिद्रा और पकती वखत ठणका मारता है, वच्चेकू वखतसर नहीं चुघाणेसें अथवा भरे स्तनमें हाथोंकों वहोत हिलाणेसें वहोत गरम खुराक खाणेसे तथा मनके आवेशके असरसेभी वरम होता है, (इलाज)–१ दरदके सरुआतमें थोडा दरद होय तो फुलालीनका अथवा अफीमके डोडोंके गरम पाणीका शेक करणा अथवा साबूका मल्लम (सोप लीनी-मेन्ट लगाणा दाह होता होय तो ३ गुलाबजलका पोता धरणा अथवा ४ चदन रगत चंदनका लेप वेर२ करना ५ वखतपर दूध खेंचलेणेका इलाज करणा दूध खेचणेकी शीशीयों आती है, वो नहीं मिले तो किसीसे चुघाकर निकलवा डालणा अथवा धतूरेके पत्ते और हलदीका अथवा कडवे तूंबेका लेप करणेसें दूध खींचता है, एसा सभव है, दरद वहोत वढजाय तो शेक और अलसीकी पोटिस वांधणी ७ नींवके पत्ते वाफ कर वांधणा दस्त साफ लाणेकी तथा बुखारकी दवा देणी रोगी ताकतवर होय और दरद वहोत होते होय तो स्तनके सूजे भये जगेपर ८।१० जोंक लगाणी और पीछै शेक करना जो पकणेपर होय तो पकाकर फोडणेका और वाद भरणेका इलाज करना व्रण मुजब (फूलजाणा)–कितनीक औरतें वदनमें फूल जाती है, वाद किसी२कुं गर्भ नहीं रहता ऋतूधर्मके दोषके अटकणेसे अंदर जमाव होते जाता है, जिस करके औरतोंका पेट तथा पेडू फूल जाता है, किसी२के एकाध वचा होकर पीछै ये रोग होता है,

फेर वच्चा नहीं होता, (इलाज)–इस रोगपर दवा करते आहार और विहारका पथ्य जादा फायदे चंद है, खुली हवामें फिरना घरमेंभी शरीरकूं महनत पडे एसा कामकाज करना शरीरकी वादी और चरवी कम होय एसा इलाज जैसेंके दस्त साफ लाणेकी दवा हरडे जुलाफा एलीया हींग वगेरे वादीके तथा दस्तके खुलासा वास्ते देणा २ ऋतु खुलासा लाणेकू गरम पाणीमे राई डालकर पग भीजाणा कमरपर शेक करना पेडूपर सींगडी या कपिंग (देखो पृष्ट ३७१) करणा इण इलाजोंसे पेडूका जमाव नरम पडेगा और जमा भया खूनका ऊपर खेंचाण होकर गर्भाशय खुला होगा ४ योगराज गूगल वायू तथा चरवीकू कम करता है, वास्ते वहोत दिनोंतक सेवन कराणा गर्भाशयके दुसरे दोपोकोंभी दूर करता है, ५ त्रिफलेका काथ सहत डालकर पीणा ६ पाणी गरमकर ठारकर उसमें सहत डाल कर हमेस पीणा इससे चरवी गल जाती है,

(गर्भवतीके रोग)–औरतोंके गर्भ रह्या पीछै हमलके खास रोग होते हैं, तैसें बुखार दस्त मरोडा वगेरे सामान्य रोगभी होते हैं, उसमे गर्भके कारणसे उनके इलाजोंमें कितनेक दवाओंकों छोडणा पडता है, जो इस वातका खयाल नहीं रखे तो नुकशान होणा ताजुव नहीं, (नाताकती)–दुवली और नाताकत औरतोंके गर्भ रहता है, तव उसकू ताकतवर दवा और खुराक देणा चहिये जो नहीं दिया जायगा तो शतानभी दुवला और नाताकत पैदा होगा थोडी ऊमर पायगा और जापेमें औरतभी मर जाय तो ताजव नहीं जोखमका काम है, (इलाज)–सामान्य इलाजोंमें दूध सर्वोत्तम इलाज है, गऊ या वकरीका मोलेठी तथा सूठके टुकडे तीन मासा अधसेर दूध और अधसेर जल डालके उकालणा पाणी जले वाद ठढाकर थोडा चूरा डाल पिलाणा वहोत दिन पीणेसे ताकत आती है,और वुखार खासी वगेरे कुछभी तकलीप होती है, तो मिट जाती है, २ † वसत मालतीका साधन दूध मिश्रीके सग देणा ३ गर्भ पोपक नामकी दवा हमारेपास है वो मा और वचेकू निहायत फायदे वद है, (वुखारका इलाज)– १ मोलेठी रगत चदण वाला उपलसिरी और कमलके पत्ते इनोंका काथ मिश्री सहत डालकर पीणा २ रगत चंदण उपलसरी लोद तथा मुनकाका काथ मिश्री डालकर पीणा ३ वकरीके दूधमें सूठ ऊपर लिखे मुजव उकालकर पीणेसे विपम ज्वर याने वेटेम आणेवाला ठढदेके आणेवाला ज्वर मिटता है, दस्तका इलाज–१ मजीठ मोलेठी लोद इन तीनोंकों पीस इनोका पाणीकरके मिश्री मिलाकरके पीणा २ आंवकी तथा जामुनकी छाल उकालकर मिश्री सहत डालके दैणा इसमें चावलोंकी लाईका सत्तू डाल खिलाणेसे सग्रहणी भी मिटती है, सख्त दवासे गर्भकुं नुकशान होता है, (उल्टी)–१ धाणाकू पीस चावलोंके धोवणमें छाण सहत मिश्री डालकर पीणा २ कलोंजी)–इसका चूर्ण अथवा

† तोलेका वीस रुपया है, अनुपान इलायची वशलोचन मिश्री दूध ।

क्काथ मिश्री तथा सहत डालकर देणा ३ सोडावोटर तथा बरफ पिलाणा ४ कलेजेपर राईकी पट्टी मारणी अथवा लाडेनम लगाणा खुराकमें सिरप दूध अथवा दूधमे कांजी चावलोकी गरिष्ठ खुराक देणा नहीं, (अरुचि)–१ अजमोद सूंठ पींपर तथा जीरा गुडमें गोली करके देणा, (कब्जी)–गर्भवाली औरतकूं कब्जी बहोत रहती है, लेकिन् उसकूं जुलाब वेर २ देणेसे गर्भकुं नुकशान पहुचता है, इसवास्ते देणा नहीं १ दूधसे दस्त खुलास आता है, २ एरडी तेल दूधमें देणा ३ सख्त कब्जीमें एरंडी तेलकी पिचकारी मारणी.

(खासी)–बहुफलीकी जड बलबीजकी जड और अरडूसेका क्काथकर पिलाणा इस क्काथसे गर्भणीका सोजन श्वास कास रगतपित्तमेंभी अच्छा है, खेरसार तथा कत्थेकी गोली ३ शीतोपलादि चूर्ण सहतमें (हैजा)–१ सूठ तथा बीलकी जडका क्काथकर पिलाणा उसके संग जवकू शेक तथा दलके शेका भया सत्तू थोडा२ पिलाणा सख्त दवासे गर्भकु नुकशान पहोच जाता है, (शूल)–डाभ कांस एरंड तथा गोखरूकी जडकूं पाणीमें पीस वो डालकर पकाये भये दूधमें मिश्री सहत डालकर पिलाणा सख्त दवा वापरणी नहीं.

(मट्टी खाणेकी आदत) मट्टी खाणेकी आदत बहुत औरतोंकों रहती हैं, सो बुरी है, गर्भणीकु जादे चाहियेके अच्छे २ पदार्थ इच्छा मुजब खाणेका वैद्यकशास्त्र लिखता है, लेकिन् एसी नुकशानकारी वस्तु खाणेकी इजाजत वैद्यक शास्त्र नहीं देता है, मट्टी नुकशांन करणेवाली चीज है, इसका सख्त बंदोबस्त करणा चाहिये लडकेभी इसी मुजब चूना मट्टी कोयला खाते हैं.

(छातीमें दरद)–स्तनोंमे दरद होय तो फुलालीनका अथवा पोस्तके डोडेका उकाला भया पाणीका शेक करणा सोजा होय तो शोजेका इलाज करना, (नींदका नाश)–हवा नहीं आवे एसी बध जगेमें रहणेसें और गरम खानपानसें नींदका नाश होता है, इस कारणोकों बंध करणा दस्तकी कब्जी होय तो एरडतेलका जुलाब देणाचा काफी तथा सराप नींदका नाश करती है, इसवास्ते इनोसे बचाणा दूध तथा वनस्पतीका सादा खुराक खिलाणा आखर जरूर पडे तो नींद लाणेवाली दवायें लेणी, (ऋतूका झरणा)–हमल रहै बाद ऋतूधर्म बध होता है, तोभी किसी२ औरतके दिखाई देता है, उस वखत औरतका ऋतुधर्म बध करणेसे सख्त इलाज न करते बहोत हि फाजत रखणी चाहिये जैसे ठंढी हवा भीगी जगा उघाडे पेरोंसे चलणा भीजी जमीनपर बैठणा सोणा ठंढा पाणीमे नाहणा बहोत देरतक खडे रहणा जादा खाणा जादा महनत डर गुस्सा तथा जुलाब ये सब खून गिरणेकू बढाता है, इसवास्ते इन बातोंसें बचाणा सुठाय रखणी हलका खुराक देना.

(धातु गिरणा)–प्रदर गर्भणीके गिरता है, (इलाज)–१ स्वच्छता रखणी प्रदर रोगमें लिखा प्रक्षालन पिचकारी तथा पोता धरणा २ ताकतवर खुराक लेणा ३ प्रदर का ठंढा इलाज करना.

(बहुमूत्रता)–गर्भणीकू वेर२ पेसाब होता है, (इलाज)–जवका जल पिलाणा २ एरंडतेल दे दस्तका खुलासा करणा ३ दरद होय तो पेडूपर फुलालीनके कपडेका सेक करणा ४ चद्रप्रभा वगेरे मूत्रल और सारक दवायें देणी गर्भणी स्त्रियोंके कितनेक इलाज साधारण लिखे हैं, कुदरत स्वभावसे गर्भणी औरतोंके भारी वेमारी आती नहीं और गर्भ रहे पहले जो वेमारी होती है, वोभी दब जाती है, गर्भके रक्षणकू पांचसमवायोंके संबधसे ये कुदरत बणती है, और कोइ२ गर्भणीके इन पाचो समवायोंके प्रतिकूलपणेसें जब वडा रोग होता है, तो या बच्चा या वो आप मरती है, एसा हमने देखा है लेकिन् प्राय वडे रोग थोडे होते हैं, फेर बच्चा भये बाद पहलेके दबे भये रोग पीछा जोर करता है

३ सुवावड और सुआरोग.

(स्वभावजन्य प्रसव)–आहार याने खानपानकी हुसियारी नहीं रखणेसें होजरी और आंतरोमें तरेके२ विकार होते हैं, उससे मलमूत्रके हमेस वेगोमें तरे२के उपद्रव होते हैं, गर्भाधान और प्रसव ये दोनोंही स्वभावादिक पांच समवायोंका धर्म है, और उस क्रियामें विवेक विचार और सभाल जो पुरुषकृत उद्यम समवाय अच्छा नहीं रहे तो प्रसवकी वखतमें समवायोकी प्रतिकूलतासें केइ किस्मके विकार होते हैं, इसमें अचरजही क्या निरोगी आदमीको दस्त जितना सहजसे होता है इतनीही सुख शातीसे प्रसव होय उसकू सहज स्वभाव प्रसव जाणना और कष्टसें बच्चा होय उसमें विगाड भया समझणा एसे विगाड पुरुष तथा औरतोंके विरुद्ध आचरणोसे होता है, सो विरुद्ध आहार विरुद्ध विहार विरुद्ध चेष्टासे बैठणा उठणा सोणा चलणा दोडणा टेढा झुकणा वगेरे इस सबोंसें पैदा भये विकार और रोगोंका समावेश होता है, ये सब विकार और रोग मनुष्यकृत है, स्वभावजन्य नहीं शरीर रचनाकी खोडोंकू कितनीक स्वभावजन्य लोक केतेहैं, वोभीतत्वदृष्टिसे देखे तो स्वभावजन्य नही कर्म औरजीव दोनोंकी कुदरतने पदार्थ पैदा किया और उनोका स्वभावरूप समवायोनें उनोका धर्म पैदा किया है, इन पदार्थोंका योग होणेसें तरे२के पिंड और पदार्थ पैदा होणा ये समवायोंसे पदार्थोंका कुदरती धर्म है, पदार्थ अपणे२ धर्म मुजब दुसरे पदार्थोंका मिलाप योग करलेता है, और पदार्थोंका पूरा२ धर्म केवली सर्वज्ञ जाणते हैं, तोभी उनोंका वचनरूप जो श्रुतज्ञान है, सो अपणे मतिज्ञानके क्षयोपशम मुजब उस मति श्रुति ज्ञानसें मनुष्यभी यथाशक्ति जाण सकता है, उसमें अज्ञान कर्म के वश अनेक भूल और मिथ्या विपरीत योग याने आचरणोंमें जीवकु लेजाता है, मनुष्यके

अज्ञान कर्मसें विपरीत वर्त्ताव प्रजाकी उत्पत्ति वगेरे दोनों भव साधनरूप धर्म नहीं पलता उस करके गर्भमेंभी विगाड अथवा दोष रहता है, धन्य है वो मनुष्य जिसने सम्यग ज्ञान पाया वो जन्म लेणेसें छुटता है, अज्ञानके वश विकारवाला दोषवाला शंतान पैदा होता है, धर्मशास्त्रमें लिखा है मनुष्यजन्म और आर्यकुल पंचेद्रीय निरोग दया धर्म श्रद्धारूप निर्मल बुद्धि पुन्य विगर जीव नहीं पाता इसवास्ते मातापिताकी अच्छी आचरणा ये पथ्य ये सब पुन्यवंत शतान पैदा करणेका एक वडा भारी उद्यम समवाय समझणा जादा क्या लिखें जिस२ कारणोंसे शंतानके शरीरमें गर्भमें विगाड होता है, वो वो कारण प्रसव समयमें और सूवा रोगरूप कष्टका कारणभी होजाता है, जैसे औरतोंकी अज्ञानताका विगाड है, तैसे२ पुरुषभी परस्त्री गमन मिथ्या भोगादि कोंसें स्त्रीकाशरीर विगाड देता है, फेर तो शंतानभी दुष्टही पैदा होते हैं.

कितनेक प्रशव तो सुख शांतिसे होते है, और कितनेक वडे कष्टसे इसवास्ते उसके २ भाग कल्पन किया जाय तो एक स्वभाव प्रशव १ वो तो जैसे दस्त वेसाब वगेरे शरीरके दुसरे वेगोंकीतरे ये शरीरका धर्म है, सो झट होजाता है, दस्त लगे इतनी देर लगती है, और थोडी नाताकती खेचल वगेरे और दुसरा कष्ट प्रशव २ सो दरद और दुसरे बेमारीकी सग वो अस्वाभाविक प्रशव २ पहला प्रशव तो पथ्यमें चलणेवाली स्त्री और निरोग पुरुषका वीर्य उनोंके होता है, १ दुसरा इनसे विपरीत चलणेवाली औरत तथा मर्दके संबधसे होता है, २ गर्भवंती औरतें जिसतरे खानपान वर्त्ताव करे सोकल्प सूत्रकीटीकासें जाणना महावीर स्वामीके जन्माधिकारमें ग्रथ वढणेके भयसे नहीं लिखा.

(देशी सुवावडका हाल)—अव्वल तो कच्ची ऊमरमें रहा भया और रोगी हालतमें रहा भया अथवा पीछेसे कुपथ्य करके विगडा भया गर्भ बूरी हालतमें मा और बचेकू डालता है, अपणें देशमें जापेवाली औरतकी सरवरा अथवा इलाज वहोतही बूरी हालतमें होता हैं, जिस काममें चतुराई और सब तयारी करणी चाहिये उस जगे मलीनता और सब तरेकी मुसीबतें धरी भई नजर आती है, याद रखणा चाहियेकी ये जोखमका काम है, और मनुष्यावतार नया प्रगट होणा है, क्यों के जिसकेवास्ते अदमी वहोत उमेदवारी धराते हैं. और जपतप योगी जतीका चरण सेवते हैं, जिस विगर औरत और मर्द अपनी जिंदगानीकू निष्फल मानते हैं, तो एसे नररत्नकी पैदाशकी वख्त उसकूं तथा उसकी माताकू कैसे दुष्ट हालतमें डालते हैं, (सो इस मुजब)—पहली तो एक अधारी कोटडीमे एक उडे खुणेमें उसका खाट डालते हैं, उसके आसपास मलीन और गधी चीजोंका भराव रखते हैं, पुराणी मूजका टूटा झोली जैसा खाट सुएवालीके वास्ते तइयार रखते हैं, फेर जूनी पुराणी फटी टूटी अनेक वेर सूआवडके काममें आई भई एसी एक गूदडी उसपर विछाणेमें आती है, जापेवालीकू गधे मेले फटे टूटे कपडे

पहिराणेमे आता है खाटके आसपास एसीही जुनी पुराणी गदी चीजे लाकर रखणेमे आती है ये लोक एसा जाणते हैं की जापेमे सब चीज मलीनही चहिये जिस बच्चेकूं जमीनका प्रकाश उजाला साफ हवा और सृष्टीकी सुदरता धर्म वगेरे पुन्यके साधन वास्ते जन्म लेता है वो बालक जन्मते ही क्या देखता है अधेरा गलीचपणा खराब हवा बच्चेके श्वासोश्वास वास्ते साफ हवा चहिये जिस्से प्रफुलित रहे उसमे पूरी २ खलल पोहचणेका साधन पूर्वोक्त गधापणा रखते हैं परम पवित्र परमेश्वर श्रीऋषभ देवने जो पवित्रताका धर्म ग्रहस्थोंको सिखलाया विधि आत्रेयादि पुत्रकू बताई उनोनें शास्त्रोके द्वारा प्रकाश किया वो अभीतक आर्य लोकोंमे चल रही है लेकिन् सोचणा चाहिये ये स्नान वगेरे जो शुद्धियां है वो किस कारणके वास्ते है जो इस बातकू जाणते तो कभी किसीभी जगे अपवित्रता नहीं रखते स्नान वगेरे शुद्धिकी जो महिमा चली है वो लोकोकू दिखाणेवास्ते नहीं अथवा हम धर्म बहोत पालते हैं एसी जूठी गप्प मारणेकू नहीं चली लेकिन् केवल मनके प्रफुलित और बदनकी सफाईवास्ते और इस स्नानसे बदन निरोग रहता है इसीवास्ते जैनियोके सूत्रोंमें ग्रहस्थ श्रावगोंके वर्णनमे पहली स्नान और देव पूजा बाद किसीभी कार्यका स्वरूप लिखा है ये स्नानका स्वरूप ब्राम्हन जटाशकरभी अपणे मासिक पत्रमे एसाही लिखा है जैनियोके सूत्रमें न्हायाकयबलिकम्मा अर्थ इस सूत्रका एसा है स्नाता कृतबलिकर्मा (भाषा) स्नान किया करी अपणे इष्ट देवकी पूजा (प्रश्न०) क्यो जी हमने तो देखा और सुणा है के जैन लोक तो बडे मलीन और स्नानमें पाप मानकर बहोत लोकोको ढूढिये तेरा पथी नामके साधू है वो वणियोको सोगन दिलाते है और तुमने जैनियोके सूत्रका पाठ लिखा—(उत्तर)—हे महोदय हम फक्त स्नानकू मुक्ति साधन रूप धर्म कब लिखते हैं और न ब्राह्मण जटाशकर घरवेदू ग्रथमे धर्म लिखता है लेकिन् शरीर शुद्ध मन प्रफुलित होनेसें बाद देवपूजा गुरुवदन ग्यान ध्यान जो किया जाता है उसमे धर्म है जहा बदन निरोग होगा उससे धर्म सधेगा बेमार धर्म नहीं साध सकता है दुसरे देहीकी अपनिनतासे परमेश्वरका नाम जप जाप मुखसे प्रगट स्तवना कहणेसे निरफल और पाप जैन सूत्रोंमें माना है ठाणाग सूत्र तथा टीका दसमे ठाणेमें देखणा स्वाध्यायकी मनाई है अपवित्रतामें, जैन मुनिका धर्म सुच है वो अपवित्रता रखते नहीं है स्नान सोले सिणगारोंमेंसे पहिला शृगार है और जैनके मुनि शृगारके वास्ते स्नान करते नहीं जो कोइ साधू उत्सर्ग मार्गमे चलता भया मैलका उपसर्ग सहता है तो भी क्रोध मान माया लोभसे रहित है इसवास्ते उनोका अतरग आत्मा शुद्ध है इसवास्ते एसे परम पुरुषको मैला कहे सो मैला है लेकिन् जो क्रोध और अहकारके वस परमेश्वरके कहे शास्त्र न माने देवकी मूर्त्तिको पत्थर कहकर हीलना करे दया लाकर जो किसी दीन दुखीकों

दान देवे सो देणेमें पाप बत्ताकर अणुकंपा दान निषेधे श्रुत केवलीके बनाये शास्त्रोंको न माने और ज्ञानवत पडितोंको तुछ समझे गृहस्थका और साधूका सब धर्म एक बतलावे इत्यादिक धर्म और पुन्यकी वातोंमे अनेक कुयुक्तियें लगाकर गृहस्थोको उलटे जालमें फसाकर अपणे मान महत्व भोजन वस्त्रका उपाय करे रातकूं जल नहीं रखे और फरागत रातकू जावे तो पैशाबसे गुदा धोवे उसी पात्रमें पेशाव करे उसीमे प्रभातसमे आहार पाणीलाके खावै कोइ पडित पूछे तो मोयपडिमाका (याने मुक्त पडिमा) नियम धारीका प्रमाण वतलावे शब्दार्थ और है और प्ररूपणा उलटी करे पेशाबसे गुदा धोया भया आवस्यक वगेरे परमेश्वरके वचनरूप शूत्रका उच्चारण करे पेशाव कर विना हाथ धोये पुस्तक जो परमेश्वरके तुल्य सूत्र है उनोके हाथ लगावे ये सब काम ओघडोकीतरे करे वो जैन मतके साधू नही मन मतके बाधू हैं विचारे भोले जीवोकों धोखेबाजीसें सूत्रका नाम और कल्पित अर्थोंसे उलटा समझावे एसे लोकोंकी ऊपरकी मलीनतासें पूर्वोक्त परमेश्वरके हुकम तोडणेसें अंतरंग कषायसे अंदरकीभी मलीनता समझणी दश धर्म यती साधुओंका है उसमे सौच जो कहा है वेसा ऊपर और अंदर द्रव्य करके और भाव करके शुद्ध वो जैनके साधू है भगवती सूत्रमें पचमे कालमे दो प्रकारके साधू अभी वतलाये हैं वो साधू ही यथार्थ है बकुस १ और कुशील २ एकेकका पांच २ भेद है उस सूत्र और टीकासे देख लेणा ग्रंथ वढणेके सबब नहीं लिखा जैन वगेरे सैवादिक पवित्रता पूर्वोक्त कारणके लिये मानते हैं इति प्रश्नोत्तर। हे महोदय, जैन धर्मका चलणा इस दुनियांमे सब धर्मोंसे पहिला है इस वातका निश्चय देश अमेरिका चीकागो सहरमें वडे २ यूरोपी विद्वानोने दरयास्त करके लिख दिया है पुस्तकोमें पुस्तक पुराणा लिखा वेदका उनोने सावत किया है क्योंकी जैन धर्मका ग्यान कठाग्र मुनियों के था इसवास्ते सब लिखा नहीं था लेकिन् ये तो स्वतः सिद्ध हो गयाके जिसका धर्म पहली उसका ज्ञान पहली ज्ञान विगर धर्म हरगिज नहीं याद शक्ति जबरके कारण नहीं लिखा जिनोंकी बुद्धि कमथी उनोने मत चलाते लिख लिया होगा लेकिन जैन धर्ममेंसे निकले तीन फिरका उनोंकी चलन देख अन्य लोकोने जैन धर्मकू तीन कलंक लगाये तीर्थंकरकी नग्न मूर्त्ति दिगावरोने वनाई उससे लोक जैनोंके नगे देव कहणे लगे नगी मूर्त्ति रुद्रकी है जैनोंकी नहीं १ दुसरे मलीनता याने ऋतु धर्म स्त्रीकूं आवे उसकीभी छूत छात नहीं शरीर चाहे गृहस्थका केसाइ हो लेकिन सामायक भगवतका नाम गुणणा वगेरे शुभ काम करते डुढी ये तेरा पंथके मतका देख जैन धर्मकू मलीन लोक कहणे लगे लेकिन वाणप्रस्थ आश्रममें जो मलीनता तथा वेदोंका यज्ञ अश्वमेध गउमेध सोम यज्ञमें वकरे प्रमुख अनेक जीवोंकों मारणा और मांस खाणा सौत्रामणी यज्ञ कर मदिरा पीणा इत्यादि अपवित्रतासें अतरग है मलीन जिनोंका वो मलीन है जैन धर्म

दया मई होनेसें ये मलीनता जैनोमें नही २ तीसरे दान पुन्य निषेध रूप उपदेश विल्ली चूएकू मारती होय तो छुडाणा नही इत्यादिवातोसे तेरा पंथियोकी चलन देख लोक जैन धर्मकू कलंक लगाते है ये वात भी अपणे स्वार्थमे तत्पर एसे शास्त्रोकों बणा-णेवाले अपणी जातिकी उच्च दसा दिखाकर अपणे पुराण और स्मृतियोमे केइ जगे लिखा है के फक्त दान देनेका पात्र एक जगत्में ब्राम्हन है दुसरे सब पाषंडी है पाषंडि-योंको देनेमें बडा पाप है बिल्ली चूहेकु मारते नहीं छुडाणा ये वातभी वहोत अनार्य निर्दइ म्लेछ कहते हैं के वो उसका भक्ष है छोडावे तो अंतराय कर्म बधता है वेदांती ब्रम्ह अद्वैत वादीयोंका भी यही सिद्धांत है ब्रह्म तो मरता नहीं बाकी तो सब स्वप्नवत् जूठा है ब्रह्मनें ब्रह्मकू मारा ब्रह्मकू पाप लगता है नहीं चार्वाकभी मारणेमे पाप बचाणेमें पुन्य नहीं मानते हैं जीवकू मारते देख अपणी शक्ति मुजब नही छुडावै और करुणा नहीं आवै ये काम नर्क जाणेवाले चंडाल विना दुसरेके कभी नहीं हो सकते ये वातभी जैन धर्ममें नहीं है के दान न देणा और मरतेकू नहीं बचाणा ३ जैन धर्ममे ये तीनोंही वात नहीं, पुन्य मुक्ति जाते हुये जीवके बोलाउरूप है तेरमे गुणस्थानकतक पुन्य जीवके संग रहता है ये तीनोंही कल्पना मनुष्य कृत है तीर्थंकर तो स्याद्वादनयसें उपदेश करते हैं उनोके वचनका एक नय पकडके जो अपणा मत थापे वो मिथ्यात्वी देखो भगवंत कहते है व्यवहार नयसे पुन्य आदरणे योग्य निश्चय नयसे छोडणे योग्य अब विचारणा साधूपणा श्रावकपणा तप जप विहार वगेरे और सब क्रियानुष्ठान व्यवहारनयकू प्रबल मान कर व्यवहार साधते हैं और कहते हैं व्यवहार साधणा चाहिये निश्चय धर्म तो केवली जाणते हैं लोक तो जिसका व्यवहार शुद्ध देखते हैं उसका इस लोकमें प्रतिष्ठा सत्कार करते हैं सब मतोवाले तो फेर पुन्य करणेमें व्यवहारनयकू केसे उठाया निश्चय नयतो भाव आश्री है जिसकू मनका परणाम कहते है प्रत्यक्ष देखते हैं दिया भया निरफल होता ही नहीं जेसा २ अगला पात्र इत्यल इसवास्ते बालक जन्मणा ये एक मंगल काम है इस जगे सब सामग्री पवित्र उजाला और शुद्ध हवा चहिये जिस जगे बडी भूल अपणे २ न्यात जात मुजब अलग २ रीतरीवाज रूढी आचारके आधीन होकर बच्चा और जापेवालीका केसा सत्कार करते हैं।

(जापेवालीका उपचार)—खाट हवाकी जगे उजाला होय उहा रखणा उस जापे-वालीके आस पास वहोत भीड तथा वात चीत नहीं होणे देणा पीड सरू भये पीछे बहोत करके २४ घंटेके अंदर बच्चेका जन्म होता है जो पीड वहोत कष्टके संग आवै अथवा कोइ दुसरा कारण बणे तो बच्चा होते २ औरत होलेती है और जो बच्चा सुख शांतिमें होय तो भी औरतकू बडा परिश्रम पडता है इसवास्ते बच्चा भये बाद उसकू थोडे घंटोंतक विसरामके लिये सोणे देणा जो नींद आजायगी तो थकेला उतर जाता है

और हुसियारीमें आती है जो नाताकती बहोत मालम दे और नींद नहीं आवे तो जाग्रती और ताकत लाणेवाली दवा देणी द्राक्षासव देशी वैद्य देते हैं डाकटर वाइन और ब्रांडी देते है किसीतरे हुसियारीमें लाणा ऊपर लिखे मुजव एक नीद लिये पीछै और हुसियारीमें आये पीछे पाणीमें बेरकी जडकी छालकू उकाल दिनमें दो चार वेर अथवा पाणीमे ब्रांडी मिलाय योनिके बाहरके भागोकू धोणा चहिये और आमल गिर गये पीछे गरम पाणीमें कपडा डुबाकर बाहरके भागपर वेर २ धरणा जापेवालीकूं थोडे दिनोंतक तो खाटमेंही सुलाये रखणा बिछोणेमेंसे ऊठके फिरणे घिरणेसे बैठणेसें गर्भ-स्थान खिस जाता है खून गिरणे लग जाता है और उससें दुसरे बडे २ डरावणेवाले रोग पैदा हो जाते है आठ दिनतक तो जरूर सुलाये ही रखणा दस्त पेसावभी उसी खाटमें पडीकू ही कराणा वाद बैठणे उठणेकी जरा २ टेव डालणी पनरे दिन पीछै हाल चाल करणी सो भी हलू २ अपणे लोक एसी तजवीज कुछ नहीं रखते इसवास्ते योनिमें केइ २ तकलीपें पैदा हो जाती है इस वातका पूरा २ खयाल औरतोंने रखणा परिश्रम मैथुन गुस्सा ठढा और वासी पदार्थ हवाकी जगा उसकू त्यागणा एक महीनेतक थोडा और हलका भोजन लेणा हमेस सेक करणा और तैल मसलाणा ।

(दुष्ट कष्टीपणा)—पीड चले पीछै २४ घटेमें प्रसव होणा चहिये और होय नहीं कष्ट पडे जाणना चहिये बचा आडा पडणेसे अथवा बचेका शिरवडा होय अथवा और-तके कोइ दुसरी इजा होणेसें बैठकमे सख्तमल बधा भया रहणेसें अथवा गर्भस्थानमे बहोत पाणी होणेसे वो ढीला होता सुस्त होता है और चहिये जितने जोरसे सुकडता नहीं और इसतरे होनेसे कमलका मू चहिये जितना खुलता नहीं उस करके गर्भ बाहर नही निकल सकता दाइ उसकू जोरसें करांजणेका कहती है उससें भी उसकूं बहोत कष्ट होता है ।

(इलाज)—दस्त कब्ज होय तो गरम जलकी या एरंड तेलकी पिचकारी लगाणी२ बहोत थकेला होय तो थोडी देर सोणे देणा—(गर्भका वेग)—बचा जणती वखत जो आता है गर्भाशयकी शिथलताके कारण बहोतसी वख्त वेग बंध होता है इसवास्ते एसी दवा उस वख्त देणी चहिये सो वेग चला आवे लेकिन् गर्भ अटकणेका दुसरा कोइ कारण होय तो वेगकी दवा फायदा नहीं करती टकण और अरगट ये दोनों दवा वेग लाता है ।

(रक्त श्राव)—बचा भये पीछै ऋतू धर्मकीतरे खून गिरता है उस खूनके सग आमलका कितनाक हिस्सा तथा गर्भस्थानमें रहा भया कितनाक कचरा बाहर आता है ये श्राव धीरे २ कम होता है और रग वदलणे लगता है ये खून और खून मिला भया जुदे २ रगका पाणी दश पनरे दिनतक चलते रहता है और पीछै बध होता है

इसकू दवा दे कर एकदम बंध करना नहीं गरम पाणीमे कपडा भिगाकर बाहरके द्वारपर धरणा अथवा ठंढा पाणी एसे श्रावकू तुरत बंध कर देता है उससे फायदेके बदले उलटा नुकशान दुसरा रोग पैदा होता है किसी वख्त जब खून जादा जाता है तो नाताकतीकाडर होता है इसवास्ते अत्यार्त्तव रोगपर लिखे भये इलाज करणा।

(जखम)–वहोत सीदाइये धीरज और सावचेती नहीं रखकर जल्दीसें बच्चेकू खेंचणेकी अजमायस करती है उससे औरतके इजा होती है अंदरमें फटकर चीरे पडते हैं वो जखम वडी मुस्किलसे रुकते हैं उसकू गरम पाणीसे धोणा आपसमें दोनो बाटिये घसीजे नहीं इसवास्ते चलणे नहीं देणा नरमदस्त आवै एसी दवा देणी (खुराक)–मुलक २ के जात २ के अलग २ रीत रिवाज चल रही है इसवास्ते इहा सामान्य खुराक में लिखूंगा इतनाही वस है तैलंग देशमें तीन दिन जापेवालीकू लंघन कराते हैं सो ताकतवर औरत या कोई सामज्वरवालीकू फायदेवंद है लेकिन नाजुक और नाताकतीवालीके लिये अछा नहीं ये लंघन इस मुजब कराणा चाहिये बच्चा भये बाद चार पांच दिनतक साबू दाणोका दलिया थोडा फुलका पुराणे साठी चावल दूध चाह एसा पतला और हलका खुराक देणा और पीछे हलवा वगेरे घीवाला खुराक देणा।

(अधूराजाणा)–गर्भ रह्यां पीछे ७ महीनेके अंदर अधूरा गिर जाता है सातमें महीनेसे लेकर नवमे महीनेके पहली जो बच्चा होता है वो सतमासिया अठमासिया कहलाता है वो भी अधूराही गिणा जाता हे अधूरा जादा करके तीसरे महीने जाता है वो घधा भया जादा नहीं होनेसे खूनही गिरता है चोथे महीने पीछे गर्भका शरीर करडा बंधता है वो गिरणा गर्भपात कहलाता है अधूरा एक वेर पडे पीछे वेर २ गिरणेका डर है कुसुआवडसें औरतका शरीर वहोतही विगड जाता है। (कारण)–नाताकती अयोग्य आहार विहार और महनत गुस्सा डर कामविकार उंचा नींचा गिरणा गर्भाशयकी नाताकती अथवा उसका रोग वगेरे उसका कारण है गरमीके दोष वाले वीर्यसें और नाताकत औरतके रहा भया गर्भ पूरे महीने टिक नहीं सकता जो कभी हो भी जाता है तो जीता नहीं (लक्षण)–वेचैनी आलस थकेला कमर तथा पेडूमे शूल थोडा २ खून झरणा ये उसके पूर्व लक्षण है पीछे जणणेके वखत केइ यक चिन्ह मालम देते ही एकदम अधूरा गिर जाता है अथवा ये चिन्ह थोडे दिन कायम रहके पीछे होता है वहोत खून गिरणा ये जोखम तथा मोतकी निमाणी है– (इलाज)–जो खून थोडा गिरे तो गर्भ थाभणेका इलाज करणा १रोगीली औरतकू एक ठंढककी जगामे करडे विछोणेपर अत्यत सुख शातिमें सुलाये रखणा २ अत्यार्त्तवका इलाज करणा चार आनाभर फुलाई भई फिटकडीकू अधसेर जलमें मिला चार २ घंटेसें नीतरा भया जल पिलाते रहणा ३ क्लोरोडाइनकी २० बूंद एक औंस पाणीमें मिलाकर पीणा खूनका

जोर वढता दीखे तो कुसुआ वड होगा एसा समज उसका इलाज करणा ४ फिटकडी का पाणी पिलाते रहणा और ठंढे पाणीका पोता योनीपर धरते जाणा इससे खूनका प्रवाह वध होता है कोइ भाग अदर रह गया होय तो अगली डाल निकाल देणा आठ दिनोतक सुलाये रखणा खुराक सादा देणा दस्तका खुलासा रखणा जो अधूरेवाली औरत तुरत ऊठ काममे लगती है उसके गर्भाशयके अनेक रोग होते है उसमें गर्भाशय भ्रष्ट होणा मुख्य है।

(सूआ रोग)—जो जापेमें रोग रह जाता है उसकू सूआ रोग कहते हैं वुखार खासी उलटी सोजा शूल मदाग्नि अरुचि तथा फीकाश ये उसके लक्षण है किसी २ कूं अपच्चा मोल उलटी आफरा दस्त शूल अरुचि दस्तकी कब्जी शिरमे दरद वगेरे वायू प्रधान चिन्ह होते हैं किसी २ के हाथ पैरोमें दाह पेशावमे जलण तथा उष्ण वाय मूका आणा मसूडे फूल जाणा शरीरमे फीकाश पेटमें दाह पसीना जादा वदनका तूटणा पित्त प्रधान चिन्ह होते है इसके सिवाय ऋतुसबंधी तथा गर्भाशय वगेरे स्थानिक विकारभी मालम देता है (इलाज)—देवदार्व्यादि क्काथ न० २१८) नयेसु ये रोगमें वहोत फायदे वद है और सुवाके तमाम रोगोको मिटा देता है २ वायूके चिन्ह होय तो नं० २७६ का सौभाग्य सूठीपाक देणा) लोक इसकूं कम देते हैं ३ पित्तके चिन्ह होय तो न० ३७३ का) जीरापाक देणा ४ वत्तीसा तपखीर रत्तल २ सूफ तो १० धाणा तो १० सुपेद वच तो २॥ इलायची तो २॥ गुलाबका फूल तो ५ कपूरकाचरी तो ५ तमालपत्र तो २॥ चूर्ण करके इनोंके वरावर मिश्री इनमे इतनाही ताजा घी विदाम पिस्ता मिलाकर गोलियें देणी मात्रा ५ से १० तोला ५ लोह अथवा मंडूर त्रिकटुके सग घी सहतमें चाटणा इसके सिवाय हमारे विद्याशालाकी सूतिका भरण रश सव जापेके रोग मिटाता है।

वध्यत्व-वांझडीपणा.

(विवेचन)—वांझडीपणा दो प्रकारका है पहलेसे ही गर्भका नहीं रहणा वो तो शुद्ध वाझडी और एकाददफे गर्भ रह गये पीछे गर्भ वध पडता वो अशुद्ध वांझडीपणा वाझडीका दोप अथवा रोगकू औरतोंके रोगोंके प्रकरणमें दाखल करणेका कारण यहेकी गर्भ धारणेवाली स्त्री है इतनाही नहीं जादा सवध तो स्त्रीके दरदोंके साथ है लेकिन गर्भ रहणेमें पुरुषोंकाभी पूरा २ विगाड है दोनों औरत और मरदमेंसें जिसकी खलल होय उसकी परिक्षा पूर्ण विद्वान वैद्य पास कराणा चहिये इकेली औरतका दोप मानकर दुसरा व्याह नहीं करणा चाहिये कारण इतनी दो दो चीजें आपसमें लडे विगर हरगिज नहीं रहते एक वनमें दो सेर एक थभमें वधे दो हत्थी एक म्यानमें दो तलवार दो राजाका दल एक राज्यपर एक पुरुप दोय औरत एक राजाके वरोवरीके दो प्रधान

रोगी एक पर दोय वैद्य इतने दो दो कभी एक जगे अछे नहीं इसवास्ते राजा महराजोंकी वात अलग है कारण आपसमें मिलणे नहीं देते और एक स्त्रीपर प्रेम राम जेसे रख्खा वेसा रहता है वहोत स्त्रियोंपर प्रेम कृष्णने रख्खा वेसा रहता है आपसमें ताने मोसे होतेइ रहते हैं वहोत मूर्ख कहा करते है वांझडीका इलाज है ही नहीं क्योंकी उनोने वैद्यक शास्त्र पूरा जाणा नहीं कारण वांझडीपणा ये वदनका येक रोग है सो शस्त्रसें या दवासें मिट सकता है जव जमीनका और वीजका स्वरूप विचारेगें तो ये सव वात समझमे आ जायगी जेसे जमीन अशुद्ध झाडी और झाखरवाली पथरोंकी खार वाली और पाणीभी वेमोसमका खराव और खात विगर डाली भई जमीन विगर सस्कारकी होती है तो उसमें अछा वीजभी पैदा नहीं होता जो कभी पैदा होता है तो फल या दाणे नहीं पकते इस किसम जो जमीन सव किस्म अछी हो और उसमे वोणेका वीज विगडा भया सडा भया होय तो यही हाल होता है अपणे प्रत्यक्ष देखते हैं एसी खराव जमीनकू हलसे फोड खात डाल अनेक जतनोंसे सुधारेवाद उसमें अछा वीज वोया जाय तो अछे फल लगते हैं इसी किस्म औरतका वदन निरोग मेद मलीचपणा सोजा गांठ जखम गरमी पीप पकणा धातू गिरणा खून गिरणा वगेरे होय तो दूर करणा तो फल देणेवाली होती है वांझडी होणेका कारण—औरतके योनिमें स्वभावसें खोड जेसे कमलका मू टेढा चमडीका पडदा अथवा कमलका मू सकडा और स्त्री अडकी अपूर्ण स्थिती २ औरतके शारीरक दोष जेसेके रजोत्पत्तीकी कसर अथवा विकार अथवा वदन फूल जाणा अथवा जल जाणा जादा तातत्तपणा सूवा रोग वगेरे ३ (स्थानिक दोष)—जेसेंके गर्भाशय प्रदर गर्भाशयका वरम गर्भाशयमे चरवी गाठ वगेरेका जमाव गर्भाशयका फिर जाणा टेढा होणा कमल मुखका वरम तथा जखम योनी मार्गका सोजा दाह तथा असहणा गरमी सुजाक वगेरे चेपी रोग ४ पुरुषके वीर्यका दोष जेसे थोडा वीर्य दूषित वीर्य गरमी सुजाक वगेरे अथवा इनोसें भया दुसरा रोग।

(इलाज) वहोतसे रोग तथा दोषोंका इलाज इस किरणमें तथा पीछे लिख दिया है इहां विस्तारसें लिखणेकू अवकास नहीं है शारीरक या स्थानिक रोग मालम पडे वो मिटाणेका और सामान्य आरोग्यता वधाणेका इलाज करणा एसे रोग उलटे वढे एमा आहार विहारसें दूर रहणा पवित्रता और अछी आचरणा और सादा खुराक देणा।

(गर्भ पैदा करणेवाले इलाज)—गर्भाशयकी शुद्धि करके गर्भ धारणमें मदत करे एसे थोडे सामान्य इलाज इहा लिखते हैं १ फल घृत न० २८९, २ योगराज गूगल न० ५८, ३ उडद तिल पुराणा वास गुड मूलीके वीज गाजरके वीज दही खट्टी छाछ कुवारपठा गूगल ए लियेमें ऋतु धर्म आता है ४ मालकांगणीके पत्ते साजीखार वज

तथा भिलावा इनोकों पीस पीणेसें ऋतू धर्म आता है ५ बल बीज जेठीमधु खपाट बड वाड्की नरमसाखें नागकेशर तथा मिश्री सहत दूध तथा घीमें पीणा ६ आस गधके क्राथमें पकाया भया घी प्रभातसमें पीणा ७ पुष्प नक्षत्रमें सुपेद रींगणीकी जड निकालके दूधमें पीस कर पीणा ८ पीले फूलोका कांटा शेलियाकी जड धावडीका फूल वडकी शाख काला कमल उसकू पीस दूधमें पीणा ९ जीरा सपेद फूलोंका सरपखा और पारस पीपलका फल बांटकर पीणा १० खाखरा (पलासके पत्ते) दूधमें पीस कर पीणा इन इलाजोको ऋतु स्नान करे पीछे १ से ८ दिनतक अजमाकर गर्भाधान करणा ।

किरण ११ मी.

बच्चोंका रोग.

जेसे औरतोंके केइयक रोग अलग होते हैं तेसे बच्चोंके केइयक रोग अलग २ होते है जेसेके दांत आणा वाइटे कृमि ओरी अचवडा खुलखुलिया खासी गाल पचोरिया इतना और भी तफावत है के वडी ऊमरवालेका और बचेकी नाजुक मिजाजके कारण इलाजोमें फेरफार करणा पडता है बच्चोंकी पिलाणेवाली दवाओमें अफीम सोमल पारा धतूरा वछनाग हाइड्रोस्यानिक एसिड फोसफरस तथा कितनेक सख्त ऐसिड और क्षारोका देणा वणे जहातक कभी नहीं करणा एसा विद्वान वैद्य ओर तबीबोका फुरमाण है आरोग्यताके साथ ऊमरकी उन्नती चाहणेवाले वैद्य और डाकटर जो परोपकारी है सो इन चीजोंका वरताव विलकुल नही करते है अब बच्चोका सादा और हमेसा केलिये अछा एसा सामान्य इलाज लिखते है

(जन्म घूटी)–(गलथूथी)–बचा जब जन्मता हैं तब उसकू गलथूथी पिलाणेकी बहोत जगे चलण है गुडघी वगेरे बच्चेकू इसवास्ते ये पिलाई जाती है के बचेकी शारीरक तथा मनकी शक्ति तथा बुद्धि वधाणेकू और वैद्यक शास्त्रका हुकम है के बहोत दिनोंतक सेवन करणा चाहिये अज्ञान इहातक फैल गया सो मूर्ख और ते मरजी मुजब एकाध गुड वगेरे चीज बचेके तालवेके लगाकर एक तरेका नेक चार किया करती है सोभी मुलक २ की अलग २ रिवाज ठहरायली है जन्म घूंटी इस वजे देणा चहिये सोना ब्राम्ही शखावली सहत घी ये ताकत और अक्कलकू वढाती है घी तथा सहतमें सोना घसकर पिलाणा शखावली तथा सुपेद वचका चूर्ण घी तथा सहतमें चटाणा ये गलथूथी पहिले महीनेमें हमेस एकेक रत्ती दुसरेमें दो रत्ती एसे वरसभरकू १२ रत्ती पीछे वर्ष वर्ष दोढ पांच २ रत्ती मात्रा वधाणी–(बच्चोंके रोग तथा कारण)–१ बच्चोंके रोग जादा करके माताके कुपथ्यसें होता है भारी तथा विषम खुराक माके दूधकूं विगा-

डता है उसके पीणेसें वचा वेमार होता है २ दांत जब आणे लगते हैं तव वुखार दस्त उलटी तथा वांइटे चमकणा वगेरे वडी डरावणी हालतमें जागिरता है ३ दूध पीणा छोडे वाद खाणा जव सीखता है तव अयोग्य आहार ठढ या गरमी हवासें वेमार होता है और मावापकी गफलत इसमे मुख्य कारण है देखते हैं सो वहोत अदमी तुल वृश्चिकी सक्रांतकू ठढ कालामानके गरम खान पान दिनका सोणा दही मसाले जादा गरिष्ट और पेटभर खाणा और ताकत वर दवायां खाणा सरू करते है कुभ मीनकी सक्रातीमे दिनका सोणा गुड तेल वासी ठढी चीजे लोक खाकर वेमार गिरते हैं इसी किस्म वचोकूभी वेमार डालते है ४ चेपी रोग जेसेके ओरी अचपडा वडी खासी वगेरे– (लक्षण)–वुखार दस्त खासी वाइटे वगेरे कितनेक रोगकी परिक्षा झट हो जाती है विगर वोलणेवाले वचोके कितनेक रोगोकी मालम सहजमे नहीं पडती वालक रोता रहै तव समझणा के तो इसकूं भूख लग रही है अथवा वदनमें कोइ दरद है शिर आख कान नाक पेट वगेरे अवयवोके अदर जब दरद होता है तव वचा दम २ में उधर हाथकू ले जाता है और दुसरा कोई उहां दवाता है तो जादा रोता है (१ वुखार)– दूध पीणेवाले वचेके विकारवाले दूधसे रोग होता हैं या अजीर्णसे होता है या आगंतुक कारणसें रोग होता है–(इलाज)–१ अतीस १ रत्तीसें १ वाल सहतके सग चटाणा फायदे वद है २ कृष्णादि चूर्ण न० २२२ सहतके सग वालकका दूध चुगणा कभी वध नहीं करणा मा या धायकू पथ्य करणा माकू पथ्य या लघन येही वालकका पथ्य या लघन समझणा ३ खाणेवाले वचेकू पसीनेकी दवा तथा दस्त साफकी दवा देणी हरडे या एरडी तेल ४ फक्त कुटकीकू शेक उसकी फकी जलसे देणी–(दस्त) दूधके दोपसे दात निकलणेसे अपचेसें ठढी हवाकी असरसें और ओरी अचपडा वगेरे फूटके निकलणेवाले रोगसें दस्त होणे लगते हैं–(इलाज)–१ एरडी तेलका जुलाव देणेसें दस्तका कारण वध हो जाता है २ इद्रजव जरा सेक कर दूधमें अथवा मूमे देकर चूची पिलाणा २ वीलकी गिर धावडीके फूल वाला लोद तथा गजपीपर इनोंका क्वाथ अथवा चूर्ण सहतके सग ४ अतीस सूठ मोथ वाला इद्रजवका क्वाथ ५ इद्रजव तथा वायवि डगकू शेक इसकी फकी ६ डोवर्स पाउडर देणा ७ अजमोदादि गुटिका न० २४७

(वुखारके सग दस्त)–१ शृग्यादि चूर्ण न० २२२ सहतमें देणा २ डोवर्स पाउडर तथा किनाइन देणा ३ अतीस सहतमें चटाणी.

(आम मिला दस्त)–१वायविडग अजमोद छोटी पींपरका चूर्ण गरम पाणीके सग देणा २ कुटकीकू शेक पुराणे गुडमें गरम पाणीसे देणा–(खूनका दस्त

अतीस नागरमोथा वाला तथा इंद्रजवका काथ २ वाला तथा सहत चावलोंके धोये जलमें ३ डोवर्स पाउडर

(६ खासी)–१ शृंग्यादि चूर्ण नं० २२२ सहतके संग २ मोथा अतीस छोटी पींपर तथा काकडासींगीका चूर्ण अथवा काथ सहतके संग ३ अतीसका चूर्ण सहतमें ४ ईपीकाक्युआना पाउडर १ ग्रेण एन्टीमोनियल पाउडर ३ ग्रेण मोलेठीका चूर्ण ९ ग्रेण दो दो ग्रेण खांडके सीरेमें देणा ५ केलोमेल ५ ग्रेण रुबार्ब पाउडर ४ ग्रेण मिलाकर दो पुडीकर एक चीणीके सीरेमे देणा उससे दस्त साफ नहीं आवे तो ५ घंटे पीछै दुसरी फेर दे देणी ६ इतने इलाजोसे खासी कम नहीं पडे तो एन्टीमोनियल वाइन दश बूंद एपीकाक्युआन्हा वाईन २० बूद नाइट्रेक ओफ पोटाश ग्रेण ६ केम्फर वोटर ग्रेण ६ इनोकों मिलाकर टकमें एक छोटी चिमचीभर दवा दिनमें तीन वेर देणा.

(७ वडी खासी)–खुल खुलिया खासी एक चेपी रोग है ये बच्चोंकेही होती है उसमे थोडा बुखार आता है और खासते उलटी हो जाती है और खासते २ मू लाल हो जाता है मुरझा जाता है किसी २ वखत दस्त पेशाब भी अदर निकल जाता है इस रोगमें वाजे वखत चमक और वांइटे हो जाते हैं दुसरे अठवाडियेमें इस रोगका जोर वहोत वढता है लोकीकमें अढाई महीनेकी मुदत इसकी मानते हैं अगर अछीतरे सार संभाल दवा करणेमें आवे तो तीसरे अठवाडे पीछै मिट सकता है–(इलाज)–कस्तूरी इकेली अथवा किसी दुसरी दवाके संग देणा २ भीमसेनी कपूर फायदा करता है ३ कांटा शेलियेकी छालका उकाला पीणा ४ ईपीकाक्युआना हींग ५ भुय रींगणीका उकाला सहत डालकर पिलाणा ६ हरडेकी अवलेही न० २६४, ७ कंटकारी अवलेह नं० २६३, ८ नींद लाणेकूं अफीम किरमाणी डोवर्स पाउडर वगेरेका उपयोग करणा.

(८ हांफणी)–१ शृंग्यादि चूर्ण न० २२२, २ हरडे वहेडा मोलेठी सम वजन गरम पाणीमें पीस उसमें जरा सींधा निमक तथा सहत मिलाकर २ से ३ वाल दिनमें तीन वेर चटाणा जरूर लगे तो रेवचीणीका शीरा डालणा ३ अरडूसेके पत्तोंका रश जरा गरम कर अदर सहत डालकर पीणा ४ वडी ऊमरके वच्चेकू पापडखार चिणेकी दाल इतनाही गुड तथा गरम दूधमे मिलाकर पिलाणेसे उलटी होगी ५ डाकतर लोक ब्रांडीका दो चार बूद चिमचा भर पाणीमे पिलाते है (६ वाहरका इलाज)–फुलालीन टरपेन्टाइन तथा पोस्तके डोडेका छातीपर सेक डीकामाली रेवचीनी तथा एलियेका पेटपर लेप अरडूसेके तथा नागर वेलके पत्तोकू पेटपर वांधणा

(श्वास तथा खासी)–१ द्राख अरडूसेका पत्ता हरडे तथा पींपर चूर्ण सहतमें २ वांस कपूरका चूर्ण सहतमें ३ धमासा पीपर दाख तथा हरडेका चूर्ण सहतमें ४ घाणा

तथा मिश्री चावलोके धोवणमे ५ काकडासींगी मोथ तथा अतीसका चूर्ण सहतमें ६ अरडूसेके पत्तोंका पुटपाक कर रस निकाल उसमें सहत पींपर तथा फुलाया टकण डाल पिलाणा ७ अरडूसा सूठ तथा भूरींगणीका उकाला सहत डाल ८ अलशीकी पोटिस गरम २ छातीपर वाधते जाणा–१० (उलटी)–मोथा अतीस काकडासींगीका चूर्ण सहतमे २ जायफलकू सहतमें घसकर देणा ३ कुटकी सहतमें चटाणा ४ चित्रक सूठ सहतमें

(दूधकी उलटी)–१ आंवेकी गुठली चावलोंकी धाणी सींधा निमकका चूर्ण सहतमें २ कली चूनेका नीतरा भया पाणी दूध मिलाकर पिलाणा ३ हरडे अथवा एरडी तेल देकर पेटका विकार होय सो निकाल डालणा–(१२ गलेका पडणा)–तालवेमें खड्डा पडता है बच्चा चूंग नहीं सकता दस्त पतला पाणीकी प्यास डोक तथा मूमें दरद दूधकी उकारी करे–(१ इलाज)–हरडे वच तथा उपलेट सम वजन दूधमें उकाल उसमें तीजे भागका सहत मिलाय फजर सांझ चिमचा २ भर पिलाणा २ एरडीके पत्ते घीसे चोपड तालवेपर बाधणा ३ तालवेपर हमेस घी तथा तेल लगाकर चिकणा रखणा ४ सेंभरका सींग दूधमें घसकर पिलाणा तथा तालवेपर लेप करणा ५ वज तथा जायफल घीमें पीस लेप करणा

(१३ गाल पचोरिया)–गाल पचोला कानकी जडके नीचेके गलेके दोनो भाग लाल होकर सूज जाता है तथा गाठे हो जाती है

(इलाज)–१ फिटकडीके कुरले कराणा मांजू फलके कुरले कराणा उकाल कर अकलकरा मूमे रखवाणा ३ जंगली उपलोकी राख मुलतानी मट्टी सींधा निमकका लेप ४ सहत कलीचूनेका लेप कर रुई चपकाणी जादा तकलीप होती दीखे तो जोकसे खून निकलवा डालणा और कर्णक सन्निपातसे गाठ होय तो घी पिलाकर सात दिनमें या तो मिटे नहीं तो वाद जोक लगाणी या चित्रक आककी जड बीजोरेकी जड दारू हलदी अरणीकाष्ट रासना सूठ इनोंको पीस गरम कर उसपर लेप करणा पेटमें दवा कर्णक सन्निपातकी देणी.

(१४ पारगला)–गर्भवाली औरतका दूध पीणेसें हाथ पैर तो सूके जाते हैं पेट घडे जेसा खासी मदाग्नि उलटी अरुचि अधेरी झाखा पडणा भ्रम ये उसके लक्षण हैं–(इलाज)–१ छोटी पींपर सहतमें चटाणी २ बडी हरडे तजकु घस जलमें देणा ३ अजमोद जीरा स्याहजीरा सूठ इनोका चूर्ण सहतमें ४ काली मिरच गरमागरम जलमें डाल ठढा भये बूरा डाल पिलाणा ५ मुगियेकी भस्मी गुलकदमें या सहतमें या घीमें

(१५ आचकी)–(वाइटे)–(चमकणा)–(कारण)–१ दात आते वखतमें कुपथ्य खुराक देणा २ आतरोंमें कृमियों पडणेसें ३ दस्त बध होणेसें आतरोंमें सख्त

मल बध जाणेसे ४ अतीसारकी बेमारी वहोत दिनोंतक रहणेसें ५ बुखारसें ६ खुल खुलिया खासीसें ७ और मृगी वगेरे मगजके विकारसें वांइटे आंचकी हो जाती हे– (इलाज)–१ गरम पाणीकी वाफ न० ५६६ बचा नाताकत होय तो वाफकी एवजीमें लिखा धावलेका प्रयोग करणा २ दस्तके विगर दुसरे कारणसें आंचकी भई होय तो एक जुलाब दे देणा एरडी तेलका अथवा सल्फेट ओफ सोडा ३ दस्त लगते होय तो दस्त बधकी दवा देणी जेसे क्लोरोडाईन सजीवनी वगेरे ४ जो पेटमें वहोत बोझा होय और उलटी होती होय तो उलटी कराणेकी दवा देणी अथवा गलेमें पींछा फिराकर उलटी कराणी ५ पेटपर राईके पत्ते अथवा कपडा दोलडेके बीचमें राइका पलाष्टर लगाणा चमडी लाल होय तब निकाल डालणा ६ दांतके मसूढे गरम और नरम होय तो शस्त्र वैद्यसें ऊपर दांत निकलणेकी जगे चीरा दिलाणा ७ कृमिसें होय तो कृमिहर दवा पृष्ठ ३१६, सेन्टोनाइन १ से दो ग्रेण चूरेके सग देणा और ४ घटे बाद चिमचा भर एरंडीका तेल पिलाणा सब निकल जायगी जो दस्त सुपेद आता होय तो डोवर्स पाउडर देणा.

(१६ मृगी)–(वाई)–सपेद पेठेके रशमें गोलेठीका चूर्ण देणा २ गऊका दूध घी दही और गोबरमे पकाया भया घी चटाणा ३ शीतल मिरच हमेश एकेक दो दो खिलाणा ४ वचकी सहतमें ॥ सें एक बालकी गोली कर खिलाणी.

(१७ फूटकर निकलणेवाले बुखार)–इन सबोंका इलाज बुखारके किरणमें लिखा है शीतला ओरी अचवडा वगेरेका.

(१८ पेटका फूलणा)– १ सींवा निमक सूंठ इलायची तथा सेकी भई हींग घीमे चूर्ण अथवा जलके सग २ सूंठके तथा हींगके उकाले जलमें एरंडीका तेल ३ पेटपर हींग अथवा एलियेका लेप ४ माइट्रेट ओफ मेग्नीश्याका थोडा ग्रेण पाणीके सग देणा

(१९ कृमि)–(पृष्ठ ३१६) लिखे इलाज कृमिका करणा

(२० भार)–बच्चोंके पेटमे भार रहता है उस करके पेट तुबातूब रहता है और बच्चा हांपते रहता है पेटमें दरद होता है और थोडा २ दस्त टुकडा २ होता है— (इलाज)–दीपन पाचन दवाके संग दस्तकी दवा देणी २ एरडीका तेल देणा ३ कुटकीकूं शेक उसकी फकी गरम जलसें ३ डीकामारी देणा ४ जुलाफा अथवा रेवचीणीका सीरा देणा–(२१ दांत फूटणा)–१ दांत फूटतीवख्त लींडी पींपर धावडीके फूल सहतमे मिलाय मसूढोपर रगडणा २ दांत निकले नहीं और तकलीप करे बुखार दस्त वांइटे वगेरे तो नस्तर देकर दातके मसूडे चीराणा ३ दस्त वहोत होता होय तो दस्तकी दवा करणी एरोमेटिक पाउडर ओप चोक देणा.

(२२ चूंचापणा)–आखोकी भापणीमें खुजली दरद तथा पाणी झरता है उस करके वच्चा आंखोंकू नाककू तथा निलाडकू मसलते रहता है सूर्यका धूप देख नहीं सकता और आंख खोल नहीं सकता–(इलाज)–त्रिफला साटेकी जड लोद सूठ और दोनो रींगणी इन सबोंकों जलमे पीस जरा गरम कर भांफणीपर लेप करणा

(२३ मुखपाक)–माके दूधके दोपसें अथवा गरम खाणेसे वच्चेका मू आजाता है १ शखजीरा तथा सोनागेरूका चूर्ण मूमे रगडाणा २ कक्कोल मिरच मिश्री वश लोचन फुलाई भई फिटकडी इलायची मूमे लगाकर लाले पटकाणी ३ गोपीचदन दूधमें पीस लगाणा ४ गिलोय सरत मूमे लगाणा ५ वकरीके दूधकी धार मूमे दिराणी ६ तव-खीर मूमे लगाणी ७ सुहागी सहतमें मिला मूमे लगाणा ८ चार इलायचीके दाणेमें सोनागेरू ॥ भर पीस मूमे लगाते रहणा लाल गिरके गरमी निकलती है

(२४ नाभिका पकणा)–१ वकरीकी लींडिये दूधमे पीस लेप करणा २ तज चदनका चूर्ण दवाणा

(२५ गुदाका पकणा)–१ रसोत पिलाणा तथा गुदाके लगवाणा २ सख मोलेठी तथा रसोतका लेप करवाणा.

(२६ खुजली)–घरका धूआ हलदी उपलेट राई तथा इद्रजव छाछमें पीस लेप करवाणा २ गधक कपूर खोपरेके तेलमें पीस महीन भयेवाद लेप करवाणा

(२७ मूतका निकलणा)–वडी ऊमरके वच्चे नींदमें विछोणेमे मूत देते हैं उसकू रोकणे १ पींपर सूठ मिरच इलायची तथा सींधा निमकका चुर्ण वूरेकी चासणीमें डाल अवलेही वणाकर चटाणा २ कुचीलेकी फकी जरासी गहूभर देणी

(२८ मूत्रकृच्छ्र)–१ गऊके दूधमें जरा गुड डालकर पिलाणेसें पेसाव खुल जाता है २ एरडीके तेलमें अथवा गोमूत्रमे दूध तथा जरा गूगल मिलाकर पिलाणा

(२९ रोते रहणा)–वच्चा रोता रहै ओर उसका चोकस कारण मालम नहीं पडे ज्हांतक एसा इलाज करणा १ त्रिफला छोटी पींपर सहतमें चटाणा दो चार दिनोतक

(३० नलोंका वढणा)–१ नवसादरके पोते धरणा २ शुद्ध एरड तेल पिलाणेसें वृद्धि मिट जाती है.

(३१ मट्टी खाणी)–१ सोनागेरू खिलाणेसें दस्तमें मट्टी निकल जाती है २ चोदा-रका जुलाव देणा ३ कुटकीकू सेक गरम जलमें फकी ४ मट्टी वच्चेकू विलकुल खाणे नहीं देणा ५ मडूर मट्टीका विकार निकाल देती है त्रिफला त्रिकुटा चित्रक नागरमोथा वाय-विडग पीपरामूल पुराणा गुड सम वजन सव एकके वजन मुजव मडूर तकमें देणा इससे पाडूरोग जेसा मिट जाता है

(३२ रेच)–छोटे वच्चेकू वेर२ जुलाव देणा नहीं वहोतही जरूरी होय तो देणा,

१ शुद्ध एरंडीका तेल नरम जुलाव है, २ हरडे मध्यम रेचक है, ३ रेवचीणीका सत सख्त है, ४ सोनामुखी खलखलते जलमें डाल छाण गुट डाल, देणा ५ गुलाबकली जोहरडे सोनामुखीका क्वाथ बूरा डाल ये बच्चेकू नरम जुलाब है लेकिन् रोग देख देणा.

(दुवला नाताकत)–१ भूमिकुष्मांड (विदारी कंद) गहु तथा जवका आटा घीमे चटाय ऊपर मिश्री सहत डाल दूध पिलाणा, २ आसगंध १ भाग दूध ८ भाग उसमें घी डाल पकाकर चटाणा, ३ हरडेकी अवलेही चटाणेसें पुराणे दोष मिटाकर कुव्वत देता है, ४ सीतोपलादि चूर्ण ५ मंडूर ६ अमृतवटी दूधके संग दुवले बच्चोंकूं पुष्ट करणे सर्वोत्तम इलाज हैं.

किरण १२ मी.

अश्वादि पशुचिकित्सा.

वैद्यदीपक पुस्तकमें घोडा वगेर जानवरोंका इलाज नहीं होय तो ग्रंथ अपूर्ण प्रकाश हो जाय एसा विचार करके इस किरणमें घरोंमें रहणेवाले पशुवोंका कितनेक मुख्य२ रोगोंका थोडे इलाज दाखल करणेमें आता है, जैसें औरत मर्द और बालबच्चें हैं, तैसे इस दुनियांमें जांनवरभी मनुष्योके संग रहणे वालेभी वडे उपयोगी है, मनुष्य बहोतसे इस जांनवरोंकी प्रतिपालसे अपना गुजरान चलाते हैं, सो प्रत्यक्ष है लिखणेकी जरूरी नहीं उनोंके दूध दही गोवर मूत्रादिकसे अनेक रोग मिट जाते हैं, मजूरी कर अपणा और मालकका पेट भर देता है इसवास्ते सर्व जीवोंकी रक्षा करणा ये परम धर्म जैनियोंका है, दुसरोंका नहीं (प्रश्न) क्योजी क्या दुसरे धर्मोंकी किताबोंमें दया धर्म नहीं हैं, और क्या नहीं पालते है, (उत्तर) हमारा लिखणा किसी वैर विरोधके वास्ते नहीं लेकिन् क्या तुमने नहीं सुणाके वेद शास्त्रोमे अनेक जांनवरोंका यज्ञ लिखा हे और असंख्या जीवोकू अग्निमें हवन कर लोक खागये और बंगाली पंजाबी आदि ब्राम्हन अभीबी खाते हैं, मुसलमीन बोद्ध चीन वगेरेके सब इस वखत मांस खाते हैं, सो सब तुम देखते हो भारतमेंभी लिखा है ब्राह्मन पंचनखी जांनवर मच्छ कच्छकूं खावे तो दोष नहीं इस लेखसेही बंगाली पंजाबी ब्राह्मन सब तरेका मांस प्रगट खाते हैं, वैष्णव जेनियोंकी देखादेख दयाधर्म मांनते है, लेकिन् पूर्वोक्त वेदादि शास्त्र पर यकीन रखते हैं, बुद्ध खुद मांस खाता था ललितविस्तर ग्रंथमे लिखा है, तो उसके मतावलंबी चीन जपानभी खाते हैं, इसवास्ते जैनियोंका शास्त्र और जैनी कोइभी मांस नहीं खाते इसवास्ते दयाधर्ममें चलणेवाले सर्वोत्कृष्ट जैन है, (प्रश्न) दयानंदजी वेदोंका भाष्य बनाया उसमें तो दया सिद्ध करदी (उत्तर) हे बुद्धिवानों वेदोंमें दयाकी गुस्कभी नहीं है अगर होती तो वेदोंके भाष्यकार उव्हट महीधर सायनाचार्यभी

एसा अर्थ लिखते सो उनोने जीवोंका हवन करणाही वेदोका अर्थ लिखा दयानदजीनें धा-तुओंको खेंचताण मनकल्पित अर्थ करके अपणे मतके पूर्व भाष्यकारोंको मूर्ख ठहराया लेकिन् उनोंका अर्थ किया भया खुद दयानंजीका उनोंके समाजकेही आधे लोक मजूर नहीं करते भीमसेनादिक जैनियोंकीदयाकी बराबरी करणेकू दयानदजीने वेदोंके अर्थोंमें गडबडाट मचाया था कुछ करोजिसके मूल सूत्र और अर्थ हिंसाके भरे है वो कल्पित अर्थोंसें दयाके कभी नहीं होसकते कोइ कहते है वेदकी रुचासे जो जीव मारे जाते हैं उसमें हिंसा नहीं होती कोईकहते हैं मारके जिला देते थे, कोइ कहते हैं ये यज्ञ सत युगमें होते थे कलियुगमें नहीं कोइ कहते हैं जिन जीवोंकों होमतेथे वो स्वर्ग चले जाते है इत्यादि वातोसें हिंसा छिपा कर वैदोका महात्म वढाणेकू अनेक गपोडे लोकोको समझाया करते है, इसमेंसे एकभी वात यथार्थ नहीं सो न्याय पक्षसे हमलिख दिखातें है जहा जीवोके प्राण लिये जांयगें उहां परजीवकूं महाकष्ट होणेसें हिंसामे पाप नहीं एसा कोन दयाधर्मी मांन सकता है, ये कहणाभी महानिर्दयी कठोर दिलवाले मांस खाणेवाले लालचियोका है, वेदकी हिंसा हिंसामे नहीं तो देखें वेदका मत्र पढ तुमारे अगली तो जरा अगारमें दो और छुरीके धारसे मिलाओ इति १ मारके जिला देणा किसी तरे सबूत नही हो सकता अगर एसा होता तो अपणे प्यारोंकों मरे बादभी जिला लेते और आप क्यों मर गयें २ जिस युगमें घोडे गउ सांड बकरे जलचर थलचर खचर असख्या जीव मारे जाते थे वो तो सतयुग और नहीं मारे जावे वो कलियुग भला ये वात विना पोपोके कोइ अकलवर तो नहीं मान सकता ३ इसकु तो एसे कारणसें उलटा नांम कहणा चाहिये पशुओंकों जीते जी जलाकर स्वर्ग पोहचाणा इसतरे स्वर्ग होता है, तब तो स्वर्ग इस-वजे अपणे स्वजन सबधियोकों क्यों नहीं पहुचाते क्या स्वर्ग तुम नहीं पोहचे चाहते निचारे उन पशुओंने कब इच्छा करके यज्ञ करणेवालोको कहाकी तुम हमें स्वर्ग पहुचाओ ४ इत्यादिक युक्तिये लगाकर हिंसा करणेकी पुष्टि जो मतोंवाले करते हैं, वो सब निर्दयी हैं क्योके हिंसा करणी कराणी और उसकू अच्छी समझणी वो सब कसाई है, मनुजीनेभी आठ कसाई माने हैं, दयाधर्म है सों सब धर्मोका राजा है, कोईभी जीव मरणा नहीं चाहता कष्ट होगया होय तो उसकी रक्षा करणी जहातक होसके बाकी तो अज्ञान कर्मके वश जीव जीवका लागू हो रहा है, ज्ञान पाणेका फल वोही है की सब जीवोंकी रक्षा करणी एसे २ शास्त्रोंके सबब राजा और प्रजा मास मदिरा खाणे पीणे लग गये आर्य ये सो अनार्यकी करतूत करणे लगे कलियुग जिसकू तुमनें यज्ञोकी मनाई करी उसमेंभी सुणते हैं के जयपुरके महाराज जयसिंघजीनें घोडेकू होमतें अनेक जानवरोंकों होमा अभी किसनगढके राजानें सोम यज्ञ कर पचीस बकरोंकों जीते होम डाला जब वेद एसी [illegible]का शास्त्र है, तभी तो एसे अनर्थ करते लोक.

समझतें हैं एसें शास्त्र इश्वरकृत कभी नहीं हो सकते क्योंकी ईश्वर सबकी रक्षा करणे-वाला है जांनवरोसे खेती होती है, गांमोके वासिंदोकी प्रत्यक्ष मिल्कीयत पशु है, जब ढोर बेमार होजाता है तो विचारोंकों घरके अदमीके बराबरका फिकर होजाता है, मर जाता है तो कमाउबेटे जितना फिकर करते है, अबोल जांनवर मूर्ख मनुष्यसें वहोत कीमतदार चीज है दयाधर्मरूप वेदोंको जैनभी मांनते है

(१ मूंगारोग)–तालवेपर खूनका चढणा जमणा, (इलाज)–नस्तरसें खून निकलवाके फिटकडी अथवा निमकके जलसे धोणा २।४ ड्राम एलिया १ ड्राम सूठ मिलाके खिलाणा २ दूध घीका जुलाब देणा

(२ मूंका आणा)–(इलाज)–१ जुलाब देणा २ शह्वजीरा कत्था और पठाणी (सींधा निमक) का भूका कर मूमे छांटणा ३ जोखार सरसूं राई सोवा हलदी सींधानिमक इन सबोकों आवलीके कुकचेके आटेके संग पीस लेप करणा,

(३ वोरहडीका इलाज)–१ बीन आयोडाइड आफ मर्क्युरी १ ड्राम मोम और सादे मलमके संग मिलाकर वधी भयी हड्डीके जगे उस्तरेसे बाल निकालकर उसपर रगडणा तब बिलष्टर उठ आयगा और आराम होगा २ बिलष्टरकी जगे साफ चमडी भये पीछे सीसेका टुकडा धर पट्टा बांधणा.

(४ चक्रावल)–(इलाज) १ गोल नाल जडणी २ गरम पाणीका सेक करणा ३ पोटिस बांवणी ४ बिलष्टर मारणा ५ डांभ देणा ६ उस जगेका बाल निकाल उस-पर हींग १ तोला मकडियोका जाला ६ मासा कत्था ६ मासा जमालगोटा ६ मासा इनोकों नींबूके रशमें पीस लगाणा और उसपर हलदीका टुकडा सिलगाके डांभ देणा ७ सीपका तथा कोडीका चूना सहतमे लगाणा.

(५ मोथरा)–(इलाज)–१ उंची एडीकी नाल जडाणी २ शेक करणा ३ हलदी १॥ सेर नवसादर ५ भर भांग तीन पाव सबोंकी २१ गोलियें करणी एक हमेस देणी ५ पींपलामूल काली मिरच कायफल कालीजीरी सूफ घोडावच टकण ये एकेक पाव गऊके घीमें मिलाय २१ दिन चटाणा

(६ श्लेष्म)–(शरदी)–(इलाज)–१ सादी शरदी होय तो बदनपर गरम झूल ओढाणी और स्पिरीट नाइट्रीक इथर १ औंस २० औंस जलमें मिलाकर पिलाणा गलेके नीचे कानकी लकीरपर राईका पलाष्टर मारणा २ बुखारके संग शरदी होय तो ऊपर लिखी दवा पिलातें उसमें २ ड्राम एलिया पीसकें मिलाणा गरम पाणीकी बाफ देणी ३ अजमाण और बूरा सम वजन पीस अंगारपर डाल इसका धूआं नाकमें जाणे देणा ४ हीराकसी १ ड्राम हमेस आठ दिनोंतक देणी पीछे फेर आठ दिनोंतक नीला-थोथा १ ड्राम देणा ५ आकके पत्ते पाच हलदी ७ तोला अजमा ३ तोला हींग १ तोला

इण सबोंकी गोली बणाकर खिलाणी ६ पुराणे टाटका टुकडा चिलम बणाकर उसमे अजवाण और आंबीहलदी पीस, डाल उसका धूवा देना, हरडे कालीजीरी हलदी सूंठ मिरच पीपर गुड पीस मिलाकर २ तोलेकी गोली बणाकर फजर सांझ खिलाणी

(७ फेफसेका खून नाकके रस्ते निकलणा)–(इलाज)–१ छातीकी पसलियों-पर बरफ घसणा अथवा ठंढा कपडा रखणा २ उकलते जलमें सिरका डाल उसका बफारा देणा ३ कत्था ३ ड्राम शुगर ओफ लेड १५ ग्रेण सल्फट आफ झिंक ३० ग्रेण इनोंकी गोली बणाकर देणी ४ कडवी तूबीकी जड दूधमें घसकर नाकमें बूंदें डालणी

(८ मृगी)–(इलाज)–१ शिरपर ठंढा पाणी डालणा २ फस्त खोलाणी ३ हलदी शुद्धपारा पीपरा मूल बछनाग शीसेकी भस्मी सहतमें मिलाय चटाणा

(९ सख्त बदहजमी)–(इलाज)–एलिया २॥ भर सूठ तीन मासा मिलाकर जुलाब देणा २ टरपीन्टाइन तेल जलमे मिलाकर गुदामें पिचकारी मारणी ३ जमाल-गोटेका तेल २० बूद अलसीका तेल सेर मिलाकर पिलाणा ४ नवसादर १ तोला सोनामुखी ५ तोला अजवाण काली मिरच एकेक तोला इन सबोकों नींबूके रसमे तीन दिन भिगाकर पीछै पीसके खिलाणा

(१० थोडी बदहजमीका इलाज)–सींधेलूणकाडला घोडेके ठाणमें रख देणा जिससे वो बेर२ चाटे २ एलिया सवा रुपेभर सूठ पाव तोला मिलाके खिलाणा इससें जुलाब होगा बहोत दस्त होता होय तो कत्था २ ड्राम अफीम पाव ड्राम सूठ १ ड्राम और चाक ४ ड्राम मिलाकर खिलाणा

(११ आफरेका इलाज)–१ दोडाणा २ मालिस करणी ३ स्पीरीट एमोनिया एरोमेटिक १ औंस २०औंस जलमें मिलाकर पिलाणा ४ जुलाब देणा याने टिंकचर एलोझ ४ औंस टिंकचर ओपियम ॥ औंस पिलाणा ५ गुदमें पिचकारी मारणी ६ पीणेकी दारू २ औंस काली मिरच २ तोला कुटकी २ तोला इन सबोंकों मिलायके पिलाते हैं आधी झाडाका तथा कांगकी जड और खाखरेके बीज दरेक ४॥ मासा हींग ३ मासा इनोंकों आधी झाडेके पानके रसमें डाकतर खिलाते हैं

(१२ कुरकुरी)–(अथवा चूक)–(इलाज)–१ गुदामें पिचकारी देणी २ पेटपर मालस करणा ३ पेटपर गरम दवायें मसलणी ३ टिंकचर ओपियम १ ड्राम टिंकचर एसेफटीडा २ ड्राम स्पीरीट एमोनिया एरोमेटिक १ ड्राम स्पीरीट नाइट्रीक इथर १ औंस इनोंको २० औंस पाणीमें मिलाकर पिलाणा ५ छ कलाकमें ऊपरकी दवासें आराम नही होय तो फेर इसी दवाकी अंदर ४ औंस टिंकचर एलोझ मिलाकर पिलाणा ६ पींपलामूल २ तोला लींडी पीपर २ तोला काला निमक २ तोला टकण

खार २ तोला कडू २ तोला पीणेका दारू ॥ शेर मिलाकर डाकतर लोक पिलाते हैं, ७ एरंडीकी जड साजीखार काला निमक लसण इनोंकों आदेके रसमें देणेसें आराम होताहै.

(१३ जुलाब याने दस्त होणा)-(इलाज)-१ गरम झूलबां धणी, २ पेटपर गरम दवायें मसलणी ३ अलसीकू कूट जलमें उकाल वो चाहकी तरे पिलाणी ४ अलसीका तेल १। सेर टिंकचर ओपियम १ औंस मिलाकर पिलाणा (५ नं० १० में) थोडी वद हजमी मिटाणेकू अंतकी लिखी दवा देणी ६ अफीम १ ड्राम चाह ४ ड्राम गहूका आटा ८ औंस मिलाकर पिलाणा ७ खुराक अच्छा देणा ८ शखजीरा और काली मिरच ये दरेक चार चार तोला लेकर पीसके खिलाणा ९ दोदो घटेके अंतर हींग और सूठ गहूका आटा घीमें गोली वणाकर देणा १० हरडे मेथी जीरा उसका दो दो तोला चूर्ण तीन दिन दहीमें पिलाणा ११ कचे बीलकी गीरी अनारका दाणा और धावडीके फूल इनोका १॥ तोला चूर्ण ७ दिन दहीमें देणा.

(१४ मरोडा)-(इलाज)-१ गरम झूल अथवा गरम पट्टा बांधणा दाणा तथा चारा महीन करके देणा (३ न० १३ मे लिखी दवा) अलसीकी चाह और कांजी देणी ४ पेटपर गरम दवायें मसलणी केलो मेल और अफीम दरेक २० ग्रेण देणा ६ फिटकडी ४ ड्रामतक देणी ७ नाइट्रोम्युरीयाटीक एसिड १ ड्राम जलमें डाल दिनमें दो वेर देणा ८ टरपेन्टाइनका तेल ॥ औंस देणा ९ पोस्तके डोडे पाणीमें उकाल उस जलकी पिचकारी बैठकमें मारणी १० एपीकाक्युआन्हा पाउडर १॥ ड्रामतक दिनमें तीन वेर देणा ११ आकके जडकी छाल देणी १२ बबूलका गूद ६ तोला लेकर पाणीमें पिघलाय देणा १३ शखजीरा १ तोला हींग १ तोला अफीम ॥ तोला आटेके संग जलमें मिलाकर पिलाणा.

(१५ दस्त थोडा होणा अथवा बंध होणा)-(इलाज)-१ पिचकारी मारणी २ पाचक दवा देणी ३ सूठ और चिरायता दरेक १ तोला देणा ४ सोनामुखी गरम उकालते पाणीमें डाल वो ठडा कर पिलाणा ५ जुलाब देणा और जुलाब बहोत लगे तो बंध करणेकू सूफ २ तोला लेकर सूठ विलायती साबू और गुलकंदमें मिलाकर देणा बहोत जुलाब देणेसे लीद नरम होती होय तो ६ दस्तकी दवा एकदम बंध नहीं करणा ७ दाणा थोडा देणा ८ जलमें गहूंका आटा मिलाकर पिलाणा ९ मैदा अथवा गहूके सतका पटोलिया पिलाणा अथवा इसकी बैठकमें पिचकारी लगाणी १० गरम झूल पट्टा बांधणा ११ ओट कांजी भूसा वगेरे खाणेकू देणा १२ बहोत दिनोकी बेमारी होय तो दूध गरम करके पिलाणा और १३ टिकचर ओपियम १ औंस नाइट्रीक इथर मिलाकर पिलाणा १४ दस्तकेवास्ते पहले लिखासो इलाज करणा

(१६ हरस)-(बवासीर)-(इलाज)-मस्से बाहर होय तो शखसे या खार

लगाकर कटा डालणा २ थोडा२ तेल पिलाणा ३ नरम खाणेकूं देणा ४ एकस्ट्राकट ओपियम १ ड्राम गोलाडर्स एकस्ट्राकट २ औंस तथा पाणी ८ औंस मिलाकर पिचकारी मारणी ५ मस्सेपर बेलाडोना लगाणा

(१७ कलेजेका सोजा)–(इलाज)–१ फस्त खुलाणी २ कलेजेकी बाजूपर राईका पलाष्टर लगाणा ३ सख्त जुलाब देणा ४ सल्फेट ओफ मेग्निस्या जिसकू एप्सम सोल्ट कहते हैं, वो १ पाउन्ड नाइट्रिक इथर १ औंस तथा पाणी ३० औंस तीनोंकों मिलाकर पिलाणा ५ हाथ पैरपर मालिस करणा ६ गरम झूल और पट्टा बाधणा ७ चार२ घटेके अतर नाइट्रिक इथर एकेक औंस देणा ८ एपीकाक्युआना पाउडर अथवा आकके जडकी छाल १॥ ड्राम देणा ९ सल्फेट ओफ मेगनीशीया ६ औंस तथा नाइट्रिक इथर १ औंस पिलाणा १० हराघास और भूसा खाणेकू देणा ११ नाइट्रोम्युरियाटिक एसीड १ ड्राम बहोत जल मिलाकर पिलाणा १२ थोडी महनत कराणी, १३ दूध घीका जुलाब देणा.

(१८ कमला)–(इलाज)–१ नबर १७ मे कलेजेके सोजेमें जो इलाज लिखा है सो करणा

(१९ पेटकी कृमि)–(इलाज)–१ सल्फेट ओफ कोपर अथवा नीलाथोथा २ ड्राम बहोत महीन पीस दाणेमे मिलाकर चार दिन खिलाणा पीछे२ जुलाब देणा पाचक दवायें देणी ४ आगेके दिन साझकू दाणेके सग सेन्टोनाइन १ ड्राम देणा दुसरे दिन फजरमें जुलाब देणा ५ पित्त पापडा १ तोला और बाजरीका आटा १ तोला दोनोंकू तेलमे तलकर देणा ६ राई १ तोला अजवाण १ तोला जगली बबूलकी फली २ से ४ काला निमक ये सब छाछमे पिलाणा, ७ शीताफलके बीज पीस छाछमें पिलाणा

(२० गुरदेका सोजा)–(इलाज)–१ फस्त खोलाणा २ जुलाब देणा ३ गरम पाणीकी पिचकारी मारणी ४ बकरेका चमडा कमरपर रखणा ५ टारटर इमेटिकका मलम कमरपर लगाणा ६ राईका पलाष्टर लगाणा ७ अलमीकू उकालणी कूटकर चामुजब पिलाणा ८ बबूलका गूद पाणीमे पिघलाकर पिलाणा ९ राल १ तोला शखजीरा १ तोला इन दोनोको गूलरके चीकमे मिलाकर गोली बणा देणी १० इलायची शखजीरा और कत्था ये दवा दरेक चार२ मासा लेकर गोली बणाकर खिलाणी ११ कमरपर सोराखार रखणा

(२१ फीके रगका पेशाब)–(इलाज)–१ घास दाणा बदलणा २ पोटाश आयोडाइड १ ड्राममें पाणी १० औंस मिलाकर दिनमे एक बेर आराम होय जहांतक

देणा ३ अफीम कत्था सीधानिमक और बावची ये दरेक ॥ तोला गुलमें गोली वणाकर खिलाणी

(२२ पेशावमें खर पडता है)–(इलाज)–नाईट्रोम्युरी एटिक आसीड १ ड्राम पाणी २० औंस मिलाकर दररोज दो वखत पिलाणा २ अकलकरा पठाणी निमक वायफूंभा सपेद मूसली गुडसे गोलीकर खिलाणी

(२३ पिशाबमें खून)–(इलाज)–कम्पाउन्ड टींकचर ओफ सीनामन ३ औंस कमजोर सल्फ्युरीक आसीड ५ औंस पाणी २० औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर १ औंस की मात्रासे देणा २ गधा बेरजा और कत्था देणा ३ चिणेके फोतरे राल और फुलाई भई फिटकडी इनोकों मिलाकर देणा ४ बंबूलका गूंद ४ आउस पाणीमें भिगाकर पिलाणा.

(२४ पिशाबमें पथरी)–(इलाज)–अलशीकू पीस उकाल चाहकीतरे बणाकर उसमें अफीम १ ड्राम मिलाकर पिलाणा २ नाइटोम्युरी एटिक आसीड २ ड्राम जलमे मिलाकर पिलाणा ३ अफीम १ ड्राम पाणीमे पिघाल दिनमे तीन वखत पिलाणा ४ आधे२ घटेके फासले गरम जलकी पिचकारी गुदा रस्ते मारणी ५ मेथीना सपाल लाहोरी निमक नवसादर कलीचूना मोरथोथा कुसतासाक और खूवजीका बीज इनोंकी गोली वणा दररोज १ देणी ६ नवसादर वछनाग और अफीम इन चीजोंको डाकटर लोग दाखोंके सरापमें मिलाकर देते हैं

(२५ पेशाब वेर२ थोडा२ होणा)–(इलाज)–१ कमरपर गरम पाणीका शेक करणा २ वबूलका गूंद ४ आउस टींकचर ओपियम १ औंस और गरम पाणी ३० औंसमें मिलाकर इंद्रीमे पिचकारी मारणी ३ खसखसके डोडे जलमे उकाल उस जलकी गुदामें पिचकारी मारणी ४ अलसी जलमें सिजाकर खिलाणी वो पाणीभी पिलाणा ५ सुरमा १ ड्राम सोराखार २ ड्राम गधक २ ड्राम पीस दाणेमे मिलाकर खिलाणा.

(२६ प्रमेह)–(इलाज)–१ जुलाब देणा २ गहूका भूसा जलमें भिगाकर देणा ३ शेक करणा ४ अफीम ॥ ड्राम कपूर २ ड्राम सल्फ्युरिक इथर १ औंस इन सर्वोको अलशीकी चाह संग मिलाकर पिलाणा मुगलाई वेदाणा ५ रुपियाभर बूरा ५ भर जलमें भिगाकर फजर देणा ६ तिलके फूल २॥ मर खिलाणा ७ पुराणे मकानका चुना फजर सांझ खिलाणा.

(२७ प्रदर)–(इलाज)–१ फिटकडी २० ग्रेण एक औंस जलमें गलाकर गुह्य स्थानमें पिचकारी मारणी २ शुगर ओफ लेड १ ड्राम अफीम १ ड्राम अलसीके चूकेके संग मिला गोली फजर सांझ देणी ३ ठढे पाणीमें खडी रखणी ४ कमरपर ठढा जल छिडकणा ५ कत्था सखजीरा सुपेद केलेके थडके रसमें मिलाकर पिलाणा.

(२८ चांदणी)-(इलाज)-नसा पैदा करणेवाली दवायें सरुआतमें देणी जेसेकै वेलाडोना क्लोरोफोर्म चरस डीजी टेलीस धतूरा विगेरे २ इथर अथवा क्लोरोफोर्म सुंघाकर कोटडीके अदर वध करणा ३ जखम होणेके सवव भया होय तो जखम रुके एसी दवायें करणी ४ पूछडीके जडके पास १ आंगल चीरके उसमे सिंगरफ भरणा दोनो कानोमें दो तोला पारा भरके वदूकका अवाज करणा

(२९ लकवा)-(इलाज)-१ जुलाव देणा २ पलास्तर लगाणा ३ गुल देणा.

(३० खुजली)-(इलाज)-१ दुसरे सब जानवरोसे दूर रखणा २ जुलाव देणा ३ कील टरपेन्टाइन और अलशीका तेल बराबर सब लेकर सब जगे मसलणा २ धोके साफ करे वाद उसपर कील १ औंस गंधक ॥ औंस मैण और तेल १॥ औंस इनोंका मल्हम वणाके लगाणा ५ फस्त खोलणी ६ गंधक सुरमा वछनाग सोरा एकेक रुपिया भर महींन पीस थोडा२ चूका दाणेमें खिलाणा ७ मनसिल १ रुपियाभर १ सेर तेलमे मिलाकर वदनपर मसलाणा

(३१ खून विगडणेसें भई खुजली और फोडा)-(इलाज)-गहूके भूसेमे सोरा २ ड्राम मिलाकर खिलाणा २ नरम खुराक खिलाणा ३ सिरका पाणीमें मिलाकर लगाणा ४ सींधे निमकका डला ठाणमें रख छोडणा जैसे वो चाटे ५ सल्फ्युरीक आसिडका कमजोर पाणी लगाणा ६ फाउलर्स सोल्युसन ओफ आरसेनीक १ ड्राम देते रहणा ७ छाछ मसलणी ८ काली मिरच सोनागेरू एकेक तोला भूरींगणीका वीज १ तोला पीस दाणेमे खिलाणा ९ लोवानका धूआ देणा १० काली मट्टीका शरीरपर लेप कर धूपमे खडा रखणा

(३२ सब वदनपर नरम सोजा अथवा पित्ती निकलणा)-(इलाज)-१ सोरा ३ ड्राम दाणेके सग खिलाणा २ सिरकेका पाणी लगाणा ३ गेरु और सोरा इन दोनोकी गोली देणी ४ लोवानका धूआं.

(३३ दाद)-(इलाज)-१ साबू और जलसे धोकर उसपर केथेरींडीस १ औंस ८ आउस सिरकेमें १४ दिन भिगाकर लगाणा २ नींवूका रस लगाणा ३ नींवूके रसमें मनसिल मिलाके लगाणा.

(३४ मट्टीका बुखार)-(इलाज)-अलसीका तेल १ सेर पिलाणा २ सोरा खार २ ड्राम दाणेके सग फजर सांझ देणा २ पेटपर सोजा होय तो ग्लीसराइन लगाणा ४ कपूर और सोरा देशी सरापमे देणेका जानवरोका इलाज करणेवाले कहते हैं.

(३५ जू)-(इलाज)-१ तमाम वदन धोकर तमाखूका पाणी मसलणा २ कारबोलिक एसिडका कमजोर पाणी लगाणा ३ सीताफलके पत्तोंका रस लगाणा.



(३६ जखममें कीडे पडणा)–(इलाज)–१ जखमकूं ढके रखणा २ कीडोंकों चिपीयेसे निकाल जतनसे डालणा ३ टरपीनटाइनका तेल १ भाग अलशीका तेल ३ भाग मिलाके लगाणा ४ डीकामाली कपूर और तमाखूकूं पीस जखममें भर देणा ५ मिश्री पीसके भरणा

(३७ गुमडां)–(फोडा)–(इलाज)–१ शेक करणा २ पोटिस बांधणा, ३ खुराक अच्छी देणी ४ छाणेसे रगड उसपर तेलमें मिलाय मनसिल लगाणा.

(३८ वरसाती)–(इलाज)–१ कास्टिक पोटाससें जलाणा २ कोयले और फूलाई भई फिटकडी जखमपर छांट जखमकूं सूका रखणा ३ मेगङ्गल डीसइन फेक-टींग पाउडर छिडकणा ४ बीन आईओडाईड ओफ मरक्युरीके मलमका पलाष्टर लगाणा ५ केलोमेल २० ग्रेण तथा अफीम २० ग्रेण दिनमें तीन वेर मू आणेकी निसाणी दीखे जहांतक देणा ६ नीलाथोथा चुना फटकडी गोमूत्र मिलाके लगाणा ७ कत्था लगाणा ८ चोमासेमे भये सहतके छत्तेके मोमसे चाठोकू मसलणा खून निकले जहांतक फेर उसपर मोम और राईके तेलका मलम वणाकर उसमें बंदूकका देशी दारू और खुर-साणीके कोयलोंका भूका मिलाकर वो मलम लगाणा

(३९ भाठा)–(इलाज)–१ आसपास पलास्तर मारणा २ पोटिस बांधणी ३ काली जीरी मुरदासींग मोम सिंदूर और थोडा नीलाथोथा इनोका मलम लगाणा

(४० बुखार)–(इलाज)–मालिस करके वदनपर गरम झूल बांधणी २ नाइट्रिक इथर २ आउस लाइकर एमोनिया एसीटेट १ आउस पाणी २० औंस मिलाकर पिलाणा और घटे २के फासलेसे देते रहणा ३ एपीकाक्युआनेका भूका १॥ ड्राम फजर सांझ देणा अथवा इसकी एवजी आकके जडकी छाल देणी ४ कोंनाइन ३० ग्रेण चार २ घंटेके अतरसें देते रहणा ५ फस्त खोलाणी ६ एलिया ५ ड्राम टींकचर ओपियम १ आउस मिलाकर जुलाब देणा ७ गरम जलकी पिचकारी वैठकमें ८ आराम देणा ९ टींकचर एकोनाइट पांच बूंद दो दो घटेके फासले देते रहणा १० कपूर और सोराखार एक २ तोला मिलाकर गोली देणी ११ कपूर और चिरायता सरापमे मिलाकर इलाज करणे-वालें देते हैं, १२ जखम अथवा फोडेके लिये बुखार होय तो उसपर बेलाडोना अथवा अफीमका लेप कर उसपर पोटिस बांधणा

(४१ शरदीका बुखार)–(इलाज)–१ गलेपर पलास्तर मारणा २ अच्छी हवामें रखणा ३ एलिया १ ड्राम हमेसां लीद नरम होयतो उहांतक देते रहणा ४ केलोमेल २० ग्रेण देणा (५ बुखार उतारणेकी दवा नं० ४० मे) सो देणी ६ नाइट्रीक इथर १ आउस लाइकर अमोनिया एसीटेट १ आउस पाणीमे मिलाकर पिलाणा ७ गरम पाणीकी पिचकारी मारणी ८ वफारा देणा ९ आंबी हलदी अजवाण मीठा तेल गुड इन

सर्वोंकी गोली बणाकर देणी १० सोरा २ ड्राम कपूर २ ड्राम भींडीका बीज २ ड्राम सल्फेट ओफ सोडा दो आउंस मिलाकर चार२ घटेके फासलेसें चटाणा

(४२ सधीवा)-(इलाज)-१ टारटर इमेटीक २ ड्राम सल्फेट ओफ सोडा २ आउस मिलाकर दो दो घटेके फासले एकेक आउंस देणा (२ सोजेपर) बेलाडोना ३ ड्राम कपूर २ ड्राम स्पीरीट वाइन १० बूंद एकस्ट्राकट हेमलोक ॥ आउस सादा मल्हम ७ आउस इनोंका मल्हम बणाकर लगाणा गरम पट्टा बाधणा ३ बफारा देणा.

(४३ गंडमाला इलाज)-१ बफारा देणा २ पोटिस बाधणा ३ पीप नहीं आवे तो पलास्तर मारणा ४ पीप होय तो चीरके निकाल डालणा ५ पींप हो जाय एसी दवा लगाणी ६ बुखार होय तो सोराखार ३ ड्राम दाणेमें मिलाकर देणा ७ बुखार गये बाद पाचक दवा जेसेंकै चिरायता जनशन सूठ वगेरे देणा ८ खुराक देणा शेक करणा १० पककर चीरादिया भया होय तो उसपर डीकामालीका तेल रगडणा ११ आकका दूध लगाणा

परचुरण—मसाला

(४४ शरीर अकड जाणा)-(इलाज)-१ खारककी गुठली निकाल उसमे अफीम भरके कपड मिट्टी करके अगारपर शेक ये खारक आधी खिलाणी जितना दिन खिलाणा उतनाही दिन दाणा देणा नहीं और जल गरम कर पिलाणा २ साजीखारसें भर निमक जोड अजवाण सालम एक २ पेसे भर लेकर उसमें पावगुड मिलाकर फजर साझ फकत् गेहूके आटे सेके भयेमें मिलाकर खिलाणा दाणा खिलाणा नहीं २ दो पेसा भर गूगल गोमूत्रके संग खिलाणा ३ सेभर निमक और लसण सम वजन खिलाणा पाणी गरम पिलाणा

(४५ खुजली)-(इलाज)-१ गधक मनसिल और वायविडगकू महीन पीस एक रात पाणीमें भिगाकर फजर कडवे तेलमें मिलाकर बदनपर मालिस करणा तीन घंटे धूपमें खडा रख फेर मट्टी मसल धो डालणा.

(४६ वायूका रोग)-सोजा और लीद बध होय तब कालीजीरी मिरच फुलाया भया टंकणखार साजीखार कुटकी राई हींग एकेक पेसे भर लेके सर्वोंके वजन बरावर अजवाण डाल आदेके रसमें गोली बणा पाच रुपियाभर खिलाणा

(४७ आखका फूला)-(इलाज)—सोनामखीके पत्थर लेके उसमें फिटकडी फुलाई भई सरसूके बीज मिश्री काली मिरच और कचूर मिलाकर महीनखरलकर सात दिन अजन करणा २ मछली तथा बकरीका पित्त सहतमें खलकर अजन करातेहै

(४८ नाकमेसें खून गिरणा)-(इलाज)-१ सूफ धाणा जीरा सूठ इन चारोंकों महीन पीस घोडेके कपालमें लेप करणा और उटके मींगणोंकों महीन पीस

पाई १ भर सींधे निमकके सग गऊके घीमें मिलाकर अंगारपर धर उसका धूआं नाकमें देणा.

(४९ भूक लगणेकेवास्ते)-(इलाज)-बंबूलकी छाल सींधा निमकसेंभर निमक साजीखार सेंचल राई लसण काली जीरी अजवाण आंबा हलदी वायविडग सुपेद मूसली और फुलाई भई सुहागी इनोंकों सम वजन लेकर गऊके दहीमें मिलाकर हमेस एक रुपिया भर देणा गरमीकी मोसममें देणा नहीं.

(५० जहर बाधवास्ते)-(इलाज)-मिरच कसोंदी और अदरक खाणेके पान सम वजन सब मिलाके देणा २ राइ तथा मिरच पीपलामूल ये दरेक एकेक तोला हींग टकणखार और अफीम ये दरेक ॥ तोला सब दवायोंके बरावर लोंग अकलकरा सूठ और पीपलामूल मिलाकर फजर सांझ देणा.

(५१ ताकतदार मसाला)-पींपर लसण पीपलामूल कुटकी वायविडंग कचूर सोहगी कालीजीरी अजवाण हलदी घोडावज गूगल दही साजीखार मेथी सुठ मयणफल कासणीकाबीज चित्रक वधायरा जीरा भांग हींग फूलाई फिटकडी आटेके सग मिलाकर देणा

(५२ सब रोगनाशक मसाला)-कुटकी कालीजीरी आंबीहलदी वायविडग टकणखार फुलाई भई फिटकडी मिरच करज पीपला मूल हरडे बहेडा आंवला करमाला आसगन्ध अजवाण मेथी राई ये सब सम वजन सवोंसें दूणा गुड इसमेंसे पांच रुपे भर मात्रा देणी इससे शरदी जहर बाद सब जाता है.

(५३ चांदणीवास्ते मसाला)-राई मिरच पीपलामूल ये सब सम वजन लेकर उसमें पीपर काली मिरच सूठ पान सहजणेकी छाल करंज मयणफल ये सब एकेक पेसे भर मिलाकर फजरकू देणा और उसका मू बांध अंधेरेमे बांधणा २ लसण हींग टकण खार कालीजीरी अजवाण पीपलामूल मिरच सूठ रींगणी सींधानिमक सेंचल साजी खार जलाया भया सेंभरसींग जवासेकी जड अतीसकी कली पान अदरक इन सबोंकों सेके भये आटेमें मिलाकर देणा और दो पहर बांधके रखणा और गरम किया भया पाणी ठढा कर देणा

किरण १३ मी.

जहरके इलाज-

जहर दो तरेका होता है, स्थावर और जगम, स्थावर जहरमें खानेसे पैदा भये या सयोगसे बणे भये या दरख्त वगेरोंका समावेश होता है, और जगम जहरोमें सांप वगेरे जहरी जानवर जाणना जुदे२ जहरोंका जुदे२ लक्षण होते हैं, और लक्षण जाणे बाद वखतपर इलाज होय तो कितनेक रोगी बच सकते है, बदनमें दोतरेसे जहर घुसता

है, एकतो जांण बूझकर जहरी चीज खाणे पीणेसें दुसरा भूलसें या जहरी जानवरोंका डंक लगणेसें जहर चढता है, केइयक आपघात करणेकू जहर खा लेते है, जहरी चीजे जगतमें थावर जगम असख्य है, सामान्य इलाज इहां लिखेंगें जिस करके वचाव कुछ होय वाद विशेष इलाजीका आसरा लेणा मुख्य२ जहरोंका इलाज लिखते है

(सोमल)-(आर्सेनिक)-अफीमके दुसरे नबरमे सोमल जहर है, वो थोडीभी प्राणियोंका प्राणनाशक है, सोमलमें कुछभी स्वाद नहीं है, इसवास्ते वेमालम खाणे पीणेमें आजाता है, शखिया मारवाडमें इसकू कहते हैं, (सोमलके जहरके चिन्ह)- खाये पीछे एक घटे वाद पेटकी कोडीमें दरद होता है, दावणेंसे दरद होता है, पीछे उवाकी उलटी होती है, वदनमे शीतांग सन्निपात जैसा पसीना होता है, अवयव धूजता है, हाथ पैर तथा नाककी डडी ठडी पडती हैं, आंखोंकी आसपास आसमानी चक्कर फिरते नजर आते हैं, नाडी करडी और जल्द होती है, पीछै दस्त लगणे लग जाता है, पेटमें चूक तथा कटाव होता है, पेशाव थोडा आता है, उसमें अगारसी मालम दे पेशाव वधभी होजाय खूनभी गिरणे लगे आंखोंमें जलण लाल होजाय शिरमे दर्द छातीमें धडकणा श्वास जल्द और रुकता आवे अत्यत दाह होणेसें रोगी पुकारणे लगे विछोणेमें हाथ पैर पटकै हाथ पांवोंमे वांइटे आवे नवज वैठ जाय चहरा लेबाई जाय रक्ताशय वध पडे और मर जाय, सोमलके जहरवाला आखरतक हुसियारीमें रहता है

(इलाज)-सोमल कमसे कम किसी वखत अदमीकू २॥ ग्रेणमें मार डालता है, लेकिन् सोमल वजनदार होणेसें दस्त उलटीमें वहोत भाग तो निकल जाता है, इसवास्ते सोमलका जहरी आधे सुधर सकते हैं, (१ उलटी) इसकेवास्ते अच्छा इलाज है, उलटीकेवास्ते अफीमके जहरमें लिखे उससेंकै कराणा उलटी आपसेंही होणे लगे तो उलटीकी दवा देणी नहीं (२ पालण)-उलटी भये पीछै जहर मिटाणेकू थोडे२ मिनटोसें दो दो प्याले दूध अथवा दूध और वरफ मिलाकर देणा वरफ चुसाणा दूध तथा चूनेका पाणी सम वजन मिलाकर पिलाणा अथवा चूनेका पाणी सालिड तेल देते रहणा (दाह मिटाणेकू)-ठढा जल वरफ नींवूका अथवा नारगीका सरवत और पाणी सोडावाटर साबू दाणेकी काजी गूदका पाणी वगेरे ठढी चीजें एरफेरसे देते रहणा घी पिलाणा ४ आकसी मिटाणे सल्फ्युरिक इथर तथा लाडेनमदश २ वूद थोडे जलमें मिलाकर पिलाणा और जरूर पडे तो तीनचार घटेसें फेर देणा ५ ईस पूगल दहीं गुलाव जल और वेदाणा पिलाणा ६ मखण और मिरच ७ कत्थेका पाणी ८ चदलियेका अथवा नींवका रस ९ सहजणेकी छालका रश और दूध १० घी अथवा दही पिलाकरकै कराणी.

(हरताल) ये दोनों सोमलका खार है इसवास्ते इनोका गुण.

(मनसिल) भी सोमल जेसा ही है इसवास्ते इलाज भी सोमल जेमा ही करणा १ चूनेका पाणी और तेल पिलाणा२ उलटीकी दवा देणी ३ राई दूध आटा और पाणी

(पारा)–(मर्क्युरि) पारा अपणे निजस्वरूपमें जहरी नहीं है फक्त पारा खाणेमें आवे तो शरीरमें नहीं मिलकर कुछभी इजाया असर करे विगर दस्तके रस्ते निकल जाता है पारेमे खाणके दोषसें सीसा जसद कथीर वगेरे धातुओंका पारा सत है इस वास्ते उन २ चीजोंका मिलाप है वोही सात कचुकीरूप सात जहर है सो दुसरे भाग-में हम सोधन लिखा है उस मुजब शुद्ध हो जाता है पारा हींगलूमेंसें निकाला भया शुद्ध सब रसोमे सामान्य तोर डालणेमें विगाड नहीं करता अशुद्ध पारेकी सब बनावटे जहरी होती है जेसें रस कपूर हीगलू रस सींदूर क्यालोमेल व्हाइट प्रेसिपिटट इनोमें रस कपूर वडा जहर है उसके जहरसें मू गला अन्न नल और होजरीमें दाह तथा चांदे गिरते हैं उलटी और दस्त होता है दस्तमें खून गिरता है पेटमें दरद होकर पेट फूल जाता है मूं और मसूढा फूल जाता है लाले झरती है आखर खेंचताण होकर मर जाता है (इलाज)–१ दूधमें गहूका आटा पकाकर देणा २ दूध गूदका पाणी अलशीकीचा तथा गहूके आटेका पटोलिया सब मिलाकर पिलाणा ३ लोहकी पुराणी काटी गुंदके पाणीमें पिलाणा इससे उलटी होणे देणी और एरंडी तेलका जुलाब देणा ४ बबूलके छालके पाणीका अथवा फिटकडीके कुरले करणा ५ डाकतर लोक मुरगीके इंडोंके सुपेद छिलके ठंडे पाणीके सग मिलाकर ऊपरा ऊपरी पिलाकर उलटी कराया करते हैं ६ और अछा इलाज रस कपूरके जहर ऊतारणेका वतलाते हैं लेकिन् ये इलाज आर्य लोकोका नहीं छिलके मुसलमीनोंके महोलेमे पडे मिलते हैं ६ जादा घी पिलाकर उलटी कराणी ७ उलटी कराये पीछे मांजू फलका अथवा आंवलेका चूर्ण गरम पाणीसें पिलाणा ८ आंवलीकू जलमें उकाल कुरले कराणा ९ नागरवेलके रसमें गंधक देणा १० भों पाथरी (छपरी) अथवा करेलीकी जडका रस पिलाणा.

(नीलाथोथा)–(तांबेका जहर)–(ब्ल्युविट्रीओल)–(जगाल)–ये भी तांबे-का जहर है कहांइ दगेसे कहांइ भूलसे ये काट खाणेमे आ जाता है काट चढे तांबेके वरतणमे खटाईदार चीज पकणेसे जगालका जहर आता है (लक्षण)–उलटी पेटमें दरद दस्त तथा किसी वखत खेंचताण होकर मरभी जाता है (इलाज)–पारेके जहर मुजब उलटी देकर जहर निकाल डालणा २ दूध पाणी गहूका आटा पिलाणा ३ डाक-तर इडेके छिलके पिलाते है ४ नींबूका रश तथा मिश्री ५ कत्थेका पाणी.

(शीसा)–(शुगरलेड)–(चिन्ह)–मूमें मीठासवाला धातूका स्वाद गलेमे अम लाट उलटी किसी वख्त खूनकी उलटी दस्त वध पेटमें चूक जोरसें हाथ पैरमें खेंच

अथवा अंग झल जाय (इलाज)-१ एप्समसोल्ट पाणीमें मिलाकर पिलाणा उलटी भये पीछे २ गूदका पाणी दूध चावलोंकी घाट और दुसरी चिकणी चीजें पिलाणी.

(काच)-काचका महींन बुरादा पेटमें जाता है तो जहर जैसा विकार करता है-(लक्षण) कै दस्त पेटपर आफरा दरद बुखार प्यास दाह-(इलाज) १ दही दूध अथवा अबली खूब पिलाकर उलटी कराणी २ नवसादर अथवा गोपीचदन पिलाणा

(अफीम)-(ओपियम)-(अफीमके जहरके चिन्ह)-चकर आवे शिर फिरे शिरमे दर्द होय नसेमें झोका खाय बतलाणेसे बराबर सुणे नहीं और पीछे आधी वेहोसीमें आवै वहोत जोरसे बतलाणेसें हिलाणेसें या मारणेसें जरा हुसियारीमें आता है, फेर पीछे वेह्रोस हो जाता है फेर किसीभी तरे हुसियारी नही आती श्वास धीरे चलता है छाती धडकती नहीं आख मुच जाती है आखकू उघाडके देखणेसें कीकी छोटी सूईके अणी जेसी भई मालम देती है पसीना आता है होठ मू काला पडता है दस्त कब्ज जी घभराकरकै होय किसी वखत लकवा या खेंचताणभी किसीके होता है जादा वजनमे खाणेसें उसकी जहरी असर कमसेकम आधे घटेमें मालम देती है निराहार पेट खाणेसें जलदी असरकरता है खाकर नींद लेणेसे जल्दी असर करता है फिरणेसे कम असर करता है कमसे कम ५ ग्रेण याने दोयसे तीन रत्ती खाणेसें सोफीवाजे वखत मर जाता है-(इलाज)-अफीमका जहर उतारणेकू दो रस्ते हैं एक तो इसतरेकी खाये पीछै जल्दी इलाज होय तो सब पेटमें गया भया तमाम अफीम निकाल डालणा अगर जो कुछ देरी भई होय तो जहरका थोडा या वहोत असर खूनमें मिल गया होय तो अफीमके जहरकु मिटावे एसी विरुद्ध तासीरकी दवा देणी १ पेटमेंसे जहर निकालणेकू डाकटरोकी सल्लासें-(स्टम क्यप)-का उपयोग करणा पप हाजर नहीं होय तो इसतरे उलटी कराणी २ गलेमे पींछा फेरकर उलटी कराणी उलटी लाणेवाली दवायें देणी ३ सल्फेट ओफ झिंक-हाजर होय तो २० ग्रेण गरम पाणीमें मिलाकर पिला देणा वो हाजर नहीं होय तो ४ राई १ सें दो चमचा थोडे जलमें मिला पिलाणा-५ इपीकाक्युआन्हा पाउडर, १५ ग्रेण गरम पाणीमें मिलाकर पिलाणा उलटीकी दरेक दवापर गरम पाणी अथवा निमकका पाणी जादा पिलाणेसे उलटीकू जादा उत्तेजन मिलता है जो उलटीसे सब जहर बाहर निकल पडेतो रोगी तदन अच्छा हो जाता है और दुसरे किसीभी इलाजकी गरज नही रहती उलटी भये बाद भी जहरके ऊपर लिखे चिन्ह जो कभी कायम रहे तो समझणाके वदनमे जहर घुस गया है एसी हालतमें रोगीकू जागते रखणेका इलाज करणा, (जाग्रत करणेकू) ६ ठढे पाणीका छडका आखोपर खूब मारणा शिरपर ठढा पाणी डालणा पुकारके जगाणा हिलाणा चुटिये फाडणा हरतरे जागते रखणा नींद लगणे देणी नहीं बिछोणेमें पडणे देणाही नहीं ७

काफी पाव२ घंटेसे पिलाते जाणा जोरोगी लिवरीज जाय और नाडी वैठ जाय ८ तोला-इकर एमोनीवूद १० अथवा ९ सालवो लेटाइल ३० से ४० वूद थोडे जलमें मिलाकर देणा अथवा १० डाकतर लोक जलमें ब्रांडी मिलाकर देकर पांवपर गरम पाणीके बाटलीका शेक कराते हैं, लाडेनम तथा मोरफीया ये अफीमकीही बनावटें हैं, और दवाकीतरे देणेमें आवे तो जादा वजनमें जहरी असर करता है, ११ फिटकडी तथा कपासियेका चूर्ण पिलाणा १२ हींग और पाणी अथवा अरीठेका पाणी पिलाणा.

(जहरकुचीला)–(नक्सवोमिका)–अपणे बजारमें कुचीलेका फल मिलता है, देशी वैद्य इसकी गोली चावल वगेरे दिया करते हैं, अंग्रेजीमें मुख्य इसकी दो वणावट है, (स्ट्रीकनीया)-(तथा नक्सवोमिका)–पहली बनावट बहोत जहरी है, (कुची-लेके जहरके चिन्ह)–ये जहरके सब चिन्ह धनुर्वातके मिलते हैं, खाये पीछै थोडे मिनटोमे या घंटे भरमें जहरका असर दिखाता है, नसोमे खेंचाताण होता है, (इलाज) उलटी और जुलाबकी दवा देणी २ नसोंकूं ढीली करणेवाली दवा देणी जेसें अफीम भीमसेनी या आरती कपूर क्लोरोफोर्म और क्लोरलहाइड्रेट ३ एक रुमालपर ॥ ड्राम क्लोरोफोर्म छिडक कर दरदीके नाकसे दो इंच अलग धरणा और खेंचाताण होय तहां-तक वेर२ इस मुजब करणा ४ महीन कूटा भया कोयला चार कोल पाणीमे वेर २ देणा उसकी पिचकारी मारणी ५ जादा घी पिलाकर उलटी करानी.

(धतूरा)–(स्टेमोनियम)–धतूरेका सब दरखत जहरी है, उसमें बीज जादा है, थोडे धतूरेसें जहर चढता नहीं जादासे चढता है, (चिन्ह)–खाये पीछै आधे घंटे पीछै उसका चिन्ह सरू होता है, पहली शिरमें चक्कर आवै गलेमें शोप प्यास आंखोंकी कीकीचोडी दृष्टिका कितनेक अशमें नाश होता है, आंख तथा चहरा लाल होता है, बड बडाता है, कपडेमेसें कुछ सभालता होय अथवा हवामेंसे कोइ पदार्थ पकडता होय एसा हाथ चाला करता है, आखर वेहोसी आती है, नाडी जल्द होती है, और जहर बहोत चढा होय तो वदन ठंढा होकर मर जाता है, हाथके चाले आंखोकी कीकीचोडी येउस जहरके खास चिन्ह है, (इलाज)–उलटीकी दवा देकर उलटी कराणी तथा दस्तकी दवा देणी २ आधे२ घंटेसें तेज काफी पिलाणी नींद लेणे देणी नहीं ३ समुद्र फल गोमूत्रमें पिलाणा ४ तेल गरम जलमें पिलाणा ५ भात रांधा भया दही घोडावज डालकर पिलाणा

(वछनाग)–(एकोनाइट) ये बहोत तेज जहर है, ये दरखतकी जड है, वछनागकूं मारवाडमें सींगीमोहरा कहते है रगसे काला होता है, पूरब जिल्लेमे पीला होता है, वो बहोत जहरी है, (इसके जहरके चिन्ह)–मू जीभ तथा होठोंपर चमचमाट झणझणाट जलण मूमेंसे पाणी छूटे उलटी होय शरीरमें कांपणी आखोंमें अंधारी कानोमें घूघाट

शरीर शून्य होजाता है, दरदी बेहोस हो जाता है, श्वास धीरे चलता है, नाडी नाताकत और छोटी होजाती है, श्वासकी हवा ठंढी और हाथ पांव ठंढा पडता है, आखर हिचकेके साथ मर जाता है, (इलाज)–१ उलटीका इलाज करणा २ पीछे आधी २ घंटेसे तेज काफी पिलाणी साबू तथा पाणीकी पिचकारी मारकर पेट साफ कराणा.

(भांग)-(गांजा) (हेम्प)–ये दोनों एकही दरखतकी पैदाश है, भांग उसके पत्ते हैं, गांजा उसका फूल है, इस मुलकवाले गांजेकू चिलममें पीते हैं, भांग घोटकर पीते हैं, इसके सिवाय चंडस माजम ये सब इसकी बनावटे हैं, चरस सुलफा ये इस दरखतका रस है, माजम इसके घीसें पाक बणता है, (जहरी चिन्ह)–आंख और चहरा लाल होजाता है, तोफान करता है, हसता है, गालिये देता है, मारणे दोडता है, पागल जैसा अहवाल होता है, (इलाज)–उलटी कराणी दस्तकी दवा देणी ३ शरीरपर ठंढे पाणीकी धार देणी ४ आमोनिया सुंघाणी ५ सोणे देणा ५ दही अथवा छाछ पाणी अथवा छाछ चावल खिलाणा

(कणेर)–ये फूलका दरखत जहरी है, जांनवर खाते नहीं है, जडमे जादा जहर है, वो दवामेंभी काम आती है, (जहरके चिन्ह)–उलटी चक्कर नसा बेहोसी खेंचाताण नाडी नाताकत शीतांग श्वासका रुकणा और मौत (इलाज)–माखणके ऊपरका जल पिलाणा २ दूधमे अथवा दहीमें मिश्री मिलाकर पिलाणा,

(बहेडा)–बहेडेके अंदरकी गुठलीका बीज जहरी है, जादा खाणेमें आवे तो जहरके चिन्ह मालम देते है, वो चिन्ह अफीममे कुछ मिलते भये है, (इलाज)–उलटी तथा दस्तकी दवा देकर जहरकु निकाल डालणा बदनमे गरमी लाणे दवा देणी,

(कडवी बिदाम)–बिदाम जो खाते हैं, उसमें कोइ २ कडवी निकलती है, वो जहरी है, (इलाज)–पीठपर तथा मूपर ठंढा पाणी छांटणा हिराकसी टींकचर ओफ स्टील और पाणी उनमान मुजब डाकतर लोक पिलाते है,

(तमाखू)–तमाखू दांतोंमें रगडणेसे खाणेसें चिलममे पीणेसें बांधणेसें बदनपर रगडणेसें जादा उपयोग होणेमें हरतरे जहरी असर जताता है, जिसकू मावरा नहीं होय उसकू थोडेमें शिरमें चक्कर आता है, (जहरके चिन्ह)–नाडी जरा जलद चले चक्कर आके उलटी होय पीछे नाडी मंद पडे बदन तूटे नाताकती मालम दे शरीर ढीला पडे रक्ताशयकी अगर क्रिया बंध होजाय तो किसी वखत मरभी जाता है, इसका पुराणे जहरी असरसें केइ मरभी चुके हैं, लेकिन् बेकूब लोक इसकू जहरी नहीं समझते, (इलाज)–उलटी कराणी एरंड तेलका जुलाब देणा मांजू फलका काथ अथवा टेनिक एसिड पिलाणा,

(सुपारी)–नसा चढता है, घी पीणा मीश्री पीणा ठंढा पाणी पीणा,

(जमालगोटा)–इलायची दहीमें पिलाणा, २ धाणा दहीमें मिश्री डाल पिलाणा, ३ दही चावल मिश्री घी डाल खिलाणा.

(भिलावा)–भिलावा खाणेसें अथवा शरीरपर लग जाणेसें खुजली दाह और पाणी टपकणे लग जाता है, बाहरके इलाजोंसे मिटता हैं, १ सरसू चंदलिया और मखणका लेप २ मखण तिल तथा दूधका लेप ३ खोपरेका तेल लगाणा ४ अवलीके पत्ते बाफके बांधणा ५ खोपरा तिल घी खाणा इत्यादि भिलावा सोधन प्रकरणमेंभी केइ उतार देखणा.

(चिरमी)–१ चदलियेका रस मिश्री डालकर पिलाणा घी पीलाणा.

(आक)–आकका दूध इसकेवास्ते अमलीके पत्ते पीस लेप करणा और इसका दूध पेटमें गया होय तो घी पिलाणा.

(थोर)–घी पीणा तथा घी लगाणा मिश्री ठंढे जलमें पीणा.

(सराप)–घी बूरा चटाणा सिरपर ठडा पाणी डालणा ३ सुपेद पेठेके रसमें दही धाणा मिश्री डाल पिलाणा ५ ककडी खिलाणी

(बेलाडोना)–(चिन्ह)–मू तथा गलेमें शोप प्यास गलेका रुकणा बहोत तोफान करे हसे आंखकी कीकीवडी होय चहरा लाल तथा सूजा भया नाडी धीरी मीट आवे नीचेका अग झिल जाय हिचका और मरण मरे पीछे सब बदन सूज जाता है, नाक कान तथा मूंमेसे खून चलता है.

(इलाज)–उलटी कराणा २ अफीम बेलाडोणेका उतार है, बेलाडोणेका जहर उतार डालता है, इसवास्ते एक औंस पाणीमें ॥ ड्राम अफीमका अर्क देणा, जहांतक जहरका असर मिटे नहीं उहांतक दश२ मिन्टसे देणा काफी वेर२ पिलाणा अफीम नहीं मिले तो

(हाइड्रोस्यानिक एसिड)–बडा सख्त जहर है, वो दवामें वापरते हैं, लेकिन् जो कभी गफलतसें जादा प्रमाण उपरात देणेमें आवे तो तत्काल जहर चढता है, इलाज करणेभी वखत नहीं मिलता (इलाज)–रोगीकू सुघाणे नाक आगे कारबोनेट ओफ अमोनिया धरणा तथा एक प्याला पाणीमे थोडा मिलाकर पिलाणा २ पीठपर बरफ तथा बरफ जैसा ठढा पाणी डालणा मू छातीपर छाटणा इतनेसे जहरकी शांति नही होय तो सल्फेट ओफ आयर्न (हीराकशी) १० ग्रेण एक औंस पाणी और १ ड्राम टिंकचर ओफ स्टील तीनोंको मिलाकर पिलाणा ४ अथवा ऊपरकी मिलावटोके संग दो औंस पाणीमें पिघलाया भया कारबोनेट ओफ सोडा २० ग्रेण मिलाकर देणा

(फोसफरस)–इस मुल्कमें फोसफरसके जहरका बणाव बहोतही कम

तोभी दियासलाई घर२में वापरणमें आती है, उसके आगे फोसफरस होता है, इसवास्ते वो छोटे बच्चोके हाथमें नहीं आवै इसकी सावधानी रखणी.

(इलाज)–१ उलटी देणी २ मेग्निस्या १ भाग और क्लोराइन वोटर ८ भाग उसमेंसें एकेक चिमचा दश२ मिन्टसे देणा.

(ओसडझ)–एसेटिक एसिड स्ट्रांग विनीगर (सरका) साइट्रिक एसिड म्युरियाटिक टार्टरिक नाइट्रिक ओग्झेलिक सल्फ्युरिक वगेरे एसिड है, और ये सब दाह करणेवाले जहर है, (इलाज)–१ मेग्निस्या पाणीके सग देणा २ गरम पाणीमें चाक मिलाकर पिलाणा ३ सोडा पाणीमें मिलाकर पिलाणा ४ कारवोलिक एसिडके उतार वास्ते साकेरेट ओफ लाइम देणा ५ नींबूका सरबत देणा.

(आल्कलीझ)–आमोनिया पोटाश सोडा सालवो लेटाइल ये सब आल्कलीझ है, (इलाज)–१ आधा पाणी आधा सिरका २ लेमोनेड अथवा नींबूका रस ३ तेल.

(एन्टीमनी)–(टार्टरइमेटिक)–(इलाज)–कत्था अथवा कत्थेका अर्क पिलाणा २ मेग्निस्या ३ टेनिक एसिड तथा मांजफलका पाणी

(झिंक)–(सल्फेट ओफ) (इलाज)–१ दूध २ सोडा मेग्निस्या

(आयर्न)–(सल्फेट ओफ आयर्न) (इलाज)–सोडा

(सिल्वर) (नाइट्रिक सिल्वर)–कोस्टिक–सेंभरका निमक पाणीमें मिलाकर खूब पीणा उलटी करणा

(सापका जहर)·(इलाज)–१ साप काटे जब झट डकके ऊपरके भागमें ताणकर डोरी बाधणा पीछे २ डककू चूस२के थूक डालते जाणा अथवा काटणे लायक जगे होय तो काट डालणा ३ जो वेसा नहीं बणे तो चक्कूसे डककू कुचर कर खून निकाल डालणा और उसपर गुल देणा अथवा नाइट्रिक या कारवोलिक एसिड धरणा ४ बदूकका दारू उस डकपर धरके दियासलाइसे जला देणा ५ सख्तमें सख्त जो दवा हाजर होय सो पिलाणा डाकटर ब्रांडी पिलाते है, ६ सालनोलेटाइल आधा २ औंस पाव २ घटेसे देते जाणा ७ इसीतरे जलमें मिलाकर डाकटर स्पिरिट देते है, ८ होजरी तथा रक्ताशयपर राईका पलाष्टर मारणा अथवा टरपेन्टाइनमें डुबाया भया कपडा धरणा ९ रोगीकू किसीभीतरे नींद नहीं लेणे देणी १० आखर जखमपर पोल्टिस मारणी ११ सुपेद कणेर सुपेद चिरमी आक कडवा तूंबा इनोमेंसे जो मिले उसकू जलमे घोटकर पिलाणा १२ टकण अथवा फिटकडीका पाणी पिलाणा १३ घी सहत मखण पीपर आदा मिरच और सींधानिमक एकठाकर खिलाणा

(वीछुका जहर) (इलाज)–१ अफीम तथा ईपीकाक्युआन्हा पाउडर स वजन दोनो नहीं मिले तो ईपीकाक्युआन्हाकी पोटिस कर डक ऊपर बांधणा २

रिक एसिड पाणीमें मिले इतने मिलाकर उसमें डूबाया भया कपडा डंकपर धरणा ३ वीनीगर याने सरकता पोता धरणा ४ निमक और पाणीका पोता धरणा ५ दस्त साफ लाणे जुलावकी दवा देणी ६ आकके पत्ते तथा राई पीसके लेप करणा ७ वछनाग जमालगोटा नवसादर तथा हरताल नीलाथोथा दही इसमेंसे हरकोइका लेप करणा ८ धतूरेके पत्तोंका रस लगाणा आंघी झाडेकी जड पीसकर लगाणा और एक जड चवाणा काला वीछु और खारमें पैदा भया विछु वहोत जहरी होता है, उसके डंकपर आकके पत्ते वछनाग तथा राईका लेप करणा.

(चूहेका जहर) जहरी उंदर काटणेसें वदन फूट जाता है वात रक्त जैसे चठे होते है, दाह होता है, (इलाज)-१ धूमस (धूंआ) मजीठ हलदी सींधेनिमकका लेप करणा २ पारा गंधक कपूर सरसूं आकके दूधमें लेप करणा ३ त्रिकटु नींबोली सीधा निमक इनोंका चूर्ण मिश्री सहतमें पिलाणा ४ उंदर कर्णीका रश १।२। तोला पिलाणा वदनके मसलणा ५ सोनामुखीका वहोत दिनोंतक सेवन करणा.

(कुत्तेका जहर)-(हडकवायु)–इसका इलाज सरत वधीसें कर सके एसा जादा देखणेमें नहीं आया जो कुछ विद्वानोने लिखे है उसकूं अजमाणा चहिये १ डककू उसी वखत जला देणा २ गुड तेल आकके दूधका लेप ३ शीतल मिरच (अकोलका) क्वाथ घी डालकर पीलाणा ४ घोडेकी लीदका २ लींडे निचोड ३।४ मिरच डाल पिलाणा ५ भूंपथारीका रस या क्वाथ घी डालके पिलाणा ६ कूकड वेलका रस वहोत दस्त उलटी कराकर जीव जो जहरी पैदा होते हैं, उनोंकों निकाल डालता है, ७ जहर कुचीला हडकवायुके पुराणे विकारकूं निकाल डालता है, इसवास्ते इस वेमारीसे वचे भये रोगीनें कितनेक महींनोतक लेते जाणा विलकुल मिटा देगा पतवाणे भये इलाज काले गूलरकी जड धतूरेके फल चावलके धोये पाणीसे देणा धोवणमें पीसणा ९ करजके वीज हमेस वढाके खाणा निश्चै जहर मिटेगा १० आंधी झाडेकी जड पीस १ तोले भर हमेस सहतमें चटाणा ११ कवार पठेपर सींधानिमक डाल वाधना तीन दिनमें जहर नाश.

(मधुमखी)–(भमरा)–(टांटिया)–१ कूंचीकी नली डकपर दवा देणेसे डक ऊपर आकर जहरी पीप उसमेंसे निकल जायगा २ सालवोलेटाइल विनीगर तथा पाणी अथवा कोलनवाटर लगाणा ३ चजर अथवा तमाखूकू भिगाकर डकपर मसलणा ४ मूके अंदर डक भया होयतो मूमें वरफ रखणा ५ और वाहर जोक लगाणी भमरेके घरकी मट्टी तथा त्रिफलाका लेप करणा भमरा भमरी टांटिये इन सवकीडोंकै डकपर ठंढे इलाज और ठंढे पाणीकी धार अच्छी है,

(माकड)–माकडके डंकपर सरका तथा पाणी चुपडणा जो खुरसी वींच पलंगके सांधोंमें टरपेन्टाइन लगादे तो फेर माकड पैदा होयभी नही.

(चींचड)–चींचडका डक जरा काला लाल रंगका होता है, और आसपासकी जगे जादा फीकी पडी भई होती है, कितनेक बुखार एसे होते हैं, जिसमें चमडी उपस फुट जाती है, लेकिन् चींचडके जहरकू ऊपर लिखे मुजब पहचाणना चहिये नहीं तो दोनोके सामान्य लक्षण एक होणेसे भूल होणा ताजब नहीं, (इलाज)–सिरका और जल मसलणा

(जवा)–ये मारवाडके गांमोमें जहां ढोर बैठते हैं उस जगे जमीनमे घुसकर रहते हैं, काटे उस वखत मालम नहीं देता फेर जरा२ खुजाल आती है, तब जो उसकू विगर खून पूरा पिये उतार दिया जावे तो वडी दाह और खुजली लाल२ वदन हो जाता है, चार पाईपर चढते नहीं, (इलाज)–सिरका पाणी गऊका गोवर या घी मसलणा (पिशु (सुरले) दुक्करकाई इत्यादि सब छोटे जहरी कीडे काटणसें घी और गोबर फायदा करता है, सांपके मलमूत्रसे या उसके मरे कलेवरसें जो कीडे पैदा होते हैं वो वडे जहरी काटणेसे बाजे वखत अदमी मर जाता हैं, दाह तो निश्चैही करता है, घी दूध गोवर प्रायें वहोतसे जहरोंका उतार मसलणे और पिलाणेसे जो प्राणी श्रीकलिकुड पार्श्वनाथायनमः एसा मनमें जाप करते रहेगा उसकू अचितपणे जहर जगमका समागम नहीं होगा ये वडी अदभुत महिमा है, जैसे दादा श्रीजिनदत्तसूरि एसा नाम लेणेवालेकों विजलीका भय नहीं होता फेर जगलमें उतर भये प्राणियोनें अपणी रक्षा-वास्ते नमि जिनदत्त चले दिसावरा सदगुरु वाचा बंध चोर विछु सर्प नाहर चारु झाडा बंध २१ वेर गुण मनवचन काया थिर करके फेर तीन ताली वजा देणा पूर्वोक्त चीजोंसे भय नहीं होगा आर्य वेद या सिद्धात ये सब आगम सफल आस्तिकोकेवास्ते तत्काल है, नास्तिकोके तो अपणे निज पितामेंभी सदेह होता है कोन जाणे यही था वा अन्य मत्रविद्या सर्व सत्य है, कर्ता क्रियाकी भूल है, अक्षरोमें अनत शक्ति है, हस २ एसा नामोच्चार करते२ भये चार पहरमें साप खाया भया एक ब्राम्हणीका लडका जहरसें वच गया असलमें उस लडकेका नाम हस था उसकी माने मोहकी विकलतासे इस नामका उच्चारण और हस्तपास ये कुदरत कांम दे गई अभी देती है, ये व्याख्या महावीर भगवानके विद्यमान समयमें वणाजो वसुदेवहिंड ग्रथ उसमे है, जिन महाज्ञानियोकू अक्षर मिलाणेकी कुदरत याद है, उनोंने रचाजो अक्षर विन्यास उसमें अपर चलशक्ति है, नतु सर्वत्र अमलेसर विमलेसर झर२ स्वाहा इस मत्रसे पीलिया चला जाता है, इत्यादि अनेक उपगारिक मत्र मौजूद है, सब ग्रथ गौरवके भयसें नहीं लिख सकते जैसे पदार्थोंके मिलणेसे अनेक चमत्कार विजली गैस तार फोनोग्राफ इत्यादि



कुदरते होणा प्रत्यक्ष है, एसेही अक्षरोकी मिलावट मणी मंत्र और औषधी तीनोंमें अत्यंत कुदरत है, (प्रश्न)–पदार्थोंकी शक्ति प्रत्यक्ष देखते है, ऐसी अक्षरोंकी नही दिखती, (उत्तर)–अक्षरोंकीभी शक्ति प्रगट देखते हैं, जैसें कोई शत्रु मार २ करता आ रहा है, उसकू मीठे वचनोंसें नरमाईके सग आजीजी अक्षरोसे किया जावे शांत हो जाता है, अक्षरोसें मित्राई अक्षरोसें दुस्मनी हाथीकूं अगड धत्त इत्यादि अक्षरोसें समझाया जाता है, वुचकारणा छिच कारणा इत्यादि अक्षरों द्वारा सर्व संसारमें प्रत्यक्ष फल असक्ष तरे सिद्ध है, थोडेसे विचारो एक कुत्ता वीस कुत्तोसें मुकावला करता है, लग २ इत्यादि अक्षर कहणेसे दीर्घ दृष्टी दो अचिंत्य कुदरत अक्षरोंकी मिलावटमें वा एकमें है या नहीं नहीं तो शास्त्रोंपरयकीन केसे लाते हो वोभी सच अक्षर है, झूठी और सच्ची अक्षरोंकी दोनोतरे मिलावट होती है, वचनात्प्रवृत्ति वचनात् निवृत्ति है, लोकोंको यथार्थ क्रिया सफल मंत्रभी पदार्थोंकी तरे फायदा देता है, पदार्थभी मिलानेवाले फायदा दिखाते हैं, एसेंही अक्षर मंत्रवाले दिखा सकते है, वहोत पदार्थोंका मिलाणा उसमें फायदा पश्चिमी विद्वानोनें इस वखत दिखलाया आगू वोभी नहीं जाणते थे, इहांवालेभी कालांतरसे भूल गये थे और अभीभी असक्ष वाते इन पदार्थोंसें होणेवाले हैं, वो प्रगट नहीं है, रत्नोंका वण जाणा मरे भये जिंदे दिखणा असलमें जिंदे नहीं क्योंके सत्ता ईस पीठ इंद्र जालमेसे सतरे पीठ पश्चिमी विद्वानोके हाथ लगे हैं उसमेंसें अभी वहोतोंका अजमाणा और नई२ कल्पना बाकी है, कुछ आश्चर्य नहीं कभी प्रगट कभी लुप्त कालका धर्म है, हमारे वडेरे अक्षरोंकी शक्तिमें वडे वाकवकारये आजकाल हमलोक तिरोभावमें हैं, लेकिन् सर्वथा नास्ति नहीं साधना उद्यम वडी चीज है.

(मछर)–(डांस)–(डकी)–ये तीनो डक मारते हैं, उस डंकमें दाह करणे-वाली रस्सी पीपकू डाल जाते हैं) उनोके डकमें छोटा करडा सुपेद दाफड उठ जाता है, अगर किसी अदमीका खून विगडा भया होता है तो उस जगे सोजा पकणा किसी वखत पीप पडके जखम हो जाता है, (इलाज)–पाणी अथवा पाणी और सिरका मसलणा, (इलाज विछुउ तारणेका) जगली गोवरी जलाणेसें जव धूआ निकल चूके तव आकके दूधमे वुझा देणा वाद सूकाकर पीस रख देणा एक दो चिमठी खेचकर तमाखूकी तरे सुघाणेसे पांच मिनटमें छींके आकर विछू उतर जाता है, विछू काटणेकी जगे वाधा होय तो खोला देणा छींके वध करणी होय तो घी सुघाणा हमने केइ जगे अजमाया है,

किरण १४ मी.

दृढीकरण धातुपुष्टस्तंभन इलाज संकोचन.

जो दवाइयें वदनके सातू धातुओकों अच्छीतरे पुष्टिकर अवयवोकों मजवूत करे वो

पौष्टिक औषधी कहलाती है, एसी वहोत दवाइयां है, उसमेंसे केइयक (रसायण) दवा देखो पृष्ट ३१८) में कितनेक वाजीकर (देखो पृष्ट ३१८) में और कितनेक फक्त धातू वढाणेवाली दवायें जो दवा रसायण और वाजीकर है वो धातुपुष्ट तो हैही इस के सिवाय कितनेक दुसरे वर्ग वीर्य स्तभक दवायोका है, जिसकू लोक धातु पुष्टि समझके खाते हे, लेकिन् निश्चैमें देखा जाय तो वेसी दवामे फायदा नहीं वाजीकर दवायोंकी तरे दवायेंभी कामकू पैदा करती है, और वीर्यकू रोकके रखती है, लेकिन् ये गुण थोडी देरका होणेसें आखरकु नुकशान करती है इस दवायोमे सची पुष्टि और पोषण देणेका गुण नहीं है, वलके जहांतक इस दवायोका दो चार पहर अमल रहता है, उहांतक तो चेतन खूबी और अमल उतरे पीछे वदनकुं उलटा ठंढा सुस्त और नाताकत वणा देती है, एसी दवा जादें खाणेलायक नहीं हे जो अदमी अपणे वदनकूं निरोग रखणेकाज्ञान धराते होय उनोने शोखके वास्तेभी एसी स्तभक दवा लेणेकी आज्ञा हम नहीं दे सकते नाताकत कम अकल लोक एसी वीर्य स्तभक दवायोंकी वहोत खोज किया करते हे, कोई देणेवाला मिलाके झटले लेते हैं, एसी नुकशांन वाली दवायोके फदमे फसके वहोतसे अदमी खराव हो चूके है तोभी एसे२ आदमियोके सतोष दिल जमीके वास्ते इस किरणमें आखर एसे २ वीर्यस्तभक इलाज लिखे है, सो किसी वखत लेणा पडे तो नुकशांन नही करे

(अमृतवटी)—ये सव चीजोसें अवल दरजेकी रसायण वाजीकर और धातु पौष्टिक दवा है, रसायण शब्द फक्त मारी भई धातूओकोही मत समझना वनसपतीयोमेंभी अनेक चीजें रसायणका गुण धराती है, जैसे गिलोय रुद्रवती गुग्गल हरडे आंवले जो जीननीय गणकी दवा मोलेठी वगेरे सव रसायण सज्ञक है, निघटमें देखणा आजकलकी वेकूव दुनिया अशुद्ध पारे सेंवणे रस कपूरहीकों रसायण समझते है,उससे विगडे भये रोगीकू देख कहते हे वैद्यजी हमकूं रसायण मत देणा हम हरगिज नहीं लेंगें रसायण शब्दका मायना नहीं समझते इसवास्ते इस शब्दका अर्थ लिखते हैं (जो दवा शरीरके सातों धातुओंको वहोत मुदत तक ताकत कायम रखे बुढापा और रोगोको दूर करे उसकू रसायण कहते हैं, जीवन नाम करके प्रसिद्ध जडी वूटीसें वणी दवा अहम्मदावादसें वैद्य जटाशकर रसायण वेचते हैं अपणे मासिक पत्रमें वहोत तारीफ लिखते हे, विद्व-द्वरोंके उपयोगसें वणाइ भई सव दवाये फायदा मद होती हे कभी नुकशान नही करती जिसकी ऊमर नहीं उसकू अमृतभी जहर हो जाता है, जैसे नारकीके जीवोंको कोइ देवता पूर्व भवके प्रेमसें अमृत लेजाके खिलावे तोभी उसकू हालाहल जहरवत् मालम दे इस दृष्टांत मुजव जाणना

(दूध)—(पुष्ट)—और वाजीकर वस्तू है, तेज अग्निवालेनें रढाय कर पीणा और

मध्यम तथा मद अग्निवालेनें पांच मिन्ट फक्त गरम कर थोडा मीठा डाल पीणा क्योंके जादा मीठा दूधका जोर कम कर देता है, विदाम पिस्ता तथा दुसरीभी पौष्टिक दवायें डाल करभी पिये जाता है दूधमें केशर जायफल वगेरे स्तंभक दवायें डालणेसें वीर्यकू स्तभन करता है, लेकिन् दस्तकी कब्जी करता है, और एसी दवायोंसे आखरमें नुकशांन है, दूधसे वीर्य जल्दी पैदा होता है, दो घंटेमें प्राये हजम हो जाता है, वीर्यकी कमी वालेने दूध पीणेका मावरा रखणा २ गऊके गरम करे भये दूधमें घी बूरा डालकर पीणा रोगी जानवरका दूध पीणा नहीं जो जादा पढे व्याख्यानादि करे वृद्ध बालक दूध पीणे लायक रोगी एसे त्यागी आत्मार्थी साधूकुंभी दूध पीणेका हुकम सूत्रोंमें है, स्त्रियोंका रति प्रमोदमें मांनमर्दक दूध है.

(विदारीकद)–(भूंकोला)–इसका चूर्ण करणा घी बूरेके सग खाणा उसपर बूरा डाला भया दूध पीणा २ इसके चूर्णकूं इसकी रसकी २१ भावना देकर फेर खिलावे तो वहोत फायदा करता है, ३ विदारीकद गोखरू मुसली आंवले सींधानिमक पींपर इनोकों दूधमें बूरा डालके मिलाके पीणा,

(आंवले)–१ आंवला गोखरू गिलोय सम वजन चुर्ण घी बूरेमें चाटणेसें धातु वृद्धि और पुष्टी होती है, जिसने हथरस लोंडावाजी करणेसें नपुंसकता प्राप्त करी है, वोभी मिटती है, २ आंवलेके चूर्णको आंवलेकी रसकी २७ भावना देकर छाया सुकाकर उसमेंसें हमेस २ मासा चूर्ण मिश्री सग फाककर दूध पीणा वीर्य वृद्धिवाजीकर हैं, ३ आंवलेका रस घी मिलाकर पीणा ४ त्रिफलाके चूर्णमे लोहभस्म मोलेठीका चूर्ण घी तथा सहत मिला सूर्यास्त होते वखत लेणा इससे कामकी वृद्धि होती है,

(कोंचबीज)–कोंचबीजकू एक दिन गरम पाणीमें भिगाकर दूसरे दिन छिलके दूरकर सुकाणा पीछे दल कूट चूर्ण कर मिश्रीके सग फाकणा ऊपर धारोष्ण दूध पीणा २ कोंचबीज तालमखाणा अथवा बलबीजका चूर्ण मिला ऊपर मुजब पीणा ३ कोंचबीज गोखरू शतावर बलबीज तालमखाणा आंवलेका चूर्ण दूधमें पीणा सांझकू ४ कोंचबीज उडद इन दोनोको कूट दाल कर खिलाणी ।

(गोखरू)–गोखरूका चूर्ण मिश्री मिलाय फाकणा ऊपर दूध पीणा २ गोखरू सूंफ मिश्री इनोकों उकाल दोनों वखत पीणा इससे धातु गिरणा बंध होता है, ३ गोखरूका चूर्ण १ तोला सहतमें मिलाकर बकरीके दूधके संग पीणा इसतरे दो महीना पीणेसें गया पुरुषार्थ पीछा प्राप्त होता है, ४ गोखरूका चूर्ण गऊका घी मिश्री सहत सम वजन मिलाकर उसमेंसें हमेस दो तोला गऊके दूध सग पीणा,

(अहिखरा) तालमखाणा)–१ अहिखर मूसली गोखरू मिश्री गऊके दूधमें पीणा २ तालमखाणा १ तोला इलायची दाणा एक तोला सफेद मिरचका ३।७ दाणा कूट

कर छ पुडी करणी एकेक पुडी रातकू केलेमें भरके चद्रमाके उजालेमें धरणा पीछे फजरमें केलेकी छाल उतारकर केला खा जाणा इसतरे २१ दिन करणेसें धातू स्थानकी गरमी दूर होकर धात पुष्ट होता हैं मगजकी गरमी दूर होती है,

(मूसली)–सुपेद मूसली सालम कोंचबीज गोखरू शतावरी आंवलेका चूर्ण १ तो० घी तोला १ गऊके पाव दूधमे पीणा सुपेद मूसली गिलोयसत कोंचबीज गोखरू शेमलकी जड अथवा छाल आंवला मिश्री सम वजन चूर्ण ॥ रुपेभर गऊके दूधमें डालकर पीणा इससे कमरमें जादा जोर आता है नामरदी दूर होती है,

(सालम)–१ सालमका चूर्ण दूधमें उकाल थोडा बूरा डाल पीणा २ सालम धोली मूसली काली मूसली गोखरू तालमखाणा बलबीज खारक इनोका ६ मासा चूर्ण १ तोला मिश्री पाव दूधमें पीणा इससे स्वप्न दोष बध होकर धातु पुष्ट होता है, ३ सालमका पाक तथा मुरब्बा होता है, वहोत तरे इसकी वणावट है,

(शतावर)–१ दूधमें शतावर उकाल बूरा मिलाकर पीणा २ शतावर नागबला बलबीज आसगध कोंचबीज तालमखाणा गोखरू काली मूसली मोलेठी सम वजन चूर्ण चूर्ण बराबर घी घीसे चोगुणा गऊका दूध सबसे दूणी मिश्री पाक बणाकर खाणेसे काम प्रदीप्त होता है,

(ज्येष्टीमधु) मोलेठी)–एक तोला मोलेठीका चूर्ण घी सहतमें मिला फजर चाटणेसें पुरुषार्थ बढता है,

(आसगध)–१ आसगधका चूर्ण घी सहतसे चाटणा २ आसगध तथा वधायरेका चूर्ण हमेस ॥ तोला गऊके धारोंश्न दूधमे पीणा

(गिलोय)–गिलोय सर्वोत्तम रसायण है, तीनो दोषोंको मिटाणेवाली है, बदनके सब दोषोकों दूर कर बदनमे ताकत भर देती है, १ गिलोय सत्वकू दूधमें उकाल कर पीणा २ गिलोय सत्व अथवा गिलोयका चूर्ण आंवला गोखरू सम वजन चूर्ण घी मिश्री अथवा घी सहतमें हमेस चाटणेसें परम पुरुषार्थ आता है,

(गूगल) अत्यत पुष्ट है सब पौष्टिक दवायोंसे गूगलमें विशेष गुण तो ये हेकी अदमी तथा औरतके वीर्यकू सुधारकर ताकत देता है, उसकी बहोत बनावटें हैं, १ योगराज गूगल २ त्रिफला गुगल किशोर चद्रप्रभा सिंहनाद वगेरे,

(मोचरस)–१ मोचरस शेमलका गूद है, उसकी जड तो ४ कूटकर गऊके ताजे दूधमें भिगाकर रातकू फजरमे मसल छाण उसमे १ तोला मिश्री डाल ७ दिन पीणा इससें वीर्य गिरता बध होता है, २ मोचरसका चूर्ण ॥ तोला मिश्री ४ तोला पाव दूधमें मिलाकर पीणा ३ शेमलका मूल सुकाकर चूर्ण घीमें सेक गऊके दूधमें सिजाकर पीछै उसमें मिश्री बेदाणा बिदाम वगेरे डाल हमेस फजरमें खाणा धातुओंकों

सुधार मगजकूं तर करता है, ४ आधा तोला मोचरश ४ तोला मिश्री गऊके दूधमें पीणेसें वीर्य जल्दी वढता है,

(उंठकटाला)–१ इसके जडके छालका चूर्ण करना पीछे मुगलाई बेदाणा तो १ तथा मिश्री तो २ पाव पाणीमें भिगाकर फजरमें उसका लुआव कपडेसें छाण उसमें उंठकंटालेका चूर्ण ६ मासा डाल फजरमे पीणा वीर्य चढे प्रमेह मूत्रकृच्छ पेशावके शंग जाती धातू वध होती है, २ उठकटाला गोखरू कोंचवीज दूधमे उकाल कर पीना ३ उंठकंटालेके जडकी छालका चूर्ण दूधमें उकाल मिश्री डाल पीना ४ ओटींगण उंठकंटालेका वीज होता है, एसाही गुण धराता है, इसकी दूधकी पकाई खीर मिश्री डाल पीणेसें धातु पुष्ट मरदीभी करता गिरता धातू वध होता है धातु गिरणेंवाले रोगीनें खटाई हींग मिरच वगेरे गरम चीजे जादा खाणा नहीं औरतकाभी परेज रखणा.

(उडद)–उडदकी उकाली कर उसमे गऊका दूध तथा घी डाल कर पीणा २ शतावर वलबीज कोंचवीज तालमखाणा गोखरू उडद इन चीजोंका चूर्ण ॥ रुपे भर गऊक दूधकू थोडा गरम कर बूरा डाल पीणा ३ उडदके लड्डू ४ उडदकूं बूरा डाले भये दूधमें मकरोय कर धूपमें सुकाकर दाल करणी उसके वडेकर तलकर खाना काम प्रदीपक है ४ उडद जव गहूके ऊपरके छिलके दूर कर आटा करना पीछे दूधमें तथा इक्षुके रसमें मकरोय पीछे घीमें दाणा पाड चासणी बूरेकी लड्डू वणाना एक लड्डू खाकर पींपर डाल बूरा डाल गरम कर दूध पीणा ६ उडदका आटा जवका आटा तपखीर विदारी कदका चूर्ण काली मिरचका चूर्ण बूरा डाल घीमें पुडियें तल फजरमें दूधके संग खाणा.

(माल कांकणी)–१ माल कांगणीके बीज बूरा इलायची सम भाग चूर्ण ४ मासा ४ मासा एरंडीके बीजका मगज फजरमे पाणीके संग खाना इससे मगज ठंढा और आंखोकी गरमी जाती है

(महुवा)–१ महुवेकी अंदरकी छालका चूर्ण २।३ मासा हमेस फजर सांझ गऊके घी तथा सहतके संग चाटणा, पाव गऊका ताजा दूध घी बूरा डालकर गरम थोडा कर ऊपरसें पीणा काम वृद्धि करे.

(ईस पूगल)–१ ईसपूगल २ भाग इलायची दाणा १ भाग बूरा तीन भाग रातकू भिगाकर फजरमें पीणा अथवा चूर्ण फाक दूध पीणा.

(गुलवास)–१ सुपेद गुलवासकी जड गऊके दूधमें घस पीना

(प्याज) कादे)–१ सुपेद प्याजका रस सहत डालकर पीणा २ सुपेद कांदेके रशमें भिगाया भया अजवाण १ तोला घी १ तोला बूरा २ तो इनोको खाणा २१ दिन मरदमी आती है, कंदर्प भूषण पाक पाली नग्रमें नग्रसेठ साठ वर्षकी ऊमरमें सोले वर्षकी स्त्रीयक्त खाया गर्भ रहे वाद सेठ मर गया लडका भये वाद विरादरीनें दलील १२

वर्ष रखी वाद योधपुर नरेश विजैसिंह लडकेकू दोडाकर पसीना सूघा कांदेकी वदवो आई लडका असली ठहरा ये पाक कांदेका रस और मसालेसें वणता है यती वैद्यनें पुत्रकेवास्तेही वणाके दिया था,

(डाक्टरोकी ताकतवर दवा कोडलीवर आइल है) उसकी केइ वनावटें आती है, १ स्वच्छ कोडलीवर २ माल्टाइन कोडलीवर कोनेनकी तरे वदनके पुराणे विकारमें वापरते हैं, नाताकती मिटाणे पुष्टताइका गुण है लेकिन् जिसकू सदता है उसके खून भरी जता है ताकत आती है आर्य जैनोंने तथा वैष्णवोनें इस चीजसें वचके रहणा मच्छीकी वनावट है,

(किनाइन)–१ किनाइनमें शक्ति लाणेका गुण है, लेकिन् वो टोनिक तरीकेकी नाताकतीमेंही विशेष करके वापरते हैं, धातु पुष्टि तरीके नहीं वापरणेमें आता क्योंके ये गुण इसमें दिखता नहीं वुखार अथना वुखारसें आई भई नाताकतीमें वो थोडी२ मात्रामें लेणेसें ताकत लाती है, ताकतके वास्ते जादा करके लोह सारके सग देणेमे आता है, किनाइन मिश्रित लोहकी पतरिये (फेरी साइट्रेट एटकिनाइन) में किनाइन आता है,

(वीर्यस्तभन इलाज)–१ अफीम लोंग जावत्री तज अकलकरा और समुद्र शोपके वीज सवका सम भाग चूर्ण चूर्णकी वरावर मिश्री सहतमें घोट चाल २ जितनी गोलिये करणी १ गोली दूधके सग साझकू पीणा ऊपरसें फेर गऊका ताजा दूध पीणा १ कस्तूरी केशर जायफल लोंग अफीम भाग सूठ इलायची कपड छाणकर एकेक चाल फजर साझ सहतमें चाट ऊपरसें ताजा दूध पीणा खुरासाणी अजवाण जायफल अजमोद अफीम सम वजन चूर्णकर तीन वर्षका पुराणा गुड डालकर गोलिये वणाणी एक गोली सांझकू खाना ४ भाग २१ भाग आवला सींधानिमक उपलेट कायफल पीपर छोटी सूट अज-मोद अजवाण मोलेठी जीरा साहजीरा धाणा कपूर काचरी काकडासींगी वचनाग केशर तालीसपत्र तज तमालपत्र इलायची और मिरच ये सब मिलाकर २१ भाग भागके वीज समेत सेकके चूर्ण करना सवसें दूणी मिश्री लडूवणे इस अदाजन घी तथा सहत मिलाकर चार आनीसें आधे रुपये भरकी गोली करके यथा शक्ति खानेसें वीर्य स्तभन तथा वाजीकरण होता है

(चोपचीणी)–१ चोपचीणी ४८ तोला पीपर पीपरामूल सूठ मिरच तज अक-लकरा लोंग एकेक तोला सवके जितना वूरा इसका पाक करणा उपदसकी गरमीकू मिटा कर ताकत देती है २ चोपचीणीका पाक न० ३७९

(कोला)–१ कुष्माडपाक न० ३८०) २ कुष्माडावलेह न० ३६६) मगजकी गरमीतथा दाहकू मिटाता है, औरतोंके ऋतुधर्मकु सुधारता है ताकत लाता है.

(हरडे)–बडी हरडेका चूर्ण बूढे आदमीयोंकों रसायणरूप और ताकतवर है, ऋतुओंके अनुपान इस मुजब है, १ ग्रीष्म ऋतुमें तीन वर्षके पुराणे गुडके सग २ प्रावट् ऋतुमें सीधा निमक सग ३ सरद ऋतूमें मिश्री सग ४ हेमंत ऋतूमें सूठ संग ५ वहोत मेघ या ओलेगिरे हेमत ऋतूमें एसी शिसर ऋतूमें पींपर संग ६ वशंत ऋतूमें सहत संग हरडेकू तरुण आते भये ज्वरमें चारे दिनोंतक तथा धातू क्षीण जवान अदमीकू देणा नहीं सन्निपात ज्वरमें औषधोंके प्रयोगमें देणा सामान्य तोरमुनकादाख मिश्री मिलाकर खाणेकूं देणी २ हरडे मधुपक आम्लपित्त तथा सग्रहणी मिटाती है पथ्य रोग मुजब करणेसें ३ हरडे पाक तथा अवलेही न० ३६४) जीर्णज्वर तथा धातूकी क्षीणताकू मिटाकर ताकत लाती है, ४ हरडेका मुरब्बा मलकी कब्जी मिटाती है, ऋषभ देवके पुत्र बृहदात्रेयनें त्रिफलाके तथा न्यारे २ हरडे वहेडे आंवलेके अनेकानेक गुण लिखे हैं, त्रिफलामेसे कोइभी फलका विकार होय तो सहत खिलाणी.

(पीपर)–१ पीपर सहत घी दूध मिश्री मिलाकर खाणेसें पुष्टि करती है मंदाग्नि मिटाती है, २ सहत १ भाग घी २ भाग पीपर ४ भाग मिश्री ८ भाग दूध ३२ भाग तज तमालपत्र इलायची नागकेशर चारों मिलाकर ६ भाग इन सवोंका पाक वणाकर खाणेसें धातू क्षीणता बुखार दम फीकास अग्निमंद वगेरे मिटता है, ३ पीपर पाक (न० ३७५) वर्द्धमान पीपल पृष्ठ २९४)

(मेथी)–१ मेथीका आटा तोला ३ अवसेर दूधमें रातका भिगाकर रखणा फजर एक वरतणमें तोला ५ घी डालकर तपाकर उसमें सेकणा दाणा पडे तव लाल सक्कर अथवा गुडका पाक वणाना इससें औरतोंके स्तनमें दूध वढता है ताकत आती है, मेथीकूं घीमें सेक आटा करणा गुडकी चासणीमें लड्डू वणाना खानेसें कलतर मेटती है, २ मेथी पाक नं० ३७४

(सूंठ)–१ दूध तोला १४ पाणी तोला २१ उसमें चार मासा सूठके टुकडे डाल पाणी जले जहांतक उकाल सूठके टुकडे निकाल उसमें बूरा मासा ४ डालके पीणा इससे श्वेतप्रदर मिटकर ताकत आती है २ सूंठका महीन चूर्ण १ तोला घी २ तोला गरम कर दाणा पटकणा ५ तोला गुडसे पाक करणा फजरमें खाणा इससेवादी कलतर मदाग्नि आम वगेरे मिटके ताकत आती है, ३ सोभाग्य सूठका पाक न० ३७६.

इति श्रीमत् जैनधर्माचार्य सग्रहीते उपाध्याय रामऋद्धि सारगणि विरचिते वैद्यदीपक ग्रथे निदान चिकित्सा वर्णनो नाम षष्ठप्रकाश. पूर्णमगात् ॥

प्रकाश ७ मा ।

प्रकाश सातमा दुसरे भागमे लिखेंगें तथापि सप्तम परिमगलार्थे ब्राम्ही मोहरेकी गुटिका इहा लिखता हूं.

(ब्राम्ही गुटिका)–ब्राम्ही कस्तूरी जायफल जावत्री लोंग दालचीनी केशर नागकेशर अकलकरा चिरायता पींपला मूल पींपर चित्रक मिरच वडी इलायची खैरसार कुलजन सतावर पोकर मूल तेजवल अभ्रक लोहसार तमालपत्र सलाहोली अजमोद सोवा अजवाण मिनकादाख तोला ३० बीज निकाल कर पीसकर गोली बांधणी,

(मोहरेकी गोली)--वछनाग (काला सींघी मोहरा) १ तोला मिरच काली तोला २ लोंग १ तोला दालचीनी तोला १ जावत्री १ तोला अकलकरो तो १ सूठके काढेमें गोली बाधणी,

(भेरू रस गोली)–हींगूल शुद्ध १ मोहरा शुद्ध १ मिरच १ तेलिया सोहगी शुद्ध १ पींपर १ लोग १ दालचीणी १ सूठ रसमें गोली,

(दातके दरदका मजन)-नीलाथोया भुजाभया तो १ कूठ तो १ मजीठ तो १ कत्था तोला १

(साधारण खास गुटिका)-हरडेकी छाल वेहेडेकी छाल आवला बबूलकी छाल काली मिरच लूण खैरसार विलायती अनारका छिलका,

(दस्त बधकी गोली अतीसारपर)-सूठ अफीम मोचरस पतीस आवकी गुठली जीरा जायफल धावडीका फूल नेतरवाला अनारकली पुराणीगिरी अफीम छोतरेके रशमें गोली,

अथ आगे दुसरे भागमें सातमा प्रकाश छपेगा जिसमें सात धातू उपधातू रत्न उप रत्नोंका सोधन मारण अनुपान पथ्यापथ्य सब रोगोंपर रसोका इलाज अजीर्ण मिटाना इत्यादि अनेक अनुभविक वस्तुओंका सग्रह होगा इस ग्रथमें भूलचूक होय तो क्षमा करणा माफी मागता हु,

अथ ग्रंथ सग्रह कृतप्रशस्ति–आदिकह्यो श्रीऋषभने, आयुर्धर्मप्रकाश, तावि च श्रीमहावीरने, प्रगट कियो सुविलाश १ चवदे पूर्व मध्य यह, व्याविहरणको मर्म, ऋपि मुनि जन ग्रंथन रच्यो, वैद्यक ग्रथ सुधर्म २ ता ग्रथनकू देखके अनुभव अतिविस्तार धर्म अर्थ अरु काममे वैद्यक विद्यासार ३ परपरा जिन वीरके, पट्ट प्रभाकर सूर श्रीजिन कुशल सूरीश्वरू ज्ञान क्रियामें पूर ४ क्षेम कीर्तिगणि राजसें क्षेम धाडवड साख धर्मशील गुरु राजके कुशल निधान सुभाख ५ विक्रम नग्र सुवासमें उदय भयो ज्यूचद गगासिंह नर राजको तेज प्रताप समद ६ खरतर भट्टारक महा युगवर कीर्ति सूरिंद शशि सूरज शमचिर रहो सदा करो आनद ७ विक्रम शत उगणीशमें वर वासठके वर्ष माघ सुदि पचमदिने ग्रथ लिख्यो धरहर्ष ८ पाठक प्राणाचार्यनें कर सग्रह यह ग्रथ रच्यो रामऋद्धिसारगणि सुख मगलको पथ ९ इति श्रीमज्जैन धर्माचार्य सगृहीते उपाध्याय श्रीरामऋद्धि सारगणिः कृत वैद्यदीपक ग्रथे रोग लक्षण चिकित्सा क्रमवर्णनो नाम षष्ठ प्रकाशः वैद्यदीपक ग्रंथस्य प्रथमो भाग. सम्पूर्णतामगात् ॥

१ सा० श्रीहीरालाल बांठिया	बीकानेर
१ सा० श्रीगेवरचंद पारख	बीकानेर
१ सा० श्रीवुलाकीदास पुगलिया	बीकानेर.
१ सा० श्रीभोजराज कोचर मुहता	बीकानेर
१ सा० श्रीतेजकरण मूलचद रामपुरिया	बीकानेर
१ सा० श्रीरेखचद कोचर मुहता	बीकानेर
१ सा० श्रीइद्राजमल कोचर मुंहता	बीकानेर
१ सा० श्रीकनइयालाल डागा	जयपुर.
१ सा० श्रीअमरचद कोचर मुहता	बीकानेर
१ सा० श्रीलखमीचद कोचर मुहता	बीकानेर.
१ सा० श्रीजसकरण कोचर मुहता	बीकानेर.
१ सा० श्रीसहसकिरण नाहटा	बीकानेर.
१ सा० श्रीविरधीचद नाहटा	बीकानेर.
१ सा० श्रीवाघमलजी दूगड	बीकानेर
१ सा० श्रीकिसनचद दीपचद बांठिया	भीनासर
१ सा० श्रीकेवलचद कोचर मुहता	बीकानेर
१ सा० श्रीमानसिंघ श्रीमाल	अजीमगंज
१ सा० श्रीचोथमल मोतीलाल माल्लू	बरोदा.
१ सा० श्रीरिषभदास माणकचद तातेड	मेडता.
१ सा० नथमल मूलचद पारख	इदोर.
१ सा० श्रीकनकमल धाडेवाल	इदोर
१ सा० श्रीहजारीमल लुणिया	कलकत्ता
१ सा० श्रीकेसरीचदजी कोठारी	कलकत्ता
१ सा० श्रीसागरमल्ल चोपरा	कलकत्ता
१ सा० श्रीलखमीचद आसकरण	कलकत्ता
१ सा० श्रीआणद्मल वगसी	कलकत्ता
१ सा० श्रीचूनीलाल चोपरा	कलकत्ता
१ सा० श्रीविसनचद राखेचा	कलकत्ता
१ सा० श्रीनरायणदास शिववगस	कलकत्ता
१ सा० श्रीकुंदणमल नाहटा	कलकत्ता
५ सा० श्रीजानकीदास क्रिसनलाल [illegible]	कलक[illegible]
	कल[illegible]

१ पं० प्र० श्रीलालविजयमुनिः	मेडता.
१ पं० प्र० श्रीजयचंदमुनिः	वीकानेर.
२ महर्षि श्रीदयासागर	मुंबई.
१ पं० वैद्य श्रीजीवणमलमुनिः	वीकानेर.
१ प० प्र० श्रीगणेशचदजीमुनिः	वीदासर.
१ वाचक श्रीहुकमचदगणिः फूलचंदमुनिः	गगा सहर.
१ पं० श्रीरामधनमुनिः	वीकानेर.
१ साद्वी जेठी.	वीकानेर.
२ नग्रसेठ श्रीचांदमलजी ढढा.	वीकानेर
२ सेठ श्रीमगनमल मंगलचंद झावक	वीकानेर.
२ सेठ श्रीबाहादरमल जसकरण रामपुरिया	वीकानेर.
२ सेठ श्रीपन्नालाल वाघमल रामपुरिया	खुजनेर
१ सेठ श्रीचैनरूप सपतराम दूगड	सिरदार सहर.
१ सेठ श्रीनेमचंद सोभागमल धाडीवाल	वीकानेर.
१ सा० श्रीमुन्नालाल खुसालचद गोलछा	वीकानेर
१ सा० श्रीचून्नीलाल गोलछा	वीकानेर.
१ सा० श्रीभीपणचद गोलछा	वीकानेर.
१ सा० श्रीकेसरीचद भांडावत	वीकानेर.
१ सेठ श्रीपूनमचद दीपचंद सांवसुखा	वीकानेर.
१ सेठ श्रीपन्नालाल सुगणचंद सांवसुखा	वगला.
१ सेठ श्रीमोतीलाल मोहणलाल सांवसुखा	वगला
१ सा० श्रीसुगुणचद नाहटा	वीकानेर
१ सा० श्रीरूपचंद सूराणा	कलकत्ता
१ सा० श्रीअमोलखचद चतर	मेडता
१ सा० श्रीमगलचद वेगाणी	वीकानेर.
१ सा० श्रीमुनीम माणकचद पारख	वीकानेर.
१ सा० श्रीआसकरण वरडिया	वीकानेर.
१ सा० श्रीकेसरीचद सांड	वीकानेर.
१ सा० श्रीकुदणमलजी वेगाणी	वीकानेर
१ सा० श्री वींझराज मोहणलाल गोलछा.	वीकानेर
१ सा० श्रीधनसुखदास लूणिया	वीकानेर

१ सा० श्रीमूलचद सदासुख वेद	रतनगढ.
१ सा० श्रीमगनमलजी पूंजावत पोरवाड	उदयपुर
१ सेठ श्रीकुदणमल वाफणा	उदयपुर.
१ यतीजी श्रीदुलीचदजी वैद्य	उदयपुर
१ मुहता श्रीलछमीलाल वच्छावत	उदयपुर
१ वेद सा० श्रीचूनीलाल	उदयपुर
१ सा० श्रीपाचीलाल गोलछा	फलोधी
१ सा० श्रीजमुनालाल कोठारी	कलकत्ता
१ श्रीयुत शिवनारायण सुनार	वीकानेर
१ श्रीयुत जगन्नाथ सुनार	वीकानेर
१ उस्ता० श्रीमहम्मूद सिलावटा	वीकानेर
१ वैद्य श्रीअगरचद	डीडवाणा
१ जर्री श्रीलिखमीचद वावर	सिरदार सहर
१ सेठ श्रीरिखनाथ शिवकृष्ण वाघडी	कलकत्ता
१ सेठ श्रीलछमी नारायण कृष्णगोपाल विहाणी	वीकानेर.
१ सा० श्रीरामकिसन करणाणी	वीकानेर
१ सा० श्रीकिसनदास मीमाणी	वीकानेर.
१ सा० शिवकिसनदास मीमाणी	वीकानेर.
१ सा० श्रीकाल्हराम मीमाणी	वीकानेर
१ सा० श्रीईसरदास चाडक	वीकानेर.
१ सा० श्रीमगलचद मोहता	कलकत्ता
१ सा० श्रीवशीधर गोपीकिसन वाघडी	कलकत्ता
१ सा० श्रीनारायणदास रुखमानंद मोहता	कलकत्ता.
१ सा० श्रीकिसनदास शिवकिसन	कलकत्ता.
१ सा० श्रीगोपीकिसन विन्नाणी	कलकत्ता
१ सा० श्रीटीकमचद मोहता	कलकत्ता
५ सेठ श्रीरायसोभागमल वहादुर ढढा	अजमेर
१ सेठ शिववगस पन्नालाल	लातूर
१ सा० श्रीजोधराज धनराज	लातूर
१ सा० श्रीसूरजी रुघनाथ	लातूर
१ सा० श्रीचापसी धरमसी	लातूर

१ सा० श्रीशिवजीराम मणियार	लातूर
१ प० श्रीरामनाथ व्यास	लातूर.
१ प० श्रीजेठमल व्यास	लातूर
१ श्रीयुत नागराज सेवग वैद्य	वीकानेर.
१ श्रीयुत भैरवदत्त वैद्य आसोपा	वीकानेर.
१ श्रीयुत जगन्नाथ मिश्र वैद्य	वीकानेर.
१ श्रीयुत भतमाल व्यास वैद्य	वीकानेर
१ श्रीयुत नथमल सेवग	कलकत्ता.
१ श्रीयुत डाकतर छैलविहारीलाल	
१ श्रीयुत अम्बाप्रशादशर्मा माष्टर	योधपुर.
१ श्रीयुत हरलाल वोहरा	मेडता.
१ श्रीमनीराम धूलाजी सेवग	शिवगंज
१ पंडितजी श्रीजयदयाल शर्म्मा	वीकानेर
१ श्रीयुत काल्रराम व्यास	वीकानेर.
१ सा० श्रीआसाराम राठी	वीकानेर.
१ श्रीयुत लाभचद प्रोहित	वीकानेर.
१ श्रीयुत चूनीलाल पांडे	कलकत्ता
१ सा० श्रीलखमीचद छाजेड	वीकानेर.
१ सा० श्रीआसकरण जादवराय पूगलिया	वीकानेर
१ सा० श्रीमेघकरण खजानची	मद्रास
१ सा० श्रीजीवराज शीताराम मुंधडा	कलकत्ता
१ सा० श्रीदानमल नाहटा	वीकानेर
१ सा० श्रीलाभचंद पारख	वीकानेर
१ सा० श्रीकानमल वांठिया	भीनासर.
१ सा० श्रीपेमकरण मरोटी	नागपुर.
१ सा० श्रीरिषभचद कोचर	वीकानेर.